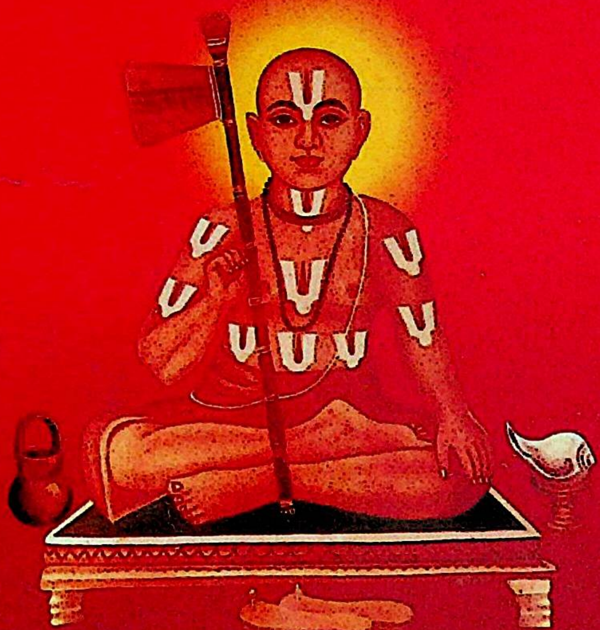


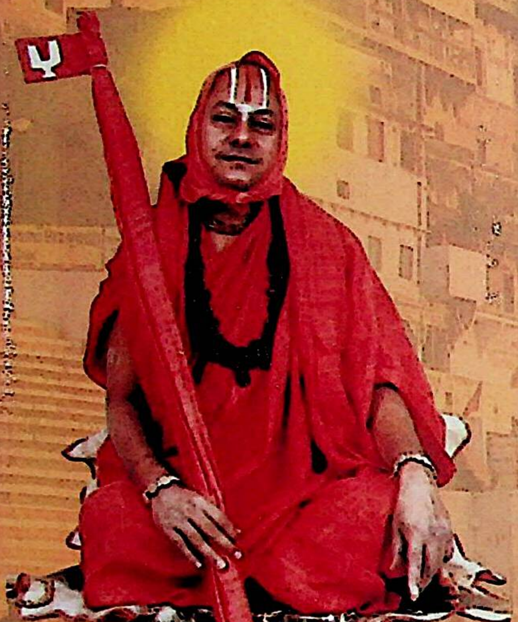
जगद्गुरुरामानंदाचार्य

सप्तशताब्दी महोत्सव खंड

श्रीमठ समग्र खण्ड – द्वितीय

सम्पादक : डॉ. उदयप्रताप सिंह

जगद्गुरु रामानन्दाचार्य स्मारक सेवा न्यास, वाराणसी



जगद्गुरुरामानंदाचार्य
स्वामी श्रीरामनरेशाचार्यजी महाराज

श्रीमठ पंचगंगा घाट
काशी, बनारस

जगद्गुरुरामानंदाचार्य सप्तशताब्दी महोत्सव खंड

अखिल भारतीय जगद्गुरु रामानन्दाचार्य सप्तशताब्दी महोत्सव

आविर्भाव सन् १२९९ . तिरोभाव सन् १४१०ई०

२७ जनवरी २००० से १६ जनवरी २००१ तक

अखिल भारतीय जगद्गुरु रामानन्दाचार्य सप्तशताब्दी महोत्सव समिति

संरक्षक :
जगद्गुरु रामानंदाचार्य
श्रीरामनरेशाचार्य जी महाराज

अध्यक्ष :
श्री दिग्विजय सिंह
मुख्यमंत्री म० प्र०

उपाध्यक्ष :
श्री रमेश अग्रवाल
चेयरमैन, दैनिक भाष्कर ग्रुप
पं. रघुनाथप्रसाद त्रिपाठी
सतना

कार्यकारी अध्यक्ष :
श्रीगोपाल मित्तल

कोषाध्यक्ष :
श्रीविष्णु विन्दल

स्वागताध्यक्ष :
पं० लोकपति त्रिपाठी

संयोजक :
पं० गणेश्वर शास्त्री द्रविड़

श्रीमठ
पंचगंगा, काशी
फोन : ०५४२-२४०२२३०

पुस्तक नाम : जगद्गुरुरामानंदाचार्य सप्तशताब्दी महोत्सव खंड

सत्प्रेरक : जगद्गुरु रामानंदाचार्य पदप्रतिष्ठित
श्रीरामनरेशाचार्यजी महाराज

सम्पादक : डॉ. उदयप्रताप सिंह

संस्करण : प्रथम, सन् २०१३ ई.

मूल्य : ५००/- (पाँच सौ रुपये मात्र)

प्रतियाँ : ११०० मात्र (एक हजार एक सौ मात्र)

प्रकाशक : जगद्गुरु रामानंदाचार्य स्मारक सेवा, न्यास श्रीमठ, काशी

वितरक : श्रीमठ पञ्चगंगा, काशी (वाराणसी)
दूरभाष : (०५४२) २४०२२३०

मुद्रक : प्रिंट ओ लैण्ड, सुदर्शनपुरा, जयपुर (राज.)

Jagadguru Ramanandacharya Saptashatabdi Mahotsava Khand
Edited by : **Dr. Udai Pratap Singh**

जगद्गुरु रामानंदाचार्य पदप्रतिष्ठित
श्रीरामनरेशाचार्य जी महाराज

आदिपीठ श्रीसम्प्रदाय (रामावत)
पञ्चगंगा काशी, (उत्तर प्रदेश)

।। नमोऽस्तुरामाय ।।

परमप्रभु श्रीरामजी की असीम-अहैतुकी अनुकम्पा से वर्षव्यापी तथा राष्ट्रव्यापी जगद्गुरुरामानन्दाचार्य सप्तशताब्दि महोत्सव खण्ड प्रकाशित हो रहा है। हम सभी लोगों के लिये यह अनुपम प्रसन्नता की बात है। ज.गु. रामानन्दाचार्यजी महाराज रामावतार थे, क्योंकि उन्होंने सम्पूर्ण संसार में रामजी के समान ही समस्त जीवों के लिये परम विश्राम प्रदायक अनुष्ठान किया।

पुस्तक का प्रकाशन अतीव विलम्बित हुआ, अतएव आपाततः कष्टप्रद था, परन्तु "अनेकजन्मनामन्ते ज्ञानवान मां प्राप्यते" का स्मरण होते ही चिन्ता के बादल उड़ गये। सर्वश्रेष्ठ मानवजीवन को परमधन्यता प्रदायक स्मरण तो अनेक जन्मों के बाद ही होते हैं।

"रामायण सत कोटि अपारा" के अनुसार यह विश्वास दृढ़ होता है कि गायन व स्मरण का स्वरूप कितना भी बड़ा हो, वह अपर्याप्त ही होगा, और भी गायन की आवश्यकता है, सतत् आवश्यकता है, सभी के लिये आवश्यकता है। कल्याण तो सभी को चाहिए।

ह्रास के परम भयावह काल में भी रामावतार रामानन्दाचार्य जी का परिवार सबसे बड़ा है, संसाधन भी हैं, उसके विनियोग की विभिन्न समायोजनों में आदत भी है, परन्तु सप्तशताब्दि महोत्सव में सम्प्रदाय सोता रहा, यह कल्याण साधना के विपरीत है। रामनवमी महोत्सव कल्याणप्रद है, केवल अपना जन्मोत्सव नहीं।

सम्प्रदाय के बड़े सन्तों में केवल खाकी अखाड़ा के श्रीमहन्त जगन्नाथदासजी (सूरत) तथा सेनाचार्य अचलानन्दजी (जोधपुर) ही समर्पित भाव से श्रीमठ समायोजित सप्तशताब्दि महोत्सव में प्रवृत्त हुए।

जो भी महानुभाव इस महोत्सव में जिस किसी प्रकार से समर्पित हुये सभी का आभारी मैं नहीं रामजी एवं रामानन्दाचार्य जी हैं, क्योंकि उनका ही प्रयोग आगे बढ़ा। श्रीमठ में आगमन के प्रारम्भिक काल में सत्नारायण भगवान् की कथा भी बोझिल थी, इनका बड़ा महोत्सव पूर्ण गरिमा एवं समृद्धि के साथ सम्पन्न हुआ, यही तो प्रभु की कृपामृत वर्षा है। पुस्तक प्रकाशन में प्रवृत्त सभी को भूरिशः मंगलकामनाएँ विशेषतः डॉ. उदयप्रताप सिंह को।

ज.गु.रा. श्रीरामनरेशाचार्य

सम्पादकीय

'श्रीरामानंदाचार्य सप्तशताब्दी महोत्सव खण्ड' 'श्रीमठसमग्र' का द्वितीय पुष्प है। वस्तुतः इसे प्रथम खण्ड के रूप में प्रकाशित करने की योजना थी पर अपरिहार्य कारणों से इसे द्वितीय खण्ड के रूप में प्रकाशित करना पड़ा। इस खण्ड में स्वामीरामानंद के आविर्भाव के सात सौ वर्ष पूर्ण होने पर वर्षपर्यन्त चलने वाले कार्यक्रमों का विवरण है साथ ही श्रीमठ की प्रवृत्तियों, उपलब्धियों और 'शतकोटि होमात्मक श्रीराम महायज्ञ' का वृत्तांत भी प्रस्तुत किया गया है। यह खण्ड इस अर्थ में भी महत्त्वपूर्ण है कि इसमें सप्तशताब्दी के समय पर राष्ट्रीय व्यक्तित्वों से भी साक्षात्कार हो सका है।

श्रीरामानंदाचार्य का आविर्भाव १२९९ ई. तथा तिरोधान १४१० ई. में हुआ था। सात सौ वर्षों तक संस्कृति और समाज को एक निरंतरता में प्रभावित करना किसी अलौकिक व्यक्तित्व का ही द्योतक है। स्वामीरामानंद ऐसे महापुरुष थे जिनकी वाणियाँ गंगा की तरह पवित्र और प्रभावशाली हैं। उनका औदार्य, प्रगतिशील चिंतन और भविष्य चेतना की दृष्टि भारतीय सनातन धर्म व संस्कृति को निरंतर वर्द्धमान करती रही है। संस्कृत-हिन्दी और पैशाची भाषाओं में रामानंदाचार्य का साहित्य शताब्दियों से लोकमन का अभिसिंचन कर रहा है। मतमतांतरों, सगुण-निर्गुण, बहुदेवोपासना, लोकशास्त्र, स्त्री-पुरुष, उच्च-निम्न स्वधर्मी-विधर्मी जैसी मानसिकता में विभक्त एक प्रकार से मूर्च्छना को प्राप्त भारतीय समाज को स्वामीरामानंद ने रामभक्ति रूपी संजीवनी से जीवंत व चेतस बना दिया था।

भारतीय धर्मसाधना में संख्या और गुणवत्ता की दृष्टि से रामानंद सम्प्रदाय अन्यतम है। यहाँ प्रतिष्ठित गादिपति और सम्पन्न आश्रम हैं। धार्मिक जगत में कई सम्प्रदायोपसम्प्रदाय इसकी मूल चेतना ग्रहण विकसित हुए हैं। अनेकशः सम्प्रदाय रामानंदी सम्प्रदाय से उद्भूत होते हुए भी अपना स्वतंत्र स्वरूप निर्मित कर चुके हैं– इसमें सगुण और निर्गुण दोनों सम्मिलित हैं। इस सम्प्रदाय में सर्वाधिक बैरागी (साधु) हैं, आश्रम हैं, संत और श्रीमहंत हैं। पर आश्चर्य होता कि किसी भी उपसम्प्रदाय ने स्वामीजी की सप्तशती पर न स्तरीय और न ही राष्ट्रस्तरीय महोत्सवों का आयोजन किया। वैसे किसी भी सम्प्रदायाचार्य और व्यक्ति के जीवन में सप्तशतकीय जीवन की घटनाएँ दुर्लभ होती हैं। भारत वर्ष के अनेक सम्प्रदायों (रामानंदी) के समक्ष वर्ष

१९९९-२००० ई. का समय वैसे ही व्यतीत हो गया जैसे स्वाभाविक रूप से वर्ष बीत जात हैं। पर स्वामी जी के यशस्वी और तपस्वी जीवन को ज.गु. रा. श्रीरामनरेशाचार्य श्रीमठ पंचगंगा, काशी ने ही राष्ट्रीय स्तर पर महोत्सव का रूप प्रदान किया। यह पुस्तक उसी महोत्सव का प्रतिस्मरण है, अनुस्मरण है।

पुस्तक में वर्षपर्यन्त सम्पन्न होने वाले महोत्सवों, प्रयोजनों, कार्यक्रमों, रामभाव प्रसार यात्राओं, विद्वत् व धर्माचार्य सम्मेलनो, वैदिक चर्चाओं, इत्यादि की क्रमबद्ध सूचना तो अनुस्यूत है ही साथ ही ७५ चित्रों के माध्यम से विभिन्न समारोहों को जीवंत करने का उपक्रम भी किया गया है। कहा जा सकता है कि पुस्तक में युगप्रवर्त्तक स्वामीरामानंद के सामाजिक, सांस्कृतिक और धार्मिक अवदानों को एक स्थल पर एकत्रित कर दिया गया है। इसी संदर्भ में यह कहना समीचीन लगता है कि रामानंदाचार्य ने सनातन भारत में जिस उदारता, निर्मलता, हार्दिकता और समन्वयशीलता का सृजन किया उसी की प्रतिच्छाया विभिन्न साम्प्रदायिक पंथों के रूप में प्रत्यक्ष देखी जा सकती है।

सम्पादकीय यात्रा में मुझे विभिन्न अवरोधों व उलझनों से गुजरना पड़ा है। उसका बड़ा कारण सामग्री का बिखरना, अपस्तरीय होना और तारतम्य न बैठना रहा है पर परब्रह्मश्रीराम, मध्यमाचार्य स्वामीरामानंद और वर्तमानाचार्य स्वामी श्रीरामनरेशाचार्य महराज की अहैतुकी कृपा से मेरा रास्ता सुकर होता चला गया। सामग्री के एकत्रीकरण और अन्वयीकरण से यदि पाठकवर्ग थोड़ा भी लाभान्वित हो सका तो मेरा श्रम सार्थक होगा। वैसे मुझे इसका आभास है कि श्रम के हिसाब से इसमें गुणवत्ता नहीं प्रकट हो सकी है। इस तथ्य का सार्थक मूल्यांकन पाठकवर्ग और पंथीय श्रीमहंत, बैरागी (साधु) ही कर सकेंगे। अपनी चिंता उन्हें सौंपते हुए निश्चिंत हो रहा हूँ।

पुनश्च कहना चाहता हूँ कि रामानंदाचार्य सप्तशताब्दी की परिकल्पना मूलगादी के वर्तमानाचार्य ज.गु. रा. पदप्रतिष्ठित श्रीरामनरेशाचार्य जी महाराज की दूर दृष्टि, भविष्यगर्भी चेतना, लोक मंगलपरक भावना का ही प्रतिफल है। दूर ही नहीं बहुत दूर तक देखना, अपना देश ही नहीं विश्व के सीमांत तक पहुँचना, ब्रह्म संसार और जीव तीनों की सत्यता को परिभाषित करना, अंतिम व्यक्ति तक दृष्टि ले जाना, नीर-क्षीर विवेकी होना मूलगादी पर बैठे आचार्य की ही सहज-स्वाभाविक चेतना हो सकती है मूलेतर की नहीं।

पुस्तक प्रकाशन में प्रेम और श्रद्धा को अर्थ से कई गुना अधिक महत्त्व प्रदान करने वाले श्रीसत्यनारायण अग्रवाल का मैं हृदय से आभारी हूँ जिन्होंने सहर्ष यह महत्तर कार्य स्वीकार किया। प्रिंटर्स और सम्पादक किंवा लेखक के शीत युद्ध पढ़े-

लिखे समाज से छिपे नहीं हैं। पर 'प्रिंट वो लैण्ड' जयपुर के स्वत्वाधिकारी श्री सत्यनारायण अग्रवाल ने इस मुहावरे को ही बदल दिया। उनकी परमप्रभु श्रीराम में यह गहराती आस्था निरंतर बढ़ती रहे इसी कामना के साथ उनकी इस सेवा का भूरिशः स्वागत करता हूँ।

सामग्री को व्यवस्थित व अनुक्रमणिका को क्रमबद्ध करने में पुत्री अवंतिका तथा सहधर्मिणी श्रीमती रीता सिंह का सहयोग अविस्मरणीय है।

वसंत पञ्चमी
(डॉ.) उदयप्रताप सिंह

१५ फरवरी, २०१३
प्रयाग

श्रीसम्प्रदाय और 'श्रीमठसमग्र' की रूपरेखा

'श्रीमठ' अनादि तथा परममंगलमयी सगुण एवं निर्गुण श्रीरामभक्ति धारा का गोमुख है। यहीं रहकर श्रीसम्प्रदाय (रामावत) के आचार्यों ने सम्पूर्ण संसार में रामभक्तिगंगा को प्रवाहित किया, जिसमें गोता लगाकर असंख्य मानवों ने अपने जीवन को धन्य बनाया। श्रीमठ भगवान् श्रीबिन्दुमाधव द्वारा अधिष्ठित परमपावन विष्णुकाशी के दिव्य पञ्चनदतीर्थ पर विराजमान है। इस क्षेत्र को वैष्णवाचार्यों, संतों एवं भक्तों ने मुख्यतः अपने धार्मिक तथा आध्यात्मिक अनुष्ठान का आधार बनाया। श्रीरामभक्तिपरम्परा के मुख्य तीर्थ अयोध्या के अतीव समीप होने पर भी श्रीसम्प्रदाय के आचार्यों ने विष्णुकाशी पञ्चगंगा में ही अपना मुख्यालय स्थापित किया जहाँ किसी भी दूसरी परम्परा या सम्प्रदाय (वैदिक सनातन धर्म की मान्य परम्परा) का मुख्यालय नहीं है। इसका मुख्य कारण रामानन्द सम्प्रदाय की उदारता, भगवान् शंकर के प्रति अनुराग व भगवान् श्रीराम के प्रति पूर्ण समर्पण ही है। इस प्रयोग ने कई साम्प्रदायिक मतभेदों को समाप्त कर सनातन धर्म को गौरवान्वित किया।

इतिहासविदों की मान्यता है कि श्रीमठ संसार के तत्कालीन आध्यात्मिक केन्द्रों में सर्वश्रेष्ठ था, जिसका सम्पूर्ण स्वरूप लगभग पाँच किलोमीटर में फैला हुआ था। उसे सनातन धर्म विरोधी मुगल बादशाह औरंगजेब ने छिन्न-भिन्न कर दिया। इसके बाद कई शताब्दियों तक 'गलतापीठ' (जयपुर) ही श्रीसम्प्रदाय के मुख्यालय के रूप में मान्य रहा। परमप्रभु श्रीरघुनाथजी की प्रेरणा से श्रीमठ के प्रामाणिक स्वरूप का पुनः प्राकट्य हुआ। इस पवित्र कार्य में अनेकानेक संतों एवं भक्तों ने सेवायें अर्पित कीं जिनमें जगद्गुरु रामानन्दाचार्य स्वामी श्रीभगवदाचार्यजी, परमसिद्ध सन्त श्रीरणछोड़दासजी तथा श्रीअरविन्द भाई (मफतलाल) का नाम प्रमुख है। इन तीनों विभूतियों ने श्रीमठ के पुनरुद्धार का यह ऐतिहासिक कार्य किया। यद्यपि उसके बाद भी श्रीमठ का वह स्वरूप उस गरिमा के साथ प्रकट नहीं हो पाया, जो रामावत सम्प्रदाय के मुख्यालय का होना चाहिए। ज.गु.रा. श्रीरामनरेशाचार्य के निर्देशन में अब वह दिव्य स्वरूप धीरे-धीरे प्रकट हो रहा है।

वेद, इतिहास, पुराणादि की मान्यता के अनुसार 'श्री' शब्द भगवती सीताजी का वाचक है। अतः सीता प्रवर्तित होने के नाते सम्प्रदाय का नाम 'श्रीसम्प्रदाय' एवं सीताजी की नाम परम्परा में होने वाले वैष्णवाचार्यों ने अपने मठ का नाम 'श्रीमठ'

रखा। श्रीसम्प्रदाय (रामावत) के परमाचार्य तथा परमाराध्य सर्वावतारी भगवान् श्रीराम हैं। इनके निर्गुण व सगुण दोनों ही स्वरूपों की आराधना श्रीसम्प्रदाय तथा उससे निःसृत परम्पराओं में होती रही है। जगदम्बा श्रीसीताजी एवं श्रीलक्ष्मणजी के साथ परमेश्वर श्रीराम की आराधना सम्प्रदाय में मान्य है। परमप्रभु श्रीराम ने सर्वप्रथम अपनी प्राणवल्लभा सीताजी (श्री) को ही अपने दिव्य मांगलिक भावों को अर्पित किया, अतएव इस दिव्य आध्यात्मिक परम्परा के साथ 'श्री' शब्द जुड़ गया।

वैष्णवों (रामावत-निबार्क-विष्णुस्वामी-मध्व) के ५२ द्वारों में ३६ द्वारे रामावत सम्प्रदाय के ही हैं। देश में आज भी सर्वाधिक संत तथा आश्रम रामावत सम्प्रदाय के हैं। सम्प्रदाय में प्रमुख रूप से दास भाव से भगवान् की आराधना होती है। भगवान् श्रीराम के तपस्वी स्वरूप के श्रीविग्रह ही अधिसंख्य मंदिरों में प्रतिष्ठित हैं। सम्प्रदाय के अधिकतर सन्त भगवान् श्रीराम के तपस्वी रूप के समान स्वरूप धारण करते हैं। यह निवृत्तिप्रधान सम्प्रदाय है। अधिसंख्य आश्रमों एवं गद्दियों पर विरक्त संत ही विराजमान हैं। श्रीसम्प्रदाय से उद्भूत प्रेरित एवं पालित सैकड़ों आध्यात्मिक परम्परायें संसार में फैली हुई हैं जिनके माध्यम से रामभक्तिगंगा प्रतिक्षण प्रसारित हो रही है। रामस्नेही, गरीबदासी, घीसादासी, दादूपन्थी, पलटूदासी, निराकारी, कबीरदासी, रबिदासी, पीपापन्थी, रामदासी इत्यादि परम्पराओं का मूल श्रीसम्प्रदाय (रामावत) ही है। द्वादश शिष्य परंपरा जिसमें निर्गुण-सगुण दोनों इसी सम्प्रदाय से अभिमंत्रित हैं, के शिष्यों की सुदीर्घ परम्परा इस सम्प्रदाय के उन्नयन और विस्तरण में व्यापक भूमिका का निर्वहन कर सकी है। इसी पंक्ति में कबीर, रैदास, पीपासाहब, सेन, धन्ना, भावानंद, अनंतानंद, सुखानंद नरहर्यानंद, सुरसरी तथा पद्मावती आदि की गणना की जाती है।

इस सम्प्रदाय के ध्येय भगवान् श्रीराम एवं गेय श्रीमद्वाल्मीकिरामायण है। वेदों के बाद लौकिक संस्कृत में सर्वप्रथम भगवान् श्रीराम का दिव्य चरित्र ही गाया गया। दुनिया के किसी भी धर्म, सम्प्रदाय व पन्थ में ऐसा ग्रन्थ आज भी अनुपलब्ध है।

श्रीसम्प्रदाय में दूसरे सम्प्रदायों की अपेक्षा अत्यधिक औदार्य है। यद्यपि दूसरे वैष्णवाचार्यों ने भी कल्याण के साधन के रूप में 'भक्ति एवं प्रपत्ति' को स्वीकार किया है परन्तु उनमें औदार्य का वह स्वरूप स्फुटित नहीं हो पाया जो रामावत सम्प्रदाय में हुआ। यही कारण है कि श्रीसम्प्रदाय की तुलना में दूसरे वैष्णवसम्प्रदाय अपेक्षाकृत कम विकसित हो सके।

श्रीसम्प्रदाय के मध्यमाचार्य रामावतार स्वामी श्रीरामानन्दाचार्यजी महाराज ने श्रीसम्प्रदाय (रामावत) की कल्याणमयी उदात्त गंगा को जन-जन तक प्रवाहित करने का भगीरथ प्रयास किया। कबीर, रविदास, सेन, धन्ना जाट आदि का परमसन्तत्व इसका श्रेष्ठ उदाहरण है। आचार्य प्रवर ने जाति, समाज एवं धर्म के समस्त खण्डक भावों को

पृथक् करते हुए, किसी भी वैदिक मर्यादा को छिन्न-भिन्न किये बिना सभी का भक्ति एवं प्रपत्तिगंगा में गोता लगाने के लिये आह्वान किया। आचार्यप्रवर का यह कार्य समाज, धर्म, राष्ट्र एवं वैदिक मान्यताओं के विघटन में महान् अवरोधक सिद्ध हुआ। वैदिक सनातन धर्म पर अकारण, मिथ्या आरोप लगाने वालों का मुँह सदा-सदा के लिए बन्द हो गया। आचार्यप्रवर ने वंचितों के साथ नारियों को भी अपनी दिव्य उदारता से धन्य बनाया, जो इतिहास के लिए अभूतपूर्व अवदान सिद्ध हुआ। परमसाध्वी पद्मावती एवं सुरसरी आध्यात्मिक विश्व के गगन में सदा ही आलोकित रहेंगी तथा सनातन धर्म की उदारता की प्रतीक बनी रहेंगी। जगद्गुरु श्रीरामानन्दाचार्य ने अपने विलक्षण वैदुष्य से ब्रह्मसूत्रों पर 'आनन्दभाष्य' लिखकर रामभक्ति-साहित्य की भागीरथी के प्रवाह में अभिवृद्धि की। 'वैष्णवमताब्जभास्कर' उनकी कालजयी रचना है। 'अध्यात्मरामायण' के रचनाकार स्वामीरामानंद ने रामभक्तिधारा को भरपूर तीव्रता प्रदान की। ऐसे ही अनेकानेक ग्रन्थों का उन्होंने संस्कृत एवं हिन्दी में सृजन किया। अपने शिष्यों को आचार्यप्रवर ने लोकभाषा हिन्दी में रामभाव को लिखने एवं बोलने के लिए प्रेरित किया। विश्वमहाकाव्य 'श्रीरामचरितमानस' की रचना भी श्रीसम्प्रदाय के अद्भुत रत्न गोस्वामी श्रीतुलसीदास द्वारा ही हुई जो स्वामीरामानंद के प्रधान शिष्य अनंतानंदाचार्य के शिष्य नरहर्यानंद के शिष्य थे।

श्रीसम्प्रदाय के वर्तमान रामानंदाचार्य श्रीरामनरेशाचार्य जी हैं। इनका औदार्य शास्त्र विदग्धता तथा भागवत स्वरूप शताधिक वर्षों पूर्व श्रीमठ के आचार्यों का स्मरण कराता है। श्रीमठ के विस्तरण तथा आदि वैभव के पुनर्स्थान हेतु महाराजश्री अहर्निश भगीरथ प्रयास कर रहे हैं।

इसी सन्दर्भ में 'श्रीमठसमग्र' के अन्तर्गत साहित्य का प्रकाशन, परम्परा का विस्तार तथा अन्यान्य लोकमंगल परक प्रवृत्तियों का एक विस्तृत लेखा-जोखा सात खण्डों में प्रकाश्य है। उल्लेख्य है कि अकादमिक अभिरुचियों के कारण ही महाराजश्री प्रतिवर्ष स्वामीरामानंद जी की जयंती पर एक लाख रुपये का पुरस्कार भी किसी एक साहित्य सेवी को प्रदान करते हैं। इसका प्रथम गौरव रामभक्ति के निष्णात पंडित आचार्य भगवतीप्रसाद सिंह को प्राप्त हो चुका है। इसी क्रम में दशाधिक विद्वान् श्रीमठ से पुरस्कृत हो चुके हैं।

आध्यात्मिक, धार्मिक एवं सामाजिक विषयों में विशेष रुचि के साथ अकादमिक क्षेत्र में भी वर्तमान आचार्य की गहरी निष्ठा है। उनकी हार्दिक इच्छा रहती है कि 'श्रीमठ' पर सम्यक विवेचन-विश्लेषण हो। इस निमित्त सात खण्डों में 'श्रीमठसमग्र' की महत्वाकांक्षी प्रकाशन योजना निर्मित की गयी है। इस सारस्वत यज्ञ में आपके आलेख रूपी समिधा की महती आवश्यकता है। स्वामीरामानंद का प्रामाणिक जीवन

वृत्त, सिद्धांत, पंथ-विस्तार, सामाजिक प्रदेय, हिन्दी की रचनाओं का वृत्त तथा अन्यान्य उपलब्ध सामग्रियाँ 'श्रीमठसमग्र' में समाहित की जाएंगी। विषय शीर्षक खण्डश: निम्नवत् हैं–

प्रथम खण्ड : जगद्गुरु रामानंदाचार्य : श्रीसम्प्रदाय (रामावत) : विविध आयाम (प्रकाशित २०१० ई., द्वितीय सं. २०११)

द्वितीय खण्ड : ज.गु. रामानंदाचार्य सप्तशताब्दी महोत्सव खण्ड (प्रकाशित २०१३ ई. पूर्ण कुम्भ के अवसर पर)

तृतीय खण्ड : सम्प्रदाय परिचायक एवं आचार्य परम्परा खण्ड

१. श्रीमठ नाम क्यों?
२. रामानन्द चरणपादुका
३. श्रीमठ का अतीत एवं वर्तमान
४. रामानन्दाचार्य जी का गिरिनार स्थित चरण पादुका
५. मध्यकालीन भक्ति आन्दोलन के सूत्रधार स्वामीरामानन्द
६. सीतानाथ
७. रामानन्दाचार्य
८. अस्मदाचार्य (वर्तमान आचार्य)
९. द्वादश शिष्य
१०. रामानन्दाचार्य श्रीकृष्णदास पयोहारी
११. रामानन्दाचार्य परम्परा में अग्रदेवाचार्य
१२. रामानंद सम्प्रदाय में संत तुलसीदास
१३. आचार्य परम्परा के अप्रतिम पुरुष भगवदाचार्य
१४. जगद्गुरु रामानन्दाचार्य स्वामीशिवरामाचार्य
१५. जगदुरु रामानन्दाचार्य स्वामीरामनरेशाचार्य

चतुर्थ खण्ड : रामानंद सम्प्रदाय : सिद्धान्त पक्ष

१. रामानन्द सम्प्रदाय में पंच संस्कारनाम, जप, माला, छाप, तिलक
२. रामानन्द सम्प्रदाय की उपासना
३. श्रीराममन्त्र द्वय
४. 'सर्वेप्रपत्तेरधिकारिणो मता:'
५. मुक्तिसाधन
६. श्रीसम्प्रदाय में मोक्ष की अवधारणा
७. रामानन्द सम्प्रदाय में विशिष्टाद्वैत सिद्धान्त विमर्श
८. तुलसी साहित्य में ज.गु. रामानन्दाचार्य के विचारों की अभिव्यक्ति

९. रामानन्द सम्प्रदाय का गेय ग्रंथ वाल्मीकि रामायण।

१०. रामानन्द सम्प्रदाय में नाम संकीर्तन की भूमिका

११. वैष्णवमताब्जभाष्कर के अनुसार ध्येय क्या?

पञ्चमखण्ड : सम्प्रदाय खण्ड : द्वादशादित्य : हिन्दी के कवि और आधुनिक अध्ययन का परिक्षेत्र

१. संत-कबीर, पीपा, रैदास, धन्ना, सुरसरी, पद्मावती आदि।

२. सम्पूर्ण भारतवर्ष में स्थापित रामानन्द सम्प्रदाय के आश्रम, परम्परा एवं ग्रन्थ, राष्ट्रीय सर्वेक्षण, शोध अध्ययन-विश्वविद्यालयों-महाविद्यालयों द्वारा, व्यक्तिगत, सरकारी संस्थानों-विश्वविद्यालय अनुदान आयोगादि द्वारा सम्पन्न परिजोयनाएँ।

षष्ठ खण्ड : लोकमंगल परक प्रवाह

१. चातुर्मास्य महोत्सव	२. दिव्य कार्तिक मास महोत्सव
३. माघमास मकरसंक्रान्ति	४. वैशाख मास महोत्सव
५. कुम्भ पर्व	६. श्री रामनवमी श्रीरामजन्म महोत्सव

७. महाराजश्री द्वारा श्रीरामभाव प्रसार यात्राएँ

सप्तम् खण्ड : समग्र-साहित्य

रामानन्द सम्प्रदाय के मान्य ग्रन्थ-संस्कृत, पैशाची, हिन्दी, अंग्रेजी, इटैलियन इत्यादि भाषाओं में प्रकाशित, अप्रकाशित, अन्यान्य विषय आवश्यकतानुसार

सम्पादक

(डॉ.) उदयप्रताप सिंह

सारनाथ, वाराणसी

अनुक्रमणिका

पञ्चम अध्याय : आलेख खण्ड

षष्ठ अध्याय : समापन खण्ड

प्रथम अध्याय
दिव्य संकल्प

'दुतिय सेतु जगतरन कियौ'

ज.गु. रा. श्रीरामनरेशाचार्य

यह अत्यन्त प्रसन्नता की बात है २७ जनवरी सन् २००० से आचार्य प्रवर स्वामी रामानन्दजी का सात-सौवाँ जयन्ती वर्ष प्रारम्भ हो रहा है। इसके उपलक्ष्य में एक देशव्यापी तथा वर्षव्यापी महोत्सव मनाने का संकल्प श्रीमठ ने किया है।

श्रीमठ निर्गुण तथा सगुण रामभक्ति परम्परा का एक मात्र मूल आचार्यपीठ है। भगवान श्रीराम से प्रवर्तित अनादि परम कल्याणमयी, परमोदार, भक्ति एवं प्रपत्ति धारा का यह सनातन गोमुख शताब्दियों से बना हुआ है। स्वामी रामानन्द जी ने मध्यकाल में इस धारा को अत्यन्त विस्तार, तीव्रता, जनाकर्षण तथा परमोदार स्वरूप प्रदान किया। जिसके कारण इस दिव्य धारा के साथ स्वामी जी का नाम स्थायी रूप से जुड़ गया। श्रीमठ को स्वामी रामानन्द जी ने स्वयं नहीं बनवा कर अपितु अपनी अनादि गुरु परम्परा से गुरुवर्य आचार्य प्रवर स्वामी राघवानन्द जी से प्राप्त किया था।

ईश्वर के समान ही आचार्यों का संस्मरण भी कल्यणप्रद होता है। भक्ति दर्शन के अनुसार दोनों एक ही तो हैं। अतएव सप्त शताब्दी जयन्ती महोत्सव के माध्यम से रामावतार स्वामी रामानन्दजी के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का संस्मरण एवं असंख्य हृदयों में उसकी स्थापना ही परमोद्देश्य है। जिन मानवीय तथा वैदिक मूल्यों की अत्यन्त छिन्न-भिन्न अवस्था में स्वामी रामानन्द जी का प्राकट्य हुआ था उस समय उनका अनुपम व्यक्तित्व एवं प्रयास लौकिक तथा पारलौकिक दृष्टि से सदा-सदा के लिए डूबते हुए मानव जाति को जहाज के रूप में प्राप्त हुआ था। आज भी मानव जाति अत्यन्त संकट की स्थिति से गुजर रही है। उसका सर्वस्व टूट रहा है, खो रहा है, छिन्न-भिन्न हो रहा है, प्रगाढ़ अन्धकार से आच्छादित होता जा रहा है; असाध्य रोगों के परम भयावह गाल में घुसता जा रहा है। त्राण के लिए कहीं जुगुनू भी नहीं दिखाई दे रहा है। रक्षा के लिए वरण किये हुए हाथ ही भक्षक के रूप में परिवर्तित हो जाते हैं। समस्त अन्धकारों को दूर करने के लिए अपनायी गई गुरु की शरण ही

अधिकाधिक अन्धकार का सर्जन कर रही है। सर्वत्र अमर्यादित अर्थ एवं भोग का ही साम्राज्य परिलक्षित हो रहा है! धर्म-शास्त्र, ईश्वर, जप-तप, संयम-नियम, परोपकार इत्यादि मानवता के पोषक तथा संवर्धक परम भाव अनास्था के कल्पनातीत चपेट में आ गए हैं। अतएव पुनः रामावतार स्वामी रामानन्दजी की मानव जाति को परमापेक्षा हो गई है। मानव जाति को निगलने वाली इस महामारी का एक मात्र निदान स्वामी रामानन्दजी हैं। महोत्सव के माध्यम से पुनः एक बार स्वामी रामानन्दजी का भावावतार सम्पूर्ण मानव जाति को प्राप्त होगा, जो उसके लौकिक तथा पारलौकिक जीवन को बचाएगा तथा सम्पूर्णता दिलाएगा।

देवभाषा संस्कृत से भिन्न भाषाओं में भक्त चरित्र के सर्वश्रेष्ठ स्रष्टा एवं गायक नाभादासजी ने स्वरचित भक्तमाल में आचार्य प्रवर स्वामी रामानन्दजी के दिव्य व्यक्तित्व को अभिव्यक्त करते हुए लिखा है कि सर्वावतारी श्रीरघुनाथजी के समान ही स्वामी रामानन्दजी ने कलिमल ग्रासित विविध तापों से संतप्त भव-सागर में डूबने की चिन्ता से परम भयातुर जीवों को पार उतारने के लिए द्वितीय सेतु का निर्माण किया था।

रामानन्द रघुनाथ ज्यों दुतिय सेतु जग तरण कियो

इस पंक्ति के माधम से दिव्य दृष्टि सम्पन्न नाभादास जी ने स्वामी रामानन्दजी के समग्र व्यक्तित्व एवं कृतित्व को सूत्रात्मक रूप से प्रकट कर दिया है। अगस्त संहिता आदि के माध्यम से यह अत्यन्त प्रामाणिक मान्यता है कि स्वामी रामानन्दजी सर्वनियन्ता परमप्रभु श्रीरामजी के ही अवतार थे-

रामानन्दः स्वयं रामः प्रादुर्भूतो महीतले

वैदिक सनातन धर्म की यह सुदृढ़ मान्यता है कि परमेश्वर ही विभिन्न रूपों में अवतरित होकर धर्म की ग्लानि को दूर करते हुए, समस्त मानव जाति को परम मंगलमय पथ का पथिक बनाते हुए दिव्य जीवन प्रदान करते हैं, यह तो स्वाभाविक ही है क्योंकि वह संसार का निर्माता, पालक एवं संहारक है, सम्पूर्ण कर्मफल दाता है, सर्वनियन्ता है, सर्वाधार है, सर्वप्रेरक है। माता-पिता के समान ही संसार के समस्त जीवों के उद्धार की सतत चिन्ता परमेश्वर करते हैं। उनकी चिन्ता का ही सम्पूर्ण रूप से प्राकट्य, वेदों के रूप में हम सभी लोगों को प्राप्त है। जब कभी वेदानुमोदित अभ्युदय एवं निःश्रेयस का साधन धर्म शिथिलता को प्राप्त होता है तो भगवान् आचार्यों के रूप में अवतरित होकर स्व-प्रवर्तित धर्म से शैथिल्य को दूर करते हैं, उसे सर्वग्राह्य बनाते हैं, उसकी सर्व सुलभता का सम्पादन करते हैं तथा उससे सम्पूर्ण मानवता को संबद्ध कर जीवन की धन्यता के सम्पादन के लिए प्रयास करते हैं।

श्री रामजी ने सम्पूर्ण वैदिक मूल्यों को निगलने वाली आसुरी सम्पत्ति के विनाश के लिए शत योजन विस्तृत समुद्र में पुल बनाया था। यद्यपि परमेश्वर श्रीराम को आसुरी

सम्पत्ति के विनाश के लिए बानर-भालुओं के सहयोग की अपेक्षा नहीं थी तथापि एक मंगलमय संकेत प्रदान के लिए श्री रामजी ने सेतु का निर्माण कर उसके माध्यम से आसुरी सम्पत्ति के विनाश में (राक्षसों के) वानरों आदि को लगाया। जीवन को सम्पूर्णता प्रदान के लिए प्रत्येक जीवन में आसुरी सम्पत्ति का विनाश आवश्यक है, लेकिन प्रश्न है कि निरसन का अवलम्ब क्या हो? भगवान् ने सेतु निर्माण के माध्यम से संकेतित किया मेरे द्वारा निर्मित सेतु ही आसुरी सम्पत्ति को पराजित करने का मुख्य अवलम्ब होना चाहिए। सर्वश्रेष्ठ मार्ग के रूप में मेरे द्वारा परिवर्तित वेदानुमोदित मार्ग ही आसुरी सम्पत्ति का विनाश करते हुए भवसागर से पार ले जाने का श्रेष्ठ जहाज सिद्ध हो सकता है। इसी क्रम का अनुसरण करते हुए रामावतार स्वामी रामानन्दजी ने संसार के समस्त जीवों के परम कल्याण के लिए ईश्वर निःश्वासभूत, वेदों के सार सर्वस्व प्रपत्ति को (शरणागति) अनुपम रीति से प्रचारित-प्रसारित कर सभी के लिए भवसागर से पार जाने के लिए द्वितीय सेतु का प्राकट्य कराया। यद्यपि यह सेतु नवीन नहीं था, उसका अस्तित्व अनादि वेदानुमोदित था, तथापि व्याख्याताओं की अनुदारता के कारण प्रपत्ति स्वरूप परमोदार, परम-मंगलमय सेतु का लाभ सम्पूर्ण मुमुक्षुजनों को नहीं मिल पाता था। दूसरे वैष्णवाचार्य भी प्रपत्ति की महिमा वेदसार सर्वस्वता, परमोदारता से अनभिज्ञ नहीं थे। यथा समय उसका व्याख्यान भी करते थे तथापि प्रयोग में संकीर्णता का भाव बाधक था। स्वामी रामानन्द जी ने प्रपत्ति स्वरूप द्वितीय सेतु का प्रशस्त व्याख्यान भी किया तथा उसके लोकोत्तर परमोदार स्वरूप का प्रयोग भी किया। जिसका इतिहास साक्षी है। मानव कल्याण के इतिहास में यह एक अपूर्व क्रान्ति है तथा स्वर्णाक्षिरों में अंकित होने वाला तथ्य है। चर्मकार जाति में उत्पन्न रैदास जुलाहा जाति में उत्पन्न कबीर दास नाई जाति में उत्पन्न सेनजी जाट जाति में उत्पन्न धन्ना जी का धन्य जीवन स्वामी रामानन्दजी के द्वितीय सेतु प्रपत्ति के प्रयोग का देदीप्यमान उदाहरण है।

अनादि निर्गुण तथा सगुण रामभक्तिधारा के मूल प्रवर्त्तक भगवान् श्रीरामजी ही हैं, इसीलिए रामानन्द सम्प्रदाय के परमाचार्य के रूप में श्रीरामजी ही स्वीकृत हैं। स्वामी रामानन्दजी तो रामानन्द सम्प्रदाय के मध्यमाचार्य है। वैदिक सनातन धर्म में किसी भी परम्परा का मूल प्रवर्तक किसी व्यक्ति को स्वीकार नहीं किया जाता, क्योंकि संसार एवं ईश्वर के समान ही कल्याणमयी परम्परायें भी अनादि हैं। अनादि परम्पराओं का प्रवर्तक आदि कैसे हो सकता है? भक्ति मार्ग एवं प्रपत्ति मार्ग की सुलभता शीघ्र फलदायकता तथा आचार्य स्वामी रामानन्द के लोकोत्तर व्यक्तित्व एवं अदम्य उत्साह ने निर्गुण तथा सगुण राम-भक्ति गंगा को सम्पूर्ण देश में महल से झोपड़ी तक हिमालय से हिन्द महासागर तक, ब्राह्मण से चमार तक पहुँचाया तथा सभी को परम लाभ से मण्डित किया, तभी तो अध्यात्मिक मूल्यों के ह्रास की इस कल्पनातीत अवस्था में भी

सम्पूर्ण देश में रामानन्द सम्प्रदाय के सर्वाधिक मठ, सन्त, श्रीराम गुण गान, अखण्ड रामनाम संकीर्तन आज भी व्यवस्थित हैं।

दूसरे वैष्णवाचार्यों के समान ही अपूर्व शास्त्रीय पाण्डित्य एवं संस्कृत भाषा की विलक्षण दक्षता के मण्डित होते हुए प्रस्थानत्रयी पर आनन्द भाष्य के निर्माण के अतिरिक्त वैष्णवमताब्जभाष्कर, श्रीरामपटल, अध्यात्म रामायण आदि अनेक कालजयी मौलिक ग्रन्थों का निर्माण आचार्य श्री ने संस्कृत में किया। इसके बावजूद रामभक्ति की इस अमृतमयी गंगा को जन-जन तक पहुँचाने के लिए स्वयं तथा अपने शिष्यों को भी हिन्दी भाषा तथा अन्यान्य क्षेत्रीय भाषाओं के माध्यम से प्रचार-प्रसार के लिए उत्प्रेरित किया। जिसका इतिहास साक्षी है। राष्ट्र भाषा हिन्दी को वर्तमान समृद्ध एवं श्रेष्ठ जनोपयोगी स्वरूप प्रदान करने में स्वामी रामानन्दजी की उदार भावना ही उत्स है। आज भी किसी संत या परम्परा की कल्याणमयी भावधारा का स्वामी रामानन्द जी के समान व्यापक क्षेत्रों में प्रचार-प्रसार संप्राप्त नहीं है। अनादि वैदिक सनातन धर्म की मंगलमयी परम्पराओं को क्षत-विक्षत किए बिना ही स्वामी रामानन्दजी ने सभी के जीवन की सम्पूर्णता के लिए अपने कल्याण महाविद्यालय के परम यशस्वी द्वार को उद्घाटित कर दिया। इस अभियान ने सनातन धर्म को परमोदार तथा वस्तुतः मानवता पोषक सिद्ध किया एवं शताब्दियों पहले देश को विखंडित होने से बचा लिया।

सनातन धर्म की कई विशिष्ट परम्पराओं की मान्यता थी कि ब्राह्मण ही संन्यास का अधिकारी है, तथा संन्यास के माध्यम से ज्ञान प्राप्त कर मोक्ष का अधिकारी है। ऐसी मान्यताओं के आधार पर कल्याण व ईश्वर का दरवाजा अन्त्यज कुल समाज में जन्म लेने वाले रविदास आदि जैसे असंख्य जीवों का उद्धार संभव नहीं था। कुछ एक वैष्णवाचार्यों ने भक्ति मार्ग को भी अनुदार रूप में प्रस्तुत किया था। उनका मानना था द्विज (ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य) ही भक्ति का अधिकारी है। इस संकीर्ण कल्याण पथ पर भी समाज के असंख्य रविदास आरूढ़ होकर अपने जीवन को धन्य नहीं बना सकते थे। तभी तो आचार्य प्रवर स्वामी रामानन्दजी को, जो करुणा सिन्धु थे द्रवित होकर कल्याण का महाशंखनाद करना पड़ा।

(क) सर्वे प्रपतेरधिकारिणो मताः।

(ख) जाति पाँति पूछे नहिं कोई
हरि को भजै सो हरि का होई।

जैसे सूर्य एवं गंगा आदि पावन नदियों के दरवाजे सबके लिए उद्घाटित है, सबके लिए कल्याणप्रद है, वैसे ही ईश्वर का भी दरवाजा सबके लिए उद्घाटित होना चाहिए। वह तो करुणा सिन्धु हैं, जगत् का माता-पिता है, वह क्यों नहीं सबका कल्याण चाहेगा वह कैसे अनुदार हो सकता है? लौकिक माता-पिता भी अपनी दुर्बल

संतति के लिए अपेक्षाकृत अधिक कल्याण कामी होते हैं। भले ही माता-पिता विपन्न हों, स्वल्प सामर्थ्यशाली हों परमात्मा तो सभी प्रकार के दुर्गुणों से रहित पर दयालु है, उनमें वैषम्यलेश भी नहीं है।

स्वामी रामानन्द जी ने नारियों के लिए भी परमोदार भाव का प्रयोग किया, उन्हें भी अपने अपूर्व भाव धारा से जोड़कर जीवन की दिव्यता से मंडित कराया। पद्मावती एवं सुरसरी के रूप में इस उदार योजना का साक्षी इतिहास है। इन दोनों ही महिलाओं ने जीवन की सम्पूर्णता को प्राप्त कर लिया था तथा उस क्रम से जुड़कर असंख्य महिलाओं का उद्धार हुआ जो इतिहास के पन्नों में अंकित नहीं हो सका।

प्रतिष्ठित विद्वानों के मत के अनुसार स्वामी रामानन्द जी एक सौ ग्यारह वर्ष तक जीवित रहे और अगणित मनुष्यों को भक्तिधर्म के ऐश्वर्य से मंडित करने में उन्होंने गुरु के द्वारा दी गई आयु का सदुपयोग किया।

भक्ति साधना के श्रेष्ठ संवाहक के रूप में स्वामी रामानन्द ने अपने को अग्रसारित किया। भक्ति आन्दोलन (प्रस्थान) को उन्होंने एक उदारतर आधार दिया। उस आधार को असीम मानवता बोध के द्वारा उन्होंने एक नवीन आलोक प्रदान किया। इसके पीछे आचार्य स्वामी रामानन्द के जीवन और वाणी का जो अतुलनीय महात्म्य है, उसका वर्णन संभव नहीं। रामानन्द संप्रदाय के लक्ष-लक्ष साधकों ने भारतवर्ष को आध्यात्मिक साधन की जो विभूति दी है, वह सचमुच अपरिमेय है।

मध्ययुग के अधिकांश भक्त, साधक और रहस्यवादी संतों की भावधारा पर स्वामी रामानन्द का गंभीर प्रभाव पड़ा है। कबीर तो उनके साक्षात् शिष्य कहे जाते हैं। इसमें भी सन्देह नहीं कि गोस्वामी तुलसीदास की भक्तिधारा का मूल उत्स भी स्वामी रामानन्द की भावधारा में ही ढूँढ़ लिया गया। नानक, दादू, और बंगाल के गौड़ीय भक्तों पर भी स्वामी रामानन्द की भक्तिधारा का प्रचुर प्रभाव पड़ा था। एक दृष्टि से कहा जा सकता है कि उत्तर भारत का जो मध्यकालीन भक्ति साहित्य है उनके आदि पुरुष के रूप में स्वामी रामानन्द ही सर्वाधिक स्मरणीय व्यक्तित्व है।

दक्षिण भारत में भक्ति साधना की एक प्राचीनतर धारा थी। कुछ विद्वान् उस धारा को द्वापर युग के अंतिम चरण की उपज मानते हैं। नायनार शैव भक्तों और आलवार वैष्णव भक्तों की युगपत् भक्तिधारा दक्षिण भारत को अनेक सहस्राब्दियों तक आप्लावित किये रही। आलवार वैष्णवों के प्राचीन तमिल साहित्य को नाथमुनि, यामुनाचार्य और आचार्य रामानुज ने कालान्तर में नयी शास्त्रीय प्रतिष्ठा दी। रामानुज का विशिष्टाद्वैत सिद्धान्त उसी धारा का दार्शनिक प्रतिपाद्य बनकर भारतीय वेदान्त को नया आलोक प्रदान कर गया। उक्त तीनों ही आचार्य वर्तमान तमिलनाडु के निवासी थे और उसी अंचल के इर्द-गिर्द उनके जन्म स्थान थे, जिस अंचल को आलवार वैष्णव भक्तों

की गीतिधारा ने भक्ति का अभिनव रस प्रदान कर सरस बनाया था। इसलिए कबीर पंथ की उस प्राचीन अनुश्रुति को प्रमाणिक मानने में कोई कठिनाई नहीं होनी चाहिए, जिसके अनुसार भक्ति की जन्मभूमि को द्रविड़ देश के नाम से पुकारा गया था और उत्तर भारत में उसे नये सिरे से प्रतिष्ठित और प्रवाहित करने का श्रेय आचार्य रामानन्द को दिया जाता रहा है। अपने व्यक्तित्व और साधन भक्ति के बल पर रामानन्द ने उत्तर भारत में भक्तिधारा को किस प्रकार से एक नये आन्दोलन के रूप में विकसित किया, उत्तर भारत के भक्तों और साधकों के बीच आचार्य रामानन्द को जिस पूज्यभाव से निरन्तर स्मरण किया जाता रहा है, वह अपने आप में एक प्रामाणिक ऐतिहासिक तथ्य है।

सप्तशताब्दी वर्ष में अनुष्ठित मांगलिक कार्य

१. श्री रामनाम अखण्ड संकीर्त्तन

आचार्य प्रवर स्वामी रामानन्द ने राम-नाम संकीर्त्तन की महिमा का अपूर्व प्रचार-प्रसार किया तथा इसके माध्यम से असंख्य जीवों को धन्य जीवन प्रदान करवाया। राम नाम संकीर्त्तन में सभी का अधिकार है। किसी भी जाति, अवस्था, क्षेत्र, रूप-रंग, आकार-प्रकार, आहार-विहार, भाषा तथा स्वभाव से जुड़ा हुआ व्यक्ति राम नाम के संकीर्त्तन से जुड़कर जीवन को परम गन्तव्य तक पहुँचा सकता है। इसी परम भाव को ध्यान में रखकर वर्ष व्यापी महोत्सव के क्रम में वर्ष पर्यन्त अखण्ड राम नाम संकीर्त्तन तथा स्थान-स्थान पर विराट राम नाम संकीर्त्तन सम्मेलन समायोजित है।

२. सवा करोड़ राम नाम लेखन

शताब्दी महोत्सव प्रसंग पर आचार्य पीठ श्रीमठ से जुड़े तथा अन्यान्य मुमुक्षु जनों से आग्रह किया जा रहा है कि प्रत्येक भक्त सवा करोड़ राम-नाम लिखकर तथा महोत्सव समिति के माध्यम से भगवान श्रीराम एवं आचार्य प्रवर स्वामी रामानन्दजी के चरणों में अर्पित कर जीवन को धन्य बनाये। लेखन में जप से भी अधिक एकाग्रता सम्पन्न होती है। अनेक स्थानों पर राम नाम लेखन को सर्वश्रेष्ठ जप के रूप में प्रतिपादित किया गया है। सामान्य जीव अपनी सम्पूर्ण जीवन में करोड़ों की संख्या में कुछ भी प्रभु के चरणों में अर्पित नहीं कर सकता, लेकिन लेखन के माध्यम से राम नाम तो कर ही सकता है। जप-साधना मंडित अनेक संतों का ऐसा अनुभव है कि सवा करोड़ राम लेखन के बाद अवश्य श्रीराम जी का साक्षात्कार होता है। अतएव आप भी लिखें तथा लिखने के लिए दूसरों को प्रेरित करें।

३. प्रत्येक आश्रम में आचार्य प्रवर की प्रतिमा

आध्यात्मिक परम्परा में वस्तुतः उन्नति के लिए तीन गुरुओं के प्रति समर्पण, प्रणिपात एवं सेवा का विधान है।

पहला गुरु परमाराध्य सम्प्रदाय के प्रवर्तक ईष्ट देव ही होते हैं, जो रामानन्द सम्प्रदाय के भगवान श्रीराम हैं।

दूसरा गुरु उन्हीं का अवतार भूत आचार्य होते हैं, जो रामानन्दाचार्य के रूप में हमें प्राप्त हैं और इसी क्रम से प्राप्त अपना गुरु जिससे हमने दीक्षा प्राप्त किया है, वह तीसरा गुरु होता है।

आध्यात्मिक उत्कर्ष के लिए उत्तरोत्तर तीनों गुरुओं की सेवा की परमावश्यकता है।

आध्यात्मिक जीवन की आज परम विडम्बना यह है कि लोग अपने परम गुरु (ईष्ट देव) तथा अपने दीक्षा गुरु की ही सेवा करते हैं। आचार्य स्वरूप द्वितीय गुरु की सेवा से सर्वथा ही विरत हो गये हैं, जिसके बिना कल्याण कदापि भी संभव नहीं है अतएव हम सभी रामभक्तों का एवं सन्तों का परम कर्तव्य है कि हम आचार्य श्री कि प्रतिमा को वैदिक रीति से स्थापित करें तथा उनकी सेवा पूजा करें एवं अपनी आध्यात्मिक, यात्रा को अधूरापन से बचावें।

४. चित्र प्रदर्शनी

वर्षव्यापी एवं देशव्यापी महोत्सव प्रसंग पर जगह-जगह रामभक्ति परम्परा के धन्य जीवन के सन्तों एवं भक्तों के चित्रों की प्रदर्शनी भी समायोजित होगी। इसके माध्यम से आध्यात्मिक प्रेरणा, सम्प्रदाय की विशालता तथा राष्ट्रीय एकता के लिए संबल प्राप्त होगा।

५. जीवन वृत्त चित्रावली

आचार्य प्रवर के दिव्य जीवन वृत्तों के आधार पर एक चित्रावली का निर्माण संकल्पित एवं समायोजन के क्रम है। यह एक अत्यधिक प्रेरणादायी उपक्रम है। आज तक रामानन्द सम्प्रदाय में आचार्य जी का एक ही चित्र उपलब्ध है, जब कि एक जीवन में महापुरुषों के अनेक दिव्य तथा प्रेरणादायी लीलायें सम्पन्न होती हैं।

६. लीला प्रदर्शन

वर्षव्यापी सप्त शताब्दी महोत्सव पर श्रीमठ के द्वारा आयोजित वर्तमान आचार्यश्री के संरक्षण में यात्रा प्रसंग पर जगह-जगह पर भगवान श्री रामजी की लीला एवं आचार्य प्रवर स्वामी रामानंद जी की लीला का प्रदर्शन होगा।

भक्ति मार्ग में लीला का दर्शन एवं प्रदर्शन दोनों ही परम मांगलिक रूप से स्वीकृत है।

७. वर्षव्यापी-देशव्यापी राम भाव प्रसार यात्रायें

सर्वावतारी भगवान श्रीराम तथा आचार्य शिरोमणि स्वामी रामानन्द जी का अनुसरण करते हुए उन्हीं के भावों को सर्वत्र प्रचारित-प्रसारित करने के लिए वर्षव्यापी, राष्ट्रव्यापी यात्रायें समायोजित होंगी अतः इसमें भाग लेकर जीवन को धन्य बनावें।

आध्यात्मिक जीवन के प्रचार-प्रसार का सर्वश्रेष्ठ पोषक तत्व यात्रा है, जिसका अभी नितान्त अभाव हो गया है। श्रेष्ठ सन्त एवं ब्राह्मण विद्वान् भी अभी श्रेष्ठ नगरों की परिक्रमा में ही आजीवन व्यस्त रहकर बुझ जाते हैं।

८. श्रीराम तथा स्वामी रामानन्दजी के साहित्य का प्रकाशन

शताब्दी वर्ष में श्रीराम जी एवं आचार्य प्रवर की प्रेरणा एवं अनुकम्पा से एक अपूर्व साहित्य प्रकाशन की योजना है, जिस पर कदम आगे भी बढ़ चुके हैं, जिसका लाभ सभी रामभक्तों, सम्प्रदाय-निष्ठों एवं मुमुक्ष जनों को होगा।

९. श्रीराम यज्ञ

शताब्दी महोत्सव प्रसंग पर विभिन्न श्रीराम यज्ञों के क्रम में हवनात्मक यज्ञ भी स्थान-स्थान पर सम्पादित होंगे। यात्रा क्रम में आचार्य श्री के साथ काशी के सुप्रतिष्ठित ब्राह्मण विद्वानों की मण्डली साथ रहकर श्रीराम यज्ञ का राष्ट्रव्यापी समायोजन करायेगी।

१०. राम-भक्तों का अभिनन्दन

मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम को आदर्श मानकर जीवन के किसी भी क्षेत्र में रचनाशील, समाज के लिए समर्पित तथा सार्थक व्यक्ति का महोत्सव समिति की ओर से सम्पूर्ण देश में वर्ष पर्यन्त, अभिनन्दन किया जायगा। यह भी तो राम यज्ञ ही है तथा राम-राज्य की संस्थापना के लिए प्रेरणादायी उपक्रम है।

११. अखिल भारतीय भाषण तथा निबन्ध प्रतियोगिता

श्रीराम भाव से देश के सम्पूर्ण छात्रों को जोड़ने के लिए राष्ट्रव्यापी यह एक श्रेष्ठ प्रकल्प है। इसके माध्यम से छात्र श्रीराम तथा आचार्य प्रवर के संबंध में श्रवण मनन तथा गायन के लिए प्रस्तुत होंगे जिससे उनके अन्तःकरण में राम-भाव का प्रवेश होगा।

१२. राष्ट्रव्यापी सन्त सम्मेलन

वर्षव्यापी महोत्सव के क्रम में सम्पूर्ण देश में सन्त-सम्मेलन भी समायोजित होंगे। सम्मेलन में वैदिक सनातन धर्म की आचार्य परम्परा एवं सन्त परम्परा दोनों के ही सन्तों की भागीदारी होगी। निज कल्पित परम्पराओं के सन्त सम्मेलन से दूर रखे जायेंगे। आज-कल कल्पित ग्रन्थों एवं कल्पित परम्पराओं तथा कल्पित धर्माचार्यों की

अपूर्व बाढ़ आई हुई है, जिससे सन्त, धर्म तथा सद्-ग्रन्थ का वास्तविक स्वरूप आच्छादित हो गया है।

१३. सवा-अरब श्रीराम मंत्र का जप

रामानन्द सम्प्रदाय में श्रीराम मंत्र ही मुख्य रूप से जपनीय है। कल्याण के मुख्य साधन के रूप में आचार्य प्रवर स्वामी रामानन्द जी ने श्रीराम मंत्र को जपने के लिए मुमुक्षु जनों को प्रेरित किया था। शास्त्रों के अनुसार यह सभी मंत्रों के राजा के रूप में मान्य है। स्वामी जी के जीवन चरित्र में ऐसा वर्णित है कि उन्होंने अपनी दिव्य जीवन-लीला के तिरोधान के पहले विराट आध्यात्मिक समायोजन किया था, उसमें सवा अरब राम मंत्र का जप भी समनुष्ठित हुआ था। उसी भाव को ध्यान में रखकर सवा अरब राम मंत्र का जप महोत्सव क्रम में संकल्पित है। जप गुरु परम्परा से प्राप्त राम मंत्र वाले साधक ही करेंगे।

१४. डाक टिकट

सप्त शताब्दी महोत्सव के क्रम में आचार्य श्री के ऊपर डाक टिकट जारी करवाने के लिए भारत सरकार को भी प्रेरित किया जायेगा।

१५. भगवान श्रीराम एवं आचार्य श्री संबंधी कैसेटों का निर्माण

किसी भी कल्याणकारी भाव को प्रचारित-प्रसारित करने के लिए आज की इस दुनिया में कैसेटों की श्लाघनीय भूमिका है। अतएव महोत्सव समिति ने विभिन्न कैसेटों के निर्माण की योजना बनायी है जिनका निर्माण प्रारम्भ भी हो चुका है।

१६. आचार्यश्री पर चलचित्र

आचार्य श्री से सम्बंधित चलचित्र निर्माण के लिये सूचना विभाग भारत सरकार को भी प्रेरित किया गया है तथा अन्यान्य साधनों से भी चलचित्र निर्माण का प्रयास किया जा रहा है। इसके माध्यम से अधिकाधिक लोगों को स्वामी जी के आध्यात्मिक प्रयास एवं स्वरूप का ज्ञान होगा तथा प्रेरणायें प्राप्त होंगी।

१७. द्वादश-भागवत-पीठों की संस्थापना

द्वादश भागवत स्वामी रामानन्दजी के सम्पूर्ण रीति से उत्तराधिकारी थे। स्वामी जी के जीवन काल तथा उनके साकेत गमन के बाद द्वादश महाभागवतों ने वैदिक सनातन धर्म के सार सर्वस्व राम-भाव के प्रसार में अपने को सम्पूर्ण रीति से अर्पित कर दिया था, जिसके कारण राम-भाव प्रसार गंगा समुद्रायित हो चली थी। इतिहास साक्षी है जो आज भी अनुभूति का विषय है। अतएव उनके पीठों की स्थापना परमावश्यक है। इसी क्रम में वर्तमान आचार्य श्री ने सन् १९९२ के महाकुम्भ पर्व पर उज्जैन में सेन भक्ति पीठ की संस्थापना किया। पीठाधिपति के रूप में परम उदार तथा सिद्ध संत स्वामी

अचलानन्द जी को प्रतिष्ठित किया था जो सम्प्रति राम भाव प्रसार का श्रेष्ठ अभियान संचालित कर रहे हैं।

१८. हरिजनों एवं अति पिछड़ी जातियों के बीच धार्मिक अनुष्ठान

धार्मिक तथा आध्यात्मिक भावों का भी शहरों में ही केन्द्रीकरण होता जा रहा है। अधिकांश आयोजन बड़े शहरों में आयोजित होते हैं। बड़े सन्तों तथा विद्वानों का समागम भी बड़े शहरों में ही सुना तथा देखा जाता है, जो सनातन धर्म की व्यापकता को क्षीण कर रहा है तथा धर्मपाखंडियों को वैदिक सनातन धर्म के महल में प्रवेश का अवसर प्रदान कर रहा है। समाज के पिछड़े हुए लोगों को तथाकथित कुछ समाज सुधारक तथा नेता लोग भी गुमराह कर रहे हैं तथा समाज की मुख्य धारा से (कल्याणमयी) विलग कर रहे हैं। उन्हें कुछ प्राप्त भी नहीं हो रहा है। वेद, शास्त्रों तथा राम, कृष्ण आदि से विलग होकर किसको क्या मिल सकता है?

संत प्रवर रविदास जी को वैदिक सनातन धर्म की परम मंगलमयी धारा से तथा परम प्रभु श्रीराम से जुड़कर ही दिव्य जीवन प्राप्त हुआ, रामजी की निंदा कर नहीं, शास्त्रों से मुख मोड़कर नहीं। अतएव समिति ने हरिजनों तथा अति पिछड़ों के बीच भी जाकर राम-भाव का अमृत पिलाने का संकल्प किया है, जो तीव्रता से विघटन के कगार पर पहुँचे देश के लिए परमौषधि का काम करेगा।

समापन महोत्सव

वर्षव्यापी तथा देशव्यापी सप्तशताब्दी महोत्सव के समापन अवसर पर विविध मांगलिक समायोजन संकल्पित हैं, जिनमें श्रीराम महायज्ञ सर्व प्रमुख है। काशी में धर्म-सम्राट स्वामी करपात्री जी महाराज द्वारा समायोजित महायज्ञ के बाद लगभग ५० वर्षों में कोई यज्ञ उस रूप में सम्पन्न नहीं हुआ जिसमें पूर्ण वैदिक गरिमा के साथ-साथ भव्यातिभव्य तथा विशालतम स्वरूप प्रगट हुआ हो। श्रीराम महायज्ञ उसी रिक्तता का पूरक होगा। पुरोहित तथा यजमान दोनों ही वैष्णव होंगे। यजमान को सन्ध्या वन्दन, शिखा-सूत्र, चन्दन से युक्त होना पड़ेगा। भक्ष्याभक्ष्य का पूर्ण विवेकी होना पड़ेगा। यज्ञ मण्डप में किसी भी यजमान तथा पुरोहित से भिन्न का प्रवेश वर्जित होगा। सभी वैष्णवाचार्यों तथा वैष्णव सन्तों के ग्रन्थों का परायण भी होगा। उसी क्रम में देश के सभी मान्य वैष्णवीय परम्परा के आचार्यों तथा सन्तों का विराट सम्मेलन भी होगा। एक अद्भुत वैष्णव-महाकुम्भ का दर्शन काशी में लोग पा सकेंगे।

श्रीमठ सेवाव्रती स्तम्भ

सनकादिकाचार्य श्री म. रघुवीरदासजी, श्री म. नरोत्तमदास जी, श्री म. श्यामदास जी, श्री मंगलानन्द सरस्वती अवधूत जी, बालयोगी स्वामी उमेशनाथ जी, श्री म.

भगवानदास जी, श्री म. दयारामदास जी, योगीराज बलरामदास जी, श्री म. धरमदास जी, श्री म. धीरजराम बापू, श्री म. शशिकान्त बापू, श्री म. जयरामदास जी, श्री म. शत्रुघ्नदास जी, भागवत मर्मज्ञ श्यामाशरण जी, श्री म. ईश्वर दास जी महात्यागी, श्री म. गोपालदास जी महात्यागी, श्री म. रामानन्ददास जी, श्री म. मैथिलीशरण जी, श्री म. निर्मला बहनजी, श्री म. रामरतनदास जी रामस्नेही, श्री म. रामकृपालदास जी, श्री म. राम मनोहरदास जी, श्री म. बलरामदास जी महाराज, श्री म. निरंजनदास जी, श्री म. गोपालदास जी, श्री म. अयोध्यादास जी, श्री म. वैदेहीशरण जी, श्री प्रेमदास जी महाराज श्री रामेश्वर निखरा, श्री ललित जैन, श्री प्रकाश सोनकर, श्री रामचन्द्र अग्रवाल, श्री कृपाशंकर शुक्ल, श्री तुलसी मनवानी, श्री दिनेश मित्तल, श्री विजयनारायण राय, श्री लक्ष्मी नारायण दयानन्द कपूर, श्री राजेन्द्र निमरानियाँ, श्री एम. एल. जोशी, श्री विश्वम्भर पुरोहित, श्री हरनारायण पुरोहित, श्री वृजरत्न जोशी, श्री विनायक पाण्डेय, श्री प्रवीण सिंगला, श्री देवचन्द भाई, श्री रमणीक भाई, श्री भरत देसाई, श्री रतन लाल सिंगला, श्री खरेती लालजी, श्री अशोक बधवा, श्री फकीर चन्द बंसल, श्रीसंतराम गोयल, श्री सुरेश मित्तल, श्रीरामधारी सिंगला, श्री देशराज गुप्ता, श्री बलदेव सिंगला, श्री अमरनाथ सिंगला, श्री कृष्ण कुमार सिंगला, श्री साधुराम शर्मा, श्री रामभाई, श्री बिधानचन्द्र सनगही, श्री फूलन बाबू, श्री सुधीर मिश्रा, डॉ. सज्जन सिंह, समानामल जी, ठाकुरदास जी, बाबूभाईसिंघानिया, श्रीकमल राठी, श्री राजेश पटेल, श्री हेमराज वैष्णव, श्री वेणीप्रसाद अवस्थी, श्री प्रकाश पाठक, श्री श्याम सुन्दर तिवारी, श्री रामाकान्त तिवारी, श्री शंकरलाल तिवारी, श्री राधेश्याम शर्मा, राजू सेठिया, श्री सन्दीप बालकृष्ण पवार, श्री द्वारिकानाथ राठी।

महिला मण्डल

सुश्री यशोदा देवी, श्रीमती तारा पाठक, श्रीमती चम्पा ताई, श्रीमती स्नेह जोशी, श्रीमती विजय शर्मा, श्रीमती उमा सूद, सुश्री मधु जी, सुश्री रानी तिवारी, श्रीमती गीता विन्दल, श्रीमती लक्ष्मी मनवानी, श्रीमती सुजाता कुलवाल, श्रीमती द्रौपदी अडवाणी, श्रीमती उमा भाटिया, श्रीमती यशोदा भट्टड़, श्रीमती ललिता छतवाल, श्रीमती शबाना सुहेल।

●

सप्तशताब्दी महोत्सव : रामशाही परिकल्पना

सम्पादक

११ दिसम्बर १९८८ में रामानंदाचार्य पीठ पर स्वामी श्री रामनरेशाचार्य का अभिषेक हुआ। ठीक १२ वर्षों बाद रामानंदाचार्य की सात सौवीं जयन्ती आसन्न थी। सनातन हिन्दू परम्परा के अनुसार आध्यात्मिक क्षेत्र में किसी भी साधक के लिए बारह वर्ष का समय एक युग के रूप में मान्यता प्राप्त होता है। वर्तमान रामानंदाचार्य श्री रामनरेशाचार्य जी की साधना का एक युग सन् २००० ईस्वी में अपनी पूर्णता को प्राप्त कर रहा था। ऐसे दुर्लभ क्षण बिरले व्यक्ति के जीवन में ही आते हैं। परमाचार्य प्रभु श्रीराम की प्रेरणा से यह शुभ संकल्प स्वामी जी के मन में रामानंदाचार्य पद पर प्रतिष्ठित होते ही विकसित होने लगा था। अतः उन्होंने सप्तशताब्दी महोत्सव के ठीक एक वर्ष पूर्व १९९९ में विचार-विमर्श हेतु गोपालदास मित्तल, विष्णु बिंदल, सतीश राय और दयासिंधु शर्मा को बुलाया। महाराज श्री के श्रीमुख से वर्षव्यापी, देशव्यापी तथा विशाल स्वरूप वाली जयंती की परिकल्पना सुनकर सभी सदस्यों ने एक स्वर से इस कार्यक्रम हेतु अपनी असमर्थता जतायी। इनमें से कोई वर्षपर्यन्त चलने वाले महोत्सव में लगने वाले श्रम से डर रहा था, कोई धन के अधिक खर्च होने से भयभीत था तो कोई राम जी और स्वामी जी की अदृश्य शक्ति पर विश्वास नहीं व्यक्त कर पा रहा था। पर श्रीराम जी की प्रेरणा तथा स्वामी जी के मूल्यों, स्थापनाओं को आगे बढ़ाने का दृढ़ संकल्प इन समस्त भौतिक झंझावातों पर विजय प्राप्त करता हुआ आगे बढ़ा और श्री रामनरेशाचार्य जी ने उक्त मूल्यों की संस्थापना हेतु अपने परम दृढ़ संकल्प व्यक्त करते हुए कहा कि सप्तशताब्दी का आयोजन होगा, विशाल पैमाने पर होगा, देश व्यापी होगा, समारोह की तैयारी की जाय। स्वामी जी के इन दृढ़ संकल्पों में परमाचार्य श्रीराम की कृपा और मध्यमाचार्य स्वामी रामानंदाचार्य की अहैतुकी कृपा आद्यंत प्रेरणादायक बनी रही। इसी को रामशाही परिकल्पना कहते हैं।

जगत् गुरु पद पर स्वामी रामनरेशाचार्य को प्रतिष्ठित हुए अभी बारह वर्ष भी नहीं पूर्ण हुए थे कि इतने महान् कार्य का दायित्व अकस्मात आना उनकी साधना और धैर्य के लिए एक बड़ी चुनौती थी। किसी भी कार्य की संसिद्धि के लिए भौतिक संसाधनों का होना अनिवार्य होता है। प्रायः देखा जाता है कि लौकिक जीवन में संसाधन एकत्रित होने के उपरांत ही संकल्प पूरे होते हैं, पर धार्मिक और आध्यात्मिक

कार्यों में संकल्पबद्ध होना ही महत्वपूर्ण होता है। इस महोत्सव में भी पूर्वाचार्यों की कृपा महाराज श्री के संकल्पों को बलवती बनाती रही। किसी भी संकल्प के दो महत्वपूर्ण पहलू होते हैं धन की पवित्रता और आचार की शुचिता। अपवित्र धन का निवेश कार्यसिद्धि के लिए महत्वपूर्ण हो सकता है पर युग-युगांतरों के लिए भावसिद्धि का पूर्ण होना, साधन (धन) की शुचिता पर ही निर्भर करता है। सम्पूर्ण महोत्सव में आचार्य श्री ने इन पक्षों पर विशेष ध्यान दिया। महोत्सव समिति के अध्यक्ष और तत्कालीन म. प्र. शासन के मुख्यमंत्री श्री दिग्विजय सिंह ने महोत्सव पर्यन्त अनेक दृष्टियों से सेवा की। दिग्गी बाबू की विनम्रता यह कि इसका दम्भ कभी नहीं रहा और बराबर यह कहते रहे कि मैंने तो कुछ किया ही नहीं। महाराज श्री की कोई सेवा ही नहीं हो सकी। महोत्सव के उपरांत महाराज श्री के यह कहने पर कि अध्यक्ष के रूप में आपको पूछना चाहिए कि कितना धन कहाँ लगा, कितने धन की अभी आवश्यकता है। जब कोषाध्यक्ष से यह बात दिग्गी बाबू ने कही तो उनकी भावनाएँ पूर्णतः राममय हो गयीं और धन के वापस आने की प्रत्याशा भी रामभाव में विलीन हो गयी। सम्पूर्ण महोत्सव में धन और आचार की शुचिता ने सप्तशताब्दी समारोह को एक अविस्मरणीय क्षण बना दिया।

।। जय जवान ।।

ज.गु. रा. श्रीरामनरेशाचार्य

किसी भी समायोजन की सम्पूर्णता के लिये विभिन्न कारणों के मध्य में धन की महत्त्वपूर्ण भूमिका है। सम्पूर्णता को धनोपार्जन का संसाधन प्रभावित करता है। अतएव संसाधन विशुद्ध होना चाहिए। उपार्जन की प्रक्रिया शास्त्र-राष्ट्र एवं समाज से मान्य हो। उत्पादक व्यक्ति भी आचारशुचिता से मण्डित हो। सप्तशताब्दि महोत्सव की सम्पूर्णता के लिए भी मेरे मन में विशुद्ध धन की चिन्ता थी। सोचता रहता था कहाँ से शुरुआत होगी? शुभारम्भ अतीव समीप था। तब तक रमा अग्निहोत्री पत्नी डॉ. विनोद कुमार अग्निहोत्री, पड़ाव, काशी ने सुअवसर पाकर कहा, महाराजश्री मेरे बेटे प्रशान्त ने कहा है, "माँ यदि आपका मन शताब्दि महोत्सव में सेवा के लिए हो तो मैं आपकी इच्छा के अनुसार रुपये सम्प्रेषित कर दूँगा।" ऐसा सुनकर मेरा रोम-रोम आह्लादित हो गया। परम प्रभु श्रीरामजी की अटूट कृपा की अनुभूति हुई। अन्यथा ऐसा पवित्र धन कहाँ से आता? सेना सेवा का धन भी अत्यन्त पवित्र है। जैसे भक्त सम्पूर्ण जीवन परमेश्वर सेवा में समर्पित कर देता है वैसे ही सैनिक अपना सम्पूर्ण जीवन भारत माता की सेवा में समर्पित कर देता है। सर्वदैव प्राणों को हथेलियों पर रखकर पूर्ण समर्पण, अनुपम उत्साह तथा तत्परता से अपने रोम-रोम क्षण-क्षण तथा श्वास-श्वास से प्रत्येक क्रिया को परमेश्वर स्वरूपभृता भारतमाता की सेवा में अर्पित करता है। ऐसे ही समर्पित अपने वानर सैनिकों को श्रीरामजी ने सखाभाव से ग्रहण किया था। शताब्दि महोत्सव की सम्पूर्णता में इस शुभारम्भ की भूमिका अतीव स्पष्ट थी। प्रशान्त अग्निहोत्री अभी वायु सेना में विंग कमाण्डर हैं तथा निरन्तर उनका रामभाव भारतमाता की सेवा के साथ बढ़ रहा है। जीवन का प्रत्येक भाव रामभाव के परमपथ पर दौड़ रहा है, निश्चित रूप से यह प्रभु कृपा से परम ऊँचाई को प्राप्त होगा, ऐसा दृढ़ विश्वास है। बार-बार यही मन में उमड़ता-घुमड़ता है, जय जवान-जय जवान।

धन धर्म के लिए तथा धर्म परम मंगल रामभाव के लिए

सप्तशताब्दि महोत्सव के सम्पादन के लिए धन संग्रह की सभी कुरीतियों से बचकर धन को ग्रहण किया गया। श्रीमठ की ओर से धन संग्रह का कोई भी अभियान पूरे वर्ष में तथा पूरे देश में नहीं चलाया गया। लम्बे काल से पूर्ण समर्पण के साथ सेवारत भक्तों को भी प्रेरित कर धनसंग्रह नहीं हुआ, जो भी जैसा भी लाया, वैसा ही

सम्मान एवं प्रेम से ग्रहण किया गया। कार्यक्रम के शुभारम्भ से समापन तक मैंने किसी भी व्यक्ति की धनीय सेवा के आधार पर कोई भी प्रतिक्रिया नहीं किया, किसी भाव का उदय अपने अन्तर-पटल पर नहीं होने दिया। देशव्यापी तथा वर्षव्यापी शताब्दि महोत्सव के द्वारा किसी एक व्यक्ति के मन में भी आर्थिक दुर्भाव प्रकट नहीं हुआ।

धन परम मंगलमय महोत्सव के सम्पादन के लिये था, न कि महोत्सव धन समृद्धि के लिए। वैसे भी जब से मैं श्रीमठ में आया हूँ, कभी भी श्रीमठ धन संग्रह के लिये किसी के दरवाजे पर नहीं गया। शुभारम्भ के अवसर पर पं. लोकपति त्रिपाठी के संरक्षण में कुछ काशी के वरिष्ठ लोग धन संग्रह के लिये उद्यत हुये थे, परन्तु विशेष सफलता के अभाव में निष्प्रभ होकर घर बैठ गये। मैंने उनका उत्साह बढ़ाया। रामजी की कृपा से सब हो जायेगा। चिन्ता की बात नहीं, ऐसा ही हुआ। धनसंग्रह में व्यस्त महानुभाव काशी के वरिष्ठ नागरिक थे, फिर भी उनके धनसंग्रह अभियान को लोगों ने महत्त्व नहीं दिया। उन लोगों ने भी अपने स्वरूप के अनुसार कुछ भी नहीं किया। यह उनका दुर्भाग्य ही था। कार्यक्रम तो पूर्ण गरिमा के साथ समाप्ति को प्राप्त हुआ।

आर्थिक मर्यादा का अनुमान इसी से लगाया जा सकता है कि श्रीमठ की प्रवृत्तियों के प्रशस्त स्तम्भ गोपालदास मित्तल (भाईजी) तथा विष्णु विन्दल को मैंने शुभारम्भ के छः महीने बाद शिमला में पहली सेवा के लिए प्रेरित किया जिसकी मात्रा मात्र ३० हजार रुपये थी।

विष्णु विन्दल ने पूरे कार्यक्रम में अपनी शक्ति तथा उदारभावना के अनुसार सेवा किया। कार्यक्रम की समाप्ति वेला में कुछ धन की अतिरिक्त अपेक्षा थी, जिसको पूरा किया विष्णु विन्दल ने, लेकिन उनके दान एवं उदारता का अभिनय अतीव निम्न स्तर का था। बार-बार बोलते रहे यह धन लौटना चाहिए, इसे बाद में भी बोला जा सकता था, बोले बिना भी मैं ऐसा ही मान रहा था कि लौटाना है। वैसा बोलकर विन्दल ने अपने गंगाजल स्नात शरीर को नाला जल में भिंगो दिया।

कार्यक्रम के बाद मैं पुनः-पुनः याद दिलाता था, दुहराता था। विष्णु प्रस्तुत करो स्वसमर्पित धन का विवरण, लेकिन वे समर्पित नहीं कर सके। अन्ततोगत्वा भोपाल के प्रवासकाल में एक दिन मैंने मध्य प्रदेश के मुख्यमंत्री दिग्विजय सिंह (दिग्गीबाबू) को बुलाया तथा उसी काल में विष्णु को भी। दोनों की उपस्थिति में मैंने दिग्गीबाबू को कहा, आप पूरे कार्यक्रम के अध्यक्ष थे, आपने समापन के बाद पूछा नहीं, क्या बढ़ा, क्या घटा। दिग्गीबाबू ने श्रेष्ठ गरिमा का निर्वाह करते हुए कहा, मैं इतना धृष्ट तथा अमर्यादित नहीं हुआ कि आप से हिसाब माँगता, जो बढ़ा वह रामजी का, जो घटा वह मेरा।

इसके बाद मैंने कहा समापन के अवसर पर कुछ विष्णु के यहाँ से आया था,

इनसे पूछिये एवं पूरा कीजिए, दिग्गीबाबू ने विष्णु को अपने से भावपूर्ण अवस्था में जोड़कर कहा, आपका कितना आया है? बतलाईए। आप बहुत सेवा करते हैं, भाग्यशाली हैं, मैं तो चाह कर भी नहीं कर पाता हूँ। विष्णु की सम्पूर्ण धन लिप्सा दिग्गीबाबू की भाव के गंगा में प्रवाहित हो गयी। वे बोले आपकी कृपा छोटे भाई पर बनी रहे यही कामना है और कुछ नहीं। रामजी का धन राम जी के काम लग गया।

शताब्दि महोत्सव समिति की सभा मध्य प्रदेश भवन दिल्ली में दिग्गीबाबू की अध्यक्षता में हो रही थी। मैं भी वहाँ समुपस्थित था। सभा समापन के बाद दिग्गीबाबू-विष्णु तथा मैं एक स्थान पर बैठे थे। दिग्गीबाबू ने कहा विष्णुजी (कोषाध्यक्ष) कितना धन चाहिए, मुझे बतलाइए, मैं अपने लोगों से दिलवा दूँगा। विष्णु अतीव प्रसन्न हो गए, उन्होंने कहा, बड़ी कृपा होगी ऐसा ही होना चाहिए। इसके बाद विष्णु शंका समाधान के लिए चले गये। मैंने दिग्गीबाबू से कहा, कार्यक्रम को मेरे समर्पित भक्तों द्वारा सम्पन्न होने दीजिए जब कोई बड़ी समस्या होगी, राघवजी पूरा करेंगे, आपके माध्यम से, राज्य या राष्ट्रस्तर पर झोली घुमाने की आवश्यकता नहीं। यह निर्लोभ भाव तथा ईश्वरीय विश्वास दिग्गीबाबू को बहुत अच्छा लगा। वे रोम-रोम से भाव विह्वल हो गए।

अपनी प्रशासनिक दक्षता एवं सम्पूर्ण पवित्रता से अनुपम प्रशंसित जीवन को प्राप्त धीरेन्द्रराय महोत्सव के समीपवर्ती काल में ही श्रीमठ से जुड़े थे। एक दिन चर्चा के क्रम में उन्होंने कहा बाबा घी की व्यवस्था हो गयी है? मैंने कहा हुई तो नहीं, परन्तु हो जायेगी।

कार्यक्रम को समाप्ति के बाद उन्होंने पूछा बाबा सब हो गया। मैंने कहा सब हो गया। तब उन्होंने बतलाया कि मेरे एक मित्र सरदार जी हैं जिनकी सेवा मैं करता रहा हूँ। वे बड़ी डेयरी के मालिक हैं बोलते रहते हैं, कहीं घी की जरूरत हो तो २-४ सौ टीने की सेवा की जा सकती है। मैंने पूछा था लेकिन आपका तरीका एवं विश्वास ही सही था। धीरेन्द्र राय ने शुभारम्भ तथा समापन पर १०१-१०१ रुपये दिये, जिसे मैंने करोड़ों रुपये के रूप में लिया। यही तो रामराज्य विस्तार की कुञ्जी है।

शताब्दि महोत्सव के समापन पर शतमुख कोटि होमात्मक श्रीराम महायज्ञ में दो कुण्डों की सेवा जे. के. सीमेन्ट के वरिष्ठ अधिकारी बाजला जी एवं सरावगी जी ने किया। प्रत्येक कुण्ड की दक्षिणा ५१००० रु. मात्र थी। जे. के. सीमेन्ट ग्रुप की ओर से कोई सेवा नहीं हुई। समापन महोत्सव के बाद सरावगी जी को यह स्मरण पीड़ा देने लगा। अवश्य ही सेवा होनी चाहिए थी, क्योंकि श्रीमठ के साथ विगत कई वर्षों से जे. के. सीमेन्ट परिवार का श्लाघनीय सम्बन्ध है।

सरावगी जी ने अपनी पीड़ा विष्णु को पहुँचाया, विष्णु ने मुझे। मैंने कहा– श्रीराम

जी की कृपा से सब कुछ हो गया है, अब तो कुछ भी नहीं चाहिए। बार-बार दोनों ओर से समानभाव दुहराये जाते थे। कोई समाधान नहीं निकल रहा था। सरावगी जी ने यह भी कहा कि पाँच लाख तक की सेवा सेठ लोगों से पूछे बिना हो सकती है। यदि अधिक सेवा की आवश्यकता हो तो सेठ जी से पूछ कर की जायेगी, लेकिन मैंने पुन: मना कर दिया। सरावगी जी लगातार अपने सेवा भावों के अनुसार लगे रहे, मैं मना करता रहा। अन्ततोगत्वा उनके अचल तथा श्रेष्ठभावों के अनुसार मैंने स्वीकृति प्रदान कर दिया, तथा पाँच लाख रुपयों को विष्णु के यहाँ ही रहने दिया। मैंने विष्णु से कहा आप सदैव सेवारत रहते हैं, अतएव आपके पास रहे यही उपयुक्त है। उन्होंने थोड़ी-बहुत आनाकानी के साथ स्वीकार कर लिया। वैसे तो समापन के बाद अधिक तंगी थी ही। मुझे प्रभु कृपा से उपर्युक्त मार्ग ही राम भाव का लगा। तथा मैंने वैसा ही किया।

दिग्गीबाबू ने अध्यक्ष के रूप में शुभारम्भ से समापन तक कार्यक्रम को अधिक बल प्रदान किया जैसा उनका पुण्य था, जैसी प्रेरणा ईश्वर की ओर से उन्हें हुई। मैं उनसे संतुष्ट तथा आश्वस्त था कि जब मैं मागूँगा तब अवश्य देंगे। परन्तु मैंने उनसे कभी भी कुछ भी नहीं माँगा तथा सबकुछ हो भी गया। यही तो रामभाव है। श्रीकान्त पाठक एवं जयश्री पाठक श्रीमठ परिवार के अनमोलरत्न हैं। सम्पूर्ण जीवन आचार शुचिता तथा अर्थशुचिता से मण्डित हैं। पारिवारिक व्यवसायिक तथा सामाजकि जीवन भी पूर्णत: रामभाव से ओत-प्रोत है। समस्त टाटा ग्रुप इनकी दक्षता-पवित्रता तथा पूर्ण समर्पण से गद्गद है। गुरु तथा ईश्वर निष्ठा भी अनुपम है।

महोत्सव शुभारम्भ के पहले एक दिन मैंने श्रीकान्तपाठक को कहा, छुट्टी बचाकर रखना, श्रीराम महायज्ञ में यजमान के रूप में बैठना है, पाठक ने कहा नहीं छुट्टी मिलेगी तो नौकरी ही छोड़ दूँगा। मैं चाहता था, शिखासूत्र तथा सन्ध्याचन्दनादि से मण्डित जीवन के लोग ही यज्ञ में भाग लें। मैंने कभी भी श्रीकान्त पाठक को सेवा के आर्थिक स्वरूप को नहीं बतलाया, परन्तु उन्होंने अपने पवित्रधन से बड़ी सेवा एक लाख रुपये की किया। मेरी आज्ञा होती तो वे और भी कर देते, लेकिन मैंने वैसा नहीं किया। सम्पूर्ण समायोजन रामभाव विकास के लिये थे, धन संग्रह के लिये नहीं। समायोजन में कहीं से भी भागीदारी करने वालों का रामभाव अनुपम रीति से बढ़ा। मैंने प्रयास करके उन्हीं लोगों को यज्ञ का यजमान बनाया, जो शिखा-सूत्र तथा सन्ध्यावन्दनादि से गहरी निष्ठा से युक्त थे। कुण्ड यजमान के बिना रहे, परन्तु संस्कार हीनों को मैंने यजमान नहीं बनाया तथा किसी भी यजमान ने अधिक लोलुपता या शोषण को प्रकट नहीं किया। कई यजमानों को पता ही नहीं था, क्यों सेवा करनी है। कई लोगों ने तो बहुत बाद में जहाँ-तहाँ से जानकारी प्राप्तकर सेवाव्रत को पूर्ण किया।

जगद्गुरु रामानन्दाचार्य सप्तशताब्दि महोत्सव वर्षव्यापी तथा देशव्यापी था।

महोत्सव के सम्पूर्ण यात्रा क्रम में कहीं भी साक्षात् या परम्परा के द्वारा किसी को भी किसी रूप में सेवा के लिए प्रेरित नहीं किया गया। यात्रा क्रम में हमलोग "बढइया" गए। यह बिहार ही नहीं अपितु देश के कुछ एक बड़े गाँवों में है। यह गाँव आबादी ही नहीं, अपितु कृषि-शिक्षा-राजनीति-स्वास्थ्य आदि क्षेत्रों में भी परिगणनीय गाँवों में भी प्रशस्यतर है। इसे धार्मिक संसार में तीर्थ की श्रेणी ही नहीं अपितु रामभक्ति परम्परा के द्वारा दूसरी अयोध्या का स्वरूपप्राप्त था। रामानन्द सम्प्रदाय के पचासों सुसम्पन्न आश्रम यहाँ विराजमान थे, जिनके द्वारा निरन्तर रामभक्ति गंगा प्रवाहित होती रहती थी। गाँव के छोटे से बड़े किसान या अन्य अवध की जीवनपद्धति से ही जीवन जीते थे। अपनी देवी जी के मन्दिर का जीर्णोद्धार अपूर्व रूप से गाँव के लोगों ने कराया है, शायद ही ऐसा मन्दिर भारत के किसी गाँव में इन दिनों में बना हो। यह गाँव भूमिहार ब्राह्मणों के बाहुल्य-गौरव वर्धक तथा राजधानी के रूप में मान्य है।

मैं दल-बल के साथ इस गाँव में गया। सम्प्रदाय के ही किसी आश्रम की धर्मशाला में डेरा डाला। यात्रा के सभी अनुष्ठानों-देवाराधन अखण्ड भगवनाम संकीर्तन-सत्संग-पत्रकार गोष्ठी, क्षेत्रीय मुख्य देवों का पूजन, हरिजन सम्मेलन, रामभावाभिषिक्त महानुभावों का अभिनन्दन, हवनयज्ञ आदि का सम्पादन सविधि तथा गरिमा के साथ सम्पादित हुआ, परन्तु तीनों दिनों के प्रयास में किसी भी व्यक्ति से कोई याचना नहीं हुई। सब कुछ स्वाभाविक तथा धर्मरीति से सम्पन्न हुआ। वहाँ के वर्तमान सांसद राजोसिंह मेरी शिष्या के ससुर थे तथा जाने अनजाने में और भी बहुत से लोगों को खोजा जा सकता था। दूसरी अयोध्या में खोजने में क्या कठिनायी होती। लेकिन मैंने पूर्ण रामभाव का प्रयोग कर वैसा कुछ भी नहीं किया। जबतक लोगों का भाव जगा, तब तक हम लोग चलते बने। कोई आक्रोश, कोई निन्दा, कोई पश्चाताप नहीं, केवल रामभाव-रामभाव ऐसे ही सम्पूर्ण यात्रा अभियान को सम्पादित कर रामभाव का प्रसार किया गया।

कृपावर्षी श्रीराम जी गुणों के आधार पर ही जीवों को साधुकर्मों में प्रेरित करते हैं

परम प्रभु श्रीराम की कृपा एवं प्रेरणा से रामावतार श्रीसम्प्रदाय के मध्यमाचार्य जगद्गुरु रामानन्दाचार्य जी महाराज के सप्त शताब्दि महोत्सव को मनाने का मन श्रीमठ में आने के समय से ही था। धीरे-धीरे काल व्यतीत हुआ। श्रीमठ की पहचान सम्वर्धित हुई। संसाधनों का भी विकास हुआ। परन्तु समझ में नहीं आता था महोत्सव का स्वरूप क्या होगा?

रामानन्द सम्प्रदाय अतीव विशाल है। बड़े-बड़े मठाधीश हैं। श्रीराम सेवा, संतसेवा, गो-सेवा, शिक्षा-सेवा के क्षेत्र में महनीय उपलब्धि है उनकी। उनकी अपेक्षा श्रीमठ के

पास नगण्य संसाधन हैं। यदि वे मनाते हैं तो अपने महोत्सव का स्वरूप क्या होगा? नहीं मनाते हैं तो क्या होगा? इसी ऊहापोह के साथ आचार्य प्रवर की सात सौ वर्षों की पूर्णता समीप आ गयी। कहीं से भी कोई सुगबुगाहट नहीं आयी। न तो व्यष्टिरूप में और न समष्टि रूप में मनाने की। मैं सोचता रहा, सर्व प्रेरक श्रीरामजी दूसरे संतों-महन्तों को क्यों नहीं प्रेरित कर रहे हैं, वे ही तो जीवों को कर्मों के अनुसार साधुकर्म में तथा असाधु कर्म में प्रेरित करते हैं, क्या उनके पास अब सर्वथा साधुकर्म साधक पुण्यों का अभाव हो गया है। ऐसा नहीं, वे अभी भी अनेकानेक साधुकर्मों का सम्पादन तो कर ही रहे हैं। सप्तशताब्दि महोत्सव तो महनीय साधुकर्म है। धीरे-धीरे इस निश्चय पर आरूढ़ हुआ। परमाचार्य सीतानाथ रामजी तथा मध्यमाचार्य रामानन्दाचार्य जी अपने को ही यह सेवा देना चाहते हैं, इसमें विभाजन नहीं चाहते। क्योंकि आचार्य प्रवर की जन्मभूमि तथा कर्मभूमि (प्रयाग एवं काशी) दोनों की साक्षात् सेवा अपने ही पास है।

अपनी भावनाओं को मैंने धीरे-धीरे निकालना प्रारम्भ किया, सुनकर लोग हर्षित भी होते, विस्मित भी, कैसे होगा? क्या होगा? कुछ लोग सलाह भी देने लगे। किसी ने भी सर्वथा मना नहीं किया। मुझे अतीव प्रसन्नता होने लगी। ऐसा दृढ़ निश्चय प्रकट हुआ, जो अपूर्व था, परम विश्वासमय था। कहीं से भी कोई भय-संदेह अन्धकार आदि का नामोंनिशान नहीं था। सर्वत्र निर्भय़ता-पूर्ण निश्चय तथा परम प्रकाश ही दृष्टि गोचर हो रहे थे। रोम-रोम से मैं आह्लादित था, मानव जीवन की धन्यता का अनुभव कर रहा था।

महोत्सव समायोजन की चर्चा के लिये एक संगोष्ठी बुलायी गयी, जिसमें गोपालदास मित्तल, विष्णु विन्दल, दयासिन्धु शर्मा तथा सतीश राय भी सम्मिलित हुए। मैंने सप्तशताब्दि महोत्सव की अपनी भावनाओं को समुपस्थित महानुभावों के समक्ष प्रस्तुत किया। सभी ने एक स्वर से कहा, बड़े उत्सव की कोई आवश्यकता नहीं है। आप तो टाटास्टेट तथा रामरयम् के साथ भारत भ्रमण करें, सर्वत्र बम-बम हो जायेगा, स्वामी रामानन्दजी की जयजयकार हो जायेगी। दिग-दिगन्तर श्रीराम प्रकाश से आलोकित हो जायेगा।

मैंने सोचा, ये लोग तो मेरे सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण सहयोगी हैं, ये भी मना कर रहे हैं, इसका संकेत क्या है? मैं निराश नहीं हुआ। मेरा विश्वास तथा प्रसन्नता दोनों ही सम्बर्धित हुए। समाधान हुआ। अपने पापों के कारण ये परमेश्वर के द्वारा इस दिव्य कर्म में प्रेरित-तत्पर तथा समर्पित नहीं हो रहे हैं। महोत्सव तो श्रीरामजी को करना है, जो मुझे प्रेरणा-तत्परता-शक्ति-समर्पण तथा परमविश्वास से भरपूर कर रहे हैं। महोत्सव तो होगा ही तथा पूर्ण सफल भी।

विपरीत विचारों का खण्डन-मण्डन किये बिना ही मैंने संगोष्ठी को विराम दिया तथा पहले की अपेक्षा दृढ़ता से महोत्सव की तैयारी में लग गया। मन ही मन गुनगुनाता रहा, जय हो रामजी की जय हो स्वामी रामानन्द जी की।

आप कहीं भी मुझे नींव में डाल सकते हैं

सप्तशताब्दि महोत्सव के समायोजन के लिए समिति का गठन भी नितान्त आवश्यक था। सबसे पहली चिन्ता थी, अध्यक्ष कौन होगा? मैंने गोपालदास मित्तल (भाईजी) विष्णु विन्दल, दयासिन्दु शर्मा आदि से कह रखा था, आप लोग भी ध्यान रखें। मापदण्ड इतना ही होगा, कि जिसे अध्यक्ष पद पर आरूढ़ किया जाय, वह धार्मिक हो, चरित्रवान हो, राष्ट्रीय पहचान का हो तथा श्रीमठ से जुड़ा हुआ हो। लम्बा काल व्यतीत होने के बाद भी भाई जी आदि को कोई नाम ध्यान में नहीं आया। मैं स्वयं भी गहरी चिन्ता में था कि कोई सर्वविध प्रशस्तनाम मिल जाता।

परमप्रभु श्रीराम जी ने असीम कृपा की वर्षा किया। एक ही नाम मेरे मने में बार-बार आता रहा– दिग्गीबाबू का। मेरे सभी मापदण्डों की परीक्षा में सर्वाधिक अंकों से उत्तीर्ण हो रहे थे। इनका धार्मिक जीवन चरित्र की पानवता, राष्ट्रीय पहचान तथा श्रीमठ के लिये समर्पण निस्संदेह निर्विवाद अनुपम प्रेरक तथा गौरवर्धक था।

आचार्य प्रवर के द्वादशादित्यों में ये संत शिरोमणि पीपा जी के वंशरत्न हैं। यह गुणवत्ता तो मेरे लिये सोने में सुगन्ध के समान थी। यह संयोग शायद ही किसी आचार्य को प्राप्त हो कि उसके साक्षात् शिष्यों का वंशावतंस उसके महोत्सव समिति के अध्यक्ष पद को पूर्ण योग्यता से अलंकृत करें। मैंने सभी को बतलाया। सभी का रोम-रोम खिल गया। कार्ड छप गया। इन्दौर में दिग्गीबाबू मिले। मैंने उनको बतलाया। आपको महोत्सव समिति के अध्यक्ष पद पर विराजमान किया गया है, आपकी अनुमति के बिना। अतीव विनम्रता तथा अनुपम आत्मीयता से उन्होंने कहा। मैं आपका हूँ। आप सतत मेरे हितचिन्तक हैं। आप कहीं भी मुझे नींव में डाल सकते हैं, मेरा कल्याण ही होगा। मुझे पूर्ण विश्वास है।

दिग्गीबाबू ने अपने इस मंगलमय संकल्प को साकार भी किया। तभी तो महोत्सवपूर्ण रूप से सफल हुआ।

मैंने सर्वदैव इस अभिप्राय का प्रचार भी किया। दिग्गीबाबू मुख्यमंत्री के रूप में नहीं, कांग्रेस के वरिष्ठ नेता के रूप में नहीं, राघोबगढ़ के राजा के रूप में नहीं अपितु संत शिरोमणि पीपा के वंशावतंस के रूप में अध्यक्ष हैं।

अध्यक्ष के रूप में महोत्सव के शुभारम्भ के प्रथम दिन (जिस दिन संत सम्मेलन) काशी में आये थे। समागत संतों का पूर्ण मर्यादा समृद्धि तथा अनुपम भाव के साथ स्वागत किया। समिति की संगोष्ठी में भाग लिया। सभी समर्पितों का उत्साह बढ़ाया।

समापन के अवसर पर भी यज्ञ पूर्णाहुति में आना था। उसी दिन महाकुम्भ प्रयाग का मुख्य स्नान था। (अमावस्या का) स्नान लालच या अन्य बाधाओं के कारण यज्ञ पूर्णाहुति के बाद में पधारे। मैंने पहले ही सचेत किया था। पूर्णाहुति समय से होगी, एक

मिनट भी व्यतिक्रम सह्य नहीं होगा, वैसा ही हुआ। इस क्रम में दिग्गीबाबू को उत्तीर्ण अंक भी प्राप्त नहीं हुए। कार्यक्रम का अध्यक्ष-अनुपमधर्मभीरु , सफल प्रशासक ही समापन को महत्त्व न दे यह तो ऐतिहासिक भूल तथा धार्मिक अपराध था। कुम्भ स्नान पहले भी किये होंगे तथा बाद में भी कर सकेंगे, परन्तु सप्तशताब्दि महोत्सव तो पहला ही था, अन्तिम भी। न उन्होंने काशी को समझा, न तो ऐतिहासिक श्रीराम यज्ञ को समझा, महाराजा पीपा एवं गुरुदेव रामानन्दाचार्य के परम मंगलमय अतुलनीय सम्बन्ध को तो नहीं ही समझा।

यज्ञ समाप्ति के बाद दिग्गीबाबू पहुँचे। मंडप में जाकर उपस्थिति अंकित कराने का प्रयास किया जबकि देवता विदा हो गये थे। मुझे भी भाव एवं मर्यादा से प्रणाम किया, मैंने बिना बोले आशीर्वाद दिया। वर्षव्यापी कार्यक्रम की सफलता से मेरा मन पूर्ण गद्गद था।

औपचारिक सभा को सम्बोधित करते हुए दिग्गीबाबू ने कहा– मैं पूर्णाहुति में नहीं आ सका, इसके लिये क्षमाप्रार्थी हूँ। मन अतीव खिन्न है, धर्मलाभ का ऐतिहासिक अवसर हाथ से निकल गया। मैं लगातार सोचता रहा, इसका क्या प्रायश्चित्त होगा, कुछ भी समझ में नहीं आया। अन्ततोगत्वा मैंने निश्चय किया आचार्यश्री जो आदेश देंगे उसका मैं पालन करूँगा, मुझे आदेश की प्रतीक्षा रहेगी।

अभिव्यक्ति को आगे बढ़ाते हुए दिग्गीबाबू ने कहा, आचार्य चरणों में मेरी गहरी निष्ठा है चाह कर भी सेवा नहीं कर पाता हूँ। मुझे पीड़ा है। परन्तु प्रसन्नता इस बात की है कि आचार्यश्री का कोई भी संकल्प अधूरा नहीं रहता, सब गरिमा के साथ पूर्ण हो जाता है।

उन्होंने कहा मैं भी यज्ञों में जाता हूँ तथा करवाता भी हूँ। परन्तु कभी भी ऐसा विशाल सुन्दर तथा सर्वप्रेरक यज्ञमण्डप नहीं देखा। ऐसा ही और भी कुछ-कुछ कहा।

उनके सम्बोधन के बाद मैंने भरे मन से कहा– यज्ञ मण्डप ही अपूर्व नहीं है। सभी कुण्ड (१००) पूर्ण विधि से तैयार हुए थे। यज्ञ सामग्री भी वैदिक गरिमा एवं समृद्धि से युक्त थी। ब्राह्मणों का आवास, प्रसाद तथा दक्षिणा भी प्रशस्त थी। सात सौ ब्राह्मणों में डेढ़ सौ ऐसे ब्राह्मण थे जिनकी जोड़ी नहीं हैं। अन्य यज्ञों में ऐसे पाँच ब्राह्मण भी नहीं होते हैं। सभी वैदिक आचारों का परिपालन हुआ। यह यज्ञ लगभग पचास वर्षों के बाद काशी में दुहराया गया। धर्म सम्राट् स्वामी करपात्री जी महाराज ने एक विशाल यज्ञ किया था। वह भी अस्सी गंगा से बाहर था, अतएव वाराणसी क्षेत्र में नहीं था। इसका केवल मण्डप ही अतुलनीय नहीं, अपितु सब कुछ अनुपम था। धन्य हैं वे लोग जो भाग लिये। सेवारत बने।

जन की कृपा लवलेश से पायो परम विश्राम

वर्षव्यापी तथा राष्ट्रव्यापी जगद्गुरु रामानन्दाचार्य सप्तशताब्दि महोत्सव समायोजन की प्रेरणा, संसाधन, प्रयोग, सफलता तथा परम विश्राम की अनुभूति, सबकुछ परम प्रभु-सर्वावतारी हमारे परमाराध्य तथा परमाचार्य सीतानाथ श्रीरामजी की ही असीम अहैतुकी अनुकम्पा का सुफल है।

शताब्दियों से विलुप्त श्रीमठ के पास एकदिवसीय महोत्सव के लिये भी कोई संसाधन नहीं था, राष्ट्रव्यापी तथा वर्षव्यापी महोत्सव तो सर्वथा प्रयोगातीत ही नहीं अपितु कल्पनातीत भी था। ९-१०-२०१२ को भी श्रीमठ के पास एक तारीख को सुनिश्चित आय (बैंक-खेती-किराया भक्तों से) एक रुपये की भी नहीं है। जब मैं १९८८ में श्रीमठ में आया था, उस समय यह दशा और गहरी थी। परम प्रभु ने अपनी मर्यादा तथा गरिमा के साथ कार्यक्रम को सफलता प्रदान किया। यही उनका विशेष अनुग्रह है। वैसे तो सब कुछ करके भी सफलता अर्जित करने वाले परमेश्वर अनुग्रह का ही ढिढोरा पीटते हैं।

विशालतम राष्ट्र (भारत) के कई प्रान्तों में गाँव से लेकर राजधानी तक कार्यक्रम समायोजित हुए। कार्यक्रम में मथुरा की विशिष्ट मण्डली द्वारा रामलीला का प्रदर्शन, अखण्ड भगवन्नाम संकीर्त्तन, वैदिक ब्राह्मण विद्वानों द्वारा श्रीराम यज्ञ, श्री रामसहस्र नामों के द्वारा संतों एवं भक्तों के साथ सहस्रार्चन महायज्ञ, महाप्रभु श्रीराम जी की प्रतिदिन विशिष्ट आराधना, विशिष्ट शोभा यात्रा, प्रेस वार्ता, क्षेत्रिय विशिष्ट देवों का पूजन। क्षेत्रीय रामाभावाषिक्त महानुभावों का श्रीमठ द्वारा अभिनन्दन। हरिजन बस्ती में पधरावणी एवं सत्संग समायोजन। मुख्य सत्संग समायोजन- संतों-भक्तों एवं अभ्यागतों के लिए भण्डारा। ये सभी कार्यक्रम पूर्ण रामीय मर्यादा एवं गरिमा के साथ सम्पन्न हुए तथा असंख्य लोगों के परम मंगलमय श्रीरामभाव अंकुरित-पल्लवित, पुष्पित तथा फलित हुए। कहीं भी धन-भोग-यश को कोई भी स्थान नहीं मिला।

सम्पूर्ण आयोजन से जुड़ा हुआ एक भी व्यक्ति इस देश में नहीं मिलेगा जो कह सके श्रीमठ ने हमसे माँगा, थोड़ा देने पर असंतुष्टि व्यक्त किया। इसके साथ ही किसी की सेवा का अपमान भी नहीं किया।

जहाँ जैसी व्यवस्था थी उसी में प्रसन्नता तथा संतोष से निर्वाह किया।

यदि ऐसा हो सके तो बहुत अच्छा होगा

सप्तशताब्दि महोत्सव के शुभारम्भ के समापन पर सोनिया जी आयीं। सूत्रधारों में पं. लोकपति त्रिपाठी जी आदि को विश्वास नहीं था कि वे आयेंगी। पुराने संस्कारों को निमित्त बनाकर, जो राजीव गाँधी से मेरे सम्बन्ध में प्राप्त हुए थे, परमेश्वर ने उन्हें

प्रेरित किया। उनके कारण समय का परिवर्त्तन भी हुआ, क्योंकि उसी दिन गणतंत्र दिवस महोत्सव का समापन था। सुरक्षा की दृष्टि से दिल्ली को पूर्णतः बन्द करना था। सोनिया जी मात्र एक घंटे के लिए आयीं। उसी के अनुसार सम्पूर्ण कार्यक्रम को संयोजित किया गया। श्रीराघव की कृपा से कार्यक्रम अतीव गरिमा एवं सुन्दरता के साथ सम्पन्न हुआ। सोनिया जी को काशी के मूर्धन्य मनीषियों पं. श्री गणेश्वर शास्त्री द्रविड़, पं. गोविन्द पुराणिक आदि के साथ पूर्ण शास्त्रीय मर्यादा एवं अनुपमभावों के साथ आशीर्वाद दिया गया। सचमुच वह काल सभी के लिये अपूर्व था। सभी ने अपलक भाव से उसे निहारा। रोम-रोम से सराहा। उसके लिये कुछ भी कहने में हमेशा-हमेशा के लिए असमर्थता प्रकट किया। उस काल में सोनिया जी की विनम्रता-श्रद्धा तथा भावमयी दशा अनेकानेकों को विस्मृति सागर में डूबो रही थी।

निर्धारित काल सम्पूर्ण हुआ। मैंने सोनिया जी को कहा, अब आप जा सकती हैं, उन्होंने हँस कर टाल दिया। लम्बाकाल व्यतीत होने के बाद मैंने पुनः कहा जाना नहीं है क्या? यदि ऐसा हो सके तो बहुत अच्छा होगा।

जाते-जाते पं. लोकपति जी को बहुत-बहुत धन्यवाद दिया। पहुँचने के बाद तथा उनकी प्रसन्नता को जानने के बाद उनके निकटस्थ वी. जार्ज आदि ने तो धन्यवाद का बादल ही फोड़ दिया। यह सब कुछ श्रीराघव की कृपा से ही हुआ। यह केवल मेरे एवं सोनिया जी के हित में ही नहीं था, अपितु धर्म-राष्ट्र किंवा मानवता के भी हित में था, क्योंकि सोनिया जी संसार की बड़ी महिला हैं। उनका रामभाव तो संसार के असंख्यों का परम पाथेय होगा।

मैं तुम्हें गणेश बाग में भोजन करवा दूँगा

समापन महोत्सव में यज्ञमण्डप टाउन हॉल मैदान (मैदागिन) में था। सत्संग मण्डप आदर्श इन्टर कॉलेज में तथा जगदम्बा सीता रसोई गणेश बाग में थी। रसोइया लोगों का दल राजस्थान से आया हुआ था। नियमन मार्गनिर्देश तथा संरक्षण वर्त्तन बाजार के शान्तिलालजी आदि के पास था। परोसगारी बाबू भाई आदि की देख-रेख में थी। मैं भी प्रतिदिन लगभग दो घंटे के लिए भण्डार में जाया करता था। ग्यारह दिनों तक बड़ा भण्डार चला। नवदिनों तक तो यज्ञकाल ही था। ऐसा प्रतीत हो रहा था, यह भण्डार काशी का नहीं श्रीमठ का नहीं, अपितु जगदम्बा जानकी जी के मायका का है, ऐसी समृद्धि और भाव कहाँ हो सकता है?

मैं भी जब पंक्ति में घूमता था तो देखकर सोचता था कोई परिचित तो दीख ही नहीं रहा है, पुनः समाधान होता था, श्रीरामजी का पूरा परिवार बहुत बड़ा है, मेरा परिचित परिवार छोटा है, उसी का तो परम विस्तार करना है, जिसके लिए सम्पूर्ण आराधना है।

प्रयाग में पूर्ण कुम्भ का काल था। अपार भीड़ काशी आ रही थी। मुख्य मार्ग पर ही जगदम्बा जानकी जी ने भण्डारा लगा रखा था तथा कठोर निर्देश भी दिया था, किसी को पूछना नहीं, किसी को रोकना नहीं। तब भण्डारा का स्वरूप अनुपम मंगलमय होना चाहिए।

उसीकाल में रेलवे स्टेशन पर एक भिखारी ने किसी से माँगा, उसने उसे एक रुपया दिया। भिखारी ने कहा बहुत कम है, काशी में आये हो, कुम्भ में आये हो, फिर भी मक्खीसूसी। उसने कहा चलो भोजन करवा देता हूँ, भिखारी ने कहा चलो मैं ही तुम्हें गणेश बाग में भोजन करवा देता हूँ।

ऐसा परम विश्वास भिखारी को भी और कहाँ हो सकता है? जगदम्बा जानकी जी के भण्डार को छोड़कर। इससे बड़ा चमत्कार तथा अनुग्रह और क्या हो सकता है?

सप्तशताब्दि महोत्सव का समापन सभा मण्डप आदर्श इण्टर कालेज के प्रांगण में था। वह भी अनुपम था। उसका सम्पूर्ण परिदृश्य राजस्थानी था। राजस्थानी स्वरूप देने के लिए एक लाट की लकड़ियाँ खरीदी गयी थीं। मण्डप निर्माता जयपुर निवासी सिन्धी भाई मेरे भक्त रमेश अग्रवाल के मित्र थे। उन्होंने पूर्ण दक्षता तथा समृद्धि के साथ मण्डप का निर्माण किया। जो देखता रोम-रोम से विस्मित तथा खिल जाता। सत्संग, रामलीला, संगोष्ठियाँ (हरिजन सम्मेलन-विद्वत् सम्मेलन) पुण्य ग्रंथों का पाठ आदि सभी वहीं सम्पन्न होते थे। भक्तशिरोमणि समर्थ गुरु रामदास जी द्वारा निर्मित 'दासबोध' का पाठ नासिक से आये तीन सौ भक्तों ने किया। वे पहले भी हजारों सामूहिक पाठ कर चुके थे। रामचरितमानस का पाठ भी सुदक्ष मण्डली के द्वारा सुमधुर गायन के साथ हुआ। ऐसे ही सनातन धर्म के सही परम्पराओं के सर्वमान्य ग्रन्थों के पाठ भी उसी मण्डप में समायोजित हुए।

एक दिन मैं संतों एवं भक्तों के साथ संगीत का रसास्वादन 'श्रीविहारम्' में कर रहा था। यह क्रम प्रतिदिन रात्रि में चलता था। किसी ने आकर धीरे-धीरे मुझसे कहा, सत्संग मण्डप में अग्नि लग गयी है। मैंने कहा देख लो। मैं समान भाव से रसास्वादन में निमग्न रहा। तब तक कुछ दूसरे भक्तों ने पूर्ण भयभीत होकर कहा, हमलोग क्या करें? मैंने कहा रस पान करो। शेष हनुमान जी करेंगे। बिना किसी बाह्य या भीतरी विक्षेप के मैं रसास्वादन में समर्पित रहा। पूर्ण विश्वास था, श्रीराघव मंगल करेंगे उनका कोई भी विधान अंगलमय नहीं होता। थोड़ी ही देर में समाचार आ गया अग्नि बुझ गयी। लगाने वालों को सुरक्षा कर्मियों ने पकड़ लिया तथा सबकुछ सुशान्त, आह्लादमय तथा श्रीराम भावमय हो गया। यही तो परम अनुग्रह है प्रभु का, जो सतत बरसता है जीवों पर। जिसका अनुभव पापी जीव नहीं कर पाते तथा जीवन गर्त में चला जाता है।

सब राम जी करेंगे

देशव्यापी तथा वर्षव्यापी सप्तशताब्दि महोत्सव प्रभु कृपा से सर्वांश में सफल प्रेरक तथा गौरववर्धक था, तथापि कुछ महोत्सव अतुलनीय स्वरूप में प्रकट हुए, जिनका संस्मरण नितान्त आवश्यक है। जयपुर का सप्तशताब्दि महोत्सव आज भी लोगों की आँखों से ओझल नहीं हो रहा है। सन् २००० से २०१२ तक एक भी ऐसा महोत्सव किसी संत के लिये समायोजित नहीं हो सका। जबकि जयपुर धर्म की दृष्टि से भी महनीय स्थल है। रामानन्द सम्प्रदाय के भी सैकड़ों आश्रम-हजारों संत यहाँ विराजमान हैं, इसी प्रकार दूसरे सम्प्रदायों की भी यहाँ अच्छी स्थिति है।

सन् २००० में जयपुर में मुझसे साक्षात् जुड़े भक्तों की संख्या नहीं के बराबर थी। किसी कारण से क्षेत्रिय महान्तों एवं संतों की भी कोई सक्रियता तथा समर्पण नहीं था।

श्रीराम जी ने सर्वथा नवीन तथा साधनविहीन भरत अग्रवाल को प्रेरित किया। वे रोम-रोम से प्रेरित उत्साही तथा समर्पित हो गये। उन्हें सतत एक ही चिन्ता थी। महोत्सव कैसे होगा। कहाँ होगा? कितने लगेंगे? कहाँ से आयेंगे? इत्यादि मुझसे भी बार-बार इन्हीं प्रश्नों को पूछते रहे। मैं एक ही उत्तर देता था, सब रामजी करेंगे। ऐसा ही हुआ।

श्रीरामजी की कृपा से उनके व्यापारिक सहयोगी प्रकाश चंद्र परवाल जी ने पाँच लाख रुपये दिये, जिसे मेरे कहने के बाद भी जयपुर में कोई विश्वास नहीं करता, क्योंकि उनका कंजूसावतार सुप्रसिद्ध था। जगदीश अग्रवाल के, जो भरतजी के पिता जी के बुआ के लड़के हैं,प्रयास से हल्दीराम भुजिया वालों ने पाँच दिनों के महोत्सव में सम्पूर्ण भण्डारा गरिमा एवं समृद्धि के साथ चलाया। सत्यनारायण अग्रवाल ने प्रकाशन सम्बन्धी सेवायें कीं। अन्ततोगत्वा तो वे रीढ़ की हड्डी के समान महोत्सव की सफलता में समर्पित हो गये। चाचा एवं भतीजे की जोड़ी मंगलमय क्षेत्र में भी अनुपम हो गयी।

भरत अग्रवाल एवं सहयोगियों ने ओमप्रकाश मोदी को अपना निर्देशक बनाया था, परन्तु वे अपना कालनेमि स्वरूप बहुत दिनों तक छुपा नहीं सके। कार्यक्रम को अपने नकारात्मक स्वरूप से प्रभावित करते रहे,परन्तु श्रीराम कृपा ने उसे महत्त्वहीन बनाकर सफलता प्रदान किया।

सम्पूर्ण कार्यक्रम "गोविन्ददेव" के पीछे जयनिवास उद्यान, जयपुर मैदान में आयोजित हुए। सत्संग-भजन, कीर्तन, विद्वत् संगोष्ठी रामभावाभिषिक्त महानुभावों का अभिनन्दन, संतसम्मेलन इत्यादि। शोभायात्रा भी ऐतिहासिक थी। नगर के प्रमुख देवों का पूजन तथा हरिजन बस्ती में भी कार्यक्रम हुआ। गोविन्ददेवमंदिर के महन्त जी की भावनाओं को दर किनार कर भगवान गोविन्द देव ने अपने उत्सव को पूर्व सफलता प्रदान किया।

तत्कालीन मुख्यमन्त्री अशोक गहलोत ने अपने स्वरूप एवं स्वभाव के अनुसार भरपूर सेवा किया, जो सभी के लिए आह्लादक तथा आश्चर्यजनक था। अशोक जी वस्तुतः रामानन्दाचार्य जी के अुयायी हैं, क्योंकि उनकी सर्बाधिक निष्ठा स्वामीजी के औदार्य में है। अशोक जी भगवान के दीनदयाल स्वरूप के पक्षधर एवं पूजक हैं। आचार्य प्रवर रामानन्दजी से अधिक दीनदयाल कौन होगा?

बड़े संतों में परिगणित नारायण दास जी त्रिवेणी धाम तथा उनके अनुयायी संतों एवं भक्तों का कार्यक्रम के लिए नकारात्मक अभियान था। सभी साधनों की स्वल्पता, परिदृश्य की नवीनता मुख्यमंत्री अशोक जी का कबीरापन, भरतजी तथा उनके परिजनों एवं सहयोगियों का सर्वथा महोत्सवीय संस्कारों का अभाव, इसके बाद भी महोत्सव की ऐतिहासिक सफलता। अहैतुकी कृपावर्षी परम प्रभु श्रीराम जी का ही चमत्कार था। ऐसे प्रभु को भी जीव विस्मृत कर जाता है तथा चौरासी लाख योनियों में भटकता हुआ सम्पूर्ण दुर्गति को प्राप्त करता है।

चण्डीगढ़ का सप्तशताब्दि महोत्सव

चण्डीगढ़ पंजाब एवं हरियाणा की राजधानी तथा स्वयं केन्द्रशासित है। इसकी रचना तथा शासन व्यवस्था प्रेरक एवं गौरव वर्द्धक है। यहाँ किसी भी कार्यक्रम को सुसम्पादित करना तथा सुयश अर्जित करना अतीव महत्त्वपूर्ण है। चण्डीगढ़ में मेरा आना जाना भी नहीं के बराबर होता है। भक्तों की संख्या भी नगण्य है। इसके बाद भी एकलौते भक्त सुरेश मित्तल ने हनुमान के समान श्रीराम सेवा स्वरूप महोत्सव को सुसम्पन्न किया। महोत्सव की शोभायात्रा, श्रीरामलीला, हवन यज्ञ, आवासीय व्यवस्था। प्रसाद व्यवस्था, सतसंग महायज्ञ, विद्वत् संगोष्ठी, हरिजन सम्मेलन इत्यादि सबकुछ अनुपम रीति से सम्पन्न हुए। अनेकानेक लोगों के जीवन में श्री रामभाव की क्रान्ति आ गयी।

कार्यक्रम में अनेकानेक नेताओं वरिष्ठ अधिकारियों तथा वरिष्ठ पत्रकारों ने भाग लेकर कार्यक्रम को गरिमा प्रदान किया तथा अपने संस्कारों को भी सम्बर्धित किया। दैनिक भास्कर ग्रुप के चेयरमैन रमेश अग्रवाल शोभायात्रा के क्रम में मेरी प्रतीक्षा के लिए रोड पर घंटो खड़े रहे तथा दूसरे दिन कार्यक्रम में भी भागीदारी किये। कार्यक्रम की सफलता के लिये आर्थिक सेवा भी किये।

सम्पूर्ण कार्यक्रम को बिना किसी भय बिना किसी अमर्यादा के साथ प्रभुकृपा से सुरेश मित्तल ने सम्पादित किया। श्रीमठ परिवार ही नहीं अपितु सम्पूर्ण सनातनधर्म के लिये यह प्रेरक एवं गौरववर्धक रहा। कार्यक्रम के प्रत्येक कदम पर निधीन्द्र शर्मा छाया के समान अपनी लेखनी के साथ समुपस्थित रहे। यह अद्भुत राम-लक्ष्ण की जोड़ी है। प्रभु इसे बनाये रखें।

पटियाला तथा सामाना मण्डी में भी महोत्सव विशिष्ट रीति से सम्पन्न हुआ। यहाँके भक्त तो श्रीमठ सेवा के विशिष्ट सैनिक हैं। जब दूसरे लोगों का श्रीमठ परिवार में जन्म भी नहीं हुआ था, तब से ये लोग समर्पित सेवा प्रवीण हैं। सामाना में हवनात्मक यज्ञ का स्वरूप भी बड़ा था। विशालयज्ञ मण्डप का निर्माण भी सामानावालों ने कराया था।

सतना का महोत्सव भी अविस्मरणीय है। पं. रघुनाथ प्रसाद त्रिपाठी सनातन धर्म के स्तंभ हैं, उनके बिना कोई भी धार्मिक समायोजन सतना में साकार नहीं होते। बिना भेदभाव के सभी संतों एवं धार्मिक अनुष्ठानों के साथ स्वयं भी समर्पित रहते हैं। इनके ऊपर पूर्णरूप से गुरुकृपा, संतकृपा, ब्राह्मणकृपा, लक्ष्मीकृपा के साथ श्रीरामकृपा भी है जिसका भरपूर प्रयोग त्रिपाठी जी श्रीराम भाव के प्रसार में क़रते हैं।

महोत्सव की सफलता में भी इन्होंने सम्पूर्ण वैभव का प्रयोग किया। सामान्य जीव अर्थ एवं काम (भोग) के लिये ही समग्रता के साथ समर्पित होता है, श्रीरामभाव के लिए नहीं। बड़ी अवस्था के बाद भी त्रिपाठी जी, 'रामकाज कीन्हें बिना मोहिं कहाँ विश्राम'', की भावना से समर्पित रहे। उनका परिवार संगठन तथा समस्त शुभचिन्तक भी समर्पित रहे। तभी तो महोत्सव ने उनके माध्यम से कई जिलों में श्रीरामभाव की सुगन्ध बिखेरी। आज भी वह आयोजन लोगों को आध्यात्मिकता के लिये लाभान्वित कर रहा है। यह सब हम लोगों का परम धन है।

महोत्सव के राष्ट्रव्यापी क्रम में आरा (बिहार) का समायोजन श्लाघनीय था। श्रीमठ में आने के बाद मेरा कभी भी आरा जाना नहीं हुआ था। साक्षात् जानने एवं मानने वाले नहीं के बराबर लोग थे। फिर भी आरा जाना तो था ही। सोच ही रहा था कि कैसे क्या होगा? तब तक सत्येन्द्र पाण्डेय का टेलीफोन आया बिहार यात्रा का क्या स्वरूप है? मैंने कहा, "यहीं आकर बात करो।" सत्येन्द्र आ गये। मैंने उन्हें व्यवस्था सम्बन्धी कुछ संकेत किया। कुछ धन भी देने लगा। परन्तु उन्होंने विनम्रता से इनकार कर दिया, और कहा सब हो जायेगा आपके आशीर्वाद से।

हमलोग दल-बल के साथ आरा पहुँचे। शहर से कई किलोमीटर पहले ही हाथी-घोड़े-कार-मोटर साइकिल बाजा-गाजा के साथ बड़ी संख्या में श्रद्धालु जनों ने आगवानी किया तथा धीरे-धीरे विभिन्न स्थानों पर स्वागत के साथ मुख्य स्थान पर ले गये।

पूर्ण गरिमा के साथ सम्पूर्ण मण्डली का स्वागत सत्कार हुआ। पड़ाव पर पहुँचकर रात्रि में विशिष्ट सत्संग का समायोजन हुआ, उसी मंच पर जहाँ रामायण प्रवचन का कार्यक्रम प्रतिवर्ष समायोजित होता था। यात्रा के संकल्पित सभी कार्यक्रम पूर्ण गरिमा के साथ सम्पादित हुए। लग ही नहीं रहा था कि हमलोग यहाँ पहली बार

आये हैं। लोगों का उत्साह श्रद्धा-समर्पण तथा आत्मीयभाव सब कुछ अपूर्व था। साथ में गये हुए भक्त तथा सन्तजन मन्त्रमुग्ध थे। अतिथि सत्कार की अप्रतिमधारा बहते देखकर। कार्यक्रम की सफलता में अनेकानेक लोगों में बाबू दामोदर सिंह, आर. के. राय जी, पारस राय जी, कमला सिंह जी आदि का नाम विशेष उल्लेखनीय है।

समापन के अवसर पर समायोजित यज्ञ में भी आरा की सेवा बढ़-चढ़कर रही। यज्ञ के लिए आम की लकड़ी-बासमती चावल तथा बड़ी मात्रा में घी एवं तेल की सेवा आरा से हुई।

अभी तो आरा सेवा गंगा, पटना-गया-मुजफ्फरपुर सेवा गंगा से मिलकर बड़े स्वरूप में प्रकट होकर सम्पूर्ण बिहार का नेतृत्व कर रही है। अज्ञान के कारण बिहार के सम्बन्ध में बनी हुई दुर्भावनाओं की दिवाल भी ध्वस्त हो रही है तथा बिहार अपनी लोकोत्तर धार्मिक आध्यात्मिक प्रतिष्ठा की ऊँचाई की ओर भी बढ़ रहा है।

●

श्री श्री जगद्गुरु शंकराचार्य महासंस्थानम्, दक्षिणाम्नाय श्री शारदापीठम्, शृंङ्गेरी

SRI SRI JAGADGURU SHANKARACHARYA MAHASANSTHANAM DAKSHINAMNAYA SRI SHARADA PEETHAM, SRINGERI

Sahitya Mahopadhyaya SRINGERI
Dr. N.S. DAKSHINA MURTHY
M.A. (Hindi), M.A. (Sanskrit), Ph.D.
Personal Assistant to His Holiness
Sri Jagadguru Shankaracharya Mahasanthdanam

Ref : DOI-2515 Date: 27-9-2001

सेवा में,
श्री दयासिन्धु शर्मा जी,

जगद्गुरु रामानन्दाचार्य सप्तशताब्दी महोत्सव संबंधी पुस्तक-प्रकाशन विषयक आपका पत्र (दि. १८-९-२००१) प्राप्त हुआ, जो प.पू. अनन्तश्रीविभूषित जगद्गुरु शंकराचार्य श्री श्री भारती तीर्थ जी महाराज के दिव्य सान्निध्य में समर्पित किया गया। स्मारिका के प्रकाशन का विषय जानकर प.पू. महाराज जी अतीव प्रसन्न हुए। राष्ट्रीय महत्व के ऐसे प्रकाशन-कार्य से श्रद्धालु लोगों को हृदयतोष होता है और सही मार्गदर्शन भी मिलता है।

प.पू. महाराज जी से शुभाशीर्वादपूर्वक प्रदत्त प्रसाद प्रेषित हैं।

आपका,

(डॉ. एन.एस. दक्षिणा मूर्ति)

Tel: 044-27222115 Email: skmkanci@md3.vsnl.net.in
Fax: 27224305

Sri Chandramouleeswaraya namaha;
Sri Sankara Bhaghavadpadacharya Paramparagatha Moolamnaya
Sarvagnapeeta:
His Holiness Sri Kanchi Kamakoti Peetadhipathi

JAGADGURU SRI SANKARACHARYA SWAMIGAL

Srimatam Samsthanam

No. 1, Salai Street, KANCHIPURAM -631 502.

दिनांक : ०६.०६.२००८

रामानन्दसुतीर्थानां सप्तशताब्दिकं इमहः ।
तन्वताच्च शुभं भूयाच्चन्द्रचूडस्य वीक्षणात् ।।

अनादिनिधनायाः अस्माकं संस्कृतेः पद्धतिमनुसरन्तो जनाः ऐहिकामुष्मिकफलैर्घटिता सुधमेधन्ते इति दृष्टिगोचरोऽयं विषयः। तस्याः ध्वंसनेन मानवत्यस्य हानिः दुःखादिप्राप्तिश्च जायते इति च प्रत्यक्षतया दृश्यते। अतः तादृशायाः पोषणेनैव इह अमुष्मिंश्च निरन्तरसुखाप्तिः भवति। तत्प्रासाराय क्रियमाण एव यत्नः लोकोपकारकः। तदेतन्मनसि निधाय काश्यां स्वामी रामानन्दाचार्य महाभागाः धर्मप्रसारणं सर्वतोभावेन कृतवन्तः। तेषां योगदानं सनातनधर्मक्षेत्रेऽतुलं विराजते। तादृशानां महनीयानां सप्तशताब्दिकमहोत्सवं श्रीमठसमग्राख्या संस्था चालयतीति नितरां मोमुद्यते चेतो नः। सोऽयमुत्सवः श्रीमहात्रिपुरसुन्दर्यम्बासमेतश्रीचन्द्रमौलीश्वरकृपया सफलो भवत्विति, तस्य निर्वाहकाश्च समस्तकल्याणपरम्परा आप्नुयुरिति चाशास्महे।

॥ नारायणस्मृतिः ॥

।। श्रीस्वामिनारायणो विजयते ।।

प्रगट ब्रह्मस्वरूप
प्रमुखस्वामी महाराज
(स्वामीश्री नारायणस्वरूपदास)

HIS DIVINE HOLINESS
PRAMUKH SWAMI MAHARAJ
(SWAMI NARAYANSARUPDAS)

सारंगपुर
५.०६.२००८

परम पूजनीय जगद्‌गुरु रामानन्दाचार्य स्वामी श्री रामनरेशाचार्य जी महाराज,

श्रीमठ-समग्र संस्थान से प्रेषित पत्र प्राप्त हुआ। हिंदू संस्कृति की संरक्षा एवं उत्कर्ष में अमर प्रकाश देने वाले स्वामी रामानंदजी के प्रति सनातन धर्म ऋणी है और हमेशा के लिए रहेगा। न केवल अपने ज्ञान और चरित्र से बल्कि अपने कर्त्तय से भी उन्होंने हमें उपकृत किया है। ऐसे महापुरुष का सप्तशताब्दी महोत्सव संपन्न हुआ, उसकी स्मृति-मंजूषा ग्रंथविशेष के रूप में प्रकाशित होने जा रही है, यह जानकर आनंद हुआ। आपका यह कार्य पूर्णशः सफलता को प्राप्त करे और देशभर के लोग इसका लाभ पायें ऐसी भगवान स्वामिनारायण के चरणों में प्रार्थना के साथ हमारी हार्दिक शुभकामनाएँ।

(स्वामीश्री नारायणस्वरूपदास)

BOCHASANWASI SHRI AKSHAR PURUSHOTTAM SWAMINARAYAN SANSTHA,
SHAHIBAUG ROAD, AHMEDABAD-380 004, GUJARAT, INDIA
e-mail: info@swaminarayan.org www.swaminarayan.org

।।श्री सद्गुरु परमात्मने नमः।। ।।श्री रामचंद्राय नमः।।

Shri Sadguru Seva Sangh Trust
FOUNDED BY: PUJYA RANCHHOD DASJI MAHARAJ

Dr. B.K. Jain D.O.M.S. (BOM)
CHIEF MEDICAL OFFICER
JANIKI KUND CHIKTSALAYA
CHITRAKOOT 210 204,
HOSP.: 07670-65320 OFF.: 07670-65330
RESI. : 07670-65432 FAX : 07670-65332.

दिनांक : ०१-०१-२००१

श्रद्धेय,

अनन्त विभूषित श्री जगद्‌गुरु रामानन्दाचार्य स्वामी रामनरेशाचार्य जी के पावन चरणों में सादर वन्दन एवम् नमन।

जगद्गुरु रामानन्दाचार्य सप्त शताब्दी महोत्सव समापन समारोह का आमंत्रण मिला। यह मेरा परम सौभाग्य है, मन को अतीव प्रसन्नता हुई। समारोह में उपस्थित होने की तीव्र उत्कण्ठा है आने का प्रयास करूँगा।

जगद्गुरु रामानन्दाचार्य सप्तशताब्दी महोत्सव वर्ष पर्यन्त चलने के पश्चात् अब समापन की ओर अग्रसर है, इसे मैं समापन न कहकर विराम कहूँगा क्योंकि जिन राष्ट्रव्यापी कार्यक्रमों की शृंखला आपके मंगल मार्ग दर्शन में चली वे सदैव शाश्वत हैं अतः उनका विराम ही हो सकता है। अतएव सबके अराध्य श्री कामतानाथ जी और परम पूज्य श्री सद्गुरुदेव रणछोड़दास जी की कृपा तथा आपके सतत प्रयास से महोत्सव, राष्ट्र की एकता अखण्डता तथा सामाजिक सद्भाव एवं मानवता के कल्याण और लोकमंगलता का पथ प्रशस्त करेगा।

शुभकामनाओं सहित।

शुभाकांक्षी
(डॉ. बी. के. जैन)

चन्द्रशेखर
CHANDRA SHEKHAR

संख्या १८६७०/२०
जुलाई ५, २००१

मुझे यह जानकार प्रसन्नता हुई कि आचार्य जगद्गुरु रामानन्दाचार्य स्वामी रामनरेशाचार्य जी महाराज के संरक्षण में अखिल भारतीय जगद्गुरु रामानन्दाचार्य सप्तशताब्दी महोत्सव हुआ था और इस सिलसिले में राष्ट्रीय सांस्कृतिक-धार्मिक एवं आध्यात्मिक धरोहर के रूप में पुस्तक प्रकाशित की जा रही है।

उपर्यक्त महोत्सव में सांस्कृतिक-धार्मिक एवं आध्यात्मिक विचारों के संकलन से देश में शांति, सदभाव एवं राष्ट्रीय एकता का मार्ग प्रशस्त होगा, ऐसी मेरी कामना है।

शुभकामनाओं सहित,

चन्द्रशेखर

३, साउथ एवेन्यू लेन, नई दिल्ली-११० ०११ टेलीफोन ३०१-२५८७, ३०१-२१६३

३, South Avenue Lane, New Delhi-110 011 Tele : 301-2587, 301-2163

विशेष कार्य अधिकारी
OFFICER ON SPECIAL DUTY

राष्ट्रपति सचिवालय,
राष्ट्रपति भवन,
नई दिल्ली-११०००४

President's Secretariat,
Rashtrapati Bhavan,
New Delhi-110004

सं. ८-एम.एच./२००१ — १४ जुलाई, २००१

प्रिय श्री शर्मा जी,

भारत के राष्ट्रपति श्री के. आर. नारायणन् जी को यह जानकार प्रसन्नता हुई है कि आचार्य जगद्गुरु रामानन्दाचार्य स्वामी रामनरेशाचार्य जी के संरक्षण में २७ जनवरी २००० से १६ जनवरी २००१ तक आयोजित अखिल भारतीय जगद्गुरु रामानन्दाचार्य सप्तशताब्दी महोत्सव के संदर्भ में एक पुस्तक प्रकाशित की जा रही है।

राष्ट्रपति जी इस प्रकाशन की सफलता के लिए अपनी शुभकामनाएँ प्रेषित करते हैं।

आपका

(प्रेम प्रकाश कौशिक)

डॉ. श्रीमती उर्मिला जामदार
केन्द्रीय उपाध्यक्ष एवं प्रन्यासी

"मयूर" ६६६, गोलबाजार
जबलपुर-४८२ ००२ (म.प्र.)
फैक्स- ०७६९ ३७६९७५

दिनांक : २२.०९.२०००

।। जय श्रीराम ।।

अखिल भारतीय जगद्गुरु रामानन्दाचार्य सप्तशताब्दी महोत्सव समिति
श्रीमठ : जगद्गुरु रामानन्दाचार्यपीठ पंचगंगाघाट वाराणसी

अनन्त श्री विभूषित जगद्गुरु रामानन्दाचार्य रामनरेशाचार्यजी महाराज के पावन चरणों में सादर सस्नेह नमन

अखिल भारतीय जगद्गुरु रामानन्दाचार्य सप्तशताब्दी महोत्सव, माघ कृ. सप्तमी वि.सं. २०५६ से माघ कृ. सप्तमी वि.सं. २०५७ तदनुसार दि. २७ जनवरी २००० ई.स. से १६ जनवरी २००१ ई.स. तक पुण्यक्षेत्र काशीधाम में आयोजित हो रहा है, जिसका शुभारंभ आगामी २७ जनवरी से हो रहा है। मन को बड़ी प्रसन्नता हुई। निमंत्रण प्रत्यक्ष आप स्वयं से प्राप्त हुआ यह मेरा परम सौभाग्य है। समारोह में उपस्थित रहने की तीव्र इच्छा होते हुये भी शारीरिक अस्वस्थता के कारण आने में असमर्थ हूँ। अतः क्षमा प्रार्थी हूँ। मानसिक उपस्थिति अवश्य रहेगी। सप्तशताब्दी महोत्सव समिति द्वारा आपके कुशल मार्गदर्शन में यह दिव्य समारोह श्रीरामजी की कृपा से निश्चित सफल संपन्न होगा इस दृढ़विश्वास के साथ,

आपकी
श्रीराम कीं सेवा में,

डॉ. (श्रीमती) उर्मिला जामदार

दूरभाषः ३७९३४३८, ३०१९०८०

अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी

२४, अकबर रोड, नई दिल्ली ११० ०११

सोनिया गांधी
अध्यक्ष

स्वामी रामानंदाचार्य की सप्तशती समारोहों के शुभारंभ पर आयोजित महोत्सव में सम्मिलित होने का मुझे अवसर मिला था। मेरी हार्दिक इच्छा थी कि मैं समापन-समारोह में भी उपस्थित होऊँ लेकिन पूर्व निर्धारित कार्यक्रमों के कारण यह संभव नहीं हो पा रहा, इसका खेद है।

स्वामी रामानंदाचार्य हमारे देश की समानता और सामाजिक न्याय की विचार-परंपरा के प्रतीक व्यक्तित्व हैं। आज से सात सौ वर्ष पहले उन्होंने जो संदेश दिया वह आज भी उतना ही प्रासंगिक तथा महत्त्वपूर्ण है। मुझे विश्वास है कि आने वाले समय में भी उनके सिद्धांत समाज को प्रेरणा देते रहेंगे।

महोत्सव में सम्मिलित सभी संतजनों को मेरा अभिवादन एवं श्रद्धालुओं को हार्दिक शुभकामनाएँ।

२० जनवरी, २००१ **(सोनिया गाँधी)**

---

१० जनपद, नई दिल्ली-११० ०११ दूरभाषः ३७९३४३८, ३०१९०८०

दिग्विजय सिंह
मुख्यमंत्री

मध्यप्रदेश शासन
भोपाल-४६२००४

---

९ जनवरी, २००१

जगद्गुरु रामानन्दाचार्य सप्त शताबदी महोत्सव के पावन प्रसंग पर आचार्य प्रवर के दिव्य तथा परमोदार संदेशों को व्यापकता, सर्वप्रेरकता, सर्वोपादेयता, तथा सर्वसुलभता प्रदान करने के लिए महोत्सव समिति ने एक विशिष्ट सत्साहित्य प्रकाशन महायज्ञ का भी संकल्प किया है जो अत्यन्त स्तुत्य है। आचार्य प्रवर के संदेश आज भी प्रासंगिक हैं। जिन मानवता विरोधी तथा सनातन धर्म के लिए महान घातक अत्यन्त संकीर्ण, पक्षपाती तथा अहंकार, अज्ञान, संशयादि ग्रसित कुभावों का प्राबल्य आज से सात सौ वर्ष पहले हुआ था जिसका परम स्तुत्य निराकरण आचार्य प्रवर ने किया जो अविस्मरणीय तथा वरदान स्वरूप है, वैसे ही परिस्थितियाँ आज भी पूर्ण प्रकर्ष के साथ प्रस्तुत हैं। जिनका निराकरण मानवता, भारतीयता तथा सनातन धर्म की सच्ची सेवा है। प्रस्तुत निराकरण में आचार्य प्रवर स्वामी रामानन्दाचार्य जी के विचार ही सर्वाधिक समर्थ हैं। अतएव उनका पुनः प्राकट्य साहित्य के रूप में परमापेक्षित है। यह गौरव का विषय है कि प्रस्तुत साहित्य प्रकाशन सेवा का म.प्र. सरकार को अवसर मिला है।

वर्तमान रामानन्दाचार्य स्वामी रामनरेशाचार्य जी महाराज ने मुझे राष्ट्रीय महोत्सव समिति का अध्यक्ष बनाया, जिसके लिए मैं उनका कृतज्ञ तथा परमधन्यता की भावना से मण्डित हूँ। मेरे प्रेरणा के स्रोत तथा अदृश्य शक्ति दायक सन्त शिरोमणि पीपाजी जगदगुरु रामानन्दाचार्य जी महाराज के प्रधान बारह शिष्यों में विराजमान थे, जो इतिहास के पृष्ठों में स्वर्णाक्षिरों में अंकित है। उनका वंशज होने का मुझे गौरव है तथा उनके पद चिह्नों पर चलकर अपने लौकिक तथा पारलौकिक जीवन को पूर्ण सार्थक करने की पूर्णतत्परता भी। स्वामी रामनरेशाचार्य जी ने इस अवसर पर मुझे सेवा में नियोजित कर महाराज तथा सन्तशिरोमणि पीपाजी की सच्ची संतति बनने का अवसर प्रदान किया है, जिसके लिए सदैव मैं उनका ऋणी रहूँगा।

शुभकामनाओं सहित।

सादर,

आपका

(दिग्विजय सिंह)

राज्यपाल बिहार
GOVERNOR BIHAR

राजभवन, पटना,
RAJ bHAVAN
PATNA-800 022

२५ सितम्बर, २००१

मुझे यह जानकार प्रसन्नता है कि श्रीमठ जगद्गुरु रामानन्दाचार्य पीठ, काशी (वाराणसी) सांस्कृतिक, धार्मिक एवं आध्यात्मिक विषयों पर एक पुस्तक का प्रकाशन करने जा रहा है।

मुझे आशा है कि यह पुस्तक सांस्कृतिक गतिविधियों के साथ-साथ धार्मिक एवं आध्यात्मिक चेतना को जागृत करने में भी सहायक होगी।

प्रस्तावित पुस्तक की सफलता हेतु मेरी हार्दिक शुभकामनाएँ।

(विनोद चन्द्र पाण्डेय)

डॉ. कर्ण सिंह
संसद सदस्य
(राज्य सभा)

३, न्याय मार्ग
चाणक्यपुरी
नई दिल्ली-११००२१

४.१.२००१

प्रिय शर्मा जी,

आपका दिनांक २९ दिसम्बर २००० का पत्र प्राप्त हुआ धन्यवाद। इस वर्ष तो महोत्सव में सम्मिलित होना मेरे लिये संभव न होगा, क्षमा करें।

स्वामी जी एवं आप सभी साथियों को मेरी हार्दिक मंगलकामनायें। भगवान शंकर से प्रार्थना है कि वे आपके कार्य को सफलता प्रदान करें।

सद्भाव सहित,

आपका
(कर्ण सिंह)

Phones: 3019080, 3012693, 3019606

ALL INDIA CONGRESS COMMITTEE (I)

24, AKBAR ROAD,
NEW DELHI-110011

०८.०१.२००१

प्रिय श्री शर्मा जी,

आपका पत्र दिनांक १ जनवरी, २००१ का मुझे प्राप्त हुआ। आपने मुझे दिनांक २२-२३ जनवरी, २००१ को जगद्गुरु रामानंदाचार्य सप्तशताब्दी समापनोत्सव के नव दिवसीय समारोह में काशी में आयोजित समापन महोत्सव में विशिष्ट अतिथि के रूप में आमंत्रित किया है।

मुझे खुशी है कि जगद्गुरु रामानंदाचार्य जी महाराज ने काशी में गौरवशाली सन्त परम्परा की अग्राणी भूमिका का निर्वहन किया था। वे राष्ट्र भक्ति आंदोलन एवं रामभक्ति परम्परा के प्रवर्तक सन्त एवं आचार्य थे। पंचगंगा घाट स्थित उनकी साधना स्थली ''श्रीमठ'' रामानन्द सम्प्रदाय की मूल एवं शीर्ष आचार्यपीठ है तथा इतिहास में रामभक्ति की सगुण एवं निर्गुण परम्परओं की गंगोत्री रही है। यहीं से श्री रामानन्द जी ने भक्ति के जनपथ को उद्घाटित किया।

अतः मैं महोत्सव की सफलता हेतु अपनी शुभ कामनायें भेज रहा हूँ।

भवदीय,

(सुशील कुमार शिन्दे)

SALMAN KHURSHID

M.A. (OXON). B.C.L.

दिनांकः १.१०.२००१

सेवा में,

श्री दयासिन्धु शर्मा,

मुझे यह जानकर हार्दिक प्रसन्नता है कि अखिल भारतीय जगद्गुरु रामानन्दाचार्य सप्तशताब्दी महोत्सव को अविस्मरणीय बनाने के लिए आचार्यपीठ श्रीमठ एक पुस्तक का प्रकाशन करने जा रहा है।

हमें विश्वास है कि यह ग्रन्थ अपने पाठकों को धर्म के सच्चे स्वरूप को समझने एवं उसके अनुपालन की प्रेरणा प्रदान करेगा।

मैं ग्रंथ के सफल एवं सार्थक प्रकाशन की कामना करता हूँ।

हार्दिक शुभकामनाओं सहित,

भवदीय,

(सलमान खुर्शीद)

मुख्यमंत्री

राजस्थान

७ जुलाई, २००१

मुझे यह जानकार प्रसन्नता है कि जगद्गुरु रामानन्दाचार्य पीठ, श्रीमठ, पंचगंगा घाट, वाराणसी द्वारा अखिल भारतीय जगद्गुरु रामानन्दाचार्य सप्तशती महोत्सव पर एक पुस्तक का प्रकाशन किया जा रहा है।

भारतीय संस्कृति के पोषक संतों-महात्माओं के शताब्दी आयोजन अपने आप में महत्वपूर्ण हैं। जगद्गुरु रामानंदाचार्य की सप्तशती महोत्सव वर्ष २७ जनवरी, २००० से १६ जनवरी, २००१ तक देश के विभिन्न भागों में वृहद् समारोहों के माध्यम से अध्यात्म-दर्शन के अनुष्ठान के साथ सम्पन्न हुआ। देश की द्वितीय काशी, जयपुर में भी यह महोत्सव ऐतिहासिक रहा।

मुझे विश्वास है कि पुस्तक की सामग्री जगद्गुरु रामानंदाचार्य सप्तशताब्दी महोत्सव की उपलब्धियों का ज्ञान कराने वाली होगी।

मैं जगद्गुरु रामानंदाचार्य स्वामी श्रीरामनरेशाचार्य जी को श्रद्धापूर्वक नमन करते हुए उनके संरक्षण में इस महोत्सव ग्रन्थ के सफल प्रकाशन की कामना करता हूँ।

(अशोक गहलोत)

कृष्णाकान्त उपाध्याय

वित्त अधिकारी,
सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय,
वाराणसी-२२१००२

भारतीय समाज धार्मिकता और आध्यात्मिकता की पृष्ठभूमि में विकसित हुआ है। इसकी मान्यता रही है कि मानव जीवन का उद्देश्य तुच्छ विषय-वासनाओं की पूर्ति मात्र नहीं अपितु मूल तत्त्व या सत्य का अनुसन्धान है। ऋषि, मुनि, सन्त, महात्मा, योगी, तपस्वी, सिद्ध और साधकों ने अपने आचरणों से निरन्तर इस मान्यता की पुष्टि की है। यह भी सत्य है कि संसार की स्वाभाविक गति के अनुसार जब-जब हमारा समाज भौतिकता के भीषण ताप से तप्त हुआ है, त्यागी साधु-सन्तों के कृपा की शीतल वर्षा हुई है। यही कारण है कि जहाँ विश्व की अनेक सभ्यतायें विकसित होने के बाद नष्ट हो गईं, भारतीय सभ्यता की निरन्तरता बनी हुई है। इस क्रम में उल्लेखनीय है कि तेरहवीं शताब्दी में जब भारतीय समाज अनेक विसंगतियों का शिकार हो गया था और पृथक्तावादी शक्तियाँ प्रबल हो गई थीं, जगद्गुरु श्रीरामानन्दाचार्य ने ऐसी रामभक्ति धारा प्रवाहित की, जिसमें जन-सामान्य समस्त भेदभाव भुलाकर आकण्ठ निमग्न हो गया। ऐसी मान्यता है कि आचार्य प्रवर के लगभग २५ हजार विरक्त शिष्य एवं १२ प्रमुख शिष्य थे। सन्त कबीर, धन्नाजाट, सन्त रैदास और गो० तुलसीदास जैसे महात्मा उसी परम्परा के तेजस्वी नक्षत्र हैं।

स्वामी रामानन्द जी ने काशी के पंचगंगा घाट पर स्थित जिस श्रीमठ को अपनी कर्मभूमि और साधनाभूमि बनाया, वह काशी की सांस्कृतिक प्रतिष्ठा को निरन्तर नये आयाम देता रहा। उसी परम्परा के वर्तमान आचार्य स्वामी श्रीरामनरेशाचार्य जी के सन्निध्य में जगद्गुरु श्रीरामानन्दाचार्य सप्त शताब्दी महोत्सव के मध्य जिन भव्य अनुष्ठानों, उत्सवों एवं कार्यक्रमों का आयोजन सम्पन्न हुआ, वे इक्कीसवीं शताब्दी की उषा-वेला में सांस्कृतिक पुनरुत्थान के उद्घोष हैं। यह स्वामी जी का विराट् व्यक्तित्व ही है, जिसने महोत्सव को बहुआयामी बना दिया। एक ओर शतमुख कोटि होमात्मक श्रीराम महायज्ञ, सर्ववेद वेदांग पारायण महायज्ञ, वैष्णवाचार्य एवं सन्तवाणी महायज्ञ, अखण्ड भगवन्नाम संकीर्तन महायज्ञ और अन्नदान महायज्ञ जैसे आध्यात्मिक अनुष्ठान, दूसरी ओर अपूर्व सांस्कृतिक समारोह, अपूर्व विद्वज्जन संगोष्ठी, राजनयिक सम्मेलन, हरिजन समाज सम्मेलन जैसे विभिन्न प्रकृति के कार्यक्रमों का संचालन, तीसरी ओर

विशाल शोभा यात्रा का आयोजन और चौथी ओर पारम्परिक महानुभावों का अभिनन्दन और दिव्य सन्तों की चित्र-प्रदर्शनी जैसे समारोहों का क्रियान्वयन और सर्वोपरि इन कार्यक्रमों का समान्तर रूप से संचालन-निश्चय ही यह सिद्ध कर देता है कि स्वामी जी भगवदैश्वर्य से सम्पन्न हैं। ऐसे सन्त के लिये जो स्वतः भगवान श्रीराम से साक्षात् जुड़े हुये हैं, हम किससे मंगलकामना करें? हम तो अभिलाषी हैं, उनके कृपा कटाक्ष के एक रश्मि की, जो हमारे हृदयाकाश के कालुष्य को दूर कर उसे आलोकित कर दे।

कृष्णाकान्त उपाध्याय

प्रो. आद्याप्रसाद मिश्र

पूर्व कुलपति

काशी के पञ्चगंगा घाट स्थित श्रीमठ द्वारा दिनांक १६ जनवरी से २४ जनवरी २००१ तक जगद्गुरु श्रीरामानन्दाचार्य सप्तशताब्दी समारोह का आयोजन किया गया। सम्पूर्ण कार्यक्रम जगद्गुरु रामानन्दाचार्य स्वामी रामनरेशाचार्य जी महाराज की प्रेरणा एवं सत्प्रयास से हुआ। टाउनहाल परिसर में निर्मित भव्य यज्ञशाला में २० जनवरी से २४ जनवरी तक अपूर्व शतमुखकोटि होमात्मक श्रीराम महायज्ञ का आयोजन किया गया। शास्त्रों में कोटि होम को अति प्रशस्त यज्ञ माना गया है। इसके लिए यथाविधि निर्मित १०० कुण्डों में श्रीरामषडक्षरमंत्र राज से एक करोड़ आहुतियाँ दी गयीं। इस यज्ञ में काशी की याज्ञिक परम्परा में निष्णात वैदिक मूर्धन्य पं. श्री लक्ष्मीकान्त पौराणिक आचार्य थे। इसके अतिरिक्त देश के सैकड़ों कर्मकाण्ड के पुरोधा विद्वान् ऋत्विक आदि के रूप में संलग्न थे। इसी के साथ अनेक वेदांगों का भी पारायण कराकर वेद वेदांग-पारायण महायज्ञ को भी सफल सम्पन्न कराया गया।

वैष्णव सम्प्रदाय के सभी आचार्यों एवं उनके परवर्ती सन्तों की उपदेशमयी वाणी का लाभ सामान्यजनों को मिल सके इस दृष्टि से वैष्णवाचार्यों एवं सन्तवाणी पारायण का भी कार्यक्रम आयोजित किया गया।

इस अवसर पर प्रतिदिन प्रातः ९.३० बजे से १२.३० बजे तक पं. कमलाकर चौबे आदर्श इण्टर कालेज, ईश्वरगंगी के क्रीड़ाप्रांगण में समारोह ाण्डप में रामचरितमानस, दासबोध, श्रीज्ञानेश्वरी, संत तुकाराम, संत कबीर, संत रैदास, संत घासीदास, संत गरीबदास, सूरदास, मीराबाई आदि के वचनों के पुण्यपाठ का कार्यक्रम चलता था। उसी मंच पर प्रतिदिन सायंकाल ६.३० बजे से धार्मिक संगीत, भजन कीर्तन, रामलीला आदि के लोकानुरञ्जक सांस्कृतिक कार्यक्रम भी आयोजित होते रहे। उसी मण्डप में प्रतिदिन अपराह्न २.३० बजे से सायं ६.३० बजे तक भिन्न-भिन्न तिथियों में क्रमशः धर्मसभा, मानससंगोष्ठी, सन्त सम्मेलन, हरिजन सम्मेलन आदि का कार्यक्रम हुआ जिसमें देश के तत्तदविषयों के मर्मज्ञ मनीषियों ने भाग लिया। इसके साथ ही दिनांक २० जनवरी २००१ को एक राष्ट्रीय विद्वत् संगोष्ठी आयोजित की गयी। इसमें काशी की परम्परा के अनुसार विभिन्न शास्त्रों के मर्मज्ञ विद्वानों के मध्य शास्त्रार्थ हुआ। अन्त में जगद्गुरु रामनरेशाचार्य जी द्वारा देश के अनेक प्रान्तों से पधारे विद्वानों

का सत्कार किया गया।

इस अवसर पर विद्वानों, सन्तों एवं महात्माओं के उपदेश से देश में व्याप्त सामाजिक विषमता, ऊँच-नीच का भाव, जाति-भेद आदि को मिटाकर सामाजिक समरसता, सर्वधर्म समभाव आदि की स्थापना कर जगद्गुरु रामानन्दाचार्य के उपदेशों को देश के कोने-कोने तक पहुँचाने की प्रेरणा दी गयी।

यद्यपि काशी में बड़े-बड़े धार्मिक आयोजन एवं अनुष्ठान हुआ करते हैं पर यह धार्मिक कार्यक्रम अपने आप में अपूर्व था। नगर के सभी प्रमुख स्थानों रेलवे स्टेशन, गंगा के घाट, सभी चौराहें आदि पर ध्वनि विस्तारक यंत्रों के माध्यम से रामनाम की ध्वनि एवं धार्मिक प्रवचन गुञ्जायमान हो रहे थे। सम्पूर्ण काशी नगरी शिव एवं राम के अद्भुत तादात्म्य अनुभूति का आनन्द ले रही थी। सभी लोगों ने वर्ग, जाति एवं सम्प्रदाय आदि भेदों को भुलाकर समान सामाजिक सहभागिता एवं भाईचारे का अनुभव किया। इस आयोजन के लिए सभी ने जगद्गुरु रामानन्दाचार्य स्वामी रामनरेशाचार्य जी महाराज की अल्पवय में ही प्राप्त विद्या, तप, तेजस्विता एवं उदात्तता को देखकर उनकी भूरि-भूरि प्रशंसा की और ऐसे कार्यक्रमों के लिए उन्हें सर्वविध सहयोग का भरपूर आश्वासन दिया।

यह प्रसन्नता की बात है कि उक्त आयोजनों के विषय में एक ग्रंथ का प्रकाशन किया जा रहा है जिससे जगद्गुरु रामानन्दाचार्य के लोकमंगलकारी धार्मिक संदेश एवं सत्प्रेरणायें जन-जन तक पहुँचाई जा सके। इसकी सफलता के लिए भूतभावन भगवान विश्वनाथ एवं सर्वमंगल के जनक भगवान श्रीराम के चरणों में प्रणाम करता हुआ अपनी मंगलकामनायें अर्पित करता हूँ।

आद्याप्रसाद मिश्र

आचार्य वशिष्ठ त्रिपाठी
अध्यक्ष
न्यायवैशेषिक विभागस्य
सम्पूर्णानन्दसंस्कृतविश्वविद्यालयः
वाराणसी

दूरभाष-३१५५०
आवास संकेतः
श्रीरघुनाथाश्रम
बी., ३०/२५२, नगवा
वाराणसी-२२१००५

पत्रांक.............   दिनांक ....

तत्र भवतां भगवद्भवानीभूतनाथपादपंकजपरागराजित वाराणसीनगर्यां न्याय-वेदान्त तन्त्रादि निखिलशास्त्रकदम्बमूर्धन्यानां ब्रह्मणः पादपद्मनिःसृतकल्लोलमय्याः भगवत्याः भागीरथ्यास्तटे अवस्थित भारतसंघ श्रीरामानन्दसत्सम्प्रदायमहासिंहासनं सम्भूष्य सम्प्रत्यनेकविद्वत्संस्कृतमहासम्मेलनादिकार्यक्रमकर्णधाराणां भगवत्कैंकर्य-स्वरूपभारतवर्षानेवस्थानेष्नेकविधाखण्ड रामनामसंकीर्तनाखण्डमानस पाठ प्रवर्तकानां भगवद्रामानन्दसप्तशतीमहोत्सवपूर्णाहुतिकार्यक्रमान्तर्गत-श्रीकाशीविश्वनाथरजोराजित काशीनगर्यांकोटिहोमात्मकमहायज्ञाष्टादशपुराणवाचन-चतुर्वेदपारायणपरायणानांविविध-शास्त्रपारंगतविद्वन्मण्डलमहामण्डितानां संस्कृत-संस्कृतिसंरक्षणतत्पराणामाध्यात्मिक-पथप्रवर्तकानां श्री श्री अनन्तश्री विभूषितानामाचार्यश्रीरामानन्दाचार्यपद-मलंकुर्वतां त्यागतपश्चर्यासौम्यतायाः प्रतिमूर्तीनां श्रीरामनरेशाचार्य स्वामिवर्य्याणामनवरतप्रयासेन भारतीयसंस्कृतेः आधारभूतस्य संस्कृतवाङ्मयस्य सर्वत्र भारतेवर्षेप्रसारः विद्यते।

श्रीमद्भयः आचार्यपादेभ्यः चिरकालदहं परिचितः। अध्ययनावस्थायामेव श्रीमतामप्रतिमप्रतिभया वाराणसेयाः समस्ताः विद्वांसः परिचिताः अभूवन्। महता श्रमेण न्याय-वेदान्तादिशास्त्रं सम्यगधीत्य तत्तच्छास्त्राणामध्यापनञ्च सम्पाद्य सर्वत्र याग, संकीर्तन, शास्त्रचर्चादिभिः सर्वेषु प्रदेशेषु ख्यातकीर्तयः स्वामिपादाः विराजन्ते। श्रीरामानन्दाचार्यस्य सप्तमशताब्द्यां वाराणस्यामेकः महान् समारोहः स्वामिवर्य्यैः समायोजितः। तदवसरे श्रीराममहायज्ञ, पुराणवाचन, विशिष्टविदुषां प्रवचनादिकं सम्पादितम्। तस्मिन्नवसरे वाराणसीस्थानां तत्तच्छास्त्रमर्मज्ञानां विशिष्टविदुषां प्रवचनानि अभूवन्। एवं व्याकरण, न्याय, वेदान्तादि विषयमवलम्ब्य शास्त्रार्थचर्चा जाता। तदवसरे विदुषां मध्ये श्रीमतां स्वामिपादानां यत् विशिष्टं व्याख्यानं जातं तेन अत्रत्याः समस्ताः विद्वांसः तेषामपरिमितज्ञानेन विलक्षणप्रतिभया च लब्धपरिचयाः सजाताः।

श्रीस्वामिवर्य्याणां शास्त्रीयजीवनं यथोन्नतं तथैवाध्यात्मिकं जीवनमपि। सर्वत्र देशेषु

परिभ्रमता श्रीमता जनेषु श्रीरामभक्तिधारायाः प्रवाहः क्रियते। गुरोः गरिमा शिष्यरूपेण मानवतायाः कल्याणं करोति इति श्रीमद्भयः शिष्यकदम्बः तत्तत्प्रदेशेष्वपि भारते वर्षे विभिन्नाध्यात्मिक, भौतिक विकासे सन्नद्धः दरीदृश्यते। सम्प्रति सर्वत्र साक्षात् कलि नृत्यति किन्तु यत्र स्वामिपादानामुपस्थितिः भवति तत्र भजनकीर्तनशास्त्रपरिचयर्या अभिभूतः कलिरपि आध्यात्मिकपथमारोहणे समुत्सुको भवति इति तत्र श्रीमतामाध्यात्मिकवपुविस्तारस्यैव कारणत्वं कल्प्यतेऽस्माभिः।

वाराणस्यामेका विशिष्टयोजना विद्यते आचार्यश्रीवर्य्याणाम् सा च श्रीमठस्य (श्रीरामानन्दपीठस्य) विकासः। नहि तत्र भौतिक विकासः अपितु मानवमात्रस्य प्रेरणाप्रदाध्यात्मिक विकासः अपेक्षित इति तेषां हृदि विद्यते। भगवन्तं श्रीभवानीविश्वनाथं प्रार्थये यत् श्रीमतां जगत्कल्याणकारणीभूता एषा योजना सफलीभूयादितिशम्।

वशिष्ठ त्रिपाठी

साहित्यविभागे आचार्याध्यक्ष सं. सं. वि. वि., वाराणसी

महामहोपाध्यायः पं. कैलासपति त्रिपाठी

काश्यां सुमहति पटमण्डपे प्रकास्यमान महेन्द्रवैभवे भगवत्गुणवर्णना कर्णन् लालसोल्लासितोऽपरिमिते सुविशाले जनसम्मर्दे, भगवति निरूपम द्रढ़िसम्प्लुत श्रद्धा विश्वासभाजां भक्त्या तपसा वचसा महिम्ना वैभवेन च स्फुट प्रतीयमान समधिगत भगवदनुग्रहाणां जगद्गुरु रामानन्दाचार्य पदवीजुषां श्रीरामनरेशाचार्याणां सान्निध्ये समजानि सभा शास्त्रसुधापायिनां पण्डितानाम्।

तत्र विविध शास्त्र सिन्धु विन्दुनधिकृत्य विमृशत्सु विद्वत्सु मयाप्यधिगतः कश्चित् कालो व्याहरणाय। विषयोऽभवत्-

साहित्यशास्त्रे शास्त्रान्तरोपयोगित्वम्।

विषयो व्यापकः। नहि कतिपयक्षणैः सविधि प्रकाश्यः। नहि कतिमितसार-प्रकाशनाध्वना प्रायते किमपि व्याहर्तुम्।

प्रावप्रख्यं जगत् कविः सरसं करोति। निजरसभरात् तत्र सारतां स्थापयति। तस्मिन् जगति अपूर्वां एवमन्विताभिधानवादोऽपि यत्र अभिधोल्लसितस्य सामान्यावच्छादितस्य पदार्थान्तरं संसृष्टस्य बोधने विरता भवत्यभिधाशक्तिः। तत्रातिविशिष्टस्य व्यङ्ग्यस्य बोधः कया वृत्त्या भविष्यति ऋते व्यञ्जनाव्यापारम्।

एवं सङ्क्षेपतः इदमेव वक्तुं शक्यते यत् सर्वेषां शास्त्राणां सन्ति काश्चन पूर्वमान्यताः। तत्र स्वानुकुलाः शब्दवृत्तयो मन्यन्ते। साहित्यस्य स्थितिर्भिन्ना। अतएव साहित्य शास्त्रिणः विभिन्नानि शास्त्राणि समुद्धृत्य काव्यार्थबोधे व्यञ्जनायाः आवश्यकता निरुप्य शास्त्रान्तर मान्यतां यथास्थानं प्रत्याचक्षते।

कैलाशपति त्रिपाठी

•

फोन- कार्यालय- २२३१६०, आवास- २२१२६८
फैक्स- ९१-५४२-२२१२६८

प्रोफेसर आर. जे. सिंह
कुलपति
Professor R.J. Singh
Vice-Chancellor

महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ
वाराणसी-२२१००२
Mahatma Gandhi Kashi Vidyapith
Varanasi-221002

संख्या-कु./७३६/२००१ दिनांकः ०१-१०-२००१

प्रिय महोदय,

जगद्गुरु रामानन्दाचार्य भक्ति के प्रवर्तक आचार्य थे। उन्होंने भक्ति के जिस स्वरूप का समाज एवं राष्ट्र में शंखनाद किया उससे समता, बन्धुत्व एवं समरसता का आध्यात्मिक सन्देश मुखर हुआ। जन-जन को भक्ति का अधिकारी बनाकर उन्होंने सामाजिक समता की अभिनव क्रान्ति मध्यकाल में उपस्थित की। समता के आध्यात्मिक अधिकारों की इस क्रान्ति ने समाज और संस्कृति को विघटन से बचाया। ऐसे अवतारी युग-पुरुष के आदर्श एवं मूल्य आज भी भारतीय समाज की पुनर्रचना में अपनी प्रासंगिकता एवं सार्थक उपादेयता रखते हैं। इसी प्रासंगिकता और उपादेयता को दृष्टिगत रखते हुए इक्कीसवीं सदी के आरम्भ में जगद्गुरु रामानन्दाचार्य सप्तशताब्दी के अवसर पर इस परम्परा की मूल आचार्यपीठ ''श्रीमठ'', पंचगंगा, काशी ने सारे देश में रामानन्दाचार्य के सन्देश की दुंदुभि बजायी. इस निमित्त सभी के सूत्र संचालन का केन्द्र होने के कारण काशी में सप्तशताब्दी महोत्सव की प्रवृत्तियों एवं अनुष्ठानों की गूंज अधिक प्रभावपूर्ण थी। वर्ष-पर्यन्त राष्ट्रव्यापी आयोजनों में श्रीरामभाव, भक्ति की चेतना, धार्मिक संस्कारों का प्रसार, यज्ञ, अनुष्ठान, समारोह, प्रकाशन एवं अन्य गतिविधियाँ जिस तरह से नियोजित एवं संचालित हुईं, उससे जगद्गुरु रामानन्दाचार्य जी महाराज की प्रासंगिकता पर जन-जन का ध्यान आकर्षित हुआ। निश्चय ही यह प्रयास आने वाली पीढ़ियों और आज के राष्ट्रीय जीवन के लिए प्रेरक प्रस्तुति होगी। इसकी सफलता जगद्गुरु रामानन्दाचार्य स्वामी रामनरेशाचार्य जी महाराज के प्रेरणास्पद नेतृत्व एवं कुशल दिशा निर्देशों के कारण स्वयं सिद्ध है। मैं अपनी मंगलकामना संप्रेषित करता हूँ।

सचिव, श्रीमठ,
पंचगंगा घाट, काशी।

भवदीय,
(आर. जे. सिंह)

प्रो. रामकिशोर त्रिपाठी
दर्शनसङ्कायाध्यक्षः

फोन नं० : २०७६३७
सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय,
वाराणसी-२२१००२

पत्रांक................ दिनांक ....

॥श्रीरामचन्द्राय नमः॥

श्री रामानन्दायचार्योविजयतेतराम

शास्त्रानेकविचारणाप्तविभवो लब्ध प्रतिष्ठःसुधीः ।
स्वाध्यायेन विशुद्ध चित्तकरणो विद्याप्रभाभासुरः ।।
रामानन्दपदशिवन्दमघुपो विद्वज्जनै वन्दित ।
आचार्यो जयतेतयां सततं श्रीरामनायाधिपः ।।

धर्मार्थकाममोक्षाख्यचहुर्विधमुरूषार्थेषु मोक्षएव परमपुरुषार्थस्तस्यैवात्यान्तिक दुःखनिवृत्तिरूपत्वात् परमानन्दस्वरूपत्वाच्च। तत्स्वरूपं प्रतिपादयन्ति तथ्या-तथ्यविवेचनपराणि दर्शनशास्त्राणि। जगदिदमविधाजन्यकामनाधन्वयाद्दुःखमयम्तद्-व्यतिरिक्तंपरमात्मवस्तुपरमानन्दस्वरूपं यदर्थ यतते विगतमान मदाभिमानवितृष्णा मुनिवरः। परमगेयो हि भेयो दर्शनानां तत्सिद्धश्च भवति प्रमाणैशिति दर्शनश्रेयस्कामा श्रीमद्रामानन्दपदारविन्दसंसेवनलब्धाशेवप्रतिभा अधिराशि प्रख्यातनैयाभिकेथ्यः श्रीबदर्शनाथ शुक्ल महारूपेभ्योऽधीतन्यायशास्त्रत्वेन प्रमाणप्रवीणाः श्रुति प्रमाणेनैव प्रमाणमास्तिकदर्शनानामतः श्रुतिप्रमाणभूतंवेदान्त-शास्त्रंसम्भागधीत्य याथातथ्येनवेदान्त-शास्त्रतत्त्वविदा सर्वशास्त्रनिसवाताश्वेति परिज्ञाय रामानन्दाचार्यपीठेऽभिसिक्त-तत्सम्प्रदायपरतैक्ष्सद्धि।

दृष्टश्च सर्वैरेतेषामरणीयशेमुषीप्रतियाप्रभावो गतवर्षे........ मासस्य ...... दिनांकेऽधिकारी शास्त्रार्थसभायाम्। तत्र सर्वशास्त्रेषु विचारो रामानन्दाचार्य श्रीरामनरेशाचार्य.......... पक्षत्वे..... भवत्। तत्तच्छास्त्रेषु प्रमुखविषयानधिकृत्य विदुषां व्याख्यानानि जातानि, तत्र सर्वत्रापि विषयेषु निर्णेतृरूपेणासीच्छ्रीमतां व्याख्यानम्। तत्सम्बन्धे पत्रिका प्रकाशयत इति महते प्रमोदाय। अनुरून्धे कीमतो यत् सभायां सम्पन्न शास्त्रार्थ विषये इत्युल्लेखः कार्यः। श्रीभवानीविश्वनाथौ सम्प्रार्थये श्रीमतोऽभ्युदयाय पत्रिकाया प्रचार प्रसाराय च।

रामकिशोर त्रिपाठी

डॉ. युगल किशोर मिश्र
प्रोफेसर एवं अध्यक्ष, वेद विभाग

सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय
७ प्रोफेसर कालोनी, जगतगंज,
वाराणसी-२२१००२

पत्रांक.............

दिनांक ....

सन्देश

मानवता की रक्षा एवं प्राणियों को सन्मार्ग का पथ प्रदर्शित करने हेतु समय-समय पर जिन दिव्यात्मा विभूतियों ने प्रगट होकर मानव का मार्गदर्शन किया है उनमें से महान् सन्त श्रीरामानन्दाचार्य अन्यतम थे। उन्होंने अपने सदुपदेश एवं अनन्य ईश्वर भक्ति से प्राणिमात्र के लिये ऐसी कल्याण-धारा प्रवाहित की जिससे भारतीय जनमानस आज भी आप्यायित है। इस महान् सन्त की सप्त-शताब्दी के अवसर पर श्रीरामानन्दपीठ के आचार्य जगद्गुरु श्रीरामनरेशाचार्य जी महाराज ने देशभर में भव्य समारोहों का आयोजन कर धर्मावलम्बी जनता को भगवद्भक्ति की गंगा में अवगाहन कराकर महान् लोकमंगल सम्पादित किया है।

श्री स्वामी रामानन्दाचार्य सप्त-शताब्दी के सम्पूर्ति प्रसंग में जगद्गुरु आचार्य श्रीरामनेशाचार्य जी के मंगल सान्निध्य में काशी में विराट् श्रीराम-महायज्ञ एवं शास्त्र-सभा का आयोजन अविस्मरणीय कार्य रहे हैं।

श्रीरामानन्दपीठ (श्रीमठ) के तत्वावधान में चतुर्दिक् प्रेम, सौहार्द एवं भगवद्भक्ति का विस्तार हो यह कामना है।

श्रावणी पूर्णिमा
वि.सं. २०५८

युगल किशोर मिश्र

प्रो. श्रीकान्त पाण्डेय (प्रथम)
आचार्य एवं अध्यक्ष, व्याकरण विभाग,
निदेशक, अनुसंधान संस्थान
सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी-२२१००५

पत्रांक............. दिनांक १३.०९.२००१

अनन्त श्री विभूषित परमाचार्य जगद्गुरु रामानन्दाचार्य श्रीरामनरेशाचार्य जी सम्प्रति देश के उन महान् सिद्ध, साधक, तथा सन्तों की अविरल परम्परा को सम्वर्धित करने वाले चिन्तकों, मनीषियों में परमतेजस्वी सन्त हैं। न्याय, वेदान्त, व्याकरणादि अनेक शास्त्रों के उत्कृष्टप्रौढपाण्डित्य से सम्वलित होते हुए विद्या का पूर्णपरिपाक विनय सम्बद्ध, सभी लोग इनमें अत्यन्त सहजतापूर्वक अनुभव करते हैं।

भारतीय संस्कृति, उसका मूल संस्कृत भाषा तथा सम्पूर्ण संस्कृत वाङ्मय-वेद, शास्त्र, पुराणादि की उपासना तथा इनके संरक्षण में तथा सर्वविध प्रचार प्रसार में अपने जीवन की सार्थकता मानने वाले परमाचार्य जी सर्वथा हम सभी के लिए अभिवन्दनीय-अभिनन्दनीय हैं।

आज इस वैज्ञानिक युग में भी धर्म के अत्यन्त गुह्य तात्त्विक रहस्यों के परिज्ञानार्थ विचारकों सत्य सनातन धर्म के उपासकों तथा भक्तों की अन्तर्व्यअता के शमन हेतु परमाचार्य श्री का सान्निध्य हम सभी भारतवासियों को मिलता रहे यही साम्ब श्री काशी विश्वनाथ जी से प्रार्थना एवं कामना है।

श्रीकान्त पाण्डेय

ज.गु.रामानंदाचार्य त्रिदिवसीय सप्तशताब्दी महोत्सव का शुभारम्भ

जगद्गुरु रामानंदाचार्य पदप्रतिष्ठित
श्रीरामनरेशाचार्य जी महाराज

आदिपीठ श्रीसम्प्रदाय (रामावत)
पञ्चगंगा काशी, (उत्तर प्रदेश)

।। नमोऽस्तुरामाय ।।

पंचगंगा के क्षेत्रीय विशिष्ट देवों का पूजन

वर्षव्यापी तथा राष्ट्रव्यापी जगद्गुरु रामानन्दाचार्य जयन्ती महोत्सव की सफलता के लिये शुभारम्भ के पूर्वकाल में मैं जहाँ भी गया, वहाँ प्रमुख देवों का पूर्णवैदिक गरिमा एवं समृद्धि के साथ पूजन किया। पूजन के साथ देवों को आमन्त्रित भी करता था। त्रिभुवनन्यारी काशी के प्रमुख देवों-भगवान बिन्दु माधव, भगवान् विश्वनाथ, कालभैरव, दण्डपाणि, जगदम्बा, अन्नपूर्णा, ढुंढिराज गणेश, साक्षीविनायक-मर्णिकर्णिका तीर्थ तथा माँ गंगा का भी पूर्ण वैदिक मर्यादा तथा अनुपम प्रेम से (भाव) से पूजन किया।

वैष्णव परम्परा में निष्काम भाव से वैदिक विधि के साथ भावों का भी पूर्णयोग होता है।तभी तो गोस्वामी तुलसीदास जी श्रीराम प्रेमावतार भरतश्री के द्वारा श्रीरामचरणपादुका पूजन का वर्णन करते हुये लिखना नहीं भूलते "नितपूजन प्रभु पाँवरी प्रीति न हृदय समात"। यह भाव वस्तुतः सम्पूर्ण वेदानुकूल सनानत धर्म का सारसर्वस्व है। भगवद्गीता का उद्घोष इसका परम पोषक है। 'पत्रं पुष्प-फूलं तोयं यो मे भक्त्या प्रयच्छति।' सम्पूर्ण ऐश्वर्यशाली भगवान् को केवल संस्कारित वस्तु का आंशिक दान कैसे द्रवीभूत करेगा। उसे तो प्रेम के चाशनी से ओत-प्रोत वस्तु ही विजातीय अनुकूलत्वेन समुपस्थित करती है।

श्रीसम्प्रदाय (रामावत) प्रमुखतया श्रीरामोपासक है तथापि अन्यान्य देवों की उपासना भी श्रीराम के रूप में ही की जाती है। इसका माध्यम शास्त्र-परम्परा तथा अनन्यता का सम्पूर्ण रक्षण होता है। दूसरी परम्पराओं में यह भावना गंगा सूख गयी है, जो परम्परा सनातन धर्म तथा पूजक को अधोगति देने वाली है।

देवों की समाराधना ने ही जयन्ती महोत्सव को परमोत्कर्ष प्रदान किया ऐसा मेरा पूर्ण विश्वास है।

ज.गु. रामानन्दाचार्य सप्तशताब्दी महोत्सव का श्रीगणेश

डॉ. प्रभुनाथ द्विवेदी

जगद्गुरु रामानन्दाचार्य सप्तशताब्दी के वर्षपर्यन्त चलने वाले राष्ट्रव्यापी कार्यक्रमों की शृंखला रामानन्दाचार्य जयन्ती २७ जनवरी से २९ जनवरी सन् २००० तक त्रिदिवसीय शुभारम्भ महोत्सव के साथ उद्घाटित हुई। दि. २७ जनवरी को पूर्वाह्न काशी के टाउन हाल मैदान में शताधिक वैदिक विद्वज्जनों द्वारा चारों वेदों के पाठ के साथ आरम्भ इस महोत्सव एवं रामानन्दाचार्य सप्तशताब्दी आयोजनों की शृंखला का उद्घाटन अपराह्ण सम्पन्न संत सम्मेलन में पुरीपीठाधीश्वर जगद्गुरु शंकराचार्य स्वामी निश्चलानन्द जी महाराज द्वारा किया गया। त्रिदिवसीय महोत्सव के २९ जनवरी के समापन सत्र में हुये राजनयिक समागम की मुख्य अतिथि भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की अध्यक्ष श्रीमती सोनिया गाँधी रहीं। २८ जनवरी का मुख्य आयोजन अ.भा. विद्वत् संगोष्ठी का समायोजन रहा, जिसके मुख्य अतिथि पूर्व कश्मीर नरेश एवं पूर्व केन्द्रीय मंत्री महाराजाधिराज कर्ण सिंह जी रहे। तीनों दिन भजनों की शास्त्रीय सन्ध्यायें भी समायोजित हुईं। सभी कार्यक्रम मुख्य संकल्पक जगद्गुरु रामानन्दाचार्य स्वामी रामनरेशाचार्य जी महाराज के सान्निध्य में सम्पन्न हुए।

रामानन्द सम्प्रदाय की शीर्ष एवं मूल आचार्यपीठ 'श्रीमठ', पंचगंगा, काशी तथा पीठाधीश्वर जगद्गुरु रामानन्दाचार्य स्वामी रामनरेशाचार्य जी के संकल्प से नियोजित जगद्गुरु रामानन्दाचार्य सप्तशताब्दी महोत्सव की प्रवृत्तियों, उसके उत्सवों, समारोहों एवं अनुष्ठानों आदि के समायोजनार्थ आचार्यश्री द्वारा अ.भा. जगद्गुरु रामानन्दाचार्य शप्तशताब्दी महोत्सव समिति का गठन मध्य प्रदेश के तत्कालीन मुख्यमंत्री तथा आद्य जगद्गुरु रामानन्दाचार्य के द्वादश प्रधान शिष्यों में सम्मिलित संत पीपा जी महाराज के वंशज माननीय श्री दिग्विजय सिंह जी की अध्यक्षता में किया गया। इसके साथ ही देश के विभिन्न नगरों में स्थानीय समितियाँ भी गठित हुईं और इसी क्रम में अखिल भारतीय समिति के स्वागताध्यक्ष उत्तर प्रदेश शासन के पूर्व मंत्री, पं. लोकपति त्रिपाठी की अध्यक्षता में स्वामी रामानन्द जी की मूल साधना स्थली काशी की समिति का भी गठन हुआ। सप्तशताब्दी के त्रिदिवसीय शुभारम्भ महोत्सव का समायोजन राष्ट्रीय आयोजन समिति एवं काशी की आयोजन समिति के पदाधिकारियों एवं कार्यकर्ताओं के संयुक्त सत्प्रयासों के फलस्वरूप ऐतिहासिक गरिमा के साथ हुआ। जगद्गुरु रामानन्दाचार्य की

सप्तशती के अवसर पर उनके आदर्शों, मूल्यों एवं उपदेशों की सम्पूर्ण परम्परा की ओर पूरे राष्ट्र का ध्यान आकृष्ट करने में यह आयोजन ऐतिहासिक धरोहर के रूप में स्थापित हुआ।

प्रथम दिवस (२७ जनवरी)

रामानन्दाचार्य जयन्ती (२७ जनवरी) को सप्तशताब्दी उद्‌घाटित हुई। इससे पूर्व २५ जनवरी को रामानन्दाचार्य स्वामी रामनरेशाचार्य जी महाराज ने संतों, भक्तों तथा काशी के विशिष्ट नागरिकों के साथ पंचगंगा-पूजन, पंचगंगा में दीपदान तथा पंचगंगा क्षेत्र के सभी पौराणिक देवालयों का सविधि दर्शन पूजन किया। २७ जनवरी को प्रातः ७ बजे 'श्रीमठ' में राष्ट्रव्यापी रामानन्द सम्प्रदाय की केन्द्रीय आस्था के प्रतीक रामानन्दाचार्य चरणपादुका का सविधि वैदिक रीति से पूजन हुआ। तत्पश्चात् सप्तशताब्दी उद्‌घाटन के सभी त्रिदिवसीय आयोजन चार हजार संतों एवं भक्तों के बैठने की कुर्सियों की सामर्थ्य वाले टाउन हाल मैदान में निर्मित विराट एवं भव्य रामानन्दाचार्य शप्तशताब्दी मण्डप में सम्पन्न हुये। पूर्वारुण दस बजे शताधिक विद्वत्जन द्वारा वेदों की सभी शाखाओं के पाठ के साथ वसन्त पूजा का कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। समारोह का संयोजन पं. गणेश्वरशास्त्री द्राविड़, पं. लक्ष्मीकांत रामाचार्य पुराणिक, पं. गोविन्द पुराणिक आदि वैदिक विद्वानों के दल ने किया।

उद्‌घाटन समारोह

वसन्त पूजा के पश्चात् अपराह्न एक भव्य समारोह में संत सम्मेलन के साथ रामानन्दाचार्य सप्तशताब्दी महोत्सव का उद्‌घाटन करते हुये पुरी पीठाधीश्वर जगद्‌गुरु शंकराचार्य स्वामी निश्चलानंद श्री महाराज ने सनातन धर्म के नेतृत्व के प्रति स्थापित परम्पराओं के अनुरूप समुदाय के लोगों की अखण्ड और एकता बद्ध आस्था का आह्वान किया। उन्होंने कहा कि इसाई धर्म में पोप एक है और राजनीति में राष्ट्रपति और प्रधानमंत्री भी एक ही होता है, लेकिन यह सनातन धर्म समाज की दुर्भाग्यपूर्ण बिडम्बना है कि लोग यहाँ नकली शंकराचार्य बनकर घूमते हैं और उन्हें राजनीतिक संरक्षण मिलता है। काशी के संत एवं भक्त समाज का आह्वान करते हुये उन्होंने कहा कि सनातन धर्म की स्थापना पीठों के प्रति आस्था को खण्डित करने वालों को धर्माचार्य के रूप में समाज यदि मान्यता देता है तो वह अपने पाँव पर ही कुल्हाड़ी मारेगा।

शंकराचार्य ने समाज में सामाजिक न्याय को सुनिश्चित करने के लिये आरक्षण की नीति का समर्थन करते हुये भी वर्तमान आरक्षण नीति को अदूरदर्शितापूर्ण बताया जो न केवल प्रतिभा हनन के लिये उत्तरदायी है बल्कि प्रतिशोधात्मक प्रतिस्पर्धा को

जन्म देती है। हमारी आरक्षण नीति आज बड़े पैमाने पर देश में प्रतिभा पलायन का कारण साबित हो रही है। इस नीति से आरक्षण पाने वाले और उससे वंचित दोनों ही वर्गों में प्रतिभा हनन हो रहा है। आज प्रतिभा अभिनिष्क्रमण के चलते भारतीय प्रतिभा का बड़े पैमाने पर दूसरे देश प्रयोग कर विकास कर रहे हैं। ऐसी स्थिति में हमारी आरक्षण नीति विकास के अवसर से अधिक द्वेषभाव को बढ़ावा देने वाली साबित हो रही है।

उन्होंने कहा कि धर्म में विज्ञान को दिशा देने का सामर्थ्य है, लेकिन विज्ञान हमें दिशा नहीं दे सकता। जहाँ विज्ञान की सीमा समाप्त हो जाती है, वहाँ से वेद और वेदान्त की सीमा आरम्भ होती है। उन्होंने कहा कि विश्व का निर्माता और नियंता स्वयं ईश्वर है। वह निमित्त भी है और उपादान भी।

मध्य प्रदेश के मुख्यमंत्री अ.भा. जगद्गुरु रामानन्दाचार्य सप्तशताब्दी महोत्सव समिति के अध्यक्ष तथा जगद्गुरु रामानन्दाचार्य के द्वादश प्रधान शिष्यों में सम्मिलित पीपा जी महाराज के यशस्वी वंशज माननीय श्री दिग्विजय सिंह ने सप्तशताब्दी की प्रासंगिकता और ऐतिहासिक महत्त्व को प्रतिपादित करते हुए कहा कि आज भी रामानन्द जी के आदर्श हमारी समस्याओं के समाधान में प्रासंगिक हैं।

श्री दिग्विजय सिंह जी ने कहा कि सात सौ वर्ष पूर्व, जब लोग धर्म को संकीर्णता की दृष्टि के साथ अलग ढंग से पारिभाषित कर रहे थे, समाज में कुरीतियों, विभेदों और आक्रामक संकीर्णताओं का बोलबाला था, तो एक युग प्रवर्तक विभूति के रूप में स्वामी रामानन्दाचार्य का अवतार हुआ। उस कठिन एवं चुनौतीपूर्ण काल में उन्होंने ब्राह्मण कुल में उत्पन्न होकर भी सभी सम्प्रदायों एवं जातियों के लोगों को शिष्य बनाने का साहस प्रदर्शित किया और एक भेदभावरहित समाज एवं राष्ट्रनिर्माण की प्रेरणा खड़ी की। फलतः सनातन धर्म की मर्यादा एवं गरिमा जन-जन के बीच पुनः स्थापित हुई।

समारोह के आरम्भ में स्वागताध्यक्ष तथा उत्तर प्रदेश शासन के पूर्व मंत्री पं. लोकपति त्रिपाठी ने स्वागत भाषण करते हुये आयोजन समिति की ओर से शंकराचार्य जी, अन्य सन्तजन तथा देशभर से आये रामानन्द जी के भक्तों का हार्दिक स्वागत किया और आशा व्यक्त की कि यह ऐतिहासिक समारोह रामानन्द जी के विचारों को पुनः स्थापित करने में अत्यन्त कारगर कदम होगा। श्रीमठ द्वारा सप्तशताब्दी वर्ष में नियोजित कार्यक्रमों से जनचेतना उधर मुड़ेगी।

राष्ट्रिय आयोजन समिति के संयोजक पण्डितप्रवर श्रीगणेश्वर शास्त्री द्रविड़ ने कार्यक्रमों के उद्देश्य, सनातन धर्म और रामानन्दाचार्य के उपदेशों पर विस्तार से प्रकाश डाला। समारोह के आरंभ में जगद्गुरु शंकराचार्य स्वामी निश्चलानंद जी,

जगद्गुरु रामानन्दाचार्य स्वामी रामनरेशाचार्य जी, माननीय श्री दिग्विजय सिंह और उपस्थित संतजन एवं विशिष्ट जनों ने रामानन्दाचार्य जी के चित्र पर माल्यार्पण किया। उससे पूर्व जगद्गुरु शंकराचार्य ने दीप प्रज्ज्वलित कर समारोह का विधिवत् श्रीगणेश किया।

समारोह के अध्यक्षीय सम्बोधन में जगद्गुरु रामानन्दाचार्य स्वामी रामनेरशाचार्य ने कहा कि रामानन्दाचार्य की सप्तशताब्दी एक ऐतिहासिक अवसर है जिसका प्रयोग 'श्रीमठ' श्रीरामभाव के प्रसार के राष्ट्रव्यापी अभियान के रूप में करेगा। उन्होंने वर्षपर्यन्त पूरे देश में चलने वाली प्रवृत्तियों, आयोजनों एवं अनुष्ठानों के सम्बन्ध में 'श्रीमठ' के संकल्पों की विस्तृत जानकारी देते हुए कहा कि इनके माध्यम से यह ऐतिहासिक अवसर इतिहास पर अपनी स्थायी छाप छोड़ सकेगा। आचार्यश्री ने मञ्चासीन सभी अतिथि संतों का विशद प्रभावपूर्ण परिचय प्रस्तुत कर उपस्थित सन्त समागम के प्रति विराट भक्त समुदाय की आस्था को उत्प्रेरित करते हुए समारोह की आध्यात्मिक गरिमा के भाव को उत्कर्ष प्रदान किया।

समारोह को सर्वश्री बालयति संत उमेश नाथ जी वाल्मीकि पीठ, उज्जैन, श्रीमहन्त पुरुषोत्तम दास जी- गुना, श्रीमहन्त सच्चिदानंद दास रामायणी- मणिपर्वत, अयोध्या, श्रीविचारदास साहब-कबीर मूल गादी-काशी, स्वामी सन्तशरण जी महाराज बड़ा अखाड़ा- मैहर, सेनाचार्य स्वामी अचलानंद जी महाराज- पुष्कर, श्रीमहन्त जगन्नाथदास जी- बड़े हनुमान जी, सूरत, श्रीमारोती जी महाराजवारकरी सम्प्रदाय- आलन्दी (महाराष्ट्र), श्री सीताराम दास-अयोध्या, संत सुभद्रदास जी-काशी, श्रीमहन्त रामसुभग दास जी-फट्टीबाबा-वृन्दावन, श्रीमहन्त निर्मल दास जी-लुधियाना आदि ने भी सम्बोधित किया। समारोह में स्वागत भाषाण से पूर्व श्रीरामजनम योगी द्वारा अनवरत शंखनाद की प्रस्तुति हुई। कार्यक्रम का आरम्भ पं. श्याम गंगाधर वापट के पौराणिक मंगलाचरण से हुआ। संचालन पं. विश्वेश्वर शास्त्री द्रविड़ ने तथा अंत में धन्यवाद ज्ञापन महात्मा गाँधी काशी विद्यापीठ के पूर्व कुलपति प्रो. रामकुमार त्रिपाठी ने किया।

●

अखिल भारतीय विद्वत्-संगोष्ठी

द्वितीय दिवस-२८ जनवरी, २००० ई.

सम्पादक

श्रीमठ, पञ्चगङ्गाघाट, काशी के तत्त्वावधान में आयोजित जगद्गुरु रामानन्दाचार्य सप्तशती समारोह के त्रिदिवसीय कार्यक्रम के अन्तर्गत द्वितीय दिवस (दिनांक २८.०१.२००० ई.) के अपराहण में जगद्गुरु रामानन्दाचार्य स्वामी श्रीरामनरेशाचार्य जी महाराज की अध्यक्षता में विद्वद्गोष्ठी सम्पन्न हुई। मुख्य अतिथि-पद से जम्मू-कश्मीर के पूर्व महाराज एवं पूर्व केन्द्रीय मन्त्री डॉ. कर्णसिंह ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि हमारी भारतीय संस्कृति का मूलाधार शाश्वत सत्य है और इसका प्रवाह गङ्गा की तरह पवित्र और अविच्छिन्न है। वस्तुतः भारतीय संस्कृति की परम्परा वेदों और हिमालय से आरम्भ होती है। वेद और हिमालय हमारी सांस्कृतिक धरोहर हैं और हमारे जीवन के लिए आज भी अमूल्य हैं। भारतीय संस्कृति में पुनर्जीवन की असीम क्षमता है; यही कारण है कि वर्तमान युग में भी वेदान्त दर्शन का महत्त्व विज्ञान की उन्नति के साथ-साथ उत्तरोत्तर बढ़ता जा रहा है। भारत में इस्लाम धर्म के आगमन और उसके प्रभाव के कारण ही भक्ति आन्दोलन का प्रादुर्भाव हुआ। उत्तर भारत में भक्ति आन्दोलन के विलक्षण प्रवर्तक स्वामी रामानन्द हुए। उन्होंने परम्परा का विरोध न करते हुए भी भक्ति के एक ऐसे मार्ग का निर्माण किया जिसमें सङ्कीर्णता का लेशमात्र भी नहीं है। उनकी इस उदारवादी भावना ने समाज में एक नयी चेतना और स्फूर्ति का सञ्चार किया। इस प्रकार जगद्गुरु रामानन्दाचार्य का भक्ति आन्दोलन में अप्रतिम योगदान है। वे केवल धर्मगुरु, भक्त और साधक ही न थे अपितु अपने समय के महान् समाज सुधारक थे।

डॉ. कर्णसिंह ने आगे कहा कि जन्म और जाति के आधार पर भेद करना हमारे धर्म का अपमान करना है। आज हमारे देश में मूल्यों का वैपरीत्य हो रहा है और आज भारत में जगद्गुरु के लक्षण नहीं दिखायी दे रहे हैं। आज यह देश अपने मूलमन्त्र 'सत्यमेव जयते' से भटकता जा रहा है। भारत ही नहीं, विश्व मानव-जाति दिशा विहीन हो रही है। ऐसी स्थिति में हमें समन्वयवादी दृष्टिकोण अपनाना चाहिए। स्वामी रामानन्द ने इसी समन्वयवादिता से ही धर्म का उत्कर्ष किया। मानवकल्याण के लिए हमें स्वामी रामानन्द के उपदेशों को आत्मसात करना चाहिए।

विद्वद्गोष्ठी के अध्यक्ष पद से अपने आशीर्वचन में जगद्गुरु रामानन्दाचार्य स्वामी

श्रीरामनरेशाचार्य जी ने कहा कि स्वामी जी ने आज से सात सौ वर्ष पूर्व विभिन्न जातियों के लोगों को अपना शिष्य बनाकर धर्म के क्षेत्र में एक महान् क्रान्ति की। 'जात-पाँत पूछे नहिं कोई, हरि को भजै सो हरि को होई' का यह नारा वस्तुतः स्वामी जी के सिद्धान्त 'सर्वेप्रपत्तेरधिकारिणोमताः' का व्यापक प्रतिफलन है। यद्यपि लौकिक जीवन में समानता सम्भव नहीं है तथापि ईश्वर के लिए सभी लोग बराबर हैं। सृष्टि कर्मों पर आधारित है इसीलिए समाज में असमानता दिखाई पड़ती है। समर्पण, संयम और शुचिता से ही ईश्वर-प्राप्ति सम्भव है।

गोष्ठी का आरम्भ डॉ. श्याम वापट के मङ्गलाचरण और आचार्य गणेश्वर शास्त्री द्रविड़ द्वारा विषयोपस्थापना के द्वारा हुआ। शास्त्रीजी ने अपने वक्तव्य में स्वामी रामानन्दाचार्य के सिद्धान्तों की प्रासङ्गिता की स्थापना की। प्रथम वक्ता के रूप में चण्डीगढ़ से पधारे डॉ. निधीन्द्र प्रसाद शर्मा ने स्वामी रामानन्दाचार्य की सामाजिक चेतना के सम्बन्ध में विचार व्यक्त करते हुए कहा कि समाज को उसे आज स्वीकार करके जन-जन के जीवन में उतारना चाहिए। स्वामी जी, चाणक्य के पश्चात् ऐसे प्रथम महापुरुष थे जिन्होंने अखण्ड भारत की परिकल्पना के साथ ही धर्म की रक्षा का उपाय किया। डॉ. विवेकी राय की अनुपस्थिति में उनके शोधपत्र का वाचन किया गया जिसमें स्वामी श्री रामानन्दाचार्य की भक्ति और राष्ट्रिय चेतना पर प्रकाश डाला गया है। पंजाब विश्वविद्यालय, चण्डीगढ़ के संस्कृत विभागाध्यक्ष प्रो. वेद प्रकाश उपाध्याय ने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि सभी लोग भगवद्भक्ति की धारा में अवगाहन के समान रूप से अधिकारी हैं। भारतीय संविधान में जाति के आधार पर नागरिकों में भेद नहीं किया गया है। श्री रामानन्दाचार्य ने यह कार्य आज से सात सौ वर्ष पहले ही कर डाला था।

काशी विद्यापीठ के पूर्व हिन्दी विभागाध्यक्ष प्रो. वासुदेव सिंह का कथन था कि अनेक विदेशी विचारधारायें आईं और यहाँ समरस हो गईं किन्तु इस्लाम ने ऐसा नहीं किया। वैसे ही युग में स्वामी रामानन्द का आविर्भाव हुआ। उनके द्वारा प्रवर्तित रामभक्ति की अपूर्वता आज भी कायम है। उन्होंने जन-जन को राम से जोड़ा।

प्रसिद्ध गान्धीवादी विचारक, पूर्व कुलपति और पूर्व संसद-सदस्य प्रो. रामजी सिंह ने अपने ओजस्वी व्याख्यान में कहा कि राम और शिव में अन्तर वही मानते हैं, जो राम और शिव को नहीं जानते। हमारी बदहाली का कारण है कि हम आध्यात्मिक और सामाजिक चेतना में अन्तर नहीं कर पाये। जगद्गुरु रामानन्दाचार्य ने हमें राम रूपी रसायन प्रदान किया है।

पटना से पधारे विद्वान् प्रो. रामतवक्या शर्मा ने स्वामी रामानन्द के अवदान की विशद चर्चा करते हुए मत व्यक्त किया कि धर्म के मूल स्वरूप को जानकर तदनुसार

आचरण करना ही श्रेयस्कर है। उन्होंने कहा कि विद्वान् वह है जो क्रियावान् हो।

काशी विद्यापीठ के हिन्दी विभाग में पूर्व आचार्य डॉ. युगेश्वर ने प्रवर्तित विषय से अपने को सम्बद्ध करते हुए कहा कि आज आवश्यकता है कि विद्वान् 'ज्ञान और विज्ञान में समन्वय' तथा 'अनेकता में एकता' जैसे लुभावने नारों से अपने को बचायें। भक्ति आन्दोलन वस्तुतः उत्तर में आरम्भ हुआ किन्तु बौद्धों के कारण भक्ति उत्तर से दक्षिण भारत में गयी।

विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन के पूर्व हिन्दी विभागाध्यक्ष प्रो. राममूर्ति त्रिपाठी ने अपने वक्तव्य का प्रारम्भ- 'रामानन्दः स्वयं रामः प्रादुर्भूतो महीतले' से करते हुए इस कथन की विस्तृत समीक्षा की और कहा कि इस कथन में न तो अर्थवाद है, न अतिवाद है और न ही अत्युक्ति है। वस्तुतः यह कथन यथार्थ है। स्वामी रामानन्द के शिष्य कबीर अपमूल्यों के विरुद्ध संघर्ष में अप्रतिम रहे।

काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग के पूर्व आचार्य और सन्त साहित्य के मूर्धन्य समीक्षक प्रो. शुकदेव सिंह ने मध्यकालीन भक्ति आन्दोलन के सशक्त पुरोधा के रूप में आचार्य श्री रामानन्द का स्मरण करते हुए कहा कि द्रविड़ देश से उत्तर भारत में भक्ति को लाने वाले यही स्वामी जी थे। श्री रामानन्दाचार्य ने धर्ममत और गुरुमत के सेतु के रूप में अपनी अमिट छाप भारतीय धर्म-संस्कृति पर छोड़ी है। हमें उसी सेतु का आश्रय लेना चाहिए।

महात्मा गाँधी काशी विद्यापीठ के पूर्व कुलपति श्रीराम कुमार त्रिपाठी ने इस आयोजन की उपादेयता पर प्रकाश डालते हुए सबके प्रति आभार व्यक्त किया। संचालन डॉ. प्रभुनाथ द्विवेदी, उपाचार्य, संस्कृत विभाग, महात्मा गाँधी काशी विद्यापीठ ने किया।

तृतीय दिवस-समापन सत्र (दिनांक २९ जनवरी, २००० ई.)

जगद्गुरु रामानन्दाचार्य सप्तशताब्दी के त्रिदिवसीय शुभारम्भ महोत्सव का समापन सत्र जगद्गुरु रामानन्दाचार्य स्वामी रामनरेशाचार्य जी महाराज के सान्निध्य में नियोजित राजनीतिकों के समागम के साथ २९ जनवरी को पूर्वाहण १० बजे आरम्भ हुआ। समारोह की मुख्य अतिथि थीं भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की अध्यक्ष और संसद में विपक्ष की नेता श्रीमती सोनिया गाँधी। समारोह को आचार्यश्री एवं श्रीमती गाँधी के विशिष्ट सम्बोधन के साथ सर्वश्री नारायणदत्त तिवारी, पूर्व मुख्यमंत्री उत्तर प्रदेश एवं पूर्व केन्द्रीय मंत्री, श्री अशोक गहलोत मुख्य मंत्री राजस्थान, श्री सलमान खुर्शीद-अध्यक्ष उ.प्र. कांग्रेस कमेटी ने भी सम्बोधित किया। स्वागताध्यक्ष पं. लोकपति त्रिपाठी ने स्वागत भाषण किया। मंच पर अ.भा. कांग्रेस कमेटी के महासचिव श्रीसुशील कुमार शिन्दे, उत्तर प्रदेश कांग्रेस विधानमण्डलदल के नेता श्री प्रमोद तिवारी मध्य प्रदेश

कांग्रेस कमेटी की उपाध्यक्ष श्रीमती चन्द्रप्रभा पटेरिया, उत्तर प्रदेश कांग्रेस कमेटी के कोषाध्यक्ष श्री राजेशपति त्रिपाठी, अ.भा. जगद्गुरु रामानन्दाचार्य सप्तशताब्दी महोत्सव समिति के कार्यकारी अध्यक्ष श्री गोपालदास मित्तल, संयोजक पं. गणेश्वर शास्त्री द्रविड़ तथा सचिव श्री दयासिन्धु शर्मा मौजूद थे। समारोह के अन्त में धन्यवाद ज्ञापन महात्मा गाँधी काशी विद्यापीठ के पूर्व कुलपति प्रो. राम कुमार त्रिपाठी ने किया और संचालन डॉ. सतीश कुमार ने। राजनेताओं, संतों, भक्तों एवं विशिष्ट नागरिकों के गरिमा मण्डित समागम की भीड़ के आगे पाण्डाल काफी छोटा साबित हुआ। भारत माता के भव्य चित्र के हृदय स्थल पर सीता-राम की दिव्य छवि और उसके चतुर्दिक आकाश में देदीप्यमान नक्षत्र की भाँति स्थापित सन्त कबीर, संत रविदास, संत तुलसीदास, भक्त मीराबाई और महात्मा गाँधी एवं महामना मालवीय के चित्रों के चित्ताकर्षक पार्श्व शोभायमान मंच पर सर्वप्रथम आचार्यश्री, श्रीमती गाँधी, तिवारी जी, गहलोत जी, सलमान खुर्शीद एवं अन्य अतिथियों ने स्वामी रामानन्द जी के चित्र पर माल्यार्पण किया। तत्पश्चात् जगद्गुरु रामानन्दाचार्य सप्तशताब्दी महोत्सव समिति के अध्यक्ष पं. लोकपति त्रिपाठी, संयोजक दयासिन्धु शर्मा एवं सचिव डॉ. अवधेश सिंह, उपाध्यक्ष श्री सतीश चौबे, कोषाध्यक्ष डॉ. शशि कांत दीक्षित के अतिरिक्त सर्वश्री राजेशपति त्रिपाठी, किरन शर्मा, गोपालदास मित्तल (कार्यकारी अध्यक्ष, अ.भा. आयोजन समिति, विष्णु बिन्दल-इन्दौर, श्रीमती गोविन्दी पवार जोधपुर, मदन बंसल-पटियाला, किरन शर्मा, डॉ. श्रद्धानन्द एवं दिनेशमणि तिवारी, वाराणसी, पं. रघुनाथ प्रसाद त्रिपाठी, सतना (उपाध्यक्ष राष्ट्रीय समिति) ने अतिथियों को माल्यार्पण किया तथा प्रतीक चिह्न एवं अंगवस्त्र आदि भेंट किया।

संगीत संध्या का विशेष आकर्षण

संत परम्परा में कीर्तन-भजन ईश्वरीय आराधना का महत्त्वपूर्ण अंग रहा है। इसी कड़ी में महान् नर्तक भगवान् शिव की नगरी में २७ से २९ जनवरी २००० ई. तक जगद्गुरु रामानन्दाचार्य सप्त-शताब्दी समारोह के विभिन्न आयोजनों में संगीत संध्या का भी आयोजन हुआ। संगीत संध्या में महान् तबलावादक किशन महराज की उपस्थिति एवं अन्तर्राष्ट्रीय ख्यातिलब्ध संगीत साधक राजन-साजन की प्रस्तुति ने इसे और भी आकर्षक बना दिया।

इस त्रिदिवसीय संध्या में भारत के कोने-कोने में ख्याति पानेवाले परन्तु काशी की भाषा में स्थानीय कलाकारों की संज्ञा पाने वाले कलाकारों की प्रस्तुति से स्वर साधना की पूर्णाहुति हुई। त्रिदिवसीय संगीत संध्या के सभी कार्यक्रम रामानन्दाचार्य स्वामी रामनरेशाचार्य की गरिमामय उपस्थिति एवं डॉ. श्रद्धानन्द के संयोजन में सम्पन्न हुए।

●

राजनयिक सम्मेलन

रामानन्दजी ने भारत को एक नया चिंतन दिया

श्रीमती सोनिया गाँधी

आज से सात सौ साल पहले वैष्णव परंपरा के महान् संत आचार्य रामानंदाचार्य जी ने भारत की महान् संत परंपरा को भक्ति मार्ग की नयी प्रेरणा देकर एक कठिन समय में देश और समाज को नयी दिशा दी। उनकी इस ऐतिहासिक पवित्र नगरी में मुझे आपने निमंत्रित किया, इसके लिए मैं स्वामी रामनरेशाचार्य जी, संत समाज और काशी के नागरिकों की आभारी हूँ। स्वामी रामानंदाचार्य जी की महान् परंपरा का मेरे परिवार के साथ आत्मीय और भावना पूर्ण संबंध रहा है। चार जनवरी उन्नीस सौ इक्यानबे को राजीव जी रामानंदाचार्य जी की जयंती के अवसर पर वाराणसी में मुख्य अतिथि के रूप में आये थे। इंदिरा जी ने भी काशी के इतिहास से कितनी प्रेरणा ली और यहाँ के विचारों से कितनी प्रभावित हुयीं, आप सभी जानते हैं। जवाहरलाल नेहरू ने मानवता के नाम अपनी अंतिम वसीयत में देश की चिरंतन संस्कृति, सभी को जोड़ने वाली धार्मिक संस्कृति और गंगा जी के सारस्वत प्रभाव को प्रतीक माना है।

आचार्य रामानंद जी के जीवन की अनेक बातें प्रेरणादायक रही हैं। उन्होंने अपनी विशेष योग्यता और बुद्धि के बल से समस्त शास्त्रों का अध्ययन किया। काशी दुनिया के सबसे पुराने नगरों में से एक है। यह हमेशा से ज्ञान का केन्द्र रहा है। यह नगर परंपरा से विद्या, धर्म और संस्कृति की राजधानी है। अनेक संतों, भक्तों, कवियों और विद्वानों ने यहाँ से पूरी मानवता को ज्ञान का प्रकाश दिया है, रास्ता दिखाया है। किसी जमाने में वही विद्वान् माना जाता था, जिसे काशी विद्वान् मान लेती थी। इसलिए यह स्वाभाविक ही था कि रामानंद जी जैसे आचार्य और संत ने काशी को अपने विचारों का केन्द्र बनाया।

काशी नगरी में हर काल में ज्ञान का अपार भंडार रहते हुए यहाँ की संस्कृति की विचारधारा में कट्टरता और संकीर्णता को महत्व नहीं दिया गया। इसलिए यहाँ की संस्कृति उदारता के साथ आम आदमी की संस्कृति रही है। अपनी विशिष्ट परंपरा और जमाने के साथ चलते रहने की क्षमता इस पवित्र संस्कृति में हर काल में रही है। स्वामी रामानन्द जी काशी और तत्कालीन समाज की उदारवादी धार्मिक संस्कृति के विशेष प्रतिनिधि थे।

स्वामी जी ने देश के दक्षिण और उत्तर के बीच आस्था की भावना को एक सूत्र

में मजबूत किया। इस बात में काफी प्रमाण मिलते हैं कि स्वामी रामानुजाचार्य जी से स्वामी रामानंद जी बहुत प्रभावित थे। इसीलिए इस महान् संत के विषय में कहा जाता है कि 'भक्ति द्रविड़ ऊपजी लाये रामानंद'। उनके विचारों का जो प्रभाव शताब्दियों पहले था, देश की एकता के लिए उतना ही आज भी है। उनसे पहले कुछ लोगों ने भक्ति, मुक्ति का द्वार समाज के लोगों के लिए बंद कर रखा था। रामानंदाचार्य ने सबके लिए भक्ति का द्वार उन्मुक्त कर दिया। वर्ण, जाति और धर्म के आधार पर किसी को बाँटा नहीं जा सकता।

'जात-पाँत पूछै नहिं कोई हरि को भजै से हरि का होई'

यह मंत्र आज भी हमारे देश में मानवता को शक्ति देने और एकता रखने का मंत्र है। उन्होंने अपने व्यवहार में ऐसा करके दिखा दिया। उस समय उपेक्षित मानी जाने वाली जातियों में से अपने शिष्य बनाये। इनके बारह प्रधान शिष्यों में संत कबीर, रैदास, धन्ना सेठ, पीपा जी थे और पद्मावती देवी और सुरसरि जैसी महिलाएँ भी थीं। संत कबीर जी आदि ने निर्गुण पंथ की रोशनी फैलाई। दूसरी ओर गोस्वामी तुलसीदास और भक्त मीराबाई आदि ने राम-कृष्ण भक्ति के नये स्वरूप को सारे जन-मानस तक पहुँचाया। स्वामी रामानन्दाचार्य जी ने इस प्रकार निर्गुण और सगुण रास्तों को नजदीक लाकर भक्ति का रास्ता प्रस्तुत किया, जिसमें आम जनता के लिए ईश्वर की आराधना तथा ईश्वरीय शक्ति को समझना आसान हो गया।

रामानन्द जी ने भारत को एक नया चिंतन दिया। समाज में बराबरी का संदेश दिया, अपने जमाने को बताया कि कट्टरता से धर्म नहीं चलते, महान् संस्कृति नहीं बनती। इससे समाज और देश के जीवन में बिखराव आता है, आदमी आदमी से जुदा हो जाता है। उदारता से धर्म का सम्मान बढ़ता है, आदर्श समाज बनता है और अच्छे इंसान पैदा होते हैं।

गाँधी जी ने इसी परंपरा से प्रभावित होकर बीसवीं सदी और आज की राजनीति को धर्म और कर्म से जोड़कर मानवता को गुलामी, शोषण, गरीबी, ऊँच-नीच से मुक्त रहने के लिए अनूठा नेतृत्व दिया। इसके पीछे स्वामी रामानंदाचार्य जी जैसे संतों की महान् दृष्टि रही है।

आने वाले समय में हम इसी उदारता के रास्ते पर चलते रहें, ताकि अपने देश में एकता की भावना और विश्व-शांति के साथ अपनी बुनियादी समस्याओं का समाधान कर सकें। इसी तरह याद रखना चाहिए कि उदारता की भावना हमारी परंपरा है और इस परंपरा को तोड़ने की कोशिश हमारी ऐतिहासिक विरासत के खिलाफ है।

आज देश और समाज के सामने कई खतरे और चुनौतियाँ हैं। कुछ लोग आज हमारे समाज की सभ्यता से हटकर उसे सदियों पीछे ले जाना चाहते हैं। जब मानव,

मानव सभ्यता के नियमों से दूर था ऐसे लोग हमारी उदार परंपरा और विरासत को जाने-अनजाने मिटाने में लगे हैं। ऐसे लोगों के मन में महान् संत परंपरा और स्वामी रामानन्द जी जैसे महान् आचार्य संतों के लिए स्थान नहीं है। ऐसे लोगों के मन में धर्म, कर्म, मानव समानता के सिद्धान्तों के लिए आदर नहीं है।

मुझे विश्वास है कि हम इस महान् पवित्र परंपरा के मार्मिक संदेश को अपने जीवन का मंत्र बनाएंगे और भविष्य में इसी रास्ते पर चल सकेंगे।

●

रामानन्द जी का चिंतन आज भी महत्त्वपूर्ण

अशोक गहलौत*

जगद्गुरु रामानन्दाचार्य सप्तशताब्दी उद्घाटन महोत्सव के ऐतिहासिक अवसर पर राजस्थान की जनता के एक सेवक के रूप में रामानन्द जी की पवित्र साधनास्थली काशी में आकर रामानन्द जी के प्रति श्रद्धा के साथ शीश झुकाते हुये मुझे हार्दिक सन्तोष एवं प्रसन्नता ही नहीं गौरव का भी अनुभव हो रहा है। स्वामी रामानन्द जी ने करीब सात सौ साल पहले काशी से भक्ति आन्दोलन की जिस चेतना का राष्ट्र के जीवन में अंकुरण कराया था, वह चेतना राजस्थान की रेगिस्तानी धरती पर सबसे ज्यादा पल्लवित और पुष्पित हुई। स्वामी रामानन्द जी ने काशी से जिस रामभक्ति की धारा बहायी उसका प्रसार राजस्थान में बहुत व्यापक हुआ। रामानन्द सम्प्रदाय भी राजस्थन में व्यापक रूप से फैला।

स्वामी रामानन्द जी के शिष्य और उत्तराधिकारी स्वामी अनन्तानन्द जी के शिष्यों में श्री कृष्णदास पयेहारी जी सबसे प्रभावशाली थे। पयेहारी जी ने जयपुर में गलतागद्दी की स्थापना के साथ राजस्थान में रामानन्द सम्प्रदाय के व्यापक प्रसार की नींव डाली। उनके शिष्य अठादेवाचार्य जी ने राजस्थान में रैवासा को अपनी साधनास्थली बनाकर वहाँ रामानन्द सम्प्रदाय के दूसरे बड़े केन्द्र की स्थापना की। इन दोनों आध्यात्मिक केन्द्रों में राजस्थान में रामानन्द जी के उदार धार्मिक एवं सामाजिक भावों के प्रसार में बड़ी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभायी।

राजस्थान में रामानन्द सम्प्रदाय की परम्परा से जुड़े और उस सम्प्रदाय की गलता एवं रैवासा की पीठों की शिष्य परम्परा में भारत के भक्ति आन्दोलन के महान् संत नाभादास जी का भी नाम आता है। नाभादास जी ने ही 'भक्तमाल' नामक ग्रन्थ की रचना कर सबसे पहले देश के सभी भक्तिमार्गी सन्तों का प्रामाणिक चरित्र लिखा।

राजस्थान के भक्ति आन्दोलन की चर्चा अधूरी होगी, यदि मीराबाई की चर्चा न हो। मीरा भी काशी के महान् सन्त रामानन्द जी के शिष्य सन्त रविदास की शिष्या थीं। मीराबाई की सास झालीबाई भी रविदास से दीक्षित थीं। संत रविदास का शरीर भी राजस्थान में ही पूर्ण हुआ।

इस तरह भक्ति आन्दोलन की धारा से जुड़ी 'राम सनेही-परम्परा' भी राजस्थान

* तत्कालीन मुख्यमन्त्री राजस्थान।

की जनता में व्यापक प्रभाव रखने वाली परम्परा है। यह परम्परा भी रामानन्द सम्प्रदाय की निर्गुण भक्ति की शाखा है।

इसी तरह संत सेन जी की आध्यात्मिक परम्परा का भी राजस्थान में बड़ा फैलाव है, जो संत कबीर एवं संत रविदास आदि के साथ रामानन्द जी के बारह प्रधान शिष्यों में एक थे। वर्तमान में जोधपुर के वर्तमान सेनाचार्य स्वामी अचलानन्द जी हैं, जो पुष्कर में अपना मुख्यालय बनाकर देशभर के सेन समाज में धर्म का कार्य कर रहे हैं।

इस तरह यह बात साफ है कि स्वामी रामानंद जी ने भक्ति आन्दोलन की जिन सगुण और निर्गुण धाराओं को जन्म दिया, उनका भरपूर विकास राजस्थान में हुआ। जात-पात, सम्प्रदाय आदि के भेद-भाव से ऊपर उठकर जन-जन को भक्ति के अधिकार से रामानन्द जी ने जोड़ा और देश, काल एवं समाज को एक नयी रोशनी दी। इस आध्यात्मिक-क्रान्ति से व्यक्ति की स्वतन्त्र महत्ता खड़ी हुई और समाज एकता के सूत्र में उस समय बँधा, जब उसके टूटने का बड़ा खतरा था। इस चेतना का प्रभाव हमारे स्वतंत्रता आन्दोलन पर भी पड़ा।

स्वामी रामानन्द जी का रास्ता, उनका चिन्तन और उनके आदर्श आज भी उतना ही महत्त्व रखते हैं जितना सात सदी पहले। सप्तशताब्दी और उनकी मूल पीठ 'श्रीमठ' से शुरू सप्तशताब्दी महोत्सव उनके महत्त्व को एक बार फिर स्थापित करेगा। मैं रामानन्दाचार्य स्वामी रामनरेशाचार्य जी को यह विश्वास दिलाता हूँ कि देशभर में चलने वाले सप्तशताब्दी महोत्सव में राजस्थान में जो भी कार्यक्रम वह करेंगे, उसे हमारा पूरा सहयोग प्राप्त होगा।

●

आचार्यश्रीः

नमोऽस्तु रामाय सलक्ष्मणाय देव्यै च तस्यै जनकात्मजायै ।
नमोऽस्तु रुद्रेन्द्रयमानिलेभ्यो नमोऽस्तु चन्द्रार्कमरुद्गणेभ्यः ।।

आज हम सभी एक अपूर्व संगम में सम्मिलित हो रहे हैं। एक ओर देश की सामाजिक व्यवस्था से, लौकिक व्यवस्था से, अर्थ की व्यवस्था से, समृद्धि के लिए, संसार में प्रतिष्ठा के लिए चिंतित राजनेतागण हैं और दूसरी ओर वेद शास्त्रों के द्वारा, ऋषियों के द्वारा, तपःपूत ब्राह्मण विद्वानों के द्वारा प्राप्त, संतों के द्वारा प्राप्त जो आध्यात्मिक धारा है, उसके माध्यम से सम्पूर्ण मानवता की सेवा के लिए समग्रता से समर्पित संतजन हैं। दोनों ही धाराओं का यहाँ एक अपूर्व संगम परिलक्षित हो रहा है। संगम की ही आवश्यकता है। एक धारा अपने आप में तीर्थराजत्व को प्राप्त नहीं करती। इसीलिए हम लोग तीर्थराज प्रयाग को कहते हैं, यहाँ तीन धाराओं का संगम है। गंगा भी हैं, यमुना भी हैं, सरस्वती भी हैं। वैसे ही केवल लौकिक जीवन ही पूर्णता नहीं दिलाता मानवता को, व्यक्तित्व को और केवल अलौकिक जीवन भी अपने आप में पूर्ण नहीं है। तभी मैंने इस अखिल भारतीय वर्षव्यापी श्रीरामानन्दाचार्य सप्तशताब्दी शुभारम्भ महोत्सव के समापन पर सोनिया जी को आने के लिए आग्रह किया, आप भी आवें। आपके भी मन में जो चिन्ता है राष्ट्र के लिए, संसार की मानवता के लिए, वह हम लोगों की भी चिंता है। हम लोग भी सर्वे भवन्तु सुखिनः, सर्वे सन्तु निरामयाः, इसी चिन्ता के लिए अपने समग्र जीवन की प्रवृत्तियों को, जो भी साधन है उसको, लगाते हैं। मैं यह कहना चाहूँगा कि आज जो समस्यायें हैं देश में वह कोई नई नहीं हैं, पुरानी हैं। आप इतिहास पढ़ते हैं, पुराणों को पढ़ते हैं। ऋतुओं का जैसे परिवर्तन होता रहता है, वैसे ही व्यवस्थाओं का, अव्यवस्थाओं का भी परिवर्तन होता रहता है। कभी ह्रास, कभी विकास की प्राप्ति होती रहती है। अवस्थायें, धारायें जीवन की, समाज की, राजनीति की, सभी धाराओं में उत्कर्ष और अपकर्ष होते रहते हैं। उसके लिए हमें समाधान खोजना है। राजनयिक भी खोज रहे हैं, समाजसेवी भी खोज रहे हैं, विश्वविद्यालयों के प्रोफेसर भी खोज रहे हैं और हम संत जन भी खोज रहे हैं।

मैं यही कहना चाहूँगा कि स्वामी रामानन्द जी ने जिसका प्रयोग किया था उस समय में, जब इससे भी प्रचण्ड दुर्व्यवस्था थी समाज में, संकीर्णता थी और तमाम उत्पीड़न थे, उग्रवाद था, अनेक तरह के प्रदूषण थे समाज में, सबका एकमात्र समाधान उन्होंने लोगों को ईश्वरोन्मुख करके किया था। केवल बम बनाकर और फिर

उसको पावरलेस करने से मानवता की रक्षा नहीं होगी। एक बार हथियार बनाना और बाद में हस्ताक्षर करवा लेना, ये तो कोई बुद्धिमानी की बात नहीं हुई (तालियाँ)। आपने देखा ही कि अभी हमारे सारे परमाणविक अस्त्र विमान अपहरण काण्ड में बौने हो गये, बेकार हो गये। इसीलिए हम लोगों के मन को उग्रवाद से कैसे अलग करें, हम इन तमाम समाज को दूर करने वाली और मानवता को कलंकित करने वाली जो दुर्व्यवस्थायें हैं, प्रदूषण हैं, जाति-पाँति का, स्पृश्यास्पृश्य का और धन के केन्द्रीयकरण का, राजनीति के केन्द्रीयकरण का, शिक्षा के केन्द्रीयकरण का, कैसे इसका बँटवारा करें, कैसे लोगों को गरीबी में झोपड़ी में रह करके भी कैसे शांति से, उत्साह से, धैर्य से जीने की शक्ति प्रदान करें, इसके लिए स्वामी रामानन्द जी के सूत्र को हमें याद करना पड़ेगा।

आपको मालूम है कि संसार में कभी-भी सभी लोग समृद्ध नहीं थे। कुछ उपनिषदों में ऐसा वर्णन आता है कि जब सभी लोग विद्वान् थे सभी लोग दुर्व्यसनरहित थे, सभी लोग सदाचारी थे। उपनिषदों में ऐसे आख्यान आते हैं। बाकी इतिहास तो विषमता का इतिहास है। लेकिन झोपड़ी में रह कर जूता सिलकर भी रविदास महामानव हैं, ऐसा किसी दूसरे इतिहास में नहीं है। रविदास कहते हैं कि मैं जूता सीता हूँ और मैं चमार जाति का हूँ, देखने में मेरा रूप भी सबसे खराब है, वंश भी खराब है, मेरा धंधा भी सबसे हीन दर्जे का है। लेकिन अब मैं महामानव हो गया। परम विश्राम को प्राप्त कर लिया। ऐसा किसी दूसरी विधा से जीवन को परम विश्राम दिलाया नहीं जा सकता। इसलिए मैं आग्रह करूँगा आपसे कि आप भी उसी पथ के पथिक बनें। यह संत भूमि है इसलिए मंच पर हमारे प्रबंधक दयासिंधु शर्मा ने कहा कि, भगवन्! हम संत भूमि भारत का प्रदर्शन करेंगे मंच पर। सोनिया जी भी अभी जाने लगेगीं तो देख लेगीं (पीछे) कि संत भूमि का क्या स्वरूप है।

ईश्वर सबको जीवन देता है। वह सबका है। मुसलमानों का भी, ईसाई भाईयों का भी, सिक्खों का भी, जैनियों का भी। सबका सूर्य जैसे एक है, आकाश जैसे सबका एक है, वैसे ही ईश्वर भी सबका एक है। सभी को ईश्वर प्रधान जीवन जीने के लिए हम लोग राष्ट्रीय स्तर पर प्रयास करें (तालियाँ) जैसे अशोक ने अपने बेटे और बेटी को बौद्ध धर्म के प्रचार के लिए भेजा था, आज वही हमारे लिए सबसे बड़ा धन है, हमें विश्वगुरुत्व दिलाया था। देखिये आप! जिस समय मीरा जी हुई थीं, उस समय के तमाम राजाओं का नाम अशोक जी को (गहलोत जी) नहीं पता है, जबकि यह वहाँ के मुख्यमंत्री हैं। जिस समय तुलसीदास हुए थे उस इतिहास को यहाँ कितने लोग जानते हैं? अकबर किस कमरे में नहाते थे और किस कमरे में भोजन करते थे और पत्नी के साथ रहते थे, आपको पता है? लेकिन उस झोपड़ी में रहने वाले तुलसीदास

का नाम आपको पता है, क्योंकि वह सत्य के पुजारी थे (तालियाँ) और राम और धर्म के माध्यम से ईश्वर की ओर ले जाने का सबको प्रयास करते थे। जैसे सारे लोगों का प्रयास होता है कि अपने क्षेत्र को बहुत विकसित करें। तो मैं इस संत भूमि में जिस परंपरा में, जिस परंपरा से जुड़कर महात्मा गाँधी ने इस देश की हजारों वर्षों की परतंत्रता की बेड़ियों को खुलवाया और देश को स्वतंत्र करवाया। आप लोग शायद जीवनी पढ़े होंगे महात्मा गाँधी की। महात्मा गाँधी काशी में आये थे दशाश्वमेध घाट पर कोई व्यास प्रवचन कर रहा था। रावण और राम के युद्ध की पूर्वपीठिका का वर्णन कर रहा था। उन्होंने सुना कि रावण बहुत समृद्धशाली है। मेरे पास तो कोई साधन नहीं हैं। ऐसा विभीषण ने कहा रामजी से कि रावण के पास तो सभी साधन हैं, आपके पास तो कुछ भी नहीं है। कैसे विजयी होंगे आप? रामजी ने कहा कि विजयी होने के लिए साधन और होते हैं। वह मेरे पास हैं। महात्मा गाँधी ने सुना और सोचा कि मैं ही राम वाले पक्ष के जैसे हूँ और दूसरे लोग, वह रावण वाले पक्ष के हैं। हमारे पास कुछ नहीं है। एक गीता है। घुंटने तक धोती है और लकुटी है। उसी परंपरा में जवाहर लाल नेहरू जी, इंदिरा जी, उसी राम नाम के सहारे मैं कई बार कहता हूँ कि इस देश में किसी राजनयिक को इस देश की संस्कृति ने बिना नियोजन के महात्मा शब्द से विभूषित किया तो वह गाँधी जी ही थे। अब नये-नये महात्मा गाँधी (व्यंग्य हास्य के साथ) कोई तैयार कर ले, लेकिन उसको इस देश के लोग मानने के लिए तैयार नहीं हैं। महात्मा गाँधी तो इस देश में एक ही हुये और उसी गाँधी परम्परा से, राम नाम की परंपरा से, रामानंद जी की परंपरा से प्रेरित होकर देश को स्वतंत्र कराये। उस शक्ति का विस्मरण होने लगा है। लोग बिना मतलब के मुद्दों से देश में सेवा की परंपरा में पराकाष्ठा प्राप्त करना चाहते हैं। हमें रामजी को पकड़े रखना है। राम मंदिर की बात करके और सत्ता तक जाने वालों से हमें सावधान रहने की जरूरत है (तालियाँ)। हमें उस बात को याद कराने की जरूरत है कि शिलान्यास भी राजीव गाँधी जैसे अत्यंत आधुनिक परिवेश में पले हुये आदमी ने करवाया था। आप भूल गये इस बात को? जब इसी मंच से हमने कहा (१९९१ ई.) कि आप आये हैं, देखना रामजन्म भूमि के सम्बंध में कुछ नहीं कहना, कि आज का माहौल बड़ा खराब है। उन्होंने कहा कि ठीक है। लेकिन जब वह खड़े हुए तो कहा। वह खून था, महात्मा गाँधी की परंपरा से प्रभावित सारी धारा थी। कहा कि नहीं यह भी यदि देश की समस्या है तो इसे विशेष अदालत के माध्यम से, न्याय जो अत्यन्त पवित्र स्तम्भ है लोकतंत्र का, उसके माध्यम से दूर करना चाहिए। आज उसी क्रम में सोनिया जी यहाँ उपस्थित हैं। हम लोगों को बड़ी आशा है। हम सभी लोग, काशीवासी इन्हें आशीर्वाद दे रहे हैं (तालियाँ) कि आप अपने को अकेली नहीं समझें। हम सब लोग जो घर द्वार छोड़े हुए लोग हैं, जो कोई लौकिक

रिश्ता नहीं बनाते, लेकिन राम के नाते हम सारे संसार को अपना समझते हैं और उसमें भी आप जब गाँधी की परंपरा से जुड़ी हैं, राजीव गाँधी की परंपरा से जुड़ी हैं, उनकी धर्मपत्नी ही हैं, जवाहर लाल जी और इंदिरा जी की परंपरा से जुड़ी हैं तो हमें इस बात का पूरा अभिमान है और विश्वास है और आपके साथ इस राष्ट्र को पूर्णरूप से राम-भाव प्रदान करने के लिए जो इसका खोया हुआ विश्व-गुरुत्व है पुनः स्थापित हो, शांति का अग्रदूत बनकर के पूरे संसार में वह स्थापित हो, उसके लिए हम आपके साथ खड़े रहेंगे (तालियाँ)।

हम उन महात्माओं में से नहीं हैं जो आपसे टिकट माँगने के लिए आ जायेंगे (तालियाँ) चुनाव लड़ने के लिए। आजकल लाल वाले (संत) भी टिकट माँगते हैं। राष्ट्रपति बनना चाहते हैं। प्रधानमंत्री बनना चाहते हैं। हम लोग आपसे टिकट माँगने नहीं आयेंगे। हमारा जो सनातन रोल रहा है, ब्राह्मणों का और संतों का, कि जो राष्ट्र की सेवा में लगा है, उसे आध्यात्मिक शक्ति अर्जित करके, उसको सही मार्ग पर प्रेरित करें। उस क्रम में आप यहाँ उपस्थित हैं। एक ऐतिहासिक बात कह कर मैं वाणी को विराम दूँगा। इनको (सोनिया जी को) जाना है। आज राष्ट्रपति भवन में आपको पता है कि बड़ा भारी उत्सव है। पहली बात यह है कि मैं चाहता था कि इस उत्सव में बहुत से राजनयिक लोग आयें। सोनिया जी तो आयीं ही और यह तो आयेंगी हीं क्योंकि मालूम है कि यह अपने पतिदेव के सपनों को साकार करने के लिए ही अब केवल जीवित हैं। अब कोई जीवन का उद्देश्य नहीं है (तालियाँ) न इनको पहनने का शौक है, न खाने का है और न कहीं घूमने का (तालियाँ)। आपने ३० वर्षों में सुना ही नहीं कि कहाँ इन्होंने कोई मौज-मस्ती के लिए यात्रायें कीं। यह ऐसी बहू हैं। मैंने बहुत लोगों को चाहा कि इनके साथ लोग आवें। तमाम लोगों को कहा। अमुक को कहा, अमुक को कहा। लोकपति जी और राजेशपति जी को कहा कि अपने सोनिया जी को भी कहो। बोलते थे कि महाराज कि यह २९ तारीख को सम्भव नहीं होगा। ३० को निमंत्रण देते हैं। यहाँ के सभी लोग मान रहे थे, जो मेरे सूत्रधार थे, कि यह २९ को नहीं आयेंगी। मेरा कार्यक्रम २९ को ही समापन का था। लेकिन यह एक अभूतपूर्व चमतकार है और निश्चित रूप से एक बहुत पवित्र और आशा की प्रबल, प्रचण्ड किरण के रूप में यह संकेत है कि राम, भगवान् राम और स्वामी रामानन्द जी ने केवल इन्हीं को बुलाया और बाकी लोग आये ही नहीं (तालियाँ)। मेरे बहुत हाथ जोड़ने के बाद भी नहीं आये (तालियाँ - हर हर महादेव)। मैंने रामविलास पासवान को, चन्द्रशेखर जी को, सारे देश को, सुखदेव सिंह ढिंढसा को, किसको नहीं मैंने कहा, जो मुझसे जुड़े हुए लोग थे। यहाँ तक कि तिवारी जी को भी कहा था। अशोक जी तो हमारे संरक्षक हैं (समिति के) और पुराने हमारे भक्त हैं। तो आज यह आयीं हैं। सभी लोग

आश्चर्य कर रहे हैं कि २९ को सोनिया जी काशी में? इसके संकेत को समझें आप कि भगवान् श्रीराम ने इनको, रामानन्द जी ने इनको क्यों बुलाया? इनसे काम लेना है। इस देश की सेवा का सही स्वरूप प्रकट होना है। पूर्ण सेवक और सही रूप से सेवक की जरूरत है। इस देश में केवल चुनावी नारा देने वाला, देश को भजाने वाला नहीं। यह मानकर चलें सोनिया जी, यह देश संतों का है यह अंतुले का देश नहीं है। यह समर्थ रामदास और संत ज्ञानेश्वर का देश है। यह प्रकाश सिंह बादल का देश नहीं है यह दस गुरुओं का देश है। यह केवल नारायण दत्त जी का देश नहीं यह तुलसीदास का देश है। सोनिया जी! इन संतों की परंपरा से आपका परिवार जुड़ा रहा है। आपको संकोच नहीं होना चाहिए। यह जरूर बचना चाहिए, कालनेमियों से बचने की जरूरत है कि कहीं ठगा नहीं जाँय। क्योंकि कई लोग संत वेश में दूसरे भी आ जाते हैं। हम सभी लोग काशीवासियों की ओर से, रामानन्द संप्रदाय की ओर से, हमारा संप्रदाय संत परंपरा का प्रेरक संप्रदाय है, देश की सारी संत परंपरायें रामानन्द से प्रभावित हैं- राजस्थान की, महाराष्ट्र की, कलकत्ता की, बंगाल, पंजाब में लाखों लाख शिष्य हैं, उन सभी परम्पराओं का एकमात्र प्रेरणा का केन्द्र ''श्रीमठ'' है। अभी तो मैं आपको ले नहीं चल रहा हूँ (श्रीमठ में) क्योंकि दिल्ली जाना है। लेकिन मैं भगवान् विश्वनाथ की ओर से, काशीवासियों की ओर से, समस्त सगुण-निर्गुण रामभक्ति परंपरा की ओर से जो संत-जन, महंत और विद्वान् यहाँ उपस्थित हैं, सबकी ओर से आपको आशीर्वाद देता हूँ। और इसलिए नहीं देता हूँ कि आप हमारे यहाँ आश्रम में भण्डारा करवा देना। हम लोग भण्डारा-प्रिय बहुत हैं (विनोदपूर्ण स्वर में)। भण्डारा यह नहीं समझती होंगी। जैसे पार्टियाँ होती हैं। आज भण्डारा ही तो है- राष्ट्रपति भवन में आज भण्डारा है देश-विदेश के लोगों का। और उसके लिए नहीं, इसलिए कि आप महात्मा गाँधी की सही परंपरा का प्रयोग इस देश में करें, जो राम जी से और रामानन्द जी से प्रेरित होकर मानवता की रक्षा के लिए एकमात्र सही उपाय है। कोई वस्त्र और मकान सबको नहीं दे सकता। केवल दे सकता है जीवन, परम विश्राम, पूर्ण शांति और संतोष की बात को, स्वामी रामानन्द जी और रामजी के माध्यम से चलकर दे सकता है। और वही आध्यात्मिक बात प्रसारित हो, इसके लिए हम लोग साल भर उत्सव मनायेंगे और साल भर के उत्सव में जब इनके सारे नेता संरक्षक ही हैं, तो इन नेताओं की संरक्षक हैं सोनिया जी, तो यह तो हमारी परम संरक्षक हो गयीं, इस महोत्सव की (तालियाँ)। इसलिए इनकी पहल होगी, सोच होगी, धीरे-धीरे सारा काम होगा।

मैं ज्यादा समय नहीं लेकर अपनी वाणी को विश्राम दूँगा। एक क्रम और है आभार प्रदर्शन, परम भक्त प्रो. रामकुमार त्रिपाठी जी जो रामानन्द संप्रदाय से, विद्वत् परंपरा से जुड़े हुए हैं और कुछ मठ का, मठ के लोग और क्या दे सकते हैं इनको

(सोनिया जी को)। हमारा महादेव जी नंगा रहता है, अवधूत है, खाने पीने का कुछ नहीं है उनके पास। तो कुछ हमलोग आशीर्वाद के रूप में इनको (सोनिया जी को) देंगे। और आशीर्वाद सनातन धर्म की परंपरा है, उसके माध्यम से देंगे। ऐसे नहीं देंगे- गिफ्ट वगैरह, आधुनिक वाला जो था वह तो हो गया, जो देना था स्मृति चिह्न, ऐसा वैसा। मैं भगवान् विश्वनाथ का और काशी के सारे देवताओं का प्रसाद लेकर आया हूँ इनके लिए। कल से योजना में लगा था। हमने जब अभिषेक किया था (बाबा विश्वनाथ का), २०५ लीटर दूध चढ़ाया था। विद्वानों का, वेद का प्रसाद, सभी पौराणिक देवों का इनको दूँगा। उससे इनको अपूर्व शक्ति मिलेगी।

राजीव जी का स्मरण अब मैं इसलिए नहीं कर रहा हूँ कि वह आये थे। मेरा मन भर रहा है और पहले भी किसी ने कर दिया था तो मेरा...........। क्योंकि मैंने पहले राजीव जी को देखा भी नहीं था कि कौन थे राजीव जी! यह लोकपति जी यह सब चक्करदारी का काम करते हैं। यही कहे कि महाराज राजीव जी को बुलाओ। जब राजीव जी आये तो...........। कालिदास ने लिखा है कि बातचीत से मित्रता हो जाती है। वह आकर्षक व्यक्तित्व था, हमारे जैसे बाबा के साथ भी थोड़ी देर में इतना आत्मीय भाव हो गया था कि पहली बार किसी के दिवंगत होने से मेरी आत्मा को आघात पहुँचा था। नहीं तो मैं बाबा आदमी हूँ। किसी के मरने से विषाद और हर्ष होता ही नहीं था और उस क्षण को याद करके मैं अत्यन्त.........। अपने को संभाल नहीं पाऊँगा। इसलिए उस चर्चा को रहने देता हूँ। सब लोगों ने कहा भी है कि आइये दो शब्द धन्यवाद के और इसके बाद हम लोगों के आप सभी लोगों को, संत परंपरा की ओर से आशीर्वाद है। बैठे रहेंगे, कोई इधर-उधर हिलेगा-डुलेगा नहीं और यह जो कांग्रेस के आये हैं, सोनिया जी के पार्टी के लोग, वह जिन्दाबाद और जिन्दाबाद हुआ नहीं लोग क्या कहेंगे, यह पार्टी की सबसे बड़ी नेत्री हैं और आप अव्यवस्था फैला रहे हैं। यहाँ तो हर हर महादेव से हम लोग इनको आशीर्वाद देंगे। जय सिया राम। (श्रोताओं का स्वर) जय सिया राम।

•

द्वितीय अध्याय

यात्रा प्रखण्ड

ज.गु. सप्तशताब्दी महोत्सव : दैनिक प्रवृत्तियाँ

- परमप्रभु श्रीरामचरणपादुका का पूजन रामसूक्त से अभिषेक — प्रातः ७ से ९
- रामसहस्रनाम से सहस्रार्चन हवनात्मक यज्ञ-आरती क्षमा प्रार्थना — प्रातः ७ से ९
- आचार्य समाराधन — ९ से ९.३० तक
- समुपस्थित भक्तों को आशीर्वचन — ९.३० से १० तक
- विद्वत् संगोष्ठी एवं स्थानीय रामभावभिषिता महानुभावों का अभिनन्दन — १० से १२ तक
- प्रेस वार्ता
- वैष्णवाराधन (संतों, भक्तों एवं अभ्यागतों का भण्डारा)
- छात्रों के लिए निबन्ध एवं भाषण प्रतियोगिता का समायोजन
- जहाँ पर दो या तीन दिनों का कैम्प हो वहाँ पर हरिजन बस्ती में कार्यक्रम (हरिचर्चा)
- वैदिक संस्कारों की चर्चा - सम्पादन एवं तत् सम्बन्धी समस्याओं का समाधान वैदिक ब्राह्मणों द्वारा — प्रातः ११ से १२ तक
- स्थानीय देवताओं की आराधना
- अगले कैम्प (पड़ाव) के लिए यात्रा — ४ बजे सायं
- पहुँचने के बाद सार्वजनिक सभा (संतों एवं विद्वानों की) — ६ से ८ बजे तक
- रात्रि समाराधना — ८ से ९ तक (सामूहिक रक्षास्तोत्र का पाठ)
- रात्रि में प्रसाद सेवन — ९ से १० बजे तक
- परमप्रभु संतों - विद्वानों तथा भक्तों का विश्राम

●

ज.गु. सप्तशताब्दी महोत्सवः आवश्यक निर्देश

महोत्सव प्रसंग पर आने वाली यात्रा के पहले निम्नांकित बातें ध्यान देने योग्य हैं—

- यात्रा के क्रम में कहाँ-कहाँ शिविर (कैम्प) होगा। उपयुक्त स्थान ध्यान में रहना चाहिए।
- एक शिविर से दूसरे शिविर की दूरी लगभग ३०-४० कि.मी. की होगी।
- जहाँ भी शिविर स्थल का चुनाव हो वहाँ लगभग दो या ढाई सौ लोगों के ठहरने का प्रबन्ध हो।
- यात्रा के साथ भण्डारी-सहयोगीजन तथा भोजन सामग्री एवं दैनिक व्यवहार की उपयोगी सामग्री भी रहेंगी।
- यज्ञ आदि के सम्पादन के लिए वैदिक विद्वान् भी साथ में होंगे।
- जिन स्थानीय महानुभावों का अभिनन्दन होना है उनको ध्यान में रखें। अभिनन्दनीय- १. शिक्षा २. समाजसेवा ३. नारी ४. किसान ५. हरिजन एवं ६. व्यापारीवर्ग में होंगे। अभिनन्दनीय- रचनात्मक एवं विशुद्ध जीवन का होना चाहिए।
- यात्रा आने के पहले ही छात्रों की लिखित निबन्ध प्रतियोगिता हो जानी चाहिए।
- निबन्ध प्रतियोगिता के संभावित विषय-संत भूमि भारत वर्ष, भारत को सर्वश्रेष्ठ भूमि बनाने में संतों का योगदान, राष्ट्रीयता एवं संत, स्वामी रामानन्दजी एवं रामभक्ति परम्परा, संत परम्परा के परम प्रेरणास्रोत स्वामी रामानन्दजी, राष्ट्रभाषा के उन्नायक स्वामी रामानन्दजी, वहाँ के विद्वानों के अनुसार भी विषय हो सकते हैं।

•

राष्ट्रव्यापी रामभाव प्रसार यात्रा

डॉ. श्रद्धानन्द

अनादि काल से भारत एक धर्मप्राण देश है। लोकजीवन की इस धार्मिकता में साधुसंतों की भूमिका महत्त्वपूर्ण रही है। देश का प्रत्येक काल खण्ड साधुसंतों के जीवन से नयी प्रेरणा व स्फूर्ति प्राप्त करता रहा है। अतः भारतीय समाज की सार्वदेशिक विराटता आकस्मिक नहीं है। ऋषि-मुनियों की समानांतर जीवन प्रणालियाँ भारतीय जनजीवन को गहराई तक संस्पर्श करती हैं और बहुत दूर तक प्रभावित भी। अतः इसे पूरा का पूरा इतिहासबद्ध नहीं किया जा सकता। अध्यात्म और धर्म से आवेष्टित भारतीय समाज किन-किन गवेषणाओं का प्रतिफल है– इसे पूर्ण रूप से चिह्नित करने के लिए साधुसंतों के चरण और शरण तक पहुँचना पड़ता है। धर्म, अध्यात्म और आस्था के त्रिकोण से निर्मित यह समाज समय-समय पर सम्पन्न संत-यात्राओं का जीवन्त साक्षी है। सूत्र तो यहाँ तक संकेत करते हैं कि समाज की संरचना में सामाजिक अर्थात् पारिवारिक जीवन जीने वाले गृहस्थों ने साधुसंतों की अपेक्षा कम योगदान किया है। इसकी रचना ऋषि-मुनि और विरक्त प्रकार के संतों ने की है, पर इस रचना का उद्देश्य स्वयं के लिए नहीं, दूसरों के लिए है। परहित या परोपकार या अपने हितों का कम से ध्यान समाज की रीढ़ है। परमार्थ का हित या चिंतन साधु के चरित्र में ही निहित होता है।

सामाजिक व्यवस्था का संचालन पुरोहित करता है। लंबे कालखंड के उपरांत किसी भी पद्धति में जड़ता, दोष और रूढ़ियों का प्रविष्ट होना स्वाभाविक है। समाज से बाहर रहने वाले साधुसंत जागरण और उद्बोधन के माध्यम से रूढ़ियों का समाहार करते हैं। पुराने में नये को जोड़ना, नये के लिए लख को जगाना और अलख को जगाना साधु का ही कर्तव्य है। इस प्रकार का जागरण संत-यात्राओं से ही संभव होता रहा है। भारतीय धर्मशास्त्र का इतिहास और लौकिक जीवन की सांस्कृतिक परम्पराएँ संत-यात्राओं के वृत्तांतों से परिपूर्ण हैं। दक्षिण के आचार्य शंकर ने सम्पूर्ण भारत को परस्पर जोड़ने में यात्राओं का ही अवलंबन ग्रहण किया था। इन यात्राओं का प्राणतत्त्व धर्म और संस्कृति हुआ करती है। इसी अभियान में केरल से कश्मीर और कन्याकुमारी से असम जुड़ सके थे। विचारों की अभिव्यक्ति संस्कृत भाषा में हुई थी। संस्कृत को जनभाषा नहीं स्वीकार करने वाले भारतीय समाज के इतिहास से अपरिचित लगते हैं।

कश्मीर से कन्याकुमारी तक मंगलस्तोत्रों का प्रयोग संस्कृत में ही होता था। विवाह के मंत्र, स्वस्तिवाचन, जीवन की अन्यान्य आचार संहिताएँ संस्कृत में ही रची गयी थीं। इसका क्षेत्र असम से सिंधु तक विस्तृत था। माध्यम बनी थी यात्रा। उन्हीं के महाप्रस्थान ने उत्तर और दक्षिण को, पूरब और पश्चिम को एक ही विराट पुरुष का विस्तार बताया था, एक ही ईश्वर की संतान कहा था। आलवार और नायनार संतों ने तीर्थ प्रति तीर्थ यही भाव जगाया था। महाराष्ट्र के वारकरी संतों ने नासिक, पंढरपुर इत्यादि में इसी भाव का शंखनाद किया था। (जैन-तीर्थंकरों, सिद्धों तथा नाथपंथियों ने सम्पूर्ण आर्यावर्त का परिभ्रमण कर आत्म जागरण के साथ लोक जागरण भी किया था। बुद्धोपदेशों की साक्षी यात्राएँ ही हैं। यात्राओं में कही गयी बातें ही आर्यसत्य बनी हैं। अष्टांग मार्ग बनी हैं। यात्राएँ अन्तर्कथाओं का सृजन करती हैं। अन्तर्कथाएँ जीवंत समाज की संजीवनी होती हैं। इन अन्तर्कथाओं में ही संस्कृति और सभ्यता के ऐतिहासिक बीज निहित होते हैं।)

मनुष्य का पूरा जीवन ही एक यात्रा है। संसार की अर्थवत्ता संसरणशीलता में निहित होती है। यात्रा निरंतर कुछ पाने और बहुत कुछ देने का उपक्रम है। कभी भगवान् श्रीराम ने साकेत से धुर दक्षिण तक यात्रा की थी। लोकसंस्पर्श से समाज को हृदयंगम किया था। सुख-दुख का समन्वय किया था। कोल-भील, भालु-बंदरों और राक्षस-समूहों से सम्बंध विकसित किया था।पक्षियों को सम्मान दिया था। आदिवासियों को सखा और मित्र बनाया था। नदियों-पर्वतों का पूजन किया था। देवताओं की आराधना की थी। जननी जन्मभूमि को स्वर्ग से श्रेयस्कर कहा था। ऋषियों की रक्षा और राक्षसों का संहार किया था। सब मिलाकर धर्म, नैतिकता और अपनत्व का भावमय संसार सृजित किया था। उनके अनंतर सहस्राब्दियों तक यात्राओं का क्रम चलता रहा। कभी आचार्यों ने, कभी लोकनायकों ने तो कभी महामनीषियों ने यात्राएँ कीं। दक्षिण के आचार्यों ने उत्तर और उत्तर के आचार्यों ने दक्षिण की वृहद् यात्राएँ की थीं। आचार्य रामानंद ने देश पर्यन्त लम्बी-लम्बी यात्राएँ सम्पन्न किया। समर्थ गुरु रामदास ने यात्राओं के माध्यम से राष्ट्रवाद का शंखनाद फूँका। सिख गुरुओं ने यात्राओं को अपने मत प्रचार का सबसे बड़ा साधन माना। आज भी यात्राएँ हो रही हैं, पर वे राजनैतिक अधिक, सामाजिक कम हैं, धार्मिक तो एकदम नहीं। वर्तमान यात्राएँ विचारों की लक्ष्मण रेखा खींचती चलती हैं, विचारों का प्रकोष्ठ बनाती हैं। जो अनुकूल नहीं वह व्यर्थ है। पर संत-महंतों, आचार्य-कवियों, साधक-भक्तों, लोकनायक महापुरुषों द्वारा की गयी यात्राएँ सम्पूर्ण समाज को धर्म के महाभाव में रंगती हुई मनुष्यता के रंग को उभारती हैं। सहानुभूति की आभा से प्रकाशित करती हैं। प्रेम के महार्णव में स्नान कराती हैं। साथ ही सहजात धर्म, साहचर्य को महिमामंडित करती हैं।

जाति पाँति की सीमाओं को तोड़कर भगवान् की शरणागति का मार्ग सबके लिए खुला है ऐसी उदात्त घोषणा करने वाले, अगस्त्य संहितानुसार रामानंदः स्वयं रामः प्रादुर्भूतो महीतले द्वारा कलियुग में श्रीराम का अवतार धारण करने वाले रामानंद जी की २७ जनवरी २००० ई. से १६ जनवरी २००१ तक मनायी जाने वाली सप्त शताब्दी के अन्तर्गत वर्ष पर्यन्त राष्ट्रव्यापी धार्मिक उत्सव तथा राम भक्ति भाव प्रसार यात्रा का नियोजन किया गया। सम्पूर्ण महोत्सव एवं राम भक्ति भाव प्रसार यात्रा और अन्य धार्मिक कार्यक्रम जगद्गुरु रामानन्दाचार्य की मूल पीठ श्रीमठ पंचगंगाघाट काशी के आचार्य जगद्गुरु रामानंदाचार्य स्वामी रामनरेशाचार्य जी के सान्निध्य में सम्पन्न हो रहे हैं जो देश में राम भाव प्रसार एवं रामानंद जी के आदर्शों को लोकमानस के बीच स्थापित करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह कर रहे हैं। निश्चित ही यह कार्यक्रम राम भक्ति की परम मंगलकारी एवं लोककल्याणकारी चेतना को जनमानस में उत्प्रेरक एवं प्रेरणादायी दिशा देगा।

आसुरी प्रवृत्तियाँ सिर उठा चुकी हैं। उसके समक्ष मानवता कराह रही है। अन्याय और अत्याचार का बोलबाला बढ़ रहा है। तन-मन-धन की शुचिता लुप्त हो रही है। ऐसी विषम एवं भयावह परिस्थिति में स्वामी रामानंद जी के आदर्शों एवं विचारों का प्रचार-प्रसार ही एकमात्र मानवता के अस्तित्व का रक्षक तथा संवर्द्धक सिद्ध होगा। ऐसे ही शुभ-आदर्शों एवं मंगलमयी कामनाओं के साथ जगद्गुरु रामानंदाचार्य स्वामी रामनरेशाचार्य जी महाराज ने सामाजिक, धार्मिक समरसता लाने के लिए युग-प्रवर्तक श्रीरामानंद के उदात्त एवं अमूल्य संदेशों को जन-जन तक पहुँचाने के लिए रामभक्ति प्रसार यात्रा का श्रीगणेश किया।

जात पात पूछे नहिं कोई, हरि को भजे सो हरि का होई की भावना का सम्पूर्ण भारत में प्रसार कर मानवता की रक्षा तथा सामाजिक समरसता के भाव का उदय करना ही इस यात्रा का शुभ संकल्प है।

जगद्गुरु रामानंदाचार्य सप्त शताब्दी महोत्सव प्रसंग पर राष्ट्रव्यापी तथा वर्षव्यापी समायोजित यात्राओं का शुभारंभ १० मार्च २००० ई. को हुआ। श्रीमठ में स्थापित जगद्गुरु रामानंद जी की दिव्य चरण पादुका को विधिवत् प्रणाम कर यात्रा प्रारम्भ हुई। तत्पश्चात् राजघाट पर श्रीमठ द्वारा स्थापित शिवमंदिर में महादेव जी का पूजन-अर्चन हुआ। रामभक्ति भाव प्रसार यात्रा दल सर्वप्रथम सारनाथ पहुँचा। सारंगनाथ महादेव का पूजन आचार्यश्री ने किया। यहाँ से गाजीपुर मार्ग पर कैथी ग्राम स्थित मार्कण्डेय महादेव यात्रा-दल पहुँचा। इस स्थल का विशेष पौराणिक महत्व है। यहाँ राम जानकी मंदिर में भगवान् श्री राम एवं माँ भगवती सीता के दर्शन सभी ने किये। आचार्यश्री ने सभी ब्राह्मणों को दक्षिणा प्रदान किया। यहीं पर एक विद्वत् संगोष्ठी का

भी आयोजन हुआ। इस अवसर पर आचार्यश्री ने सभी को यात्रा में सहभागिता करने की आवश्यकता पर बल देते हुए कहा कि जन्म से मरण तक सभी शरीरधारियों को यात्रा करनी पड़ती है। यात्रा जीवन सहचरी है। कोई भी इसके बिना नहीं रह सकता जब यात्रा के उद्देश्य श्रेष्ठ बन जाते हैं तब यात्री परम उत्कर्ष को प्राप्त कर लेता है। हमारी यह यात्रा सर्वावतारी भगवान् श्रीराम तथा रामावतार जगद्गुरु रामानंदाचार्य के परम मंगलमय भावों के प्रचार-प्रसार के लिए है, अतएव सर्वश्रेष्ठ है। इसमें सभी लोगों को भाग लेना चाहिए। इसका कोई विकल्प नहीं है। संसार को ऐसी यात्राओं की नितांत आवश्यकता है। संगोष्ठी के उपरांत भंडारा हुआ। सभी लोगों ने प्रसाद ग्रहण किया।

यह यात्रा ११ मार्च को गाजीपुर के लिए प्रस्थान की। यहाँ आचार्यश्री के ठहरने का प्रबंध गंगातट पर बने योगाश्रम में किया गया था जो अत्यन्त रमणीय साधना भूमि है। शेष सभी समीपवर्ती हनुमान मंदिर परिसर में ठहरे। १२ मार्च को प्रातः मंदिर में श्रीराम तथा भगवद् विग्रह तथा ऋषि-मुनियों की प्रतिमाओं का पूजन संपन्न हुआ। विद्वत् संगोष्ठी एवं महोत्सव समिति की ओर से स्थानीय पाँच महानुभावों का अभिनन्दन किया गया। १२ मार्च को बलिया में स्थित कैथोली सुरहाताल के तट पर बने सिद्धेश्वर महादेव मंदिर के प्रांगण में यात्रा दल के सभी सदस्य पहुँचे। जहाँ पर लाल बाबा के नेतृत्व में अनेक महानुभावों ने आचार्यश्री का स्वागत किये। कैथोली के प्राथमिक विद्यालय में विश्राम हुआ। प्रातःकाल रामाराधना तथा आध्यात्मिक चर्चा में लालबाबा भी श्रद्धाभाव से पधारे। सुरहाताल में नौका-विहार हुआ। यहाँ के भक्तजन तथा विशेष कर मांझी लोगों में अति प्रसन्नता थी। सुरहताल के नौका विहार से सभी लोगों के बाहर आते ही तूफान आया। सभी को ईश्वरीय शक्ति का आभास हुआ। वर्षा भी खूब हुई। १४ मार्च को महाराजश्री का पदार्पण आरा में हुआ। आरा महोत्सव समिति ने धूमधाम से अगवानी की। मैना सुन्दर धर्मशाला में सभी ठहरे। शाहाबाद रामायण परिषद के द्वारा आयोजित रामायण में महाराजश्री का अभिनन्दन एवं प्रवचन हुआ। १५ मार्च को यात्रा का प्रस्थान गुण्डी ग्राम के लिए हुआ, यह सिद्ध-महात्माओं की साधनास्थली है। आरा के प्रतिनिधिभूत रामानंदी आश्रम में पूजन-अर्चन हुआ। वहाँ के महन्त ने संतों तथा भक्तों के साथ आचार्यश्री का पूजन किया। १६ मार्च को प्रातःकालीन पूजन-अर्चन के बाद सहजानंद ब्रह्मर्षि महाविद्यालय में विद्वत् संगोष्ठी हुई। १७ मार्च को यह दल बक्सर पहुँचा जहाँ प्रातःकालीन रामाराधना के पश्चात् रामरेखा घाट पर गंगापूजन, विश्वामित्र का दर्शन आदि सम्पन्न हुए। सायंकाल विद्वत् गोष्ठी तथा पाँच महानुभावों का अभिनन्दन हुआ। १७ मार्च को काशी के लिए यात्रा का प्रस्थान हुआ। सभी लोग श्रीमठ रात्रि २.३० बजे पहुँचे। रामभक्ति भाव प्रसार यात्रा सभी दृष्टियों से सफल रही।

२३ मार्च २००० ई. को पुनः बिहार की यात्रा प्रारंभ हुई। चंदौली में दोपहर में आचार्यश्री का स्वागत हुआ। इसके उपरान्त समूह ने सासाराम में पदार्पण किया। इन्दिरा गाँधी आश्रम और जगजीवन आश्रम पर विश्राम हुआ। दोनों आश्रम श्रीमठ की गरिमा से आबद्ध एवं समर्पित हुए। खुदवा ग्राम महाराजश्री रात्रि ९ बजे अत्यन्त दुर्गम मार्ग से पहुँचे। यह गाँव श्रीमठ के महासाधु राम विनय दास जी की कर्म स्थली है। खुदवाँ राममंदिर में पूजन हुआ। अपार जनसमूह के बीच महाराजश्री का प्रवचन हुआ। दोपहर २.३० महाराजश्री कोमलवा पहुँचे। विश्राम बाबू के दरवाजे पर आचार्यश्री तथा संतों का पूजन हुआ। फलादि का प्रसाद वितरण हुआ। २६ मार्च को यात्रा दल बिहटा पहुँचा। यहाँ स्थानीय महानुभावों ने स्वागत किया। समस्त कार्यक्रम राम-जानकी मंदिर पर हुए। बिहटा युग-प्रवर्तक स्वामी सहजानंद सरस्वती की कर्मभूमि रही है। स्वामी जी की समाधि पर महाराजश्री द्वारा पूजन हुआ। प्रवचन सभा का आयोजन हुआ। २७ मार्च को यात्रादल घोसवरी पहुँचा। पेट्रोल पम्प पर स्थानीय लोगों के साथ डॉक्टर साहब तथा मनोज बाबू ने स्वागत किया। हनुमान मंदिर पर संपूर्ण कार्यक्रम हुए। २८ मार्च को जनगोविन्द के आश्रम में महंत शत्रुघ्नदास ने अपने उत्तराधिकारी शिव कुमार के साथ पूर्ण निष्ठा एवं अनुराग के साथ आचार्यश्री का पूजन किया। राजेश दास तथा शिवकुमार दास ने भजन गाए। २९ मार्च को यात्रादल पुंडारक पहुँचा। पुण्डारक आश्रम के महन्त राम लखन दास ने स्वागत किया। ३० मार्च को मोकामा तथा सायंकाल ५.३० पर बेगूसराय यात्रादल पहुँचा। मशपुरा विवाह भवन में समस्त कार्यक्रम सम्पादित हुए। दूसरे दिन विद्वत् संगोष्ठी हुई जिसमें भाजपा के विधायक श्री भोलासिंह तथा पूर्व विधायक श्री शर्मा जी भी उपस्थित रहे। पहली अप्रैल को छितरौर के शिवमंदिर पर अभिनन्दन हुआ। पिछली अप्रैल को खगड़िया में शिविर सम्पन्न हुआ। रात्रि में धर्मसभा का आयोजन हुआ। २ अप्रैल को नयागाँव में यात्रादल श्रीकृष्ण विद्यालय पहुँचा। रात्रि में धर्म-सभा हुई। ४ अप्रैल को परमानंद जी के परिवार वालों ने डुमरिया में यात्रादल का स्वागत किया। सभा एवं धार्मिक कार्य परमानंद जी की ठाकुरबाड़ी में हुई। निरंजन तथा उनके भाई ने पत्नी सहित आचार्यश्री से दीक्षा ग्रहण की। ५ अप्रैल को यात्रादल खजरेठा पहुँचा। प्रातःकाल रामपरिवार के रामदरबार में पूजन हुआ। दुर्गामंदिर पर धर्मसभा हुई। विशेष कारणों से यात्रादल भागलपुर न जाकर बड़हिया ६ अप्रैल को पहुँचा। सभी कार्यक्रम श्री हनुमान महावीर धर्मशाला में संपादित हुए। ९ अप्रैल को यात्रा दल शेरपुर पहुँचा। कार्यक्रम स्थानीय विद्यालय में हुआ। यात्रा के उपर्युक्त प्रत्येक स्थल पर रामाराधन, अखंड रामनाम संकीर्तन, यज्ञ, दीक्षा, आचार्यश्री का प्रवचन तथा स्थानीय पाँच महानुभावों का अभिनन्दन हुआ। १० अप्रैल को यात्रादल बिहार की राजधानी पटना पहुँचा। पटना में त्रिदिवसीय कार्यक्रम हुए। यहाँ

की संपूर्ण व्यवस्था राजीवजी, रामदास जी तथा डॉ. सतीश राय ने संभाली। रामनवमी का उत्सव पटना में ही हुआ। बिहार विधान सभा में कांग्रेस (इ) के नेता श्री महानंद सिंह की भूमिका महत्त्वपूर्ण रही। सम्पूर्ण कार्यक्रम में अनेक राजनयिक, विद्वान् तथा भक्तों की अपार भीड़ थी। ब्रह्मर्षि समाज के डॉ. राय तथा जमुना सिंह ने भी प्रत्येक कार्यक्रम में बढ़ चढ़कर भागेदारी की। प्रातःकालीन रामाराधन के उपरांत प्रवचन सम्पन्न हुए। सायं संगीताञ्जलि की व्यवस्था थी। रामकथा पर आधारित कत्थक नृत्य ने सबको भाव-विभोर कर दिया। पटना से श्रीमठ काशी के लिए यात्रादल का प्रस्थान हुआ।

हरियाणा, पंजाब, चंडीगढ़ एवं हिमाचल प्रदेश में रामभक्ति प्रसार यात्रा का शुभारंभ श्रीमठ पंचगंगाघाट काशी से २३ अप्रैल २००० ई. को हुआ। कानपुर देहात एवं आगरा में पड़ाव देते हुए यात्रा के मुख्य प्रस्थान केन्द्र सोनीपत में रामसंकीर्तन मंडली, साधु-सन्तों के साथ जगद्गुरु रामानंदाचार्य स्वामी रामनरेशाचार्य जी वाहन समूहों के साथ २५ अप्रैल को रात्रि ८ बजे पहुँचे। सच ही है 'सबहिं नचावत राम गोसाईं'। विलम्ब के कारण आयोजकों में व्याकुलता थी। महाराजश्री के दर्शन पाते ही कुम्हलाये पुष्प सदृश आयोजक भक्त वचनामृत रूपी आशीर्वाद से प्रफुल्लित हो उठे। नव उत्साह, स्फूर्ति तथा नव जीवंतता चतुर्दिक फैल गयी। सर्वत्र राममय वातावरण हो गया। सीता भवन ट्रस्ट एवं ब्राह्मण सभा द्वारा किया गया आयोजन राम रंग में डूब गया। दूसरे दिन राम अर्चा संपादित हुई। पूजन-अर्चन के पश्चात् स्थानीय मंदिरों में भगवान् श्री कृष्ण, भगवान् शनि, शंभुदयाल एवं गोपीनाथ का महाराजश्री द्वारा दर्शन-पूजन हुआ। सहयोग देने वाली संस्था शंभुदयाल एवं गोपीनाथ का महाराजश्री द्वारा दर्शन-पूजन हुआ। सहयोग देने वाली संस्था शंभुदयाल समिति स्थानीय स्तर पर शिक्षा कार्य को आगे बढ़ा रही है। महाराजश्री स्वामी दयानंद सरस्वती द्वारा स्थापित रामकृष्ण साधना केन्द्र पहुँचे। पैर की पीड़ा से व्यथित वहाँ के स्वामी जी ने महाराजश्री का सरलता, सहजता तथा आत्मीयता के साथ स्वागत किया।

सोनीपत से प्रारंभ हुई रामभक्ति भाव प्रसार यात्रा का अगला पड़ाव पानीपत था। यात्रादल २६ अप्रैल को पानीपत पहुँचा। यहाँ के सम्पूर्ण कार्यक्रम देवी मंदिर तथा उसके नवनिर्मित सभागार में हुआ। यात्रा मंडली गीता भवन, करनाल २७ अप्रैल को पहुँची। राम भक्ति भाव प्रसार यात्राक्रम इस प्रकार है- २८ अप्रैल को कुरुक्षेत्र (जयराम आश्रम), १ मई को पेहवा, २ मई को चीका मंडी, ४ मई को समाना मंडी, ९ मई को भवानी गढ़ (सनतान शिव मंदिर), ११ मई को धुरी (जैन धर्मशाला), १४ मई को मालेर कोटला (बाब नरसिंह दास का डेरा), १६ मई को लुधियाना (राधाकृष्ण मंदिर), टैगोर नगर, टैगोर विश्व कल्याण का सभागार, यहीं १७-१८ को सीताराम आश्रम एवं नवनिर्मित राम मंदिर, १९ मई को गोविन्दगढ़ (राममंदिर) २१ मई को

पटियाला (राधाकृष्ण मंदिर, संत निवास), २६ मई को राजपुरा (सत्यनारायण मंदिर), २८ मई को पंचकुला (सनातन धर्म मंदिर), ३१ मई से ४ जून को चंडीगढ़ (सनातन धर्म मंदिर), ५ जून को कालिका, ६ जून को नैनादेवी, ७ जून को ज्वाला देवी, ८ जून को कांगड़ा देवी, ९ जून को चामुण्डा देवी, १० जून को सुन्दर नगर, १२ जून को मंडी (स्टेडियम), १४ जून को शिमला (राम मंदिर), १९ जून को हरिद्वार के लिए प्रस्थान जहाँ से २२ जून को दिल्ली में राष्ट्रीय समिति की बैठक हेतु प्रस्थान तथा २५ जून से २९ जून तक भीलवाड़ा के लिए प्रस्थान, २९ जनवरी को आगरा तथा २ जुलाई को जगन्नाथ पुरी के लिए प्रस्थान।

इस यात्रा में सोनीपत, पानीपत, चीका, समानामंडी, भवानीगढ़, लुधियाना, पंचकुला, चण्डीगढ़ के आयोजकों ने विशाल शोभायात्रा का आयोजन किया। शोभायात्रा में आगे-आगे बैण्ड बज रहे थे। चण्डीगढ़ की शोभायात्रा में सेना बैण्ड आगे-आगे चल रहा था। शोभायात्रा में राम संकीर्तन मंडली, अपार श्रद्धालु जन सम्मिलित थे। जिसमें प्रत्येक आयु वर्ग के नर-नारी अपूर्व उत्साह एवं भक्ति भाव के साथ शोभायात्रा में चल रहे थे। इन स्थानों के अतिरिक्त भी शोभा-यात्राएँ निकली परन्तु इनकी भव्यता अद्भुत थी। चण्डीगढ़ की शोभायात्रा में माननीय सुखदेव सिंह ढिंढसा (युवा एवं खेल मंत्री भारत सरकार) हरिशकांत जी (आई.जी.) रमेश अग्रवाल (चेयरमैन दैनिक भास्कर) रूपदासजी (राज्य मंत्री, हिमांचल प्रदेश) तथा भारतीय प्रशासनिक सेवा के पी.एस.सिन्हा भी उपस्थित थे।

कुरुक्षेत्र, लुधियाना, पटियाला, पंचकुला, शिमला में आयोजकों ने बड़े पैमाने पर विद्वत् संगोष्ठी के आयोजन किये। पंचकुला में भारत सेवा समाज द्वारा आयोजित विद्वत् संगोष्ठी में हरियाणा के मुख्यमंत्री माननीय भजनलाल जी ने भाग लिया तथा महाराजश्री को माल्यार्पण कर आशीर्वाद प्राप्त किया। शिमला में आयोजित विद्वत् संगोष्ठी में प्रख्यात साहित्यकार एवं हिमांचल प्रदेश के राज्यपाल महामहिम पं. विष्णुकांत शास्त्री जी मुख्य अतिथि थे। प्रत्येक विद्वत् संगोष्ठी का शुभारंभ वैदिक मंगलाचरण से हुआ।

इस यात्रा में पूर्व की भाँति आचार्यश्री ने स्थानीय प्रमुख देवी-देवताओं एवं स्थलों का दर्शन-पूजन किया। जिसमें मुख्य हैं– सोनीपत में श्री कृष्ण, शनिदेव, शंभुदयाल, गोपीनाथ, पानीपत में देवी मंदिर स्थित प्राचीन सिद्ध-विग्रहों का पूजन-अर्चन, कुरुक्षेत्र में ब्रह्म सरोवर में स्नान-ध्यान तथा शिव मंदिर महाकाली मंदिर, हनुमान मंदिर में पूजन, पेहवा में संगमेश्वर महादेव, वशिष्ठ जी द्वारा स्थापित महादेव, महाराज पृथु द्वारा प्रतिष्ठापित महादेव पुण्य सलिला तथा सरस्वती जी का पूजन, भवानी गढ़ में सनातन शिव मंदिर। इसके अतिरिक्त कालका, नैना देवी, ज्वाला देवी, कांगड़ा देवी, चामुण्डा देवी का सविधि पूजन-अर्चन प्रमुख है।

इस यात्रा में कई स्थानों पर रामलीला के भी आयोजन हुए जिनमें समाना मंडी, भवानी गढ़, धुरी, मालेर कोटला, पटियाला आदि प्रमुख हैं। इस यात्रा में महाराजश्री की कई प्रेस वार्ताएँ भी हुईं। भवानी गढ़ के कार्यक्रम का सिटी केवुल ने सीधा प्रसारण भी किया।

पटियाला के दो हरिजन वस्तियों में महाराजश्री के धार्मिक कार्यक्रम एवं प्रवचन हुए। सम्पूर्ण यात्रा में प्रतिदिन रामाराधन, अखंड श्रीराम नाम संकीर्तन, प्रातः एवं सायं महाराजश्री का धार्मिक प्रवचन तथा प्रत्येक स्थान पर सात्विकभाव से पूर्ण पाँच सम्मान्य नागरिकों के अभिनन्दन हुए। कई स्थलों पर भक्तों को दीक्षा भी दी गयी।

ज.गु. रामानन्दाचार्य सप्तशताब्दी महोत्सव : एक दिव्य झलक

प्रवीण मित्तल, सामाना मंडी

युग प्रवर्त्तक जगद्‌गुरु स्वामी रामानन्द जी का जन्म सात सौ वर्ष पूर्व प्रयागराज में हुआ था। उनकी तपःस्थली काशी में थी। 'जाति पाँति की सभी सीमाओं को तोड़कर भगवान की शरणागति का मार्ग सबके लिये खुला है' ऐसी उदात्त घोषणा करने वाले कलियुग में श्रीराम के अवतार स्वामी रामानन्द जी भक्तिकाल के सर्वाधिक यशस्वी साधक एवं प्रगतिशील विचारक थे। भारत में रामभक्ति धारा को अविच्छिन्न रूप से प्रवाहित करने का श्रेय इन्हीं को जाता है। इन्हीं महापुरुष का सप्तशताब्दी समारोह पूरे भारत वर्ष में २७ जनवरी २००० ई. से १६ जनवरी २००१ ई. तक हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। इस अवसर पर पूरे भारत में राष्ट्रव्यापी धार्मिक उत्सव तथा राम भक्ति भाव प्रसार यात्रा का आयोजन किया गया। इसी रामभावभक्तिप्रसार और आचार्य रामानन्द के आदर्शों को लोक मानस के बीच स्थापित करने का महत्वपूर्ण कार्य सम्प्रति श्रीमठ के वर्तमान पीठाधीश्वर ज.गु. रामानन्दाचार्य स्वामी रामनरेशाचार्य जी कर रहे हैं।

ज.गु. रामानन्दाचार्य सप्तशताब्दी समारोह पर राष्ट्रव्यापी यात्राओं के शुभारम्भ १० मार्च २००० ई. को हुआ। उत्तर भारत में इस यात्रा का शुभारम्भ २३ अप्रैल २००० को हुआ। कानपुर एवं आगरा में विश्राम करने के उपरांत राम संकीर्तन मंडली साधु सन्तों के साथ २४ अप्रैल रात्रि ८ बजे सोनीपत पहुँची। मुख्य आयोजक पंडित नारायणदास जी व श्री रामकृष्ण शर्मा रिटायर्ड बी.डी.ओ. थे। विलम्ब के कारण आयोजकों में व्याकुलता थी। महाराज श्री का दर्शन पाते ही कुम्हलाये पुष्प सदृश आयोजक, भक्त प्रफुल्लित हो उठे। सीता भवन ट्रस्ट और ब्राह्म सभा द्वारा किया गया आयोजन राम-रंग में आकण्ठ डूब गया। दूसरे दिन पूजा-अर्चना के बाद .स्थानीय मंदिरों में महाराजश्री ने विग्रहों के दर्शन किये। सहयोगी संस्था शंभूदयाल समिति शिक्षा क्षेत्र में उल्लेखनीय सेवा कर रही है। महाराजश्री स्वामी दयानन्द सरस्वती द्वारा स्थापित रामकृष्ण साधना केन्द्र भी पहुँचे। पैर की असह्य पीड़ा से व्यथित होने के बाद भी वहाँ के स्वामी जी ने महाराजश्री का सरलता, सहजता तथा आत्मीयता के साथ स्वागत किया।

सोनीपत से प्रारंभ हुई रामभक्ति भाव प्रसार यात्रा का अगला पड़ाव पानीपत था। २६ अप्रैल को पानीपत पहुँची यात्रा का वहाँ के उद्योगपति श्री मलिक जी ने शहर के अन्य उद्योगपतियों के साथ सोत्साह स्वागत किया। महाराजश्री के स्वागत में एक विशाल आयोजन भी किया गया। यहाँ का सम्पूर्ण कार्यक्रम देवी मंदिर तथा उसके नवनिर्मित सभागार में सम्पन्न हुआ। २७ अप्रैल को रामभक्तिभाव प्रसार यात्रा गीता भवन, करनाल पहुँची। वहाँ भारत के प्रसिद्ध उद्योगपति लिबर्टी शूज के मालिक श्री राजकुमार जी और पंडित श्रीनिवास द्वारा महाराजश्री का अभिनन्दन किया गया। यात्रा का अगला पड़ाव कुरुक्षेत्र था जहाँ महाराजश्री अपनी संत मंडली व रामनाम संकीर्तन मंडली के साथ २८ अप्रैल को पदार्पण किए। मुख्य आयोजन जयराम आश्रम कुरुक्षेत्र में हुआ। जहाँ श्रीकेवल गोयल, गीता व अन्य गण्यमान व्यक्तियों ने महाराजश्री व अन्य संतों का स्वागत किया। विद्वत् संगोष्ठी का आयोजन हुआ तथा महाराजश्री ने ब्रह्म सरोवर में स्नान कर शिवमंदिर, महाकाली मंदिर व हनुमान मंदिर में पूजन भी किया।

भारत में भक्ति के प्रवर्त्तक स्वामी रामानन्द ने भक्ति की जिस जनान्दोलित चेतना को जन्म दिया था उसी चेतना को उज्ज्वल करते हुए गुरुदेव ने १ मई २००० को अपनी यात्रा का अगला पड़ाव पेहवा में डाला। मास्टर रामलाल जी रिटायर्ड बी.डी.ओ. ने पेहवा के प्रतिष्ठित लोगों के सहयोग से स्वामी जी का स्वागत किया। सारा शहर महाराजश्री के दर्शन के लिए उमड़ पड़ा। महाराजश्री ने पेहवा में संगमेश्षर महादेव मंदिर, वशिष्ठ जी द्वारा स्थापित महादेव, महाराजा पृथु द्वारा प्रतिष्ठापित महादेव पुण्य सलिला तथा सरस्वती जी का विधिवत पूजन किया।

२ मई २००० को रामभक्ति भाव प्रसार यात्रा हरियाणा के अंतिम पड़ाव चीका मंडी पहुँची जहाँ पर अशोक मित्तल, मित्तल राईस, श्री जगदीश राय जिंदल, श्री पुन्नू राम जी, श्री सुभाष जी और अन्य भक्तों ने स्वामी जी का स्वागत किया, शोभा यात्रा निकाली और एक भव्य समारोह का आयोजन किया। रात्रि में स्वामी जी ने सभी को धर्मोपदेश से अभिषिक्त कर दिया।

'जात पाँत पूछै नहिं कोई, हरि को भजे सो हरि का होई' की भावना का सम्पूर्ण भारत में प्रसार करते हुए रामभक्ति भाव प्रसार यात्रा ४ मई २००० को पंजाब की सामाना मंडी में पहुँची। ओसवाल पेट्रोल पंप पर महाराजश्री. रामनाम संकीर्तन मंडली व पूरे भारत से आये संत समाज का प्रेम चन्द जैन व शहर के गण्यमान व्यक्तियों ने स्वागत किया। एक विशाल शोभा यात्रा का आयोजन किया गया जिसमें पटियाला से विशेष रूप से मँगवाये गए तीन बैंड, रथ, महिला संकीर्तन मंडली शामिल थी। आगे बैंड उसके पीछे संत समाज, झूमते भक्त, महाराजश्री का रथ महिला संकीर्तन मंडली, झाँकियाँ व गाड़ियों के लम्बे-लम्बे काफिलों से पूरा शहर राममय हो गया। जगह-जगह

पर प्रसाद वितरण, पानी की टंकियाँ छबीले बाजार के हर मोड़ में लगी थीं। भयंकर गर्मी के बावजूद भक्त नाचते जा रहे थे, होली खेल रहे थे। विभिन्न बाजारों से होती हुई शोभा यात्रा का मुख्य आयोजन स्थल श्री अग्रवाल धर्मशाला थी। जहाँ पर शहर की विभिन्न धार्मिक, सामाजिक संस्थाओं के प्रतिष्ठित लोगों ने महाराजश्री का माल्यार्पण कर स्वागत किया।

सामाना के सप्तशताब्दी समारोह का यह उत्सव पाँच दिन चला। प्रातः गुरु चरण वंदना से लेकर सायंकाल धर्मसभा तक पता नहीं चला कि कब ये पाँच दिन बीत गये। रात्रि में रामलीला का आयोजन मथुरा से आए कलाकारों ने किया। इस लीला में स्वामी रामानंद जी के जीवन काल को अभिनीत किया गया। विभिन्न क्षेत्रों के पाँच अतिविशिष्ट लोगों को सम्मानित किया गया। औद्योगिक क्षेत्र से श्री रमेश गर्ग, श्री प्रेम चन्द जैन, कृषि से श्री साधु सिंह जी, श्री सहोता एडवोकेट व श्री रूलदु राम जी शामिल थे। विद्वत् संगोष्ठी का आयोजन भी किया गया। श्री रतन लाल जी शास्त्री व श्री मोहन लाल शर्मा प्रिंसिपल डी.ए.वी. स्कूल ने विशेष रूप से सभा को संबोधित किया। इसके अलावा बच्चों द्वारा स्वामी रामानन्द जी के जीवन पर निबन्ध लेखन प्रतियोगिता सम्पन्न हुई। विशाल भंडारे के उपरान्त यह यात्रा अपने अगले पड़ाव की ओर बढ़ चली।

९ मई को रामभाव प्रसार यात्रा भवानीगढ़ पहुँची। भव्य शोभा यात्रा निकाली गई। मुख्य आयोजन सनातन शिव मंदिर में हुआ। जहाँ पर प्रमोद कुमार पिंकी ने अन्य भक्तों के साथ मिलकर महाराजश्री का स्वागत किया। समारोह का सिटी केबल पर सीधा प्रसारण भी किया गया। ११ मई को यात्रा धूरी पहुँची जहाँ जैन धर्मशाला में मुख्य आयोजन किया गया। श्री वेद प्रकाश जी व स्थानीय महानुभावों ने स्वामी जी का व अन्य संतों का पूजन किया।

रामनाम संकीर्तन का जाप करती १४ मई को मलेरकोटला यात्रा पहुँची। बाबा नरसिंह दास के डेरे पर स्वामी जी का स्वागत किया गया। श्री पुरुषोत्तम दास गुप्ता द्वारा स्थानीय लोगों की मदद से स्वागत का भव्य आयोजन किया गया। मलेरकोटला से राम भक्ति भाव प्रसार यात्रा लुधियाना की ओर प्रस्थान कर सकी। वहाँ के महंत निर्मल जी, संधू जी व अन्य भक्तों ने स्वामी जी का व अन्य साधुसंत मंडली का पूजन किया। विशाल शोभा यात्रा का आयोजन किया गया। जो विभिन्न बाजारों से होती हुई सीता राम आश्रम पहुँची। स्थानीय लोगों ने स्वामी जी का स्वागत किया। रात्रि में पूर्व की भाँति धर्मसभा का आयोजन किया गया। विद्वत् संगोष्ठी, प्रेस वार्ता, रामलीला का मंचन भी हुआ।

१९ मई २००० को राम भक्ति भाव प्रसार यात्रा राम भक्ति की परम मंगलकारी एवं लोक कल्याणकारी चेतना को जनमानस में उत्प्रेरक एवं प्रेरणादायी दिशा देती हुई

भारत के प्रसिद्ध लोहा बाजार मंडी गोविन्दगढ़ पहुँची। यहाँ लाल धर्मपाल जी मित्तल, राकेश सिंगला, मास्टर रोशन लाल व स्थानीय महानुभावों के अथक प्रयास से एक विशाल आयोजन हुआ। मंडी के नगर सेठ दानवीर कन्हैया लाल बरटैजा ने महाराज श्री का पूजन किया। मुख्य आयोजन राम मंदिर में किया गया। रामलीला का आयोजन भी हुआ। रात्रि में धर्मसभा हुई। महाराजश्री ने ईश्वर तथा आचार्यों को ज्ञान तथा परमानन्द का स्वरूप बताते हुए लोगों को मांगलिक कार्यों के लिए प्रेरित किया।

सप्तशताब्दी का अगला आयोजन पटियाला शहर में हुआ। पटियाला में २१ मई २००० को महाराज श्री व रामनाम संकीर्तन मंडली का भावपूर्ण स्वागत किया गया। शोभा यात्रा का आयोजन हुआ। प्रेस वार्त्ता हुई। पटियाला में दो हरिजन बस्तियों में महाराजश्री के धार्मिक कार्यक्रम एवं प्रवचन हुए। प्रतिदिन रामाराधन, अखंड श्रीराम संकीर्तन, धार्मिक प्रवचन हुए। पाँच सम्मान्य नागरिकों का अभिनन्दन हुआ। राम भक्तिभाव प्रसार यात्रा का अगला पड़ाव राजपुरा में था। यहाँ यात्रा २६ मई को पहुँची। मुख्य आयोजन सत्यनारायण मंदिर में किया गया। श्री गोविंद राम जी तथा अन्य प्रतिष्ठित लोगों द्वारा महाराजश्री का पूजन किया गया।

२८ मई को यात्रा पंचकुला पहुँची। मुख्य आयोजन सनातन धर्म मंदिर में हुआ। पंचकुला में भारत सेवा समाज द्वारा आयोजित विद्वत संगोष्ठी में हरियाणा के मुख्यमंत्री माननीय भजन लाल जी ने भाग लिया। महाराज जी को माल्यार्पण कर आशीर्वाद भी प्राप्त किया। उत्तर भारत में राजकीय स्तर का यह प्रथम आयोजन चंडीगढ़ में हुआ। ३१ मई को विशाल शोभा यात्रा निकाली गई जिसमें आगे-आगे बैंड बज रहे थे। सेना का बैंड आगे-आगे और राम नाम संकीर्तन मंडली, श्रद्धालु जन पीछे-पीछे रामधुन गाते चल रहे थे। प्रत्येक आयु वर्ग के नर-नारी अपूर्व उत्साह एवं भक्ति भाव के साथ शोभा यात्रा में सम्मिलित थे। चंडीगढ़ की शोभा यात्रा में माननीय सुखदेव सिंह ढींढसा (पूर्व खेलमंत्री पंजाब) हरिशकांत जी (आई.जी.) रमेश अग्रवाल (चेयरमैन दैनिक भास्कर) रूपदास जी (राज्य मंत्री हिमाचल प्रदेश) तथा भारतीय प्रशासनिक सेवा के पी.एस. सिन्हा उपस्थित थे। मुख्य आयोजन सनातन धर्म मंदिर में हुआ।

५ जून को राम भाव भक्ति प्रसार यात्रा विभिन्न देवियों के दर्शन करने के बाद १४ जून को शिमला के राम मंदिर पहुँची वहाँ सप्तशताब्दी महोत्सव का पाँच दिवसीय भव्य आयोजन सम्पन्न हुआ। पर्यटन के लिए मशहूर शिमला में भक्तों ने उनका भावपूर्ण स्वागत किया। १८ जून को आयोजित समापनोत्सव की अध्यक्षता हिमाचल प्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री श्री वीरभद्र सिंह ने की। मुख्य अतिथि हिन्दी-संस्कृत के अधीत विद्वान आचार्य श्री विष्णुकांत शास्त्री थे। उनके द्वारा पाँच विशिष्ट लोगों का सम्मान किया गया।

इस पूरे महोत्सव में महाराजश्री की सामाना के भक्तों पर विशेष कृपा बरस रही थी। उनके आशीर्वाद से प्रेरित होकर सप्तशताब्दी महोत्सव समिति सामाना का सोनीपत से लेकर शिमला तक विभिन्न समारोहों को सफल बनाने में विशेष योगदान रहा। अपरिचित और नयी जगह होते हुए भी समिति के सदस्यों ने लोगों को आयोजन करने के लिए खूब प्रेरित किया। धर्मशालाएँ बुक करवाई गईं। परिणामस्वरूप पूरी यात्रा के दौरान कहीं भी कठिनाई महसूस नहीं हुई। महाराजश्री के सान्निध्य में सम्पन्न हुए इस राम भक्ति भाव प्रसार यात्रा ने लोगों के मन में निश्चित रूप से रामानन्द जी के आदर्शों को चरितार्थ करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

●

जगद्गुरु रामानन्दाचार्य सप्तशताब्दी समारोह - चण्डीगढ़

(दि. ३१.०५.२००० से ०४.०६.२०००)

डॉ. निधीन्द्र शर्मा

सगुण एवं निर्गुण रामभक्ति धाराओं के गंगोत्री स्वरूप जगद्गुरु रामानंदाचार्य जी का सप्तशताब्दी जयन्ती समारोह उनके साधनातीर्थ श्रीमठ पंचगंगा, काशी की ओर से चण्डीगढ़ में सम्पन्न हुआ। जगद्गुरु रामानंदाचार्य जी के प्रादुर्भाव की सातवीं शती २७ जनवरी २००० ई. गुरुवार को आरम्भ हुई। स्वामी जी ने मानवमात्र के लिए रामभक्ति धारा की अपूर्व चेतना का प्रवर्तन करके बिना किसी भेदभाव के ईश्वराराधन, पूजन एवं दर्शन के महापथ का उद्घाटन किया और रामभक्ति गंगा के गोमुख के रूप में 'श्रीमठ' को मध्यकालीन प्रतिष्ठान बना दिया।

रामानंदाचार्य जी की शिष्य परम्परा में सन्त कबीर, सन्त रविदास, सन्त धन्ना, सन्तसेन आदि निर्गुण पंथियों और अनन्तानन्द नरहर्यानन्द, महाराज पीपा, गोस्वामी तुलसीदास और मीराबाई सहित रामभक्ति के सगुण पंथियों की लम्बी शृंखला है। उनकी भक्ति के प्रति निष्ठा किसी भी बंधन को स्वीकार नहीं करती है। उनका प्रचलित वाक्य इस प्रकार प्राप्त होता है–

जात पाँत पूछै नहिं कोई
हरि को भजै सो हरि का होई।

उक्त महामंत्र देने वाले स्वामी रामानन्द जी ने भगवत्प्राप्ति के लिए परम्परागत अधिकारी भेद को अस्वीकृत करते हुए "सर्वे प्रपत्तेरधिकारिणो मताः" कह कर भगवत्प्राप्ति का मार्ग मानव मात्र के लिए खोल दिया। इस परिप्रेक्ष्य में देश के विभिन्न अंचलों एवं प्रमुख नगरों में वर्ष पर्यन्त महोत्सवों का आयोजन हुआ। सम्पूर्ण महोत्सव जगद्गुरु रामानंदाचार्य श्री रामनरेशाचार्य जी महाराज के सान्निध्य में सम्पन्न हुआ।

उक्त सन्दर्भ में चण्डीगढ़ में अनेक कार्यक्रमों का आयोजन हुआ। प्रातः ७ से ९.३० तक श्री रामलला जी का वैदिक विधि से षोडशोपचार पूजन और श्री भरत जी के आराधन रीति से श्री रामचरण पादुका का पूजन सम्पन्न होता रहता है। इसी क्रम में श्रीराम जी के एक हजार नामों से उनको एक हजार वस्त्रों का समर्पण एवं श्री रामयज्ञ

का कार्यक्रम क्रियान्वित हुआ। रात्रि ६.३० से ९.०० तक श्री रामलीला का मंचन हुआ तथा ९.०० से ११.०० तक महाराज श्री ने उपस्थित भक्तों को आध्यात्मिक प्रवचन दिया। कार्यक्रमों की शृंखला में अखण्ड श्री राम-नाम संकीर्तन, विद्वत्संगोष्ठी, छात्रों की निबन्ध एवं भाषण प्रतियोगिता, राम भाव की ओर अग्रसर महानुभावों का अभिनन्दन, स्थानीय देवों का पूजन एवं हरिजन बस्ती में कार्यक्रम सम्पन्न हुए। साथ ही ३१.५.२००० बुधवार सायं ५.३० बजे शोभा यात्रा लाजपत राम भवन से प्रारम्भ होकर श्री सनातन धर्म मन्दिर में सम्पन्न हुई।

विद्वत्संगोष्ठी

आद्य जगद्गुरु रामानंदाचार्य जी के सात सौवीं जयन्ती समारोह के उपलक्ष्य में जगद्गुरु रामनरेशाचार्य जी महाराज (श्रीमठ काशी) रामभक्ति के प्रचार तथा भारतीय संस्कृति के प्रसार के लिए सम्पूर्ण भारत की यात्रा करते हुए दि. ३१.५.२००० से ४.६.२००० तक श्री सनातन धर्म मंदिर, चण्डीगढ़ में विराजमान हुए। इस उपलक्ष्य में जगद्गुरु श्रीरामनरेशाचार्य जी के संरक्षण में दिनांक ३.६.२०००, शनिवार प्रातः १०.०० बजे गाँधी स्मारक भवन, चण्डीगढ़ में एक विद्वत्संगोष्ठी का आयोजन हुआ। इसमें सम्पूर्ण देश से उपस्थित अनेक विद्वानों ने अपने विचार प्रस्तुत किए।

ईश्वर सेवा ही वस्तुतः समाज सेवा है

ईश्वराराधन ही वस्तुतः सच्ची समाज सेवा है। उक्त कथन ज.गु. रामनरेशाचार्य ने चण्डीगढ़ के सनातन धर्म मंदिर में व्यक्त किया। प्रवचन क्रम में महाराज श्री ने आगे कहा कि आद्य रामानंदाचार्य, रामावतार श्रीसम्प्रदायाचार्य, कबीर, रविदास आदि सिद्ध सन्तों के दीक्षा एवं शिक्षा गुरु हैं। स्वामी जी मध्यकालीन सगुण-निर्गुण रामभक्ति परम्परा के परम प्रसारक एवं विचारक सनातन धर्म की परमोदारता के सर्वश्रेष्ठ उद्भावक सन्त परम्परा के महानायक, स्त्री शिक्षा एवं राष्ट्र भाषा के जीवनदाता थे। उनकी साधना भूमि श्रीमठ पंचगंगा काशी से आये हुए रामानंदाचार्य ने एक विशाल धर्म सभा को सम्बोधित करते हुए कहा कि संसार में सेवा का एक व्यापक स्वरूप विद्यमान है। प्रत्येक जीवन में किसी न किसी रूप में सेवा स्थित है। दूसरों के दुःख के निवारण का प्रयास ही सेवा है। सनातन धर्म के सिद्धांत के अनुसार जीव ईश्वर का अंश है। ईश्वर सेवा सागर है, तो जीव में सेवा की भावना क्यों न हो? संसार में हमें विभिन्न प्रकार के समाज सेवियों के दर्शन होते हैं। व्यक्ति से लेकर समष्टि तक सेवा एवं सेवकों का असंख्य रूप है, लेकिन ईश्वर सेवा (ईश्वर भजन) की समानता किसी सेवा को भी प्राप्त नहीं है। ईश्वरीय भावना से अलग होकर की जाने वाली सेवा आसुरी सम्पत्ति अर्थात् लंका का ही निर्माण करती है। यही अयोध्या एवं लंका की सेवा

में भेद है। दोनों ही नगरों के लोग सेवक थे। सुप्रसिद्ध सम्राट् अकबर की सेवा और सन्त तुलसीदास जी की सेवा इस प्रसंग में उल्लेखनीय है। आज अकबर की सेवा महत्वहीन होकर केवल इतिहास के पृष्ठों में अंकित है, लेकिन गोस्वामी तुलसीदास की ईश्वरीय सेवा आज दुनिया की सर्वश्रेष्ठ मानवता की सेवा के रूप में वर्तमान है। दिनोदिन उसका क्षेत्र आकर्षक एवं व्यापक हो रहा है, वह दिन दूर नहीं जब सम्पूर्ण संसार के सूर्य क समान प्रकाशक, प्रेरक तथा शक्ति का स्रोत्र रामचरितमानस होगा। गोस्वी तुलसीदास जी रामानंदाचार्य की परंपरा के अनूठे रत्न थे।

चर्चा को विस्तार देते हुए रामनरेशाचार्य जी ने कहा कि जिस सेवा में कर्तृत्व का अभिमान एवं कल की आकांक्षा है, वह सेवा न सेवक को धन्य बनाएगी न सेव्य को ही। आज तथाकथित सेवक ही जंगल राज्य संपादन कर रहे हैं, जिससे कोई परिचित नहीं है। वर्तमान समय में सर्वश्रेष्ठ समाज सेवी के रूप में महात्मा गाँधी का नाम विस्तृत नहीं किया जा सकता जो वस्तुतः ईश्वर सेवक ही थे। सेवा केवल वस्तुओं से ही नहीं होती, दूसरों के दुःखों को दूर करने के लिए हमारे मन में जो इच्छा जागती है, जो भाव प्रकट होते हैं, उन्हें भी सेवा का ही दर्जा प्राप्त है। पीड़ा के हिमालय के सामने हमारे पास निवारण की सामग्री राई के बराबर भी नहीं है। इसीलिए जो लोग अपने जीवन को लौकिक तथा पारलौकिक दृष्टि से सार्थक करना चाहते हैं, उन्हें ईश्वर सेवा ही करनी चाहिए अर्थात् ईश्वर की भँक्ति करनी चाहिए।

इस अवसर पर पंजाब के खाद्य एवं आपूर्ति मंत्री श्री मदन मोहन मित्तल मुख्य अतिथि के रूप में तथा चण्डीगढ़ के भूतपूर्व सांसद श्री सत्यपाल जैन विशिष्ट अतिथि के रूप में विद्यमान थे। श्री मदन मोहन मित्तल ने महाराज श्री की अभिनन्दन करते हुए कहा कि भारत यदि भारत है तो सन्तों के अथक प्रयास से है। श्री सत्यपाल जैन ने कहा कि देश में कोई भी आए, वह अस्थिर भी हो सकता है किन्तु इस देश को स्थिर रखने वाली शक्ति केवल संत परम्परा में निहित है। इस अवसर पर महाराज श्री के करकमलों से मुख्य अतिथि एवं विशिष्ट अतिथि को समिति की ओर से एक चाँदी का सिक्का, डायरी, मूल मंत्र का एक कैसेट, जगद्गुरु रामानंदाचार्य का विशिष्ट चित्र तथा रामनामी दुपट्टा भेंट किया गया। सर्वप्रथम समिति के सभाधिपति प्रो. वेदप्रकाश उपाध्याय, अध्यक्ष श्री सुरेश मित्तल, सचिव डॉ. निधिन्द्र प्रसाद शर्मा तथा उपसचिव श्री अजय महेश गुप्ता ने अतिथियों का स्वागत किया।

इससे पूर्व जगद्गुरु श्रीरामनेशाचार्य के अभिनन्दन में एक विशाल शोभा यात्रा निकाली गई। इसमें चण्डीगढ़ के भूतपूर्व सासंद श्री सत्यपाल जैन, भास्कर समूह के चेयरमैन श्री रमेश अग्रवाल, सामाजिक कार्यकर्ता श्री ओंकार चन्द्र तथा कई अन्य गणमान्य नागरिकों ने भाग लिया।

●

शिमला में रामानन्दाचार्य सप्तशती महोत्सव

संपादक

प्रकृति के मनोरम आंचल के बीच हिमालय पर्वतमाला में स्थित हिमांचल प्रदेश की राजधानी शिमला में जगद्गुरु रामानन्दाचार्य सप्तशताब्दी महोत्सव का पाँच दिवसीय भव्य आयोजन १४ से १८ जून २००० ई. के मध्य सम्पन्न हुआ। पर्यटन के लिये प्रसिद्ध इस नगरी में जगद्गुरु रामानन्दाचार्य स्वामी रामनरेशाचार्य जी की सप्तशताब्दी यात्रा १४ जून की संध्या को पहुँची। भक्तों ने उनका भावपूर्ण स्वागत किया। उन्हें समारोह स्थल 'राम मंदिर' में ठहराया गया, जहाँ दूसरे दिन से सप्तशताब्दी महोत्सव की धार्मिक प्रवृत्तियों, अनुष्ठानों एवं उत्सवों की शृंखला आरम्भ होकर १८ जून को आयोजित उस समापनोत्सव तक चली, जिसकी अध्यक्षता हिमाचल प्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री श्री वीरभद्र सिंह ने की और जिसके मुख्य अतिथि राष्ट्र की प्रतिष्ठित विभूति राज्यपाल श्री विष्णुकान्त शास्त्री थे।

समापन समारोह को अपने विद्वतापूर्ण सम्बोधन में महामहिम राज्यपाल श्री विष्णुकान्त शास्त्री ने स्वामी रामानन्द जी के ऐतिहासिक योगदान एवं उनकी प्रासंगिकता का प्रतिपादन करते हुए कहा कि रामानन्दाचार्य ने देश को एक सूत्र में बाँधा। उन्होंने स्वामी रामानन्द के प्रति अपनी श्रद्धा व्यक्त करते हुए कहा कि उन्होंने देश की भीतरी शक्ति को जाग्रत करने का महान कार्य करते हुए देश को एकता के सूत्र में बाँधा। उन्होंने कहा कि स्वामी रामानन्द ने भक्ति तथा शरणागति के अधिकार को सभी व्यक्तियों के लिए सर्वसुलभ बनाने का कार्य किया तथा बिना किसी भेदभाव के सभी वर्गों के लोगों को अपनी परम्परा में ससम्मान शामिल किया। उन्होंने राम के माध्यम से राम की प्राप्ति का मार्ग प्रशस्त किया। स्वामी रामानन्द ने राम का होकर जीने की परम्परा जगाई। माननीय श्री शास्त्री ने कहा कि अकिंचनता और अन्यता का भाव ही राम भक्ति की सही निशानी है। अहम् और अहंकार के विसर्जन तथा निसाधन होने की स्थिति ही राम को साधन बना सकती है। उन्होंने भक्ति को परिभाषित करते हुए कहा कि भक्ति कर्ता निरपेक्ष, क्रिया निरपेक्ष तथा उद्देश्य सापेक्ष है। उन्होंने कहा कि राम भक्त होने के लिए शक्ति, दृढ़ता तथा प्राणवत्ता के साथ-साथ लोक मंगल व लोक कल्याण के प्रति समर्पण भाव होना अत्यंत आवश्यक है। उन्होंने लोगों से जनकल्याण के प्रति समर्पित होने का आह्वान भी किया।

महामहिम राज्यपाल ने रामभक्ति और उसकी महिमा का प्रतिपादन करते हुए कहा कि रामजी के चरणों में भक्ति है, प्रभु का सान्निध्य है। प्रभु के शरणागत होना बेहद जरूरी है। प्रभु की पूजा करते हुए हमेशा यही कहें कि मेरे पास न कर्म, न भक्ति, न धर्म है, मेरे पास एकमात्र श्रीराम हैं। भक्ति भाव निरपेक्ष है, यह प्रभु के चरणों में समर्पण माँगती है।

स्थानीय श्रीराम मंदिर में जगद्गुरु रामानन्दाचार्य सप्तशताबदी समारोह के समापन अवसर पर प्रदेश के राज्यपाल विष्णुकान्त शास्त्री ने यह विचार व्यक्त किया। उन्होंने कहा कि रामभक्त का जीवन तो लोकहित में समर्पित होता है। इस मौके पर स्वामी रामनरेशाचार्य ने अपने उपदेश में कहा कि धर्म केवल वृद्धों के लिए ही नहीं बल्कि यह सबके लिए जरूरी है। उन्होंने कहा कि हमारे देश में विचारों की पूरी स्वतंत्रता है, परन्तु आचरण में अभी भी परतंत्रता है। आज हमारे देश का स्तर विश्वगुरु का होना चाहिए, क्योंकि भारत ही वास्तव में धर्म भूमि है। सनातन धर्म अन्य सभी धर्मों का मूल है। मनुष्य को धर्मानुसार अपना जीवन व्यतीत करना चाहिए और धर्म के मार्ग पर चलते हुए सदैव कर्मशील रहना चाहिए।

सम्पूर्ण समारोह जगद्गुरु रामानन्दाचार्य स्वामी रामनरेशाचार्य के सान्निध्य में सम्पन्न हुआ। समारोह को अपने आध्यात्मिक प्रेरणामय उद्बोधन में जगद्गुरु स्वामी रामनरेशाचार्य ने धर्म की व्याख्या करते हुए उसे लोकहित और लोकमंगल का संबल बताया। उन्होंने ईश्वर तथा आचार्यों को ज्ञान तथा परमानन्द का स्वरूप बताते हुए कहा कि वह लोगों को मांगलिक कार्यों के लिए प्रेरित करते हुए उनका उद्धार करते हैं।

स्वामी रामनरेशाचार्य आज यहाँ जगद्गुरु रामानन्दाचार्य सप्त शताब्दी समारोह क उपलक्ष्य में श्री राममंदिर में राष्ट्र निर्माण में संतों का योगदान विषय पर आयोजित गोष्ठी को सम्बोधित करते हुए कहा कि जीवन की सर्वश्रेष्ठ उपलब्धि का साधन धर्म ही है। परमानंद स्वरूप से साक्षात्कार को जीवन का लक्ष्य बताया। उन्होंने ईश्वर तथा आचार्यों को ज्ञान तथा परमानन्द स्वरूप बताते हुए कहा कि ये लोगों को मांगलिक कार्यों के लिए प्रेरित करते हैं। उन्होंने कहा कि सम्पूर्ण मानवता के लिए धर्म, ज्ञान भक्ति और शरणागति की जरूरत है। उन्होंने मांगलिक भावों के प्रसार की आवश्यकता पर जोर देते हुए स्वामी रामानन्द के संदेश को आत्मसात करने का आह्वान किया।

समारोह की अध्यक्षता करते हुए कांग्रेस विधायक दल के नेता व पूर्व मुख्यमंत्री वीरभद्र सिंह ने कहा कि देश की सभ्यता और संस्कृति को आकार देने में स्वामी रामानन्द का महत्वपूर्ण स्थान है। उन्होंने जातिवाद तथा धर्मान्धता के अंधकार को दूर करते हुए देशवासियों को एकता के सूत्र में बाँधा। उन्होंने कहा कि स्वामी रामानन्द ने देश का ही नहीं, मानवता का भी कल्याण किया।

समारोह के स्वागताध्यक्ष और हिमाचल प्रदेश के शहरी विकास राज्यमंत्री रूपदास कश्यप ने अतिथियों का स्वागत करते हुए स्वामी रामानन्द के प्रति अपनी आस्था व श्रद्धा व्यक्त की। प्रो. ब्रजेन्द्र मिश्र व श्रीमती विद्या शारदा ने भी इस अवसर पर विचार रखे।

रामानन्दाचार्य सप्त शताब्दी महोत्सव में प्रत्येक नगरों की परम्परा के अनुसार शिमला में भी विभिन्न क्षेत्रों के पाँच विशिष्ट प्रतिष्ठा प्राप्त लोगों का सम्मान किया गया। महामहिम राज्यपाल के माध्यम से उक्त मौके पर शिमला के चार जाने-माने व्यक्तियों को सम्मानित भी किया गया। इनमें शिक्षक नरसिंह दास सिंगला, विश्वहिन्दू-परिषद् के अध्यक्ष देवराज सूद, राम नाम तथा राम सेवा से जुड़े श्री संकटमोचन मन्दिर के वरिष्ठ उपप्रधान आर.एस. काशिब तथा प्रसिद्ध व्यापारी रतिराम शर्मा को सम्मानित किया गया। समारोह में सूद सभा शिमला की ओर से प्रधान जसवंत राम, संयुक्त सचिव नवीन सूद, विजय सूद, महामहिम राज्यपाल विष्णुकांत शास्त्री, वीरभद्र सिंह और रूपदास कश्यप को स्मृति चिह्न प्रदान किया गया।

गोवर्धनपीठ पुरी में स्वामी रामानन्द सप्तशती आयोजन

डॉ. ओम प्रकाश सिंह

भगवान् जगन्नाथ की पवित्र धरती पुरी (उड़ीसा) में लगभग सात सौ वर्षों बाद पुनः ज.गु. स्वामी रामानन्द जी की स्मृतियाँ ताजा हो उठीं। सात सौ वर्ष पूर्व स्वामी रामानन्द जी, संत कबीर, श्री पीपा नरेश एवं संत रैदास आदि शिष्यों के साथ पुरी पधारे थे। संत कबीरदास की स्मृति का चौरा (स्थान) आज भी यहाँ विद्यमान है।

ज.गु. स्वामी रामानन्दजी की सात सौवीं जयन्ती के अवसर पर वर्ष पर्यन्त चलने वाले राष्ट्रव्यापी कार्यक्रमों की कड़ी में सम्पन्न पुरी की यह यात्रा काफी महत्त्वपूर्ण भी रही। इस यात्रा में मार्गदर्शन एवं संरक्षण ज.गु. रामानन्दाचार्य स्वामी रामनरेशाचार्यजी का रहा। पुरी यात्रा का सुख स्वयं में अलौकिक है। भगवान् जगन्नाथ के चरणों को छूने को आतुर समुद्र की सुन्दर आभा और भगवान् के दर्शन का परम प्रसाद स्वतः ही भक्तों के मन को मोह लेता है। उसमें भी परमानन्द देने वाला 'रथयात्रा' का पर्व और जगद्गुरु शंकराचार्य की गोवर्धनपीठ के पीठाधीश्वर शंकराचार्य स्वामी निश्चलानन्द जी का सहज स्नेह युक्त आतिथ्य परम आनन्ददायक रहा।

गोवर्धन पीठाधीश्वर शंकराचार्य जी के निमंत्रण पर शिष्यों के साथ जब स्वामी रामनरेशाचार्य जी ने पुरी में प्रवेश किया तो उस समय की आगवानी एवं स्वागत का दृश्य मनोहारी था। लेकिन इसी के साथ-साथ सबको प्रतीक्षा थी भगवान् जगन्नाथ के रथयात्रा की। अन्ततः वह भी सुखद क्षण आ ही गया। गोवर्धनपीठ से शंकराचार्य स्वामी निश्चलानन्द जी और रामानन्दाचार्य स्वामी रामनरेशाचार्य जी साधु एवं शिष्य मंडली के साथ भगवान् जगन्नाथ जी की रथयात्रा में सम्मिलित होने के लिए चल पड़े। आदित्य वाहिनी के स्वयंसेवकों और अपूर्व प्रशासनिक सुरक्षा के बीच यह समुदाय भगवान् जगन्नाथ जी की रथयात्रा स्थल पर पहुँचा। तीन विशाल रथों पर क्रमशः भगवान् जगन्नाथ, प्रभु बलभद्र एवं देवी सुभद्रा विराजमान थीं। पुरी की परम्परा के अनुसार पुरी पीठाधीश्वर जगद्गुरु शंकराचार्य जी और जगद्गुरु रामानन्दाचार्य जी ने तीनों रथों पर जाकर भगवान् जगन्नाथ, प्रभु बलभद्र एवं देवी सुभद्रा का पूजन-अर्चन किया। इसके उपरान्त भक्तजनों के साथ दोनों आचार्यों ने तीनों रथों की परिक्रमा की। पुरी की रथयात्रा में यह पहला अवसर था, जबकि शंकराचार्य और रामानन्दाचार्य ने एक साथ पूजन-अर्चन एवं परिक्रमा की।

पुरी यात्रा के इस पवित्र अवसर पर अखिल भारतीय जगद्गुरु रामानन्दाचार्य सप्तशताब्दी महोत्सव समिति की ओर से पुरी में संत-सम्मेलन, दर्शन, संकीर्तन, वैष्णवाराधन के विविध कार्यक्रम भी आयोजित हुए। देश के विभिन्न धर्मस्थलों एवं अनेक नगरों में आयोजित मनस्वी सम्मान की कड़ी में पुरी में सम्पन्न मनस्वी सम्मान समारोह इस यात्रा का मुख्य आकर्षण था। सप्तशताब्दी महोत्सव समिति की ओर से स्वामी रामनरेशाचार्य जी ने अर्थ और चरित्र शुचिता वाले संत, विद्वान्, राजनेता, उद्योगपति, समाजसेवी एवं महिला सम्मान की कड़ी में सर्वश्री गौरी प्रसाद रथ, लक्ष्मीकान्त दास, मायाधर जेना, नन्दकिशोर केजरीवाल, नीमाई चरण धतुआई एवं श्रीमती प्रतिमा मिश्र को स्वामी रामानन्द स्मृति चिह्न, नारिकेल एवं अंगवस्त्रम् से सम्मानित किया।

मनस्वी सम्मान समारोह में पुरी पीठाधीश्वर शंकराचार्य स्वामी निश्चलानन्दजी ने अपने आशीवर्चन में आदिवासियों एवं समाज के पीड़ित मनुष्यों के उत्थान के लिए कार्य करने हेतु लोगों का आवाहन किया। उन्होंने कहा कि हिन्दू समाज में नकली धर्मगुरुओं की बाढ़ से परम्परा प्रभावित हुई है। इसे रोकना आवश्यक है। उन्होंने कहा कि किस प्रकार भगवान् श्रीराम एवं भगवान् शिव में परस्पर अनन्यता है, उसी प्रकार पुरी पीठ के शंकराचार्य और श्रीमठ के पीठाधीश्वर रामानन्दाचार्य अब उसी अनन्य भाव से भारत में सनातन धर्म के उत्थान के लिए कार्य करेंगे। इस मिलन से सनातन धर्म एवं भारतीय समाज को नई दिशा मिलेगी और भारत पुनः अपने विश्वगुरु के सम्मान को प्राप्त करेगा।

मनस्वी सम्मान में दिये अपने आशीर्वचन में जगद्गुरु रामानन्दाचार्य स्वामी रामनरेशाचार्य जी ने कहा कि आज विश्व में प्राणियों को सहज मुक्ति के लिए 'श्रीराम' नाम के महामन्त्र के अतिरिक्त अन्य सुगम मार्ग नहीं है। 'राम' नाम के तारक मंत्र के बल पर ही भगवान् शिव काशी में मरने वालों को मुक्ति देते हैं। कलियुग में 'राम' नाम ही मुक्ति का महामंत्र है। इसी महामंत्र का पथ स्वामी रामानन्द जी ने लोगों को दिखाया। हम उन्हीं के दिखाये रास्ते पर चल कर शांति और मुक्ति को प्राप्त कर सकते हैं। यह यात्रा उसी स्मृति को जगाने की एक कड़ी है।

पुरी में चल जगन्नाथ के रूप में प्रतिष्ठित पुरी महाराज गणपति दिव्य सिंह देव जी की उपस्थिति महत्वपूर्ण रही। उन्होंने कहा कि वर्तमान में प्राणियों का ध्यान अध्यात्म और मुक्ति से हट गया है। इसी कारण चारों ओर अशांति और अनर्थ बढ़ रहा है। मनुष्य अपने कार्यों से स्वयं विनाश की ओर बढ़ रहा है। स्वयं की चिंता सबको है, परन्तु देश और समाज की चिंता किसी को नहीं है। राजनीति, समाज, शिक्षा आदि में निरंतर गिरावट आ रही है। इस विषम स्थिति में मुक्ति का मार्ग भगवान् जगन्नाथ ही

दिखा सकते हैं। इस कार्यक्रम में उड़ीसा के श्रम एवं कल्याण मंत्री श्री विन्दुधर कुँवर ने भी भाग लिया।

गोवर्धन पीठ में हुए विभिन्न कार्यक्रमों के संयोजन में गोवर्धन पीठ शंकराचार्य के निजी सचिव श्री राजीव, गोवर्धन पीठ के मुख्य प्रशासक श्री गंगाधर मिश्र एवं आदित्य वाहिनी के सचिव श्री शरत जयसिंह की भूमिका प्रमुख रही।

पुरी यात्रा में, अखिल भारतीय जगद्गुरु रामानन्दाचार्य सप्तशताब्दी महोत्सव समिति द्वारा निर्धारित कार्यक्रमों के संयोजन में सप्तशताब्दी महोत्सव समिति के स्वागताध्यक्ष पं. लोकपति त्रिपाठी, श्रीमठ के सचिव श्रीदयासिन्धु शर्मा, डॉ. सतीश कुमार, श्रीमती उर्मिला जामदार आदि की भूमिका प्रमुख रही। देश के विभिन्न भागों से बड़ी संख्या में पधारे संतजनों एवं भक्तजनों के कारण यह यात्रा और भी अधिक आकर्षक रही।

●

सप्तशताब्दी महोत्सव जयपुर : स्फूर्ति एवं प्रेरणा का स्रोत

डॉ. सतीश कुमार

जयपुर में २१ से २७ अगस्त २००० ई. के बीच सम्पन्न सप्त दिवसीय जगद्गुरु रामानन्दाचार्य सप्तशताब्दी समारोह वर्ष पर्यन्त चलने वाली राष्ट्रव्यापी महोत्सव यात्रा के क्रम में एक गौरवशाली मानक था। जयपुर में महोत्सव के आयोजन को लेकर व्यवस्थापकीय चुनौतियों की दृष्टि से ऊहापोह की स्थितियाँ पहले अनुभव की जा रही थीं। दूसरी ओर रामानन्दाचार्य सप्तशताबदी यात्रा में सड़क दुर्घटना से आये दुर्भाग्यपूर्ण व्यवधान और उसके क़ारण मुक्ति एवं शांति यज्ञ अनुष्ठानादि के आपद्धर्म को पूर्ण कर जब सप्तशताब्दी यात्रा पुनर्नियोजित हुई तो उस बोझिल मन की पृष्ठिभूमि में जयपुर पहला पड़ाव था। इन सब बातों के बावजूद जयपुर का महोत्सव अविस्मरणीय स्वरूप एवं सफलता प्राप्त कर 'श्रीमठ' के इस ऐतिहासिक राष्ट्रीय महाभियान के लिये नव स्फूर्तिदायक संजीवनी साबित हुआ। निश्चय ही इसका श्रेय जहाँ अखिल भारतीय जगद्गुरु रामानन्दाचार्य सप्तशताब्दी महोत्सव समिति के संरक्षक जयपुर की आयोजन समिति के अध्यक्ष, राजस्थान प्रदेश के मुख्यमंत्री माननीय श्री अशोक गहलोत की प्रेरणा तथा उनके वरदहस्त को प्राप्त है, वहीं इसके पीछे स्थानीय आयोजन समिति के कार्यकारी अध्यक्ष श्री ओम प्रकाश मोदी, उपाध्यक्ष श्री सत्यनारायण अग्रवाल, कोषाध्यक्ष श्री प्रकाश चन्द्र पोरवाल तथा इन सभी को गूँथने वाले सचिव श्री भरत अग्रवाल सहित सभी संलग्न कार्यकर्ताओं के संकल्प एवं लगनपूर्ण योगदान ने सफलता को सहज बनाया। महाराजश्री के आदेश पर वाराणसी से जाकर इन लोगों के साथ कार्य का सौभाग्य मुझे और डॉ. जे.पी. राय को भी प्राप्त हुआ।

जयपुर में जगद्गुरु रामानन्दाचार्य स्वामी रामनरेशाचार्य जी २१ अगस्त की सन्ध्या को विमान द्वारा वाराणसी से चलकर जयपुर पहुँचे। जयपुर हवाई अड्डे पर आयोजन समिति के सदस्यों और भक्तजनों ने भव्य स्वागत किया और गाड़ियों के लम्बे क़ाफिले के साथ एक शानदार शोभायात्रा में महाराजश्री नगर के टोंक रोड स्थित गणपति काम्पलेक्स पहुँचे, जहाँ श्री ओ.पी. मोदी के अतिथि गृह में उनके विश्राम की व्यवस्था आयोजन समिति ने की थी। मार्ग में कई स्थलों पर महाराजश्री का स्वागत

करने वालों ने आरती उतारी।

महोत्सव का विधिवत् शुभारम्भ २२ अगस्त को प्रातः आठ बजे भव्य रामानन्दाचार्य सप्तशताब्दी शोभायात्रा से हुआ। एम. आई. रोड स्थित रामलीला मैदान से शोभायात्रा प्रारम्भ हुई। यात्रा में ११०० महिलायें कलश लेकर चल रही थीं। भक्तों का सैलाब था। आगे सुसज्जित ऊँट, हाथी और घोड़े भी थे। सुसज्जित वाहनों पर कीर्तन मण्डलियाँ सवार थीं। मार्ग में प्रसाद वितरण भी चल रहा था। भीड़ के नियन्त्रण हेतु जिला प्रशासन ने सुरक्षा के समुचित बन्दोबस्त किए थे। स्वामी रामनरेशाचार्य जी के पहुँचते ही पहले से सुसज्जित शोभायात्रा ने पवित्र गोविन्द देव जी मन्दिर से सटे जयनिवास उद्यान की ओर प्रस्थान किया। मार्ग में दर्जनों स्थलों पर स्वामी रामनरेशाचार्य जी की आरती भक्तों द्वारा उतारी गयी। पुराने जयपुर की प्राचीन में सांगानेरी द्वार से प्रवेश करते ही अवस्थित हनुमान् मंदिर में महाराजश्री ने सविधि दर्शन-पूजन किया। उसके बाद मंथर गति से चल रही शोभायात्रा फिर आगे बढ़ी और जौहरी बाजार, हवा महल एवं जलेब चौक होते हुए गोविन्द देव जी के मन्दिर द्वार पर पहुँच कर रुकी। महाराजश्री ने प्रायः डेढ़ घंटे की शोभायात्रा के बाद गोविन्द देव जी के मन्दिर पहुँचने पर सर्वप्रथम विधिवत् दर्शन-पूजन किया। दर्शन-पूजन के उपरान्त गर्भगृह में मंदिर के पुजारी गोसाईं जी महाराज ने उनका सम्मान किया। तदुपरान्त वह एक जुलूस के रूप में मंदिर परिसर से ही होकर जयविनास उद्यान पहुँचे, जहाँ निर्मित विशालकाय वाटरप्रुफ पण्डाल में महोत्व नियोजित था। भव्य एवं विशाल मण्डल में निर्मित मंच की भी शोभा एवं उसका विराट् स्वरूप दर्शनीय था। मंच पर जगद्गुरु रामानन्दाचार्य सप्तशताब्दी महोत्सव समिति के पदाधिकारियों सर्वश्री ओ.पी. मोदी, भरत अग्रवाल, सत्य नारायण अग्रवाल, प्रकाश पोरवाल, देशराज गोयल, हेमराज जी रंगवाले, प्रवीण जी बड़े भैया, एम.एल.ए. साहब के नाम से चर्चित श्री भरत अग्रवाल के पिता श्री मोहनदास अग्रवाल आदि ने महाराजश्री का स्वागत किया। महाराजश्री का संक्षिप्त प्रवचन हुआ तदुपरान्त आरम्भ हुआ विशाल भण्डारा। दोपहर बारह बजे से आरम्भ भण्डारे का क्रम सायं पाँच बजे तक चलता रहा। मंच पर स्वागत भाषण के लिये विशिष्ट उपस्थिति भाजपा के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री रामदास अग्रवाल की थी। मंगलाचरण डॉ. जयकांत शर्मा ने किया। डॉ. ब्रह्मानन्द शुक्ल भी उपस्थित थे।

महोत्सव की विधिवत् उद्घाटन सभा सायंकाल आरम्भ हुई। सभा में महोत्सव समिति की ओर से स्वागत भाषण स्वयं मुख्यमंत्री श्री अशोक गहलोत ने किया। श्री गहलोत ने राजस्थान में भक्ति आन्दोलन एवं रामानन्द सम्प्रदाय की व्यापक रूप से विस्तृत आध्यात्मिक परम्पराओं का उल्लेख करते हुये उसके माध्यम से काशी एवं राजस्थान के आध्यात्मिक सम्बन्धों की चर्चा की। सभी के साथ उन्होंने राजस्थान की

राजधानी में जगद्गुरु रामानन्दाचार्य सप्तशताब्दी महोत्सव के भव्य आयोजन की 'श्रीमठ' पंचगंगघाटा, काशी की पहल का स्वागत करते हुये उसकी महत्ता को ऐतिहासिक बताया। सत्र के विशिष्ट अतिथि वक्ता आचार्य श्रीमारुतिनन्दन जी वागीश महाराज वृन्दावन ने इसके बाद प्रवचन किया। अन्त में जगद्गुरु स्वामी रामनरेशाचार्य जी महाराज ने अपने उद्घाटन भाषण में रामानन्दाचार्य सप्तशताब्दी महोत्सव के स्वरूप एवं प्रासंगिकता पर प्रकाश डालते हुए कहा कि स्वामी जी के विचार आज की सामाजिक एवं राष्ट्रीय चुनौतियों के समाधान का एकमात्र मार्ग है। अंत में लालबहादुर शास्त्री संस्कृत विद्यापीठ, नयी दिल्ली के डॉ. जयकान्त शर्मा ने धन्यवाद ज्ञापित किया। दोपहर में बाल कलाकारों द्वारा श्रीकृष्णलीला का मंचन किया गया। जन्माष्टमी पर्व के साथ स्वयं भगवान् श्रीगोविन्ददेव जी के परिसर में आयोजित यह लीला और श्रीरामभक्ति परम्परा के महान् प्रवर्तक जगद्गुरु रामानन्दाचार्य की सप्तशताब्दी का महोत्सव आध्यात्मिक परम्पराओं की समन्वयी चेतना की समृद्धि और उत्कर्ष का प्रतीक बन गया।

२३ अगस्त जन्माष्टमी का पर्व था। उत्तर भारत में श्रीकृष्ण के अत्यन्त प्रशस्त मंदिर परिसर में श्रीराम भक्ति की सबसे बड़ी परम्परा का समागम समन्वयी आध्यात्मिक रसधारा के वेगमय प्रवाह को इस अवसर पर और भी प्रखरता प्राप्त हुई। समारोह सायंकाल जयगोविन्द जी के मंदिर में जन्माष्टमी महोत्सव से पहले पूर्ण कर लिया गया। इस दिन समारोह को जहाँ जगद्गुरु रामानन्दाचार्य स्वामी रामनरेशाचार्य जी महाराज का रामानन्द जी के प्रपत्ति सिद्धान्त पर विद्वत्तापूर्ण उद्बोधन प्राप्त हुआ, वहीं आगरा की डॉ. निधि तैलंग की संगीतमय प्रवचन प्रस्तुति में श्रीकृष्ण लीला का मनोहारी भाव साकार हुआ। सायंकालीन सभा में राज्यपाल डॉ. अंशुमान सिंह जी के उपस्थित होने का कार्यक्रम था, लेकिन जन्माष्टमी पर्व के कारण महोत्सव का कार्यक्रम पुनर्नियोजित होने से वह नहीं आ सके। समारोह में मेयर श्रीमती निर्मला वर्मा की विशेष उपस्थिति रही।

जन्माष्टमी की रात्रि में जगद्गुरु रामानन्दाचार्य स्वामी रामनरेशाचार्य जी महाराज सन्त मण्डली एवं भक्तगण के साथ नगर के एक अन्य प्रशस्त श्रीकृष्ण मंदिर में श्रीकृष्ण जन्मोत्सव के मुख्य अतिथि के रूप में सम्मिलित हुये। मंदिर परिसर में खचाखच भरे भक्त समागम को सम्बोधित करते हुये आचार्यश्री ने कहा कि भगवान् का सर्वश्रेष्ठ एवं सर्वोत्तम प्राकट्य हृदय में होता है।

चौबीस अगस्त को राष्ट्रीय विद्वत् संगोष्ठी सम्पन्न हुई। अपराह्न २.३० से जहाँ संगोष्ठी आयोजित थी वहीं प्रातःकालीन सभा में महाराजश्री का प्रवचन हुआ। प्रातःकालीन सभा में काशी की सनातन पाण्डित्य परम्परा के यशस्वी विभूति पं. गणेश्वर शास्त्री द्रविड़, काशी विद्यापीठ के डॉ. प्रभुनाथ द्विवेदी एवं डॉ. श्रद्धानन्द तथा

नयी दिल्ली के डॉ. जयकांत शर्मा के भी वक्तव्य हुये। साथ ही नन्दोत्सव एवं रास-लीला भी सम्पन्न हुई।

विद्वत् संगोष्ठी के मुख्य वक्ता थे राजस्थान के पूर्व उपमुख्यमंत्री एवं वरिष्ठ भाजपा नेता श्री हरिशंकर भाभड़ा। उन्होंने अपने सम्बोधन में भक्ति आंदोलन की महत्वपूर्ण भूमिका रेखांकित करते हुये उसकी ऐतिहासिक भूमिका में स्वामी रामानन्दाचार्य के अन्यतम योगदान को प्रतिपादित किया। संगोष्ठी में काशी विद्यापीठ एवं नयी दिल्ली के उक्त तीनों विद्वानों के अतिरिक्त जयपुर विश्वविद्यालय एवं स्थानीय संस्थानों से जुड़े अनेकानेक विद्वानों ने व्याख्यानों के माध्यम से भक्ति आन्दोलन और स्वामी रामानन्द जी पर सारगर्भित चर्चा की।

पचीस अगस्त एवं छब्बीस अगस्त को भी प्रातःकालीन प्रवचन सभाओं में जगद्गुरु रामानन्दाचार्य स्वामी रामनरेशाचार्य एवं अतिथि विद्वज्जनों के प्रवचन हुये। श्रीमारुतिनन्दन जी महाराज का भी विशिष्ट प्रवचन तथा वृन्दावन के भक्ति संगीत गायकों के दल द्वारा भक्ति संगीत की प्रस्तुतियाँ हुईं। सायंकाल भी भव्य भजन संगीत सभा का समायोजन किया गया।

२६ अगस्त का दिन समारोहात्मक कार्यक्रमों के क्रम के समापन का दिन था। प्रतिदिन की भाँति प्रातःकालीन प्रवचन सभा के साथ आज का दिन संत समागम का दिन था। हरिद्वार से महन्थ भगवानदास जी सहित महामण्डलेश्वरों एवं सन्तों का दल महोत्सव में भाग लेने पहुँचा। स्थानीय संत भी समागम में पधारे और अपने प्रवचन से भक्त समाज को उपकृत किया। आयोजन समिति ने जगद्गुरु रामानन्दाचार्य स्वामी रामनरेशचार्य जी महाराज का अभिनन्दन और उपस्थित संत समाज का सम्मान किया। सायंकाल समारोह का समापन करने के बाद महाराजश्री ने श्री देशराज गोयल, श्री प्रकाश पोरवाल एवं श्री सत्यनारायण अग्रवाल आदि भक्तों के यहाँ पधारे।

रामानन्दाचार्य सप्तशताब्दी महोत्सव की स्थापित परम्परा के अनुसार २७ अगस्त को महोत्सव की एक प्रवचन सभा का आयोजन हरिजन बस्ती में किया गया। जयपुर के पूर्व मेयर के सुपुत्र और प्रमुख समाजसेवी श्री गोविन्द प्रकाश सैनी जी के संयोजन में नाहरगढ़ किले के नीचे चावरिया मार्ग हरिजन बस्ती में आयोजित यह सभा सही अर्थों में महोत्सव की समापन सभा थी। सभा में हरिजनों के समागम के बीच स्वामी रामनरेशाचार्य जी महाराज का भावपूर्ण स्वागत किया गया। अ.भा. सफाई मजदूर कांग्रेस राजस्थान के महामंत्री श्री कमलचंद्र चावरिया, बस्ती के सरपंच श्री गोविन्द चावरिया, श्री गिरधारी लाल जी जेदिया तथा श्री कालू राम जी ने महाराजश्री का सम्मान किया। महाराजश्री ने अपने प्रवचन में कहा कि ईश्वर का प्राकट्य सभी के हृदय में समान रूप से होता है। उन्होंने बस्ती के पाँच लोगों को रामनामा एवं श्रीमठ

का साहित्य देकर उनका सम्मान किया जिसमें एक स्त्री भी थी।

२७ अगस्त को ही सम्पूर्ण महोत्सव का समापन आयोजन समिति के कार्यकारी अध्यक्ष श्री ओ.पी. मोदी के वाटिका स्थित फार्म हाउस पर हुआ। नगर से २५ कि.मी. दूर अवस्थित वाटिका में इस अवसर पर मुख्यमंत्री श्री अशोक गहलोत सपरिवार उपस्थित हुये। राजस्थान शासन के कुछ अन्य मंत्रीगण तथा समारोह में शामिल संतगणों की भी विशिष्ट उपस्थिति थी। महाराजश्री भी समष्टि भण्डारे के साथ आयोजित इस समापन कार्यक्रम में सम्मिलित हुये। इस अवसर पर सभी अतिथियों को स्मृतिचिह्न आदि भेंटकर समारोह समिति ने उनका सम्मान किया। श्रीमोदी के पुत्रगण श्री अजय कृष्ण एवं विजय कृष्ण मोदी सहित पूरा मोदी परिवार एवं आयोजन समिति के पदाधिकारी भी मौजूद थे। सप्तदिवसीय महोत्सव समिति में कार्यकारी अध्यक्ष श्री मोदी, सचिव श्री भरत अग्रवाल, उपाध्यक्ष श्री सत्यनारायण अग्रवाल तथा कोषाध्यक्ष श्री प्रकाश पोरवाल ने असाधारण रूप से श्रमसाध्य संयोजकीय भूमिका निभायी। इन सभी के परिवार के सदस्यों के साथ श्री देशराज गोयल, प्रवीण भाई आदि की सतत सक्रियता भी उल्लेखनीय थी। जोधपुर के संत रामरतन जी, हेमराज जी आदि सहित सहायकों का एक पूरा दल सक्रिय था।

राजस्थान के मुख्यमंत्री का आयोजन समिति को पूरा आशीर्वाद, प्रोत्साहन एवं सहयोग प्राप्त था। मुख्यमंत्री ने एक दिन महाराजश्री को जहाँ अपने घर पर भावपूर्वक आमन्त्रित किया वहीं महोत्सव के बाद सचिव श्री भरत अग्रवाल के आवास पर महाराजश्री के प्रवास के दौरान विशेष रूप से मिलने गये।

जयपुर प्रवास में दर्जनों लोगों ने महाराजश्री से दीक्षा ग्रहण की जिसमें उपाध्यक्ष श्री भरत अग्रवाल भी शामिल थे। श्री प्रकाश पोरवाल के घर पर आयोजित एक पारिवारिक उत्सव में भी महाराजश्री ने भाग लिया

जयपुर के सप्त दिवसीय महोत्सव में राष्ट्रीय महोत्सव समिति के कार्यकारी अध्यक्ष श्री गोपालदास मित्तल, कोषाध्यक्ष श्री विष्णु बिन्दल एवं उनकी धर्मपत्नी श्रीमती गीता बिन्दल तथा श्रीमठ के भक्त परिवार की अग्रणी एवं माननीय सदस्या श्रीमती स्नेह जोशी की इन्दौर से तथा श्री रामधारी सिंगला एवं उनके पुत्र श्री प्रवीण सिंगला की पंचकूला-चंडीगढ़ से विशिष्ट एवं प्रेरक उपस्थिति उल्लेखनीय थी। काशी से डॉ. जे.पी. राय, डॉ. श्रद्धानन्द आदि जहाँ जयपुर की आयोजन समिति को संयोजन में सहयोग देते रहे, वहीं पं. गणेश्वर शास्त्री द्रविड़ (काशी), रामरतन जी (जोधपुर) जयकांत शर्मा (नयी दिल्ली) ने भी निरन्तर उपस्थित रहकर योगदान किया।

●

सप्तशताब्दी महोत्सव चुनार

ब्रह्मानन्द शुक्ल

अखिल भारतीय जगद्गुरु रामानन्दाचार्य सप्तशताब्दी महोत्सव के वर्षव्यापी क्रम में भगवत्पूज्यपाद अनन्तश्री विभूषित जगद्गुरु रामानन्दाचार्य स्वामी रामनरेशाचार्य जी महाराज ११.९.२००० को सायंकाल चुनार पधारे। नगर के बाहर प्रतीक्षारत गणमान्य नागरिक एवं भक्तों ने जयघोष के साथ माल्यार्पण कर स्वागत किया। विशाल जनसमूह के साथ नगर में अभूतपूर्व शोभायात्रा निकाली गयी। अनुमान से अधिक भीड़ देखकर आयोजकों में एक अद्भुत उत्साह एवं प्रसन्नता स्पष्ट रूप से प्रत्यक्ष हो रही थी।

पूज्यपाद स्वामी रामनरेशाचार्य जी ने अपने दिव्य उद्बोधन में स्वामी रामानन्दाचार्य जी के औदार्य सकल कल्याण भाव को बड़ी सहजता एवं सरलता से प्रतिपादित किया। सर्वेप्रपत्तेरधिकारिणोमताः की व्याख्या करते हुए स्वामी जी ने कहा कि ऊँच नीच, धनी गरीब, स्त्री पुरुष आदि भेदों से ऊपर उठकर अपनी वैदिक सनातन परम्परा को अक्षुण्ण रखते हुए सभी को प्रपत्ति (शरणागति) का अधिकार प्रदान करना जगद्गुरु रामानन्दाचार्य जी की विशिष्ट विशेषता रही है। स्वामी रामनरेशाचार्य जी ने रामनाम की उसी अद्भुत महिमा की गरिमामयी अमिट छाप श्रोता वर्ग के मानस पटल पर अंकित किया।

जगद्गुरु रामानन्दाचार्य सप्त शताब्दी महोत्सव समिति चुनार के श्री शिव केदार सिंह ने स्वामी जी का स्वागत करते हुए कहा कि जिस पावन धारा आदि को जगद्गुरु रामानन्दाचार्य जी ने प्रवाहित किया था उसकी आज भी आवश्यकता है तथा वर्तमान आचार्य और भी दृढ़ता से अत्यन्त उदारतापूर्वक गतिशील किये हैं। श्री शिव केदार सिंह ने इसे ऐतिहासिक यात्रा बताते हुए कहा कि यह हम लोगों का परम सौभाग्य है कि स्वामी जी कृपा करके चुनार पधारे तथा हम सबको दिव्य उपदेश दिया। स्वागताध्यक्ष श्री विजय वर्मा ने स्वागत भाषण किया तथा अनेक गणमान्य लोगों ने माल्यार्पण कर स्वागत किया।

शिक्षा क्षेत्र में श्री चन्द्रधर चतुर्वेदी समाज सेवा में श्री श्रीनाथ मिश्र एवं आनन्द प्रसाद अग्रवाल, राजनीति में श्री शिव केदार सिंह, व्यापार में श्री अनिल कुमार रस्तोगी, हरिजनों में श्री लालजी तथा महिलाओं में श्रीमती कलई देवी को सम्मान पत्र, रामनामा, साहित्य आदि प्रदान कर सम्मानित किया गया। कार्यक्रम के आरम्भ में

श्रीमती भागीरथी ट्रस्ट आदर्श संस्कृत महाविद्यालय चुनार के छात्रों ने मंगलाचरण एवं स्वागत गान किया। समिति के सचिव श्री नन्द किशोर तिवारी ने संचालन किया।

स्वामी जी महाराज के आगमन पूर्व १०.९.२००० को श्रीमती भागीरथी ट्रस्ट आदर्श संस्कृत महाविद्यालय चुनार के प्राचार्य डॉ. गणेश प्रसाद मिश्र की अध्यक्षता में ''उदारवादी हिन्दू परम्परा के प्रचारक एवं प्रसारक स्वामी रामानन्द'' विषय पर व्याख्यान प्रतियोगिता आयोजित की गयी। जिसमें राजकीय महाविद्यालय चुनार, के.बी. स्नातकोत्तर महाविद्यालय मिर्जापुर, सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी, पी. डी. एन. डी. इण्टर कालेज चुनार, जनता इ. का. वरेवा, राजकीय बालिका इ. का. चुनार, महाराणा प्रताप इ. का. रैपुरिया आदि विद्यालयों के छात्र छात्राओं ने भाग लिया। निर्णायक मण्डल में डॉ. के. भी. द्विवेदी प्रवक्ता राजकीय महाविद्यालय अदलहाट, श्री अखिलेश कुमार पाण्डेय प्रवक्ता पी. डी. एन. डी. इ. का. चुनार तथा श्री नन्द किशोर तिवारी प्रवक्ता जनता इ. कालेज वरेवा चुनार उपस्थित थे। प्रतियोगिता वरिष्ठ एवं कनिष्ठ वर्ग में सम्पन्न हुई। वरिष्ठ वर्ग में श्री कैलासपति त्रिपाठी, प्रथम, श्री श्रीधर चतुर्वेदी द्वितीय, श्री रवीश कुमार शुक्ल तृतीय रहे। कनिष्ठ वर्ग में लक्ष्मी शुक्ला प्रथम, आशीष कुमार श्रीवास्तव द्वितीय तथा अनुराधा शुक्ला ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। सभी विजेताओं को स्वामी रामनरेशाचार्य जी ने अपने करकमलों से पुरस्कार प्रदान किया तथा समिति उपाध्यक्ष श्री शिव प्रसाद को धन्यवाद प्रदान किया।

●

जगद्गुरुरामानन्दाचार्य : सप्तशताब्दी महोत्सव यात्रा हनुमना (म.प्र.)

रघुनाथ प्रसाद त्रिपाठी

परमपूज्य जगद्गुरु श्री रामनरेशाचार्य जी महाराज १२ सितम्बर को हनुमना जनकल्याण यात्रा में पधारे। जनकल्याण यात्रा का स्वागत हनुमना में श्री शुभवन्त किशोर, श्रीनाथ गुप्ता जी ने अपने हजारों साथियों के साथ किया। म.प्र. सीमा से ही रथ गाजे-बाजे, श्रीरामनाम से कीर्तन मण्डली के साथ महाराज श्री का एवं संत समाज-भक्त मण्डली का वेद उच्चारण के साथ भव्य स्वागत एवं शोभा यात्रा निकाली गई। उसमें हजारों भक्तों को अमृतवाणी सुनने का अवसर प्राप्त हुआ। सायं महाराजश्री एवं अनेक विद्वानों के प्रवचन हुए। सुबह पूजा अर्चन हवन के बाद विद्वानों का एवं बालकों, हरिजनों का सम्मान किया गया। दोपहर २ बजे यात्रा का पुनः प्रस्थान हुआ। मऊगंज - मनगवाँ में (डॉ. आर. के. शर्मा एवं लालता प्रसाद तिवारी) रामपुर में लाल बहादुर, रीवाँ में श्री सज्जन एवं मानस मण्डल के अन्य पदाधिकारियों द्वारा श्री कैलाश शंकर शर्माजी के साथ हजारों भक्तों एवं गणमान्य नागरिकों द्वारा यात्रा का स्वागत किया गया। विद्वानों की संगोष्ठी का आयोजन किया गया। हरिजन बस्ती में कार्यक्रम हुआ। दोपहर २ बजे रीवाँ से सतना हेतु यात्रा चली। रास्ते में चोरहटा, बेला, रामपुर, सज्जनपुर, माधवगढ़, हरिजन बस्ती में स्वागत हुआ।

१५ सितम्बर २००० ई. अखिल भारतीय जगद्गुरु रामानन्दाचार्य सप्त शताब्दी महोत्सव श्रीमठ पंचगंगाघाट काशी (वाराणसी) द्वारा निर्धारित कार्यक्रमानुसार जगद्गुरु रामानन्दाचार्य स्वामी रामनरेशाचार्य जी के संचालन में जन कल्याण यात्रा का आगमन सतना नगर में सायं ४.३० पर हुआ। योग विद्यालय संग्राम कालोनी के समक्ष राष्ट्रीय राजमार्ग क्रमांक ७५ में पूज्य जगद्गुरु एवं यात्रा में चल रहे सन्त समाज भक्तजनों का सतना नगर निगम के महापौर डॉ. बी. एल. यादव, जिलाधीश श्री टी. धर्माराव (आई. ए. एस.), पुलिस कप्तान श्री व्ही के सिंह (आई. पी. एस.) महोत्सव के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष पं. रघुनाथ प्रसाद त्रिपाठी महोत्सव जिला सतना के अध्यक्ष श्री समानाराम कामदार मंत्री बालकृष्ण सोमानी, विन्ध्य चेम्बर ऑफ कामर्स के अध्यक्ष श्री माधव वाधवानी, पूर्व मंत्री बृजेन्द्र नाथ पाठक, पूर्व महापौर राजाराम त्रिपाठी सहित

व्यापारी प्रतिष्ठान, सामाजिक संघों, राजनैतिक दलों के पदाधिकारियों सहित पत्रकार साथी, गायत्री परिवार की कलश लिये सैकड़ों महिलाओं सहित भारी संख्या में भक्तजनों ने माल्यार्पण कर जय-जयकार करते हुए आत्मिक स्वागत कर पूरा वातावरण राममय बना दिया। वरुण देव ने भी रिमझिम फुहार कर महाराज श्री का स्वागत किया। योग विद्यालय में कुछ समय रुककर स्वामी हरि प्रेमानंद जी के सान्निध्य में स्वामी जी का स्वागत हुआ। वक्ताओं ने अपने विचार रखे पूज्यपाद जगद्गुरु ने अपने संक्षिप्त आशीर्वचन में स्वामी रामानन्द जी का स्मरण कर जन कल्याण की कामना किया। तत्पश्चात् सुन्दर सजे हुए रथ में गुरुदेव विराजमान हुए और शोभायात्रा में नगर भ्रमण के लिए प्रस्थान किया। आगे बैण्ड पार्टी धार्मिक धुन बजाता हुआ हजारों नागरिकों के साथ जिसमें लगभग ५० वाहन भी थे शोभायात्रा में चल रहे थे। मार्ग में जगह-जगह आरती पूजन हुआ। देव मंदिरों के समक्ष विधिव आरती पूजन, महाराज श्री का अभिनन्दन कर जन कल्याण की कामना की गई। लगभग ४ घण्टा बाद यात्रा श्री झूलेलाल मंदिर में समाप्त हुई। इसी स्थान पर समस्त संत समाज के ठहरने भजन-पूजन प्रसाद की व्यवस्था थी।

१६ सितम्बर २००० ई. पूर्व निर्धारित नित्य पूजन कर्म के अन्तर्गत श्री रामचरण पादुका पूजन, अभिषेक हवन-आरती का विधिवत् कार्यक्रम प्रातः ७ बजे से ९ बजे तक महाराज श्री के द्वारा सम्पन्न हुआ। इस पूजन कार्यक्रम की सम्पूर्ण व्यवस्था श्री जे. जे. एस. रिछारिया सेवा निवृत्त अधीक्षण मंत्री एवं डॉ. भोजवानी, दशरथ लाल गुप्ता कोषाध्यक्ष के द्वारा की गयी। हवन में सैकड़ों भक्त जनों ने हिस्सा लिया। तत्पश्चात् विद्वत् समाज की गोष्ठी में महाराज श्री ने भाग लिया जिसमें डॉ. सत्येन्द्र शर्मा, के. पी. शर्मा, शीतल प्रसाद श्रीवास्तव, माधव वाधवानी, हरी प्रकाश गोस्वामी, प्रो. यू. पी. पाण्डेय सहित कई प्रबुद्धजनों से श्री रामानन्दाचार्य जी महाराज के जीवनकाल में घटित घटनाओं से आज के समाज को शिक्षा लेने उसके अनुसरण करने का संकल्प प्रतिपादित किया। अन्त में महाराज जी ने श्रीमठ की ओर से वक्ताओं को पुस्तक एवं उत्तरीय प्रदान कर आशीर्वाद दिया। पत्रकार वार्ता को सम्बोधित कर महाराज श्री ने राष्ट्रीय एकता बनाये रखने धार्मिक सहिष्णुता कायम करने जाति-पाँति के बंधन से मुक्त होकर भाईचारा निर्माण करने, सच्चरित्र बनने हेतु अपने-अपने इष्टदेव गुरुदेव का अनुसरण करने को कहा। उन्होंने जन कल्याण यात्रा के उद्देश्य एवं अब तक की उपलब्धता एवं भावी कार्यक्रमों की रूपरेखा भी बताया।

शाम ४ बजे स्थानीय हरिजन बस्ती (बजरहा टोला) में महाराज श्री पधारे जहाँ अनुसूचित जाति-जनजाति के हजारों नर-नारियों बच्चों ने कलश, आरती पूजन माल्यार्पण से उनका स्वागत किया। महाराज श्री ने उन्हें सम्बोधित करते हुए कहा कि

शबरी-निषाद ये सब आपके पूर्वज हैं जिन्हें प्रभु श्रीराम ने अपनाया। आप हिन्दू समाज के अभिन्न अंग हैं आप अपने को किसी से कम मत समझो। आप प्रभु श्रीराम के हैं और प्रभु श्रीराम आपके हैं। आयोजन प्रसाद वितरण के साथ सम्पन्न हुआ। इस कार्यक्रम को डॉ. पुरुषोत्तम पटेल, वीरन प्रजापति दुलीचंद वंशकार आदि ने पूर्ण सफल बनाया। सायं ७ बजे से स्थानीय टाउनहाल में महाराज श्री का नागरिक समारोह में किया गया मंच सज्जा आर्कीटेक्ट इंजीनियर अरविन्द सिंह परिहार एवं सहयोगियों ने की थी। इस अभिनन्दन समारोह में कलेक्टर एस. पी. महापौर, नगर निगम अध्यक्ष सहित हजारों जन उपस्थित रहे। जगद्गुरु रामानन्दाचार्य जी से संबंधित निबन्ध प्रतियोगिता का आयोजन पूर्व में विद्यालयों में किया गया था जिसका प्रभार प्रो. यू. पी. पाण्डेय एवं डॉ. सत्येन्द्र शर्मा के ऊपर था। श्रेष्ठ स्थान प्राप्त छात्रों को महाराज श्री द्वारा पुरस्कृत किया गया। इस अवसर पर श्रीमठ की परम्परा के अनुसार जिले में विभिन्न श्रेणी के नागरिकों द्वारा जो प्रशंसनीय कार्य किये गये हैं उन्हें महाराज श्री के द्वारा सम्मानित किया गया। इनमें डॉ. (श्रीमती) विमला शुक्ला, श्री शिव प्रसाद केशरवानी, पं. विद्याधर शास्त्री मुख्य थे। नागरिक अभिनन्दन पत्र का वाचन पं. रघुनाथ प्रसाद त्रिपाठी ने किया। इस अवसर पर कलेक्टर एस. पी. महापौर सहित पं. बृजेन्द्र नाथ पाठक, राजाराम त्रिपाठी, शंकर प्रसाद ताम्रकार, के. पी. शर्मा, समाना राम कामदार सहित अन्य गणमान्य जनों ने महाराजश्री का स्वागत किया। अन्त में महाराज श्री ने श्रीमठ परम्परा-भारतीय दर्शन, कर्मकांड, वेदशास्त्र को अपने सारगर्भित प्रवचन में सबको अवगत कराते हुए समस्त भारतवासियों के मंगल की कामना किया। नगर के समस्त कार्यक्रमों का संचालन श्री बिहारी रामलीला समाज सतना के निर्देशक म. प्र. तृतीय वर्ग शासकीय कर्मचारी संघ के प्रान्तीय उपाध्यक्ष एवं जिला सतना अध्यक्ष पं. हरी प्रकाश गोस्वामी द्वारा कुशलता के साथ किया गया जिसकी प्रशंसा महाराज श्री द्वारा भी की गयी।

१७ सितम्बर २००० ई. को महाराज श्री की उपस्थिति में जनकल्याण यात्रा प्रातःकालीन पूजन कार्य सम्पन्न कर पन्ना जिला के एक दिवसीय प्रवास को प्रस्थान कर गयी। मार्ग में गाँव-गाँव में यात्रा रोक कर स्वागत हुआ। नागौद पहुँचने पर नगर पंचायत अध्यक्ष श्री रामकुमार अग्रवाल एवं नागरिकों ने महाराज श्री का भव्य स्वागत किया एवं सार्वजनिक समारोह में नागरिक अभिनन्दन किया गया। इसके बाद यात्रा दुरेहा-सुलेहा होते हुए पन्ना पहुँची एवं देर रात्रि सतना वापस आई। इस यात्रा की व्यवस्था में पं. मनीराम गौतम, पं. कृष्ण कुमार पाण्डेय, पं. वंशरूप पाठक आदि का पूर्ण सहयोग रहा।

१८ सितम्बर २००० ई. को प्रातःकालीन भजन पूजन के पश्चात् जन कल्याण

यात्रा चित्रकूट के लिए दोपहर १ बजे प्रस्थान कर गई। भक्तों के विशेष आग्रह को ध्यान में रखते हुए महाराज श्री कुछ समय के लिए माधव वाधवानी, श्री बाह कृष्ण सोमानी के आवास पर भी गये। फिर दैनिक भास्कर समाचार पत्र कार्यालय होते हुए चित्रकूट जाते हुए मार्ग में कोठी-मझगवाँ में स्वागत स्वीकार करते सायं ६ बजे चित्रकूट पहुँचकर पंजाबी भगवान आश्रम में निवास किया।

१९ सितम्बर २००० ई. को प्रातःकालीन पूजन-आराधना सम्पन्न कर भक्तों से मिलने के पश्चात् महाराज श्री हरिजन बस्ती के कार्यक्रम में पधारे। उन्हें अपनत्व प्रदान कर आशीर्वचन देकर नागरिक अभिनन्दन, स्थल मानस भवन सीतापुर उ. प्र. पधारे। वहाँ चित्रकूट धाम में निवास कर रहे संत समुदाय जिनमें श्री श्री १०८ श्री रामाश्रय दास जी महाराज महन्त निर्मोही अखाड़ा, श्री श्री १०८ श्री राजगुरु श्री संकर्षण प्रपन्ना रामानुजाचार्य जी आचार्य आश्रम नया गाँव चित्रकूट, श्री श्री १०८ श्री पुरुषोत्तमानन्द जी महन्त कामदगिरि श्री श्री १०८ श्री रामजानकीदास महाराज श्री का उसी भक्ति एवं आदर भावना से स्वागत अभिनन्दन किया। इसी प्रकार त्रेता युग में प्रभु श्रीराम के चित्रकूट पहुँचने पर मुनि महात्माओं ने किया था। नागरिक अभिनन्दन नगर पंचायत चित्रकूट अध्यक्ष श्रीमती शर्मा ने किया। इस अवसर पर हजारों नागरिकगण उपस्थित रहे। इस समारोह का संचालन पं. हरि प्रकाश गोस्वामी ने किया। आयोजन की सफलता हेतु पं. के. पी. शर्मा एडवोकेट, पं. हेमराज चतुर्वेदी, पं. नीलकण्ठ शास्त्री सहित अन्य लोग उपस्थित थे। अन्तिम कार्यक्रम प्रमोद वन स्थित वृद्धाश्रम का रहा जहाँ संस्था के उध्यक्ष श्री महेन्द्र प्रताप सिंह (आई. ए. एस.) ने महाराज श्री का स्वागत किया। रात्रि विश्राम पंजाबी भगवान आश्रम में हुआ।

२० सितम्बर २००० ई. को जन कल्याण यात्रा चित्रकूट से चलकर मैहर जाते हुए कुछ समय के लिए सतना में पुनः रुकी एवं त्रिपाठी ट्रान्सपोर्ट कार्यालय में सतना जिला समिति के द्वारा महाराज श्री एवं सम्पूर्ण संत समाज को यथाशक्ति श्रद्धानुसार भेंट प्रदान कर भावभीनी विदाई दी गई। इस अवसर पर समिति के सभी पदाधिकारीगण उपस्थित रहे। इसके बाद यात्रा मैहर प्रस्थान कर गई।

रीवाँ से कटनी तक की सम्पूर्ण यात्रा में प. रघुनाथ प्रसाद त्रिपाठी एवं पं. पारसनाथ पाण्डेय कार्यक्रम को गति प्रदान करते रहे।

सतना से यात्रा मैहर के रास्ते प्रस्थान की। लगरगवाँ उचेहरा में हरीश ताम्रकार के साथ हजारों भक्तों ने स्वागत किया। रास्ते में अन्य कई स्थानों पर स्वागत हुआ। मैहर पहुँचने पर आगवानी, वृन्दावन बड़गैया विधायक एवं विजय नारायण, रामलोचन पाण्डेय, सन्जन राय, श्री सीता वल्लभ शरण जी महाराज एवं सैकड़ों संत समाज व हजारों गणमान्य नागरिक व भक्तों द्वारा स्वागत किया गया। बड़ा अखाड़ा

मैहर रामानन्द सम्प्रदाय का बहुत बड़ा धार्मिक आश्रम है। संस्कृत विद्यालय एवं गौ सेवा, अतिथि सेवा, संत सेवा वहाँ लगातार होती है। परमपूज्य महाराजश्री एवं सभी सन्तों का बहुत अच्छा स्वागत किया गया। ता. २१-२००१ यात्रा कटनी के लिए प्रस्थान की। रास्ते में भदनपुर अमदरा, झुकेही एवं कटनी में भी सुशील शर्मा एवं अमरपाटन गौतम के साथ हजारों भक्तों द्वारा कार्यक्रम में स्वागत किया गया। इसी प्रकार श्री महाराजश्री के मार्गदर्शन में सम्पूर्ण भारत वर्ष में यात्रा की गई। प्रत्येक प्रांत से समाचार मिला कि बहुत ही अच्छा कार्यक्रम जन कल्याण यात्रा के माध्यम से किया गया।

•

जबलपुर सप्तशताब्दी यात्रा के जीवंत क्षण

पं. नरेश पांडे

जगद्गुरु रामानंदाचार्य आध्यात्मिक मण्डल, जबलपुर

रामानंदमहं वन्दे वेदवेदांगपारगम्।
राममन्त्रप्रदातारं सर्वं लोकोपकारकम्।।
रामं रामानुजं सीतां भरतं भरतानुजम्।
सुग्रीवं बालिसूनुञ्च प्रणमामि पुनः पुनः।।
सीतानाथसमारंभां रामानंदार्यमध्यमाम्।
अस्मदाचार्यपर्यन्तां वन्दे गुरु परम्पराम्।।

जगद्गुरु रामानन्दाचार्य जी के मूलभूत सिद्धान्तों को जनमानस तक पहुँचाने एवं समाज में फैली दुःप्रवृत्तियों को समाप्त कर समाज में आध्यात्मिक धारा का प्रवाह करने के उद्देश्य से ज.गु. रामानंदाचार्य श्रीरामनरेशाचार्य महाराज के पावन नेतृत्व में पंचगंगा काशी से सम्पूर्ण भारत वर्ष के लिए एक यात्रा का आयोजन किया गया।

मध्यप्रदेश के जबलपुर में आगमित यात्रा का गरिमामय स्वागत अधारताल तिराहा स्थित श्री हनुमान मंदिर प्रांगण में किया गया। यात्रा की अगुवाई करने आध्यात्मिक, सामाजिक, राजनैतिक तथा व्यापारी वर्ग के साथ ही हजारों की तादाद में महिलाओं ने भी भाग लिया। यात्रा के स्वागतोपरांत एक दिव्य चल समारोह अधारताल तिराहे से मातृज्योति भवन नेपियर टाउन जबलपुर तक किया गया जिसमें सैकड़ों की संख्या में दो पहिया, चार पहिया वाहन भगवाध्वज लहराते हुए चल रहे थे। वहीं बैंड की सुमधुर ध्वनि ने रामगीतों द्वारा समग्र मार्ग को धर्ममय बना दिया था। यात्रा का श्रीरामलीला समिति मिलौनीगंज, श्री अग्रवाल महासभा, जबलपुर द्वारा सराफा में, श्री सेन समाज द्वारा गंजीपुरा में, श्री महाराष्ट्र मंडल द्वारा श्याम टाकिज चौराहा पर दिव्य स्वागत किया गया। सभी स्वागत कार्यक्रमों में नगर की धर्मपरायण जनता का अपूर्व योगदान रहा। कुछ क्षणों के लिए सम्पूर्ण मार्ग श्रीराममय हो गया था। यात्रा का समापन मातृज्योति भवन में आचार्य श्री के आशीर्वचनों से सम्पन्न हुआ। यात्रा में विशेष रूप से प्रेमानंद के न्यासी एवं महाकौशल विश्व हिन्दू परिषद् के कार्यकारी अध्यक्ष स्व. डॉ. उर्मिला जामदार प्रसिद्ध समाज सेवी श्रीमति चंद्रप्रभा परेरिया, पं.

बेनीप्रसाद अवस्थी, श्री रतनलाल जी खंडेलवाल, श्री प्रकाश पाठक, ब्राह्मण सभा के पं. पुरुषोत्तम तिवारी, पं. कमलेश तिवारी, सेन समाज के श्री निर्मल कुमार सेन, श्री संतोष कुमार सेन, अग्रवाल समाज के श्री मनु अग्रवाल सहित कार्यक्रम के मूल सचेतक नागा संत श्री श्यामदास जी का उल्लेखनीय योगदान था।

मातृ ज्योति भवन में तीन दिवसीय कार्यक्रमों की शृंखला में यात्रा प्रेमानंद आश्रम जिलहरीघाट पर पहुँची जहाँ संस्कारधानी के उन वर्गों को सम्मानित किया गया जिन्होंने रामानंदाचार्य जी के मूल सिद्धान्त- जाति पाँति पूछे नहीं कोई हरि को भजे सो हरि का होई के वास्तविक स्वरूप को अंगीकार कर संस्कारधानी में अपना एक विशिष्ट स्थान बना लिया है। उसमें स्व. डॉ. उर्मिला जामदार जिन्होंने संत ज्ञानेश्वर की हिन्दी टीका कर एक अपूर्व कार्य किया उन्हें आचार्यश्री के कर कमलों से सम्मानित किया गया। सुप्रसिद्ध महिला समाजसेवी श्रीमती चंद्रप्रभा परेरिया संस्कारधानी के सुप्रसिद्ध ज्योतिषी एवं भागवत कथा वाचक पं. बालगोविंद शास्त्री जबलपुर के प्रसिद्ध धर्मप्राण व्यवसाईयों का सम्मान शॉल श्रीफल द्वारा किया गया। इस कार्यक्रम ने लोगों के मन में एक नये भाव का सृजन किया। यात्रा के दूसरे दिन मातृज्योति भवन प्रांगण में एक विद्वत्-संगोष्ठी भी हुई। कार्यक्रम की अध्यक्षता ज.गु. रामानंदाचार्य श्रीरामनरेशाचार्य जी महाराज ने की। विशिष्ट अतिथि के रूप में जबलपुर के महापौर पं. विश्वनाथ दुबे, उ.प्र. के पूर्व मंत्री पं. लोकपति त्रिपाठी, म.प्र. के पूर्व मंत्री पं. चंद्रकुमार भानोट सहित प्रत्येक क्षेत्र के लोगों की उपस्थिति रही। विद्वान् वक्ताओं में पं. राजेन्द्र प्रसाद तिवारी सुप्रसिद्ध विधिवेत्ता पं. त्रिपाठी प्राचार्य, जानकीरमण महाविद्यालय, श्रीमती छाया राय, विभागाध्यक्ष, होम साइंस कॉलेज, पं. श्री दुबे जी, हिन्दी विभागाध्यक्ष, रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय के मुख्य वक्ता थे। कार्यक्रम का संचालन ठाकुर राजबहादुर सिंह जी पूर्व मंत्री, म.प्र. शासन ने किया।

यहाँ के दर्शनीय स्थलों में राम मंदिर, ग्वारी घाट, पाट बाबा मंदिर जी.सी.एफ. श्री हनुमान मंदिर रानी ताल श्री काली धाम भटौली का दर्शन-पूजन हुआ। आयोजन प्रमुखों में श्री रवि पांडेय, कमलेश, पुजारी नंद गोपाल तिवारी तथा जगदीश पटेल थे।

●

नमोस्तुरामाय

इन्दौर में श्रीरामभाव वर्षा

स्नेह जोशी

भारतवर्ष अध्यात्म में सदैव अठाणी रहा है। पुरातन समय से ही अनेक आध्यात्मिक सद्गुरुओं ने इस देश को अमूल्य योगदान किया है। इन सद्गुरुओं ने आध्यात्मिक शक्ति का प्रयोग सम्पूर्ण सामाजिक जीवन को मंगलमय बनाने के लिए किया है। इसी शाश्वत शृंखला में स्वामी श्रीरामानन्द जी महाराज का ७०० वर्ष पूर्व इस धराधाम पर अवतरण हुआ। उनकी जन्मस्थली प्रयाग और कर्मस्थली परम पुनीत श्रीमठ पंचगंगा घाट काशी है। श्रीमठ पंचगंगा घाट को उन्होंने अपनी भक्तिसाधना का प्रमुख केन्द्र बनाया। आचार्य रामानंद ने जीवन में सरल एवं व्यावहारिक सिद्धांतों का प्रचार किया जिससे जन सामान्य प्रभावित हुआ।

ऐसे महापुरुषों के विचारों को व्यापक परिप्रेक्ष्य में देखें तो अनेक महत्वपूर्ण तथ्य दृष्टिगत होते हैं। हिंसा और क्रूरता को हराकर उन्होंने त्याग, प्रेम और रामनाम जप जैसे महत्वपूर्ण विषयों का प्रचार किया। उनकी वैचारिक शंखध्वनि से सामाजिक क्रांति का श्रीगणेश हुआ। वह सत्य भी है, शिव भी है, सुन्दर भी है--इसका अनूठा प्रयोग स्वामी जी की साधना में मिलता है। उनका दरबार एकता और समता का दरबार होता था। समाज सुधारक के रूप में क्रान्तिकारी विचारों, वचनों और नैतिक मूल्यों द्वारा समाज को नई दिशा दी, नई चेतना दी और एक नया आत्मबोध दिया। उत्साह की पवित्र निर्मल धारा को प्रवाहित कर जनमानस के कलुषित हो रहे जीवन को स्नेहसिक्त बोधगम्य भावों द्वारा आप्लावित करने वाले स्वामीजी अन्धविश्वास, पाखण्ड और आडम्बर से सर्वथा दूर रहे। प्रतिष्ठित "हरि को भजे सो हरि का होई" के मूलमंत्र से जाति-पाँति के भेदभाव को समाप्त कर समत्व भाव से समाज को एक नया आयाम देने वाले स्वामीजी ने जन-जन को राम-भक्ति की धर्म गंगा में अवगाहन कराया।

पुरुष और स्त्री मूलभूत रूप से अलग होते हुए भी एक हैं। वे एक-दूसरे के पूरक हैं, इस सूत्र को विशेष रूप से संक्रमण काल में स्वामी जी ने समाज के सामने दृढ़ता से प्रतिष्ठित किया। पद्मावति, सुरसरि जैसी सुधर्मिणी, तेजस्विनी महान विदुषियों को समाज के सामने सादर सम्मानित करने वाले एकमात्र स्वामी रामानन्द जी ही थे।

उन्हीं का पथानुगमन करते स्वामी श्री रामनरेशाचार्य जी महाराज, वर्तमान

पीठाधीश्वर श्रीमठ पंचगंगा घाट, देश के कोने-कोने में जाकर रामभाव की अलख जगा रहे हैं। यह सप्तशताब्दी यात्रा का क्रम उसी भाव की पुष्टि करता है। स्वामी रामानन्द जी के सप्तशताब्दी महोत्सव के अन्तर्गत वर्ष पर्यन्त चलने वाले आयोजनों, यात्राओं के दौरान अनन्त श्री विभूषित ज.गु. रामानंदाचार्य स्वामी श्रीरामनरेशाचार्य जी, माँ अहिल्या की इस पावन नगरी, इन्दौर भी पधारे।

स्वामीजी श्रीमठ पंचगंगा घाट काशी के परम श्रेष्ठ आचार्य ही नहीं अपितु वर्तमानकाल के पथ प्रदर्शक भी हैं। युगान्तकारी सन्त, जन-मन में चेतना उत्पन्न कर, राष्ट्र को ऊर्जावान बनाकर रामराज्य के पथ पर अग्रसर करने हेतु संकल्पित हैं। यही सप्त शताब्दी महोत्सव का परमलक्ष्य भी है। इसलिये स्वामी रामनरेशाचार्य जी ने अपने कदम इस ओर दृढ़ता से बढ़ाये हैं। श्रीरामजी के प्रत्येक आदर्श को जनमानस के मध्य प्रसारित और स्थापित करने का महनीय कार्य श्री गुरुदेव कर रहे हैं।

रामानन्दाचार्य सप्तशताब्दी महोत्सव के अन्तर्गत इन्दौर में भी त्रिदिवसीय कार्यक्रम (दिनांक १३, १४ एवं १५ अक्टूबर, २०००) 'शान्तिमण्डपम्' में श्रीनाथ मन्दिर के पास, सानन्द सम्पन्न हुआ।

ईश्वर की कृपा से ही जीवन में गुरु का पदार्पण होता है। सन्त का संसर्ग भी वही कराता है। माँ अहिल्या की पावन नगरी, इन्दौर में उद्देश्य पूर्ण यात्रा के साथ, रामानन्दाचार्य सप्तशताब्दी महोत्सव के अन्तर्गत स्वामी श्री रामनरेशाचार्य जी महाराज का आगमन हुआ। स्वामीजी के दर्शन से तृप्त भक्तों ने पुष्पहारों से उनका भावपूर्ण वंदन-अभिनन्दन, स्वागत और जोरदार अगवानी की। अगवानी के साथ ही अत्यन्त उत्साह और उल्लास के साथ प्रथम दिवस १३ अक्टूबर को दोपहर ३ बजे से एक भव्य शोभायात्रा का आयोजन श्री बाबूभाई कुसुमाकर और उनके सहयोगियों के संयोजकत्व में प्रारम्भ हुआ।

शोभा यात्रा का शुभारम्भ इन्दौर नगरी के पश्चिमी क्षेत्र मल्हारगंज, टोरी कार्नर से हुआ। शोभा यात्रा में कई बैंड बाजे, ढोल-नगाड़े, उनके साथ करतब दिखाते कई अखाड़े चल रहे थे, उनके पीछे आम्रपर्णों से सुसज्जित कलश धारण किये पीत वसना महिलायें मंथर गति से चल रही थीं। उनके पीछे ढोल की थाप पर विभिन्न मुद्राओं में गरबा करती कन्याएँ थीं। मध्य में बहुत ही आकर्षक रूप से सुसज्जित बग्घी पर परमपूज्य गुरुदेव स्वामी श्रीरामनरेशाचार्य जी शोभायमान हो रहे थे।

रामनाम संकीर्तन के साथ यात्रा को गति प्रदान की गई। परमपूज्य गुरुदेव को अपने बीच पाकर हजारों नर-नारियाँ बाल-वृद्धजन अत्यन्त हर्षित, पुलकित हो, नाचते-गाते, गुरुदेव को अपने नयनों से निहारते अपने भाग्य को सराहते आगे बढ़ते चले जा रहे थे। धन्य थे वे क्षण। वे दिन कितने सुन्दर थे!

श्रीरामनाम के उद्घोष की गर्जना हो रही थी। समस्त वातावरण राममय था। रंग, गुलाल, अबीर, पुष्पों के संयोजन से पूरा मार्ग पट-सा गया था। गुरुदेव के साथ इस धार्मिक यात्रा के उत्साह में सभी अपने आपको जैसे भूल से गये थे। अत्यन्त उत्साहजनक वातावरण था, लोग चल नहीं रहे थे मानों भावधारा में बहे जा रहे थे। इस आनन्द यात्रा की एक झलक भी जिसने पाई, वह कृतकृत्य हो गया। धन्य हो गया, क्योंकि ऐसे दुर्लभ, विलक्षण, आनन्ददायी क्षण तो कभी-कभार ईश्वर की विशेष कृपा से इस क्षुद्र जीव को प्राप्त होते हैं।

शहर में यात्रा की अगवानी के लिये कई जगह मंच स्थापित किये गये थे। विभिन्न क्षेत्रों के लोगों ने अत्यन्त हर्षित भाव के साथ पुष्पवृष्टि और जयकारा करते, जगह-जगह मंगल आरती की, शीतल जल पेय, छाछ, आदि की भी व्यवस्था की गई थी। रामधुन आगाह कर रही थी कि रामजी के रूप में रामानन्दाचार्य जी महाराज आपके बीच में पधार रहे हैं। तात्कालिक वातावरण में अन्तर्मुखी लोग भी नाचते-गाते आनन्द से सराबोर दिखाई दे रहे थे। इस तरह यात्रा इन्दौर शहर के हृदय स्थल गाँधी हाल पहुँची जहाँ स्वामीजी का पूर्ण आत्मीयता से, भक्तिभाव से स्वागत किया गया। शोभायात्रा गन्तव्य तक पहुँच कर सम्पन्न हुई। सभी भक्तजनों के साथ स्वामीजी कार्यस्थल शांति मण्डपम् पधारे। दोपहर ३ बजे प्रारम्भ हुई शोभायात्रा ९.३० बजे रात्रि में समाप्त हुई। शांति मण्डपम् में स्वामीजी के प्रवचन हुए। उसके पश्चात् भजन संध्या एवं लोकगीतों का भी आयोजन हुआ।

द्वितीय दिवस : दिनांक १४ अक्टूबर, २००० को प्रातः ही कार्यक्रम का शुभारम्भ हुआ, जिसमें सर्वप्रथम रामचरण पादुका पूजन अभिषेक, श्री रामयज्ञ, हवन हुआ। इसमें गुरुदेव के सान्निध्य में कई लोगों ने भाग लिया। तत्पश्चात् समस्त भक्तों द्वारा अपने गुरुदेव का पूजन, फिर प्रवचन हुआ। इसी क्रम में पत्रकारों से वार्ता हुई। पत्रकार बन्धुओं को आशीर्वाद स्वरूप उपहार प्रदान किये गये। स्वामी जी की दोपहरी विकलांग बालकों के साथ व्यतीत हुई। संध्या ५ बजे एक 'विद्वत्-गोष्ठी' का समायोजन किया गया, जिसमें विविध क्षेत्रों से विद्वतजन पधारे थे। काव्यशास्त्र और दर्शनशास्त्र के विद्वान आचार्य राममूर्ति त्रिपाठी ने अपने उद्बोधन में कहा ''अनादि और अनन्त धर्म ही है, उसका प्रवर्तक एक नहीं अनन्त है''। स्वामी रामानन्द जी ने समता की सिर्फ बात नहीं की बल्कि उससे ज्यादा समता का विस्तार किया। स्वामीजी ने जन-जन में लोकतन्त्र (रामराज्य) को फैलाया। तुलसीदास कृत श्रीरामचरितमानस मनुष्य के अन्दर बैठे भगवान से साक्षात्कार कराने का सबसे बड़ा ग्रन्थ है। श्रीरामचरितमानस का बीजांकुर स्वामी रामानंद ने ही किया था। श्रीरामचरितमानस ज्ञान, भाव और कल्पना का सम्मिश्रण है। स्वामी जी ने इस पर विशेष प्रकाश डाला।

इस क्रम में हमारे इन्दौर नगर की पहचान न्यायमूर्ति स्व. मुरारीलाल तिवारी ने अपने सारगर्भित भाव विचारों को प्रस्तुत किया। उन्होंने कहा कि शाश्वतसत्य, श्री और सौन्दर्य की त्रिगुणात्मक शक्ति जिसमें है, वह श्रीराम है। ऐसे राम के विशुद्ध प्रचारक श्री रामानन्द जी हुए। रामानन्दाचार्य जी ने चार महत्त्वपूर्ण सिद्धान्तों का प्रचार-प्रसार किया। वे क्रमशः इस प्रकार हैं–

(१) समता : समता नहीं तो बन्धुत्व भाव नहीं।

(२) जीवन जीने की कला।

(३) वर्ण व्यवस्था का नूतन विचार।

(४) न्याय, स्वतंत्रता।

स्वामी जी ने यह भी स्थापित किया कि नैतिकता जहाँ है, वहीं राम हैं। नैतिकता ही रामभाव है, उन्होंने स्वामी रामनरेशाचार्य जी को रामानन्द जी के प्रतिनिधि के रूप में स्वीकार किया। उन्होंने कहा कि जीवन की हर शक्ति की इकाई धर्म के लिये होनी चाहिये और इसे कर दिखाया अभिनव संत श्रीरामनरेशाचार्य जी ने।

अपने देश की प्राचीन संस्कृति को पुनर्जीवित करने और देश में सर्वत्र सुविचार के बसन्त की बहार आ जाये उसी उपक्रम में लगे हुए स्वामी रामनरेशाचार्य के सृजनात्मक कार्य की ओर इंगित करते हुए एक रागात्मक सुमधुर काव्यांजलि राष्ट्रकवि श्री सत्यनारायण सत्तन ने प्रस्तुत की, जो अत्यन्त मार्मिक और भावपूर्ण थी।

इन्दौर शहर के तत्कालीन आई.जी. डॉ. पन्नालाल ने कहा कि समस्त गुणों के एकमात्र अधिकारी एक ईश्वर ही है और उसके अनुयायी श्री रामानन्द जी स्वामी हुए हैं। वर्तमान रामानन्दाचार्य स्वामी श्री रामनरेशाचार्य जी को देखकर ही अन्दाज लगाया जा सकता है कि स्वामी रामानन्द जी कैसे रहे होंगे? मन करता है कि सब कुछ छोड़कर कमण्डलु लेकर इनके साथ चल पड़ूँ। इसी तरह से विभिन्न क्षेत्रों से पधारे विद्वतजनों ने अपने-अपने भाव विचार प्रस्तुत किये। मंच का प्रभावी संचालन श्री संजय पटेल ने किया।

विद्वत संगोष्ठी के उपरान्त रामायण के विभिन्न मण्डलों द्वारा अपनी-अपनी विशिष्ट शैली में रामधुनों, चौपाईयों का सुन्दर गायन हुआ, जो बहुत ही मनोरंजक एवं प्रेरणादायी रहा।

तृतीय दिवस १५ अक्टूबर, २००० को क्रमानुसार श्री रामचरण पादुका पूजन, अभिषेक, हवन, यज्ञ आदि सम्पन्न हुए। उसके बाद इन्दौर नगर के प्रतिष्ठित मन्दिरों में भक्तों के साथ जाकर स्वामी श्री रामनरेशाचार्य जी ने देवदर्शन किये, पूजा-अर्चना और आरती की। १२ बजे से हरिजन बस्ती में श्री वाल्मीकि समाज के प्रमुख बालयोगी श्री उमेशनाथ जी के आग्रह पर पधारे। वहाँ आपने विभिन्न कार्यक्रमों में भाग लिया।

घर-घर जाकर लोगों के भावों को स्वीकारा और आशीर्वाद दिया। यह भावदृश्य देखकर कईयों के अश्रु छलक पड़े। इस भाव भरे भावुक दृश्य ने अन्दर से सभी को झकझोरा। विवेक को आन्दोलित कर सोचने-समझने को मजबूर किया। यह किसी साधारण मनुष्य का काम नहीं, यह तो वही दैवी पुरुष ही कर सकता है, जिसने जीवन को पूरी तरह समझ लिया है, आत्मसात कर आत्मा की एकता को स्वीकार कर लिया है। यह कार्य गुरुदेव ने करके बताया। श्रीराम की भावधारा को समझना, कहना और समझाना आप जैसे अप्रतिम महापुरुष ही कर सकते हैं।

सायंकाल संस्कृत साहित्य के प्रकाण्ड विद्वान पूर्व उपकुलपति डॉ. कवठेकर साहब का सम्मान किया गया। उन्होंने स्वामी रामानन्द के रामनाम महिमा के समर्थन में कहा कि रामनाम कितनी भी बार लें, पुनरुक्ति नहीं कहा जा सकता। उन्होंने कहा कि इतिहास की शाश्वत देन रामभाव है। श्रद्धापूर्वक, भक्ति मार्ग से रामभाव की प्रतिष्ठा हमारे हृदय में होनी चाहिये।

इसी दिन कृपावशात् रामानन्दाचार्य सुन्दरकारण्ड मण्डल इन्दौर के सक्रिय सदस्यों का भी गुरुदेव द्वारा अभिनन्दन किया गया, आशीर्वाद दिया गया। इस प्रकार सम्मान समारोह और पुरस्कार वितरण सम्पन्न हुआ जिसमें सम्पूर्ण महानगर की सहभागिता देखते बनती थी। उसी क्रम में मध्य प्रदेश के तत्कालीन मुख्यमंत्री पीपावंशी माननीय श्री दिग्विजय सिंह जी ने सप्तशताब्दी की प्रासंगिकता पर अपने विचार प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत किये। स्वामी रामानन्द ने सनातन धर्म की मर्यादा और गरिमा को कैसे जनता जर्नादन को समझाकर प्रतिष्ठित किया यह भी विस्तार से बताया।

तदनंतर स्वामी श्रीरामनरेशाचार्य जी का प्रवचन हुआ। स्वामी जी ने कहा कि धर्म और विज्ञान दोनों के समन्वय से सुख प्राप्त होता है। इस लोक और परलोक में परमगति की प्राप्ति अध्यात्म के माध्यम से होती है, जैसे विज्ञान में नये-नये प्रयोग होते हैं, वैसे ही अध्यात्म जगत् में, धर्म में, सन्त-महात्मा, ऋषि, महर्षि भी नये-नये प्रयोग करते रहते हैं, उसका कल्याणकारी प्रभाव हम पर भी पड़ता है। ईश्वर को प्राप्त करना सांसारिक जीवों के बूते की बात नहीं है। भगवान स्वयं प्रकट होकर या सन्तों के माध्यम से जीवों का उद्धार करते हैं। रामानन्द जी महाराज उसी क्रम में अवतरित हुए। जैसे विज्ञान में आविष्कार होते हैं, नये तत्त्व सामने आते हैं, उसी साहस से स्वामी रामानन्द ने सनातन धर्म में रामनाम को प्रकट किया, जो सहज, सरल है। राम शब्द एटमी शक्ति से भी बढ़कर है।

वैष्णव सम्प्रदाय वैसे भी मूलतः एक भाव का ही मार्ग है, प्रेम का मार्ग है, उस भावधारा को प्रवाहित करते हुए स्वामी रामनरेशाचार्य जी महाराज कहते हैं कि, भावों

से शून्य मनुष्य एक मशीन जैसा होता है। रूखा-रूखा।

विश्व कल्याण की भावना के समर्थक गुरुदेव उसी संकल्प के साथ अपना कर्तव्य निर्वहन कर रहे हैं। कहा गया है कि ''जैसा संकल्प वैसी प्राप्ति''। कर्तव्य की प्रेरक शक्ति तो भावना है। मात्र कर्तव्य, भावना को सृजित नहीं कर सकता पर भावना कर्तव्य को अपनी भक्ति का दान देकर उसे रसमयी और पूर्ण बना सकती है। भावों से सदा सराबोर रहने वाले स्वामी जी कर्तव्य से ज्यादा भाव को ही महत्व देते हैं।

इस तरह रामनरेशाचार्य जी महाराज चरैवेति चरैवेति, वाला सिद्धान्त सार्थक करते हुए आगे बढ़ते जा रहे हैं, न भूत की व्यथा न भविष्य की चिन्ता सिर्फ वर्तमान उनकी मुट्ठी में है, उसका पूर्ण सदुपयोग करने वाले सहृदय महान गुरुदेव को स्नेह का नम्र प्रणाम अर्पित हो।

सप्तशताब्दी के इस त्रिदिवसीय महोत्सव के समापन अवसर पर आध्यात्मिक, सुन्दर काण्ड मण्डल, इन्दौर के अध्यक्ष हमारे प्रिय भाईजी श्री गोपालदास जी मित्तल ने आभार प्रदर्शित किया। इस त्रिदिवसीय आयोजन में ज.गु. रामानंदाचार्य आध्यात्मिक मंडल इंदौर तथा अन्यान्य गणमान्य महानुभावों ने भरपूर सेवा समर्पित किया। मंडल के अध्यक्ष गोपालदास जी मित्तल भाई जी उनके अनुज दिनेश मित्तल (आयोजन समिति के अध्यक्ष) एम.एल. जोशी, बाबूलाल कुसुमाकर, मूलचंद चावला, पंचम सिंह जादौन, शंकरलाल तिवारी, अरुणरेखा सचदेवा इत्यादि भक्तों की सेवा विशेष उल्लेखनीय रही। गीता-विष्णु विंदल ने भामाशाह की महनीय भूमिका का निर्वाह किया।

●

ज.गु. रामानंदाचार्य सप्तशताब्दी महोत्सव : कलोल

बैदेहीशरण टेड़ीबापू

आद्य जगद्गुरु स्वामी रामानंदाचार्य जी भगवान का सप्तशताब्दी महोत्सव गुजरात प्रान्त के गाँधीनगर जनपदान्तर्गत कलोल शहर के श्री सत्यनारायण मंदिर में महामंडलेश्वर स्वामी राममनोहर दास, गुरु श्री गोपालदास के आयोजकत्व में सम्पन्न हुआ। उक्त अवसर पर वर्तमान जगद्गुरु आचार्य सम्राट् रामानंदाचार्य स्वामी रामनरेशाचार्य भी उपस्थित थे। वहाँ अनेकानेक आयोजन विधि-विधान पूर्वक सम्पन्न कराये गये। त्रिदिवसीय कार्यक्रम में प्रथम दिन ज.गु. स्वामी रामनरेशाचार्य जी का आगमन भव्य शोभायात्रा के साथ मंदिर में हुआ। दोपहर से शाम तक अनेक स्थानों पर पधरावणी हुई। स्वामी जी का धर्ममय प्रवचन अनेक संप्रदायनिष्ठ संतों की उपस्थिति में सम्पन्न हुआ। स्वामी जी ने आद्य जगद्गुरु के जीवन एवं श्री रामानंद सम्प्रदाय के गौरवपूर्ण इतिहास का शास्त्र सम्मत विवरण प्रस्तुत कर लोगों का सम्प्रदाय के प्रति अग्राहीभाव विकसित किया। दूसरे दिन प्रातः आद्य जगद्गुरु स्वामी रामानंदाचार्य का पूजन हुआ। तत्पश्चात् प्राप्तः ८.४५ से दोपहर २ बजे तक कलोल नगर में जगद्गुरु रामानंदाचार्य जी की शोभायात्रा वर्तमान आचार्य श्री के सान्निध्य में सम्पन्न हुई, जिसमें हाथी, घोड़े, बैण्डबाजा एवं बग्घी इत्यादि की व्यवस्था थी। साथ ही रामलीला, रासलीला, शिवचरित्र की सुन्दर झाँकी अनेक रथों पर गतिमान थी। पीछे विशाल जनसमूह जिसमें बालक, वृद्ध और जवान सभी सम्मिलित थे। यह दृश्य देखकर गोस्वामी जी की पंक्ति का स्मरण हो उठता था- बाल जुवान जरठ नर-नारी। अनेक ग्रामों के लोग भजन मंडलियों के माध्यम से जगद्गुरु रामानंदाचार्य भगवान की जयकार करते हुए शोभायात्रा में सम्मिलित थे। विदित हो कि सत्यनारायण मंदिर के जीर्णोद्धार के लिए भूमिपूजन आज के दिन ही प्रातः ८.३० बजे ज.गु. स्वामी रामनरेशाचार्य जी के करकमलों से सम्पन्न हुआ। सायंकाल ८.०० बजे कलोल शहर के मध्य नागरिक बैंक विवेकानंद चौक पर स्वामी जी का नागरिक अभिनंदन हुआ, जिसमें कलोल शहर तथा आसपास के क्षेत्र के कई संस्थाओं के प्रतिनिधियों, गणमान्य नागरिकों आदि ने बड़ी संख्या में उपस्थित होकर स्वामी जी के पावन प्रवचन का लाभ उठाया। इस कार्यक्रम को सफल बनाने में साकेतवासी स्वामी गोपालदासजी महाराज का आशीर्वाद, महामंडलेश्वर स्वामी राममनोहर दास, श्री मंहत शास्त्री प्रेमस्वरूपदास

वेदान्ती, श्री महन्त गोपालदास रंगपुर, श्री महंत बलरामदास मेहसाना, श्री महंत भगवतदास शास्त्री डींगुचा, श्री बैदेही शरण महाराज (दंडी बापू) धमासव श्री महंत जगन्नाथदास सूरत, कलोल सत्यनारायण मंदिर अन्नक्षेत्र, रामरोटी ट्रस्ट के अध्यक्ष श्री कान्तिलाल की सेवा तथा परिश्रम अवर्णनीय था। तीसरे दिन ज.गु. रामानन्दाचार्य स्वामी रामनरेशाचार्य जी ने अपनी सन्त मंडली के साथ कलोल के कई प्रतिष्ठित संस्थाओं तथा सेवकों के यहाँ पदार्पण कर उन्हें अनुग्रहीत किया। श्री दंडीबापू के आग्रह से स्वामी जी श्रीराम मंदिर पानसर पधारे जहाँ रसिक भाव से उनका स्वागत हुआ। इसके बाद अहमदाबाद नारायणपुरा स्वामी नारायण मंदिर में स्वागत हुआ। इस प्रसंग में निरंतर संत भण्डारा, अखंड रामधुन एवं पाठ हवन हो रहा था। इसके अतिरिक्त श्री बालाजी मंदिर रांधेजा, उमिया आश्रम मोरबी तथा गुजरात प्रान्त के अनेकानेक स्थानों में पूज्य श्री ज.गु. रामानंदाचार्य स्वामी रामनरेशाचार्य की अध्यक्षता में श्री आद्य ज.गु. रामानंदाचार्य प्राकट्य महोत्सव सम्पन्न हुआ। यहाँ यह उल्लेख करना आवश्यक है कि कलोल सत्यनारायण मंदिर श्री रामानंद सम्प्रदाय का ऐतिहासिक गौरवपूर्ण स्थान है। यहाँ के साकेतवासी महंत गोपालदास जी महाराज आचार्य पीठ श्रीमठ पंचगंगा काशी के प्रधानमंत्री थे तथा आचार्यनिष्ठा में अद्वितीय थे। वर्तमान पीठाधिपति स्वामी राममनोहरदास जी की आचार्य निष्ठा भी उसी तरह है। ज.गु. स्वामी जी के अतिनिकट रहकर सम्प्रदाय की सही सेवा भी उनके द्वारा हो रही है। जिसमें गौ सेवा, संत सेवा, गरीब सेवा और अनेक जनोपयोगी कार्यों का समावेश है।

।। जय श्रीराम ।।

सप्तशती यात्रा, सूरत

वसंत लश्करी

सगुण एवं निर्गुण रामभक्ति धारा के मध्यकालीन गंगोत्री-जगद्गुरु रामानंदाचार्यजी का सप्तशती जयन्ती महोत्सव उनके साधना तीर्थ "श्रीमठपंचगंगा काशी' में समायोजित था। स्वामी रामानंदजी के उद्भव का सात सौवाँ वर्ष सन् २००० ई. से २००१ ई. तक आरंभ हुआ था। स्वामीजी ने रामभक्ति की लोक चेतना का प्रवर्तन कर मानव मात्र के लिये बिना किसी भेदभाव के ईश्वरपूजा एवं दर्शन के महापथ का उद्घाटन किया। इसप्रकार **श्रीमठ** को मध्यकाल में रामभक्ति गंगा का गोमुख बना दिया।

उनकी शिष्य परंपरा में संत कबीर, संत रैदास, संत धन्ना, संत सेन इत्यादि निर्गुणियों और अनंतानन्द, नरहर्यानन्द, महाराज पीपा, गोस्वामी तुलसीदास, मीराबाई सहित रामभक्ति के सगुण पंथियों की लम्बी शृंखला है। "जात पांत पूछे ना नहीं कोई। हरि को भजे सो हरि का होई।' का महामंत्र देने वाले स्वामी रामानंद जी ने भगवत्प्राप्ति का मार्ग मानव मात्र के लिए खोल दिया।

जगद्गुरु रामानन्दाचार्य सप्तशती महोत्सव की सफलता के लिये तनमनधन से समर्पित होकर नयी सहस्त्राब्दी की प्रवेश वेला पर अपने मानव जीवन को परम धन्यता से मंडित करके तथा आचार्यों, महामनीषियों एवं राष्ट्रपिता की रामराज्य की परिकल्पना को साकारता प्रदान करने के अन्तर्गत सूरत में भी जगद्गुरु रामानन्दाचार्य सप्तशताब्दी महोत्सव १५ नवम्बर २००० से २१ नवम्बर २००० तक आयोजित किया गया। यह कार्यक्रम जगद्गुरु रामानंदाचार्य आध्यात्मिक रामपरिवार मंडल सूरत द्वारा पूरे गुजरात में भी किया गया।

सूरत में प्रात: रामानन्दाचार्य चरणपादुका समाराधन, संत सम्मेलन, हरिजन सम्मेलन, जेल में कैदियों के लिए धर्मसभा, किसानों और विद्यार्थियों के शिविर और प्रतिदिन धर्म सभा के आयोजन किये गये। हरिजन, किसान, विद्वान्, शिक्षक को सम्मान पत्र भी दिया गया। २१ नवम्बर को सूरत में कार्यक्रम का समापन हुआ और पूरे गुजरात में पालियाद, गड्ढा, कृष्णगढ़, कुपारिया, लाही, लीलीया, अमरेली, बारमण चोत्रा, सोमनाथ, तुकशीश्याम, मोरबी, भावनगर और अन्य कई जगहों पर धर्मसभा का आयोजन किया गया। स्वामीजी ने सोमनाथ पूजा कर अभिषेक किया।

भक्तों को अपना जीवन धन्य बनाने का अवसर मिला।

रामभाव प्रसार यात्रा के आगमन पर सभी जगह विशाल शोभायात्रा निकाली गई जिसका वर्णन करना संभव नहीं है। इस कार्यक्रम में श्रीराम चरण पादुका पूजन, परम कृपालु प्रभु श्रीराम का राजोपचार पूजन, अभिषेक एवं श्रीरामयज्ञ तथा आचार्यश्री का प्रवचन हुआ।

जगद्गुरु रामानन्दाचार्य स्वामी श्रीरामनरेशाचार्य जी ने अपने प्रवचन में जो कहा उसका कुछ अंश इस प्रकार है–

"ईश्वर पाप-पुण्य के कर्मों के अनुसार फल देते हैं।" परमात्मा की असीम कृपा से ही सर्वश्रेष्ठ भूमि में, सनातन धर्म में जीवन प्राप्त होता है।" 'परमात्मा की कृपालुता का अनुभव करने से ही मानव जीवन परम विश्राम को प्राप्त करता है।" "निःस्वार्थ भक्ति मानव को भगवान् का सखा बना देती हैं।"

इस यात्रा में पालियादधाम में कार्यक्रम बहुत अच्छा हुआ। स्वामीजी से प्रभावित होते हुए अमराबापू ने फिर पालियाद में स्वामी जी को आमंत्रित किया और स्वामी जी का सम्मान किया। इसी बीच अमराबापू का साकेतवास हो गया और उमाबा पालियाद गादीपति बनीं। महंत उमाबा श्रीमठ की सेवा खूब भाव से कर रही हैं।

इस सप्तशताब्दी महोत्सव के अवसर पर गुजरात में २० दिनों तक कार्यक्रम हुआ जिसमें देवचंदभाई, छगनभाई, वसंतभाई, भूपतभाई, तुलसीदास और मंडल के सभी सदस्यों ने तन-मन-धन से सेवा करके अपना जीवन धन्य बनाने का प्रयास किया। इस प्रकार गुजरात में सप्तशताब्दी कार्यक्रम का भव्य समापन हुआ।

जय सियाराम
वसंतभाई लश्करी
सूरत

जगद्गुरु रामानंदाचार्य पदप्रतिष्ठित
श्रीरामनरेशाचार्य जी महाराज

आदिपीठ श्रीसम्प्रदाय (रामावत)
पञ्चगंगा काशी, (उत्तर प्रदेश)

।। नमोऽस्तु रामाय ।।

धर्मगौरव उमाबा की तिलक विधि

सप्तशताब्दि महोत्सव की राष्ट्रव्यापी यात्रा के क्रम में सूरत होते हुये हमलोग पालियादधाम (भावनगर, गुजरात) पहुँचे। इसके संस्थापक संतशिरोमणि-रामदेवावतार विषावण बापू थे।यह धाम अन्नदान के क्षेत्र में गुजरात ही नहीं अपितु सम्पूर्ण देश में विशिष्ट स्थान रखता है। प्रात: दस बजे से रात्रि बारह बजे तक आने वाले संतों-ब्राह्मणों तथा अभ्यागतों की ससम्मान सप्रेम सम्पूर्ण प्रसाद की भेदभावरहित सेवा होती है। यहाँ की वर्तमान गादीपति धर्मगौरव उमाबा अमराबापू हैं। अपने पतिदेव श्रीमहान्त अमराबाबू के अकस्मात् परमपीड़ा दायक साकेत गमन के पश्चात् धामसेवा का दुर्वह सेवाभार उमाबा के कंधों पर आ पड़ा।

सप्तशताब्दी महोत्सव के यात्रा क्रम में जब हम लोग पालियादधाम पहुँचे, तब सभी संतों, भक्तों तथा पारिवारिक जनों ने अतीव श्रद्धा एवं मर्यादा से मुझसे आग्रह किया कि पालियादधाम गादीपति के रूप में उमाबा की तिलकविधि कर दी जाये। मैंने परमप्रभु श्रीराम की प्रेरणा-परम्परा की विधिविचारणा तथा धाम के पूर्ण समर्पित प्रामाणिकजनों की सहमति तथा समुपस्थिति में पूर्ण विधि से तिलक विधि का सम्पादन किया। २३ नवम्बर, सन् २००० ई. में यह अवसर उमाबा-पालियादधाम तथा सप्तशताब्दि महोत्सव के लिये भी अत्यन्त अविस्मरणीय गौरववर्धक-प्रेरणादायक तथा मांगलिक है। तब से निरन्तर उमाबा पूर्ण गरिमा के साथ धाम सेवा महायज्ञ का सम्पादन कर रही हैं। इनका लोकोत्तर सौम्य-निश्छल-उदार तथा मधुर स्वरूप धाम की सेवा गरिमा को अनुपम विस्तार प्रदान कर रहा है।

तृतीय अध्याय
श्रीमठ की उपलब्धियाँ

महोत्सव के रचनात्मक अवदान

डॉ. उदयप्रताप सिंह

श्रीमठ सगुण-निर्गुण रामभक्ति का आदि पीठ है। स्वामीरामानंदाचार्य राम भक्ति धारा को उत्कर्ष प्रदान करने वाले महात्मा है। इसके प्रवर्त्तक स्वयं परम प्रभुश्रीराम हैं। सम्प्रदाय उन्नायक स्वामीरामानंद के सप्तशती महोत्सव के अवसर पर श्रीमठ द्वारा अनेक प्रकल्पों को पूर्णता प्रदान की गयी थी। उनका विवरण निम्नवत् है-

प्रेमानंद आश्रम जिलेहरी घाट, जबलपुर

जबलपुर में नर्मदा के पावन तट जिलेहरी घाट पर प्रेमानंद आश्रम स्थित है। वहाँ एक विशाल सभागार का निर्माण **ज.गु. रामानंदाचार्यमण्डपम्** के रूप में हुआ। यह सभागार ११६ फुट लंबा तथा ५५ फुट चौड़ा है। अत्याधुनिक तकनीक से निर्मित यह मण्डपम् जनसेवा के लिए अहर्निश निःशुल्क प्राप्त होता है। नर्मदा के उद्गम से समापन तक यह अपने ढंग का अद्वितीय मण्डप है। सप्तशती यात्रा के स्मरण की यह अक्षय कीर्ति है। सप्तशताब्दी महोत्सव का अनुस्मारक भी है। सम्प्रति यहाँ दशाधिक पक्के कमरे बने हैं। वर्ष २०११ में यहाँ एक विशाल श्रीराम यज्ञ का आयोजन ज.गु.रा.श्रीरामनरेशाचार्य जी ने सम्पन्न किया।

सरस्वती शिशु मंदिर

मध्य प्रदेश स्थित धार जिले का एक अत्यंत अविकसित एवं ऐतिहासिक क्षेत्र बाग जो पूर्णतः आदिवासी जनसमूहों से आच्छादित है। वहाँ राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ एक बड़ी शिक्षण संस्था सरस्वती शिशु मंदिर के रूप में संचालित करता है। वहाँ बाग और कुक्षी के भक्तों ने महाराज श्री के हाथों से **स्वामी रामानंद स्मृति कक्ष** का निर्माण ५१०००/- देकर किया। आदिवासी क्षेत्र में रामभाव प्रसंग का यह दृश्य सप्तशताब्दी महोत्सव की प्रमुख उपलब्धि है। इससे आदिवासी क्षेत्रों में श्रीराम और श्रीरामानंद का प्रसंग ताजा हो उठा।

अमराबापू सभागार श्रीबिहारम् वाराणसी (उ.प्र.)

वाराणसी स्थित एक ऐसा नवनिर्मित आश्रम है जहाँ वर्तमान रामानंदाचार्य श्रीरामनरेशाचार्यजी दीक्षित हुए थे। विद्यार्थी जीवन में यहीं कुछ वर्षों तक अध्ययन भी किया था। सप्तशताब्दी के क्रम में ही इस आश्रम के नवनिर्माण का संकल्प हुआ। आज यहाँ ५०० व्यक्तियों के बैठने के लिए एक सुसज्जित सभागार है जिसे 'अमराबापू सभागार' के नाम से जाना जाता है। इसी आश्रम में विशाल ग्रंथालय है जिसमें रामानंद सम्प्रदाय तथा अन्य भारतीय विद्याओं की महत्त्वपूर्ण पुस्तकें संग्रहीत हैं। जनसेवा के लिए यह सभागार सदैव उपलब्ध रहता है। महत्वाकांक्षी योजना के अन्तर्गत यह आश्रम अब पाँच मंजिला बनने के करीब पहुँच चुका है। लिफ्ट की व्यवस्था होनी है। इसमें सब २०-२२ कमरे देश-देशांतर से आने वाले भक्तों के लिए उपलब्ध रहते हैं। यहाँ की विद्वत संगोष्ठियाँ वाराणसी जैसे नगर के लिए भी चर्चा का विषय बनी रहती हैं। सभी सार्वजनिक कार्यक्रम इसी सभागार से सम्पन्न होते हैं। यहाँ विवाहादि सामाजिक कार्य प्रतिवर्ष निःशुल्क संचालित होते रहते हैं।

कलोल में चमत्कार

कलोल अहमदाबाद, गुजरात का उपनगर है। यहाँ रामानंद सम्प्रदाय का अत्यंत प्रतिष्ठित और प्राचीन सत्यनारायण मंदिर स्थित है। सन् २००० वर्ष के पूर्व यह जीर्ण-शीर्ण अवस्था में था। शताब्दी महोत्सव के क्रम में इसका स्वरूप ही बदल गया। मंदिर के चारों ओर चार गोदामों ने इसे आच्छादित कर रखा था। महाराज श्री के प्रभाव और प्रेरणा से चारों गोदाम मंदिर परिसर में निःशुल्क समाहित हो गयीं। मंदिर का भव्य रूप निखर आया। भूमिपूजन और मंदिर का लोकार्पण महाराज श्री ने ही किया। भव्य आश्रम बना और मंदिर का पुनरुद्धार हो गया। आज यह रामानंद सम्प्रदाय का मंदिर अपने पुराने गौरव को प्राप्त कर चुका है। यहाँ करोड़ों की सम्पत्ति अन्य मंदिरों के लिए स्पर्धा उत्पन्न करती है। यह सप्तशताब्दी महोत्सव की सबसे महत्त्वपूर्ण उपलब्धि मानी जाती है। श्री गोपालदास जी इसके महंत रह चुके हैं तथा वर्तमान महंत श्री राममनोहर दास जी हैं।

वाल्मीकि धाम में श्री सोहनदास सभागार उज्जैन (म.प्र.)

उज्जैन मध्य प्रदेश में श्री सोहनदास सभागार का निर्माण सप्तशताब्दी महोत्सव की महत्त्वपूर्ण उपलब्धि में परिगणित है। सम्पूर्ण सभागार का निर्माण श्रीमठ काशी के सहयोग से ही संभव हुआ है। वाल्मीकि धाम की भूमि महाराज श्री के सहयोग से ही प्राप्त हुई। तदनंतर महोत्सव के अध्यक्ष श्री दिग्विजय सिंह ने करोड़ों रु. में घाट और आश्रमों का निर्माण मुख्यमंत्री के रूप में सम्पन्न कराया। यहाँ का संत-निवास और आश्रम सम्पूर्ण देश में अपने ढंग का अद्वितीय है। वाल्मीकि समाज का अद्यावधि यह

सर्वाधिक विशाल आश्रम है। इस आश्रम के जीर्णोद्धार से स्वामी रामानंद की सर्वस्पर्शिनी भक्ति बलवती हुई है। साथ ही समन्वय की भावना भी विकसित हुई है। बालयोगी उमेश नाथ पदेन श्रीमहंत हैं।

रामद्वारा– जोधपुर राजस्थान स्थित 'रामद्वारा' का निर्माण भी महोत्सव के क्रम में ही सम्पन्न हुआ। श्री रामरतन जी जो नैष्ठिक रूप से श्रीमठ से सम्बद्ध हैं- वर्तमान में श्रीमहन्त हैं। ऊपरी मंजिल को सुसज्जित करने हेतु सन् २००० ई. में २५०००/- का सहयोग श्रीमठ की ओर से हुआ था। राजस्थान में रामभाव प्रसार तथा रामानंद सम्प्रदाय के विस्तार में इस 'रामद्वारा' का विशिष्ट स्थान है। शेष सेवाएँ महाराजश्री की प्रेरणा से भक्त लोगों ने सम्पन्न की। श्रीरामरतनदास जी की शिक्षा श्रीमठ, काशी में ही सम्पन्न हुई।

प्राकट्यधाम दारागंज प्रयाग, इलाहाबाद

वर्षों से उपेक्षित यह स्थान सप्तशताब्दी के क्रम में ही प्रकट हुआ। यहाँ स्वामी जी की भव्य बालरूप प्रतिमा माँ की गोद में विराजित है। इसी के समक्ष स्वामी रामानंदजी ज.गु. के रूप में विराजित हैं। जीर्ण-शीर्ण स्वरूप को भव्य रूप देने का क्रम सप्तशताब्दी से ही प्रारंभ हुआ। यहाँ स्वामी जी की जीवन-चित्रावली आकर्षण का विषय है। तीर्थराज प्रयाग के प्रसिद्ध विग्रहों में भगवान हरित माधव विराजमान हैं। आज यह प्रयाग का एक महत्त्वपूर्ण आश्रम बन गया है। यहाँ निरंतर राजस्थानी शिल्पकला का रूप उभरता जा रहा है। टूरिज्म विभाग इसे अपने आदर्श मानक आश्रम के रूप में घोषणा कर चुका है। सप्तशताब्दी के क्रम में इसका प्रकट होना- एक अद्भुत घटना जैसी है। यह प्राकट्यधाम गंगातट पर संगम के सन्निकट मोरी दारागंज में स्थित है। कुम्भ २०१३ पर इसका स्वरूप देखते ही बनता है।

इन उपलब्धियों के इतर भी महोत्सव क्रम में अनेक कार्यों का सम्पादन हुआ। औरंगाबाद (बिहार) में महादेव मंदिर शिखर विहीन था। मान्यता थी कि यहाँ शिखर नहीं ठहरता है। अपशकुन है। पर महाराज श्री की कृपा से मंदिर के शिखर का निर्माण हुआ है। उस गाँव में श्रीरामविनयदास श्रीमहांत हैं। श्रीमठ के सौन्दर्यीकरण और विस्तारीकरण का शुभसंकल्प भी उसी वर्ष लिया गया। आज भव्यतम रूप में श्रीमठ की आकर्षक शोभा किसी से छिपी नहीं। रामानंदाचार्य, पीपा जी, गो. तुलसीदास, कबीर, रैदास और श्रीहनुमत विग्रह का नवीन और भव्य रूप श्रीमठ के सौन्दर्य में वृद्धि कर रहे हैं। मूल्यवान टिक की लकड़ियों से बना मंदिर और बालरूप भगवान् श्रीराम मंदिर का कपाट, जो प्रायः २५००००/- में निर्मित हुआ- यह शताब्दी वर्ष की महती उपलब्धि बन गया है। गंगापार डुमरी आश्रम जिसमें, गोशाला, गैरेज, फूलपत्ती और

सब्जियों की व्यवस्था है। इसी वर्ष आकार ग्रहण कर सका है। यह श्रीमठ से गंगापार एक किलोमीटर दूर स्थित है।

जगद्गुरु रामानंदाचार्य गोशाला एवं उद्यान

गंगापार-डुमरी-काशी श्रीमठ से १ कि.मी. पूर्व दक्षिण में स्थित है। यहाँ गायों की सेवा सम्पादित होती है। उद्यान अपनी विविधता-सुषमा एवं विशालता के द्वारा श्रीमठ की गरिमा को क्षण-क्षण सम्वर्धित कर रहा है। आँवला नवमी जैसे धार्मिक कृत्यों के साथ बहुधा वनभोज-सहभोज भी समायोजित होते रहते हैं। एकान्तिक साधना का यह अनुपम आश्रम है। यह श्रीमठ के वाहनों का भी विश्रामालय है। श्रीमठ आश्रम पंचगंगा के लिये यहाँ से तुलसी दल-पुष्प शाकादि प्रचुर मात्रा में उपलब्ध होते हैं। इसका क्षेत्रफल पाँच बीघे में प्रसरित है। यहाँ अनेक प्रकार के फलदार वृक्ष तथा सुगंधिपूर्ण लताओं की अवली मन को मोह लेती है।

अमराबापू संस्कृत विद्यापीठ

यह श्रीमठ का अतीव समीपवर्ती विद्याधाम है। पालियादगादीपतिधर्म-गौरव-श्रीमहान्त उमाबा ने अपने पति श्रीअमरा बापू की पुण्यस्मृति में इसे संस्थापित किया है। पंचगंगाघाट पर स्थित यह भवन अपनी स्थापत्य कला में अद्वितीय है। अमरा बाबू पालियादधाम ही नहीं अपितु सनातन धर्म के परम संरक्षक थे। वर्तमान आचार्य के लिये उनके मन में अपार आदर एवं स्नेह था। श्रीमठ के उस परम धन को उमाबा ने संरक्षित ही नहीं अपितु संवर्धित भी किया है। पंचगंगाघाट पर ही वर्तमान यह पीठ श्रीमठ के ऐतिहासिक विस्तृत स्वरूप की प्राप्ति में एक महत्वपूर्ण कड़ी है। चार खण्डों-चार मंजिलों तथा शताधिक प्रकोष्ठों के साथ अवस्थित यह पीठ श्रीमठ का गौरववर्धक है। श्रीमठ की ज्ञान-साधना का यह परम तीर्थ सम्प्रदाय ही नहीं अपितु सनातन धर्म का महत्त्वपूर्ण केन्द्र है। यहाँ निरंतर बटुकों द्वारा वैदिकघनपाठ, व्याकरण का अभ्यास चलता रहता हैं।

अद्वितीय श्रीराम मंदिर, सप्तर्षिमार्ग साकेतधाम, हरिद्वार (उत्तराखण्ड)

श्रीमठ का यह सर्वाधिक महत्त्वाकांक्षी प्रकल्प है। इसका निर्माण होना रामभक्तों की प्रबल भावना तथा महाराजश्री के सत्संकल्प का साकार रूप है। अब तक की योजनानुसार इसे २०२० ई. तक रामभक्तों को समर्पित होना है। एक अरब रुपयों की अनुमानित लागत में यह पूर्णता को प्राप्त होगा। श्रीरामभक्ति परम्परा में यह मंदिर अपने ढंग का अनोखा होगा। अभी तो इसे 'न भूतो न भविष्यत्' ही कहा जा सकता है। कुंभस्थ क्षेत्रों में नासिक ही ऐसा स्थल है जहाँ प्रभु श्रीराम का अद्भुत मंदिर है। हरिद्वार स्थित इस मंदिर की लम्बाई १९३ फीट, ऊँचाई १७५ फीट और चौड़ाई १०२ फीट

है। इसके ५ शिखर के साथ ८५ लघु शिखर प्रस्तावित हैं। २४ तिल्लकों तथा १०४ सुसज्जित स्तंभों से युक्त वस्तुतः यह अद्वितीय श्रीराम मंदिर होगा। इसका शिलान्यास जगद्गुरु मध्वाचार्य स्वामी श्रीविश्वेशतीर्थ जी महाराज पेजावर उडुपी के यशस्वी करांबुजों द्वारा १८ नवम्बर २००५ ई. को सम्पन्न हुआ। विशाल पैमाने पर निर्मित यह श्रीराम मंदिर सनातन वैष्णवों का ऐतिहासिक पवित्र धाम भी होगा।

प्रकाशन :

श्रीमठ, भारतीय आध्यात्मिक और धार्मिक धारा का एक महत्त्वपूर्ण पड़ाव है। अतः स्वाभाविक है कि यहाँ सम्प्रदाय के सिद्धांत, मानवता के हित, लोकरस के सम्वर्द्धन तथा जगत् के कल्याण से सम्बद्ध अनेक प्रकार के साहित्य रचे जायें। कुछ प्रकाशन तो पूर्व से ही विद्यमान रहे हैं, पर शताब्दी वर्ष पर निम्न पुस्तकें प्रकाशित हुई हैं– किञ्चजाप्यम् - आचार्य राममूर्ति त्रिपाठी, रामतापनीयोपनिषद - आचार्य मुरलीधर पांडेय, जगद्गुरुशतकम्, श्रीरामरक्षास्तोत्रम् हिन्दी अनुवाद सहित, श्रीरामानंद विजय - मंगलाप्रसाद- काव्य, रामानंद रामरसमाते - डॉ. उदय प्रताप सिंह, ऐतिहासिक आलोक में काशी और स्वामी रामानन्दाचार्य अवध बिहारी खरे, स्वामी रामानंद के शिष्य और उपलब्धियाँ - डॉ. सुधाकर पाण्डेय, रामसहस्र नाम जगन्नाथ शास्त्री तैलंग, श्रीमठ प्रकाश विवेकी राय (संपा.) श्रीमठ स्तुतिकुसुमांजलि– श्री जगन्नाथ शास्त्री तैलंग, आचार्य रामकरण शर्मा अभिनंदन ग्रंथ– श्री कमलेश दत्त त्रिपाठी, पायसपायी (उपन्यास) श्री दयाकृष्ण विजय वर्गीय, तीर्थराज प्रयाग और कुंभ महापर्व– डॉ. उदय प्रताप सिंह तथा गंगाज्ञान महोदधि जैसे महत्त्वपूर्ण ग्रंथ उक्त अवसर पर ही प्रकाशित हुए। इसके बाद प्रकाशित पुस्तकों में 'श्रीमठसमग्र'– दो खण्ड (सं. डॉ. उदय प्रताप सिंह) श्रीरामानंदसतसई, रामानंद चरितम्– प्रो. प्रभुनाथ द्विवेदी, तीर्थराजप्रयाग और रामभक्ति का अमृत कलश– (सं. डॉ. उदयप्रताप सिंह) जैसी पुस्तकें शोभायमान हैं।

पुरस्कार :

श्रीमठ की महनीय प्रवृत्तियों में स्वामी रामानंदाचार्य पुरस्कार का विशिष्ट महत्त्व है। यह पुरस्कार वर्तमान रामानंदाचार्य की सोच का ही सुफल है। देश के विभिन्न संस्थानों और संस्थाओं में अनेक पुरस्कार दिए जाते हैं पर उनकी निरंतरता कम संस्थाओं में दिखायी पड़ती है। श्रीमठ द्वारा प्रतिवर्ष श्रीरामानंदाचार्य जयंती पर यह प्रतिष्ठित पुरस्कार प्रदान किया जाता है। भारतीय संस्कृति के सम्वर्द्धक और मानवीय मूल्यों के संस्थापक, साहित्यकारों, समाजसेवियों को एक लाख रु. की धनराशि पुरस्कार स्वरूप प्रदान की जाती है। प्रारंभ में सप्तशताब्दी महोत्सव के अन्तर्गत पं. राजराजेश्वर शास्त्री द्रविड़ को यह पारितोषिक वेदांत के विद्वान् डॉ. कर्णसिंह के

कराम्बुजों द्वारा प्रदान किया गया। द्रविड़ जी, न्याय, वेदांत, मीमांसा, साहित्य और व्याकरण के प्रकाण्ड पंडित के रूप में देशव्यापी ख्याति अर्जित कर चुके थे। उन्हें यह प्रतिष्ठित पुरस्कार मरणोपरांत सन् २००० ई. में दिया गया। आचार्य श्री रामकरण शर्मा को महोत्सव के समापन पर दिया गया यह पुरस्कार उनकी विद्वता का सम्मान था। वह संस्कृत जगत के ध्रुवतारा रूप में आज भी अपना प्रकाश बिखेर रहे हैं। दो बार दरभंगा विश्वविद्यालय के कुलपति तथा एक बार संस्कृत विश्वविद्यालय वाराणसी के कुलपति रूप में अपने कर्मकौशल और चिंतनधारा का प्रभाव जमा चुके हैं। वह अनेक ग्रन्थों के प्रणेता तथा भारत सरकार द्वारा संचालित संस्कृत अकादमी के निदेशक भी रह चुके हैं। अर्थ और आचार की शुचिता उनका मूल धन रहा है।

इस प्रकार श्रीमठ का योगदान अन्यान्य सामाजिक सरोकारों से पूर्णतः जुड़ा दिखायी पड़ता है। श्रीमठ आश्रम में प्रतिदिन वेदपाठ की पद्धति, मुख्यतः घनपाठ का अभ्यास योग्यतम गुरु आचार्यों द्वारा कराया जाता है। यद्यपि अन्नक्षेत्र सप्तशताब्दी महोत्सव के कई वर्षों पूर्व से ही संचालित होता रहा है पर महोत्सववर्ष में यह एक व्यवस्थित रूप ग्रहण कर चुका है। उसी समय से देश के दूरागत विद्यार्थी यहाँ पारम्परिक विधा का अध्ययन करते रहते हैं। स्वामी रामानंदाचार्य का सप्तशताब्दीवर्ष मात्र आश्रम और आश्रमों के लिए ही शुभंकर नहीं प्रमाणित हुआ, अपितु सामाजिक एकता के लिए भी संजीवनी सदृश दिखायी पड़ा।

•

ज.गु.रामानंदाचार्य पुरस्कार प्राप्त करने वाले विद्वानगण

आचार्य भगवतीप्रसाद सिंह, गोरखपुर (उ.प्र.)

प्रो. भगवतीप्रसाद सिंह भक्तिसाहित्य के अधीत विद्वान् तथा महान् अन्वेषक के रूप में प्रख्यात हैं। रामभक्ति साहित्य और सूफीमत पर उनकी कई पुस्तकें विद्वानों के बीच चर्चा का विषय रही हैं। १९वीं शती में रामभक्ति साहित्य, पर उनका शोध आज भी विद्वानों के बीच महत्वपूर्ण अन्वेषण माना जाता है। उनके इस शोधपूर्ण कार्य पर १९५७ ई. में उन्हें पी-एच.डी. की उपाधि आगरा विश्वविद्यालय द्वारा प्राप्त हुई थी और 'रामभक्ति में रसिक सम्प्रदाय' पर डी.लिट. की उपाधि गोरखपुर विश्वविद्यालय द्वारा दी गयी थी। बाल्यावस्था से ही कुशाग्र बुद्धि सम्पन्न प्रो. सिंह का जन्म १९१९ ई. में गोण्डा जनपद के अनभुला गाँव में हुआ था। वह १९४३ ई. से ही 'सरस्वती' में लिखने लगे थे।

प्रो. सिंह ने गोरखपुर वि.वि के हिन्दी विभाग के अध्यक्ष पद से निवृत्ति लेकर कई महत्वपूर्ण कार्य किये। राधाकृष्ण भक्त कोश पाँच खण्डों में प्रकाशित हुआ है जिसका सम्पादन प्रो. सिंह ने किया था। 'श्रीराम विश्वकोश' की एक महत्वाकांक्षी योजना पर वह कार्यरत थे उसका पहला भाग प्रकाशित भी हुआ। मलिक मुहम्मद जायसी के 'पदुमावति महाकाव्य' का सर्वाधिक वैज्ञानिक पाठ प्रो. सिंह का ही माना जाता है। उन्होंने सैकड़ों शोध छात्रों को ऐसे विषय पर शोध कराया था जिसका किसी भी हिन्दी साहित्य की पुस्तक में चर्चा तक नहीं मिलती है। हृदयाघात से ९ जनवरी १९९४ ई. में वृन्दावन में उनकी इहलीला समाप्त हो गई। उनका अंतिम संस्कार उनके परम प्रिय तीर्थ अयोध्या में सरयू नदी किनारे किया गया।

मध्यकाल विशेषतः रामभक्ति के सुख्यात विद्वान् प्रो. सिंह के साहित्यिक अवदान को परखकर जगद्गुरु पद्प्रतिष्ठित श्रीरामनरेशाचार्यजी ने इन्हें 'ज.गु. रामानन्दाचार्य पुरस्कार' ज्ञानी जैन सिंह के करकमलों द्वारा श्रीमठ काशी में प्रदान करवाया था।

ज्ञातव्य है कि आचार्य भगवतीप्रसाद सिंह से ही **'ज.गु.रामानन्दाचार्य पुरस्कार'** का श्रीगणेश हुआ था।

पण्डितराज राजेश्वर शास्त्री द्रविड़,काशी (उ.प्र.)

देश की सांस्कृतिक नगरी काशी में आचार्य जी समकालीन विद्वानों के बीच एक विभूति के रूप में जाने जाते रहे हैं। काशी में रहते हुए संस्कृत वाङ्मय की कई

शाखाओं का आपने गहन अध्ययन किया था। सम्पूर्ण देश में धर्मशास्त्र से सम्बन्धित कोई भी विवाद आपके निर्णय से शान्त हो जाता था। आचार्य द्रविड़ काशी नरेश महाराज की विद्वत् सभा के रत्न थे। शास्त्रों का सुचिन्तित अध्ययन करने और कई शास्त्रों पर समान अधिकार होने के कारण काशी में आपको 'पण्डितराज' की उपाधि से विभूषित किया गया था। रामभक्ति धारा की आदि पीठ श्रीमठ से आपका गहरा सम्बन्ध था। मरणोपरांत आप को जगद्गुरु रामानंदाचार्य पुरस्कार डॉ. कर्णसिंह के करकमलों द्वारा श्रीरामनरेशाचार्य जी सन्निधि में प्रदान किया गया था। काशी के विद्वत् जगत में महाराज श्री के इस औदार्य की मुक्तकण्ठ से सराहना आज भी की जाती है।

आपकी वैदुष्य परम्परा का प्रवाह आप के पुत्र श्री गणेश्वर शास्त्री द्रविड़ द्वारा तद्वत किया जा रहा है। यह भारतीय धर्मसाधना के लिए शुभ संकेत है।

महामण्डलेश्वर स्वामी काशिकानन्दजी, मुम्बई (महाराष्ट्र)

महालण्डलेश्वर काशिकानन्द महाराज महान् साधक और साथ ही साथ अग्रगण्य विद्वान भी हैं। सम्प्रति आप मुम्बई में निवास करते हैं। आप अपनी अध्यात्म पगी वाणियों से एक बड़े मानव समाज का निरन्तर कल्याण कर रहे हैं। वेदान्त, न्यायशास्त्र और व्याकरण के अद्वितीय विद्वान् के रूप में आप पूरे देश में जाने जाते हैं। आपकी जन्मभूमि केरल प्रान्त बतायी जाती है। परम बीतरागी के रूप में आप एक श्रेष्ठतम साधक की स्थिति को प्राप्त हैं। यदि पूरे देश में प्राच्य विद्या के विशेषज्ञ के रूप में पाँच लोगों का नाम लिया जाय तो उसमें आप प्रथम स्थान पर ठहरते हैं। ज्ञातव्य है कि 'श्री ज.गु.रामानन्दाचार्य पुरस्कार' की एक लाख रु. राशि की शुरुआत आप को ही पुरस्कार प्रदान कर की गई थी।

जगद्गुरु रामानन्दाचार्य पदप्रतिष्ठित श्रीरामनरेशाचार्यजी महाराज के अभिन्न लोगों में आपकी गणना की जाती है।

आचार्य कृष्णकान्त चतुर्वेदी, जबलपुर (म.प्र.)

आचार्य कृष्णकांत चतुर्वेदी संस्कृत जगत के सुपरिचित विद्वान् के रूप में जाने जाते हैं। आप जबलपुर मध्यप्रदेश के निवासी रहे हैं। रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय, जबलपुर में आप संस्कृत के विभागाध्यक्ष और कालांतर में वहाँ के कुलपति का पद भी अलंकृत किये। संस्कृत साहित्य के विभिन्न शाखाओं के उत्कृष्ट आचार्य के रूप में सम्पूर्ण देश में आप की छवि व्याप्त है। न्याय-दर्शन में आप उच्चकोटि के विद्वान् माने जाते हैं।

संस्कृत विभागाध्यक्ष के रूप में आप की सुकीर्ति दिग्दिगंत में व्याप्त है। कुलपति के रूप में देववाणी संस्कृत के विकास में चतुर्वेदीजी का महत्त्वपूर्ण योगदान

माना जाता है।

आप के वैदुष्य से प्रभावित हो श्री रामनरेशाचार्यजी महाराज ने आप को 'ज.गु.श्रीरामानंदाचार्य पुरस्कार' से अभिषिक्त किया था। आप का श्रीमठ से आत्मीय सम्बन्ध रहा है।

आचार्य राममूर्ति त्रिपाठी, उज्जैन (म.प्र.)

आचार्य राममूर्ति त्रिपाठी संस्कृत और हिन्दी साहित्य के अधिकारी विद्वान् थे। त्रिपाठी जी का जन्म वाराणसी अब चंदौली जनपद में हुआ था। पं. गोपीनाथ कविराज की विद्वता से प्रभावित हो आप ने तंत्र विद्या का गहन अध्ययन किया था। संस्कृत और हिन्दी में आप के कई ग्रंथ विद्वत् जगत में अन्यतम हैं। काव्यशास्त्र के परम वैदुष्य से अलंकृत प्रो. त्रिपाठी रसवादी आचार्य के रूप में पूरे देश में विख्यात रहे हैं। विक्रम विश्वविद्यालय उज्जैन में आप हिन्दी के आचार्य एवं अध्यक्ष के रूप में विशेष ख्याति अर्जित कर चुके थे। आप कालिदास एकेडमी उज्जैन के अध्यक्ष भी रह चुके हैं।

संस्कृत में तंत्रविद्या के अतिरिक्त हिन्दी के संत साहित्य पर आप ने महत्त्वपूर्ण सम्मतियाँ प्रदान की हैं। गत बीस वर्षों में हिन्दी संत साहित्य को तंत्र रहस्य और राग से जोड़ने में आप ने महत्त्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह किया है। आप की दो दर्जन कृतियाँ रहस्य तंत्र और संत के पारस्परिक सम्बन्ध जोड़ने में अद्भुत सफलता प्राप्त कर सकी हैं।

इधर रामानंदी सम्प्रदाय से सम्बन्धित साहित्य पर आप द्वारा कई नवीन मान्यताएँ प्रस्तुत की गई हैं। आचार्य रामानंद के द्वादशादित्यों में सुरसरी और पद्मावती की गणना आप की मान्यताओं द्वारा ही संभव हो सकी थी। इस विमर्श में युगेश्वर जी, डॉ. उदयप्रताप सिंह, डॉ. अशोक कुमार सिंह, स्वयं आचार्य राममूर्ति त्रिपाठी एवं आचार्यश्री की उपस्थिति थी। आप के इस वैदुष्य से प्रभावित हो ज.गु. रा. श्री रामनरेशाचार्य जी ने आप को 'जगद्गुरुश्रीरामानंदाचार्य पुरस्कार' से सम्मानित किया है।

पं. विश्वनाथ शास्त्री दातार, काशी (उ.प्र.)

पं. विश्वनाथ शास्त्री दातार काशी के प्रकाण्ड पण्डितों में अग्रगण्य रहे हैं। आप मूलतः पश्चिमी भारत के निवासी थे। आपकी गणना पंडितराज राजेश्वर शास्त्री द्रविड़ के प्रातिभ शिष्यों में की जाती है। प्राचीन भारतीय वाङ्मय के विद्वान् के रूप में आपकी ख्याति देश पर्यन्य व्याप्त रही है। न्याय, दर्शन और भागवत के विशेषज्ञ के रूप में शास्त्रीजी जाने जाते हैं। तुलसीदास कृत 'श्रीरामचरितमानस' के टीकाकार के रूप में हिन्दी जगत आपका ऋणी है। इसके अतिरिक्त संस्कृत-साहित्य, शास्त्र और वेदांत के

बेजोड़ विमर्शकार के रूप में आपकी ख्याति सम्पूर्ण देश में रही है। आपकी इस वैदुष्य संपदा का आकलन कर श्रीरामनरेशाचार्यजी महाराज ने 'जगद्गुरु श्रीरामानंदाचार्य पुरस्कार' से आपको विभूषित किया था।

देवर्षि कलानाथ शास्त्री, जयपुर (राज.)

देवर्षि कलानाथ शास्त्री मूलतः अंग्रेजी भाषा के प्राध्यापक आचार्य हैं। राजस्थान की विभिन्न संस्थाओं को अपनी प्रतिभा से चमत्कृत कर देने वाले आचार्य कलानाथ शास्त्री अंग्रेजी के साथ संस्कृत के भी प्रकाण्ड वाग्मी और पंडित हैं।

इधर आप ने संस्कृत और अंग्रेजी में कई ग्रन्थों का प्रणयन कर प्राचीन भारतीय ज्ञान परम्परा का सम्बर्द्धन किया है। राजस्थान की कई संस्थाओं को आप आचार्य के रूप में अलंकृत कर चुके हैं। अंग्रेजी की ज्ञान परम्परा और संस्कृत की संस्कृति का विस्तार आपने वैदुष्यपूर्ण ढंग से किया है। राजस्थान संस्कृत एकेडमी के निदेशक के रूप में शास्त्रीजी ने विशेष ख्याति अर्जित की है। विभिन्न प्रशासनिक पदों पर रहते हुए आपने संस्कृत की सेवा की है। दशकों से आपने कबीर इत्यादि के सांस्कृतिक पक्षों पर विशेष कार्य किया है।

ज.गु.रा. श्रीरामनरेशाचार्यजी महाराज से आप के आत्मीय सम्बन्ध हैं। ज्ञातव्य है कि मुस्लिमकाल में रामानंदी साहित्य का संरक्षण राजस्थान प्रांत में ही हुआ था। देवर्षि जी ने उस विलुप्त होती परम्परा पर भी कार्य सम्पन्न किया है। इसके अतिरिक्त आपके महत्त्वपूर्ण अनुवादित ग्रन्थ भी प्रकाशित हो चुके हैं।

उनकी इस सारस्वत साधना का सम्मान करने के लिए श्रीमठ से उन्हें 'जगद्गुरु श्रीरामानंदाचार्य पुरस्कार' प्रदान किया गया है।

प्रो. रामकरण शर्मा, दिल्ली

आचार्य रामकरण शर्मा, हिन्दी-संस्कृत और अंग्रेजी के वाग्मी विद्वान्, लोकप्रिय अध्यापक, प्रभावशाली कुलपति और कई संस्कृत परिषदों के निदेशक के रूप में संस्कृत साहित्य की अद्भुत सेवा की है। आपने अपनी अन्यतम प्रतिभा के बल पर विदेश में संस्कृत की पताका वर्षों तक फहराई है। मूलतः बिहार प्रान्त से सम्बद्ध प्रो. शर्मा का संस्कृत सम्भाषण निर्झर जलस्रोत की तरह प्रवाहित होता रहता है। अनेक ग्रंथों के रचयिता, संस्कृत साहित्य की अनेक शाखाओं के विशेषज्ञ प्रो. शर्मा आज भी संस्कृत साहित्य के विकास में निरंतर सक्रिय हैं।

कामेश्वरसिंह विश्वविद्यालय, दरभंगा (बिहार) और सम्पूर्णानंद संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी (उ.प्र.) के आप कुलपति रह चुके हैं। श्रीमठ पंचगंगा काशी से आप का अभिनंदन ग्रंथ भी प्रकाशित हुआ है। आप अहर्निश संस्कृत भाषा और

साहित्य के विकास के चिंतन में लगे रहते हैं। सुदीर्घ अकादमिक सेवाओं और संस्कृत के प्रति नैष्ठिक आस्था को देखते हुए ज.गु.रा. पदप्रतिष्ठित स्वामीरामनरेशाचार्यजी महाराज ने 'जगद्गुरु श्रीरामानंदाचार्य पुरस्कार' से आप की विद्या का सम्मान किया है।

आपको यह पुरस्कार प्रदान कर श्रीमठ पंचगंगा अभिभूत है।

महाराजा डॉ. कर्ण सिंह (दिल्ली)

डॉ. कर्ण सिंह इंदर महिन्दर बहादुर का जन्म १९३९ ई. में जम्मू-कश्मीर रियासत के राज परिवार में हुआ था। आपके पिता महाराजा श्रीहरी सिंह के नाम से जाने जाते थे। आपकी माता का नाम महारानी तारा देवी था। आपका जीवन विद्याध्ययन, शास्त्र चिंतन एवं राजनीतिक बारीकियों को समझने में व्यतीत होता रहा है। आपकी विद्वता, शास्त्रज्ञान, राजनीतिक चातुर्य के कारण भारत सरकार ने आपको पद्मभूषण जैसे अलंकरण से २००५ में अलंकृत किया था।

डॉ. कर्ण सिंह की प्रारम्भिक शिक्षा दून स्कूल देहरादून में सम्पन्न हुई।ग्रेजुएशन की पढ़ाई श्रीप्रताप सिंह कालेज श्रीनगर जम्मू-कश्मीर विश्वविद्यालय से हुई। राजनीति शास्त्र में स्नातकोत्तर पढ़ाई दिल्ली विश्वविद्यालय से पूर्ण हुई। पी-एच.डी. की उपाधि भी दिल्ली विश्वविद्यलय से प्राप्त किया।

१९४९ ई. में अट्ठारह वर्ष की आयु में ही आप जम्मू-कश्मीर राज्य प्रशासक के रूप में चुने गए। डॉ. कर्ण सिंह ने सफलतापूर्वक सदरे रियासत और गवर्नर पद का निर्वाह किया। यह समय १९६५-६७ का था। उसके उपरांत आपको भारत सरकार में कैबिनेट मंत्री के रूप में शपथ दिलायी गयी। १९७३-७७ तक स्वास्थ एवं परिवार नियोजन मंत्री, १९७९-८० तक शिक्षा एवं संस्कृति मंत्री, १९९०-१९९१ तक अमेरिका में भारतीय राजदूत के रूप में देश की सेवा किया। बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय, जम्मू और कश्मीर विश्वविद्यालय तथा जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय में कई बार चांसलर पद को अलंकृत किया। सम्प्रति आप काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के चांसलर पद को सुशोभित कर रहे हैं।

वर्तमान में डॉ. कर्ण सिंह 'अन्तर्राष्ट्रीय सम्बंध परिषद्' (आई.सी.सी.आर.) के चेयरमैन हैं।

डॉ. कर्ण सिंह की वक्तृत्व शक्ति अद्भुत है। संस्कृत श्लोकों से अपने कथन को पुष्टि एवं चारुता प्रदान करने में आप सिद्ध हैं। देश-विदेश में अनेक संस्थाओंसे समादृत-सम्मानित डॉ. कर्ण सिंह जी को 'ज.गु. पद प्रतिष्ठित रामानंदाचार्य श्रीरामनरेशाचार्य महाराज ने २००५ ई. में **'ज.गु. रामानंदाचार्य पुरस्कार'** से आशीर्वादित किया।

श्रीमठ पंचगंगा काशी, सरस्वती के इस वरद पुत्र को यह पुरस्कार प्रदान कर स्वयं गौरवबोध का अनुभव कर रही है।

श्री मनु शर्मा, (श्री हनुमान प्रसाद शर्मा) वाराणसी (उ.प्र.)

सन् १९२८ की शरत् पूर्णिमा को अकबरपुर (अब अंबेडकर नगर) (उत्तर प्रदेश) में जनमे हनुमान प्रसाद शर्मा लेखन जगत् में 'मनु शर्मा' नाम से विख्यात हैं। लगभग डेढ़ दर्जन उपन्यास, दो सौ कहानियों और कविताओं के प्रणेता श्री मनु शर्मा की साहित्य साधना हिंदी की किसी भी खेमेबंदी से दूर, अपनी ही बनाई पगडंडी पर इस विश्वास के साथ चलती रहती है कि 'आज नहीं तो कल, कल नहीं तो परसों, परसों नहीं तो बरसों बाद मैं डायनासोर के जीवाश्म की तरह पढ़ा जाऊँगा।'

अनेक सम्मानों और पुरस्कारों से विभूषित श्री मनु शर्मा ने साहित्य की लगभग सभी विधाओं में लिखा है; पर कथा आपकी मुख्य विधा है। 'तीन प्रश्न', 'मरीचिका', 'के बोले माँ तुमि अबले, 'विवशिता' एवं 'लक्ष्मणरेखा' आपके प्रसिद्ध सामाजिक उपन्यास हैं। 'पोस्टर उखड़ गया' सामाजिक कहानियों का संग्रह है। 'मुंशी नवनीतलाल' और अन्य कहानियों में सामाजिक विकृतियों तथा विसंगतियों पर कटाक्ष करने वाले तीखे व्यंग्य हैं। 'द्रौपदी की आत्मकथा', 'अभिशप्त कथा', 'कृष्ण की आत्मकथा' (आठ भागों में), 'द्रोण की आत्मकथा', 'कर्ण की आत्मकथा' और 'गांधारी की आत्मकथा' जैसे प्रसिद्ध कृतियाँ आपके यशवर्धन में चार चाँद लगा चुकी हैं।

सम्मान और अलंकरण– गोरखपुर विश्वविद्यालय द्वारा डी.लिट. की मानद उपाधि और उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान द्वारा 'साहित्य भूषण' विशेष उल्लेख्य हैं। इसी क्रम में साहित्यिक परिलब्धियों का मूल्यांकन करते हुए ज.गु. रामानंदाचार्य श्रीरामनरेशाचार्य महाराज ने 'ज.गु. रामानंदाचार्य पुरस्कार २००६' से आपको सम्मानित किया।

प्रो. रमाकांत आंगिरस, चण्डीगढ़ (पंजाब)

पंजाब-विश्वविद्यालय चण्डीगढ़ में 'कालिदास प्रो. ऑफ संस्कृत' के पद पर रहते हुए सेवानिवृत्त प्रो. आंगिरस सुदीर्घकाल तक अध्ययन-अध्यापन-परम्परा का सफल निर्वाह करते हुए दर्शन, साहित्य एवम् कलाओं के अनुष्ठान और अनुसंधान में तत्पर रहे हैं। उन्हें कई बार देशविदेश में अपने चिंतन परक अध्ययन के लिए पर्याप्त सम्मान मिल चुका है।

आप का जन्म २५ जुलाई, १९३६ को होशियारपुर में हुआ। आपको जीवन में सिद्ध महात्मा स्वामी कूटस्थानन्द, दक्षिण के शिवस्वरूप बाबा तथा गृहस्थ डॉ. राजेश्वर प्रसाद कौशिक जैसे महामना के उपयोगी मार्गदर्शन प्राप्त होते रहे हैं। आपकी आधुनिक

विद्वानों में सर्वाधिक श्रद्धा वाराणसी की विभूति पं. गोपीनाथ 'कविराज' के प्रति रही है। तन्त्र और आगमशास्त्र के सुविस्तृत अध्ययन का संस्कार आपको इन्हीं विद्वानों से प्राप्त हुआ। शास्त्र के साथ शास्त्रीय संगीत एवम् आधुनिक खेलजगत् के सभी प्रसिद्ध खेलों को उच्च स्तर तक खेलने का व्यसन जीवन के छह दशकों तक बना रहा।

सन् १९६५ से १९९९ तक पंजाब विश्वविद्यालय में संस्कृत के अध्ययन-अध्यापन का कार्य सम्पन्न हुआ। प्राध्यापक-उपाचार्य के पदों पर रहने के बाद 'कालिदास प्रोफेसर ऑफ संस्कृत' के पद पर नियुक्ति हो गई। इस बीच भारत सरकार की आई.सी.सी. आर. संस्था की ओर से चैकोस्लोवाकिया की राजधानी 'प्राग' की चार्ल्स युनिवर्सिटी में भी संस्कृत प्रोफेसर के पद पर तीन वर्ष के लिए आप की नियुक्ति हुई। इससे पूर्व भी प्राच्य विद्या अध्ययन-अध्यापन की दृष्टि से इटली, इंग्लैण्ड, अमेरिका (आक्सफोर्ड) जाना हुआ। अंतिम बार १९९९ ई. में 'बीसवें विश्वदर्शन कांग्रेस' की कांफ्रेंस में आई.सी.सी. आर की ओर से आपको बोस्टन भेजा गया। फिर चार वर्ष के लिए पंजाब विश्वविद्यालय और नार्थ ईस्ट फ्रण्ट विश्वविद्यालय, शिलांग की सीनेट का सदस्य नामित किया गया। सन् २००२ में इन्स्टीच्यूट ऑफ इण्टिग्रेडिट हिमालय स्टडीज (U.G.C. Centre of Excellence) हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय शिमला में 'ऑनरेरी फैलो'' के पद पर रहे। १९९९ में 'इंडियन कौन्सिल ऑफ फिलोसाफिकल रिसर्च एण्ड सेन्टर फॉर स्डडीज इन सिविलिजेशन्स', दिल्ली की ओर से 'प्रोजेक्ट ऑफ हिस्ट्री ऑफ इण्डियन साइन्स, फिलॉसोफी एण्ड कल्चर' में 'एडिटोरियल फैलो' के पद पर नियुक्ति हुई। वर्तमान में 'इण्डियन नेशनल थियेटर एवम् शास्त्रीय संगीत' कार्यकारिणी के सदस्य हैं। साथ ही अन्तर्राष्ट्रीय 'दर्शन योग सोसाइटी' के सदस्य हैं। सन् २००८ में आपको 'जगद्गुरु श्रीरामानन्दाचार्य पुरस्कार' (एक लाख रुपये की राशि) ज.गु. रामानंदाचार्य श्रीरामनरेशाचार्य की सान्निध्य में प्रदान किया गया। आपको यह प्रतिष्ठित पुरस्कार प्रदान कर श्रीमठ गौरवान्वित हुआ है।

प्रो. युगेश्वर, वाराणसी (उ.प्र.)

जन्म-तिथि : १० जनवरी, १९३४। हिन्दी विद्यापीठ देवघर से साहित्यालंकार उत्तीर्ण करने के बाद युगेश्वर वाराणसी आ गये। यहाँ हाईस्कूल से पी-एच.डी. तक की शिक्षा पूर्ण की। काशी विद्यापीठ के हिन्दी विभाग में प्राध्यापन। १० जनवरी १९९४ को आचार्य पद से सेवा निवृत्त। समाजवादी आन्दोलन में रहने के कारण जातिगत उपाधि व शिखा-सूत्र से मुक्त। सन् ४९ से ही लिखते आ रहे हैं। कितना, कैसा-कैसा और कहाँ-कहाँ लिखा? गणना कठिन है। 'कल्पना', 'चौखंभा' और 'जन' में नियम से लिखा।राजनीति, शिक्षा, साहित्य, अध्यात्म, भाषाशास्त्र आदि इनके लेखन के मुख्य विषय हैं। इनके अठारह सांस्कृतिक उपन्यास प्रकाशित हैं। रामायण मेला और अंग्रेजी हटाओ से विशेष लगाव रहा है। इस ख्यात समाजवादी विचारक की मुख्य

प्रेरणा और चिंता राष्ट्रीयता, समता और लोकतंत्र है। डॉ. युगेश्वर की अपनी शैली है। विचारों की तीव्रता, स्पष्टता और दिशा निर्देश के कारण लेखन आकर्षित करता है।

प्रकाशित ग्रंथ : १. मगही भाषा २. हिन्दी कोष विज्ञान का उद्भव और विकास, ३. तुलसीदास आज के संदर्भ मेंह, ४ तुलसी का प्रतिपक्ष, ५.१११ मानस निबन्ध, ६ भक्ति आज के संदर्भ में ७. सबके प्रेमचंद, ८. प्रसाद काव्य का नया मुल्यांकन, ९. कबीर समग्र (दो भाग), १०. कबीर साहब, ११. तुलसी काव्य की भूमिका, १२. तुलसी के ग्यारह ग्रंथ (दो खंडों) में, १३. गीता तीर्थ, १४. रैदास समग्र, १५. समाजवाद : आचार्य नरेन्द्रदेव, लोहिया, जयप्रकाश नारायण की दृष्टि में, १६. आपातकाल का धूमकेतु राजनारायण, १७. कामदेव, १८. कामदेव का पत्र शिव के नाम, १९. सीता एक जीवन, २०. राम एक जीवन, २१. भरत एक जीवन, २२. हनुमान एक जीवन, २३. रावण एक जीवन, २४. संत साहेब, २५. पर्वत पुत्री २६. पंचानन, २७. दूसरा कृष्ण, २८. पार्थ, २९. दूसरा इंद्र, ३०. विदेह, ३१. भवानीनंदन श्रीगणेश, ३२. कृष्णा, ३३. देवव्रत, ३४. महाभारत का शूद्र महामात्य, ३५. सुमित्रानंदन, ३६. आह्लादिनी, ३७. दक्षिणेश्वर का परमहंस, ३८. महाभारत का महात्मा।

पुरस्कार-सम्मान : उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान से मधुलिमए फेलोशिप। इसके अतिरिक्त अनेक प्रांतों, संस्थाओं, व्यक्तियों से कई पुरस्कार प्राप्त। प्रो. युगेश्वर को १६ जनवरी २००९ को **'ज.गु. रामानंदाचार्य पुरस्कार'** से सम्मानित कर श्रीमठ अपने को धन्यता का अनुभव कर रहा है। यह प्रतिष्ठित पुरस्कार ज.गु. रामानंदाचार्य श्रीरामनरेशाचार्य की सन्निधि में, वाराणसी में प्रदान किया गया।

आचार्य कमलेशदत्त त्रिपाठी, प्रयाग (उ.प्र.)

सुप्रसिद्ध आयुर्वेद चिकित्सक परिवार से सम्बद्ध आचार्य कमलेशदत्त त्रिपाठी का जन्म प्रयाग में ४ अगस्त, १९३८ को हुआ। कमलेशदत्त त्रिपाठी, एम.ए. (संस्कृत), डी.फिल. (इलाहाबाद), व्याकरण और धर्मशास्त्र आचार्य (सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी) वर्तमान में संस्कृतविद्या धर्मविज्ञान संकाय., काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी में एमेरिटस प्रोफेसर हैं। उन्होंने ही सर्वप्रथम संस्कृतविद्या धर्मविज्ञान संकाय में सन् १९७७ में आगम विषय पर शोधकार्य प्रारम्भ किया।

इलाहाबाद विश्वविद्यालय से सम्बद्ध कालेजों में ११ वर्षों तक अध्यापन करने के बाद वे १९७० में संस्कृतविद्या धर्मविज्ञान संकाय में धर्मशिक्षा विभाग में धर्म एवं दर्शन के प्रवक्ता पद पर नियुक्त हुए। उन्होंने संस्कृतविद्या धर्मविज्ञान संकाय में ही पाणिनि व्याकरण और संस्कृत काव्यशास्त्र का भी अध्यापन किया। आपने प्रो. क्षेत्रेशचन्द्र चट्टोपाध्याय से वेद और अन्य विद्याओं की शिक्षा ली, प्रो. भूपेन्द्रपति

त्रिपाठी से व्याकरण एवं महामहोपाध्याय पं. रामेश्वर झा से वाक्यपदीयम् तथा काश्मीर शैवदर्शन की शिक्षा ली। प्रोफेसर त्रिपाठी दो बार संकाय प्रमुख बनाए गये और काशी हिन्दू विश्वविद्याल की कार्यकारिणी समिति के सदस्य भी रहे।

मध्य प्रदेश सरकार द्वारा उन्हें सन् १९८१ में 'कालिदास अकादमी' के निदेशक के रूप में आमंत्रित किया गया। संस्कृत नाटकों के निदेशक के रूप में उन्होंने महत्त्वपूर्ण कार्य किया। सेवानिवृत्ति के पश्चात् पुनः उन्हें कालिदास अकादमी का निदेशक बनाया गया जहाँ २००३ से २००६ तक कार्यरत रहे।

प्रो. त्रिपाठी सन् १९९६ में सोरबोन यूनिवर्सिटी (पेरिस) में और सन् १९९९ में कोपेनहेगन यूनिवर्सिटी (डेनमार्क) में विजिटिंग प्रोफेसर के रूप में आमंत्रित किये गये। वे २००३ में पुनः पेरिस में तथा २००४ बार्सिलोना (स्पेन) आदि में, २००५ तथा २००६ में चीन गणराज्य में विजिटिंग प्रोफेसर के रूप में यात्रा सम्पन्न की।

वर्तमान में वह नाट्यशास्त्र प्रोजेक्ट के प्रमुख सम्पादक एवं निदेशक हैं और मंचकला के विश्रुत ग्रन्थ मुनिभरतप्रणीत 'नाट्यशास्त्र' के संपादन एवं अनुवाद का कार्य कर रहे हैं। वह विभिन्न अकादमिक विश्वविद्यालयों और संस्थाओं से सम्बद्ध हैं। उन्हें संपूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय ने १९९९ में सम्मानित किया, राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान ने २००० में, साहित्य अकादमी पुरस्कार २००५ में और हिन्दी साहित्य सम्मेलन ने २००५ संस्कृत महामहोपाध्याय उपाधि प्रदान कर सम्मानित किया। उन्होंने २००७ में भारत के राष्ट्रपति से 'सर्टिफिकेट ऑफ मेरिट' पुरस्कार प्राप्त किया। श्रीमठ पंचगंगा काशी द्वारा वर्ष २००७ ई. में आपको 'जगद्गुरु रामानंदाचार्य' पुरस्कार से अलंकृत किया गया।

आचार्य मंशाराम शर्मा, हरिद्वार (उत्तराखण्ड)

आचार्य मंशाराम शर्मा व्याकरण के प्रकाण्ड पण्डित और संस्कृत के अधीत विद्वान् हैं। इनका जन्म उत्तरांचल में हुआ था। प्रान्त के विभिन्न अंचलों एवं जनपदों में अपने वैदुष्य से आपने शताधिक शिष्यों को व्याकरण का पण्डित बना दिया। इसके अतिरिक्त कई प्रशासनिक पदों पर रहते हुए आचार्य मंशाराम शर्मा ने संस्कृत साहित्य के विकास में महत्त्वपूर्ण योगदान किया है। आपके इस सारस्वत अनुष्ठान से प्रभावित हो जगद्गुरुरामानंदाचार्यपदप्रतिष्ठित श्रीरामनरेशाचार्य जी ने २०१० ई. के 'ज.गु.रामानन्दाचार्य पुरस्कार' से आपको अलंकृत किया।

सम्प्रति हरिद्वार में रहते हुए आप शताधिक शिष्यों को निःशुल्क शिक्षा प्रदान करते हैं। आप के सहज पांडित्य का संस्कृत जगत सदैव ऋणी रहेगा।

आचार्य वशिष्ठ त्रिपाठी, काशी (उ.प्र.)

आचार्य वशिष्ठ त्रिपाठी न्याय, वैशेषिक दर्शन के प्रकाण्ड पंडित के रूप में

ख्यात लब्ध हैं। काशी हिन्दू विश्वविद्यालय बनारस तथा सम्पूर्णानंद संस्कृत वि.वि., वाराणसी में आप पांडित्य के साथ सिद्ध और प्रसिद्ध अध्यापक के रूप में जाने जाते हैं। सम्पूर्णानंद सं.वि.वि. के आचार्य एवं विभागाध्यक्ष के रूप में आप सेवा निवृत्त हुए हैं। आप की वृहद शिष्य मंडली आपके अद्भुत अध्यापन क्षमता का प्रमाण है।

न्याय-दर्शन के सूर्य पं. बदरीनाथ शुक्ल के प्रातिभ एवं प्रिय शिष्यों में आप अग्रगण्य हैं। विशिष्टाद्वैत दर्शन की अप्रतिम प्रतिभा महामहिम रंगाचार्य जी महाराज के आप शिष्य और वंशावतंश भी हैं। ज.गु. रामानंदाचार्य पदप्रतिष्ठित श्रीरामनरेशाचार्यजी के आप विद्यागुरु भी हैं। आपको 'ज.गु. रामानंदाचार्य पुरस्कार' प्रदान कर अस्मादाचार्य श्रीरामनरेशाचार्य जी महाराज ने गुरु-शिष्य की पारम्परिक मर्यादा का ही अनुपालन किया है। आप की विनम्रता, वैदुष्य सरलता और विलक्षण प्रतिभा से वर्तमान आचार्य भी प्रभावित हैं।

डॉ. विवेकी राय, गाजीपुर (उ.प्र.)

डॉ. विवेकी राय का जन्म सन् १९२४ ई. में गाजीपुर जनपद के सोनवानी गाँव में हुआ था। डॉ. राय हिन्दी साहित्य की कई गद्यविधाओं के सम्मानित लेखक हैं। वयोवृद्ध ज्ञानवृद्ध डॉ. राय ने हिन्दी गद्य की कई विधाओं में अपनी लेखनी का वर्चस्व स्थापित किया है। निरन्तर छह दशकों से डॉ. राय सर्जना की दुनिया में एक समर्थ कथाकार के रूप में जाने जाते हैं। हिन्दी के साथ भोजपुरी में भी आपकी कई उत्कृष्ट रचनाएँ हैं। कहानी, उपन्यास, भोजपुरी, ललित निबन्ध, रिपोर्ताज, फीचर इत्यादि विधाओं के आप अन्यतम कथाकार माने जाते हैं। 'मंगल भवन' उपन्यास राष्ट्रीयता की भावना को जागृत करने वाला महत्वपूर्ण कथा ग्रन्थ है। आपके लम्बे साहित्यिक अवदान को देखते हुए श्रीमठ के वर्तमानाचार्य श्री रामनरेशाचार्य जी महाराज ने सन् २०१२ का 'ज.गु. रामानन्दाचार्य पुरस्कार' आपको प्रदान किया। नाम के अनुरूप आपने साहित्य में भी विवेकी दृष्टि की स्थापना की है।

आप जनसामान्य से जुड़े कथाकार हैं। 'मनबोध मास्टर की डायरी' आपका अत्यंत लोकप्रिय फीचर रहा है। गत दो दशकों तक उसकी चर्चा हर चौपाल पर होती रहती थी। आज भी आप निरंतर सर्जनारत हैं। आप आजीवन पी.जी. कालेज, गाजीपुर में अध्यापन से जुड़े रहे हैं।

आचार्य प्रभुनाथ द्विवेदी, काशी (उ.प्र.)

प्रो. प्रभुनाथ द्विवेदी का जन्म २५ अगस्त १९४७ ई. में मीरजापुर जनपद के भैंसा (कछवा) में हुआ था। आपकी शिक्षा-दीक्षा काशी में हुई। प्रो. द्विवेदी हिन्दी, संस्कृत और अंग्रेजी भाषा के ज्ञाता हैं। वे मूलत: विज्ञान के विद्यार्थी हैं फिर भी संस्कृत

साहित्य के प्रति उनकी गहन अभिरुचि है। हिन्दी और संस्कृत में आप द्वारा कई पुस्तकों का सृजन हुआ है। बत्तीस ग्रन्थ प्रकाशित हैं। प्रो. द्विवेदी गतवर्ष महात्मा गाँधी काशी विद्यापीठ, वाराणसी के संस्कृत विभाग के प्रो. पद से सेवानिवृत्त हुए। आप दो विश्वविद्यालयों के विजिटिंग प्रोफेसर भी रह चुके हैं।

सम्प्रति आपके कई महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ रामावत सम्प्रदाय पर प्रकाशित हुए हैं। 'श्रीरामानंदचरितम्' और 'श्रीरामानंदसतसई' सद्यः प्रकाशित ग्रंथ हैं। आपकी सारस्वत साधना से श्रीमठ अभिभूत है। वर्ष २०१३ का 'ज.गु.श्रीरामानंदाचार्य पुरस्कार' आपको प्रयाग में महाराजश्री की सन्निधि में प्रदान किया गया।

सप्तशताब्दी पर प्रकाशित ग्रंथ

जगत्गुरु रामानन्दाचार्य १४वीं-१५वीं शती के सर्वाधिक ख्याति प्राप्त धर्मनायक के रूप में विश्रुत हैं। संस्कृत भाषा में उनके कई ग्रन्थ मिलते हैं जो सम्प्रदाय के स्वरूप का निर्धारण करते हैं। हिन्दी भाषा में प्राय: पाँच ग्रन्थों का उल्लेख प्राप्त होता है जिनमें उनकी प्रगतिशील भावधारा का प्रकटीकरण हो सका है। वैदुष्य से मण्डित तथा महानायकत्व से परिपूर्ण उनका व्यक्तित्व कालान्तर में कई शताब्दियों तक लोगों को सद्मार्ग पर चलने तथा राम की उपासना करने की प्रेरणा प्रदान करता रहा है। बहुदेवोपासना को बहुत अर्थों में श्रीराम तक सीमित कर देने में उन्हें महत्त्वपूर्ण सफलता मिली थी। ऐसे महिमामण्डित व्यक्तित्व के ऐतिहासिक सप्तशताब्दी वर्ष (१२९९-२००० ई.) पर जगत्गुरु रा. पद प्रतिष्ठित श्रीरामनरेशाचार्य महाराज की सन्निधि में श्रीमठ पंचगंगा काशी से कई ग्रन्थों का प्रकाशन हुआ था। उनका विवरण क्रमश: नीचे दिया जा रहा है। ज्ञातव्य है कि सभी ग्रंथों की वैदुष्यपूर्ण भूमिका श्रीरामनरेशाचार्य जी द्वारा लिखी गयी है–

१. श्रीराम-सहस्रनामस्तोत्रम् (सहस्रनामावली सहित)

सनातन धर्म में श्रीरामसहस्रनाम स्तोत्र के पारायण और सहस्र नाम मन्त्रों से तुलसीदल प्रभृति प्रियवस्तु श्रीरामचरणार्पण की परम्परा चली आ रही है। उसी क्रम में इस लघुग्रन्थ का प्रकाशन हुआ है। वर्षों से श्रीरामसहस्रनामस्तोत्र की दुलर्भता को ध्यान में रखते हुए पं. श्रीजगन्नाथ शास्त्री तैलंग श्रीकमलेश झा, श्रीविशेश्वर शास्त्री द्राविड़, श्रीमनोहर आचार्य, श्रीगणेश नारायण पालिन्दे तथा श्रीविश्वनाथ नारायण पालिन्दे जैसे मनीषियों की शोध वृत्ति ने भगवान श्रीराम के सहस्रनामों की नामावली इस पुस्तक में संग्रहीत कर दी है। एक पुस्तक में भगवान् राम के इतने नामों का संग्रह ही इस पुस्तक को अद्वितीय बना देता है साथ ही साधकों को श्रीरामनाम की माला भी प्रदान कर देता है।

२. श्रीमठोस्तोत्र कुसुमांजलि

वैदिक सनातन धर्म में स्तुतिपाठ का विशिष्ट महत्त्व है। भक्तिमार्ग में इसकी महत्ता और भी श्रेयस्करी है। भगवद्गुणों का गायन भक्ति के श्रेष्ठ साधनों में स्वीकृत है। उक्त सभी भावों की सम्पूर्ति इस पुस्तक से हो जाती है। श्रीसम्प्रदाय (श्रीरामानन्द सम्प्रदाय) में स्तुतियों का न कोई निश्चित क्रम था और न स्तुतियाँ ही निश्चित थीं। वर्तमान

पीठाचार्य श्रीरामनरेशाचार्य का ध्यान प्रथमतः इधर गया। उन्हीं की प्रेरणा और प्रायोजन से श्रीमठ की स्तुतियों का यह स्वरूप सबके समक्ष आया। भूमिका में उन्होंने यह संकेत दिया है कि मठ की मर्यादा तथा परम्परा के अनुरूप इसकी स्तुति परम्परा नहीं मिलती है। यहाँ तक कि 'आरती कीजै हनुमान लला' वाली प्रार्थना की भी परम्परा अविछिन्न नहीं है। ग्यारह अध्यायों की इस पुस्तक में विभिन्न ग्रन्थों से श्रीराम जी, हनुमान, स्वामी रामानन्द, चरणपादुका, गुरुवन्दना, श्रीरामानन्द चालीसा इत्यादि का संग्रहण कर सम्प्रदाय के आचारपूर्वक वंदना में महत्त्वपूर्ण कार्य किया गया है। श्रीमती स्नेह जोशी तथा श्री एम.एल. जोशी के सौजन्य से यह महत्त्वपूर्ण कार्य संपादित हो सका है।

३. श्रीरामरक्षास्तोत्रम्

ईश्वर के पालक स्वरूपों में श्रीराम का स्वरूप सर्वाधिक दीर्घायु, सरल, भक्तवत्सल तथा आकर्षक है। अतः भक्तों का विशाल समुदाय श्रीराम से ही रक्षा का गुहार करता है। यही कारण है कि परम दयालु भवगान् शंकर ने संसार के समस्त जीवों के लिए परमऋषि विश्वामित्र को निमित्त बनाकर रामरक्षा स्तोत्र का उपदेश दिया। इस कवच से मण्डित होकर हमें अपने दिव्य जीवन यात्रा को संचालित करना चाहिए। यह श्रीबुधकौशिक रचित ग्रन्थ है। श्रीमुद्गलाचार्य के संस्कृत भाष्य का पं. जगन्नाथ शास्त्री तैलंग ने हिन्दी अनुवाद प्रस्तुत किया है। यह संस्कृत भाष्य विस्तृत भावगाम्भीर्य एवं भगवत स्वरूप की वस्तुपरक व्याख्या प्रस्तुत करता है। श्रीजगन्नाथ शास्त्री तैलंग ने इसका हिन्दी अनुवाद कर भक्तों और साधकों के लिए सुगम तथा पठनीय बना दिया है। इस संस्करण में संस्कृत भाष्य के साथ ही अगस्त्य संहिता का श्रीराम रक्षायन्त्रराज संलग्न है। परिशिष्ट में आनन्दरामायण सम्मत रामरक्षाध्याय भी है। प्रारम्भ में पाठ करने हेतु रामरक्षास्तोत्र (मूलमात्र) भी सम्मिलित है।

४. रामानन्दरामरसमाते

इस पुस्तक के सम्पादक डॉ. उदय प्रताप सिंह हैं। इसमें कुल पन्द्रह लेख संग्रहीत हैं। पूरी पुस्तक में राम संस्कृति की व्यापकता पर विद्वान लेखकों ने प्रकाश डाला है। श्रीराम का वैदिक, पौराणिक, ऐतिहासिक तथा राम संस्कृति के राष्ट्रीय-अन्तर्राष्ट्रीय सभी स्वरूपों पर विचार होने के कारण यह श्रीमठ प्रकाशन की पहली अनूठी कृति मानी जाती है। रामभक्ति साहित्य के शीर्ष विद्वान् प्रो. भगवती प्रसाद सिंह, श्रीराम को आधुनिक सन्दर्भ में देखने-परखने वाले श्रीनरेन्द्र कोहली, रामकथा को रामायण सम्मेलनों से पूरे विश्व में पुनर्जीवित करने वाले श्रीलल्लन प्रसाद, प्रो. रिनपोछे, डॉ. उदय प्रताप सिंह जैसे चिन्तको के विचारों ने इस पुस्तक को संग्रहणीय बना दिया है। श्रीरायकृष्णदास, डॉ. ठाकुरप्रसाद वर्मा, श्रीविशुद्धानन्द पाठक, प्रो.

युगेश्वर के लेखों से यह पुस्तक राम साहित्य पर अपनी अलग ही पहचान सृजित करती है। स्वदेशी-विदेशी विद्वानों का वैचारिक संयोग इस पुस्तक को विशेष गरिमा प्रदान करता है।

५. ज.गु. स्वामीरामानन्द के शिष्य और उपलब्धि

सप्तशताब्दी पर प्रकाशित ग्रन्थों में इसका महत्त्वपूर्ण स्थान है। इसके सम्पादक श्री सुधाकर पाण्डेय हैं जो नागरी प्रचारिणी सभा काशी के आजीवन प्रधानमन्त्री थे। इस ग्रन्थ में स्वामी रामानन्द पर प्रामाणिक सामग्री उपलब्ध है। ज्ञातव्य है कि नागरी प्रचारिणी सभा द्वारा ज.गु. रामानन्द और उनकी हिन्दी रचनाओं पर अकादमिक रूप से पहली बार शोध हुआ था। पुस्तक के आरम्भ में भारतीय दार्शनिक चिन्तन पर लेख हैं तदनंतर स्वामी जी की हिन्दी रचनाएँ—पाण्डुलिपियों के पुष्ट आधार पर संग्रहीत हैं। इस पुस्तक में हिन्दी साहित्य के बड़े-बड़े विद्वानों के आलेख हैं। इसकी उपयोगिता और महत्त्व इसी से बढ़ जाता है। आचार्यरामचन्द्र शुक्ल, अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध', पं. गोपीनाथ कविराज, पं. बलदेव उपाध्याय, डॉ. पीताम्बर दत्त बड़थ्वाल, प्रो. भगवती प्रसाद सिंह, पं. परशुराम चतुर्वेदी, माताप्रसाद गुप्त जैसे मनीषियों के आलेख ने पुस्तक की उपयोगिता बढ़ा दी है। साथ ही आचार्य रामानन्द पर पुष्कल सामग्री भी प्रदान की है। इसमें रामानन्द और उनके शिष्यों का पूरा वृत्तान्त एक ही साथ आ गया है।

६. रामतापनीयोपनिषद्

उपनिषद् विद्या को ब्रह्म विद्या कहा जाता है। उपनिषदों में ब्रह्मविद्या या आत्मविद्या की जिस प्रकार विस्तृत व्याख्या सरल भाषा में की गई है वह संसार के किसी वाङ्मय या साहित्य में उपलब्ध नहीं है। इस तथ्य की प्रशंसा भारतीय तथा भारतीयेतर विद्वानों ने की है। रामतापनीयोपनिषद् भी उन्हीं में से एक है।

तापनीय उपनिषद् की एक परम्परा है जिसमें कुछ विशिष्ट उपनिषदों की गणना की जाती है—नृसिंहतापनीय, गोपालतापनीय और रामतापनीय। इनमें श्रीरामतापनीय विशिष्टता से परिपूर्ण है। इसमें बृहस्पति-याज्ञवल्क्य संवाद, याज्ञवल्क्य-भारद्वाज संवाद आदि द्वारा रामनाम मन्त्र की महिमा प्रदर्शित की गयी है। काशी में विश्वेश्वर की महिमा महान् है। पर रामनाम तारक मन्त्र से वह द्विगुणित हो जाती है। श्रीरामनाम का माहात्म्य और तारक मन्त्र का यह लोकोत्तर वैशिष्ट्य श्रीरामतापनीयोपनिषद् का महत्त्व सर्वोपरि कर देता है। आज भारतीय साधु समाज-विशेषत: वैरागियों में रामनाम का महत्त्व सर्वत: बढ़ता जा रहा है। इसी के साथ उपनिषदों की लम्बी श्रृङ्खला में रामतापनीयोपनिषद् को भी विशेष महत्त्व दिया जाने लगा है। यह उपनिषद् भी

अथर्ववेद से सम्बद्ध है। इसके दो खण्ड है पूर्वतापनीय और उत्तरतापनीय।

आचार्य मुरलीधर पाण्डेय ने उक्त उपनिषद् का हिन्दी भाषा में व्याख्या कर प्रणतजनों का बहुत उपकार किया है। इसमें मुख्यरूप से राम की महिमा वर्णित है। इसके साथ देवों के चरित्र से भी सीखने की अद्‌भुत आख्ययिकाएँ इन उपनिषदों के प्रतिपाद्य है।

७. श्रीजगद्गुरुरामानन्दाचार्यशतकम्

यह पुस्तक पं. शिवजी उपाध्याय-रचित है। शिवजी उपाध्याय संस्कृत के प्रकाण्ड विद्वान हैं। पुस्तक का हिन्दी अनुवाद प्रो. प्रभुनाथ द्विवेदी ने किया है। स्वामीरामानन्द के जीवन वृत्त से उनकी साधना तक इस पुस्तक में एक सौ छह छन्द लालित्यपूर्ण शैली में विरचित हैं। स्वामी रामानन्द शिव की काशी में रामभक्ति का मुख्यालय स्थापित कर सम्प्रदायों में समन्वय का युगांतरकारी सन्देश देते हैं। अपनी साधना, सेवाभक्ति, चमत्कार, लोकनायकत्व, प्रातिभ ज्ञान, आचरण मूलक जीवन धारा, समन्वयी दृष्टि तथा समरसी चेतना से स्वामी रामानन्द ज.गु. से लेकर धर्म के 'द्वितीय सेतु' तक की उपाधियों को सहजतः अर्जित करते चले गए। परकीय सत्ता में भी हिन्दू समाज को त्राण देने का अद्‌भुत कार्य स्वामीरामानन्द संपादित करते हैं। इसलाम धर्म में गए हिन्दुओं को अपने तपबल से पुनः सनातन धर्म में सम्मिलित कर उन्होंने महनीय समाज सेवा तथा देश सेवा की थी। इन समस्त तथ्यों का सविस्तार वर्णन इस पुस्तक में लालित्यपूर्ण ढंग से किया गया है। हिन्दी अनुवाद का लालित्य इस पुस्तक के प्रति पाठकवर्ग का आकर्षण बढ़ा देता है।

अन्त में नौ छन्दों द्वारा रामाष्टक रचकर प्रो. शिवजी उपाध्याय ने रामभाव की चारुता में वृद्धि की है।

८. प्रो. रामशरण शर्मा अभिनन्दन ग्रन्थ

भारतीय संस्कृति एवं संस्कृत भाषा के संरक्षण एवं संवर्धन हेतु समर्पित प्रो. रामकरण शर्मा की गणना मूर्धन्य विद्वान् के रूप में की जाती है। संस्कृत भाषा के अध्ययन एवं अध्यापन-क्षेत्र में दिए गए अवदान के कारण प्रो. शर्मा को राष्ट्रपति सम्मान प्राप्त हुआ है। इसके अतिरिक्त अनेक सम्मानों से आप सम्मानित किए गए हैं। इस ग्रंथ के सम्पादक आचार्य कमलेशदत्त त्रिपाठी हैं।

आधुनिक युग में संस्कृत भाषा और साहित्य को प्रचारित प्रसारित करने में व्यक्ति के रूप किसी एक विद्वान् का नाम लिया जाय तो वह प्रो. रामकरण शर्मा हैं। अन्यान्य विदेशी एवं स्वदेशी संस्थानों को अपनी प्रतिभा से चमत्कृत तथा कार्य शैली से गतिमान करने वाले प्रो. शर्मा कई विश्वविद्यालयों के कुलपति, राष्ट्रीय स्तर के संस्कृत

डारेक्टर, विभिन्न विश्वविद्यालयों में एमेरिटस प्रो. तथा अतिथि वक्ता के रूप में समादृत रहे हैं। पंजाब, पूना, बिहार, सम्पूर्णानन्द सं.वि.वि.– वाराणसी, कोलंबिया, शिकागो, कैलिफोर्निया, इत्यादि विश्वविद्यालयों में आप ने अपने वक्तृत्व शक्ति और मेधा से संस्कृत की सेवा की है, सम्मान बढ़ाया है। अनेक विश्व संस्कृत सम्मेलनों द्वारा संस्कृत भाषा और साहित्य को जनप्रिय बनाने में आप की महनीय भूमिका रही है। संस्कृत, हिन्दी और अंग्रेजी भाषा पर आपका असाधारण अधिकार है।

इन समस्त गुणों से समलंकृत प्रो. रामकरण शर्मा का इस ग्रन्थ में पूर्ण विवरण प्रस्तुत किया गया है। ऐसे उत्कृष्ट संस्कृत सेवाव्रती तथा विद्या की दुनिया में शलाका पुरुष प्रो. शर्मा के आख्यान में यह अभिनन्दन ग्रन्थ प्राय: पचहत्तर विद्वानों तथा दो सौ साठ पृष्ठों का सहारा लेकर एक सच्चे मनीषी विद्वान् का समादर कर सका है। इस ग्रन्थ में संस्कृत संसार का ऐसा कोई भी व्यक्ति नहीं है जो प्रो. शर्मा के वैदुष्य के प्रभावित न हो।

९. किञ्च जाप्यम्

प्रो. राममूर्ति त्रिपाठी हिन्दी संस्कृत के प्रकाण्ड पंडित और प्रखर वाग्मी रहे हैं। उन्हीं द्वारा किंच जाप्यम् की विशद् व्याख्या की गई है।

आचार्य प्रवर स्वामी रामानन्दाचार्य ने प्रस्थान त्रयी पर 'आनन्दभाष्य' के साथ-साथ अनेक ग्रन्थों की रचना किया है जिसमें 'वैष्णवमताब्जभास्कर' का अन्यतम स्थान है। स्वामी रामानन्द के प्रवर शिष्य सुरसुरानन्दाचार्य ने उनसे वैष्णवजन सम्बंधित दश प्रश्न किए। उनका उत्तर ही 'वैष्णवमताब्जभास्कर' है। किञ्च जाप्यम् इसी में से एक प्रश्न की व्याख्या है। वे दश प्रश्न इस प्रकार हैं—१. तत्त्व क्या है? २. वैष्णवों का जाप्य क्या है? ३. इष्ट ध्यान क्या है? ४. मुक्ति का उत्तम साधन क्या है? ५. श्रेष्ठधर्म क्या है? ६. उसके कितने प्रकार हैं? ७. इसका लक्षण क्या है? ८. कालक्षेप किस तरह करना चाहिए? ९. कौन सा साधन मोक्षप्रद है? १०. वैष्णवों को कहाँ रहना चाहिए?

जाप्य क्या है? इसी एक प्रश्न की व्याख्या पं. राममूर्ति त्रिपाठी ने इस पुस्तक में की है। अनेक सन्दर्भो और शास्त्रों को समेटते हुए हिन्दी में की गयी यह व्याख्या उनके वैदुष्य को तो दर्शाती है साथ ही भक्तों को मानसिक खुराक भी प्रदान करती है। इस प्रश्न की व्याख्या एक सौ पचास पेज में करके प्रो. राममूर्ति त्रिपाठी ने 'वैष्णवमताब्जभास्कर' की ओर वैष्णवाचार्यों तथा वैष्णवों का ध्यान आकृष्ट किया है। श्रीमठ परिवार उनके इस वैदुष्य पूर्ण कार्य के प्रति श्रद्धावनत है।

१०. तीर्थराज प्रयाग और कुम्भमहापर्व

यह ग्रन्थ प्राय: २८५ पृष्ठों में विस्तृत डॉ. उदय प्रताप सिंह द्वारा सम्पादित है। इसके प्रधान सम्पादक प्रो. युगेश्वर हैं। यह दो खण्डों में विभाजित है। पहले खण्ड में प्रयाग की महत्ता, कुम्भ का मेला, उसकी ऐतिहासिकता, पौराणिकता आदि पर विस्तृत चर्चा की गयी है। प्रयाग के आश्रम, संतगण, विभूतियाँ, अकादमिक संस्थाएँ प्रथम खण्ड में समाहित हो सकी हैं।

दूसरे खण्ड में स्वामी रामानन्द का प्राकट्य धाम 'हरितमाधव मन्दिर' के नाम से विशेष आलोक बिखेर सका है। ज्ञातव्य है कि स्वामी रामानन्द का अवतरण प्रयाग की पुण्य भूमि पर ही हुआ था। अत: इस खण्ड में स्वामी जी का जीवनवृत्त-साधना, तपस्या और उनके उपास्य पर आलेख संग्रहीत हैं। साथ ही रामानन्द की साधना, भक्ति, सम्प्रदाय, आदि पर गम्भीर लेखों का संकलन हैं। इस पुस्तक से रामानन्द सम्प्रदाय के साथ प्रयाग माहात्म्य, कुम्भ की पवित्रता, सम्बद्ध अखाड़ों का विस्तृत विवरण तथा प्रयाग के त्रैकालिक (पौराणिक, मध्यकालीन, और आधुनिक) स्वरूप का परिचय भी मिल जाता है। यह सचित्र पुस्तक रामानन्द सम्प्रदाय के साथ अन्यान्य धार्मिक पक्षों पर भी पर्याप्त प्रकाश डालती है।

११. पायसपायी

आजीवन दुग्धपान कर एक सौ ग्यारह वर्ष की आयु प्राप्त करने वाले स्वामी रामानन्द को केन्द्रित कर लिखा गया जीवनीपरक उपन्यास 'पायसपायी' है। उपन्यासकार प्रसिद्ध साहित्यकार डॉ. दयाकृष्ण विजयवर्गीय 'विजय' हैं। वह कोटा (राजस्थान) के निवासी हैं। यह जीवनीपरक उपन्यास पाठकों में बहुत ही लोकप्रिय हुआ। प्रकाशन का एक वर्ष व्यतीत हुआ नहीं कि इसका प्रथम संस्करण समाप्त हो गया। ग्यारह प्रकरणों में लिखित यह उपन्यास स्वामी रामानन्द उनके द्वादश शिष्यों, चमत्कारों, उनके द्वारा किए गए कार्यों, रामभक्ति, इत्यादि को एक साथ प्रस्तुत करता है।

यह पुस्तक औपन्यासिक कला से परिपूर्ण है। जीवन वृत्त के साथ उनके प्रभामण्डल को इसमें समेटा गया है। कहा जा सकता है कि 'पायसपायी' के अध्ययन से स्वामी जी से सम्बद्ध इतिहास, चमत्कार, धर्म का स्वरूप, उनके द्वादशादित्यों की विचारधारा और संस्कृत एक साथ प्रतिबिम्बित हो सकी है। इसका अंग्रेजी अनुवाद भी सद्य: प्रकाशित हुआ है। यह उपन्यास स्वामीजी के प्रति जनभावनाओं का दस्तावेज जैसा प्रतीत होता है। इसे ज.गु. रामानंद का महाकाव्यात्मक आख्यान भी कह सकते है। इसका अंग्रेजी और संस्कृत अनुवाद अधोलिखित नामों से प्रकाशित है।

१२. Swami Ramanand : The PIoneer of Rambhakti

आचार्य देवर्षि कलानाथ शास्त्री ने 'पायसपायी' का ही है; पर प्रस्तुति, भाषाशैली द्वारा यह रचना मूल ग्रंथ का आभास कराती है। अंग्रेजी में अनुवादित होने से इस पुस्तक का दायरा तो बढ़ा ही अन्य भाषाभाषियों तक इसकी पहुँच भी बढ़ गई।

१३. श्रीरामानंदचारितम्

यह 'पायसपायी' का ही संस्कृत अनुवाद है। इसमें नामांतर के साथ वस्तुगत अंतर भी दिखाई पड़ता है। सरल, सहज प्रवाहयुक्त भाषा में यह अनुवाद स्वयं में एक मौलिक ग्रंथ का संकेत करता है। स्वामिवर्य रामानंद का जीवन चरित ही इतना विलक्षण था कि जिस भी भाषा में अनुवाद हो वह एक नवीनता का सृजन करते चलता है। अनुवादक प्रो. प्रभुनाथ द्विवेदी हैं।

१४. रामानंद विजय

यह डॉ. मंगलाप्रसाद रचित काव्यग्रंथ है। डॉ. प्रसाद काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग में रीडर थे। इस कृति में स्वामी रामानंद के धार्मिक सामाजिक कार्यों का विस्तृत मूल्यांकन हुआ है। साथ ही कालांतर में उनकी प्रभविष्णुता का विशद विवेचन भी है।

१५. श्रीरामानंदसतसई

यह प्रो. प्रभुनाथ द्विवेदी रचित सात सौ से अधिक दोहों वाली पुस्तक है। इस पुस्तक में स्वामी रामानंद के सम्पूर्ण जीवन, साधना, प्रभाव का काव्यमय वर्णन किया गया है। हिन्दी में सतसई परम्परा का विशेष महत्त्व है। अपभ्रंश में गाथासप्तसती से प्रारम्भ यह परम्परा रीतिकालीन हिन्दी साहित्य में पर्याप्त लोकप्रिय हुई है। प्रो. प्रभुनाथ द्विवेदी ने इस पुस्तक द्वारा एक दीर्घकालीन काव्यपरम्परा को जीवन्त कर दिया है।

—सम्पादक

सप्तशताब्दी पर डाक टिकट

स्वामीरामानंद

स्वामी रामानंद मध्यकालीन भारत के महान सामाजिक-धार्मिक पुनर्जागरण, भक्ति आंदोलन के अग्रणी प्रणेताओं में से एक थे।

बाल्यावस्था से ही रामानंद का झुकाव आध्यात्मिकता की ओर था। वे उन दिनों लोकप्रिय वैष्णव सिद्धांतों की ओर आकर्षित हुए। वे संत राघवानंद के शिष्य बने, जिनके शिष्यत्व में उनकी रहस्यवादी अंतर्दृष्टि को एक नई दिशा मिली।

काशी भ्रमण स्वामी रामानंद के जीवन का निर्णायक मोड़ सिद्ध हुआ। इसी यात्रा के दौरान आत्मा और परमात्मा के परस्पर संबंधों पर उनके विचारों को मूर्त रूप मिला था। उन्होंने महसूस किया कि भगवान की आराधना करने का हर व्यक्ति को अधिकार है और यह अवधारणा अनुचित थी कि ऐसा करने का अनन्य विशेषाधिकार केवल पुजारी वर्ग को ही था। उन्होंने अपने शिष्यों को यह शिक्षा दी कि "जो व्यक्ति भगवान के चरणों में शरण लेता है वह जात-पाँत के बंधनों से मुक्त हो जाता है।" स्वामीजी के सम्मान में एक स्मारक बनाया गया था, जो आज भी काशी में है।

स्वामी रामानंद के विचार निर्विवाद रूप से मध्यकालीन भारत के सामाजिक परिवेश को देखते हुए क्रांतिकारी थे। उनके विचारों का प्रभाव केवलधर्म पर ही नहीं समाज पर भी पड़ा। उनके इस संदेश ने कि सभी व्यक्ति समान हैं और व्यक्ति को मानवता से सच्चा प्रेम करना चाहिए, तथाकथित निम्नजातियों को अपने सम्मान व आत्म विश्वास को पुनः प्राप्त करने में सहायता की।

स्वामी रामानंद के उदारवादी उपदेशों ने बैरागी संप्रदाय को प्रेरित किया। इस संप्रदाय ने उनको अपना आचार्य माना और उनके दिखए मार्ग का अनुसरण किया। उनके उपदेश गुरु ग्रंथ साहब में भी संकलित हैं, जो सिख धर्म का पवित्र ग्रंथ है।

रामानंद के अनेक शिष्य थे जो भारत के विभिन्न भागों में भक्ति मार्ग की व्याख्या करने में संलग्न थे। ऐसा माना जाता है कि कबीर, रविदास, सेन, धन्ना और पीपा उनके अनुयायी थे। यद्यपि इनमें से कुछ उनके समकालीन नहीं थे।

डाक विभाग स्वामी रामानंद पर एक डाक-टिकट जारी करते हुए प्रसन्नता का अनुभव कर रहा है।

आभार

डाक-टिकट	:	प्रस्तावकों द्वारा उपलब्ध कराई गई सामग्री पर आधारित
प्रथम दिवस आवरण एवं विरूपण	:	अलका शर्मा

●

SWAMI RAMANAND

Swami Ramanand was on among the leading lights of the Bhakti movement, the great socio-religious renaissance of medieval India.

Ramanand was spiritually inclined from his early childhood. He was drawn to the Vaishnavaite doctrines which were popular those days. He became a disciple of Saint Raghavananda, under whom his mystic insights received a new direction.

A pilgrimage to Kashi proved to be a turning point in the life of Swami Ramanand. It was during this voyage that his thoughts on the relationship between Man and God took definite shape. He realized that the prevailing concept of the priestly class enjoying the exclusive privilege to do so was wrong. He taught his disciples that, "A person who takes refuge at God's feet frees himself from the bonds of caste-divisions". A memorial was built as a mark of respect for the Swami, that stands in Kashi to his day.

Swami Ramanand's ideas were no doubt revolutionary in the social milieu of medieval India. The impact of his ideas was not confined to religion, but extended to the social realm as well. His message that all human beings are equal and that one sould truly love humanty helped people of the so-called lower castes to rediscover their dignity and self-belief.

Swami Ramanand's liberal teachings inspired a sect of Bairagis(renouncers). This sect adopted him as their Acharya and followed the path shown by him. His thoughts have also found a place in the Guru Granth Sahib, the holy text of the Sikh religion.

Ramanand has several disciples who went on to expound the way of Bhakti in different parts of India. Kabir, Ravidas, Sain, Dhanna and Pipa are believed to have been his followers, thought some of them were not his contemporaries.

The Department of Posts is happy to issue a postage stamp on Swami Ramanand.

Credits:

Stamp	:	Based on the material supplied by the sponsors
FDC & Cancellation	:	Alka Sharma

●

भारतीय डाक विभाग

DEPARTMENT OF POSTS INDIA





स्वामी रामानंद
SWAMI RAMANAND

7

अखिल भारतीय जगद्गुरु रामानन्दाचार्य
सप्त शताब्दी महोत्सव समिति, श्रीमठ, पंचगंगा, वाराणसी

भारत के राष्ट्रपति

श्री के. आर. नारायणन

द्वारा

स्वामी रामानन्द

पर

स्मारक डाक टिकट विमोचन के औपचारिक समारोह में
राष्ट्रपति भवन, नई दिल्ली में
आपको सादर आमंत्रित करती है

दिनांक : 4.2.2002, सोमवार

समय : 6.30 सायं

समारोह में श्री तपन सिकदर, राज्य मंत्री, संचार मंत्रालय, भारत सरकार
एवं श्री दिग्विजय सिंह, मुख्य मंत्री, मध्य प्रदेश उपस्थित रहेंगे

दूरभाष :
3010489
3016683

निर्देश
निमंत्रण पत्र अहस्तांतरणीय है। इसे साथ लायें।
कृपया अपने साथ बैग, सेलफोन, पेजर, कैमरा न लायें
एवं अपना स्थान 6.00 बजे तक ग्रहण कर लें।

फिलैटलिक जमा खाता

(१) फिलैटलिक जमा खाताधारकों को नई डाक-टिकटों/प्रथम दिवस आवरणों/ विवरिणकाओं तथा नई डाक लेखन-सामग्री की आपूर्ति के लिए फिलैटलिक ब्यूरो को स्थायी अनुदेश देने की सुविधा प्राप्त है। खाता प्रारंभ में २००/- रु. जमा करके खोला जा सकता है तथा इसके बाद खाते में जमा की जाने वाली राशि भी २००/- से कम नहीं होनी चाहिए।

(२) विदेशी ग्राहक भी निदेशक (फिलैटली)ए मुंबई जीपीओ-४००००१ के पास प्रारंभ में १०००/- रु. के बराबर विदेशी मुद्रा जमा करके खाता खोलकर इस सुविधा का लाभ उठा सकते हैं तथा इस खाते में बाद में जमा की जाने वाली राशि भी १०००/- रु. के बराबर विदेशी मुद्रा से कम नहीं होनी चाहिए।

(३) घरेलू व विदेशी ग्राहक अग्रिम भुगतान करके फिलैटलिक ब्यूरो से मेल आर्डर के माध्यम से फिलैटलिक मदें डाक द्वारा भी मँगवा सकते हैं।

(४) आवेदन-प्रपत्र और फिलैटलिक जमा खाते के बारे में अधिक जानकारी देश के सभी फिलैटलिक ब्यूरो में उपलब्ध है।

•

PHILATELIC DEPOSIT ACCOUNT

(i) Philatelic Deposit Account holders have the facility of placing standing order on the Philatelic Bureau for supply of New Stamps, First Day Covers, Brochures as well new Postal Stationary with advertisement. An account may, be opened with initial and subsequent deposits not less than Rs.200/-

(ii) Foreign customers can also avail the facility by opening an account with Director (Philately), Mumbai GPO-400001 with an initial and subsequent deposits in foreign exchange equivalent to Rs.1000/-

(iii) Philatelic items can also be obtained by post through mail order on the Philatelic Bureau against advance payment by domestic and overseas customers.

(iv) Application forms and more details about the Philatelic Deposit Account Scheme are available at all the Philatelic Bureaux of the country.

भारतीय डाक/Indian Post
तकनीकी आँकड़े
TECHNICAL DATA

जारी करने की तारीख Date of Issue	4.02.2002
मूल्य वर्ग Denomination	400पैसे/P
कुल आकार Overall size	2.90 x 3.91 सें.मी. cms.
मुद्रण आकार Printing Size	2.90 x 3.91 सें.मी. cms.
प्रतिशीट संख्या Number Per Issue sheet	40
रंग Colour	चार रंगी Four Colour
छिद्रण Perforation	13x13
कागज Paper	बिना जलचिह्न वाला आयातित स्टैम्प कागज Imported un w/m stamp paper
मुद्रण प्रक्रिया Printing Process	फोटो ऑफसेट Photo Offset
मुद्रित डाक-टिकट Stamps Printed	चार लाख 0.4 million
मुद्रक Printer	ईगल प्रेस प्राइवेट लि. Eagle Press Private Ltd.

मूल्य : रु. २.०० **Price: Rs. 2.00**

Designed and produced by the Department of Posts and printed at The Daily Tej Pvt. Ltd., New Delhi

No.27-2/2002-Phil
Government of India
Ministry of Communications Department of Post
Dak Bhavan, Sansad Marg, New Delhi-110001

Dated: 10/1/2002

To,
Dr. (Smt.) Govindi Panwar
Jagadguru Ramanandacharya Saptashatabdi Mahotsava Samiti,
"Shrimath" Panchagangaghat, Varanasi-221001

Sub : Release of Commemorative Stamp on Swami Ramanand.

Sir,

This is regarding release of the commemorative stamp on Swami Ramanand on 4.2.2002. In this connection, it is requested to kindly intimate whether you propose to organize the formal function for the release of the above stamp. If so, the details of the function may kindly be sent to this office at the earliest.

A copy of the guidelines of the release function is sent enclosed for ready reference.

Encl: One

Yours sincerely
(P.N. Ranjit Kumar)
Asstt. Director General (Phil)

Copy forwarded to Chief PMG, U.P. Circle, Lucknow for information. It is requested to kindly liaise with the sponsors to obtain the details of the functions to further send to this office on priority..

(P.N. Ranjit Kumar)
Asstt. Director General (Phil)

मध्य प्रदेश सूचना केन्द्र
M.P. Information Centre

प्रेस विज्ञप्ति
Press Release

स्वामी रामानंद पर स्मृति डाक टिकट जारी

नई दिल्ली, ४ फरवरी २००२। जगद्गुरु रामानंदाचार्य स्वामी रामानंद की ७०१वीं जयन्ती पर राष्ट्रपति श्री के.आर. नारायणन ने आज यहाँ राष्ट्रपति भवन में आयोजित गरिमापूर्ण समारोह में सामाजिक-धार्मिक पुनर्जागरण एवं भक्ति आन्दोलन के प्रणेता स्वामी रामानन्द पर डाक टिकट जारी किया। इस अवसर पर वर्तमान जगद्गुरु स्वामी रामनरेशाचार्य ने अपने आशीष वचनों में स्वामी रामानन्द जी के समता भाव की महती आवश्यकता निरूपित की। उन्होंने कहा कि न तो सबका रूप रंग एक किया जा सकता है और न ही सबको विद्वान् अथवा धनवान बनाया जा सकता है किन्तु प्राणी मात्र में समता का भाव जागृत कर उन्हें दीनता, हीनता और मलिनता त्यागकर समाज में रचनात्मक योगदान हेतु प्रेरित किया जा सकता है।

इस अवसर पर मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री एवं अखिल भारतीय जगद्गुरुरामानन्दाचार्य सप्तशताब्दी महोत्सव समिति, श्रीमठ, पंचगंगा के अध्यक्ष श्री दिग्विजय सिंह ने अपने स्वागत भाषण में स्वामी रामानंद जी द्वारा चौदहवीं शताब्दी के जात-पाँत में बटे भारतीय समाज को एक सूत्र में बाँधने के क्रान्तिकारी योगदान का स्मरण किया। उन्होंने कहा कि उस समय जब समाज में भारी छुआछूत थी ऐसे में समाज के अलग-थलग पड़े वर्गों से कबीर, रविदास, धन्ना को शिष्य के रूप में अपनाकर स्वामी जी ने उनकी प्रतिभा को उत्कृष्टता प्रदान की। केन्द्रीय संचार राज्य मंत्री श्री तपन सिकदर ने भी इस अवसर पर स्वामी रामानन्द जी के महान कार्यों का स्मरण किया तथा कहा कि डाक टिकट के माध्यम से उनका सन्देश घर-घर तक पहुँचेगा।

समारोह में स्वामी विश्वनाथ जी महाराज, पूर्व केन्द्रीय मंत्री श्री विद्याचरण शुक्ल, पंजाब की पूर्व मुख्यमंत्री श्रीमती राजेन्द्र कौर भट्टल सहित श्रद्धालु धर्मावलम्बी, समाजसेवी तथा बुद्धिजीवी उपस्थित थे।

मध्य प्रदेश सूचना केन्द्र
M.P. Information Centre

प्रेस विज्ञप्ति
Press Release

Memorial Stamp on Swami Ramanand Released

New Delhi, February 4, 2002. On the occasion of 701th year Birth Anniversary of Jagadguru Ramanandacharya Swami Ramanand, President Shri K.R. Narayanan today released a memorial stamp of Swami Ramanand at Rashtrapati Bhawan. Swami Ramanand was a social Religious, Thinker and was behind the Bhakti Movement of medival India. On this occasion Jagadguru Ramanandacharya Swami Ramnareshacharya spoke about their sampraday and its need in today's world. He said that Swamiji contribution to the society is invaluable; he united the masses irrespectives of their caste, colour or creed under one roof.

Madhya Pradesh Chief Minister Shri Digvijay Singh and the Chairman of the Centenary Celebration Committee gave the welcome address. Shri Singh recalled the works of Swami Ramanand Ji in the 14th century who united the divided Indian community into one. At that time, he said that evil like untouchability was spreading disciples like Kabir, Ravidas and Dhanna spread the message of Swami Ji among the masses. Union Minister of State for Communication Shri Tapan Sikdar also remembered the contribution made by Swami Ramanandji to the society and said that through stamp Swami Ji's message will spread among the masses.

On this occasion Swami Vishwanath Ji Maharaj, Ex. Union Minister Shri V.C. Shukla, Ex. Chief Minister of Punjab Smt. Rajender Kaur Bhattal, Members of Ramanand Sampraday, Social Workers and Intellectuals from various fields were present.

स्वामी रामानंद पर स्मारक डाक टिकट का विमोचन माननीय संचार एवं सूचना प्रौद्योगिकी राज्य मंत्री के लिए मसौदा भाषण

स्थान : राष्ट्रपति भवन, नई दिल्ली दिनांक : ४/२/२००२

स्वामी रामानंद मध्यकालीन भारत के महान सामाजिक, धार्मिक पुनर्जागरण, भक्ति आंदोलन के महत्वपूर्ण सतों में से एक थे।

देश के इतिहास में भक्ति आंदोलन का अत्यधिक महत्व है क्योंकि इसने धार्मिक परिवेश में सुधार लाने के अलावा सामाजिक व्यवस्था में मौजूद विषमताओं और कुप्रथाओं के विरुद्ध क्रांति का सूत्रपात किया। भक्ति आंदोलन के प्रणेता मानव मात्र की समानता में विश्वास रखते थे और उन्होंने जातिगत भेदभाव का विरोध किया। उनके उपदेशों ने तथाकथित निचली जाति के लोगों को अपने सम्मान एवं आत्म विश्वास को पुनः प्राप्त करने में सहायता की।

भक्ति आंदोलन की दो अलग-अलग धाराएँ थीं-उत्तरी और दक्षिणी। स्वामी रामानंद को इन दोनों धाराओं के बीच की एक प्रमुख कड़ी के रूप में जाना जाता है।

स्वामी जी मानते थे कि भगवान की पूजा करने का हर व्यक्ति को अधिकार है और यह अवधारणा अनुचित है कि ऐसा करने का विशेष अधिकार केवल पुजारी वर्ग को ही है। उन्होंने अपने शिष्यों को यह शिक्षा दी कि जो व्यक्ति भगवान के चरणों में शरण लेता है वह जाँत-पाँत के बन्धनों से मुक्त हो जाता है। इसमें कोई सन्देह नहीं है कि स्वामी रामानंद के विचार मध्यकालीन भारत के सामाजिक परिवेश के लिए क्रांतिकारी थे। उनके विचारों का प्रभाव केवल धर्म पर ही नहीं पड़ा, अपितु सामाजिक जीवन भी इससे प्रभावित हुआ।

स्वामी रामानंद के उदारवादी उपदेशों ने बैरागी सम्प्रदाय को प्रेरित किया। इस सम्प्रदाय ने उनको अपना आचार्य माना और उनके दिखाये मार्ग का अनुसरण किया। उनके उपदेश सिख धर्म के पवित्र गुरु ग्रथ साहब में भी संकलित हैं। रामानंद के कबीर, रविदास, सेन, धन्ना और पीपा जैसे अनेक शिष्य थे। इन लोगों ने भारत के कोने-कोने में भक्ति मार्ग का प्रचार-प्रसार किया।

डाक विभाग स्वामी रामानंद पर स्मारक डाक-टिकट जारी करके प्रसन्नता का अनुभव करता है। जैसाकि हम सभी जानते हैं, डाक टिकटें संप्रेषण का प्रभावशाली माध्यम हैं। आज जारी किया जा रहा डाक टिकट जब पत्रों पर लगकर देश के कोने-

कोने में हजारों लोगों तक पहुँचेगा, तो स्वामी रामानंद के संदेश का प्रचार भी करेगा। डाक-टिकट जारी करने का यह अवसर इसलिए भी और स्मरणीय हो जाता है कि आज हमारे बीच में माननीय राष्ट्रपति जी मौजूद हैं। हमें खुशी है कि मध्य प्रदेश के मुख्यमंत्री श्री दिग्विजय सिंह भी आज यहाँ उपस्थित हैं।

इन शब्दों के साथ मैं स्वामी रामानंद पर स्मारक डाक-टिकट जारी करने के लिए माननीय राष्ट्रपति जी को सादर आमंत्रित करता हूं।

धन्यवाद।

Programme for release of commemorative Stamp at Rashtrapati Bhawan, on Monday February 4, 2002

17.45 HrsThe guests arrive at the Forecourt and are conducted to the Yellow Drawing Room.

Shri Tapan Sikdar, Minister of State for Communications arrives at South Court and is conducted to Yellow Drawing Room.

Shri Digvijay Singh, Chief Minister, Madhya Pradesh arrives at Sourth Court and is conducted to Yellow Drawing Room.

18.27 THE PRESIDENT leaves his apartment for Yellow Drawing Room.

18.30 Arrives in Yellow Drawing Room.

Received by Shri Digvijay Singh, Chief Minister, Madhya Pradesh, Shri Tapan Sikdar, Minister of State for Communications and Shri Dayasindhu Sharma, Secretary, Akhil Bharatiya Jagadguru Ramanandacharya Sapta Shatabdi Mahotsava Samiti.

Conducted to the seat.

18.33 Welcome speech by Shri Digvijay Singh.

18.36 Speech by Shri Tapan Sikdar.

18.39 Unveiling of the blow-up of the stamp by THE PRESIDENT.

18.40 Presentation of the commemorative postage stamp to the THE PRESIDENT by Tapan Sikdar.

Release of Stamp by THE PRESIDENT.

18.42 Presentation of momento & blessing by Jagadguru Ramanandacharya Swami Ramnaraeshacharya.

18.47 THE PRESIDENT other dignitaries and guests are conducted to Grey Dining Room for Refreshments.

Refreshments (Grey Dining Room)

19.07 THE PRESIDENT leaves for his apartment.

19.12 The Guests leave.

●

List of invitees for the commemorative stamp release ceremony on Swami Ramanand, scheduled to be held on 4.2.2002 at 6.30 p.m. at Rashtrapati Bhawan

१. पूज्य जगद्गुरु रामानन्दाचार्य श्रीरामनरेशाचार्य जी महाराज, श्रीमठ, पंचगंगा, काशी, उत्तर प्रदेश।
२. श्री दिग्विजय सिंह, माननीय मुख्यमंत्री, मध्य प्रदेश, वल्लभ-भवन, भोपाल।
३. श्री काशी नरेश महाराज अनन्त नारायण सिंह शर्मदेव, संरक्षक, अखिल भारतीय जगद्गुरुरामानन्दाचार्य सप्तशताब्दी महोत्सव समिति, दुर्ग रामनगर, वाराणसी।
४. श्री गोपाल दास मित्तल, कार्यकारी अध्यक्ष, अखिल भारतीय जगद्गुरुरामानन्दाचार्य सप्त शताब्दी महोत्सव समिति, इन्दौर।
५. पं. रघुनाथ प्रसाद त्रिपाठी, उपाध्यक्ष, अखिल भारतीय जगद्गुरुरामानन्दाचार्य सप्त शताब्दी महोत्सव समिति,सतना, मध्य प्रदेश।
६. श्री विष्णु विन्दल, कोषाध्यक्ष, अखिल भारतीय जगद्गुरुरामानन्दाचार्य सप्त शताब्दी महोत्सव समिति, इन्दौर।
७. श्री दयासिन्धु शर्मा, सचिव, अखिल भारतीय जगद्गुरुरामानन्दाचार्य सप्त शताब्दी महोत्सव समिति, श्रीमठ पंचगंगा, वाराणसी।
८. श्रीमती गोविन्दी पवार, सह सचिव, अखिल भारतीय जगद्गुरुरामानन्दाचार्य सप्त शताब्दी महोत्सव समिति,जोधपुर।
९. श्री मदन बंसल, सह सचिव, अखिल भारतीय जगद्गुरुरामानन्दाचार्य सप्त शताब्दी महोत्सव समिति, समाना मंडी।
१०. श्री हरिकिशन सिंह, सह सचिव, अखिल भारतीय जगद्गुरुरामानन्दाचार्य सप्त शताब्दी महोत्सव समिति, पटियाला।
११. श्री प्रवीण सिंगला, सदस्य, अखिल भारतीय जगद्गुरुरामानन्दाचार्य सप्त शताब्दी महोत्सव समिति, पंचकुला।
१२. श्री विभाकर मिश्र, सदस्य, अखिल भारतीय जगद्गुरुरामानन्दाचार्य सप्त शताब्दी महोत्सव समिति, दिल्ली।
१३. श्री सतीश कुमार, सदस्य, अखिल भारतीय जगद्गुरुरामानन्दाचार्य सप्त

शताब्दी महोत्सव समिति, दिल्ली।
१४. श्री अश्वनी कुमार दास, सदस्य, अखिल भारतीय जगद्गुरुरामानन्दाचार्य सप्त शताब्दी महोत्सव समिति, दिल्ली।
१५. श्री सुरेश मित्तल, सदस्य, अखिल भारतीय जगद्गुरुरामानन्दाचार्य सप्त शताब्दी महोत्सव समिति, चण्डीगढ़।
१६. श्री गुप्ता जी, सदस्य, अखिल भारतीय जगद्गुरुरामानन्दाचार्य सप्त शताब्दी महोत्सव समिति, चण्डीगढ़।
१७. श्री सुरेन्द्र गर्ग, सदस्य, अखिल भारतीय जगद्गुरुरामानन्दाचार्य सप्त शताब्दी महोत्सव समिति, पटियाला।
१८. श्री हरभगवान दास, सदस्य, अखिल भारतीय जगद्गुरुरामानन्दाचार्य सप्त शताब्दी महोत्सव समिति, पटियाला।
१९. श्री सुरेश बजाज, सदस्य, अखिल भारतीय जगद्गुरुरामानन्दाचार्य सप्त शताब्दी महोत्सव समिति, जयपुर।
२०. श्री प्रकाश परवाल, सदस्य, अखिल भारतीय जगद्गुरुरामानन्दाचार्य सप्त शताब्दी महोत्सव समिति, जयपुर।
२१. श्री सत्यनारायण अग्रवाल, सदस्य, अखिल भारतीय जगद्गुरुरामानन्दाचार्य सप्त शताब्दी महोत्सव समिति, जयपुर।
२२. श्री हेमराज वैष्णव, सदस्य, अखिल भारतीय जगद्गुरुरामानन्दाचार्य सप्त शताब्दी महोत्सव समिति, जोधपुर।
२३. श्री सुरेश कुमार, सदस्य, अखिल भारतीय जगद्गुरुरामानन्दाचार्य सप्त शताब्दी महोत्सव समिति, जोधपुर।
२४. श्री हनुमानदास, सदस्य, अखिल भारतीय जगद्गुरुरामानन्दाचार्य सप्त शताब्दी महोत्सव समिति, फलौदी।
२५. श्री आलोक कुमार, सदस्य, अखिल भारतीय जगद्गुरुरामानन्दाचार्य सप्त शताब्दी महोत्सव समिति, जबलपुर।
२६. श्री विवेक अवस्थी, सदस्य, अखिल भारतीय जगद्गुरुरामानन्दाचार्य सप्त शताब्दी महोत्सव समिति, जबलपुर।
२७. डॉ. सतीश कुमार, सदस्य, अखिल भारतीय जगद्गुरुरामानन्दाचार्य सप्त शताब्दी महोत्सव समिति, वाराणसी।
२८. डॉ. ओमप्रकाश सिंह, सदस्य, अखिल भारतीय जगद्गुरुरामानन्दाचार्य सप्त शताब्दी महोत्सव समिति, वाराणसी।

२९. डॉ. कुन्ज बिहारी शर्मा, सदस्य, अखिल भारतीय जगद्गुरुरामानन्दाचार्य सप्त शताब्दी महोत्सव समिति, वाराणसी।

३०. श्री एम.एल. जोशी, सदस्य, अखिल भारतीय जगद्गुरुरामानन्दाचार्य सप्त शताब्दी महोत्सव समिति, इन्दौर।

३१. श्रीमती स्नेह जोशी, सदस्य, अखिल भारतीय जगद्गुरुरामानन्दाचार्य सप्त शताब्दी महोत्सव समिति, इन्दौर।

३२. श्री प्रकाश आडवानी, सदस्य, अखिल भारतीय जगद्गुरुरामानन्दाचार्य सप्त शताब्दी महोत्सव समिति, नासिक।

३३. महन्त श्री श्यामदास जी, सदस्य, अखिल भारतीय जगद्गुरुरामानन्दाचार्य सप्त शताब्दी महोत्सव समिति, जबलपुर।

३४. महन्त श्री रामरतन दास रामस्नेही, सदस्य, अखिल भारतीय जगद्गुरुरामानन्दाचार्य सप्त शताब्दी महोत्सव समिति, जोधपुर।

३५. महन्त निर्मला बहन, सदस्य, अखिल भारतीय जगद्गुरुरामानन्दाचार्य सप्त शताब्दी महोत्सव समिति, लुधियाना।

३६. डॉ. देवेन्द्र त्यागी, सदस्य, अखिल भारतीय जगद्गुरुरामानन्दाचार्य सप्त शताब्दी महोत्सव समिति, दिल्ली।

३७. महन्त श्री उमेश नाथ जी, सदस्य, अखिल भारतीय जगद्गुरुरामानन्दाचार्य सप्त शताब्दी महोत्सव समिति, वाल्मीकि धाम उज्जैन।

३८. श्री राजनीति बाबू, सदस्य, अखिल भारतीय जगद्गुरुरामानन्दाचार्य सप्त शताब्दी महोत्सव समिति, पटना।

३९. श्री रमेश जी, सदस्य, अखिल भारतीय जगद्गुरुरामानन्दाचार्य सप्त शताब्दी महोत्सव समिति, समाना मंडी।

४०. श्री जितेन्द्र गर्ग, सदस्य, अखिल भारतीय जगद्गुरुरामानन्दाचार्य सप्त शताब्दी महोत्सव समिति, समाना मंडी।

४१. श्रीमती सुशीला बजाज, सदस्य, अखिल भारतीय जगद्गुरुरामानन्दाचार्य सप्त शताब्दी महोत्सव समिति, जयपुर।

४२. श्री आशीष शर्मा, सदस्य, अखिल भारतीय जगद्गुरुरामानन्दाचार्य सप्त शताब्दी महोत्सव समिति, समाना मंडी।

४३. श्री अनुपमा राजे, सदस्य, अखिल भारतीय जगद्गुरुरामानन्दाचार्य सप्त शताब्दी महोत्सव समिति, राजस्थान।

४४. श्री मुख्तार हासमी, सदस्य, अखिल भारतीय जगद्गुरुरामानन्दाचार्य सप्त शताब्दी महोत्सव समिति, वाराणसी।

४५. प्रो. रामजी, सदस्य, अखिल भारतीय जगद्गुरुरामानन्दाचार्य सप्त शताब्दी महोत्सव समिति, वाराणसी।
४६. श्री दिनेश मित्तल, सदस्य, अखिल भारतीय जगद्गुरुरामानन्दाचार्य सप्त शताब्दी महोत्सव समिति, इन्दौर।
४७. श्री रामरतन, सदस्य, अखिल भारतीय जगद्गुरुरामानन्दाचार्य सप्त शताब्दी महोत्सव समिति, इन्दौर।
४८. श्री दिलीप कुमार, सदस्य, अखिल भारतीय जगद्गुरुरामानन्दाचार्य सप्त शताब्दी महोत्सव समिति, वाराणसी।
४९. श्री यमुना प्रसाद सिंह, सदस्य, अखिल भारतीय जगद्गुरुरामानन्दाचार्य सप्त शताब्दी महोत्सव समिति, पटना, बिहार।
५०. श्री सुशील कुमार शिन्दे, ८०, लोदी स्टेट, नई दिल्ली।
५१. श्री सलमान खुर्शीद, ९९ साउथ एवेन्यू, नई दिल्ली।
५२. श्री अशोक गहलोत, माननीय मुख्य मन्त्री, राजस्थान, राजस्थान भवन, जोधपुर हाऊस, २५ औरंगजेब रोड, नई दिल्ली।
५३. प्रो. वाचस्पति उपाध्याय, कुलपति, लालबहादुर शास्त्री संस्कृत विद्यापीठ, नई दिल्ली।
54. Sh. Gautam Gupta Member (Opertion), Deptt. of Posts, Dak Bhawan, New Delhi.
55. Sh. Navin Kumar, Joint Secretary (CC), Deptt. of Economic Affairs, Ministry of Finance, New Delhi.
56. Sh. Shankar Singh Vaghela, MP (LS), 7 Kamraj Lane, New Delhi.
57. Dr. Laxmi Narayan Pandeya, MP (LS), 1, Feroze Shah Road, New Delhi.
58. Sh. Manohar Kant Dhyani, MP (RS), 124 South Avenue, New Delhi.
59. Sh. Balkavi Bairagi, MP (RS), C-201, Swarn Jayanti Sadan, Dr. B.D. Marg, New Delhi.
60. Prof. K. Satchidanandan, Secretary, Sahita Academy, 35, Feroze Shah Road, New Delhi.
61. Prof. Jayant Kastar, Secretary, Sangeet Natak Academy, 35, Feroze Shah Road, New Delhi.

62. Sh. Sudhakar Sharma, Secretary, Lalit Kala Academy, 35, Feroze Shah Road, New Delhi.
63. Sh. R.D. Choudhary, Director General, National Museum, Janpath, New Delhi.
64. Sh. Rajiv Lochan, Director, National Gallery of Modern Arts, Jaipur House, New Delhi.
65. Dr. O.P. Keriwal, Director, Neharu Memorial Museum & Library, Teen Murthi House, New Delhi.
66. Prof. M.G.S. Narayanan, Chairman, Indian Council of Historical Resarch, 35, Feroze Shah Road, New Delhi.
67. Sh. Sukumar Sarkar, Director, National Archives, Near Janpath, New Delhi.
68. Prof. Vijay Mohan, Principal College of Art, Tilak Marg, New Delhi.
69. Sh. Ajay Upadhyaya, Chief Editor, "Dainik Hindustan", Manager, PTI, S-50 Greter Kailash-I, New Delhi-110048.
70. Sh. Neeraj Bajpai, Co-ordinator, New (English), UNI, 9/60, Judge Clony, Vaishali, Ghaziabad.
71. Sh. Subimal Choudhary, DGM(A), 102, Samachar Apartment, Mayur Vihar, Phase-I, Delhi-110092.
72. Sh. Praveer Jain, Chief Photo Editor, Indian Express, A-52 IFS Housing Society, Mayur Vihar, Phase I, Delhi-110092.
73. Sh. Vinod Dhamija, DDG (Phil), Deptt. of Posts, Dak Bhavan, New Delhi.
74. Sh. S.P. Jaiswal, MP, 14-D, Feroze Shah Road, New Delhi-110011
75. Sh. Oscar Fernadis, General Secretary AICC, 24 Akbar Road, New Delhi.
76. Sh. Kamal Nath, General Secretary, AICC, 24 Akbar Road, New Delhi.
77. Sh. Mahavir Prasad, General Secretary, AICC, 24 Akbar Road, New Delhi.

78. Sh. Gulam Nabi Azad, General Secretary, AICC, 24 Akbar Road, New Delhi.
79. Sh. Moti Lal Vora, General Secretary, AICC, 24 Akbar Road, New Delhi.
80. Sh. Ambika Soni, General Secretary, AICC, 24 Akbar Road, New Delhi.
81. Smt. Moshina Kidwai, General Secretary, AICC, 24 Akbar Road, New Delhi.
82. Sh. Mukul Wasnik, General Secretary, AICC, 24 Akbar Road, New Delhi.
83. Sh. Mani Shankar Aiyyar, General Secretary, AICC, 24 Akbar Road, New Delhi.
84. Smt. Sonia Gandhi, Leader of Opposition.
85. Sh. Bhanu Prakash Singh (Raja Narishgarh), Former Governor of Goa.
86. Sh. V.C. Shukla, 502, Taj Apartments Safdarjung Enclave, New Delhi.
87. Sh. Shyama Charan Shukla, 6 Teen Murti Lane, New Delhi-110011
88. Sh. Shashi Bushan Bajpai, Secular House, 1, Asaf Ali Road, New Delhi.
89. Smt. Sheila Dikshit, Hon'ble Chief Minister of Delhi, Delhi Sachivalaya, Indraprastha Estate, New Delhi-110002.
90. Sh. Dilip Singh Bhuria, 12, Dr. Bishambar Das Marg, New Delhi-110001.
91. Sh. Ashok Argal, MP, 187, North Avenue, New Delhi.
92. Sh. Ramlakhan Singh, MP, 48/50, South Avenue, New Delhi.
93. Sh. Jaibhan Singh Pawaiya, MP, 184, North Avenue, New Delhi.
94. Sh. Virender Kumar, MP, 46, North Avenue, New Delhi.
95. Sh. Satyavrat Chaturvedi, MP, 12-C, Ferozeshah Road, New Delhi.

96. Dr. Ram Krishna Kusmaria, MP, 204, South Avenue, New Delhi.
97. Sh. Ramanand Singh, MP, 4, Talkotra Road, New Delhi.
98. Sh. Sunderlal Tiwari, MP, 73, South North Avenue, New Delhi.
99. Sh. Chandra Pratap Singh, MP, 33, North Avenue, New Delhi.
100. Sh. Dalpat Singh Paraste, MP, 27-29, South Avenue, New Delhi.
100. Sh. Prahalad Singh Patel, MP, B-2, M.S. Flats, B.K.S. Marg, New Delhi.
101. Sh. Faggan Singh Kulaste, Union Minister of State for Tribal Affairs, 16, Dr. Rajendra Prasad Road, New Delhi.
102. Sh. Ram Naresh Tripathi, MP, 206, North Avenue, New Delhi.
103. Sh. Vijay Kumar Khandelwal, MP, 56, North Avenue, New Delhi.
104. Sh. Sunder Lal Patwa, 1, Tyagaraj Marg, New Delhi.
105. Ku. Uma Bharti, Union Minister of Sports & Youth Affairs, 9, Tyagaraj Marg, New Delhi.
106. Sh. Shivraj Singh Chauhan, MP, 7, Pt. Pant Marg, New Delhi.
107. Sh. Laxman Singh, MP, 30-A, Atul Grove Marg, New Delhi.
108. Sh. Thaverchand Gehlot, MP, 5, Ferozeshah Road, New Delhi.
109. Sh. Nand Kumar Singh Chauhan, MP, 47/49, South Avenue, New Delhi.
110. Sh. Tarachand Patel, MP, 45, North Avenue, New Delhi.
111. Sh. Gajendra Singh Rajukhedi, MP, 126, South Avenue, New Delhi.
112. Smt. Sumitra Mahajan, Union Minister of State for Human Resources Development, 8, Gurudwara Rakab Ganj Road, New Delhi.
113. Sh. Satya Narayan Jatia, Union Minister of Labour, 4, Kushak Road, New Delhi.

114. Sh. Kanti Lal Bhuria, MP, 8, Talkatora Road, New Delhi.
115. Sh. H.R. Bharadwaj, MP, 14, Tughlak Road, New Delhi.
116. Sh. Arjun Singh, MP, 20, Canning Lane, New Delhi.
117. Sh. Prafulla Kumar Maheshwari, MP, Room No. 307, Madhya Pradesh Bhawan, New Delhi.
118. Sh. A.G. Qureshi, MP, 12, Talkatora Road, New Delhi.
119. Ku. M. Rebello, MP, 704, Swarna Jayanti Sadan, Dr. Bishamber Das Marg, New Delhi.
120. Sh. Suresh Pachauri, MP, 28, Tughlak Road, New Delhi.
121. Sh. Sikander Bakht, MP, 25, Talkotra Road, New Delhi.
122. Sh. Kailash Joshi, MP, C-604, Swarna Jyanti Sadan, Dr. Bishamber Das Marg, New Delhi.
123. Sh. Vikram VArma, MP, 3, Dr. Bishamber Das Marg, New Delhi.
124. Sh. O. Rajgopal, Union Minister of State for Parliamentary Affairs and Railways, 204, Swarna Jayanti Sadan, Dr. Bishamber Das Marg, New Delhi.
125. Sh. Pramod Mahajan, Minister for Parliamentary Affairs, Information Technology and Communications, Sanchar Bhawan, New Delhi-110001
126. Sh. Tapan Sikdar, Minister of State for Communications, Dak Bhawan, New Delhi-110001
127. Sh. B.N. Som, Secretary (Posts), Department of Posts, Dak Bhawan, New Delhi-110001
128. Sh. S.C. Dutta, Member (Personnel), Department of Posts, Dak Bhawan, New Delhi-110001
129. Sh. S.K. Aggarwa, Member (Operations), Department of Posts, Dak Bhawan, New Delhi-110001
130. Smt. Aparna Mohile, Member (I&FS), Department of Posts, Dak Bhawan, New Delhi-110001
131. Sh. L.K. Puri, Sr. DDG (CPT), Department of Posts, Dak Bhawan, New Delhi-110001
132. Ms. Rekha Gupta, JS&FA, Department of Posts, Dak Bhawan, New Delhi-110001

133. Sh. Vinod Damija, Secretary (P&D) & DDG (Phil.), Department of Posts, Dak Bhawan, New Delhi-110001
134. Sh. Ajoy Mehta, PS to Minister for Communications, Sanchar Bhawan, New Delhi-110001
135. Sh. Sugato Hazra, PS to Minister of State for Communications, Dak Bhawan, New Delhi-110001
136. Sh. Bibek B. Maitra, Addl. PS to Minister for Communications, Sanchar Bhawan, New Delhi-110001
137. Sh. Harish Sharma, Addl. PS to Minister for Communications, Sanchar Bhawan, New Delhi-110001
138. Sh. S.P. Singh, Addl. PS to Minister of State for Communications, Dak Bhawan, New Delhi-110001
139. Sh. M.V. Subba Rao, Asstt. PS to Minister for Communications, Sanchar Bhawan, New Delhi-110001
136. Sh. Subhash Bakshi, Asstt. PS to Minister for Communications, Sanchar Bhawan, New Delhi-110001
137. Smt. Padmini Gopinath, DDG (E&PN), Department of Posts, Dak Bhawan, New Delhi-110001
138. Smt. T.K. Aryavir, DDG (QM&PG), Department of Posts, Dak Bhawan, New Delhi-110001
139. Sh. B.D.L. Srivastava, SSPOs, New Delhi Central Dn., New Delhi-110001
140. Smt. Promila Ray, DDG (MM), Department of Posts, Dak Bhawan, New Delhi-110001
141. Smt. R.K. Singh, DDG (M&TS), Department of Posts, Dak Bhawan, New Delhi-110001
142. Sh. Gurmel Singh, DDG (PAF), Department of Posts, Dak Bhawan, New Delhi-110001
143. Ms. Shobha Koshy, DDG (T&E), Department of Posts, Dak Bhawan, New Delhi-110001
144. Sh. S. Samant, DDG (P), Department of Posts, Dak Bhawan, New Delhi-110001
145. Ms. R. Doraiswamy, General Manager (BD), Malcha Marg, PO Bldg., New Delhi-110021

146. Sh. A.K. Bhatnagar, DDG (PO & O), Department of Posts, Dak Bhawan, New Delhi-110001
147. Sh. P.K. Chatterjee, DDG (IR), Department of Posts, Dak Bhawan, New Delhi-110001
148. Col. V. Sadasivam, DDG (Tech.), Department of Posts, Dak Bhawan, New Delhi-110001
149. Ms. R. Handa, DDG (SB), Department of Posts, Dak Bhawan, New Delhi-110001
150. Dr. Preeti Mehta, DDG (Medical), Department of Posts, Dak Bhawan, New Delhi-110001
151. Sh. S.K. Sharma, CGM (PLI), Chankya Puri, New Delhi-110021
152. Sh. R.S. Natraj Murty, CGM (BD), Business Development Directorate, Malcha Marg, New Delhi-110021
153. Smt. Meera Handa, Director (Phil.), Department of Posts, Dak Bhawan, New Delhi-110001
154. Sh. P.N. Ranjit Kumar, ADG (Phil.), Department of Posts, Dak Bhawan, New Delhi-110001
155. Sh. R.P. Sharma, ADG (Phil.), Department of Posts, Dak Bhawan, New Delhi-110001
156. Sh. Chatnaya Prasad, DPR, Shastri Bhavan, New Delhi.
157. Sh. B.K. Sinha, Information Officer, Shastri Bhavan, New Delhi.
158. Sh. V.S. Saksena, Sector 'A' Pocket 'C/20', Vasant Kunj, New Delhi-110070
159. Sh. Veer Pal, PA (Phil.), Sansad Marg Head Office, New Delhi-110001.
160. Sh. Ramesh Prasad, Packer (Phil.), Sansad Marg Head Office, New Delhi-110001.

Officers from APS Directorate:-

161. Maj. Gen. R.S. Kareer, Addl. DG of APS, West Block-III, R.K. Puram, New Delhi-110066

162. Brig. T.S. Thakur, DDG (APS), West Block-III, R.K. Puram, New Delhi-110066
163. Smt. Alka Sharma, Artist (Phil.), Dak Bhawan, New Delhi-110001
164. Sh. Suresh Bafna, Bureau Chief, Nai Duniya, INS Building, New Delhi.
165. Sh. Harihar Swarup, Freelance.
166. Sh. Sanjeev Acharya, Bureau Chief, Dainik Bhaska, INS Building, New Delhi.
167. Sh. Anuj Gupta, Bureau Chief, Nav Bharat, INS Building, New Delhi.
168. Smt. Shikha Parihar, Bureau Chief, M.P. Chrinocle, INS Building, New Delhi.
169. Sh. Vinod Verma, Bureau Chief, Deshbandhu, INS Building, New Delhi.
170. Sh. Shishir Shrivastava, Spl. Correspondent, Jagran, INS Building, New Delhi.
171. Sh. A.K. Chakravorty, Bureau Chief, Hitavada, INS Building, New Delhi.
172. Sh. Akshay Jain, Bureau Chief, Chautha Sansar, 11/A, Sector-11, Gole Market, New Delhi.
173. Sh. Raj Kumar Sharma, Bureau Chief, Swadesh, INS Building, New Delhi.
174. Sh. Subhashis Mitra, Spl. Correspondent, PTI, PTI Bldg., Sansad Marg, New Delhi.
175. Sh. Jalees Ahsan, Spl. Correspondent, Bhasha, PTI Bdlg., New Delhi.
176. Sh. Yogendra Shukla, Spl. Correspondent, UNI, Rafi Marg, New Delhi.
177. Sh. Naresh K. Singh, Spl. Correspondent, Univarta, Rafi Marg, New Delhi.
178. Sh. Pankaj Sharma, Spl. Correspondent, Nav Bharat Times, B.S. Zafar Marg, New Delhi.

179. Sh. Prakash Dubey, Spl. Correspondent, Nav Bharat Times, B.S. Zafar Marg, New Delhi.

180. Sh. Kailash Papney, Spl. Correspondent, Hindi Hindustan, K.G. Marg, New Delhi.

181. Sh. Ajay Tiwari, Spl. Correspondent, Rashtriya Sahara, Amba Deep Bldg., K.G. Marg, New Delhi.

182. Ms. Gargi Parsai, Spl. Correspondent, Hindu, INS Bldg., New Delhi.

183. Sh. Vinod Sharma, Bureau Chief, Hindustan Times, K.G. Marg, New Delhi.

184. Sh. Om Prakash C/o Sargam Studio, E-23B, Lajpat Nagar-II, New Delhi.

185. Sh. Rajesh C/o Sargam Studio, E-23B, Lajpat Nagar-II, New Delhi.

186. Sh. Vinay Kumar C/o Sargam Studio, E-23B, Lajpat Nagar-II, New Delhi.

187. Sh. Arun Kumar C/o Sargam Studio, E-23B, Lajpat Nagar-II, New Delhi.

188. Sh. Ashok Vahie, Photographer, 73, Bhagat Singh Market, New Delhi.

189. Sh. Vivek Saxena, Spl. Correspondent, Jansatha, B.S. Zafar Marg, New Delhi.

190. Smt. Shashi Jain, Spl. Commr., Govt. of M.P., New Delhi.

191. Smt. Indra Swarup, Addl. Director, Public Relation, Govt. of M.P., New Delhi.

192. Smt. Loveleen Kacker, Resident Commr., Govt. of M.P., New Delhi.

193. Smt. Kavit Kakkar, Liaison Officer, Govt. of M.P., New Delhi.

194. Sh. Subash Arora, Joint Director, Public Relation, Govt. of M.P., New Delhi.

195. Sh. Sanjay Saxena, Asstt. Director, Public Relation, Govt. of M.P., New Delhi.

196. Sh. Pankaj Kumar, AIG, Govt. of M.P., New Delhi.
197. Smt. Meeta Chaturvedi, Asstt. Director, Public Relation, Govt. of M.P., New Delhi.
198. Ms. Alka Jha, Director, Foreign Post, Kotla Road, New Delhi.
199. Sh. P.K. Mehrotra, Director, Accounts Postal, Delhi.
200. Sh. Arun Dikshit, Spl. Correspondent, Navbharat Times, Bhopal.
201. Sh. M.K. Razadan, Editor in Chief & General Manager, PTI, S-50, Greater Kailash-I, New Delhi-110048.

चतुर्थ अध्याय
अनुभूतिखण्ड

दिग्गी बाबू उपाख्य दिग्विजय सिंह की अनुभूति

सम्पूर्ण महोत्सव के अध्यक्ष रूप में दिग्विजय सिंह ने अनेक प्रकार से सहयोग किया और कराया। पीपा नरेश के वंशज होने के कारण उनके मन में इस पीठ के प्रति सहज स्वाभाविक आकर्षण और निष्ठा दिखायी पड़ी। व्यस्तता के कारण वह समयतः समारोह में उपस्थित नहीं हो सके। इसका प्रायश्चित् उन्होंने बड़े ही कारुणिक ढंग से विनम्रता पूर्ण शब्दों में व्यक्त किया– 'महाराज श्री का प्रारब्ध बहुत बड़ा है। कोई कार्य बाधित नहीं होता, अपितु स्वाभाविक ढंग से निष्पादित होता रहता है, पर मैं महाराज श्री के चरणों में क्षमापूर्वक प्रणाम करते हुए प्रायश्चित् कर रहा हूँ कि आजीवन ही नहीं जन्म-जन्मान्तर तक आपकी आज्ञाओं का पालन करता रहूँगा। यही मेरा प्रायश्चित्त शायद मुझे अपराध भाव से मुक्त करा सके।' यह कहते हुए उनके आँखों में आँसू आ गये।

मुसलमान महिला द्वारा तिलक

श्रीमती शबाना सुहेल देवास मध्य प्रदेश की एक सामाजिक कार्यकर्त्री के रूप में विख्यात हैं। वह महराज श्री की धर्मबेटी के रूप में जानी जाती हैं। सप्तशताब्दी यात्रा के देशव्यापी भ्रमणक्रम में वह देवास विकास प्राधिकरण की उपाध्यक्षा थीं। पार्षद का कार्य भी सकुशल कर चुकी थीं। रामभक्तों के विशाल जनसमुदाय को देखकर इतना भावविह्वल हुईं कि तत्कालीन यात्रा प्रमुख श्री जगन्नाथ तैलंग का विधिवत् तिलक से अभिषेक कर सम्पूर्ण यात्रा का स्वागत और वंदन किया। समन्वयी चेतना की यह अद्भुत घटना तत्कालीन समाचार पत्रों में वर्षपर्यन्त सुर्खियों में शीर्ष पर रही। इस प्रकार मानवता के विकसन में रामावत सम्प्रदाय की अहम भूमिका स्वामी रामानंदाचार्य के समय से ही दिखायी पड़ती है। सद्भाव और समन्वय का यह प्रसंग सनातन धर्म से इतर लोगों की प्रेरणा का भी स्रोत बन गया।

●

श्रीमती शबाना : पुराण-पाठ की यजमान

वाराणसी १८ जनवरी। जगद्गुरु रामानन्दाचार्य सप्तशताब्दी समापन महोत्सव में चल रहे महायज्ञ व अन्य उत्सवों के साथ समायोजित संत वाणियों व अन्य धर्मग्रन्थों के लोककल्याणार्थ पुण्य पाठ के क्रम में आज आरम्भ हुये पुराण पाठ का यजमानत्व देवास, म.प्र. की सभासद श्रीमती शबाना सुहेल ने ग्रहण किया। उन्होंने जगद्गुरु रा. स्वामी रामनरेशाचार्य की प्रेरणा से पुराण पाठ के यजमान के रूप में पं. जगन्नाथ शास्त्री तैलंग को तिलक कर उनको पाठ के लिये आचार्य रूप में वरण किया। देवास की सभासद श्रीमती शबाना सुहेल कबीरदास जैसी परम्परा में रामानन्दाचार्य के विचारों से प्रभावित तथा वर्तमान ज.गु. रा. स्वामी रामनरेशाचार्य की प्रशंसक अनुयायी हैं। अपने पति श्री सुहेल के सात वह कई नगरों में आयोजित रामानन्द सप्तशताब्दी महोत्सवों में सम्मिलित हुईं। नई दिल्ली में विगत माह समापन महोत्सव में वह सन्ध्या में देर तक सभा चलने पर श्री सलमान खुर्शीद के साथ रामानन्दाचार्य स्वामी रामनरेशाचार्य से प्रसाद प्राप्त कर पवित्र रमजान का रोजा खोलती थीं। आज जब उन्होंने आचार्य वरण कर पाठ का यजमानत्व ग्रहण किया तो टाउनहाल स्थित शतमुख कोटि होमात्मक महायज्ञ के परिसर में उपस्थित लोग धर्म की सहिष्णु समन्वयी एवं सेतु सरीखी भूमिका के इस दृश्य से अभिभूत हो उठे। साथ ही शास्त्रीय परम्पराओं के साथ रामानन्दाचार्य की उदारतापूर्ण आध्यात्मिक क्रांति का संदेश उनकी सप्तशताब्दी पर साकार हो उठा। श्रीमती सुहेल ने बताया कि मेरी भेंट पहली बार रामानन्दाचार्य रामनरेशाचार्य से एक धार्मिक समारोह में हुयी। मैंने नमाज का समय हो जाने पर उनसे जाने की इजाजत माँगी। पूछने पर कारण बताया तो उत्तर मिला कि यहीं चटाई लगा देता हूँ नमाज अदा कर लो। सुनकर मैं अभिभूत हो उठी और उस दिन मुझे मजहब और धर्म के नये अर्थ का ज्ञान हुआ। तब से मैं स्वामी रामनरेशाचार्य की मुँहबोली बेटी हूँ। मैंने आज पुराण पाठ का यजमानत्व ग्रहण किया, उससे मुझे प्रसन्नता है और मुझे विश्वास है कि मेरी यह इबादत भी खुदा को कुबूल होगी जैसे कुरान के पाठ की होती है। कुरान और पुराण दोनों के पाठ की इबादत से खुदा प्रसन्न होगा, ऐसा मेरा विश्वास है। मैं पाँच वक्त की नमाजी और कुरान में आस्था रखने वाली हूँ और मेरा विश्वास है कि किसी भी इबादत से खुदा प्रसन्न होता है।

•

शिवनगरी में श्रीराम महायज्ञ

विनोद कुमार अग्निहोत्री

श्रीमठ पंचगंगा द्वारा आयोजित ज.गु. रामानंदाचार्य सप्तशताब्दी महोत्सव शिव की नगरी काशी में एक दिव्य अनुभूति थी। उसमें भी श्रीराम यज्ञ का होना स्वयं में महत्त्वपूर्ण बन जाता है। काशी की महत्ता को किसी शायर ने सही ही कहा :

खाक भी जिस जमी की पारस है । वह शहर मशहूर बनारस है ।।

धर्म महिमा भरे नगर वाराणसी में जो मुख्यतः भोलेनाथ की नगरी मानी जाती है– श्रीराम यज्ञ को अपनी आँखों से प्रत्यक्ष देखना एक विलक्षण अनुभव था। महानता, विशालता और विराटता की अनभ्यस्त आँखें इन अद्भुत दृश्यों को देखकर सहज विश्वास ही नहीं कर पाती थीं।

यज्ञ वेदियों की परिक्रमा करते समय एक अद्भुत चमत्कारी घटना घटी। एक व्यक्ति पृथक्-पृथक् स्थानों पर विभिन्न आकार और आकृति धारण कर लेता था। परिक्रमा करते समय वह रास्ते के कंकड़ साफ करता और अचानक बाहर आकर ध्वज-पताका को निर्निमेष निहारता रहता। कभी वह संत-कबीर और साधु रूप में होता तो कभी भिखारी और फटेहाल रूप में दिखायी पड़ता। यह महापुरुष कौन था सोचकर मन अलौकिकता से आज भी भर उठता है। यह अप्रत्याशित घटनाक्रम मन को रोमाञ्च से भर देता है।

मेरी अनुभूति और इच्छा दोनों यही है कि इस तरह के यज्ञ समय-समय पर हों जिससे राममयता की वृद्धि हो, भवपाप-ताप का नाश हो तथा अलौकिक दृश्यों की दिव्य अनुभूति इसी प्रकार होती रहे।

●

श्रीरामचन्द्राय नमः

प्रो. ब्रह्मदेव नारायण शर्मा

सनातन धर्म की रक्षा एवं प्रचार-प्रसार में संलग्न जगद्गुरु स्वामी रामनरेशाचार्य जी महाराज के सत्प्रयास से जगत् के कल्याण एवं मङ्गल के लिए जगद्गुरु स्वामी रामानन्दाचार्य सप्तशताब्दी समारोह के अवसर पर काशी में श्रीराम महायज्ञ का आयोजन समारोहपूर्वक सम्पन्न हुआ। इस महायज्ञ में सम्पूर्ण देश के श्रद्धालुओं ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। इस यज्ञ में सभी सम्प्रदाय एवं जाति के लोगों ने सहभागिता की। स्वामी रामनरेशाचार्य जी महाराज के अनुभाव से जगत्कल्याणार्थ सम्पन्न राम महायज्ञ अद्वितीय था। इस अवसर पर अनेक धार्मिक गोष्ठियाँ भी आयोजित की गयीं। विभिन्न शास्त्रों से सम्बन्धित शास्त्रार्थ सभा भी आयोजित हुई जिसमें काशी के विभिन्न शास्त्रों से सम्बन्धित विशेषज्ञ विद्वानों ने भाग लिया और शास्त्रों में निगूढ चर्चा एवं व्याख्यान हुए। मैं भी इस शास्त्रार्थ सभा तथा राम-महायज्ञ के कार्यक्रमों में सक्रिय रूप से सहभागी रहा यह पूर्वपुण्य कार्यों का ही फल मानता हूँ। मेरा मानना है कि श्रीराम भारतीय संस्कृति और सनातन धर्म के उन्नायक हैं। पुरुषोत्तम श्रीराम का चरित्र महान रहा है। मानव के रूप में अवतरित श्रीराम जगत् के आदर्श हैं। जनमानस में उस उदात्त भावना का प्रसार करने की दृष्टि से जगद्गुरु स्वामी रामानन्दाचार्य जी ने जिस सम्प्रदाय की स्थापना की, स्वामी रामनरेशाचार्य जी महाराज सम्प्रति उसके ध्वजोत्साहक हैं। उन्होंने वैदिक परम्परा के निर्वाह के साथ-साथ आगमिक मार्ग का अद्भुत समन्वय किया है, जिससे एक ओर दलित एवं पिछड़े वर्ग में जीवन के प्रति नया उत्साह मिला है, वहीं दूसरी ओर वैदिक-परम्परा भी संरक्षित हुई है। भूतभावन भगवान् से प्रार्थना है कि स्वामी रामनरेशाचार्य जी महाराज की छत्रछाया हमारे जैसे सामान्य जनों पर सदैव बनी रहे, जिससे वे अपने जन-कल्याणकारी कार्यों से हमारा पथ प्रशस्त करते रहें।

•

न भूतो न भविष्यति

डॉ. पवन कुमार शास्त्री

ह्रीं रां रामाय नमः स्वाहा, ह्रीं रां रामाय नमः स्वाहा, ह्रीं रां रामाय नमः स्वाहा की मंगलमय मंत्र-ध्वनि कानों में भर गई। यज्ञ कुण्ड से निकलती हुई लाल, पीली अग्नि की ज्वालायें, आचार्य ब्रह्मा और होताओं के साथ आहुति देना एवं यज्ञमण्डप के बिल्कुल मध्य में प्रधान देवता श्री रामचन्द्र जी की अपार करुणा बिखेरती उपस्थिति आँखों के सम्मुख तैरने लगी। गोमय-लिप्त यज्ञभूमि की सुगन्धित गोद में लगातार नव दिवसों का निवास रोमावलियों को पुलकित करने लगा। नासिकारंध्रों में शाकल्यादि उपचार सामग्रियों और यज्ञ के पावन धूमों की सुगन्धि बस गई तथा जिह्वा पर श्रीराम जी को निवेदित प्रसाद के सुमधुर स्वाद जग गये जब परमादरणीय श्री स्वामी जी महाराज ने मुझ दास को जगद्गुरु श्री रामानन्दाचार्य जी की सप्त शताब्दी महोत्सव के संस्मरण लिखकर लाने का आदेश दिया।

लिखने का विचार आते ही मन समारोह की विविध स्मृतियों में खो जाता है और आनन्दोत्सव के सागर में गोते लगाने लगता है फिर लिखे भी तो कौन लिखे?

चरितं रघुनाथस्य शतकोटि प्रविस्तरम् के अनुसार ही शतमुख कोटि होमात्मक श्रीराम महायज्ञ की स्मृतियाँ भी शतकोटि सुविस्तृत हैं। इन्हें लिखने की बात सोचता हूँ तो पुष्पदन्त जी की ये पंक्तियाँ बरबस याद आ आती हैं कि-

> **असितगिरि समं स्यात् कज्जलं सिन्धु पात्रे..........तदीय तव गुणानां ईश पारं न यास्ति।**

अस्तु! महोत्सव की विशालता और महानता तो अवर्णनीय है ही तथापि आदरणीय श्री स्वामी जी के आज्ञानुपालन में श्री रामजी के पावन गुणानुवाद करने के लोभ से कुछ पँक्तियां लिख रहा हूँ। आशा है श्रीराम जी मेरी यह तुच्छ सेवा स्वीकार करेंगे।

जगद्गुरु रामानन्दाचार्य सप्तशताब्दी महोत्सव के एक वर्षीय आनन्दोत्सव का समापन सत्र १६ जनवरी सन् २००१ (माघ कृष्ण ७ - संवत् २०५७ मंगलवार) से आरम्भ होना था। इस उपलक्ष्य में अखिल भारतीय जगद्गुरु रामानन्दाचार्य सप्त शताब्दी महोत्सव समिति, काशी द्वारा परम मंगलमय समापन महोत्सव का आयोजन किया गया था। इस महोत्सव के कई भाग थे। जिनमें प्रमुख भाग था भगवान् विश्वनाथ

की परमपावन काशी नगरी की शास्त्रीय परिधि (सीमा) के अन्तर्गत शतमुख कोटि होमात्मक श्रीराम महायज्ञ का अनुष्ठान। यह एक अत्यन्त ही वृहदाकार और व्यय-साध्य अनुष्ठान था। नगर के मध्य में टाउनहाल के नाम से प्रसिद्ध विशाल भू-क्षेत्र में इस यज्ञ का आयोजन होना था। परम करुणावरुणालय श्रीराम जी की अहैतुकी कृपा से वर्तमान जगद्गुरु रामानन्दाचार्य स्वामी रामनरेशाचार्य जी इस महान कार्य के सम्पादन हेतु दृढ़ संकल्पित थे। श्री स्वामी जी के कृपा-प्रसाद से एवं संयोजक श्री गणेश्वर शास्त्री द्रविड़ जी की सत्प्रेरणा से मुझ जैसे तुच्छ राम-किंकर को न केवल इस उत्सव में भाग लेने का अवसर प्राप्त हुआ अपितु शतमुख कोटि होमात्मक श्रीराम महायज्ञ के एक यज्ञकुण्ड का यजमानत्व भी प्राप्त हुआ जिसे मैं अपना अहो भाग्य समझता हूँ।

प्रथम दिवस-यज्ञ का आरम्भ यजमानों द्वारा प्रायश्चित्त संकल्प धारण के साथ प्रारम्भ हुआ। प्रायश्चित्त संकल्प टाउनहाल के मैदान में (१६.१.२००१) प्रातः १० बजे ग्रहण करके हम सभी यजमान गंगास्नान हेतु पंचगंगा घाट पहुँचे। यथारुचि क्षौरादि से निवृत्त होकर हम यजमानों ने मृत्तिका, गोमय और भस्म लगाकर गंगा स्नान किया तथा नूतन वस्त्र धारण करके पुनः टाउनहाल मैदान में पहुँचे जहाँ यज्ञाचार्य ने पंचदेवताओं का पूजन करा के हमें नवीन यज्ञोपवीत धारण करने का आदेश दिया। यज्ञानुष्ठान की अवधि में कर्तव्याकर्तव्य कर्मों एवं खाद्य पेय आदि पदार्थों के सम्बन्ध में निर्देश दिये गये। प्रथम दिवस की कार्य-विधि यहीं समाप्त हुई।

द्वितीय दिवस-प्रातः ८ बजे से ही सभी यजमान यज्ञस्थल पर उपस्थित थे। आज गोदान कराना था। सभी यजमानों ने गाय के पूँछ की पूजा करके और गाय की प्रदक्षिणा करके गोदान विधि पूर्ण की। अब गणपत्यादि देवताओं का पूजन, नान्दी श्राद्ध, मातृका पूजन, कलश पूजन होना था जिसके लिए सभी यजमानों की तरफ से प्रधान यजमान 'श्री संत जी' ने उक्त पूजनादि सम्पन्न कराया ततः ब्राह्मणों का पूजन व मधुपर्क का कार्यक्रम था। एतदर्थ पूरे मैदान में उत्तर से दक्षिण की ओर दरियाँ बिछाई गईं। जिस पर यजमान पश्चिमाभिमुख बैठे और उनके सम्मुख चौकियों पर ब्राह्मणों को बिठाया गया। कुल लगभग ४५० ब्राह्मणों का पूजन करना था किन्तु यजमानों की संख्या लगभग ५०-६० ही थी अतः क्रमशः ५-६ बार में सम्पूर्ण ब्राह्मणों की पूजा सम्पन्न हो पाई। यह एक कठिन कार्य था क्योंकि ब्राह्मणों को पूजन के साथ ही यज्ञ-कार्य हेतु वस्त्रोपवस्त्र भी दिये जा रहे थे। अतः पुनरावृत्ति दोष से बचने हेतु पूजित-अपूजित भूदेवों का अभिज्ञान रखना आवश्यक था और इस कार्य में काफी विलम्ब होता था। सायंकाल ५ बजे तक उपर्युक्त ब्राह्मण पूजन का कार्यक्रम चला। तत्पश्चात् मण्डप-प्रवेश करना था। हमने यज्ञाचार्य के नेतृत्व में पूजित गणपति आदि देवताओं को सादर मण्डप में

पधराया।

तृतीय दिवस-१८.१.२००१। प्रातः ९ बजे मंडप के पश्चिमी द्वार पर बने कुण्डों में पैर धोकर सभी ऋत्विज, होता, आचार्य और यजमानों ने मण्डप में प्रवेश किया। मण्डप के अग्निकोण में कल सायंकाल स्थापित किये गये गणपति, कलश, मातृकाओं का दैनिक पूजन आरम्भ हुआ। सभी यजमानों का प्रतिनिधित्व करते हुए मुख्य यजमान श्री संतजी ने पूजा कार्य शुरू किया। प्रमुख आचार्य के आदेशानुसार कुछ ब्राह्मण आचार्यों ने हम सभी यजमानों को रक्षातिलक किया। हम यजमानों ने भी सभी वरणी-प्राप्त ब्राह्मणों को तिलकाक्षत लगाकर पूजन किया। लगभग ५०० ब्राह्मणों को तिलक करना साधारण कार्य नहीं था। एक साथ इतने भूदेवों का पूजन करने का अवसर प्राप्त होने से हम यजमान अपने को धन्य मान रहे थे। इस बीच अग्निकोण की पूजा समाप्त हो जाने पर नैऋत्य कोण में बने पीठ पर देवताओं का आवाहन पूजन हुआ। १८ कलशों को तैयार कर सभी द्वारों पर स्थापना की गई। मण्डप के मध्य में चारों प्रमुख स्तम्भों की पूजा की गयी। मण्डप के चारों ओर मोली बन्दनवार लपेटे गये। चारों द्वारों और कोणों के स्तम्भों पर तत्तद् देवताओं का आवाहन और पूजन किया गया। मण्डप के चारों ओर नियमानुसार लाल, पीले, हरे, नीले रंगों की ध्वजाएँ स्थापित करके पूजी गईं। मध्यावकाश के उपरान्त मण्डप के मध्य भाग में बने चबूतरे पर सर्वतोभद्र चक्र के ऊपर यज्ञ के प्रधान देवता श्री रामजी को स्थापित करने का कार्यक्रम हुआ। चाँदी के सिंहासन पर चाँदी के श्री सीताराम चन्द्र जी की प्रतिमा को राजोपचार से पूजन करके पधराया गया। अपने विद्यार्थी जीवन में हमने राजोपचार विधि पढ़ी थी परन्तु व्यवहार रूप में आज ही देखने को मिला। पूजनोपरान्त सभी यजमानों और ब्राह्मणों ने मण्डप की परिक्रमा की और प्रसाद ग्रहण करके स्वस्थान को जाना चाह रहे थे कि तभी कांची काम कोटि के पीठाधीश्वर स्वामी श्रीशंकराचार्य जयेन्द्र सरस्वती जी यज्ञस्थल पर पधारे उनकी शास्त्रोक्त पद्धति से पूजन करके हम सभी यजमान उनके सम्मुख बैठ गये। स्वामी जी ने हमें अपने स्नेहाशीष प्रदान करते हुए हम पर अपनी कृपादृष्टि डाली हम कृतार्थ हुए।

चतुर्थ दिवस-१९ जनवरी २००१ शुक्रवार। आज मण्डप में स्थापित देवताओं की दैनिक पूजा के उपरान्त अरणि मंथन के द्वारा अग्नि प्रकट करके कुण्डों को प्रज्ज्वलित करना था। नैर्ऋत्य कोण के कुण्ड को प्रधान कुण्ड बनाया गया था। अन्य कुण्डों पर संख्यायें लिख दी गई थीं। ठीक ११ बजे स्वामी रामनरेशाचार्य जी मण्डप की परिक्रमा करके पधारे और स्वयं अरणि मंथन करके अग्नि प्रज्ज्वलित किया। इस अग्नि को सर्वप्रथम कुण्ड संख्या १ में स्थापित किया गया तत्पश्चात् उसी कुण्ड से थालियों में निकाल निकाल कर अग्नि सभी कुण्डों में स्थापित कर दी गई। उपस्थित

यजमानों ने अपनी-अपनी इच्छानुसार कुण्डों का चयन करके उन पर विराजमान हो गये। सभी कुण्डों के आचार्य, ब्रह्मा, होता आदि निर्धारित हो चुके थे। मध्याह्नावकाश के उपरान्त सभी कुण्डों पर आवश्यक पात्र सरुचि स्रवा आदि बाँट दिये गये। कुश काण्डिका प्रयोग कराया गया। मुख्य कुण्ड में चरु का हवन और शेष कुण्डों में मांगलिक हवन के पश्चात् प्रधानपीठ पर श्रीराम जी की आरती पूजा प्रदक्षिणा के उपरान्त आज का कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

पञ्चम दिवस-२० जनवरी २००१ शनिवार। आज से यज्ञ का प्रमुख हवन कार्य (४ दिवसीय) प्रारम्भ होना था। कुल १ करोड़ मंत्रों की आहुति डालनी थी। प्रत्येक कुण्ड पर यजमान, होता, ब्रह्मा के द्वारा चार-चार आहुतियाँ डाली जानी थीं। जिन कुण्डों पर यजमान नहीं थे वहाँ आचार्य भी हवन कर रहे थे। सभी कुण्डों पर चार-चार स्टील के पात्रों में शाकल्य भर कर रखे थे। आचमनादि के उपरान्त विधिपूर्वक हवन प्रारम्भ हुआ। हवन का मंत्र था ह्रीं रां रामाय नमः स्वाहा।

कुल पाँच सौ मंत्रोच्चार के उपरान्त दो बार घी की पूर्णाहुति दी जा रही थी। इस प्रकार एक आवृत्ति में कुल दो लाख आहुतियाँ पड़ रही थीं जिसका विश्लेषण इस प्रकार है-

कुल कुण्डों की संख्या =१००

प्रतिमंत्र प्रत्येक कुण्ड पर दी जाने वाली आहुति = ४

प्रतिमंत्र समस्त कुण्डों पर दी जाने वाली आहुति = ४×१००×४००

५०० मंत्रों की एक आवृत्ति में कुल पड़ने वाली आहुति=४००×५००=२००००० दो लाख।

इस प्रकार कुल ५० आवृत्तियाँ होनी थीं। यह आवृत्तियाँ चार दिनों में पूर्ण करनी थीं किन्तु प्रथम दो दिनों में लक्ष्य से कम आहुतियाँ ही पड़ीं अतः तीसरे दिन लक्ष्य से भी अधिक आहुतियाँ डालकर चौथे दिन सम्पूर्ण हवन कार्य सम्पन्न हो गया।

षष्ठ, सप्तम एवं अष्टम दिवस-रविवार, सोमवार एवं मंगलवार दिनांक २१-२२ एवं २३ जनवरी। सभी कार्यक्रम पंचम दिवस की भाँति ही सम्पन्न हुए।

नवम दिवस-बुधवार, दिनांक २४ जनवरी २००१।

आज २१वीं शती का प्रथम महाकुम्भ था। सारे विश्व की नजरें तीर्थराज प्रयाग की ओर टिकी थीं और सारे कदम इलाहाबाद की ओर गमन कर रहे थे किन्तु हम यज्ञ की मर्यादा चरणों में आबद्ध प्रभु श्रीराम के चरणों में ही दत्त होकर यज्ञकार्य की पूर्णाहुति हेतु तत्पर थे। प्रातःकालीन पूजनादि के उपरान्त आज श्रीराम जी के सहस्रनामों से प्रतिकुण्ड एक व्यक्ति (यजमान अथवा आचार्य) द्वारा हवन कार्य किया गया। तत्पश्चात् मण्डप में आवाहित देवताओं का नामोच्चारण करके आहुतियाँ दी

गईं। काशी के सुप्रसिद्ध देवताओं के नामोच्चारण पूर्वक भी आहुतियाँ दी गईं। मध्यावकाश के बाद पूर्णाहुति भी डालनी थी। लगभग ४.२० पर वर्तमान पीठाधीश्वर स्वामी श्री रामनरेशाचार्य जी मण्डप में पधारे और कुण्ड नं. १ पर विराजमान हुए। सभी कुण्डों पर पूर्णाहुति के नारियल रखे हुए थे। आचार्य के निर्देशानुसार हम सभी एक साथ खड़े हुए घृत पूरित श्रुचि पर नारियल रखा और आचार्य का निर्देश मिलते ही एकसाथ पूर्णाहुति डाल दी गई फिर केले के खंभों में स्रुवा रखकर वसुधारा डालने को कहा गया। इस प्रकार यज्ञ सम्पूर्ण हुआ। सारे कुण्डों की अग्नि प्रधान कुण्ड में मिला दी गयी। कुण्डाचार्यों ने यजमानों को तिलक रक्षा करके आशीर्वाद दिया। यज्ञ की भस्मी लगाई। कुछ भस्मी हमने संग्राह भी कर लिया। भगावन् की आरती, पूजा, पुष्पांजलि, प्रदक्षिणा करके हम निवृत्त हुए। मण्डपस्थ देवताओं का विसर्जन हो चुकने पर आचार्य ने हमें मंत्रपूरित जल से अवभृथ स्नान कराया। प्रसाद दिया और हम अपने-अपने स्थानों पर लौटे। श्रीरामचन्द्रः शरणं मम।

अनुभूति के क्षण...

चिंता नहीं चिंतन करो

भरतकुमार अग्रवाल

सच कहूँ तो रामानंदाचार्य सप्तशती समारोह मेरे जीवन का एक ऐसा अद्भुत क्षण था जो कभी भी भुलाया नहीं जा सकता है। मेरे व्यक्तित्व की पहचान जयपुर में इसी कार्यक्रम से होने लगी। मुझे यह भी लगा कि पूरे जयपुर के सभी वैष्णवजनों में मेरी पहचान होने लगी हैं। इस प्रकार मेरा लौकिक संसार तो बढ़ा ही आध्यात्मिक संसार का अंकुरण भी फूट पड़ा। महोत्सव प्रारंभ होने से 20 दिन पूर्व मैं बदरी-केदारनाथ की तीर्थयात्रा पर गया था। उस समय भी मेरे मन में सप्तशती महोत्सव जो जयपुर में मनाया जाना था उसकी चिंताएँ घेरे हुई थी। बदरीनाथ के मुख्य धर्माधिकारी रावल जी ने अकस्मात मंदिर प्रांगण से अपने निजी कक्ष में स्वतः बुलाकर कहा कि चिंता नहीं चिंतन करो। मुझे यह सीख उस समय विचित्र सी लगी। उन्होंने आगे कहा कि जिस चिंता में डूबे तो वह कार्य सकुशल सम्पन्न होगा। मुझे आश्चर्य तब हुआ जब पूरा महोत्सव शानदार ढंग से सम्पन्न हो गया। यह क्षण मेरे जीवन का अद्भुद् अपूर्व बन गया। इन रोमांचित कर देने वाली अनुभूतियों को शब्दों में व्यक्त करना मेरे लिए संभव नहीं। मेरा मानस पूरे वर्ष महोत्सव की झलकियों में ही डूबा रहा। उसकी वह दिव्य अनुभूति के वे क्षण 'आठौ रिद्धि नवौ निधि' जैसे प्रतीत होते हैं।

श्रीरामानंदाचार्य सप्तशताब्दी की वे दिव्यानुभूतियां राममय बनाकर चली गई। काश वैसे क्षण जीवन मैं पुनः आते। मेरी तो गुरुमहाराज श्री रामनरेशचार्य जी से प्रार्थना है कि उन दिव्य अनुभूतियों को धारण करने की शक्ति दें। कार्यक्रम का गाढ़ा रंग मेरे मानस में ऐसा छा गया कि रामानंदाचार्य महाराज और गुरुस्वामी श्री रामनरेशाचार्य महाराज में मुझे ईश्वर का प्रत्यक्ष दर्शन होने लगा।

मेरे जीवन की ये अनुभूतियाँ ही संसारमार्ग पर चलने का सम्बल बन गई।

जयपुर में सप्तशताब्दी महोत्सव

मुझे श्रीरामनरेशाचार्य जी महाराज की अहैतु की कृपा 16/12/98 में इंदौर में प्राप्त हुई जब मैं उनका दीक्षा-शिष्य बना। प्रथम दर्शन में ही गुरू महाराज की इतनी बड़ी कृपा मेरे जीवन को प्रकाश से भर दिया। मेरे अंदर का अँधेरा मिटा और चारों तरफ दिव्य उजाला ही उजाला दिखने लगा। अकस्मात् एक दिन श्री विष्णु विंदल के साथ काशी जाना हुआ। वहीं 31/01/2000 को महाराज श्री का आशीष पाकर धन्य हो गया। वह मेरी जन्म तिथि है। महाराज श्री का पूजन करते हुए मैंने इससे उन्हें श्रद्धावश सुगंधित करना चाहा। उन्होंने तत्काल कृपा की वर्षा करते हुए कहा कि जाओ भरत इसी इत्र की तरह संसार में सुगंधित होते रहो। मुझे और क्या

चाहिए था, सब कुछ मिल गया। मैं फूला नहीं समा रहा था। इन सभी कृपा वर्षी प्रसंगों का निमित बना सप्तशती समारोह। वहीं राजस्थान में 20 दिनों की रामभावप्रसार यात्रा और आठदिनी के महोत्सव कार्यक्रम की रूप रेखा बनी।

उस समय आर्थिक स्थिति ठीक नहीं थी फिर भी मन का उत्साह कहीं उससे दबता नहीं था। आपसी तालमेल का अभाव और वैष्णव सम्प्रदाय के वैमनस्य से मन अज्ञात भय से सहम गया था। पर गुरुवर महाराज की विशेष अनुकंपा हुई। फलतः प्रकाश परवालजी ने पाँच लाख रुपये की तत्काल व्यवस्था कर अनेक चिंताओं को दूर किया। भण्डारा की पूरी जिम्मेदारी हल्दीराम के मालिक श्री मनोहरलाल अग्रवाल ने लेली। उन्हें यह प्रेरणा महाराज श्री के शिष्य श्री जगदीश अग्रवाल ने दी। श्री सत्यनारायण अग्रवाल ने प्रिंटिंग और मिडिया की व्यवस्था सँभाल ली। श्री औमप्रकाश मोदी ने भी यथेच्छ सहायता कर कार्यक्रम को सफल बनाया। देशराज गोयल, पुरुषोत्तम गुप्ता इत्यादि धर्मप्राण जनों ने भी उदारतापूर्वक सहयोग किया परन्तु काशी से यात्रा प्रारंभ होते ही कार दुर्घटना हो गई। अतः 20 दिन की यात्रा रोकनी पड़ी मात्र आठ दिन का कार्यक्रम ही सम्पन्न हो सका।

जयपुर के महोत्सव में निकाली गईशोभायात्रा की चर्चा आज भी रोमांचित कर जाती है। इसका विस्तार चार से पाँच किलोमीटर तक था। 1100 माँगलिक परिवेश में सजी नारियाँ मंगलकलश लेकर चल रही थी। जिसे देखकर वैदिककालीन संस्कृति का आभास होने लगा था। हाथी, घोड़ा, ऊँट, रथ, पालकी पर सवार भक्त, संतजन भारत की वास्तविक छवि प्रस्तुत कर रहे थे। शोभा यात्रा देखकर धर्म की शक्ति और 'सत्ता ' का अनुमान सहज किया जा सकता था। रामलीला मैदान से शुरू होने वाली यह यात्रा जयपुर के प्रमुख आराध्य गोविन्ददेव मंदिर तक थी। मंदिर के पास ही जय निवास उद्यान में प्रायः दस हजार लोगों ने भण्डारे का प्रसाद ग्रहण किया। सहभोज का इतना बड़ा दृश्य कभी-कभी ही दिखता है।

शोभा यात्रा अब प्रवचन सभा का रूप पकड़ चुकी थी जिसकी अध्यक्षता तत्कालीन मुख्यमंत्री अशोक गहलोत ने की। अन्य दिनों में भी मेयर, नेता प्रतिनिधि, राज्यपाल जैसे गणमान्य लोगों ने सभा को सुशोभित किया। कार्यक्रम निरंतर 22/8/2000 से 28/8/2000 तक चलता रहा। इन कार्यक्रमों में जो अनुभूति हुई वह जीवन का अनमोल खजाना बन गया। यह मेरी पहली और अद्भुत अनुभूति थी। इसमें मेरा पूरा परिवारजन, कुटुंबीजन, परिजन, सम्बंधीजन सभी तन-मन-धन से उपस्थित थे। पूरे समारोह में सत्यनारायणजी अग्रवाल सपरिवार भक्ति के साथ लगे रहे। कार्यक्रम के बीच ही एक दीक्षा लेने का बड़ा समारोह हुआ। इसी समारोह में गजानन्द अग्रवाल, सत्यनारायण अग्रवाल, सुरेश बजाज, गोवर्द्धनजी, श्री जगदीश अग्रवाल इत्यादि लगभग 500 लोगों ने दीक्षा ग्रहण की। महोत्सव के ये क्षण अद्भुद् के साथ-साथ महत्ती उपलब्धियां थी जो आज भी मेरे शरीर के रोम-रोम में व्याप्त है।

सी-33, अम्बाबाड़ी, जयपुर

• झलकियाँ • स्मृतियाँ • वैशिष्ट्य • सम्भाषण

डॉ. पवनकुमार शास्त्री

स्वामी श्रीरामानन्दाचार्य जी के सप्तशताब्दी महोत्सव के प्रत्येक उल्लासों के मनकों को एक ही माला में गुम्फित कर पाना सर्वथा असंभव है अतः पूर्व निबन्ध में उल्लेख से शेष रह गये तथ्य इस अनुपूरक निबन्ध में प्रस्तुत कर रहा हूँ—

- शतमुख कोटि होमात्मक श्रीराम महायज्ञ के नियम पूर्णतया शास्त्रानुकूल थे जिनका अनुपालन करना प्रत्येक यजमान, होता, ब्रह्मा, कुण्डाचार्य, प्रधानाचार्य व स्वयं संयोजक भी दृढ़तापूर्वक करते थे।
- यज्ञमण्डप में दीक्षित यजमानों एवं ब्राह्मणों के अलावा किसी अन्य का प्रवेश सर्वथा निषिद्ध था।
- यज्ञ मण्डप में पश्चिमी द्वार से ही प्रवेश करना होता था। प्रवेश से पूर्व द्वार पर बने कुण्डों में पैर धोना अनिवार्य था। पैंट-शर्ट का परिधान सर्वथा वर्जित था। फोटोग्राफर और ध्वनि विस्तारक यंत्रों के कार्यपालक कर्मचारी भी धोती पहनकर ही प्रवेश करते थे।
- पूरी तरह से गोमय लिप्त यज्ञभूमि से उठती हुई सुगन्ध आधुनिक भवनों को लज्जित कर रही थी।
- मण्डप बाहर से सात तलों में फूस से निर्मित था। उसके ऊपर पीतल का शिखर लगा था यह बाहर से तो सुन्दर था ही भीतर से तो और भी कई गुना सुन्दर था। जिसका वर्णन कर पाने में मैं असमर्थ हूँ।
- ९ दिवसात्मक कार्यक्रम में प्रतिदिन यजमानों को तिलक करके रक्षा बाँधी जाती थी और यजमान आचार्यों को तिलकाक्षत करके उनका पूजन करते थे।
- १८ जनवरी को समारोह के तीसरे दिन समस्त ५०० ब्राह्मणों को तिलक करने का आदेश प्रधानाचार्य ने दिया था। इस कार्य को करने के पश्चात् अपने दाहिने हाथ के अंगूठे और हथेली पर गर्व होता है। इसी प्रकार सम्पूर्ण महायज्ञ में कुल लगभग २७००० आहुतियाँ डाली गयीं। इन आहुतियों को डालने वाली अनामिका, मध्यमा और अंगुष्ठा इन तीनों अँगुलियों की सार्थकता सिद्ध जान पड़ती है और इनके सौभाग्य पर गर्व होता है।
- हवन करते समय मैं स्वयं भी मंत्रोच्चार करता रहता था। अतः अनायास ही

२५ हजार मन्त्रों का जप मेरे द्वारा सम्पन्न हो गया।

- मेरे कुण्ड सं. ९१ के कुण्डाचार्य और ब्रह्मा भाई-भाई थे तथा मेरे पूर्व परिचित भी थे। मेरे कुण्ड के होतागण भी आपस में मित्र थे अतः सम्पूर्ण हवन-कार्य में आत्मीयता और सख्यभाव आनन्द को दुगुना कर रहा था।
- यज्ञ मण्डप की परिक्रमा हेतु दो पथ बने थे जिनमें अन्दर के रास्ते पर विशिष्ट जन परिक्रमा करते थे और बाहरी परिपथ पर बैण्ड वादक उनका अनुसरण करते और बैण्ड बजाते चल रहे थे। रातदिन लोग यज्ञमण्डप की परिक्रमा करते रहते थे।
- मेरे कुण्ड सं. ९१ पर ऐसी स्थिति थी कि वहाँ से मुझे बैठे-बैठे ही सभी १०० कुण्डों के दर्शन अनायास ही होते रहते थे। मध्य में प्रधान पीठा पर प्रभु श्रीराम जी भी दिखते रहते थे। सारा यज्ञमण्डप ऐसा दीखता था मानो स्वयं भगवान यज्ञ पुरुष शतमुख धारण करके विराजमान हैं और प्रसन्न होकर आहुतियाँ ग्रहण कर रहे हैं।
- प्रत्येक कार्य सामूहिक रूप से होता था। हवन, पूजन, आरती, स्तुतिगान, पुष्पांजलि, प्रदक्षिणा और प्रसाद ग्रहण आदि साथ-साथ होता था। इससे एक विचित्र और मर्मस्पर्शी भ्रातृत्व उत्पन्न होता था। पूर्व में अपरिचित होने पर भी आजकल हम एक दिल, एक आत्मा, एक प्रभु, एक गुरु के शिष्य के रूप में व्यवहार करते थे। सभी एक-दूसरे को भाई जी कहकर सम्बोधित करते थे। स्यात् ऐसा ही व्यवहार दैनन्दिन के व्यवहारों में हम सभी भारतीय करने लगें तो हमारा राष्ट्र कितनी उन्नति कर ले।
- उत्सव में श्रीराम शतमुख कोटि होमात्मक महायज्ञ के अलावा अन्य सम्मेलन भी हुए जिसमें कबीरपंथी, हरिजन, मुसलमान, वाल्मीकि आदि ने भी भाग लिया किन्तु यज्ञ मण्डप का कार्य पूर्णतया सनातन धर्म के अनुसार शास्त्रीय पद्धति से हुआ।
- यज्ञ में आचार्य गण हिन्दी के अतिरिक्त संस्कृत, मराठी और गुजराती में भी संलाप करते थे तथा आदेश दिये जाते थे। संस्कृत भाषा को जानने के कारण मुझे चारों भाषाएँ हिन्दी जैसी ही सुबोध हो गई थीं।
- संयोजक पं. गणेश्वर शास्त्री द्रविड़ जी के सम्बन्ध में—
  संयोजक क्या होता है? यह कितना कठिन और परिश्रम साध्य होता है? यह श्रीमान् गणेश्वर शास्त्री द्रविड़ जी की कार्यविधियों में स्पष्ट लक्षित हुआ। पग-पग पर शास्त्रीय मर्यादाओं का ध्यान रखना, यजमानों, आचार्यों आदि को उन मर्यादाओं से अवगत कराते रहना तथा स्वयं भी मर्यादाओं का पालन करना

देखा। कहीं भी कोई त्रुटि न रह जाय इसके लिए सतत अध्ययन मनन के अलावा शारीरिक रूप से भी सहभागिता देखी। देखा कि शास्त्री जी नियमों से कोई समझौता नहीं कर रहे हैं। यज्ञानुष्ठान में भाग लेने से हमें आध्यात्मिक लाभ तो हुआ ही भगवत्सेवा के अनेक व्यावहारिक नियमों और विधियों की जानकारी भी हो गई। इस कराल कलिकाल में शास्त्रीय मर्यादाओं का कोई एक संरक्षक और अनुपालक आज भी है यह जानकर मन हर्षोत्फल हो जाता है और सिर श्रद्धा से श्री द्रविड़ जी (दोनों भ्राताओं) के चरणों में झुक जाता है।

- इस अनुष्ठान में श्री स्वामी जी महाराज (परमादरणीय पीठाधीश्वर ज.गु. स्वामी श्री रामनरेशाचार्य जी) ने दिल खोलकर खर्च किया। कहीं भी, किसी भी कार्य में, किसी भी स्तर पर कोई कोताही नहीं बरती गई। संयोजक श्री गणेश्वर शास्त्री द्रविड़ जी ने जो आदेश दिया स्वामी जी की ओर से वैसा ही अनुपालन किया गया।
- इस समारोह में यज्ञानुष्ठान के अतिरिक्त पुराण परायण, स्वागत-सत्कार, शोभायात्रा, रामलीला, रासलीला, विद्वत्सत्कार, अन्नपूर्णा क्षेत्र आदि कई अन्य आयोजन भी हुये जिनका वर्णन विस्तार भय से नहीं कर पा रहा हूँ।
- २४ जनवरी को विदाई के क्षण अत्यन्त ही मार्मिक थे जिसकी स्मृति में मैं केवल इतना ही लिखूँगा कि सभी यजमान भाइयों और आचार्यादिकों की याद आज भी आती है और हम उन्हें सादर नमन करते हैं।
- विदाई के दिन हमने अपने सहयोगी यजमान भाइयों के नाम पते एकत्र कर लिये जिनका संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है—

कुण्ड संख्या १.	प्रधान कुण्ड - श्री सन्त जी। आचार्यश्री के प्रतिनिधि
कुण्ड संख्या २.	अज्ञात
कुण्ड संख्या ३.	श्री रघुनाथ प्रसाद त्रिपाठी, सतना।
कुण्ड संख्या ४.	श्री मोहनलाल जोशी, इन्दौर।
कुण्ड संख्या ६.	श्री फूलन सिंह, बेगुसराय, बिहार।
कुण्ड संख्या ७.	श्री मुल्कराज चावला, इन्दौर।
कुण्ड संख्या ९.	श्री भालचन्द्र रामचन्द्र कुलकर्णी, नासिक।
कुण्ड संख्या १०.	श्री हेमदास, जोधपुर।
कुण्ड संख्या १२.	श्री विष्णु प्रसाद विंदल, इंदौर।
कुण्ड संख्या १३.	श्री अरुण रेखा सचदेव, इन्दौर।
कुण्ड संख्या १४.	श्री ओम प्रकाश मेहता, इन्दौर।
कुण्ड संख्या १५.	श्री सुरेश कुमार मित्तल, चंडीगढ़।

कुण्ड संख्या १६. श्री प्रवीण कुमार सिंह, शिमला।
कुण्ड संख्या १७. श्री भरत कुमार अग्रवाल, जयपुर।
कुण्ड संख्या १८. श्री मदन लाल जी बंसल, समाना-पंजाब
कुण्ड संख्या १९. श्री वी. डी. बी., जोधपुर।
कुण्ड संख्या २०. श्री कपूर चन्द्र गोयल, पटियाला, पंजाब।
कुण्ड संख्या २१. श्री छगन भाई माया भाई, सूरत।
कुण्ड संख्या २२. श्री महेश शर्मा, लक्सा, वाराणसी।
कुण्ड संख्या २३. श्री श्रीकान्त पाठक, मुंबई।
कुण्ड संख्या २४. सुश्री साध्वी खन्ना, लल्लापुरा, वाराणसी।
कुण्ड संख्या २५. डॉ. गुलाबनाथ सिंह, कानपुर।
कुण्ड संख्या २६. श्री दयानन्द तिलावत, काजूवाला, जोधपुर।
कुण्ड संख्या २७. डॉ. पवन कुमार शास्त्री, काशी।

- महोत्सव में श्री कांची कामकोटि के शंकराचार्य स्वामी श्री जयेन्द्र सरस्वती जी ने सूत्र रूप में भगवत्कथा कही। परमादरणीय स्वामी श्री करपात्री जी के परलोक गमन के बाद से ऐसा प्रवचन सुनने को नहीं मिला था। आचार्य के वचन आधुनिक आडियो और वीडियो कैसेटों में संग्रहीत हैं अतः उनकी विस्तृत चर्चा नहीं करके केवल इतना ही लिख रहा हूँ कि शंकराचार्य जी की उपदेशमयी वाणी दिल में गहरे पैठ गई।
- महोत्सव में कई अवसरों पर तथा विशेषकर के शंकराचार्य श्री जयेन्द्र सरस्वती जी के स्वागत में जो सम्भाषण परम पूज्य वर्तमान रामानन्दाचार्य स्वामी श्री रामनरेशाचार्य जी ने किया उसे सुनकर काशी का विद्वत् समाज आश्चर्यचकित हो गया। उन्होंने रामानन्दियों से ऐसी संस्कृतनिष्ठ वैदुष्यपूर्ण वाणी की कभी कल्पना भी नहीं की थी। श्री स्वामी जी के देवोपम वाणी को शतकोटि नमन। श्रीस्तु।

●

श्रीराम महायज्ञ में चमत्कार

रघुनाथ प्रसाद

जगद्गुरु रामानन्दाचार्य सप्त शताब्दी महोत्सव का समापन समारोह काशी में १६ जनवरी २००१ से २४ जनवरी २००१ तक बड़ी श्रद्धा-भक्ति और उत्साह के साथ मनाया गया।

इस अवसर पर श्रीराम महायज्ञ का आयोजन टाउनहाल के विशाल मैदान में हुआ और अन्य धार्मिक और सांस्कृतिक कार्य ईश्वरगंगी में निर्मित भव्य मण्डपनुमा पांडाल में सम्पन्न हुआ।

टाउनहाल के मैदान में भव्य और आकर्षक यज्ञ मण्डप का निर्माण देखकर सभी लोग श्रद्धा-भक्ति से ओत-प्रोत हो जाते थे। इतना विशाल और इतना ऊँचा सात मंजिला मण्डप पहली बार यहाँ देखने को मिला। कुशल कारीगरों ने बड़े परिश्रम, श्रद्धा और सुरुचिपूर्ण ढंग से इसका निर्माण किया था।

शतमुख कोटि होमात्मक श्रीराम महायज्ञ का आयोजन था। इस यज्ञ में १०० कुण्डों में श्रीराम षडक्षरमंत्रराज से एक करोड़ आहुतियाँ दी गयीं। १६ जनवरी से २४ जनवरी तक यह यज्ञ सम्पन्न हुआ।

एक सौ हवन वेदी में लगभग पाँच छः सौ यजमान और पंडित मिलकर एक साथ राम-यज्ञ कर रहे थे। बहुत ही भावपूर्ण दृश्य था। पूर्वी कोने में कई पंडित लोग माइक से षडक्षर मंत्र पढ़कर स्वाहा बोलते थे और सभी लोग एक स्वर में स्वाहा बोलकर हवन वेदी में आहुति दे रहे थे। बहुत ही रोमाञ्चकारी दृश्य था। हवन कुण्ड में अग्नि देव प्रसन्न होकर हविश ग्रहण कर रहे थे इसका आभास कुण्ड से ऊँची उठती हुई लपटों से लगता था। पूरा वातावरण हृदय में श्रद्धा-भक्ति उपजाने में भरपूर योगदान कर रहा था। इस पुण्य-लाभ का सुख लूटने में भक्तों का बड़ा समूह यज्ञ-मण्डप की परिक्रमा लगा रहा था। अधिक से अधिक परिक्रमा लगाने में सभी लोग बड़े उत्साहित थे। इनमें स्त्री, पुरुष, बाल, वृद्ध सभी थे। इस रामनाम महायज्ञ से लाखों लोगों के हृदय में रामनाम गूँजने लगा इसमें सन्देह नहीं।

परिक्रमा करते समय हवन-मण्डप में पूर्वी ओर के प्रवेश द्वार पर अत्यधिक भीड़ थी, भक्त लोग हवन सामग्री, पुष्प-माला, भेंट आदि अर्पण कर रहे थे इस कारण वहाँ थोड़ा रुकना पड़ता था। वहीं देखा कि एक अधेड़ व्यक्ति पीले वस्त्र में थे, एक हाथ

में डमरू और दूसरे हाथ में घंटी बजाकर रामनाम का कीर्तन कर रहे थे और आनन्द में थिरक रहे थे। वे आगे बढ़ रहे थे, हम भीड़ के कारण पीछे रुके थे। मन में आया कि देखो यह अपना प्रचार कर रहे हैं, लोगों को दिखा रहे हैं। दूसरे ही क्षण माथा का परदा हटा, हृदय का दिव्य चक्षु खुला। मन में सुविचार प्रकट हुआ, कहीं भी रामकथा होती है या भगवान् राम का भजन कीर्तन होता है तो किसी न किसी रूप में हनुमान जी वहाँ उपस्थित हो जाते हैं, तो ये हनुमान जी ही हैं, ऐसा मन में आभास हुआ। भगवान् राम का महायज्ञ देखकर अति प्रसन्न होकर हनुमान जी इस रूप में प्रकट होकर भगवान् का कीर्तन कर रहे हैं और आनन्दित होकर थिरक रहे हैं। हे मन! इनका चरण छूना चाहिए। यह विचार जैसे ही आया उनको देखने लगा। वे कीर्तन करते घंटी बजाते, डमरू बजाते आगे निकल गये। फिर दाहिनी ओर मुड़ गये जहाँ माइक पर पंडित लोग मन्त्रोच्चार करते हुए स्वाहा बोल रहे थे। भीड़ के कारण जल्दी निकल नहीं पाया जब तक वहाँ पहुँचा वे वहाँ नहीं थे। सोचा कीर्तन करते आगे बढ़ गये होंगे। तेजी से परिक्रमा पथ पर बढ़ने लगा पर वे कहीं दिखाई नहीं पड़े। जल्दी-जल्दी दो परिक्रमा करते हुए उन्हें खोजा पर वो दिखाई नहीं पड़े। दिखते भी कैसे वे तो अन्तर्ध्यान हो गये।

धन्य प्रभु की लीला। मन में भाव पैदा किया आपने, चरण छूने का भाव जगाया आपने, पर वह सौभाग्य नहीं मिल सका। जहाँ रामनाम का इतना बड़ा महायज्ञ हो रहा हो, वहाँ हनुमान जी न पहुँचे यह हो नहीं सकता। यहाँ प्रकट रूप में हनुमान जी का दर्शन कर मन आनन्द से भर उठा। भगवान् की अति कृपा से यह सौभाग्य प्राप्त हुआ। यह बड़े चमत्कार का क्षण था। यह क्षण गोपनीय है प्रकट नहीं करना चाहिए परन्तु अपने परम श्रद्धेय गुरु-आचार्य जी को बताने में अपने को रोक नहीं सका। मन में आनन्द की धारा बह रही थी।

●

साक्षात् भगवान श्रीराम

डॉ. विनोद पाण्डेय

सनातन धर्म में भगवान राम की महिमा सर्वविदित है। भगवान राम हमारे तन-मन में रचे बसे हैं। कलियुग में तो जीवन नैया पार लगाने का एकमात्र आधार राम-नाम ही है। भगवान राम की महिमा को देखते हुए जगद्गुरु स्वामी रामानन्दाचार्य ने भक्ति मार्ग एक लोकप्रिय और सहज मार्ग देश के लोगों को दिखाया। उन्होंने इस भक्ति मार्ग को बिना किसी भेदभाव के समस्त प्राणियों के लिए खोला। स्वामी रामानन्दाचार्य जी महाराज भगवान राम के ही अवतार थे।

स्वामी रामानन्दाचार्य जी महाराज का प्राकट्य आज से सात सौ वर्ष पूर्व सन् १२९९ ईस्वी में तीर्थराज प्रयाग के कल्पवास क्षेत्र में त्रिवेणी के पावन तट पर हुआ। उन्होंने काशी के पंचगंगा क्षेत्र को अपनी साधनास्थली बनाया। विद्वानों के मतानुसार स्वामी रामानन्द जी एक सौ ग्यारह वर्ष तक श्रीमठ में विराजमान रहे और भक्ति मार्ग का प्रचार-प्रसार हुआ। वर्तमान में जगद्गुरु रामानन्दाचार्य स्वामी रामनरेशाचार्य जी महाराज श्रीमठ के आचार्य हैं। उनके नेतृत्व में श्रीमठ के एक नये युग का सूत्रपात हुआ। स्वामी रामनरेशाचार्य जी ने श्रीमठ में शरद-पूर्णिमा से कार्तिक पूर्णिमा तक अनेक धार्मिक उत्सवों की शृंखला का प्रारम्भ कर काशी की सांस्कृतिक एवं धार्मिक प्रतिष्ठा को एक नया आयाम दिया है। उनके नेतृत्व में रामभक्ति की धारा पुनः प्रवाहित हुई है। इसी क्रम में स्वामी जी ने वर्ष २००० में आद्यगुरु स्वामी रामानन्दाचार्य जी की सात सौवीं जयन्ती मनाने का निश्चय किया। इसके अन्तर्गत २७ जनवरी २००० से वर्ष पर्यन्त सप्तशताब्दी महोत्सव का आयोजन किया गया। अन्य विविध कार्यक्रमों के अलावा इस महोत्सव की विशेषता यह रही कि पूरे वर्ष अखण्ड राम नाम संकीर्तन किया गया जो स्वयं में लोगों के कल्याण का मार्ग प्रशस्त करता है। देश भर में विविध आयोजनों के बाद १६ जनवरी से २४ जनवरी तक काशी में समापन समारोह आयोजित किया गया।

श्री रामानन्दाचार्य सप्त शताब्दी महोत्सव के समापन समारोह के अन्तर्गत शतमुख कोटि होमात्मक श्रीराम महायज्ञ, सर्ववेद वेदांग पारायण महायज्ञ, सन्तवाणी पारायण महायज्ञ, अन्नदान महायज्ञ, विद्वत् संगोष्ठी, राजनयिक सम्मेलन, हरिजन समाज सम्मेलन (वाल्मीकि सम्मेलन), शोभायात्रा आदि का आयोजन किया गया।

इनमें से दो आयोजन तो वास्तव में अपूर्व रहे। कहा जाता है कि जगद्गुरु श्री रामानन्दाचार्य महाराज ने अपने जीवन काल में काशी में ऐतिहासिक श्रीराम महायज्ञ का आयोजन किया था। उसके सात सौ वर्ष बाद जगद्गुरु रामानन्दाचार्य स्वामी रामनरेशाचार्य जी महाराज के सान्निध्य में शतमुख कोटि होमात्मक श्रीराम महायज्ञ का आयोजन किया गया। राम-नाम स्वयं में लोगों के कल्याण का मार्ग प्रशस्त करने वाला है और यदि श्रीराम षडक्षर मन्त्रराज से एक करोड़ की आहुतियाँ दी जायँ तो इनके प्रभाव की कल्पना सहज ही की जा सकती है। प्रसिद्ध विद्वत् आचार्य पण्डित गणेश्वर शास्त्री द्रविड़ के नेतृत्व तथा यज्ञ संरक्षक पण्डित लक्ष्मीकान्त रामाचार्य, पं. श्रीकृष्ण लक्ष्मीकांत पुराणिक के सहयोग से ॐ रां रामाय नमः के मंत्र से एक सौ कुण्डों में याज्ञिकों द्वारा एक करोड़ आहुतियाँ दी गयीं। मंत्र के उच्चारण से पूरा वाराणसी नगर राममय हो गया था। मंत्रों के श्रवण और यज्ञ मण्डप की परिक्रमा मात्र से शरीर में ऊर्जा का संचार हो रहा था।

मैंने प्रतिदिन यज्ञ स्थल पर उपस्थित होकर यज्ञ मण्डप की परिक्रमा की। मुझे ऐसा लग रहा था जैसे भगवान राम, लक्ष्मण और माँ सीता का सान्निध्य प्राप्त हो रहा है। ऐसी ऊर्जा मुझे जीवन में कभी प्राप्त नहीं हुई थी। मुझे विश्वास है कि कोटि होमात्मक श्रीराम महायज्ञ से काशी सहित पूरे देश के लोगों का कल्याण निश्चित होगा। यह दिव्य अनुभूति स्वामी रामनरेशाचार्य जी महाराज के संकल्प एवं दृढ़ इच्छाशक्ति तथा उनकी कृपा के द्वारा ही हमें प्राप्त हो पायी। काशी के लोग उनके ऋणी रहेंगे।

श्री रामानन्दाचार्य सप्तशताब्दी समापन समारोह की दूसरी उपलब्धि हरिजन सम्मेलन था। इस कार्यक्रम के द्वारा स्वामी रामानन्द जी की वाणी 'जाति पाँति पूछे नहिं कोई हरि को भजे सो हरि का होई' सही अर्थ में चरितार्थ हुई। इस कार्यक्रम में देश भर से आये हरिजन एवं दलित बन्धुओं ने भाग लिया। स्वामी जी ने उन्हें बराबरी और ऊच्च दर्जा देकर एक नया कीर्तिमान स्थापित किया। सही अर्थों में श्री रामानन्दाचार्य सप्तशताब्दी महोत्सव इतिहास के पन्नों पर स्वर्णाक्षरों में लिखा जायेगा।

●

धर्मयात्रा : एक सुखद अनुभूति

रघुनाथ प्रसाद त्रिपाठी

लगभग सात वर्ष पूर्व "रामभाव प्रसार यात्रा" इन्दौर से वाराणसी जाते हुए सतना नगर में भी पधारी। यह शुभ दिन था सतना नगर एवं मेरे व्यक्तिगत भाग्योदय का, जब मुझे देव स्वरूप जगद्गुरु रामानंदाचार्य स्वामी रामनरेशाचार्य जी महाराज के श्री चरणों का दर्शन उनकी सेवा पूजा अर्चना करने का अमूल्य क्षण प्राप्त हुआ। महाराजश्री का दर्शन कर सतना नगरवासियों की वही मनः स्थिति थी जो विदेहराज जनक की प्रभु श्रीराम के दर्शन करने के उपरान्त थी।

ब्रह्म जो निगम नेति कहि गावा। उभय वेष धरि की सोइ आवा।।
विदुषन्ह प्रभु विराटमय दीसा। बहु मुख कर पग लोचन सीसा।।

क्यों न हो आज से सात सौ वर्ष पूर्व प्रभु श्रीराम के रूप में अवतरित हुए जगद्गुरु श्री रामानंदाचार्य जी महाराज ने कलिमल ग्रसित विविध तापों से संतप्त भवसागर में डूबने की चिंता से भयातुर जीवों को पार उतारने के लिए द्वितीय सेतु का निर्माण किया था। (अगस्त्य संहिता, भविष्य पुराण आदि से यह मान्यता प्रमाणित है कि स्वामी रामानंद जी सर्व नियन्ता परमप्रभु श्रीरामजी के ही अवतार थे) उन्हीं प्रातः स्मरणीय रामानन्दाचार्यजी महाराज के अवतार के रूप में वर्तमान पीठाधीश्वर स्वामी रामनरेशाचार्य जी महाराज अवतरित होकर जनकल्याणार्थ पुनीत कार्य में संलग्न हैं।

मेरा कथन अतिशयोक्ति न माना जाये परन्तु यह यथार्थ है कि काशी का परम पुनीत श्रीमठ जो एक गुमनाम आचार्यपीठ हो चुकी थी १९८८ में ३६ वर्षीय तरुण पीठाधीश्वर श्रीरामनरेशाचार्य जी महाराज के जगत् गुरु पद पर आसीन होने से आलोकित हो उठी और आज वाराणसी ही नहीं सम्पूर्ण भारत के धार्मिक-आध्यात्मिक विद्वत् समाज में प्रातः स्मरणीय शंकराचार्य जी के मध्य अपना एक श्रेष्ठ स्थान प्राप्त कर चुका है। ऐसे श्रेष्ठ, करुणामयी सरल निश्चल प्रतिभा की साक्षात् प्रतिमूर्ति पूज्य स्वामी जी का आशीर्वाद-सान्निध्य पाकर मैं सपरिवार धन्य हो गया, निर्बल को बल मिल गया, अज्ञानी को ज्ञान मिल गया। परम पिता परमात्मा जगत् नियन्ता से मिलाने वाले गुरुदेव मिल गये ऐसे पूज्यपाद के श्री चरणों में मेरा शत शत नमन वन्दन अभिनन्दन है।

राष्ट्र की आध्यात्मिक परम्पराओं में सर्वाधिक व्यापक स्वरूप वाले रामानंद

सम्प्रदाय तथा मध्यकाल में भक्ति आन्दोलन एवं राम-भक्ति की लोक गंगा के प्रवर्तक जगद्गुरु रामानंदाचार्य जी का सप्त शताब्दी महोत्सव एवं एक वर्ष तक चलने वाले राष्ट्रव्यापी आयोजनों के विविध आध्यात्मिक कार्यक्रमों के साथ जनकल्याण यात्रा का शुभारंभ २७ जनवरी २००० को वाराणसी से हुआ। राष्ट्रीय आयोजन समिति में मुझे भी कार्य करने का अवसर मिला इसके लिये मैं स्वयं को गौरवान्वित मानता हूँ।

आज से सात सौ वर्ष पूर्व स्वामी रामनंदाचार्य जी महाराज ने जो जाति भेद-वर्ण भेद समाप्त कर नई चेतना जगाकर शंखवाद किया था–

जात पाँत पूछै नहिं कोई। हरि को भजै सो हरि का होई।।

उसका समाज में प्रचार-प्रसार कर वर्तमान पीठाधीश्वर सम्पूर्ण भारत में मानव समाज सनातन धर्म की रक्षा करने में सफल हुये हैं। अन्यथा आज के इस भौतिकवादी-अनीश्वरवादी बहुल समाज में आध्यात्मिक चेतना धार्मिक भावना सामाजिक समरसता मानवीय सहिष्णुता का नितान्त अभाव हो जाता और हम मानव होते हुये भी पशुवत जीवन जीते जो भारत वर्ष के लिये घोर अभिशाप होता।

यह यात्रा वाराणसी से प्रारम्भ होकर पूरे देश में भ्रमण कर एक वर्ष बाद जनवरी २००१ में वाराणसी वापस पहुँची। मुझे भी उत्तर प्रदेश, राजस्थान, उड़ीसा, मध्यप्रदेश की यात्रा में सम्मिलित रहने का सौभाग्य मिला मैंने प्रत्येक स्थान में जो देखा मन प्रफुल्लित हो गया। गोस्वामी तुलसीदास जी ने रामचरित मानस में प्रभु श्रीराम वनगमन का जो चित्रण किया है उसकी अनुभूति यात्रा में हुई:

जहँ जहँ राम चरन चलि जाहीं। तिन्ह समान अमरावति नाहीं।।
गाँव गाँव अस होई अनंदू। देखि भानुकुल कैरव चंदू।।

पूज्यपाद के दर्शन करने उनके श्री मुख से अमृत वचन को सुनने हजारों नर-नारी घण्टों प्रतीक्षा में खड़े रहते थे और जब महाराज श्री अगले पड़ाव के लिये प्रस्थान करते थे तो उनके नेत्रों से अविरल धारा बहने लगती थी कण्ठ अवरुद्ध हो जाता था। वाणी मूक हो जाती थी और ऐसा प्रतीत होता था मानो वे कह रहे हों–

धन्य भूमि वन पंथ पहारा। जहँ जहँ नाथ पाउ तुम्ह धारा।।

इस यात्रा के प्रत्येक पड़ाव में निर्धारित पूजन, आराधना, हवन कार्यक्रम के साथ रामानन्दाचार्य सम्प्रदाय से संबंधित भाषण, निबंध प्रतियोगितायें स्थानीय श्रेष्ठजनों का अभिनन्दन जिसमें महिला हरिजन का समावेश अनिवार्य रहता था, पत्रकार वार्ता-सत्साहित्य का वितरण महाराज श्री द्वारा प्रवचन एवं जिज्ञासुजनों की शंका समाधान कर उन्हें संतुष्ट करना आदि कार्यक्रम सम्मिलित रहते थे।

सम्पूर्ण यात्रा में महाराज श्री के प्रवचनों एवं आशीर्वचनों में जहाँ सनातन धर्म भारतीय संस्कृति तथा संपूर्ण मानवता के विकास में सन्तों के सकारात्मक भूमिका का

समावेश रहता था वहीं समाज में समानता का सन्देश प्रदान करते थे। आपने सदैव अपने प्रवचनों में स्पष्ट किया कि कट्टरता से धर्म नहीं चलते। उदारता से धर्म का सम्मान बढ़ता है तथा आदर्श समाज का निर्माण होता है। अच्छे मानव पैदा होते हैं। इसी उदात्त भावना से प्रेरित होकर राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी ने आज की राजनीति में धर्म एवं कर्म को जोड़ा तथा मानवता को गुलामी, शोषण, गरीबी, ऊँच-नीच की भावना से मुक्त रहने के लिये अनूठा नेतृत्व प्रदान किया। स्वामी रामानंदाचार्य जी जैसे महान संतों की महान दृष्टि ही उनकी प्रेरणा स्रोत रही है।

महाराजश्री ने स्वयं मठ की सीमाओं से बाहर निकलकर सम्पूर्ण देश को मार्गदर्शन देकर लोकतांत्रिक परम्पराओं को अक्षुण्ण बनाये रखने हेतु सद् प्रयास किया है जो देश की एकता, अखण्डता को बनाये रखने में सफल होगा।

मेरी व्यक्तिगत मान्यता है कि यह यात्रा देश की सामाजिक, राजनीतिक, आध्यात्मिक, शैक्षणिक प्रगति में अत्यन्त मार्गदर्शिका होगी तथा भारत विश्व के मानचित्र में अपना विशिष्ट स्थान बनायेगा। एक बार भारत पुनः विश्व के आध्यात्मिक गुरु रूप में प्रतिष्ठित होगा।

पूज्यपाद प्रातः स्मरणीय जगद्गुरु रामानंदाचार्य स्वामी रामनरेशाचार्य जी महाराज के श्री चरणों में नमन करते हुए त्रुटियों के लिए क्षमाप्रार्थी हूँ।

●

पञ्चम अध्याय
आलेख खण्ड
संत-माहात्म्य : रामभाव प्रसार यात्रा

विवेकी राय *

पूज्य स्वामी जी उपस्थित संत जन! मेरे बन्धुजन सुधी श्रोतागण! आज कितने आनन्द की बात है कि कुछ भक्ति-चर्चा का अवसर मिला और यह अवसर भी एक ऐसे व्यक्ति के सान्निध्य में मिला है जिसका दर्शन पुण्य दर्शन है, पवित्र दर्शन है। जगत् प्रपंच से हट कर इस तरह की चर्चाएँ एक दैवयोग प्रदान करती हैं, अज्ञात रूप से हमको लाभान्वित करती हैं। इस प्रकार का लाभ पहुँचाने के लिए काशी पुरी से आए स्वामी जी के हम कितने अनुगृहीत हैं। सप्तशताब्दी के सिलसिले में यह यात्रा चल रही है। उसी क्रम में गाजीपुर शहर को सौभाग्य मिला। एक समय की आवश्यकता के अनुरूप उन लोगों ने अपने को व्यक्त किया। संकट का समय था लेकिन आज जटिल समय ही नहीं सम्भवतः उससे भी जटिल युग है जिसमें हम जी रहे हैं, तो हम सोचें इस प्रकाश में खोजें उन सूत्रों को क्या उस समय की चुनौतियों का सामना करने के लिए। मात्र चर्चा वर्तमान समय में कितना प्रदर्शन कर सकती यही उपयोगिता है। चर्चा से कोई बात नहीं बनती है। हम उपयोगितावादी हैं, कुछ उपयोगिता के बारे में सोचें। संतों के बारे में गलत धारणा है कि वे लोग आत्मलीन होते हैं। संसार की समस्याओं को छोड़कर एक प्रकार से पलायन कर कहीं एकान्त में साधना भजन करते हैं। जलते हुए जगत् को ये क्या जानें। इस स्थूल धारणा से हटकर थोड़ा विचारपूर्वक देखेंगे तो स्पष्ट रूप से किसी संत की वाणी, योगेश्वर के श्लोक, कवि की एक चौपाई ने जितना समाधान, आश्वासन दिया है उतना किसी सरकार ने न दिया, न दे सकती है। वे ईश्वर के प्रतिनिधि हैं, उनकी वाणी की शक्ति असीम है। एक ऊर्जा है। वह वातावरण का सृजन करती है। उसके मन को उसकी वाणियाँ झंकृत करती हैं। संत रामानन्द जी ने तो सूक्ष्म जगत् की चुनौतियों से हटकर स्थूल जगत् की चुनौतियों का

---

* डॉ. विवेकी राय द्वारा गाजीपुर में विद्वत् गोष्ठी में दिये गये भाषण पर आधारित।

सामना किया था। उस युग में वह काम किया जिसकी प्रासंगिकता आज भी है।

नारी उत्थान, सामाजिक पुनर्जागरण उस स्रोत को स्वीकार करते हैं, अवदान को स्वीकार करते हैं। जड़ किसी वृक्ष की छोटी होती है उसका प्रसार बड़ा होता है। उसकी छाया में कितने-कितने को विश्राम मिलता है। एक रामानन्दाचार्य ने कितने रामानन्दाचार्य पैदा कर दिये। सच्चा गुरु वही है जो भविष्य के लिए निर्माण करता है। ऐसा भविष्य जिसकी कोई सीमा नहीं, दो फूल गुलाब, चम्पा का फूल संत कबीरदास, संत तुलसीदास के रूप में संत रामानन्द की ही परम्परा है। जड़ वही है। कोई भी युग आये कबीर की प्रासंगिकता बनी रहेगी तो घूमफिर कर संत तुलसीदास, रैदास, मीरा, विद्यापति पर आ जायेगा। यह समय का चक्र है जो घुमाकर ले आयेगा। आज तोड़फोड़ विध्वंस का युग है, आतंकवाद का युग है, कबीर हमारे साथ खड़े हैं, घर फूको चलो हमारे साथ, मिट्टी पानी का घर, कुछ फूँकताप का घर लुकाठा जलाने का, स्थूल दृष्टि से देखें तो जल रहा है, जात-पाँत, ऊँच-नीच को जला रहा है। जो यथार्थ से परे हैं सबको जला रहा है। रामानन्दाचार्य आज भी हमारे साथ हैं, स्रोत वही हैं। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने स्वीकार किया कि कबीर के भीतर सुधार के क्रान्तिकारी विचार आये, उसके स्रोत संत रामानन्द हैं। कबीर को गर्व है कि गुरु रामानन्द मिल गए। उनके स्रोत आज भी हमारे साथ हैं और अन्त तक हमारे साथ रहेंगे। तुलसी, रैदास, कबीर के रूप में या किसी के रूप में रहे। तुलसी के साथ अधिक प्रभावशाली रहे हैं। तुलसी का सांस्कृतिक समाजवाद बहुत विराट् है। कुछ स्थूल बातों को लेकर उड़ा देना आज के युग की हिम्मत की बात है। सड़क, बिजली, नहर तुलसी की गम्भीरता को कम आत्मसात करते हैं। हम तुलसी को नहीं देख सकते। एक दोहे पर मुग्ध हो जाता हूँ। किसी संत ने कहा था यह सारा संसार ईश्वर का अवतार है। पहला अवतार संसार है इस संसार को देखकर तुलसी मुग्ध है। वह पूरे संसार को ईश्वर के रूप में देख रहा है। यह साक्षात् ईश्वर के रूप-राशि हैं। अनन्य भक्त वह है जो स्वयं को पूरे संसार का सेवक मानता है। संसार भगवान् का स्वरूप है कण-कण में ईश्वर व्याप्त है। कहीं भी सेवा करते हैं तो ईश्वर की सेवा है और चराचर भगवान् का स्वरूप है।

संत यही काम करते हैं। कुछ न करके भी बहुत कुछ करना उस संत की भीतर की शक्ति संसार को सँवार रही है। नष्ट होते-होते बच जाता है। डूबते-डूबते किनारे लग जाती है। तमाम विध्वंसक शक्तियों के बीच यह संसार टिका हुआ है और टिका रहेगा। लाखों लड़ाइयों के बाद भी मानवता बची है और बची रहेगी। यह सब मनीषियों, संतों की कृपा है जो अज्ञात रूप से हमें बचाती है।

वे भी संत हैं जो ईश्वर को नहीं मानते, कर्म को पूजा के रूप में इस संसार की

सेवा करते हैं। सायकिल का आविष्कार करने वाला ईश्वर भक्त था कि नहीं लेकिन उसने वह सेवा की। कितने लोगों का उपकार एक व्यक्ति ने किया, उसकी सीमा नहीं। वह भी संत है उसके भीतर भी ईश्वर है। हम मानें न मानें उसने ईश्वर की ऊर्जा से सायकिल का निर्मण किया। हमारे रामानन्दाचार्य जी ने स्थूल उपकार किए हैं सूक्ष्म उपकार अनन्त युगों में प्रकाश देते रहेंगे। इतिहास में देखते हैं बड़ी अद्भुत स्मारिका है, सारी जानकारी प्राप्त हुई, हमारे आत्मबल को बढ़ाया, व्यक्ति देश जाति को सुरक्षा का आश्वासन दिया यह आश्वासन साधु-समाज से चल रहा है।

●

ज.गु. स्वामीरामानन्दाचार्य जी

प्रो. युगेश्वर

भक्ति द्राविड़ ऊपजी लाये रामानंद,
प्रगट करी कबीर ने सप्तदीप नव खंड,

अत्यन्त प्रचलित इस दोहे में आचार्य रामानन्द जी को प्रायः दक्षिणी-सा बताया गया है। उन्होंने भक्ति द्रविड़ प्रदेश से लायी। द्रविड़ का अर्थ है तमिल प्रदेश। १२ आलवार तमिल में ही हुए थे। वे तमिल भाषी भी थे। उन्होंने तमिल में ही रचनाएँ की थीं। ये आचार्य न होकर भक्त थे। इनकी रचनाएँ वैष्णव भक्ति की हैं। इन्होंने भगवान् की भक्ति में भावुक रचनाएँ की थीं इन्हें आचार्य न मानने का कारण है। भावुक रचना न कर ब्रह्म के स्वरूपादि की विवेचना करते थे। विशेषकर इनकी रचनाओं के तीन आधार ग्रन्थ थे– ब्रह्मसूत्र, उपनिषद् एवं गीता इन तीनों को प्रस्थानत्रयी कहा जाता है। इन्हें ही आधार बनाकर आचार्यों ने अपने सिद्धान्तों का निर्धारण किया।

द्रविड़ उपजी का संकेत १२ आलवारों की है। भक्ति इनके द्वारा ही प्रारंभ होती है। कुछ ऐसी ही बात भागवत की भूमिका में कही गयी है। भक्ति स्वयं अपना परिचय देती कहती है– मैं द्रविड़ में उत्पन्न हुई। उत्पन्ना द्राविड़े साहम् इसका मतलब यह है कि भक्ति उत्तर में नहीं थी। वह प्रथम बार द्रविड़ प्रदेश में उत्पन्न हुई। यही हिन्दी में ली गयी। संस्कृत की उत्पन्ना हिन्दी में उपजी है। किन्तु इसे मानने में कुछ बाधाएँ हैं। पहली बाधा के अन्तर्गत है भक्ति का अनादि होना इसका खंडन। क्या भक्ति देश कालबद्ध है? अनादि नहीं है? जब कि अध्येताओं को वेद में भी भक्ति का दर्शन होता है। क्या भगवान् का भजन सादि है? ऐसा तो नहीं कि भगवान् भी सादि हों। किन्तु भला कौन होगा जो भगवान् को सादि कह कर देशकाल बद्ध करे? भगवान् अनादि हैं तो भक्ति और भक्त भी अनादि हैं। भक्ति को सादि मान भी लें तो भक्ति दक्षिण में ही क्यों? भारत के अन्य भागों में भी क्यों नहीं उत्पन्न हुई? अगर भक्ति का आधार शास्त्र, उक्त तीन ग्रंथ हैं तो क्या ये वेदांत ग्रंथ दक्षिण की रचनाएँ हैं? ये तो उत्तर में भी थीं। इनके आचार्य व्यास माने जाते हैं। व्यास दक्षिण नहीं, उत्तर के थे। भक्ति के दूसरे आचार्य शांडिल्य एवं नारद भी उत्तर के थे। संत अपने को नारदी भक्त कहते हैं। वे किसी आलवार का नाम नहीं लेते हैं। हाँ रामानन्द जी को अपना गुरु कहते हैं।

रामानन्द जी कभी दक्षिण गये इसका प्रमाण तो दूर, उल्लेख का भी अभाव है। फिर भक्ति को द्रविड़ से लाने की बात का कोई अर्थ नहीं बनता है। इस दोहे का रचयिता रामानंद जी को केवल लाने का श्रेय देता है। सप्तद्वीप नवखंड में प्रचार का श्रेय संत कबीर को देता है। इससे रामानंद जी की शक्ति सीमा में आ जाती है। रामानंद जी उत्तर भारत प्रयाग और काशी के थे। उन्होंने प्रचार का भार मात्र कबीर पर क्यों छोड़ दिया। जबकि उनके ग्यारह और प्रमुख शिष्य थे। संभवतः कबीर सबसे प्रतिभाशाली थे। रामानंद जी के सान्निध्य में काशी में थे। कबीर साहब ने रामानन्द जी के विचारों को फैलाया। इसे मानने में विशेष बाधा नहीं होनी चाहिए।

रामानन्द जी के गुरु (आचार्य) राघवानन्द जी दक्षिण के थे। काशी आये थे। पंचगंगा घाट पर रुके थे। उनका महत्व जानकर रामानन्द जी प्रयाग से काशी आ गये। रामानन्द जी ने भक्ति उनसे ही प्राप्त की। इसे ही भक्ति का दक्षिण से लाना कहना चाहिए। रामानन्द जी के बारह शिष्य बारह आलवार जैसे हैं। आलवारों में आंडाल (गोदा) एक स्त्री है। रामानन्द जी के बारह शिष्यों में एक या दो स्त्रियाँ हैं। पद्मावती एवं सुरसुरी। बारह भक्तों को बारह सूर्य भी कहा गया। बारह सूर्य कहने में उनकी भगवत्ता का बोध कराया गया है। सूर्य भी वैष्णव हैं। बारह सूर्यो में विष्णु भी हैं। इन शिष्यनामों में बड़ा मतभेद है। इसलिये कुछ लोग पाँच शिष्यों का ही अधिक उल्लेख करते हैं कुछ लोग सुरसुरी को सुरसुरानन्द कहते हैं। असंख्य शिष्यों में चुनाव भी कठिन कार्य है। बारह आलवारों में अनेक जातियों और वर्गों के लोग हैं। ऐसे ही रामानंद जी के शिष्यों में जातियों और वर्गों की विविधता है। एक बात स्पष्ट है कि दक्षिणेत्तर भारत में भक्ति का प्रचार करने में रामानन्द जी की महत्वपूर्ण भूमिका है। उन्होंने दक्षिण के आचार्य से भक्ति ली थी। इसी से उन्हें दक्षिण से लाने वाला कहा गया।

भक्ति द्रविड़ उपजी इस कथन का भी एक विशिष्ट संदर्भ है। द्रविड़ देश से उत्पन्न के पूर्व भी भक्ति थीं। गोस्वामी तुलसीदास उसका संकेत करते हैं– गोरख जगायो जोग भगति भगायो लोग। इसका अर्थ सीधा है। उत्तर में भी भक्ति थी। गुरु गोरखनाथ ने भक्ति के भावात्मक एवं प्रपन्न को स्वीकार न कर योग को महत्व दिया। इस योग में किसी अवतार या विग्रह को स्वीकार नहीं करते हैं। दक्षिण की भक्ति ने शरणागति, अवतार एवं विग्रह सबको स्वीकार किया। शांडिल्य, नारद एवं भागवतादि की भक्ति सांप्रदायिक नहीं थी। न तो वह किसी दार्शनिक संप्रदाय एवं आचार्य से जुड़ी थी। द्रविड़ भक्ति संप्रदाय एवं आचार्यों से जुड़ी है। आचार्यों के भिन्न-भिन्न दार्शनिक विचार हैं। उनके संप्रदायों के अलग-अलग हैं। श्री सम्प्रदाय, सनकादि संप्रदाय आदि। ये सभी विचारधारा एवं संप्रदाय वेदांत भाष्यों पर आधारित हैं।

दक्षिणी आचार्यों की भक्ति वैदिक, वेदांती थी। इसी से उसे स्वीकार करने में उत्तर को देर नहीं लगी। दक्षिणी आचार्य परंपरा एवं भक्ति जैन-बौद्ध के विरुद्ध खड़ी हुई थी। इसने भी दक्षिण भक्ति को स्वीकार करने में सहायता दी। दक्षिण, उत्तर भारत को दो देखने वालों को भक्ति में अनेक बातें जोड़नी पड़ती हैं। किन्तु भारत कभी बटाँ न था। आचार्य और भक्त चाहे जहाँ के रहे हों, उनके पूज्य राम, कृष्ण, शिव, गणेश, देवी उत्तर के थे। तमिल साहित्य के आदि प्रणेता अगस्त उत्तर के थे। वैष्णवाचार्य नाथमुनि भी उत्तर के थे। ये जामुन और रामानुज के भी पूर्वज थे।

रामानंद जी शास्त्र व्याख्या में न जाकर भक्त बनाने और भक्ति का प्रचार करने में लगे। उनकी मूल शिक्षा अद्वैत की थी। रामानुज भी मूलतः अद्वैतवादी थे। अंतर यह था कि रामानुज जीव और जगत् को असत्य न मानकर ब्रह्मांश ही मानते थे। जीव, जगत् न मिथ्या है, न स्वतंत्र ब्रह्म से इनकी अद्वैतता है। ब्रह्म जीव और जगत् से विशिष्ट है। (रामानन्द जी शास्त्र या संप्रदाय निर्माता वाले आचार्य न होकर शिष्य निर्माता आचार्य हैं।) अतः इनके यहाँ आकर आचार्य शब्द थोड़ा भिन्न रूप लेता है। रामानुज की विष्णु, कल्पना अर्थात् निर्गुण जैसे थे। रामानन्द जी विष्णु का स्थानीय राम को बनाया उन्होंने, राम के निर्गुण, सगुण दोनों स्वरूपों की छूट दी। 'रीझि भजो या खीझि'। सगुण, निर्गुण दोनों प्रकार के उपासक उनके शिष्य बने। असल में सभी प्रकार के भक्ति आन्दोलन उदारता के आन्दोलन हैं। भक्ति का मंदिर सबके लिये खुला है। आचार्य रामानंद ने इस खुलेपन पर विशेष बल दिया। जुलाहा कबीर, चमार रैदास के कारण खुलापन और भी चमक उठा। कबीर साहब का काव्य निर्गुण का पर्याय हो गया। कोई निर्गुण गा रहा है तो वह कबीर का भजन गा रहा है। किसी खास अवसर पर निर्गुण हो रहा है तो कबीर काव्य का भजन हो रहा है। कबीर और तुलसी में को बड़ छोट कहत अपराधू। तुलसी के लिये तो अक्षर भी चाहिए। कबीर के लिये किसी अक्षर की आवश्यकता नहीं है। हाथ में केवल एक खँजड़ी हो।

राम जी की प्रतिष्ठा रामायण से हुई थी। राम-कथा की मिति नहीं है। फिर भी जान पड़ता है राम को लोक में प्रतिष्ठित करने का श्रेय रामानंद जी को है। रामावत संप्रदाय और विशिष्टाद्वैत को है। रामानुज लक्ष्मण हैं, तो रामानंद आनंद स्वरूप राम हैं। ब्रह्म की आनन्द मूर्ति हैं। राघवानंद जी से लेकर रामानंद के बहुत से शिष्यनामों में आनंद जुड़ा है। रामानुज संप्रदाय में आचार्य जुड़ता है।

रामानुज के संप्रदाय में शंखत्याज्य है। रामानंद के संप्रदाय में राम, सीता के साथ दक्षिण के हनुमान और शंख को महत्व दिया। आज शायद कोई ब्राह्मण परिवार हो जहाँ शंख न हो। सभी हिन्दू हनुमानपूजक हैं। शक्तिशाली, उद्धारक हनुमान के मंदिर जगह-जगह हैं। रामानुज अष्टाक्षर और रामानन्द षऽक्षर मंत्र देते हैं। रामानुज संप्रदाय में

नारायण मंत्र की प्रधानता है। रामानंद संप्रदाय में राममंत्र का महत्व है। स्वयं शिव राम राम जपते हैं 'मानस' में शिव पार्वती का संवाद स्पष्ट संकेत है। नारायण, विष्णु नहीं, राम ही पूज्य हैं। ब्रह्म स्वरूप हैं। शिव पार्वती संवाद रामतत्व की स्थापना के लिये है। शिव दक्षिण के आचार्य अगस्त्य से राम कथा सुनते हैं। अगस्त्य का रूप रामावत संप्रदाय वाला जैसा है। शिव नारायण और विष्णु का खंडन न कर मौन रह कर राम के ब्रह्मत्व की स्थापना करते हैं। 'मानस' में केवल राम ही ब्रह्म हैं।

रामानुजी संम्प्रदाय में शिव आदि के प्रतिकूल भाव रहते हैं। रामानन्द सबको आदर देते हैं। रामानुजी प्रायः गृहस्थ होते हैं वे कभी जटा, भस्मादि धारण नहीं करते। दीक्षा देने का अधिकार केवल गद्दीधारी आचार्य को है। रामानंद में कोई भी दीक्षा दे सकता है। इसी से रामानन्द के प्रभाव में उनके गुरु हुए। भक्त गुरु भी थे। भक्त भी। संत पंथ गुरु को साहब कहने की प्रथा है। परमात्मा भी साहब हैं। रामानंदी जटा, भस्मादि धारण करने वाले विरक्त भी होते हैं। रामानुज सम्प्रदाय में ये नहीं होते हैं। रामानुजी अन्य वैष्णवों को हीन समझते हैं। रामानंदी सबका आदर करते हैं। रामानंद में पादुका पूजन की प्रथा है। रामानुज में पादुका पूजन नहीं है। रामानन्दी के यहाँ तुलसी की माला आवश्यक है।

रामानन्द जी की देशकाल दृष्टि अधिक गहरी एवं विस्तृत है। अतः उन्होंने रामानुज की अपेक्षा उदारता बरती है। इन पर उत्तर के आन्दोलनों एवं भक्तों की आवश्यकता का प्रभाव है। रामानन्द जी का प्रभाव अनेक पंथों, साधनाओं पर उनके शिष्य में अधिकांश आनन्द लगाते हैं। कुछ लोग दास लगाते हैं। कबीरदास, रैदास आदि। 'दास' भक्ति का सबसे महत्त्वपूर्ण शब्द है बिना दास भाव के भक्ति सम्भव नहीं। महाराष्ट्र के महानुभाव पंथ पर भी उनका प्रभाव है। ज्ञानेश्वर के पिता रामानन्द जी के शिष्य थे। रामानन्द जी ने शास्त्र ही नहीं शस्त्रों पर भी बल दिया। रामानन्द जी ने मुसलमान बने लोगों को पुनः हिन्दू बनाया। उन्होंने इस्लाम के बलात्कार का संगठित विरोध किया। योग्य गुरु के शिष्य भी योग्य थे। कबीर, रैदास, जैसे उनके शिष्यों ने भक्ति का देश व्यापी प्रचार किया। केवल अयोध्या या काशी ही नहीं उनके अनेक केन्द्र थे। रामानन्द सम्प्रदाय में तुलसीदास भी हुए। वे रामानन्द जी की शिष्य परम्परा में थे। उन्होंने न तो रामानन्द जी का नाम लिया न अपने किसी गुरु का स्पष्ट उल्लेख करते हैं। अनुमान से उनके गुरु नरहर्यानन्द जी माने जाते हैं। तुलसीदास त्रिभुवन गुरु शिव को ही अपना गुरु कहते हैं। शिव ही पार्वती तथा तुलसीदास को रामभक्ति का उपदेश देते हैं। रसिक भाव की भक्ति का संकेत भी रामानन्द सम्प्रदाय के अन्तर्गत है। यह समाहार शक्ति का द्योतक है। विरोध और त्याग की अपेक्षा रामानन्द सम्प्रदाय में संग्रह की प्रवृत्ति है। कबीर शास्त्रों के विरोधी हैं किन्तु शिव विरोधी नहीं हैं। इसका मूल कारण

शाक्तों की हिंसा और स्त्री (शक्ति) का नया रूप जान पड़ता है।

रामानुज ने तमिल के साथ संस्कृत (राष्ट्रभाषा) को महत्त्व दिया था। रामानन्द जी ने संस्कृत को महत्त्व देकर भी हिन्दी को राष्ट्रभाषा का महत्त्व दिया। रामानुज की रचनाएँ केवल संस्कृत में हैं। रामानन्द जी ने संस्कृत के साथ ही हिन्दी में भी रचना की है। हिन्दी साहित्य के विकास में रामानन्द सम्प्रदाय का महत्वपूर्ण योग है। द्विजवर ने काकभुशुंडि को राम मंत्र न देकर 'शम्भु मंत्र द्विजवर मोहिं दीन्हा'। इस सम्प्रदाय के पूज्य हनुमान शिव के अवतार हैं। शंकर सुवन हैं। यह रामानन्द जी के बाद का विकास है। तुलसीदास कहते हैं 'मोको झूठो साँचो राम को कहत सब, मेरे मन मान है न हर कों', न हरि को (हनुमान बाहुक)

रामानन्द जी के सम्प्रदाय में दंडधारी संन्यासी से लेकर शस्त्रधारी नागा भी हैं। वस्त्रों में श्वेत, पीत दोनों के अतिरिक्त अनियमित भी है।

पंचगंगा नाम का कारण यहाँ धूतपापा, किरणा एवं गंगा, यमुना सरस्वती का संगम है। रामानन्दी सम्प्रदाय ने इसी स्थान पर अपना वास बनाया। इनकी तपस्या से यह स्थान और पवित्र हुआ। मुसलमानों ने इस स्थान को भ्रष्ट करने का पूरा प्रयत्न किया। इस स्थान पर बलात् अधिकार किया। जो बचा उसी पर आज रामानन्द जी उर्फ रामनरेशाचार्य जी का आश्रम है। स्थान, आश्रम, संन्यास की पवित्रता देश देशान्तर में फैल रही है। पंचगंगा का आश्रम वृक्ष है। देश देशान्तर में फैले, फैलते साधु संन्यासी, भक्त इस वृक्ष के पुष्प और पत्ते हैं। रामानन्द जी की विचार सरणी एवं आश्रम की पुनर्प्रतिष्ठा में स्वामी रामनरेशाचार्य जी की महत्वपूर्ण भूमिका है। इन्होंने एक अव्यक्त होती सृष्टि को व्यक्त रूप दिया है। मूर्छित लता, पता को हरीतिमा प्रदान की है। काशी से उठी राम नरेश ध्वनि अनन्त में फैल रही है। अनेक टूटी डालियों की मूल वृक्ष से जुड़ने की व्याकुलता बढ़ गयी है। भस्मावृत रामानन्द संदेश की अग्नि शिखा पुनः ज्योतिर्मय हो उठी है। अवध नरेश ने लंका से लौटकर यज्ञ किया था। स्वामी रामनरेशाचार्य स्थान स्थान पर यज्ञ कर रहे हैं। पंचदेवोपासक हिन्दू समाज पंचगंगा उपास्य मानता है। एक गंगा वाले शिव के इस नगर में पंचगंगा रामानन्द सम्प्रदाय का दिव्य अधिष्ठान है। कर्ता स्वामी रामनरेशाचार्य हैं। उनकी अनेक कर्म चेष्टाएँ हैं। दैव सहायक है। ये ही पंचगंगा के पाँच स्वरूप हैं। पंचीकरण है। पंचगंगा के स्वर में वेदान्त केशरी का गर्जन है। प्रसिद्ध 'हनुमान चालीसा' का निर्माण रामानन्द जी की रचना शैली में है। सार शैली ही नहीं भाव भी उनकी रचना के हैं। अनेक पंक्तियाँ हनुमानचालीसा और रामानन्द जी की रचना से मिलती है। दोनों में हनुमान जी के महत्व का प्रकाश है।

हनुमान शक्ति या बल के प्रतीक हैं। श्रीराम की सम्पूर्ण शक्ति हनुमान के रूप में प्रगट होती है। श्री राम ने अपनी शक्ति हनुमान को दी है। हनुमान की पूजा के साथ

अखाड़े भी हैं। रामानन्द जी का सम्प्रदाय भी हनुमत बल में विश्वास करता है। अतः रामानन्दी भक्त हनुमत उपासक हैं। हनुमत पूजा में दो बातों को ध्यान में रखना आवश्यक है। हनुमान जी की प्राप्ति राम को दक्षिण में हुयी थी कि हनुमान जी दक्षिण भारत के हैं। दूसरी बात यह कि हनुमान अत्यन्त पिछड़े बनवासी समाज से आते हैं। दूरदर्शी आचार्यों ने हनुमान जी का चुनाव कर दक्षिण को दक्षिण से दुष्ट, अन्यायी को अत्यन्त पिछड़ों के बल से जीता। उत्तर दक्षिण, अगला पिछड़ा आदि को द्वन्द्व स्वरूप देखना अभारत, अमानव एवं ध्वंसात्मक दृष्टि है। संत भगवंत में जन्म, जाति का भेद नहीं है।

आचार्य श्री रामानन्द जी की एक महत्वपूर्ण देन है भक्ति में प्रेम का योग। नवधा भक्ति के साथ उन्होंने दशधा प्रेम का योग किया। प्रेम नया न होकर दशधा होकर नया हो गया। जल तुम्बिका न्याय से सबसे ऊपर हो गया। कबीर ने कहा एकजू अच्छर प्रेम का पढ़ै सो पंडित होय। प्रेम का क का ही पांडित्य है।

स्वामी रामानन्द जी के सम्प्रदाय में सगुण - निर्गुण का द्वन्द्व नहीं था। उनके शिष्यों में दोनों प्रकार के लोग हैं। कृष्ण काव्य में सगुण निर्गुण का द्वन्द्व देखकर लोगों ने अनेक प्रकार के निष्कर्ष निकाले हैं। वहाँ श्रीकृष्ण के प्रिय सखा और वृष्णियों के प्रवर मंत्री उद्धव जी को निर्गुण का प्रतिनिधि बनाया है। अधिकतर कृष्ण भक्तों ने उद्धव को निर्गुणमार्गी के रूप में प्रस्तुत किया है। यह द्वन्द्व कुछ ऐतिहासिक है। रामानन्दजी ने दोनों मार्गों का समान आदर किया है। सगुणमार्ग का प्रतिनिधित्व प्रायः गोपियों करती हैं। यह कुछ-कुछ स्त्री पुरुष भावों के द्वन्द्व जैसा है। रामानन्द जी के यहाँ स्त्री पुरुष का द्वन्द्व नहीं है, इसका मुख्य कारण, रसिकता या रामानन्दी प्रभाव भी कहा जा सकता है। रामचरितमानस उत्तरकाण्ड में काकभुशुंडि में सगुण निर्गुण द्वन्द्व का संकेत है। तुलसीदास निर्गुण सगुण की अभेदता स्वीकार करते हैं। कृष्ण भक्तों में सगुण का आग्रह अधिक है। इसी से द्वन्द्व है।

●

स्वामीरामानन्द का आविर्भाव

डॉ. उदयप्रताप सिंह

माघ का महीना था। शिशिर ऋतु अपनी युवावस्था में मदोन्मत्त थी। संसार के समस्त जीव-जन्तु अपने अस्तित्व की रक्षा में प्रकृति से संघर्ष कर रहे थे। देश के कोने-कोने से पहुँचा जनसंकुल प्रयाग में सम्पूर्ण पुण्यों को एक ही साथ प्राप्त करने को उत्कण्ठित था। प्रकृति की प्रतिकूलता और धर्मनिष्ठों की जिजीविषा के बीच दुहसह्य संघर्ष चल रहा था। शीत की अतिशयता रक्तसंचार को अवरुद्ध करने की सीमा तक पहुँच गयी थी। रेत पर निवास और खुला आकाश, शीतकाल में भी कल्पवासियों की 'अग्निपरीक्षा' ले रहा था। दोनों की वक्र दृष्टि शनि की तरह कल्पवासियों पर बार-बार पड़ रही थी। रह-रहकर उनके संकल्प डिग रहे थे। शीतमिश्रित हिमाधियाँ हड्डियों तक को कंपायमान बना रही थीं। एक पर एक वात्या चक्र के झोके से संकल्पबद्धों की हिम्मत पस्त कर रहे थे। सहसा आकाश काले बादलों से घिर गया। घटाटोप ने भगवान् भास्कर की किरणों को निस्तेज बना दिया था। काले बादलों के बीच की अकस्मात् चकाचौंध किसी बड़ी घटना की सूचना दे रही थी। प्रकृति का प्रलयंकारी रूप, तड़ित चालन की तीव्र धार बड़े-बड़े रणबाँकुरे के छक्के छुड़ा रही थी। कोमल विहगों, शुक शावकों का समूह शीतमिश्रित वर्षा से स्वतः मृत्यु का ग्रास बन रहा था। कल्पवासियों की दशा वर्णनातीत थी। कोई घुटने को छाती में छिपाये शीतकाल को ललकार रहा था तो कोई घासफूस से बने पर्णकुटियों में स्वयं को छिपा रखा था। मानो महामाया अपने महापट में ईश्वर को अदृश्य किये हो। कोई अपने वक्रसरीखे संकल्प के समक्ष प्रकृति के उत्पात को पुण्य समझकर स्वागत के गीत गा रहा था। कोई मन ही मन यह सोच रहा था कि धर्म के उत्ताप में यह ठंडक क्या कर सकती है?

कल्पवासियों के आगमन से देश का कोई भी कोना अछूता नहीं था। धार्मिक जगत् का कोई भी सम्प्रदाय वहाँ गैरहाजिर नहीं था। संकल्पित कल्पवासी संगम की सिकता पर अपना एक मासीय संसार बसा चुके थे। धर्म पर्व के इस लोकोत्सव में दूरागत कल्पवासियों का साथ धर्मनिष्ठ स्थानीय प्रयाग के निवासी भी निभा रहे थे। बहुत दूर संगम की रेती पर घास-फूस से बनी एक छोटी सी कुटिया अचानक दैवी प्रकाश से जगमगा उठी। लोगों की भीड़ उधर दौड़ने लगी। उस अलौकिक आभा से सम्पूर्ण प्रयाग भूमि आलोकित हो उठी। उसकी चर्चा सम्पूर्ण मेला क्षेत्र में विद्युत तरंगों की तरह फैल गयी। कुछ ही क्षणों में मेघाच्छन्न आकाश निर्मल हो गया। विद्युत की

चकाचौंध विलुप्त हो गयी। सम्पूर्ण प्रयाग भूमि में प्रसन्नता की लहर दौड़ गयी। प्रेम के बादल ने ऐसी रसवर्षा किया कि सौमनस्य और सौहार्द के संसार की सृष्टि हो गयी। सम्प्रदायों की कटुता माधुर्य में और समाज का वैमनस्य मित्रता में बदल गया। नवजात की किलकारी ने 'भये प्रकट कृपाला दीनदयाला' का वातावरण बना दिया। सूर्य की किरणें बिहँसने लगीं। हर्षातिरेक में जनसमुदाय निमग्न हो गया। पिता पुण्य सदन शर्मा का मुखमंडल जहाँ अपत्यस्नेह से रोमांचित हो उठा वहीं जननी सुशीला देवी की गोद में प्रसन्नता का पारावार हिलोरे लेने लगा। कुछ मनीषियों ने इस अलौकिक प्रकाश को रामावतार कहा तो कुछ ने इसे ब्रह्म का साक्षात् अंश। इस सम्पूर्ण लीला की स्थली बनी प्रयाग की पुण्य भूमि। इसे ही आज ''रामानंद प्राकट्य धाम-हरित माधव मंदिर'' (दारागंज) के नाम से जाना जाता है।

अकस्मात् एक दिन गर्मी की तपती लू में आठ वर्षीय ब्रह्मचारी वेशधारी बालक गंगा की रेती पर परिभ्रमण करता हुआ दिखायी पड़ा। उसके सामने ही पंचगंगा घाट पर धर्म के साक्षात् विग्रह आचार्य राघवानन्द सांध्यकालीन बंदन में निमग्न थे। अचानक आँखें खुलते ही एक बालक उनके समक्ष आ खड़ा हुआ। गुरु ने उसे पुकारते हुए कहा ब्रह्मचारी कहाँ जा रहे हो? बाल सुलभ सहजता में वह नकारात्मक ढंग से सिर हिला देता है। मानो कह रहा हो कि कहीं नहीं... बस यहीं। आचार्य पुनः उसका नाम लेकर पुकारते हुए पूछते हैं कहाँ जा रहे हो? इस बार रामानन्द शब्द की अनंत प्रतिध्वनियाँ बालक के मस्तिष्क में हलचल उत्पन्न करने लगीं। बालक तत्काल गुरु चरणों में प्रणाम अर्पित करते हुए आचार्य की प्रभामण्डल से चमत्कृत हो उठा। उसका अंतस गुरु की उजास से भर उठा। कालान्तर में वही जगद्गुरु रामानन्द के रूप में धर्म का सम्राट् बनता है। दक्षिण से उठी भक्ति की लहर को वह पूर्णतः आत्मसात कर लोकोद्धार में निकल पड़ता है। भारत का कोई कोण नहीं जहाँ उसका जन सम्पर्क न हुआ हो। आचार्य राघवानंद उसे चिद् अचिद् और दोनों से विशिष्ट सिद्धांत की लौ पकड़ा देते हैं। यही बालक धर्म के भारतीय आकाश में अपनी उदारता और विराटता के कारण आज तक देदीप्यमान है। यही धर्म का सेतु बनता है। मानव मात्र के लिए ईश्वर प्रपत्ति का मार्ग प्रशस्त करता है। इन सम्पूर्ण-लोकमंगलपरक कार्यों के लिए वह काशी-वाराणसी को मुख्यालय बनाता है और पंचगंगा घाट उसका कार्यालय।

देवालयों की दुर्दशा और संस्कृति की दुरवस्था से आचार्य रामानन्द खिन्न रहते थे। काशी में साधना करते उन्होंने इनकी दशा को समुज्ज्वल बनाने में भगीरथ प्रयास किया था। काशी अर्थात् वाराणसी एक नदी का उत्तरमुखी गंगातीर्थ है। वरुणा नदी और अस्सी नाला इसे अपनी सीमाओं में आबद्ध करते हुए पंचनद पंचगंगा की स्थापना करते हैं। गंगा को गंगातीर्थ बनाने के लिए पुष्कर, वापी, कूप, गढ़हा और मत्स्योदरी झील जैसी जल संस्थाएँ इसे तीर्थ पूर्ण तीर्थ और परमतीर्थ बनती हैं। काशी तीर्थ का

यह माहात्म्य स्वामी रामानंद को ज्ञात था। वह यह भी बखूबी जानते थे कि यहाँ की मृत्यु मोक्ष है। यहाँ का जीना चना चबैना और गंगाजल पर निर्भर है। उन्हें यह ज्ञात था कि यहाँ की आँखें पढ़ने के लिये खुलती हैं। यहाँ की जिह्वा और होठ मंत्र बोलते हैं। हर छोटा बड़ा आदमी बनारस की मिट्टी पर पाँव रखते ही ऋषि हो जाता है। इस परमतीर्थ का आदमी आसमान में चलता है और ऋतुओं की हवा में नहाता है। मंदिरों के शिखरों पर पग प्रणाम रोपता है। यहाँ कोई आना चाहे, न चाहे आने पर जाना नहीं चाहता। बनारस की मस्ती में ऐसा फक्कड़पन है कि भौतिकता और सत्ता की चकाचौंध उसे सुहाती ही नहीं। आध्यात्मिकता का ऐसा प्रकाश है कि कोई भी बिना आलोकित हुए रह नहीं सकता।

धर्म की ऐसी नगरी में साधनशील आचार्य रामानंद प्रेम और भक्ति के चबूतरे पर बैठकर हर आदमी को आदमी समझते हैं। न किसी की जाति पूछते हैं न धर्म और न किसी का स्थान। प्यार पर उनका अखण्ड विश्वास है। वह प्यार बाँटते हैं और प्यार बाँटने की सलाह देते हैं। भजन करते हैं और भजन करने की बात करते हैं। बहुत सीधी-सपाट भाषा में अपनी वाणियों का संधान करते हैं। जहाँ भी जाते हैं भक्तों, साधकों और अनुगामियों का मेला लग जाता है। जो अत्यन्त कट्टर हैं रामानन्द उन्हें अच्छे नहीं लगते। उनकी उदारता से लोग उनके मुरीद बन जाते हैं। उनकी साधना की ऊँचाई अनेक आकाशों से बड़ी ठहरती है। उनकी भक्ति की गहराई अनेक सागरों से गहरी लगती है। प्रगतिशीलता उनके चिंतन में ही नहीं कार्यव्यापार में भी उतरती दिखायी पड़ती है। उदारता उनके मानस की प्रकृति बन गयी है। आचार्यत्व उनके अधीत ज्ञान का मानदण्ड है। निर्गुण और सगुण भक्ति धाराएँ उनकी इंगला-पिंगला नाड़ियाँ हैं। समन्वयशीलता उनकी कार्यशैली है। पंथों, सम्प्रदायों में वह प्रेम ही तलाशते हैं। वह रमता योगी हैं– सबको जगाते हैं। रामनाम की मणि को धारण करते हैं। सीतारूपी पारस को हृदय में रखते हैं। हनुमान उनके आराध्य हैं पर राम सर्वस्व हैं। वह भक्त, संन्यासी, योगी, यती, वैरागी, वैष्णव, शाक्त, शैव सबको जगाते हैं। न शास्त्र के विरोधी हैं और न लोकमत के प्रतिवादी। अद्भुत है उनकी लोकचेतना। विचित्र है उनका भागवत मन।

प्रयाग में त्रिवेणी के सन्निकट स्वामी रामानंद का प्रादुर्भाव हुआ था। फलतः उनकी भक्ति में प्रेम, योग और ज्ञान की त्रिधारा बहती है। दक्षिण की भक्ति भावित धारा को उत्तर में प्रवाहित करने का श्रेय स्वामी रामानंद को दिया जाता है। आर्य और द्रविड़ को भक्ति के सूत्र में वही पिरोते हैं। विष्णु और राम-कृष्ण को एक कहते हैं। श्री और सीता में अभेद बताते हैं। दलित और ब्राह्मण को एक ही प्रभापुञ्ज से उत्पन्न मानते हैं। जाति-पाँति को व्यर्थ कहते हैं। उत्तर-दक्षिण के सेतु बनते हैं। द्वादश शिष्यों में प्रत्येक जाति को प्रतिनिधि बनाते हैं। नारी का सम्मान करते हुए पद्मावती और सुरसुरी को

दीक्षा प्रदान करते हैं। कबीर जैसे जुलाहे और रैदास जैसे दलित को अनंतानंद से कम नहीं आँकते। पीपा को सेनाचार्य से बड़ी गद्दी नहीं देते। रैदास को शिष्य बनाते समय सम्पूर्ण भारतीय संतों को निमंत्रित करना उनकी सामाजिक और धार्मिक दृष्टि की उदात्तता का ही परिचायक है। तपोरत रहते हुए आशीर्वाद देना उनकी प्रकृति थी। 'चमत्कार उन्हें निरभिमानी बनाता है। उनकी सिद्धि लोकमंगल की विधायिका है। साधकों में सर्वश्रेष्ठ स्वामी रामानंद बुद्ध और गोरखनाथ के अनंतर सबसे बड़े व्यक्तित्व दिखायी पड़ते हैं। आत्मोद्धार से अधिक लोकोद्धार उनका श्रेय है। भक्ति के माध्यम से शक्ति का सृजन उनका लक्ष्य है। बावन में छत्तीस ठाकुरद्वारों की स्थापना उनके धर्म-विकास का प्रथम आयाम है। वैरागियों का भारतीय संगठन बनाना उनके राष्ट्र और संस्कृति प्रेम का परिचायक है। लोकभाषा हिन्दी में रचनाएँ उनके लोक हिमायती रूप का आइना है। संस्कृत, पैशाची, प्राकृत और हिन्दी उनके सम्वाद की भाषाएँ हैं। साधक, मौलवी उनके प्रशंसक हैं। जैन-बौद्ध उनकी भक्ति साधना के कायल हैं। उनकी शंखध्वनि से लोकमंगल का निनाद होता है। चेतावनी भरी शंखध्वनि से बड़े-बड़े बादशाहों की सत्ता हिल जाती है। गयासुद्दीन तुगलक इसका ज्वलंत प्रमाण है। उनके शंखनाद से हिन्दुओं पर किये जा रहे अत्याचार और घंटा-घड़ियाल पर प्रतिबंध स्वयं समाप्त हो जाते थे। वह तो सबकी खैर मनाने वाले महातपस्वी थे।

आचार्य रामानंद जगद्गुरु की महोपाधि से विभूषित थे। इस्लामी शासन काल में सम्पूर्ण हिन्दु समाज का उन्होंने मार्ग-दर्शन किया था। धर्म के सच्चे स्वरूप को पहचानने की प्रविधि बतायी थी। लोकचेतना को समृद्ध करने के साथ धर्मचेतना में एक विशेष प्रकार का दैवी प्रकाश भरा था। उनका हृदय शुद्ध प्रबुद्ध और निर्मल था। उनके कार्य लोकोपकारी और समरसता के सर्जक थे। मध्यकाल जैसे अंधकारपूर्ण समय में रामरूपी महत् प्रकाश से धर्म और समाज को एक ही साथ प्रकाशित करने वाले महात्मा रामानंद ही थे। उन्हें लोक की चिंता परलोक से कम नहीं थी। उनके मन में संस्कृत से कम आदर लोकभाषाओं के प्रति नहीं था। शास्त्रसम्मत परम्परा का सम्मान उनका स्वभाव था पर लोकसम्मत परम्परा में उनका मन बसता था। वह परम्परा में भी नवीन प्रवाह के प्रयोक्ता थे। वह रामभक्ति धारा के पुरोधा थे। उनके द्वारा अभिमंत्रित द्वादश शिष्यों ने उन्हीं की भावना का विस्तार सप्त द्वीप नवखण्डों में किया था। आचार्य रामानंद तो एक महाप्रकाश थे। उस महाप्रकाश की आभा आज सात सौ वर्षों से भारतीय नभोमण्डल पर छायी हुई है। इस महाप्रकाश में प्रत्येक भारतीय को शास्त्र, लोक, परम्परा, धर्म, संस्कृति, समाज पुराण, इतिहास, दर्शन और सभ्यताएँ साफ-साफ दिखायी पड़ती हैं।

•

सामाजिक क्रान्ति के अग्रदूत : स्वामीरामानन्द

डॉ. कन्हैया सिंह

स्वामी रामानन्द वैष्णव आचार्यों की परम्परा में एक ऐसे आचार्य हैं जिन्होंने केवल भक्ति के सिद्धान्तों का प्रतिपादन नहीं किया अपितु भक्ति के क्षेत्र में समाज के ऊँच-नीच, छुआछूत आदि के भेदों को मिटाकर सामाजिक समरसता निर्माण करने का महनीय कार्य भी किया। उन्होंने एक तरफ कबीर (जुलाहा) धन्ना (जाट) सेन (नाई) रैदास (चमार) और सुरसुरी (स्त्री) जैसे संतों को प्रभावित किया और दूसरी ओर तुलसीदास जैसे ब्राह्मण के ऊपर भी ऐसी छाप छोड़ी कि उन्होंने जाति-पाँति की व्यर्थता को पोषित करते हुए निर्गुण और सगुण दोनों मार्गों को समान रूप से महत्वशाली बताया। इसका कारण यह था कि इनके पूर्व ही काशी जैसी धर्मनगरी में बैठकर स्वामी जी ने अपने उदार विचारों को लोक में व्याप्त कर दिया था। उन्होंने भक्ति के द्वार ब्राह्मण और शूद्र, सबल और निर्बल, कुलीन और अकुलीन तथा स्त्री और पुरुष सबके लिए समान रूप से उन्मुक्त कर दिया था। इस सामाजिक क्रान्ति के वे ऐसे अग्रदूत थे जिनके आलोक में कबीर ने मध्य युग में ऐसी वैचारिक क्रान्ति का शंखनाद किया जो सामाजिक समानता के क्षेत्र में आज भी स्पृहणीय है।

स्वामी रामानन्द ने इस सामाजिक क्रान्ति के साथ भक्ति के क्षेत्र में भजन-कीर्तन से लेकर काव्य-रचना तक में लोक भाषा को प्रतिष्ठित किया। इसका कारण शायद यह था कि वे अपनी सामाजिक क्रान्ति के संदेश को जन-जन तक पहुँचाना चाहते थे। यह तभी संभव होता, जब लोक भाषा का आश्रय ग्रहण किया जाता। उन्होंने स्वयं अपने सिद्धान्तों को संस्कृत रचनाओं में भी लिखा, पर साथ ही हिन्दी में मंत्रों, पदों, आरती और योग साधना सम्बन्धी रचनाएँ लिखीं। इससे इस बात की पुष्टि होती है कि स्वामी रामानन्द भाषा के सम्बन्ध में अपनी एक सोची समझी विशेष दृष्टि रखते थे, जिसके प्रभाव से कबीर, सूर, तुलसी से लेकर सत्रहवीं, अट्ठारहवीं शताब्दी के संत कवि बूला साहब, गुलाल साहब, भीखा साहब, गोबिन्द साहब, देवकी नन्दन, शिवनारायण और मंगरू साहब आदि ने विभिन्न लोक-भाषाओं के ऐसे मिश्रित रूप का प्रयोग किया, जो सर्वसामान्य जन की समझ में आ सके। इसे हम भाषा का लोक धरातल कह सकते हैं। यह एक प्रकार की भाषिक क्रान्ति थी। इस क्रान्ति के भी प्रेरणास्रोत रामानन्द थे।

आध्यात्मिक दृष्टि से स्वामी रामानन्द वैष्णव विचारों के थे। स्वामी रामानुज विष्णु

की भक्ति का प्रचार करते थे, किन्तु रामानन्द स्वामी ने विष्णु के अवतार रामभक्ति की प्रतिष्ठा की और उसका ऐसा प्रचार किया कि संपूर्ण उत्तरी भारत में वैष्णव उपासना की दृष्टि से विष्णु के अवतार राम ही मुख्य रूप से स्वीकार्य हो गए। यद्यपि वे अवतारी राम और सगुण राम के भक्त थे, पर राम नाम के जप को भी भक्ति के लिए पर्याप्त मानते थे। राम का नाम सगुण और निर्गुण दोनों के लिए स्वीकार्य हो सकता था। इसीलिए कबीर ने भी राम को अपनाया, किन्तु वे निर्गुण राम थे और तुलसी ने जिस राम को अपनाया वे सगुण थे। तुलसीदास ने सगुण और निर्गुण इन दोनों से बड़ा राम के नाम को माना। ये सगुण और निर्गुण में एक समन्वय स्थापित करने का प्रयास था। ऐसी समन्वय-द्रष्टि के मंत्र दृष्टा स्वामी रामानंद ही थे।

स्वामी रामानंद ने अपने भक्ति सम्बन्धी विचारों से समाज के सभी वर्गों को जोड़ने का काम किया। उन्होंने सभी सवर्ण-अवर्ण, स्पृश्य-अस्पृश्य, स्त्री-पुरुष को भक्ति का अधिकारी बताया। इसके पूर्वाचार्यों में छुआछूत की जो जकड़न थी, उसे काफी हद तक तोड़ने का काम उन्होंने किया। कहा जाता है कि उनका ही उद्घोष था–

जाति पाँति पूछे नहिं कोई।
हरि को भजे सो हरि का होई।।

इस दृष्टि से उन्होंने एक सामाजिक क्रांति का श्रीगणेश किया था। सामाजिक समरसता उस युग की बड़ी आवश्यकता थी। सिकन्दर लोदी जैसे असहिष्णु धर्मान्ध शासक द्वारा हिन्दुओं पर अत्याचार साधु-संतों पर कहर ढाने की घटनाएँ इतिहास-प्रसिद्ध हैं। मुस्लिम-धर्मान्धता और कट्टरता के इसी युग में स्वामी जी का अवतरण हुआ था। उन्होंने देखा कि एक ओर सत्ताधीश समाज पर कहर ढा रहा है और दूसरी ओर समाज टुकड़ों में बँटा हुआ एक दूसरे को घृणा की दृष्टि से देख रहा है। धर्माचार्य भी अपने आचरण-प्रवचन द्वारा ऊँच-नीच का भेद निर्माण कर रहे हैं। इस परिस्थिति को दूर करने के लिए स्वामी जी ने सबके लिए सहज-सुलभ रामभक्ति का प्रचार किया और राम-नाम मंच का सभी को अधिकारी बताकर धर्म और भक्ति के क्षेत्र में सभी वर्गों में समानता स्थापित करके समाज को जोड़ने का कार्य किया। उनके द्वारा प्रारम्भ की गई, इस सामाजिक क्रान्ति का प्रभाव उनके समय से लेकर पूरे मध्य युग और आगे उन्नीसवीं शताब्दी तक के संत कवियों पर देखा जा सकता है।

स्वामी रामानंद का जन्म तीर्थराज प्रयाग में हुआ था। अवध किशोरदास अयोध्या के अनुसार उनका अवतरणकाल सं. १३५६ विक्रमी है। फर्कुहर ने उनका जन्म दक्षिण भारत में माना था। पर अधिकांश विद्वान् उनके प्रयाग में जन्म लेने का समर्थन करते हैं। उनका शरीर सं. १४६७ में छूटा, ऐसी मान्यता है। अगस्त्य-संहिता से इनकी पुष्टि होती है। स्वामी जी का स्थायी निवास तो काशी था और यहीं पंचगंगा घाट

पर उनका मठ भी था जिसे संभवतः लोदी ने आगे चलकर तोड़ कर मस्जिद बनवा दी थी और अब वहीं से हट कर धुर गंगा के तट पर नवीन श्रीमठ बन गया है, जहाँ उनके वर्तमान उत्तराधिकारी श्री रामनरेशाचार्य जी महाराज उनके संदेशों का अलख जगा रहे हैं। स्वामी जी ने राजस्थान-गुजरात, मध्यप्रदेश आदि में व्यापक भ्रमण किया था और वहाँ उनकी गद्दियाँ और उनकी विचार-परंपरा के संत भी हैं।

स्वामी जी के नाम से जो संस्कृत और हिन्दी रचनाएँ मिलती हैं उनमें श्रीवैष्णवमताब्जभास्कर तथा रामार्चनपद्धति दो प्रमुख रचनाएँ हैं, जिन्हें डॉ. पिताम्बर दत्त बड़थ्वाल ने प्रामाणिक माना है। हिन्दी में उनकी छोटी-छोटी रचनाएँ मिली हैं जिसमें 'रामरक्षा' बड़े महत्व की रचना है, यद्यपि इसमें तंत्र-मंत्र की पद्धति से राम मंत्र दिया गया है, इसी कारण रामचन्द्र शुक्ल जी इसे रामानन्द की रचना होने में सन्देह करते हैं, किन्तु उस युग में तंत्र-मंत्र-योग आदि का ऐसा प्रचार हो गया था कि उससे विरत करने के लिए रामानन्द के द्वारा ऐसी रचना करना आवश्यक था जो राममंत्र की ओर ले जाकर जनता को दिशा दे सके। दूसरी भाषा रचना 'आरती हनुमान जी' की है। इसी आरती को आगे संशोधन करके तुलसीदास के नाम से प्रचलित कर दिया गया। 'ज्ञान लीला', 'योग चिन्तामणि', 'ज्ञान तिलक' आदि छोटी-छोटी हिन्दी रचनाएँ उनकी प्रचलित हैं। रामानन्द का एक पद गुरु ग्रंथ साहब में मिला है जो संतों के निर्गुण भाव के मेल में है और दो पद रज्जक दास की सर्वांगी में मिले हैं। ये भी निर्गुण भक्ति और सहज साधना के प्रतिपादक हैं। इन रचनाओं को आचार्य रामचन्द्र शुक्ल आदि ने रामानन्द का नहीं माना है, जो उचित प्रतीत नहीं होता। ऐसी ही रचनाएँ रामानन्द को हिन्दी की लम्बी संत काव्य परम्परा से जोड़ती हैं और कोई कारण नहीं है कि इन रचनाओं को रामानन्द की रचनाएँ न माना जाय।

स्वामी रामानंद की उपर्युक्त सभी रचनाओं के आलोक में जब हम उनकी आध्यात्मिक, सामाजिक और भाषिक दृष्टि का विचार करते हैं तो प्रतीत होता है कि उनके अध्यात्म-चिन्तन में तन के योग के साथ मन के योग की भी आवश्यक-अनिवार्य स्थिति थी। इसी प्रकार साधक-भक्त की रहनी (आचरण) का भी महत्व था। उन्होंने दार्शनिक दृष्टि से अपने रामावत संप्रदाय में विशिष्टाद्वैत दर्शन का थोड़ा संशोधित रूप प्रस्तुत किया जो अन्य मतों से समन्वय का प्रयास प्रतीत होता है। साथ ही उन्होंने अवतारी सगुण-साकार राम ब्रह्म के साथ ही, अन्तःसाधना और नाम जप को भी विहित बताया। इस प्रकार उन्होंने अपने समय के सभी मत-पंथों को एक में समेटने का प्रयास किया। उनकी सामाजिक दृष्टि समरसता की थी और संपूर्ण समाज के छूत-अछूत, स्त्री-पुरुष को बिना भेद-भाव के भक्ति पथ पर समानता का अधिकार देकर युग-प्रवाह को बदलने की थी। इसी सामाजिकता से अनुप्राणित होकर स्वामी जी

ने लोकभाषा का आश्रय लिया था। इसके पूर्व तक सभी आचार्य संस्कृत में अपने ग्रंथ प्रस्तुत करते थे। पर स्वामी रामानंद ने सर्वप्रथम एक प्रतिष्ठित आचार्य के रूप में लोकभाषा हिन्दी में छोटी-छोटी धार्मिक रचनाएँ प्रस्तुत की थीं जो उनकी उस भाषा-दृष्टि की परिचायक हैं कि वे जनसामान्य की भाषा को ही धर्माचार्यों और साधु-संतों की भाषा के रूप में प्रतिष्ठित करना चाहते थे। इसीलिए उन्होंने तंत्र-मंत्र और उसके माध्यम से ठगी-धोखा की शिकार जनता को हिन्दी में मंत्र-शैली में रचनाएँ देकर उनका उद्धार करने का प्रयास किया।

हिन्दी के संत कवियों पर स्वामी रामानंद का बड़ा व्यापक प्रभाव पड़ा है। इसका सबसे बड़ा प्रमाण यह है कि कबीर, रैदास, पीपा, सेन, नाभादास आदि हिन्दी कवि उनके ही शिष्य या उनकी शिष्य परंपरा में माने जाते हैं। यह मान्यता इतनी प्राचीन है कि इसे सहज अस्वीकार नहीं किया जा सकता। इसके अतिरिक्त गोस्वामी तुलसीदास का भी संबंध रामानंदी संप्रदाय से ही होना प्रतीत होता है। आध्यात्मिक, सामाजिक और भाषिक तीनों ही दृष्टियों से ये संत कवि रामानंद की विचार परम्परा से ही जुड़ते हैं। बूला गुलाल और भीखा के पंथ के आदि प्रवर्तक स्वामी रामानंद ही माने जाते हैं। इससे भी प्रतीत होता है कि भले ही ये परम्परा रामानन्द से जुड़ी न हो पर वे दूर-दूर तक उनके विचारों से प्रभावित हैं।

परवर्ती संतों की आध्यात्मिक, दार्शनिक दृष्टि का विचार करते हुए यह दिखाई पड़ता है कि वे कवि कबीर की भाँति निर्गुण और निराकार ब्रह्म को ही मानते हैं किन्तु सगुणोपासना की शब्दावली और अवतारी ब्रह्म के भक्तों के उद्धार की कथाओं को भी ये अपनी रचनाओं में समाहित करते चलते हैं। इनमें कबीर आदि की भाँति मूर्ति पूजा और सगुणोपासना का प्रबल विरोध नहीं दिखायी देता है। आगे चलकर १८वीं, १९वीं शताब्दी के संतों जैसे देवकी नंदन साहब और मंगरू साहब की रचनाओं में निर्गुण के साथ-साथ सगुण ब्रह्म के भी वर्णन प्रभूत मात्रा में मिलने लगते हैं। इसे भी रामानन्द का दूरगामी प्रभाव माना जा सकता है तथा इन संतों की क्रमशः बढ़ती हुई समन्वयवादी प्रवृत्ति का दर्शन होता है।

संतों की सामाजिक दृष्टि का अवलोकन करते हुए यह दिखाई देता है कि सामाजिक एकता का भाव कबीर युग की भाँति इस काल के कवियों में भी विद्यमान था। जाति-पाँति, ऊँच-नीच, छुआ-छूत आदि के विरुद्ध ये कवि भी थे। ऐसी समता का आधार इनका दर्शन भी था जिसकी पृष्ठभूमि में अद्वैतवाद था। एक ही ब्रह्म सभी जीवों में हैं फिर भेद का अवकाश कहाँ रह जाता है। इन कवियों ने वर्ण-व्यवस्था का उल्लेख इस रूप में किया कि जो ब्रह्म को जानता है, वह ब्राह्मण है, जो समाज की रक्षा करें वह क्षत्रिय है, जो समाज का पोषण करे वह वैश्य है और जो सेवा करे वह

शूद्र है। इनके अनुसार कर्म से ही वर्ण बनता है, जन्म से नहीं। मजहब के भेद को ये स्वीकार नहीं करते थे क्योंकि ब्रह्म एक ही है उसे चाहे जिस-जिस नाम से पुकारो।

मजहबी रूढ़ियाँ। आदमी-आदमी के बीच में दीवार बनती हैं; अतः ये सभी हिन्दू मुस्लिम रूढ़ियों के विरुद्ध थे। मंदिर-मस्जिद से अलग अपने घट में ही ब्रह्म का अधिष्ठान मानकर भजन, ध्यान, जप, साधना आदि के द्वारा उसकी अनुभूति करने का ये उपदेश देते थे। इसमें आडम्बर, पाखण्ड और रूढ़िगत कर्मकाण्डों की गुंजाइश ही नहीं थी।

सामाजिक दृष्टि से एक बात और स्पष्ट होती है कि कबीर युग में सामाजिक भेद के ऊपर प्रहार करने की न्यूनाधिक प्रवृत्ति थी। कबीर तो विशेष रूप से तीखे प्रहार करते थे पर अन्य भी उनकी निन्दा तो करते ही थे। संत रैदास जो सबसे 'ओछी' समझी जाने वाली जाति में पैदा हुए थे, उनकी वाणी में अवश्य भेदभाव को स्थान नहीं था। वे भक्त थे और भक्ति के सकारात्मक पक्ष के आग्राही थे। आगे के कवियों में खंडन और आलोचना की प्रवृत्ति कम होती गई। रैदास की भाँति ये कवि भी सकारात्मक सामाजिक एकता के पक्षधर थे।

संतों की भाषा ऐसी भाषा थी जिसमें हिन्दी की सभी प्रचलित बोलियों का मिश्रण था। साथ ही हिन्दी और उर्दू दोनों के शब्द थे। ऐसी भाषा की जमीन कबीर ने तैयार की थी जिसमें एक ऐसी हिन्दी विकसित करने की मंशा थी जिसमें उर्दू सहित हिन्दी की सभी प्रमुख बोलियों के शब्द और मुहावरें हों। कबीर अपने मकसद में सफल रहे क्योंकि उन्नीसवीं सदी तक के संतों ने भाषा के इस आदर्श का अनुगमन किया। भाषा के इसी मिश्रित एवं सहज रूप को डॉ. सुनीति कुमार चटर्जी ब्रजभाषा कहते हैं जिसमें कोसली या पूर्वी हिन्दी का मेल और खड़ी बोली के भी अभीष्ट रूप मिलते हैं। किसी को उसमें भोजपुरी, किसी को अवधी, किसी को राजस्थानी के दर्शन होते हैं। कबीर-युग के अन्य कवियों में भी भाषा का यही रूप न्यूनाधिक मात्रा में मिलता है।

संत कवियों की भाषा भी विविध बोलियों के मिश्रण से बनी एक जनभाषा है जिसे समूचे उत्तर भारत में आसानी से बोला और समझा जा सकता है। बावरी पंथ के कवियों में बूला साहब की भाषा खड़ी बोली मिश्रित भोजपुरी है। कोई-कोई शब्द शुद्ध खड़ी बोली में है और कई खालिस भोजपुरी में हैं। भुड़कुड़ा परम्परा के अन्य कवियों गुलाल साहब, भीखा साहब, गोविन्द साहब, देवकी नंदन साहब की भाषा अवधी और भोजपुरी मिश्रित है। इनकी भाषा में भी खड़ी बोली, ब्रजभाषा, पंजाबी, उर्दू-फारसी के शब्दों और व्याकरण रूपों का मिश्रण है, पर प्रधानतः इनकी भाषा का ताना-बाना अवधी और भोजपुरी से बना है। भुड़कुड़ा परंपरा के संतों के अतिरिक्त इस अंचल के प्रसिद्ध संत शिवनारायण साहब की भाषा अवधी और भोजपुरी है। संत मंगरू साहब

(शेख रहमतुल्लाह) की भाषा फारसी शब्द प्रधान उर्दू है पर उनकी रचनाओं में भोजपुरी के पद पर्याप्त मात्रा में मिलते हैं।

मुझे ऐसा प्रतीत होता है कि सामाजिक समरसता, छुआछूत निषेध, आध्यात्मिक साधना और भक्ति में समन्वय के साथ स्वामी रामानंद ने भाषा के क्षेत्र में भी सर्वप्रथम जनभाषा के प्रयोग को प्रचलित किया था उसका प्रभाव कबीरदास, रैदास, तुलसीदास से लेकर बूला साहब, गुलाल साहब, भीखा साहब, गोविन्द साहब, पलटू साहब, देवकी नंदन साहब, शिवनारायण साहब, मंगरू साहब, सदाफल देव, मोहन साईं से लेकर बिजन साईं और पृथ्वी शाह तक पड़ा है। इस प्रकार उत्तर भारत में स्वामी रामानंद एक आचार्य और महात्मा ही नहीं थे अपितु उस सामाजिक क्रान्ति के महान अग्रदूत थे जिसकी शुरुआत महात्मा बुद्ध से हुई, जिसे सिद्धों, योगियों ने अग्रसर किया और संतों ने जन-जन तक पहुँचाया। आगे इसी क्रान्ति को महात्मा गाँधी आदि ने आधुनिक समाज जीवन के लिए आदर्श रूप में प्रतिष्ठित किया।

श्रीरामानन्दाचार्य का दार्शनिक चिन्तन

प्रो. राममूर्ति त्रिपाठी

पाश्चात्य ''फिलासफी'' विद्यानुराग मात्र है– पौरस्त्य "दर्शन" दर्शन है– "अपरोक्षानुभूति" है "साक्षात् अपोरक्षानुभूति"। चरम तत्व का ही दूसरा नाम "साक्षात् अपरोक्षानुभूति" है। श्रुति कहती है– "यत्साक्षदपरोक्षाद्ब्रह्म"– "अपरोक्षमित्यर्थः"– साक्षात् अपरोक्ष ब्रह्मतत्त्व ही मुख्यतः "दर्शन" है। पाश्चाात्य दर्शन से पौरस्त्य दर्शन का दूसरा व्यतिरेक यह है कि वहाँ "थिमालॉजी" और "फिलासफी"– अलग-अलग हैं जबकि यहाँ दोनों अपृथक् हैं। दर्शन का मुख्य अर्थ परतत्त्व का सायुज्य ही हमारा प्राप्य है– गन्तव्य है– जिसके लिए आचार ही हमारा मार्ग है। मार्ग में साधक अपनी आस्था को, निष्ठा को सुदृढ़ करने के लिए मनन करता है, चिंतन करता है। गौणरूप से यह चिन्तन भी दर्शन ही कहा जाता है। जहाँ पाश्चात्य समसामयिक दर्शन चारों तरफ से सिमट कर केवल भाषा का परिष्कार मात्र रह गया है वहाँ भारतीय दर्शन अपनी क्रमागत परम्परा में अविच्छिन्न है।

स्वामीजी का दार्शनिक चिन्तन सामान्यतः रामानुजीय ही माना जाता है पर जब से रामानन्द सम्प्रदाय, रामानुजसम्प्रदाय से स्वतन्त्र होने का रहस्योद्‌घाटन हुआ है तब से स्वामी रामानन्द के नाम के अनेक ग्रन्थ प्रकाश में आये हैं- जिनमें से सर्वाधिक निर्विवाद "रामार्चनपद्धति" एवं "वैष्णवमताब्जभास्कर" हैं। इस ग्रन्थ में इसी काशी के पंचगंगाघाट पर स्वामीजी के शिष्य सुरसुरानन्द ने अपने शिष्यों को उपदेश दिया। इसलिए इसी कृति के साक्ष्य पर उनके दार्शनिक चिन्तन के मूल बिन्दुओं पर अपने को केन्द्रित किया जायेगा। इसमें स्वामीजी ने अपने प्रिय शिष्य सुरसुरानन्द के निम्नलिखित दश प्रश्नों के उत्तर दिये हैं– १. तत्त्व, २. जाप्य मंत्र, ३. इष्ट का ध्यान-उनका स्वरूप, ४. मुक्ति का साधन, ५. श्रेष्ठ धर्म, ६. वैष्णवों के धर्म, ७. उनके भेद, ८. वैष्णवों के निवास स्थान, ९. वैष्णवों का कालक्षेप, १०. उनका प्राप्य। कहा गया है–

मुक्तेः किं साधनं सत्सुमतिमतिमतो धर्म एकोऽस्ति कश्च ।
धर्माणां वैष्णवास्ते गुरुवर कतिधा लक्षणं किंच तेषां,
कालक्षेपः किमाप्यं कथमुरु शुभदं कुत्र कार्यो निवासः ।।

-(वैष्णव मताब्जभास्कर)

तत्त्व : तत्त्व को त्रिक्‌मय कहा गया है– चित् (जीव) अचित् (त्रिगुणात्मिका

प्रकृति) तथा तद् विशिष्ट ईश्वर। इससे स्पष्ट है कि परमतत्व को वह चिद्चिद् विशिष्ट विशिष्ट ब्रह्ममय स्वीकार करते हैं। यह अवश्य है कि वह राम ही हैं– त्रिभुज राम न कि चतुर्भुज श्रीनारायण। श्रुति कहती है– "भोक्ता, भोग्यं प्रेरितारं च मत्वा सर्वं प्रोक्तं त्रिविधं ब्रह्म एतत्" भोक्ता जीव है, भोग्य त्रिगुणात्मिका प्रकृति है और सबका शेषी तथा धारक ईश्वर-रामपद वाच्य है।

यहाँ एक बिन्दु विचारणीय है। "वैष्णवमताब्जभास्कर" आदि ग्रन्थों से स्पष्ट है कि ईश्वर के पाँच रूप हैं पर, व्यूह, विभव, अन्तर्यामी और अर्चा। राम अपने इन पाँचों रूपों में सीता से अवियुक्त रहते हैं। यदि मूल तत्व चिद्चिद् विशिष्ट ही है- तो पुरुषकारस्वरूपा सीता तत्व का समावेश कहाँ होगा? वह अचित् प्रकृति नहीं है- नित्य भिन्न जीव भी नहीं है- वह तो श्रीपदवाच्य पुरुषकारस्वरूपा श्री राम की अभिन्न शक्ति हैं। इसे रामरूप ब्रह्म की स्वरूपभूत शक्ति ही मानना पड़ेगा जैसा कि पाँचरात्र आगमों में भी शक्ति का तादात्म्य माना गया है। वस्तुतः ब्रह्म इसी के कारण शंकर सम्मत "निर्विशेष" ब्रह्म से भिन्न "सविशेष" है। बिना इसके आभिमुख्य के तत्व-सायुज्य मिल ही नहीं सकता। इस स्थिति में रामानुज सम्मत चिद्चिद् विशिष्ट ब्रह्म से एक करते हुए स्वरूपशक्तिभूता सीता को कहाँ माना जाय? क्या रामानुज सम्मत "विशिष्टाद्वैत" में इस तत्व का समावेश है? अहिर्बुध्न्य संहिता, जो पाँचरात्र सम्मत है– उसमें श्री और नारायण या विष्णु का ऐकात्म्य मिलता है और आचार्य रामानुज को भी वह इष्ट होना चाहिए। उनकी लक्ष्मी त्रिगुणात्मिका जड़ प्रकृति स्वरूपा नहीं है। उस रामप्रिया सीता के विषय में कहा गया है–

ऐश्वर्यं यदपांगसंश्रयमिदं भोग्यं दिगीशैर्जगत्,
चित्रमचाखिलमद्भुतं शुभगुणा वात्सल्यसीमा च या।
विद्युत्पुंजसमानकान्तिरमितक्षान्तिः सुपद्मेक्षणा,
दत्तान्नोऽखिलसम्पदो जनकजा रामप्रिया सानिशम्।।

-(वैष्णव मताब्जभास्कर)

चित् और अचित् के साथ राम से सीतारूप श्रीदेवी भी संबद्ध है– कहा ही गया है–

रामायेति चतुर्थ्येन श्रिया देव्यास्तु सर्वदा।

'चेतन' - अचेतन का ब्रह्म है स्वगत भेद है, परन्तु श्री अर्थात् सीता के साथ भेदाभेद है।

जीव के विषय में उनकी धारणा है कि वह सदैव एक स्वरूप में स्थित है, वह ईश्वर की अपेक्षा अज्ञ है, चेतन और अज है, सर्वदा पराधीन यानी भगवदाधीन है, सूक्ष्म से भी सूक्ष्म है, बद्ध- आदि भेदों से भिन्न और प्रति शरीर भिन्न है, भगवान् से परिव्याप्त शरीर में रहता है, स्वकर्मानुसार फल भोक्ता है, भगवान् ही जिसके सर्वदा

सहायक हैं, अपने को कर्ताभोक्ता समझने का जिसे अभिमान है, तत्व के जिज्ञासुओं द्वारा जो जानने योग्य है। वह अणु परिमाण है। ज्ञानस्वरूप भी है और ज्ञान का आश्रय भी। परमात्मा का प्रिय, नित्य एवं स्वप्रकाश है।

प्रकृति : यह माया नामक प्रकृति त्रिगुणात्मिका है। वह अचेतन, अज्ञ, नित्य, अविकृत, विश्वयोनि आदि चौदह गुणों से युक्त है।

मुक्ति : भगवान् के अनुग्रह से सांसारिक बन्धनों से छूट कर साकेत लोक को प्राप्त करके सायुज्य पाना ही इस मत में मोक्ष है। भगवान् राम का दिव्य लोक साकेत के नाम से प्रख्यात है। सुषुम्ना, अर्चिमार्ग, अहर्मार्ग, उत्तरायण, संवत्सर, सूर्य, चन्द्र, और विद्युत आदि मार्गों से होता हुआ जीव यहीं पहुँच कर विश्राम पाता है। यहीं उसे सायुज्य मुक्ति मिलती है। मोक्षकामियों के लिए कहा गया है-

मंत्रो रामाद्वयाख्यः सकृदितिचरमप्रान्वितो गुह्यगुह्यो,
भूताच्युतसंख्यवर्णः सकृतिभिरनिशं मोक्षकामैर्निसेव्यः ।
जाप्यसतारकाख्यो मनुवरमखिलैर्वह्निबीजं यदादौ,
रामोङप्रत्यान्तः रसमितशुभदस्वक्षरः स्यान्नमोन्तः ।।

-(वैष्णव मताब्जभास्कर)

अर्थात् उस चरम तत्त्व की साक्षाद् अपरोक्षानुभूति के निमित्त तारक नामक) मंत्रराज को जानना चाहिये, ये हैं–

१. रां रामाय नमः (मन्त्र राज)

२. (श्रीमद्रामचन्द्रचरणौ शरणं प्रपद्ये) (द्वय मन्त्र)

इसके साथ अन्त में कहना चाहिये–

३. सकृदेव प्रपन्नाय तवास्मीति च याचते। (चरम मन्त्र)
अभयं सर्वभूतेभ्यो ददाम्येतदव्रतं मम।।

इस ग्रन्थ में इनकी अतिगम्भीर व्याख्या की गई है। इस व्याख्या से विशिष्टाद्वैत की पुष्टि होती है। इन मन्त्रों में श्री पुरुषार्थ स्वरूप रामाभिन्न सीता का ही अभिधान है। कहा ही गया है–

अन्यथा च मया सीता भास्करेण प्रभा यथा।

इस प्रकार जप, ध्यान तथा प्रपत्ति आदि साधनों का उल्लेख है। पंचसंस्कार भी मुमुक्षुओं के लिए आवश्यक है।

परीक्ष्य शिष्यं समुपासकं गुरुं वर्ष समभ्यर्च्य च वह्नि देवताम् ।
चापादिभिर्हेतिवरैः सुतापितैर्दिने सुपुण्ये नियतः समंकयेत् ।।

-(वैष्णव मताब्जभास्कर)

अर्थात् भुजमूल में धनुष-बाण, ऊर्ध्वपुण्ड्र, नाम, मंत्र तथा माला– ये पाँच संस्कार हैं। इस प्रकार सुसंस्कृत वैष्णव तैलधारावदवच्छिन्न श्रीराम की भक्ति करे। यही

स्मृति सन्नतानरूपा पराभक्ति है। यह भक्ति विवेक आदि सप्त साधन से जन्य तथा यमादि अष्टांगयोग से समन्वित होती है। विवेकादि का बोधायन वृत्ति में तथा यमादि का योग दर्शन में पुष्कल विचार निहित है। इस परा भक्ति का साधन है–

श्रवणं कीर्तनं विष्णोः स्मरणं पादसेवनम् ।
अर्चनं वन्दनं दास्यं सख्यमात्मनिवेदनम् ।।

मुक्ति का परम साधन भक्ति है और उस भक्ति के साधन महाव्रत हैं। ये बहिरंग साधन हैं। श्रवणादि आठों के अनुष्ठान से जीव आत्मसमर्पण का अधिकारी होता है। अपने को सर्वथा और परमात्मा के अधीन समझना ही आत्मसमर्पण है। उस अकारणकरुणावरुणालय की अकारण कृपा से प्रपत्ति होती है। स्वामीजी तिलंग मान्यताओं के पक्षधर हैं अतः उस पर विशेष प्रकाश डालते हुए मानते हैं कि भगवान् की जिस कृपा से मुक्ति मिलती है, वह सहेतुक भी है और निर्हेतुक भी। अशक्तम्मन्य भक्त पर वह अहेतुक होती है। इनकी दृष्टि से इस कृपाप्रपत्ति और मुक्ति में कहीं तारतम्य नहीं है– कर्म ज्ञान तथा भक्तियोग तो उपायान्तर हैं। वे स्वतन्त्र रूप से मोक्ष के साधक हैं। उपायान्तर-निरपेक्ष प्रपत्ति-नैष्ठिक साधक श्रीसीता को पुरुषकार परा माना है। बड़गल लोग इन्हें उपायरूप कहते हैं। इनकी मान्यता है कि इन प्रपन्नों के स्वरूपाच्छादक दोषों का अपनयन श्रीराम ही कर देते हैं। इस प्रपत्ति के सभी अधिकारी हैं। ये लोग उपायान्तर को प्रपत्ति विरोधी मानते हैं। इनका कर्मानुष्ठान लोकसंग्रह के लिए होता है। ये लोग मानते हैं कि प्रपत्ति के छह अंगों में एकाध की कमी से भी कमी नहीं आती। यह न्यास श्रीराम के प्रसाद से ही सम्भव है। इनकी दृष्टि में कैवल्य विरजापार है। इसके अतिरिक्त उनके कुछ सनातन धर्म भी हैं। अन्त में–

रामानन्दीयः श्रीवैष्णवपूर्वः मताब्जभास्करः ।
आहृत्वा ज्ञानसुतिमिरं ज्ञानाब्जं हृदि विकासयतु ।।

•

प्रीति नीति स्वारथ परमारथ,
जानि रामसम कोउ न जथारथ।।

आचार्य राममूर्ति त्रिपाठी

मर्यादा पुरुषोत्तम अखिल ब्रह्माण्डनायक भगवान् रामचन्द्र के शील-स्वभाव का ख्यापक एक सुप्रसिद्ध श्लोक है–

अह्नाय प्रतिबुद्ध्यताम् किमभवत्? रामाङ्गनात्धादृता,
भुक्ता किन्न? यतो हि नैव भजते रामात्परं जानकी।
रामः किन्न भवानभूत्? ऋजु सखे! तालीदलश्यामलं,
रामाङ्गं भजतो ममापि कलुषीभावो न संजायते।।

रावण और कुम्भकर्ण का वाकोवाक्य है। रावण ने नैराश्य-निर्भर स्वर में "कुम्भकर्ण को कहा – "जल्दी उठो"। विस्मय-विमुग्ध कुम्भकर्ण ने कहा – "क्या हुआ?" रावण ने कहा – "काल के भी महाकाल पुरुषोत्तम रामचन्द्र की मर्यादा की एकाधार पत्नी के अपहरण का दुस्साहस किया है"। कुम्भकर्ण ने कहा "जिस उद्देश्य से अपहरण किया उसे पूरा क्यों नहीं किया?" रावण का उत्तर था – "उसकी सारी चेतना श्रीराम में केन्द्रित रहती है – शरीर काठ-पत्थर की तरह पड़ा रहता है – "उससे संभोग क्या किया जाय?" कुम्भकर्ण का प्रश्न हुआ – "तुम तो मायावी हो – राम ही क्यों नहीं बन पाए?" - हताश रावण का उत्तर था – "तालीदल के समान राम के अंगों का अनुसरण करते हुए मेरे जैसे तमोगुणी के मन से वह प्राणभावना ही निःशेष हो जाती है"।

बाजारवाद के दुर्निवार हैवानी तूफान में प्रायः हम सबके पैर अपनी जमीन छोड़ते जा रहे हैं – प्रवाह में शव की तरह अपनी अस्मिता का विस्मरण कर शव की तरह बहते चले जा रहे हैं – ऐसे समय में भगवान् राम का स्मरण प्रकाश और सन्मार्ग में स्थित रहने की प्रेरणा दे सकता है।

नाभादास ने भक्तमाल में कहा है –

'कलि कुटिल जीव निस्तार हित वाल्मीकि तुलसी भये' कलि के कुटिल जीवों के निस्तार के लिये वाल्मीकि ही तुलसी के रूप में पुनः अवतीर्ण हुए हैं अतः गोस्वामी जी की उक्त अर्धाली महर्षि वाल्मीकि द्वारा उत्तरकाण्ड में वर्णित सीता-परित्याग की घटना के आलोक में व्याख्यायित हो सकती है। वैसे "सियनिन्दक अघ ओघ नसाये" कहकर बाबा ने भी उस घटना का संकेत दे दिया है पर विस्तार

रामायण में ही है। वहाँ कहा गया है कि पौलस्त्यवध के बाद अयोध्या वापसी पर राजपद पर लोकानुरोध वश अभिषिक्त किए जाते हैं। तब उन्हें अपने राजकाज की चिन्ता स्वाभाविक प्रतीत होती है। इसी क्रम में वे अपने चर से प्रजारंजन के प्रसंग में वास्तविकता जानना चाहते हैं। बहुत जोर देने पर चर कहता है –

कीदृशं हृदये तस्य सीतासंभोगजं सुखम् ?
अङ्कमादाय तु पुनः रावणेन बलाद् धृताम् ।
लङ्कापिसमानीतामशोकवनिताङ्गताम् ।
रक्षासांवसमापन्नां कथं रामो न कुत्सति ?
अस्माकमपि दारेषु सह्यमेतद् भविष्यति ।
यथा हि कुरुते राजा प्रजा तदनु वर्तते ।
एवं बहुविधां वाचं वदन्ति पुरवासिनः,
नगरेषु च पौरेषु राजन् जनपदेषु च ।

अर्थात् राजन्, नगर, ग्राम, वीथी, चत्वर तथा प्रांगण-सर्वत्र पुरवासी कह रहे हैं कि राम कैसा व्यक्ति है कि उसे उस सीता का सहवास मन को खिन्न नहीं करता? वह जानता है कि रावण ने उसे अपने अंकपाश में लेकर बलात् रथ पर बिठाया था' लंका से जाकर अन्तःपुर घुमाता हुआ अशोक वाटिका में स्थापित कर राक्षसों को सौंप दिया कि वे उसे डरा-धमका कर रावण के अनुकूल कर दें। यह सब जानकर भी राम को सीता के प्रति कोई कुत्सा पैदा नहीं होती? फिर बड़ी बात यह है कि अपनी पत्नी के प्रति इतना हम सबको बर्दाश्त करना पड़ेगा। कारण, जैसा राजा करता है वैसा प्रजा को भी अनुसरण करना पड़ता है।

यह सब सुनकर राम का मुखमण्डल काला पड़ गया और सभागार से सबको हटाकर भाइयों को बुलाया। उनमें से लक्ष्मण को आदेश दिया कि सीता को वे कल तमसा के किनारे वाल्मीकि आश्रम के पास निर्जन स्थान पर छोड़ आएँ। आज्ञा दुर्निवार थी। संयोग यह था कि स्वयम् वे पूर्व में आश्रमों में जाकर ऋषि एवं ऋषिकाओं का दर्शन और पूजन करना चाहती थीं। फलतः प्रातः सुमन्त के सारथ्य और लक्ष्मण के सान्निध्य में निर्वासन हेतु सीता का निर्वासन कर दिया गया। निश्चित स्थान पर पहुँचाकर लक्ष्मण ने वज्रघाती संदेश सीता को सुनाकर छोड़ दिया और करुण क्रन्दन करती सीता वहीं बिलखती रहीं। रुदन सुनकर आश्रम के बालकों ने महर्षि को बताया कि कोई भव्य आकृति और दिव्य प्रभाव वाली महिला बाहर तड़प रही है। महर्षि ने ध्यान लगाकर सब समझ लिया और वात्सल्य से पिघलकर आश्रम में ले आए। तपस्विनियों के बीच दशरथ के अभिन्न हृदय वाल्मीकि ने गर्भवती सीता को व्यवस्थित रूप से आवासित कर दिया।

इधर राम की चेतना में तीन विकल्प उठे थे–

जहयां किमहमात्मानं युष्मान् वा भरतर्षभाः।
लोकायवादभीतोऽहं किम्पुनर्जनकात्मजाम्।।

आत्महत्या कर लूँ, तुम लोगों को मार डालूँ या लोकापवाद से भयभीत होकर सीता का परित्याग कर दूँ? प्रश्न यह खड़ा होता है कि चौथा विकल्प उनकी चेतना में राजपद त्याग का क्यों नहीं आया? ब्रिटेन का बादशाह पत्नी के निमित्त राज त्याग कर सकता है– राम नहीं कर सकते थे? क्या सिंहासन का ऐसा लोभ था? यदि राजपद छोड़ देते तो यह कठोर दंड संकल्प न लेना पड़ता।

राम शरीरी धर्म हैं और धर्म यह है कि लोकाराधन हेतु लोक द्वारा अभिषिक्त व्यक्ति निजी सुख-दुःख वश नियोजित कर्तव्यपथ से नहीं हट सकता। राम ने कहा भी है–

सुखं वा यदि वा दुःखं यदि वा जानकीमपि।
आराधनाय लोकस्य मुञ्चतो नास्ति मे व्यथा।।

इस विकल्प के अनुदय में महाभारत के वन पर्व का ब्राह्मण कौशिक या धर्मव्याध की कथा बड़े काम की है। कौशिक तपस्वी था– उसे इतनी शक्ति प्राप्त थी कि किसी की ओर यदि वह क्रोध में देख दे तो वह उसकी क्रोधाग्नि में भस्म हो सकता था। वन में एक ऐसी घटना घट भी चुकी थी। तपस्वी कौशिक ने भिक्षा के लिए एक ग्राम में किसी गृहस्थ के दरवाजे पर खड़ा होकर भिक्षा पाने के लिए आवाज दी। उत्तर में 'ठहरो'-ऐसी आवाज आई। घर की महिला अपङ्ग पति की सेवा में विरत अपना कर्तव्य कर रही थी। समाज और कुल द्वारा वह तदर्थ नियोजित थी। पति को खिला पिलाकर जब बाहर निकली, तब तक ब्राह्मण कौशिक की आँखें लाल हो चुकी थीं और क्रोधाग्नि फटने ही वाली थी कि उस महिला ने फटकारते हुए कहा "महाराज, मुझे जंगल बगुली समझ रखा है –जिसकी वीट से नाराज होकर आपने उसे भस्म कर दिया।" अब, काटो तो बदन में खून नहीं। तपस्वी ने पूछा–"माता यह शक्ति आपको कैसे प्राप्त हुई?" उसने बताया कि एक धर्मव्याध उसके गुरु हैं– उन्होंने कहा है "समाज या कुल ने जिस व्यक्ति को जिस कर्तव्य पथ पर नियोजित किया है– उसका निर्वाह निःसंगभाव से सुख-दुःख की परवाह न करके करते रहना कर्मयोग है। मैं उसी योग को करती हूँ। विशेष जिज्ञासा हो तो उसके गुरु धर्मव्याध के पास जायें"। अभिप्राय यह कि लोक द्वारा नियोजित व्यक्ति को स्वतंत्रता नहीं है कि वह अपने निजी सुख-दुःख के कारण नियोजित पद का त्याग कर दे। राम शरीरी धर्म हैं–"रामो विग्रहवान् धर्मः"-उनकी चेतना में फिर राजपद त्यागने का विकल्प आ ही कैसे सकता था?

मेरी धारणा है कि राम ने लोकदृष्ट्या अवश्य निर्वासन किया था पर व्यक्ति राम की दृष्टि से वह निर्वासन नहीं, स्थानान्तरण था। महर्षि वाल्मीकि दशरथ जी के अभिन्न हृदय थे अतः उनका आश्रम भी सीता के लिए एक दूसरा श्वसुरालय ही था। उन्होंने जान-बूझकर कहा था कि सीता को आश्रम के समीप छोड़ आओ। महर्षि के आश्रम के बच्चों ने रुदन सुना और महर्षि को बताया। ध्यान चक्षु से उन्होंने सब जान लिया। स्थानान्तरित सीता की पूरी व्यवस्था तो की है–'सीतायाश्चरितं महत्' को ख्यापित करने वाला महाकाव्य भी लिखा और गांधर्व विद्या के साथ लव कुश को कण्ठस्थ कराकर अयोध्या में प्रवादी पापियों के बीच ज्ञान के लिए भेजा-आगाह किया कि उन पापियों का अन्न और पानी ग्रहण मत करना। गांधर्वरञ्जित महाकाव्य के श्रवण से उन निंदकों के हृदय पर जमा कालुष्य का पहाड़ तिल-तिल कर छँटने लगा और आँसुओं के रूप में बाहर निकल गया। सीता के प्रति अन्यथाभाव धुल गया और वे ही प्रवासी कहने लगे– "सीता निष्पाप हैं राम उनको ग्रहण करें"। यह भी राम की नीति, जिसकी तह में राम की 'प्रीति' लहरें ले रही थीं। राजनीति के विषय में तुलसी ने कहा है–

राजनीति सरवसु इतनोई। मनमहँ राखु मनोरथ गोई।।

राजनीति का सर्वस्व इतना ही कि नयज्ञ उसे मन में इतना छिपाकर रखें कि उसका रोम भी उसे न जाने।

सीता के प्रति प्रीति का प्रमाण यह है कि राम ने उन्हें नीति के वहन हेतु निर्वासन नाम दिया था– तत्वतः उन्हें हृदय से निर्वासित नहीं किया था। राम जानते हैं कि सस्त्रीको धर्ममाचरेत्

धर्माचरण सस्त्रीक ही होता है और अश्वमेध यज्ञ रूप धर्म का निर्वाह बिना स्त्री के किस तरह संभव था? अतः उनकी प्रतिमा प्रतिष्ठापित करवाई थी। यही सब उनकी प्रीति का प्रमाण है।

रही बात स्वार्थ और परमार्थ की-तो उसे भी देख लिया जाय। स्वार्थ तो पुत्रों की शिक्षा-दीक्षा और लोकमंगलोन्मुख प्रवृत्ति को उभारना है। महर्षि वाल्मीकि के आश्रम से बढ़कर शिक्षा और दीक्षा की बात कहाँ संभव होती। पितृ ऋण के साथ ऋषिऋण और देवऋण से भी मुक्ति पानी थी। तदर्थ ज्ञानलाभ और लोकाराधन में उसके विनियोग की प्रवृत्ति भी उनके स्वभाव में आ गई। इससे बड़ी स्वार्थपूर्ति क्या हो सकती थी? कहा जा सकता है कि अयोध्या में ही पालित-पोषित होकर आश्रम में भेजते तो क्या हो जाता? नहीं, राजकुल में पालित-पोषित शिशु आश्रम के परिवेश में अपने को कैसे ढाल पाता? अतः गर्भावस्था में ही माँ को स्थानान्तरित करना उचित था फिर लव कुश जो भी हुए आत्मगत संभावनाओं की पूर्व उपलब्धि बने किसी के पुत्र होने के नाते नहीं। आश्रम शिशुओं के साथ हमजोलीपन कैसे उगती? फिर निर्वासन का समय वही था,

बाद में करने का अर्थ ही क्या होता?

जहाँ तक परमार्थ का सम्बंध है कहा गया है

ऋणानि त्रीणि अपाकृत्य मनो मोक्षे निवेशयेत्

अब, जब पति-पत्नी तीनों ऋण से मुक्त हो गए तब अध्यात्म में ही निरत रहना शेष रह गया। भारतीय परम्परा में आराधना व्यक्तिगत ही होती है समूहगत नहीं, इसलिए भी दोनों को एकान्त और परस्पर पृथक् रहना समुचित था। कहा जा सकता है कि पूर्णकाम शक्ति-शक्तिमान सीताराम को क्या यह शेष करणीय था? नहीं, उन्हें तो वह सब करना था, जिससे लोक को अनुकरण की प्रेरणा मिले।

इस प्रकार वाल्मीकि रामायण में विस्तार से और 'रामचरितमानस' में संकेत में व्यक्त इस धारणा के साक्ष्य पर श्रीराम की प्रीति, नीति, स्वार्थ और परमार्थ की पराकाष्ठा प्रमाणित होती है।

रामानन्दाचार्य का दर्शन और उसकी प्रासंगिकता

डॉ. देवव्रत चौबे

आचार्य रामानुज की विशिष्टाद्वैती दर्शन परम्परा को लोकमंगलकारी बनाने में आचार्य रामानन्द का विशेष योगदान है। रामानन्द ने राम को, ब्रह्म के स्थान पर प्रतिष्ठित कर सामाजिक एवं आध्यात्मिक दोनों दृष्टियों से, सभी वर्णों एवं सभी वर्गों के लिए सुलभ बना दिया। उनकी सबसे बड़ी विशेषता यह है कि उन्होंने शास्त्र को लोकजीवन से जोड़ा। कुछ विचारक यह कहते हैं कि रामानन्द संप्रदाय में शास्त्र को बहुत महत्व नहीं दिया गया है। उनका यह कथन उचित प्रतीत नहीं होता; क्योंकि स्वयं रामानन्द ने आचार्य परम्परा के अनुसार 'श्रीवैष्णवमताब्जभास्कर' एवं 'श्रीरामार्चनपद्धति' नामक दो ऐसे ग्रन्थों की रचना की जिससे उनके पाण्डित्य का प्रदर्शन होता है। इतना हम अवश्य कह सकते हैं कि रामानन्द की परम्परा केवल पोथीवादी नहीं है। इस परम्परा में पोथी का महत्व है परन्तु लोकजीवन से जुड़कर। यहाँ पर प्रयोजनवश एक प्रसंग का उल्लेख करना आवश्यक समझता हूँ। एक बार पं. विद्यानिवास मिश्र ने बहुत बड़े सनातनी महात्मा स्वामी करपात्री जी से पूछा कि बहुत तेजी से बदलाव हो रहा है, आचार-पद्धति बदल रही है, क्या सनातन धर्म टिका रहेगा? इसके उत्तर में स्वामी जी बोले, "जिसे जाना है वह काल-प्रवाह में चला जाएगा, पर जो जीवन को चलाता है और स्वयं संचरणशील है, वही मात्र सनातन धर्म है। यह भी बोले कि शास्त्र कभी नष्ट नहीं होंगे, वे पुनर्व्याख्यात होंगे।" आचार्य रामानन्द ने पंथों एवं सामाजिक कुरीतियों के दलदल में फँसी हुई जनता के उद्धार के लिए युगधर्म के अनुकूल शास्त्र की व्याख्या की एवं रामावत संप्रदाय का निर्माण किया।

रामानन्द का दर्शन जनता का दर्शन है। इसलिए उन्होंने हिन्दी में भी रचना की। उन्होंने हिन्दी के माध्यम से भारतीय दर्शन एवं संस्कृति की परम्परा को समृद्ध किया। आचार्य रामानन्द का दर्शन समाज के लिए है इसलिए उन्होंने अपने दर्शन के केन्द्र में राम को रखा है। उनके राम समस्त सद्‌गुणों से समन्वित हैं। सभी प्रकार के मनोरथों को पूर्ण करते हैं।[1] सभी देव उनकी आराधना करते हैं। वे सबके आश्रय हैं। उनका आश्रय कोई नहीं। जगत् के पालक, रक्षक एवं संहारक हैं। समस्त सृष्टि उन्हीं से उत्पन्न है। यह सृष्टि प्रलयकाल में उन्हीं में तिरोहित हो जाती है।[2]

आचार्य रामानन्द का कहना है कि सीता एवं लक्ष्मण से युक्त श्रीराम ही ब्रह्म हैं। सीता प्रकृति की द्योतक हैं, लक्ष्मण जीव तथा श्रीराम स्वयं ईश्वर रूप हैं।३ सीतापति राम जगत् के बन्धु, सबको प्राप्य, समस्त दोषों से रहित तथा कल्याणकारी हैं। वही सत्, चित् एवं आनन्द रूप हैं।४ उनका जगत् से शेषशेषित्व, भार्याभर्तृत्व, स्व-स्वामित्व, आधार-आधेय, सेव्य-सेवक, आत्मा-आत्मीयत्व आदि अनेक संबंध हैं।५ किसी भी काल और किसी भी देश में उनका अभाव नहीं है। वे अद्भुत अवर्णनीय पराशक्ति से समन्वित हैं। वे व्यापक एवं सीमातीत हैं। ज्ञान, बलादि असंख्य गुणों से अलंकृत हैं। दिव्य उदात्त गुणों के श्रीराम आकर हैं। वे सम्पूर्ण भूतों की अन्तरात्मा हैं। वे अपनी इच्छा से जीव और जगत् को उत्पन्न करते हैं। वे जगत् के निमित्त और उपादान दोनों कारण हैं। सीता उनकी शक्ति हैं।

रामानन्द के श्रीराम परम भक्तवत्सल हैं। वे परम कृपालु एवं करुणा के आलय हैं। अपने भक्तों के दोषों, अपराधों पर ध्यान नहीं देते। वे भक्तों के थोड़े से सुकर्मों से भी प्रसन्न हो जाते हैं। वे यद्यपि परम स्वतंत्र एवं स्वाधीन हैं फिर भी अपने भक्तों की भक्ति से प्रसन्न होकर उनके अधीन हो जाते हैं।६ उनके राम निर्गुण एवं सगुण दोनों हैं।

आचार्य रामानन्द के दर्शन में भक्ति को महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त है। किसी भी वर्ण एवं जाति को भक्ति में अधिकार है। जनसामान्य के लिए यह भक्ति विशेष रूप से उपयोगी है। स्वामी रामानन्द के अनुसार परब्रह्म श्रीराम की प्राप्ति का एकमात्र उपाय अनन्य भक्ति है। उनके अनुसार ज्ञान का मार्ग दुरूह है। भक्ति का मार्ग अत्यन्त सरल और सहज है। उनकी भक्ति में भी उपासना सम्बन्धी क्रिया पर अधिक बल न देकर भाव पर अधिक बल दिया गया है। राम में परानुरक्ति ही भक्ति है। राम के स्मरण से भक्ति उत्पन्न होती है। भक्ति का अर्थ प्रपत्ति और स्मृति है। प्रपत्ति का अर्थ शरणागति है। सब कुछ छोड़कर जो भगवान् राम के शरण में आता है वही भक्त है।७ प्रपत्ति का द्वार सर्वदा सबके लिए खुला रहता है। समर्थ, असमर्थ सभी प्राणी शरणागति के अधिकारी हैं।८ उसके लिए न बल चाहिए न कुल, न समय, न शुद्धता "प्रपत्ति की विशेषता न्यास है और प्रवृत्ति की निवृत्ति न्यास कही गयी है।"९ न्यास के छः अंग हैं– प्रभु राम के प्रति अनुकूलता का संकल्प, प्रतिकूलता का वर्जन, प्रभु राम सर्वत्र रक्षा करेंगे इस बात में दृढ़ विश्वास, केवल प्रभु राम का वरण, आत्मनिक्षेप और कार्पण्य। ये प्रपत्ति के ही अंग हैं। इनमें कुछ कमी भी रह जाय तब भी शरणागति (प्रपत्ति) में न्यूनता नहीं आती।१०

आचार्य रामानन्द ने भागवत में वर्णित नवधा भक्ति को विशेष महत्व दिया है। भगवान् राम के उदार चरित्र का श्रवण, कीर्तन, स्मरण, पादसेवन, अर्चन, वन्दन, दास्य, सख्य और आत्मनिवेदन-इस नवधा भक्ति को ग्रहण करके भक्त भगवान् का

स्नेहभाजन हो जाता है।११ इसके अतिरिक्त उन्होंने तीर्थस्थलों में निवास, सत्संग, साधु-संतों के दर्शन आदि को भी मनोवांछित फल की प्राप्ति में सहायक माना है।

आचार्य रामानन्द ने भक्ति को साधन एवं साध्य दोनों माना है। मोक्ष प्रदान करने के कारण यह साधन है। मोक्ष से भी श्रेष्ठ होने के कारण यह साध्य भी है। यह स्वयं में परम पुरुषार्थ है। नवधा भक्ति की साधना से साध्यरूपा पराभक्ति की सिद्धि होती है। इसकी सिद्धि में श्रीराम का अनुग्रह आवश्यक है। दूसरे शब्दों में हम कह सकते हैं कि पराभक्ति भगवान् के स्वरूप का साक्षात् अनुभव है जो उनकी कृपा से ही संभव है। वास्तव में प्रपत्ति ही भक्ति की पराकाष्ठा है। प्रपन्न जीव भगवान् की लीला में ही आनन्द लेता है। वह वीतराग, आप्तकाम तथा प्रशान्त चित्त होता है।

भक्तियोग अभ्यस्त होने पर क्रमशः पराभक्ति का उदय होता है। ''पराभक्ति वास्तव में ध्यान की ही परिपक्व अवस्थाविशेष है। इससे चित्त में अपार प्रीति उपजती है, दूसरी किसी वस्तु में प्रयोजन-बोध नहीं रहता और दूसरे सभी विषयों में वैराग्य उत्पन्न होता है। यह अवस्था ज्ञान की ही एक भूमिका है; क्योंकि भक्ति प्रीतिविशेष है और प्रीति या सुख भी एक प्रकार की विशिष्टता से सम्पन्न ज्ञान के सिवा और कुछ नहीं। ध्यान या उपासना की प्रगाढ़ता से स्मृत्यात्मक ज्ञान जिस समय प्रीतिमय या अनुकूल एवं अत्यन्त स्पष्ट प्रत्यक्ष आकार धारण करता है, उस समय की अवस्था ही पराभक्ति है।१२ पराभक्ति में भगवान् राम के प्रति तैल की अविच्छिन्न धारा की तरह निरतिशयप्रीति आवश्यक है।१३

रामानन्दाचार्य के आराध्य राम की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि वे अर्चना, दर्शन, पूजन करनेवाले भक्त के कल्याण के साथ ही उसके संपूर्ण परिवार का लौकिक एवं पारलौकिक दृष्टि से कल्याण कर देते हैं। भक्ति राम को बहुत प्रिय लगती है। इसलिए वे भक्त के वश में हो जाते हैं। भक्ति सेवा का बोधक है। उन्होंने राम को सगुण रूप में प्रतिष्ठित कर सर्वजन के लिए सुलभ बना दिया। भवसागर से तारने वाले षडक्षर मंत्र 'रां रामाय नमः' का विधान किया। मूर्ति के रूप में राम पूजन को महत्त्व देकर सबके अभ्युदय को सहज बना दिया। "उच्च वर्ण वैष्णवों के लिए एक मंत्र और नीच वर्णवालों के लिए दूसरा, उच्च वर्णवालों के लिए एक पद्धति और नीच वर्णवालों के लिए दूसरी पद्धति उन्होंने नहीं मानी है। भगवान् के समक्ष ऊँच-नीच का भेद नहीं। यहाँ तक कि भास्कर में यह भी स्पष्ट आदेश है कि उच्च वर्ण के वैष्णव भी नीच वर्ण के साधु-संतों की सेवा अभ्यर्थना करें।''१४ इस प्रकार आचार्य रामानन्द ने भक्ति का एक आध्यात्मिक एवं सामाजिक विराट् रूप विकसित किया।

आचार्य रामानन्द का दर्शन व्यावहारिक है। उन्होंने समष्टि के हित की चर्चा की है। उनके दर्शन में सार्वभौम हित की भावना निहित है। श्रीराम को मर्यादा पुरुषोत्तम के

रूप में स्थापित करके उनके आचरण को सबके लिए अनुकरणीय बना दिया। उन्होंने सबको कृपालु राम से जोड़ दिया। सबको उनका कृपापात्र बना दिया। भक्ति को व्यावहारिक धरातल पर लाकर सबके लिए सहज एवं सुलभ बना दिया। सभी मनुष्यों को रामभक्ति द्वारा एकता के सूत्र में बाँधने का प्रयास किया।

यहाँ पर यह प्रश्न उठता है कि आज के युग में रामभक्ति की क्या उपादेयता है? अथवा उसकी क्या प्रासंगिकता है? आज हमें यह देखने को मिल रहा है कि विज्ञान एवं टेक्नालॉजी के विकास ने मानव-जीवन के अस्तित्व को शोषण, तनाव एवं भय के वातावरण में ढकेल दिया है। आणविक परीक्षणों के परिणामस्वरूप प्रदूषण बढ़ रहा है और अनेक प्रकार के जीवधारियों का विनाश होता जा रहा है। सर्वत्र अशान्ति और दुःख का साम्राज्य स्थापित हो रहा है। आतंकवाद से पूरी दुनिया त्रस्त है। वैश्वीकरण भारतीय जीवनमूल्यों पर इतना भयावह हमला कर रहा है जिसके परिणामस्वरूप भारतीय समाज और परिवार टूट रहे हैं। हमारी वासनाएँ बढ़ रही हैं। भोगवादी जीवन की ओर हमारा झुकाव हो रहा है। अब प्रश्न यहाँ खड़ा होता है कि ऐसी विषम परिस्थिति से हम मुक्त कैसे होंगे? मुझे ऐसा प्रतीत होता है कि रामानन्दाचार्य द्वारा प्रतिपादित रामभक्ति की धारा ही इस विषम परिस्थिति से मुक्ति दिला सकती है।

आचार्य रामानन्द का दर्शन भक्तिप्रधान होने के कारण जीवमात्र के प्रति प्रेमपूर्ण दृष्टि रखने का प्रस्ताव करता है। प्रेम सभी मानवों अथवा जीवों के सम्बन्ध का आधार है। इसी के आधार पर मानव-समाज बनता है। मानव-समाज प्रेममूलक समाज है जिसे रामानुज संप्रदाय में सत्संग कहा जाता है। यह सत्संग भक्ति के अतिरिक्त और कुछ भी नहीं है। सत्संग ही भक्त-समाज है। भक्त-समाज ही उपर्युक्त दुःखदायी समस्याओं से मुक्ति प्रदान करा सकता है।

स्वामी रामानन्द पीठ के प्रतिभासम्पन्न आचार्य श्रीरामनरेशाचार्य भक्त-समाज के निर्माण में विविध आयामों के द्वारा उदार भाव से लगे हुए हैं। उनका मानना है कि रामभक्तिवादी समाज में ही विश्वशान्ति संभव है। ऐसे ही समाज में शान्ति की शक्तियाँ मजबूत होती हैं। टेक्नॉलाजी एवं विज्ञान शान्ति एवं समृद्ध की दिशा में अग्रसर होते हैं। वे यह भी कहते हैं कि भक्त-समाज में न कोई दरिद्र होता है न अमीर। सभी अमृत के पुत्र बन जाते हैं। आध्यात्मिक अनुभव कहता है कि संस्कृति का तात्पर्य भक्त होना है और भक्ति की जाति नहीं होती-'जाति-पाँति पूछै नहिं कोई, हरि का भजै सो हरि का होई'। स्वामी रामनरेशाचार्य जी का सबसे महत्वपूर्ण चिंतन यह है कि प्रत्येक भक्त को जीवन पर्यन्त राम-भजन के साथ-साथ अपना कर्म करते रहना चाहिए। राम के भजन से काम में विघ्न नहीं पड़ता। रामभजन काम को सरस, सुखद तथा उत्तम बनाता है। यदि टेक्नालॉजी एवं विज्ञान का कार्य रामभजन के साथ होगा तो समाज में उच्चतर

मूल्यों की स्थापना होगी। स्वामी रामनरेशाचार्य जी श्रम और अध्यात्म में समन्वय पर बल देते हैं। वे कहते हैं कि आचार्य रामानन्द संप्रदाय के सभी भक्त रामभजन और अपना काम दोनों साथ-साथ करते थे। कबीर भजन और बुनकरी दोनों साथ-साथ करते थे। इसी प्रकार रैदास भजन और मोची का काम तथा नामदेव भजन और दर्जी का काम दोनों साथ-साथ करते थे।

कुछ आलोचक यह कहते हैं कि साधु-संत जब घर के मोह के त्याग को ही आदर्श मानते हैं तो समाज के प्रति या सामाजिक मूल्यों के प्रति उन्हें मोह नहीं होगा। ऐसे आलोचकों को यह जानना चाहिए कि घर का त्याग नितान्त नैतिक मूल्यों के त्याग का एक प्रतीक है और इस त्याग का अर्थ है साधु-संतों का सार्वजनीकरण। रामानन्दाचार्य इसी के प्रतीक हैं। इसी परम्परा में स्वामी रामनरेशाचार्य भी आते हैं जो सबके कल्याण के लिए प्रयत्नशील हैं। कहना न होगा कि विशिष्टाद्वैत दर्शन के सिद्धांत-सूत्र जीवन की इन व्यावहारिक मान्यताओं के अत्यंत सन्निकट है।

सन्दर्भ-सूची

१. रामानन्द, श्रीवैष्णवमताब्जभास्कर, श्लोक १, अर्थप्रकाशिका सहित, सम्वत् १९८५वि.।
२. वही, ८
३. बलदेव उपाध्याय, भागवत सम्प्रदाय, पृ. २६३, नागरी प्राचरिणी सभा, काशी, वि. सम्वत् २०१०
४. श्रीवैष्णवमताब्जभास्कर, २२-२३
५. बदरीनारायण श्रीवास्तव, पृ. २४४, हिन्दी परिषद्, प्रयाग विश्वविद्यालय, प्रयाग, १९५७
६. श्रीरामानन्दसिद्धान्तसार, १३
७. पीताम्बरदत्त बड़थ्वाल, रामानन्द की हिन्दी रचनाएँ, पृ. १४
८. श्रीवैष्णवमताब्जभास्कर,१०१
९. रामानन्द की हिन्दी रचनाएँ, पृ. १४
१०. श्रीवैष्णवमताब्जभास्कर, अर्थप्रकाशिका सहित, १०४
११. वही, ६६
१२. गोपीनाथ कविराज, भारतीय साधना की धारा, पृ. १५, बिहार राष्ट्रभाषा परिषद्, पटना, १९८४
१३. श्रीवैष्णवमताब्जभास्कर, ६५, अर्थप्रकाशिका सहित।
१४. रामानन्द की हिन्दी रचनाएँ, पृ. ३०

।। श्री सीताराम ।।

श्रीरामानन्दसम्प्रदाय के परमोपास्य-परात्पर ब्रह्म भगवान् श्रीराम

प्रो. जयकांत सिंह शर्मा

यह एक अनुभूतिसिद्ध सत्य है कि चिन्तन का विषय यदि उद्बुद्ध समाज की दिशा एवं दशा को निर्धारित करता है तो चिन्तक की दृष्टि उसकी सूक्ष्म संस्कार-सम्पदा को। प्रायः श्रीराम की ऐतिहासिकता को लेकर रोचक परिचर्चा यत्र-तत्र प्रकाश में आती रहती है। अधिकांश आधुनिक गवेषक भारतीय प्राचीन वाङ्मय के उपयुक्त ज्ञान के अभाव में अंधेरे में वाक्-सन्धान करते रहे हैं। इस प्रकार की चर्चा कुछ तत्त्वज्ञों को सारहीन, कुछ भक्तों को उद्वेजक तथा रसिकों को खीर में नमक के समान लगती रही है, कुछ भावुक तो इसी बात से सन्तुष्ट हो रहे थे कि असंगत ही सही, ये भगवान् को बुद्धि एवं वाणी का विषय तो बना रहे हैं। शास्त्रज्ञ विद्वान् अत्यन्त दीन युक्तियों को सुनकर आधुनिक समालोचकों के ऊपर यह सोचते हुए दयावान् होते हैं कि जो यथार्थ परिज्ञान के लिये अपने मूल प्रमाण वेद एवं वेदानुकूल आर्ष ग्रंथों की उपेक्षा करता है उसे तत्त्वज्ञान के लिए आजीवन यों ही ईंट-पत्थरों में भटकना पड़ता है। सन्त श्रीतुलसीदास जी ने ऐसे ही महामनीषियों को "दूध के लिए आक के पत्तों में भटकने वाला" कहा है। उस समय अन्तर्निष्ठजनों को भागवत का वह मंजुल प्रसङ्ग भी याद आ रहा होगा जिसमें दाता से कुछ माँगने से पूर्व उसकी प्रशंसा को उचित समझकर याचक बने वामन भगवान् ने दैत्यराज बलि के समक्ष उसके पूर्वजों के बल औदार्य की श्लाघा करते हुए कहा कि राजन! आपके परम बलवान् प्रपितामह हिरण्यकशिपु को कौन नहीं जानता है, जब वे प्रतिशोध की भावना से भाई हिरण्याक्ष को मारने वाले विष्णु को गदा लेकर ढूँढने निकले तो सर्वत्र पीछा करने वाले उस हिरण्यकशिपु से बचने के लिए विष्णु के सामने भी यह समस्या खड़ी हो गई कि मैं कहाँ छिपूँ? अन्त में मायापति विष्णु ने सोचा कि क्यों न मैं इसके हृदय में ही प्रवेश कर जाऊँ? जिससे यह मुझे देख न सके, क्योंकि यह तो बहिर्मुख है, बाहर की वस्तुएँ ही देखता है–

यतो यतोऽहं तत्रासौ मृत्युः प्राणभृतामिव ।
अतोऽहमस्य हृदयं प्रवेश्यामि पराग्दृशः ।।

(भागवत-८-१९-९)

तब हिरण्यकशिपु ने सोचा कि विष्णु तो है ही नहीं, लगता है समाप्त हो गया। यह प्रसंग उन लालबुझक्कड़ों की शोधपद्धति एवं फल की ओर सङ्केत करता है, जो सनातन मान्यताओं के अनुसन्धान में तो लगे हैं किन्तु पारम्परिक प्राच्यविद्या से विमुख हैं। तिरोहित तत्त्व का अनुसन्धान तो अन्तःप्रवेश सापेक्ष होता है। यह बहुत बड़ा प्रज्ञापराध है कि पाश्चात्त्य लेखकों के निबन्धों के आधार पर कुछ भारतीय समालोचकों ने यहाँ तक निर्धारित कर दिया कि ''वाल्मीकि रामायण में कहीं भी श्रीराम को न तो ईश्वर कहा गया और न ही विष्णु का अवतार। कालान्तर में विकासक्रम से तुलसीदास आदि परवर्ती कवियों की रचनाओं के प्रभाव में लोगों ने उन्हें भगवान, अवतार या ईश्वर मानना आरंभ किया, वस्तुतः वे केवल महामानव थे''।

आस्तिकों के लिए तो श्रुति ही परम प्रमाण है, श्रुतिविरुद्ध भगवत्कथन भी उन्हें मान्य नहीं। इसी से तो बुद्ध भगवान् के प्रति श्रद्धा का भाव रखते हुए भी उनकी वेद विरुद्ध बातों को कोई भी आस्तिक स्वीकार नहीं करता। ब्राह्मण, आरण्यक, उपनिषद्, रामायण, महाभारत, मन्त्रादि धर्मशास्त्र, पुराण, षड्दर्शन आगम आदि सनातनधर्मियों के मान्य ग्रन्थ हैं। वेदवेद्य परमेश्वर श्रीराम के दशरथात्मज के रूप में अवतीर्ण होने पर वेद ही प्राचेतस वाल्मीकि से रामायण के रूप में प्रकट हुए। रामायण में शताधिक श्लोक भगवान् श्रीराम के लोकोत्तर ऐश्वर्य के प्रमापक हैं। यद्यपि श्रीरामचरित मन्त्ररामायण, पूर्वोत्तरतापनीयोपनिषद्, रामरहस्योपनिषद्, रामायण, पुराण आदि में स्पष्ट वर्णित होने से वेदमूलक है तथापि ''तुष्यतु दुर्जनः'' न्याय से अर्वाचीन ऐतिह्य विशारदों के अनुसार भी यदि मानव रामकथा को काल्पनिक मानकर श्रीराम जी को आदर्श धर्मनिष्ठ महापुरुष के रूप में भी स्वीकार करें तो भी उनके अनुपम दिव्यचरित के अनुकरण से उसका परम कल्याण होगा, जिस शाश्वत मूल्य एवं सदाचार की उपेक्षा के कारण मानव तथा उसका समाज दिनानुदिन अधोगामी हो रहा है, उसको सन्मार्ग पर आरूढ़ करने वाला, अत्यन्त प्रेरणाप्रद एवं प्रभावपूर्ण चरित यदि किसी का है तो वह भगवान् श्रीराम का। तभी तो महर्षि वाल्मीकि उनको मूर्तिमान धर्म कहते हैं– रामो विग्रहवान् धर्मः (३-३७-१३)। स्वयं वैदिक मर्यादा के पूर्णतः परिपालन में सदा तत्पर रहकर सबके अभ्युदय और निःश्रेयस् का पथ प्रशस्त करना तो उनका प्राणिमात्र पर परमानुग्रह है, तभी तो उनके दिव्य गुणों से मुग्ध स्वयं बादरायण ने इस प्रकार लिखा है–

एकपत्नीव्रतधरो राजर्षिचरितः शुचिः ।
स्वधर्मं गृहमेधीयं शिक्ष्यन् स्वयमाचरन् ।।

(भागवत-९-१०-५५)

जो सत्पुरुषों के लक्षण-शील और आचरण में विद्यमान तथा साधुता की परीक्षा के लिए कसौटी के समान हैं, जिनका आश्रितपरिपालन जगत्प्रसिद्ध है, "रामो द्विर्नाभिभाषते" उनकी सत्यसन्धता का ही अभिव्यञ्जन है, राजा प्रकृति रञ्जनात् को चरितार्थ करते हुए जिन्होंने प्रजा का शासन नहीं, आराधन किया है। उन्होंने स्वयं कहा है कि लोकाराधन के लिए मेरी प्राणवल्लभा जानकी तक का परित्याग करने में मुझे कोई व्यथा नहीं होगी (उत्तररामचरित १-१२) भगवान् वाल्मीकि तो उनके लोकमंगल गुणों का वर्णन करते थकते नहीं, उनके अनुसार सत्य, दान, तप, त्याग, मैत्री, शुचिता, सरलता, विद्या एवं गुरुसेवा ये सद्गुण भगवान् राम में नित्यनिवास करते हैं (वा. रा. २-१२-३) प्राणिमात्र के प्रति दया, अक्रूरता, शास्त्रज्ञान, शील इन्द्रियसंयम तथा मनोनिग्रह ये षड्गुण पुरुषोत्तम श्रीराम को सदा सुशोभित करते रहते हैं (वा. रा. २-३३-१२)

जिनके नित्य ज्ञान से अनुविद्ध शब्दराशि ही वेद है, जो स्वयं सम्पूर्ण वेदार्थ हैं तथा जिनकी उपासना में ही समस्त शास्त्रों का महातात्पर्य है वही अनन्त बह्मामाण्डनायक ब्रह्म भगवान् श्रीराम हैं, जिनका अभयदायी उदार उद्घोष तापत्रयातुर जीवों के लिए अमोघाश्वासन है तथा जिनकी प्रपत्ति सुदृढ़ालम्बन। जिनकी शरणागतवत्सलता एवं कृपालुता की कोई तुलना नहीं। जीवों के परमाश्रय, अभयदाता एवं शरण्य केवल श्रीराम जी हैं उनकी सेवा से ही मानव जीवन सफल होता है, उनकी भक्ति के बिना न तो कामना का नाश होता है और न ही माया का सन्तरण। जिनका परम पावन नाम एवं ऐश्वर्य माधुर्य मिश्रित ललित चरित मुमुक्षुओं का अक्षय पाथेय है। उस निरावरण ब्रह्म श्रीराम जी का सौलभ्यपूर्ण अवतार भी जीवों के प्रति उनकी अपार करुणा का परिचायक है। यह स्मरणीय है कि अवतार काल में एकदेशीय प्रतीत होने पर भी उनका विभुत्व अजत्व, अव्ययत्व, सर्वेश्वरत्व आदि पारमेश्वर स्वभाव यथावत् बना ही रहता है, अन्यथा वेदव्यास ऐसा क्यों कहते कि– रामावतार काल में जिसने उनका जिस रूप में संसर्ग प्राप्त किया, वे सब परमपद के अधिकारी हो गये-

स यैः स्पृष्टोऽभिदृष्टो वा संविष्टोऽनुगतोऽपि वा।
कोसलास्ते ययुः स्थानं यत्र गच्छन्ति योगिनः।।

(भागवत-९-११-२२)

जिनका श्रीविग्रह अप्राकृत शुद्धसत्त्वमय हैं, उसमें लेशमात्र भी प्राकृतिक विकारों का प्रवेश या स्पर्श नहीं है। रामावतार परमात्मा के सौलभ्य का उन्मुक्त भाण्डार है।

वस्तुतः श्रीराम जी अतुलनीय हैं, जब उनके जैसा ही कोई नहीं है तो उनसे बड़ा कोई कैसे हो सकता है तभी तो भगवान् वादरायण ने उन्हें अधिकसाम्यविमुक्तधाम (भाग-९-११-२०) कहकर "न तत्समश्चाभ्यधिकश्च दृश्यते" इस श्रुति का आशय

स्पष्ट किया है। लेखक को बचपन से यही सुनने को मिला है– "विष्णु ते परे महाविष्णु ताते परे रामजी"। सनत्कुमार संहिता के अनुसार श्रीराम ही परब्रह्म हैं उनसे परे कोई तत्त्व नहीं– रामः सत्यं परं ब्रह्म तस्मात्किंचिन्न विद्यते। (समस्तवराज-९२)

यही कारण है कि कैलास के शिखर पर विराजमान महादेव शिवजी ने अपनी पत्नी के समक्ष रामतत्त्व का उपदेश करते हुए अपने शाश्वत सम्बन्ध को अत्यन्त गौरव के साथ व्यक्त किया है कि सर्वान्तर्यामी रघुकुलमणि भगवान् श्रीराम ही मेरे स्वामी हैं। उन्हीं तारक ब्रह्म श्रीराम जी के नाम के बल से मैं काशी में मरने वाले प्राणियों का उद्धार करता हूँ–

पुरुष प्रसिद्ध प्रकास निधि प्रगट परावरनाथ।
रघुकुलमनि मम स्वामि सोइ कहि सिवँनायउ माथ।।
कासी मरत जंतु अवलोकी जासुनाम बल करऊ बिसोकी।।
सोई प्रभु मोर चराचर स्वामी रघुवर सब उर अन्तरजामी।।

जिनके अचिन्त्य ऐश्वर्य के प्रभाव से दर्परहित हुए दशावतार में अन्यतम भगवान् परशुराम भी जिनके समक्ष झुक कर इन शब्दों में जिनके महत्त्व का प्रकाशन करते हैं–

अक्षय्यं मधुहन्तारं जानामि त्वां सुरेश्वरम्।

(वा.रा. १-७६-१७)

जिनके विषय में विश्वामित्र कहते हैं कि सत्यपराक्रम श्रीराम जी को मैं जानता हूँ, महातेजा वशिष्ठ तथा अन्य तपोनिष्ठ भी इनको जानते हैं अर्थात् ये साक्षात्परब्रह्म हैं। (वा.रा. १-१९-१४,१५) लंका में रावण के समक्ष श्री हनुमान् जी ने श्रीराम जी के अतिमानुष ऐश्वर्य तथा अद्भुत पराक्रम का उल्लेख करते हुए कहा कि श्रीराम समस्त लोकों का नाश करके सबकी पुनः सृष्टि करने में समर्थ हैं, उनके सामने युद्ध में ब्रह्मा, इन्द्र, रुद्र आदि देवता भी खड़े नहीं रह सकते–

सर्वांल्लोकान् सुसंहृत्य सभूतान् सचराचरान्
पुनरेव तथा स्रष्टुं शक्तो रामो महायशाः।
ब्रह्मा स्वयंभू चुराननो वा रुद्रस्त्रिनेत्रस्त्रिपुरान्तको वा
इन्द्रो महेन्द्रः सुरनायको वा स्थातुं न शक्ता युधि राघवस्य।।

(वा.रा. ५-५१-३९,४४)

"अभयं सर्वभूतेभ्यो ददामि" के अनुसार सर्वभूतो से अभय प्रदान करने की शक्ति भी केवल ईश्वर में ही संभव है। बिलाप करती हुई मन्दोदरी ने अनेक श्लोकों में श्रीराम जी को अजेय नित्यश्री सनातन परमात्मा, आदि मध्य तथा निधन से रहित, महत्तत्व से परे आत्मतत्त्व के रूप में निरूपित किया है–

व्यक्तमेष महायोगी परमात्मा सनातनः ।
अनादि मध्यनिधनो महतः परमो महान् ।।
तमसः परमो धाता शङ्खचक्रगदाधरः ।
श्रीवत्सवक्षा नित्यश्रीरजय्यः शाश्वतो ध्रुवः ।।

(वा.रा. ६-१११-११,१२)

इसी प्रकार ब्रह्मा जी ने भी परम प्रभु श्रीराम जी की नारायण, सत्य अक्षर ब्रह्म, वेदात्मा, लोकों के आदिकर्त्ता तथा स्वयं प्रभु जैसे ऐश्वर्य वाचक शब्दों का प्रयोग कर परमेश्वरता सूचित की है–

भवान् नारायणो देवः श्रीमांश्चक्रायुधः प्रभुः ।
एकशृङ्गवराहस्त्वं भूतभव्यरुवल्ययित् ।।
अक्षरं ब्रह्मसत्यं च मध्ये चान्ते च राघवं ।
लोकानां त्वं परोधर्मः विष्वक्सेनश्चतुर्भुजः ।।

(वा.रा. ६-११७-१३,१४)

सहस्रशृङ्गो वेदात्मा शतशीर्षो महर्षभः ।
त्वं त्रयायां हि लोकानामादिकर्त्ता स्वयं प्रभुः ।।

(वा.रा. ६-११७-१८)

सत्यवाक् भगवान् वाल्मीकि के अनुसार श्रीराम जी सूर्यचन्द्र अग्नि आदि बाह्य ज्योतियों तथा इन्द्रिय मन बुद्धिजीव आदि आभ्यन्तर ज्योतियों की भी ज्योति हैं, वे ही ईश्वर के ईश्वर, समस्त आनन्द के सार, अनुपम दिव्य अनन्त कल्याण गुणगणों के निलय हैं और सौन्दर्य माधुर्य सौरस्य सौकुमार्य आदि दिव्यगुणों की अधिष्ठात्री महालक्ष्मी समुदायों के सेव्य अतः अनन्त लक्ष्मियों के भी लक्ष्मी हैं–

सूर्यस्यापि भवेत्सूर्यो ह्यग्नेरग्निः प्रभोः प्रभुः ।
श्रियाः श्रीश्च भवेद्ग्र्याः कीर्त्याः कीर्तिः क्षमाक्षमा ।।

(वा.रा. २-४४-१५)

वेद ने जिन श्रीराम जी को सकल जड एवं चेतन की आत्मा एवं परमप्रेमास्पद कहा है तथा उन्हें ही नित्यज्ञान वलैश्वर्य सम्पन्न भी कहा, वे ही स्वसंकल्पानुसार सबके कारण तथा सभी कर्मों के फलप्रदाता हैं। बध एवं मोक्ष उनके अधीन हैं, वे आत्मा के रूप में सर्वोपास्य तथा कर्मसहित उपासनात्मक ज्ञान से प्राप्त होने वाले हैं। जिनसे स्थूल एवं सूक्ष्म अवस्था वाले चराचर जगत् के आविर्भाव, सत्ता, स्फूर्ति, धारण, संरक्षण एवं तिरोभाव होते हैं, वे ही सर्वेश्वर भगावन् श्रीराम हैं। वृहद् ब्रह्मसंहिता, महारामायण आदि ग्रन्थों में श्रीराम भद्र को स्वयं भगवान् कहा गया है–

पूर्णः पूर्णावतारश्च श्यामो रामो रघूद्वहः।
अंशा नृसिंहकृष्णाद्याः राघवो भगवान् स्वयम्।।
भरणः पोषणाधारः शरण्यः सर्वव्यापकः।
करुणः षड्गुणैः पूर्णो रामस्तु भगवान् स्वयम्।।

श्रुति प्रमाणित शरीर शरीरीभाव में विश्वास करने वाले रामानन्दीय श्रीसम्प्रदाय की मान्यता के अनुसार सब में आत्मरूप में प्रविष्ट श्रीरामजी चेतन एवं अचेतन का उसी प्रकार नियमन करते हैं, जैसे जीव अपने शरीर का। जीव कर्मवश होने के कारण स्वेच्छापूर्वक अपने शरीर का प्रयोग किसी काल में न भी कर सके, किन्तु परमस्वतंत्र एवं अनन्त ज्ञानशक्तिसम्पन्न होने से वे इच्छानुसार प्रयोग करते हैं। जिस प्रकार शरीर विशिष्ट आत्मा को देवदत्त आदि नाम से पुकारते हैं, ''पुण्यवान् देवदत्त स्वर्ग जायेगा'' ऐसा कहते हुए आत्मा का निर्देश करते हैं। शरीर आत्मा का विशेषण होने से आत्मा के साथ ही एकता के व्यवहार में आता है, वैसे ही चेतना चेतनरूप शरीर वाले ब्रह्म श्रीराम एक ही हैं, विशेष्य से विशेषण पृथक् नहीं गिना जाता है। यद्यपि गुण विशेषण होता है, चेतन एवं अचेतन तो द्रव्य हैं तथापि शरीर उस द्रव्य का नाम है, जो अपने शरीर से अपृथक् रहकर उसके द्वारा धारित, नियन्त्रित किये जाते हुए शरीरी का सर्वतोभावेन शेष है। इस प्रकार सकलविश्व श्रीराम जी का शरीर होने से रामरूप ही है, तभी तो गोस्वामी जी ''सीयराममय सब जग जानी'' कहते हैं। भगवान् वाल्मीकि ने भी श्रीराम जी को ''जगत्सर्वं शरीरं ते'' (६-११७-२५) कह कर ''यस्यात्मा शरीरम्, यस्य पृथिवी शरीरम्'' इत्यादि श्रुतियों के साथ प्रत्यभिज्ञापूर्वक उनको वेदप्रतिपादित ब्रह्म माना है। वेद नेति-नेति कहकर जिनके नित्यैश्वर्य की इयत्ता का निषेध करते हैं, वही भक्तों के जीवनाधार भगवान् राम हैं।

ध्यातव्य है कि सामान्य शब्द विशेष पर्यवसायी होता है, जैसे "पशुना भजेत", "छागस्य वपाया मेदसः" इत्यादि स्थलों में पशु शब्द छाग में पर्यवसित होता है, वैसे ब्रह्मविद्याओं में सद्, ब्रह्म, आत्मा, अक्षर, ईश्वर, परज्योति, वैश्वानर आदि सामान्य शब्दों से, पुरुष सूक्त एवं नारायणानुवाक आदि के मन्त्रों में पुरुष, नारायण आदि सामान्य शब्दों से जिस परमतत्त्व का निर्देश किया गया है, वे ही सर्वेश्वर श्रीराम हैं। रूढ़िशक्ति से श्रीराम शब्द विशेष्य होने के कारण ब्रह्म का अनादि निज नाम है, अवयव शक्ति से भी योगिजन ध्येय श्रीराम भद्र की ब्रह्मरूपता शास्त्रसम्मत है–

रमन्ते योगिनो यस्मिन् नित्यानन्दे चिदात्मनि।
इति रामपदेनासौ परं ब्रह्मनिधीयते।।

(श्रीरामतापन्युपनिषद्–१-६)

राम एव परं ब्रह्म राम एव परं तपः।
राम एवं परं तत्त्वं श्रीरामो ब्रह्मतारकम्।।

(श्रीरामरहस्योपनिषद्-१-६)

आनन्दभाष्य के जिज्ञासाधिकरण के अनुसार ब्रह्म शब्द अपनी मुख्यवृत्ति से पुरुषोत्तम श्रीराम जी का ही वाचक है– "ब्रह्मशब्दश्च महापुरुषादिपदवेदनीय निरस्ताखिलदोषमनवधिकातिशया सङ्ख्येयकल्याणगुणगणं भगवन्तं श्रीराममेवाह सामान्यवाचकानां पदानां विशेषार्थे पर्यवसानात्"। श्रीरामावतार भगवान् श्री रामानन्द स्वामी ने अपने शिष्य श्री सुरसुरानन्द जी के "तत्त्वं किम्" प्रश्न के समाधान में सम्पूर्ण ब्रह्मलक्षण को भगवान् श्रीरामचन्द्र में समन्दित करते हुए उन्हें ही औपनिषद् ब्रह्मसिद्ध किया है–

विश्वं जातं यतोऽद्धा यद विततमखिलं लीनमप्यस्ति यस्मिन्।
सूर्यो यत्तेजसेन्दुः सकलमविरतं भासयत्यतदेषः।।
यद्भीत्या वाति वातोऽवनिरपि सुतलं भाति वैनेश्वरोऽतः।
साक्षी कूटस्थ एको बहुशुभगुणवानव्ययो विश्वभर्त्ता।।

यहाँ इसका उल्लेख असंगत नहीं होगा कि वैदिक मान्य परम्पराओं में भी श्रीरामानन्द सम्प्रदाय में भगावन् श्रीराम के प्रति जैसी परत्वबुद्धि, निष्कम्पनिष्ठा एवं स्पष्ट मान्यता है वैसी अन्यत्र नहीं है, अन्यत्र न तो उनकी उपासना का वैसा आठाह है और न ही उनमें वैसी आत्मीयता। वस्तुतः श्रीराम जी की अनन्य भावना से प्रकृष्ट उपासना भी केवल यहीं देखी जाती है। क्यों न हो, यहाँ सैद्धान्तिक दृष्टि से श्रीराम ही परमप्राप्य एवं परमोपास्य हैं। साधारण आस्तिकों की दृष्टि में वे भगवान् विष्णु के अवतार होने से ईश्वर रूप हैं, पञ्चदेवोपासक स्मार्तों के यहाँ तो उनका शिवादि साधारण ईश्वरत्व ही मान्य है। परमार्थतः सर्वाधिष्ठान चिन्मात्र को शुद्ध ब्रह्म तथा तदतिरिक्त सकल ज्ञातृज्ञेयज्ञानादि को अविद्याकल्पित होने से उसी में अध्यस्त मानने वाले अद्वैतियों के यहाँ ईश्वर होकर भी श्रीराम मायोपहित चैतन्य हैं। इससे भी जघन्य दशा ईश्वर की तब मानी जाती है कि जीव तो अधिष्ठान ज्ञान से अविद्यामुक्त होकर शुद्ध चैतन्य होता है किन्तु मायावादियों का बेचारा ईश्वर कभी भी मायामुक्त हो नहीं सकता। लीला आदि के विषय में उनकी नीयत इसी से स्पष्ट होती है कि वहाँ यथार्थतः ईश्वर के नामरूप चरित आदि को भी मायाकल्पित होने से अवस्था विशेष में बाध्य मानते ही हैं तथा तत्त्वतः शुद्ध स्वरूप में, ईश्वर तथा सकलोपाधिविनिर्मुक्त जीव में कोई भेद मान्य नहीं है। जबकि वैष्णवों के यहाँ किसी भी अवस्था में ईश्वरजीवैक्य ज्ञान केवल गर्हित या स्वरूप विरुद्ध ही नहीं, अपितु पतनकारक माना जाता है। यहाँ तो नित्य या मुक्त जीव भी अपहतपामत्वादि गुणाष्टक के प्रकट होने से भोगमात्र में

साम्य धारण करते हैं न कि जगत्कर्तृत्व-सर्वनियामकत्व आदि में।

श्रीनिम्बार्क, श्रीवल्लभ, श्रीमाध्व आदि वैष्णवों की अन्य परम्पराओं में श्रीकृष्ण, श्रीविष्णु आदि रूप में ही इष्ट का चिन्तन किया जाता है, श्रीराम जी उनसे अभिन्न रूप में भावित या पूजित होते हैं। अतः वहाँ भी श्रीरामरूप में उतनी आग्रहपूर्ण अनन्यता या आत्मीयता का प्रकर्ष नहीं देखा जाता है। श्रीरामानुज परम्परा में भी परमधाम के पर स्वरूप में श्रीमन्नारायण ही मान्य हैं, लीलाविभूति के ईश्वर श्रीराम या श्रीकृष्ण तो उनके अवतारस्वरूप होने से विभव रूप माने जाते हैं, परम रामभक्त श्री आञ्जनेय स्वामी भी लीला विभूति में ही मान्य हैं। उनको परमधाम के पार्षद विष्वक्सेन-शेष आदि वाली महिमा प्राप्त नहीं है यद्यपि शेष ग्रन्थ के रूप में वे वाल्मीकि रामायण को स्वीकार करते हैं, किन्तु ध्येय तो श्रीमन्नारायण ही हैं, गेय एवं ध्येय का यह समन्वय भी यत्न साध्य है। पूर्वोक्त विवरण से यह निर्भ्रान्त रूप से सिद्ध होता है कि साकेताधीश्वर सर्वेश्वर सर्वावतारी श्रीराम जी को परब्रह्म मानते हुए उनका ही श्रीराम रूप में अवतार स्वीकार करने वाले रामानन्द सम्प्रदाय के ध्येय, गेय एवं सर्वस्व भगवान् श्रीराम जी ही हैं, उनका नामरूप लीला धामादि काल्पनिक या प्राकृतिक नहीं, त्रिकालाबाध्य सत्य है। ब्रह्मा, शिवादि देवता जीव हैं, ब्रह्म नहीं, अतः वे प्राप्य भी नहीं हो सकते। यहाँ भगवान् श्रीराम, श्रीविष्णु या नारायण के अवतार नहीं, अपितु सर्वावतारी हैं अर्थात् वामन, नृसिंह, कृष्णादि सकल अवतारों के मूल कारण एवं निधान हैं। सामवेदीय भरद्वाज संहिता का स्पष्ट वचन है- ''सर्वेषामवताराणामवतारी रघूत्तमः, रामपादनरवज्योत्स्ना परं ब्रह्मेति गीयते''।। रामानन्दीय संतकवि तुलसीदास जी ने भी अपने आराध्य रामजी को लक्षित कर उन्हें सकल अवतारों का मूल कहा है–

मीन कमठ सूकर नरहरी। वामन परसुराम वपुधरी।।
जब जब नाथ सुरन्ह दुख पायो। नाना तनु धरि तुम्हहि नसायो।।

रामानन्दीय वैष्णवों की सुदृढ़ मान्यता है कि प्रकृति मण्डल के परे विरजा– पार त्रिपाद विभूति में दिव्य धाम साकेत है, वह श्रीराम जी का दिव्य धाम है, क्षराक्षरातीत परम पुरुषोत्तम मुक्तोपसृप्य श्रीराम जी को परम प्रेमास्पद होने से सबकी आत्मा, परम सेव्य तथा बद्ध, मुक्त एवं नित्य जीवों के परम प्राप्य हैं, वहीं श्रीहनुमदादि पार्षदों से सेवित होकर श्री सीताजी के साथ विराजमान रहते हैं, उनका वह पर स्वरूप भी द्विभुज है, केवल लीलाविभूति में अवतारकाल में ही नहीं, क्योंकि किं बाहू? बाहू राजन्यः कृतः इत्यादि पुरुष सूक्त के मन्त्रों में द्विवचन का निर्देश होने से जगत्कारण परम पुरुष का द्विभुज होना प्रमाणित होता है, उनका ही श्रीकृष्ण, वामनादि रूप में अवतार होता है, चतुर्भुज श्रीमन्नारायण, श्रीविष्णु आदि भी उनके अपर अंश स्वरूप हैं। याज्ञवल्क्यीय संहिता आदि ग्रन्थ इस तथ्य को उजागर करते हैं–

नारायणोऽपि रामांशः शङ्खचक्रगदाधरः।
महाविष्णोः परश्चासौ कृष्णादपि परात्परः।
नारायणात्परतमः स वे दाशरथिः स्वराट्।।
अवताराः सन्त्मनेके कलांशांशविभूतयः।
राम एव परब्रह्म सच्चिदानन्दभव्ययम्।।

इत्यादि वचनों के आधार पर तो श्रीमन्नारायणादि का श्रीरामांश होना प्रमाणित होता है, इस तथ्य की पुष्टि वृहद् ब्रह्मसंहिता भी करती है–

वैकुण्ठेशस्तु भरतः क्षीराब्धशस्तु लक्ष्मणः।
शत्रुघ्नस्तु स्वयं भूमा रामसेवार्थमागताः।।

तभी तो रामानन्दीय महात्मा श्री तुलसीदास जी ने अपने सम्प्रदायाभिमत नानापुराण निगमागमसम्मत श्रीरामचरितमानस में श्रीराम स्वरूप का निर्धारण करते हुए लिखा है-

उपजहिं जासु अंस ते नाना। संभु विरंचि विष्णु भगवाना।

यद्यपि रामायण, पुराण, आगम आदि आर्ष ग्रन्थों में उनके लिए नारायण, हरि, विष्णु आदि शब्दों का प्रयोग देखा जाता है तथापि रामरहस्य के निपुण प्रस्तोता गोस्वामी जी ने अनेकशः उन्हें त्रिदेवों से विलक्षण तथा परात्पर निरूपित किया है। श्रीराम जी के असाधारण सौन्दर्य को देखकर मिथिला की सखियाँ कहती हैं– ब्रह्मा के चार मुख हैं तथा पंचवदन शिवजी का विकट वेष है, सुषमानिधान भगवान् विष्णु में सौन्दर्य तो है, किन्तु उनकी चार भुजाएँ सौन्दर्य में प्रतिबाधक हैं, क्योंकि जो माधुर्य द्विभुज में है वह चतुर्भुज में नहीं। इसके अतिरिक्त ऐसा कोई देव नहीं जिससे श्रीरघुनन्दन के सौन्दर्य की उपमा दी जाय। जब इनके प्रत्येक अंग पर कोटि-कोटि कामदेव न्यौछावर हैं, तब सर्वाङ्ग सौन्दर्य का वर्णन कौन कर सकता है, तभी तो श्रीराम जी को दूलह रूप में देखकर लक्ष्मी सहित भगवान् विष्णु भी विमोहित हो गये–

हरि हित सहित राम जब जोहे। रमा समेत रमापति मोहे।।

निरतिशय आनन्द ही श्रीराम हैं, वेद ने आनन्द को ही ब्रह्म कहा किन्तु तुलसीदास जी ने अपने रामजी को उससे आगे बढ़कर आनन्दप्रद आनन्द का धाम बताया– आनन्दहुँ के आनन्ददाता, जिसे पाकर आत्मानन्द भी तुच्छ लगने लगे। जिनके दिव्य मधुर सौन्दर्य के दर्शनमात्र से सहज वैराग्यमय चित्तवाले वेदान्तनिष्णात ब्रह्मपरायण विदेहराज श्रीजनक चकोर बनकर श्री राघवेन्द्र के मुखचन्द्र को निर्निमेष देखते रह जाते हैं, इतना प्रेमानन्द उत्पन्न होता है कि उनका ब्रह्मानन्द में नित्य निमग्न मन ब्रह्मानन्द छोड़ देने को बाध्य होता है और आँखों से आँसू बहाते हुए गदगद होकर वे बड़ी गम्भीरता के साथ जिन सौन्दर्य सुधानिधि का सच्चा परिचय जानना चाहते हैं,

वे तुलसीदास जी के श्री राघवेन्द्र साक्षात् औपनिषद् ब्रह्मा है या ब्रह्म से भी बढ़कर कोई परम तत्व शेष है, इसका विचार विज्ञ और रसिक पाठक ही करें, क्योंकि ब्रह्मसुख को वेदान्त ने भूमा-पूर्णसुख स्वीकार किया है, इस तथ्य को मानस की भाषा में इस प्रकार व्यक्त किया गया है-

मूरति मधुर मनोहर देखी। भयऊ बिदेह बिदेह विशेषी।।
सहज बिराग रूप मन मोरा। थकित होत जिमि चंद चकोरा।।
इन्हहि बिलोकत अति अनुरागा। बसबस ब्रह्मसुखहि मन त्यागा।।

सहस्त्रों माता पिता की अपेक्षा भी मनुष्यों का परम हित चाहने वाली श्रुति में ''तं त्वौपनिषदं पुरुषं पृच्छामि'' शब्दों के द्वारा जिस औपनिषद पुरुष की जिज्ञासा की गई है, मानस में गोस्वामी जी ने उसी औपनिषद शैली में भाग्यवती माता कौसल्या के उत्सङ्ग में विराजमान दिव्य नीलमणि का परिचय कराते हुए लिखा है-

ब्रह्म जो व्यापक विरज अज निर्गुण विगत विनोद ।
सो अज प्रेम भगति वस कौसल्या की गोद ।।

वस्तुतः तुलसी साहित्य रूपी निर्मल दर्पण में रामानन्दीय भावना का स्पष्ट एवं अविकल प्रतिबिम्बन हुआ है, उनके अनुसार प्राकृतिक हेय गुणों का अभाव होने से परमात्मा निर्गुण तथा अनन्त कल्याण गुणगणों का आश्रय होने से सगुण कहलाता है, अतः परस्पर विरोध न होने से परमात्मा श्रीराम सगुण होते हुए भी निर्गुण हैं। गोस्वामी जी के अनुसार श्रीराम जी अनुपमेय हैं। श्री विष्णु आदि के साथ उनकी समानता उनको कथमपि स्वीकार्य नहीं है, दोनों में महान् अन्तर होने से परस्पर तुलना तत्त्वापकर्षण दोष के कारण महान् अपराध है। परम प्रभु श्रीराम जी के अचिन्त्य अप्रमेय ऐश्वर्य को व्यक्त करने वाली उनकी ये पंक्तियाँ निश्चय ही रामभक्तों के हृदय को आराध्य गौरव से पूर्ण कर देती हैं-

विष्णु कोटि सम पालन कर्त्ता। रुद्रकोटि सत सम संहर्त्ता।।
रामु काम शत कोटि सुभगतन। दुर्गा कोटि अमित अरिमर्दन।।
सारद कोटि अमित चतुराई। बिधिसत कोटि सृष्टि निपुनाई।।
निरुपमन उपमा आन राम समान राम निगम कहै ।
जिमि कोटि शत खद्योत सम रवि कहत अति लघुता सहै ।।

तुलसीदास जी के श्रीराम "बिधि हरि संभु नचावनि हारे'' होकर भी लोक संग्रहार्थ शिवपूजा करते हैं। वे त्रिदेवों के उत्पादक तथा नियामक भी हैं, "बिधिहि बिधिता, हरिहि हरिता सिवहिं सिवता जो दई'' कहकर उन्होंने त्रिदेव के ऐश्वर्य को रामप्रदत्त तथा रामाधीन बताया है। वे कहते हैं कि "गीध की क्रिया करैया'' मेरे रघुरैया के समान करुणामय स्वभाव किसका है–

अस सुभाव कहुँ सुनहु न देखहुँ। केहि खगेस रघुपति सम लेखहुँ।।

उनका कहना है कि मेरे रामजी के समान उदार कोई नहीं, अन्य देवी देवताओं को कौन कहे, जगत् में महादानी कहलाने वाले शिवजी की उदारता को भाँपते हुए उन्होंने लिखा है–

जो सम्पति सिव रावनहि दीन्ह दिये दस माथ।
सोइ सम्पदा विभीषनहि सँकुचि दीन्ह रघुनाथ।।

भागवत जैसे कृष्णपरक ग्रन्थ में भी "यस्यामलं नृपसदस्सु यशोऽधुनापि" पद्य लिखकर भगवान् वेदव्यास ने यह बता दिया है कि भले ही नन्दनन्दन श्रीकृष्ण भी श्रीराम जी के अपरस्वरूप हैं, जनमानस पर जिनकी लोकरंजन मञ्जुल लीलाओं का अप्रतिम चमत्कार देखा जाता है, तथापि ऋषि-मुनियों, राजर्षियों की सभा में गेय चरित भगवान् राम का ही है, आज भी उनका ही लोग गान करते हैं, श्रीकृष्ण की चमत्कारिणी लीला भी श्रीराम जी के लोकमङ्गल सार्वकालिक आदर्श तथा प्रेरणाप्रद चरित के गौरवप्रभाव को नहीं मिटा सकी। यद्यपि "अपने जन के कारण श्रीकृष्ण भये रघुनाथ" कहने वाले तुलसीदास जी समन्वयवादी रामानन्दीय कवि होने से श्रीकृष्ण चरितावली की रचना कर उनकी ललित लीला का सुन्दर वर्णन किया है, किन्तु वे अपने इष्टदेव श्री रघुनाथ के लोकोत्तर गुणवर्णन के क्रम में अपने प्रेमाग्रह को नहीं छिपा पाये। अवसर मिलते ही भगवदवतारों में श्रीराम जी की अनितर साधारण विलक्षणता बताने से वे नहीं चूकते। उन्होंने विनयपत्रिका में कहा है कि "प्रभु ने अपने अन्य अवतारों में भी वेद की प्रतिष्ठा रखी है, कृष्णावतार में चिउड़ा लेने के बाद ही सुदामा को सम्पदा दी। आखिर देते क्यों नहीं, बाल मित्रता जो थी"।

इष्ट प्रेमाग्रह के बावजूद भी विलक्षण संभाल वाली गोस्वामी जी की इस अभिव्यञ्जना का रसास्वादन आप भी करें–

हरिहुँ और अवतार आपने राखी वेद बड़ाई।
लै चिउरा निधि दई सुदामहि यद्यपि बाल मिताई।।

(विनयपत्रिका- पद नं. १६३)

गहनविमर्श से ऐसा प्रतीत होता है कि श्रीकृष्णचरित श्रीरामचरित का परिशिष्ट है। तथापि-श्रीरामरूप में ऐसा मधुर प्रेमाग्रह जो भक्ति परम्परा में दूषण नहीं, दूषण माना जाता है, श्रीरामानन्द सम्प्रदाय में ही देखा जाता है। श्रीराम सेवापरायण श्री हनुमान् जी के ये वचन उनकी अनन्त दृढ़निष्ठा के ही प्रकाशक हैं, जिनमें यह कहा गया कि यदि श्रीराम जी को छोड़कर अन्य के आगे मेरा मस्तक झुके तो इस पर कालदण्ड गिर जाय, रामनाम को छोड़कर मेरी जीभ अन्य नाम का जप करे तो इससे द्विजिह्व साँप काट ले, श्रीराम रूप को छोड़कर अन्य का चिन्तन करे तो हृदय पर वज्रपात हो जाये,

सर्वान्तर्यामी श्रीरघुनाथ मेरे अनन्यभाव को जानते हैं–

रामादन्यं नमेच्चेत्पततु शिरसि मे कालदण्डः प्रचण्डः
जिह्वामेतां द्विजिह्वो दशतु रघुपतेर्नामतोऽन्यं जपेच्चेत्।
दम्भोलिर्मामकीनं विदलतु हृदयं चिन्तयेच्चेत्तनोऽन्यं
जानीते सर्ववेत्ता सकलहृदि गतो वेत्तु वान्यो न वेत्तु।।

(हनुमन्नाटक)

गोस्वामीजी ने भी सम्प्रदाय सम्मत अनन्य निष्ठा का अनेक बार उल्लेख किया है, "रोकिहौं नयनविलोकत औरहिं सीस ईस ही नैहों" इत्यादि शब्दों से। उन्होंने मानस के अन्त में अपने आराध्य की अनुपम अकारणदीनवत्सलता, अचिन्त्य ऐश्वर्य एवं अप्रतिम चरितचारुता की स्थापना करते हुए उनके "एकमेवाद्वितीयम्" होने का निरूपण किया है–

सुन्दर सुजान कृपानिधान अनाथ पर कर प्रीति जो
सो एक राम अकाम हित निर्वाणप्रद सम आन को।
जाकी कृपा लवलेसते मतिमन्द तुलसीदासहूँ
पायो परम विश्राम रामसमान प्रभु नाहीं कहूँ।।

आदि काव्य रामायण के प्रणेता महर्षि वाल्मीकि ने तो राम दर्शन से वञ्चित शरीरधारी को धिक्कारते हुए उसे लोकनिन्दित तथा आत्महत्यारा तक कह दिया है–

यश्च रामं न पश्येतुयं रामो नामि पश्यति।
निन्दितः सर्वलोकेषु स्वात्माप्येनं विगर्हते।।

(वा.रा. २-१७-१४)

अतः भगवान् श्रीराम की सत्ता या ऐश्वर्य में सन्देह करना तथा उनके चरित को काल्पनिक बताना महापाप है, जिसके ब्रह्म होने में तनिक सा सन्देह होने पर जब भगवती सती देवी को भी दण्ड भोगना पड़ा, तब कलियुगी नारकीय जीवों की क्या गति होगी।

ऐसे सर्वसमाश्रमणीय सर्वेश्वर भगवान् श्रीराम जी की भक्ति ही सर्वोत्तम धर्म तथा सर्वोत्कृष्ट साधना है चाहे वह सख्य, वात्सल्य, उज्ज्वल-दास्य आदि किसी भी अभीष्ट भावना से भावित क्यों न हो। उसी से कल्याण होना सुनिश्चित है। अतः अपनी उन्नति तथा कल्याण चाहने वाले बुद्धिमान् व्यक्ति को सदा सर्वात्मना श्रीराम भक्ति में निरत रहना चाहिये–

तरहिं न बिनु सेये मम स्वामी। राम नमामि नमामि नमामी।।

●

आचार्य रामानंद का तत्त्वदर्शन और उपासना विधि

डॉ. उदयप्रताप सिंह

भारतीय समाज, संस्कृति और धर्म की नींव आध्यात्मिकता के सुदृढ़ धरातल पर अवलंबित हैं। सनातन काल से अनेक युगद्रष्टा मनीषियों ने आध्यात्मिकता की इस ज्योति को समय-समय पर प्रज्ज्वलित किया है। कहना न होगा कि सहस्रों वर्ष पूर्व से भारतीय जनमानस अध्यात्म की इस अम्लान आभा से भासमान होता रहा है। उसका प्रातिभासिक रूप आचार्यों, महात्माओं, संत-साधकों और तपस्वियों द्वारा प्रकट होता रहा है। आचार्य रामानंद इसी समुज्ज्वल परम्परा के एक देदीप्यमान नक्षत्र के रूप में गत सात सौ दश वर्षों से भारतीय नभोमण्डल को आलोकित करते रहे हैं।

पश्चिमी जगत् में फिलॉसफी शब्द अकादमिक संसार तक ही अपना कार्यक्षेत्र विस्तृत कर सका है। उसके अर्थ की सीमाएँ दृश्यमान् जगत् के चौखटे तक ही सीमित हैं भले ही उसकी बौद्धिक ऊँचाई ज्ञान की पराकाष्ठा को स्पर्श करती हो पर अपरोक्षानुभूति की व्यञ्जना उस शब्द में, कहीं भी ध्वनित नहीं होती है। जबकि भारतीय चिंतन परम्परा में दर्शन शब्द परम सत्ता के सूक्ष्मातिसूक्ष्म अपरोक्षानुभूति से तादात्म्य करता दिखायी पड़ता है। इसे ही भारतीय चिंतकों ने साक्षात् अपरोक्षानुभूति कहा है। यही अनुभूति ब्रह्मतत्त्व का निर्वचन करती है– जिसे दर्शन कहा जाता है। पश्चिम की अनुभूति में फिलॉसफी और थीमोलॉजी अलग-अलग हैं जबकि पौर्वात्य परम्परा में दोनों शब्दार्थ की तरह अभिन्न हैं। दर्शन का मुख्यार्थ परमतत्त्व का सायुज्य है। यही हमारा प्राप्तव्य भी है। इसके निमित्त व्यवहृत् विचार ही दार्शनिक चिंतन कहे गये हैं।

स्वामी रामानंद ने सम्पूर्ण भारत में वैष्णवी रामभक्ति का प्रसार करने में अथक प्रयास किया। भारतीय जनमानस में वर्षों से व्याप्त भक्ति की महिमा उन्हीं द्वारा सृजित है। दूसरे शब्दों में कहा जा सकता है कि वैष्णव भक्ति को लोकप्रिय बनाने में स्वामी जी का अप्रतिम योगदान है। इनकी उदारता और ऐन्द्रिजालिक व्यक्तित्व ने तत्कालीन समाज को आकृष्ट करने में अद्भुत सफलता प्राप्त किया था। डॉ. पिताम्बरदत्त बड़थ्थवाल लिखते हैं कि "समकालीन हिन्दू समाज में भक्ति की एक क्रांतिकारी लहर का प्रादुर्भाव आचार्य रामानंद के भगीरथ प्रयास का ही सुफल था। ये अपने समय के एक प्रभावशाली पथप्रदर्शक के रूप में दीख पड़ते हैं। तत्कालीन प्रत्येक विशिष्ट सुधारक का इनके प्रति आदरभाव इनकी महानता को व्यक्त करता है। वास्तव में जिस

भक्ति भावना का प्रचार हम आज उत्तरी भारत में देख रहे हैं उसके प्रधान प्रयोक्ता स्वामी रामानंद ही हैं।" इतना ही नहीं रामावत सम्प्रदाय के अतिरिक्त महाराष्ट्र के नाथपंथी उन्हें अपना ही कहते हैं। प्रसिद्ध संत ज्ञानदेव के पिता विठ्ठलपंत नाथपंथी होते हुए भी स्वामी रामानंद को अपना गुरु मानते हैं। अन्यान्य परवर्ती सम्प्रदायों ने स्वामी जी को अपना गुरु और प्रेरणास्रोत स्वीकार किया है। यद्यपि कालक्रम की असंगति दिखाई पड़ती है पर इससे उनकी महत्ता का आकलन अपर्याप्त नहीं किया जा सकता है।

विमर्शों और विवेचनों के प्रारंभिक वर्षों में रामावत सम्प्रदाय का सम्बंध रामानुज सम्प्रदाय से अभिन्न माना जाता रहा है। पर जैसे-जैसे विद्वानों ने समीक्ष्य पंथ का विश्लेषण प्रारंभ किया उसके स्वतंत्र स्वरूप का रहस्योद्‌घाटन होता गया। सिद्धांत, दर्शन, पूजापद्धति आचार-विचार, आराध्य भक्तानुगतों तथा ग्रंथों ने रामावत सम्प्रदाय का एक स्वतंत्र संसार ही स्थापित कर दिया। पारम्परिक रूप से स्वामी रामानंद के दार्शनिक चिंतन का सूत्र भी रामानुजी विशिष्टाद्वैत में देखा जाता रहा है पर स्वामी जी द्वारा विरचित ग्रंथों मुख्यतः 'वैष्णवमताब्जभास्कर' एवं 'रामार्चनपद्धति' ने इसे स्वतंत्र सम्प्रदाय की गरिमा प्रदान की। स्वामी रामानंद के दार्शनिक चिंतनों और सिद्धांतों के मूल स्रोत यही दोनों ग्रन्थ माने जाते हैं। 'अध्यात्मरामायण', 'ब्रह्मसूत्रभाष्य' जैसे ग्रंथ उनकी मनीषा के प्रमाण हैं। वस्तुतः वैष्णवमताब्जभास्कर की रचना प्रश्नोत्तर शैली में हुई है। प्रधान शिष्य सुरसुरानंद वैष्णव सिद्धांत और आचार से सम्बन्धित दश प्रश्न पंचगंगा घाट (काशी) पर समुत्सुक भाव से स्वामी रामानंद के समक्ष रखते हैं। (१) तत्व क्या हैं? (२) जाप्य मंत्र क्या हैं? (३) इष्ट का ध्यान और उनका स्वरूप क्या है? (४) मुक्ति का साधन क्या है? (५) श्रेष्ठ धर्म कौन है? (६) वैष्णवों के धर्म क्या हैं? (६) उनके कितने भेद हैं? (८) वैष्णवों का निवास कहाँ हो? (९) वैष्णवों का कालक्षेप कैसे हो? (१०) उनका प्राप्य क्या है? वैष्णवमताब्जभास्कर में प्रश्नोत्सुक पंक्तियाँ इस प्रकार हैं–

तत्त्वं च किं किंच्च जाप्यं रघुपतिशरणैवैष्णवैर्ध्येमिष्टं?
मुक्तेः किं साधनं सत्सुमतिमतिमतो धर्म एकोऽस्ति कश्च?
धर्माणां वैष्णवानां गुरुवर कतिधा लक्षणं किंच तेषाम्?
कालक्षेपः किमाप्यं कथमुरु शुभदं कुत्र कार्यो निवासः?

(वैष्णवमताब्जभास्कर)

ब्रह्म : तत्त्व को त्रिक्‌मय कहा गया है। चित् (जीव) अचित् (त्रिगुणात्मिका प्रकृति) तथा तद्‌विशिष्ट ईश्वर। इससे स्पष्ट होता है कि स्वामी रामानंद परमतत्त्व को चिदचिद् विशिष्ट ब्रह्ममय अंगीकार करते हैं। उनके मतानुसार स्वयं विष्णु ही राम के रूप में अवतीर्ण हुए थे। ये राजा दशरथ के पुत्र हैं, जानकी जिनकी पत्नी हैं। पिता की

आज्ञा सहर्ष स्वीकार कर चौदह वर्ष तक जिन्होंने वन में चित्रकूट को अपना निवास स्थान बनाया था। वह भक्तवत्सल हैं तथा इस संसार के कारणभूत हैं। ऐसे राम जो लक्ष्मण-सीता सहित विराजमान हैं- की उपासना करनी चाहिए-

रामायसांगायसपार्षदायसीतासमेतायसहानुजाय ।
आम्नायवेद्यायविधायशाश्वत् कैंकर्यमीर्षारहितसमाहितः ।।

(वैष्णवमताब्जभास्कर, पृ. २४२)

द्विभुज राम निश्चय ही ब्रह्म स्वरूप हैं। इसी ग्रंथ में ईश्वर के पाँच रूपों का वर्णन मिलता है जिसे पर, व्यूह, विभव, अन्त्यर्यामी एवं अर्चा कहा गया है। राम इन्हीं पंचरूपों में सीता से अवियुक्त रहते हैं। "सीता जी प्रकृति स्थानीय, लक्ष्मण जीव स्थानीय और राम ईश्वरतत्व के द्योतक हैं। मुक्ति का साधन एक ही परम पदार्थ भक्ति है। राम ही समस्त संशयों के छेदक और परम पूज्य हैं"। ईश्वरानुग्रह से ही मुक्ति प्राप्त की जा सकती है। ब्रह्म ही जगत् का कारक है। सम्पूर्ण जगत् की रचना वह अपनी संकल्प शक्ति से करता है। प्रलय में सृष्टि का क्रम प्रतिगामी हो जाता है। चिदचिद् विशिष्ट क्रम ही वाचन योग्य है। वह निर्गुण-सगुण दोनों स्वरूपों में विद्यमान रहता है। द्विभुज राम ही सृष्टि के कर्त्ता पालक और संहारक हैं। नवधा भक्ति से समन्वित रामानंदी भक्ति दास्यभाव प्रधान है। प्रमाणार्थ वैष्णवमताब्जभास्कर की कतिपय पंक्तियाँ उद्धृत हैं-

मनोमिलिन्दस्तव पादपंकजे, रमार्चिते संरमतां भवे-भवे ।
यशः श्रुतौ ते ममकर्ण युग्मकं तदुक्तसंगोस्तु सदा ममप्रभो ।।

श्रीसीता (मूलप्रकृति) यह मायास्वरूप त्रिगुणात्मिका प्रकृति है। अचेतन अज्ञ, नित्य, अविकृत, विश्वयोनि आदि चौदह गुणों से समन्वित है। स्वामी जी ने इन्हें राम की आह्लादिनी शक्ति तथा ब्रह्मस्थानी कहा है। इनका निवास ब्रह्म की देह अर्थात् राम में है; किंतु सृष्टि सृजन में वह उनसे पृथक् हो जाती हैं। इन्हें ही माया या मूल प्रकृति भी कहा गया है। यही विद्या और अविद्या माया के रूप में विभक्त होती हैं। इस सम्प्रदाय में सीता रामप्रिया के रूप में मान्य हैं। यह स्वरूप रामानुजीदर्शन में नहीं है। बिना उनकी कृपा के राम मुमुक्ष जनों का उद्धार नहीं करते हैं। वह सर्वगुणों की केन्द्रीभूत शक्ति हैं। वैष्णवमताब्जभास्कर का एक दृष्टांत-

ऐश्वर्यं यदपांगसंश्रयमिदं भोग्यं दिगीशैर्जगत्,
चित्रं चाखिलमद्भुतं वात्सल्य सीमा च या ।
विद्युतपुंजसमानकांतिरमितक्षांतिः सुपद्मेक्षणा,
दत्तान्नोऽखिलसंपदो जनकजा रामप्रिया सानिशम ।।

इस प्रकार चित् और अचित् के साथ सीतारूप श्रीदेवी श्रीराम रूपब्रह्म से सम्बद्ध

हैं- 'रमायेति चतुर्थ्येन श्रिया देव्यास्तु सर्वदा'। चेतन अचेतन का ब्रह्म है, स्वगत भेद है, परंतु श्री अर्थात् सीता के साथ भेदाभेद है।

जीव : स्वामी रामानंद ने जीव को एक स्वरूप में स्थित बताया है। वह ईश्वर की अपेक्षा अज्ञ है, चेतन और अज है। उसकी पराधीनता भगवदाधीन है। वह सूक्ष्म से भी सूक्ष्म है। बद्ध आदि भेदों से इतर है। भगवानमय शरीर का निवासी है। अपने कर्म के अनुसार फलाधिकारी है। उसके रक्षाकवच भगवान् हैं जो सदैव उसकी चिंता करते हैं। जीव अपने कर्त्ताभाव और भोक्ताभाव के अभिमान से ग्रसित रहता है। तत्त्वज्ञों द्वारा जीव जानने योग्य है। वह ज्ञानस्वरूप तो है ही ज्ञान का आश्रय भी है। वह परमात्मा का अत्यंत प्रिय, नित्यता से परिपूर्ण और स्वप्रकाश से प्रकाशित है। जीव शेष शेषी अथवा अंशांशि भाव में स्थित है। स्वामी जी ने उसकी कई कोटियाँ और अवस्थाएँ बतायी हैं। मुख्यतः उसे बद्ध जीव तथा मुक्त जीव की कोटियों में बाँटा गया है। जीव के अनेक भेदापभेद हैं जिन्हें विस्तार भय से यहाँ नहीं प्रस्तुत किया जा सकता है। वैष्णवमताब्जभास्कर का एक ही उद्धरण पर्याप्त होगा–

नित्योज्ञश्चेतनोऽजः सतत परवशः सूक्ष्मतोऽत्यन्तसूक्ष्मो-
भिन्नो बद्धादि भेदैः प्रतिकुणमपसौनैकधा सूरिवर्य्यैः ।
श्रीशाक्रांतालयस्थोनिजकृतिफल भुक्तत्सहायोऽभिमानी ।
जीवः संप्रोच्यते श्रीहरिपदसुमते तत्वजिज्ञासुवेद्यः ।।

मुक्ति (मोक्ष) – जीवात्मा की अंतिम इच्छा मोक्ष अथवा मुक्ति होती है। उसकी सम्पूर्ण साधना इसी के निमित्त सम्पन्न होती है। रामावत सम्प्रदाय में श्रीराम के अनुग्रह से ही जीव के सांसारिक बंधन कटते हैं। भवबंधनों से मुक्ति के उपरांत ही जीव साकेत लोकगमन करता है। रामावत सम्प्रदाय में भगवान् के दिव्यलोक को ही साकेत लोक कहा जाता है। यहाँ उसे सायुज्य की प्राप्ति होती है जिसे मोक्ष कहा जाता है। सुषुम्ना, अर्चिमार्ग, अहर्मार्ग उत्तरायण, संवत्सर, सूर्य, चंद्र और विद्युत आदि मार्गों से होता हुआ जीव दिव्य साकेत लोक पहुँचकर विश्रांति का अलौकिक आनंद प्राप्त करता है। सायुज्य की यह प्राप्ति उसे मुक्ति प्रदान करती है। यही जीव की मुक्तावस्था है।

स्वामी रामानंद ने जीव को परम लक्ष्य तक पहुँचने के लिए कई एक मंत्रों का विधान किया है। परब्रह्म की साक्षात् अपरोक्षानुभूति के लिए रामतारक मंत्र की महिमा अद्भुत है। मंत्रराज के बिना काशी में भी मुक्ति संभव नहीं, जहाँ स्वयं देवाधिदेव भगवान् शंकर विराजमान हैं। अन्य स्थानों की तो बात ही दूर है। मंत्र- राज की संस्थापना स्वामी रामानंद इस रूप में करते हैं–

(१) रां रामाय नमः (२) श्रीरामचन्द्रचरणौ शरणं प्रपद्ये
(श्रीमते रामचन्द्राय नमः) (द्वयमंत्र)

इसके साथ अन्त में-सुकृदेव प्रपन्नाय तवास्मीति च याचते । (चरममंत्र)
अभयं सर्व भूतेभ्यो ददाम्येतद्व्रतं मम ।।

यद्यपि इन सभी विमर्शों और व्याख्याओं में रामानंद जी ने कहीं भी विशिष्टाद्वैत अभिधान से इस दर्शन को सम्बोधित नहीं किया है; पर इसका निहितार्थ स्पष्टतः विशिष्टाद्वैत ही है। इन मंत्रों में श्री पुरुषार्थ स्वरूप राम से अभिन्न सीता का संबोधन भी होता है। निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि केवल परमात्मा ही सत्य नहीं है, ब्रह्म ही एक मात्र सत्ता नहीं है; अपितु तीन नित्य सत्ताएँ विराजमान हैं– जीवात्मा (चित्) जड़जगत् (अचित्) और परमात्मा (ईश्वर) चित्-अचित्-विशिष्ट।

उपासना विधि स्वामी रामानंद ने रामार्चनपद्धति में वैष्णवों की उपासना विधि को विधिवत् व्याख्यायित किया है। एक वीतरागी वैष्णव को भुजमूल में धनुषबाण, ऊर्ध्वपुण्ड, नामस्मरण, मंत्र तथा तुलसी की माला धारण करना अपेक्षित है। रामावत सम्प्रदाय में इन्हें पञ्चसंस्कार कहा जाता है। इस प्रकार पंच संस्कारों से युक्त वैष्णव तैलधारावदवच्छिन्न श्रीराम की भक्ति में तल्लीन हो। यह भक्ति विवेक आदि सात साधनों तथा यमादि अष्टांगयोग से समन्वित होती है। इस पराभक्ति का साधन है–

श्रवणं कीर्तनं विष्णोः स्मरणं पादसेवनम् ।
अर्चनं वंदनं दास्यं सख्यमात्मनिवेदनम् ।।

जीव की मुक्ति का परम साधन भक्ति ही है। भक्ति को साधने के उपाय महाव्रत हैं। ये मूलतः बाह्यरूप में दृश्यमान् हैं। श्रवणादि आठों उपायों के अनुष्ठान से जीव प्रपत्ति का अधिकारी बनता है। स्वयं को परमात्मा के आधीन कर देना ही प्रपत्ति है। भगवान् की सहेतुक निर्हेतुक दोनों कृपा दृष्टियों से मुक्ति अवश्यंभावी है। इस प्रपत्ति की सच्ची अधिकारिणी जीवात्मा ही है। इन प्रपन्नों के कल्मषों का मार्जन स्वयं भगवान् श्रीराम करते हैं।

स्वामी रामानंद का काल संघर्षमय था। दो संस्कृतियाँ और सभ्यताएँ परस्पर टकरा रही थीं। एक को सत्ता का बल मिला था तो दूसरी को साधुता का। जब सामने का विरोध प्रबल हो तो मात्र सैद्धांतिक चिंतन कारगर नहीं हो पाते हैं। जीवन की वास्तविकता में उतरना ही पड़ता है। अतः 'जगन्नमिथ्या' कहकर हम किसी समस्या का हल नहीं निकाल सकते। उसके लिए तो जीवन और जगत् की महत्ता को स्वीकारना ही पड़ेगा। स्वामी रामानंद ने इसीलिए विष्णु और लक्ष्मी की जगह धनुर्धर राम और जगधात्री सीता को आराध्य बनाया। हनुमान के प्रति भजन बनाकर उनके शौर्य का देशवासियों को स्मरण कराया– मैं ब्रह्म हूँ, जगत् मिथ्या है, ब्रह्म से परे कुछ नहीं है जैसे जीवन से दूर होते सिद्धांतों को नकारा और ब्रह्म के साथ जीव और जगत् की सत्यता सिद्ध की। उनकी इस प्रगतिशील चेतना में स्वाधीनता के स्वर मुखरित होते

सुने जा सकते हैं। लौकिक जीवन को आस्था, विश्वास और सकर्मक ढंग से जीने का एक महामंत्र था उनका दर्शन।

इस प्रकार हम देखते हैं कि स्वामी रामानंद ने मात्र दार्शनिक सिद्धांतों की स्थापना कर सम्प्रदाय का सृजन ही नहीं किया, अपितु वैष्णव भक्ति की लोकप्रियता में अभूतपूर्व योगदान भी किया। उदारता का परिचय देते हुए मनुष्य मात्र के लिए भक्ति का द्वार उन्मुक्त कर दिया। भक्ति द्वारा सामाजिक शक्ति का संघटन होता है– जैसे नवीन मंत्र उन्हीं द्वारा प्रदत्त हैं। उन्होंने भक्ति के माध्यम से तत्कालीन साम्प्रदायिक जड़ताओं को तोड़ा। फलतः निम्नवर्गीय जातियों ने उनके द्वारा प्रवर्तित राम को अपना आराध्य बनाया। मौलाना रशीउद्दीन ने 'तजकीर तुलफुकरा' में रामानंद की उदारता को बेमिशाल बताया है। स्वामी जी ने तीर्थाटन और देशाटन के माध्यम से सम्पूर्ण भारतीय समाज को जोड़ने की अद्भुत कला परवर्ती सम्प्रदायों को सिखायी। धनुषधारी राम उनके आराध्य बने और भक्तानुगत उनके (सैनिक) वैरागी। उन्होंने जीवन और विचारों की लंबी यात्रा में विषमता को भंजित किया। रामेश्वरम्, मदुरै, त्रिचिपल्ली, बदरिकाश्रम, द्वारका तथा गुजरात के अन्य तीर्थों की धर्मयात्राएँ सम्पन्न कीं। मिथिला, चित्रकूट, जनकपुर, जगन्नाथपुरी, वृंदावन, हरिद्वार, नैमिष्यारण्य, अयोध्या, प्रयाग, काशी तथा कश्मीर तक उन्होंने यही उपदेश दिया कि जगत् सत्य है, जीव सत्य है और परमात्मा तो विशिष्टता के साथ अनादि सत्य है ही।

●

रामानन्द-वेदान्त में सीता तत्त्व

डॉ. देवेन्द्र सिंह

वैदिक ऋषियों ने जब ब्रह्म का साक्षात्कार किया तभी उनको ब्रह्म की क्रियात्मिका शक्ति की अनुभूति भी हुई। ब्रह्म की इस शक्ति को उन्होंने "श्री" अभिधान दिया जिससे संयुक्त होकर निर्गुण, निष्क्रिय एवं निर्विकार ब्रह्म सगुण, साकार तथा ईश्वर स्वरूप हो जाता है। क्योंकि ईशन् करने की शक्ति ब्रह्म में "श्री" से ही आती है। इस श्री देवी की विराट् महिमा से अभिभूत ऋषियों की हार्दिक संवेदना ऋग्वेद के "श्रीसूक्त" में मूर्त्तिमान् हुई। शतपथ ब्राह्मण के अनुसार प्रजापति की साधना के मूल रूप में "श्री" उनके अन्तस् से निकलकर दिव्य सौन्दर्यमयी, ओजोमयी देवी के रूप में उपस्थित होती है।

प्रजापतिर्वै प्रजाः सृज्यमानोऽतप्यत। तस्माच्छ्रान्तात्तेपानाच्छ्रीरुद् क्रामत् ।।
सा दीप्यमाना भ्राजमाना लीलायन्त्यनिष्ठत् ।।

(११/४/३/१)

इस "श्री" से ही अग्नि ने भक्षणीय अन्न लिया, सोम ने राज्य, वरुण ने साम्राज्य, मित्र ने क्षत्र, इन्द्र ने बल, बृहस्पति ने ब्रह्मवर्चस्, सविता ने राष्ट्र, पूषा ने ऐश्वर्य, सरस्वती ने पुष्टि तथा त्वष्टा ने रूप प्राप्त किया। इस प्रकार शतपथ ब्राह्मण में हमें श्री या लक्ष्मी के दार्शनिक स्वरूप का प्रथम दर्शन होता है। जिसका कालान्तर में अत्यधिक विस्तार हुआ। श्री देवी के ही आधार पर परवर्ती काल में श्री शब्द समृद्धि-सौन्दर्य-वैभव-सम्पत्ति आदि अर्थों में रूढ़ हो गया। "श्री" का पूर्ण परिष्कृत एवं विकसित रूप "शाक्तदर्शन" में प्राप्त होता है।

इस श्री तत्त्व को परवर्ती काल में वैष्णव सम्प्रदाय ने परमात्म शक्ति मूल प्रकृति तथा माया के रूप में स्वीकार कर लिया। लेकिन विशिष्टता यह रही कि सभी प्रमुख वैष्णव सम्प्रदायों ने अपने आराध्य के अनुरूप "श्री" के विविध नामों में से किसी एक का चयन कर लिया। जहाँ आलवार सन्तों एवं रामानुजी विद्वानों ने लक्ष्मी को पराशक्ति माना, वहीं रामानन्द सम्प्रदाय में वह सीता हो गई, निम्बार्क, विष्णुस्वामी तथा मध्व प्रभृति कृष्णभक्ति शाखा में वही राधा नाम से विश्रुत एवं प्रतिष्ठित हुई। विभिन्न सम्प्रदायों में प्रचलित शक्ति तत्त्व वस्तुतः समानार्थी हैं तथा तात्त्विक एवं दार्शनिक दृष्टि

से उनमें कोई भेद नहीं। अन्तर है तो केवल स्वरूप का । इस बात की पुष्टि सीतासहस्रनाम, राधासहस्रनाम, ललितासहस्रनाम प्रभृति स्तोत्र ग्रंथों से हो जाती है। प्रत्येक मत की विशिष्टता मात्र इतनी है कि उसने अपने स्वीकृत नाम को अन्य की अपेक्षा प्रमुखता दी है तथा शेष नामों को गौण भाव से ग्रहण किया है।

रामानन्द सम्प्रदाय में ब्रह्म की इस पराशक्ति को सीता सम्बोधन दिया गया है, जो समग्र चराचर जगत् की निर्माण, पालन एवं संहारकर्त्री हैं। जिनकी कृपा-कटाक्ष के बिना श्रीरामचन्द्र रूप परब्रह्म की प्राप्ति जीवों को नहीं हो सकती। स्वामी रामानन्द ने सीता जी को "भगवान् रामचन्द्राभिमतानुरूप" कहा है। अर्थात् जो-जो गुण श्रीराम जी में हैं, वो सभी सीता जी में भी हैं। अभिप्राय यह है कि भगवान् राम के समस्त कल्याणगुणगणों का अधिष्ठान उनकी शक्ति में हैं तथा वह शक्ति सीता जी हैं। इसीलिए शक्ति तथा शक्तिमान् में भेद नहीं है, दोनों एक ही तत्व हैं। गोस्वामी तुलसीदास जी ब्रह्म तथा उसकी शक्ति की अभिन्नता की उपमा वाणी और अर्थ से, जल तथा उसके तरंग से की है–

गिरा अरथ जल बीचि सम कहियत भिन्न न भिन्न।
बंदउँ सीता राम पद जिन्हहि परम प्रिय खिन्न।।

(रामचरितमानस, बा.कां., दो. १८)

किन्तु प्रपञ्च विस्तार के समय दोनों में अभेद रहते हुए भी भेद हो जाता है। क्योंकि बिना भेद हुए ब्रह्म की लोक-लीला सम्भव ही नहीं है। अतः सृष्टिकाल में दोनों में भेद होता है, किन्तु यह भेद केवल व्यावहारिक है, पारमार्थिक या तत्त्वतः नहीं। श्री सीता जी के द्वारा यह चराचर जगत् प्रसूत है, तथा वही इसमें रमण करती हैं। राम मंत्र में 'रामाय' इस चतुर्थ्यन्त पद से श्रीसीता जी का ही बोध होता है।

"सीता" शब्द का अर्थ वाल्मीकि जी इस प्रकार से करते हैं–

"अथ मे कृषतः क्षेत्रं लाङ्गलादुत्थिता ततः ।।१३।।
क्षेत्रं शोधयता लब्धा नाम्ना सीतेति विश्रुता ।।१४।।"

(वाल्मीकि रामायण - बा.कां./६६ सर्ग)

अर्थात् जनक जी द्वारा खेत में हल चलाते समय, सीता (हल द्वारा खींची गई रेखा) से उत्पन्न होने के कारण, उस भूमि से प्राप्त कन्या का नाम सीता हुआ। 'सीता' शब्द की व्युत्पत्ति को लेकर रामानन्द सम्प्रदाय में एक बहुत ही प्रचलित श्लोक है –

सिनोत्यादिगुणैः कान्तं सीयते तद्गुणैस्तु या ।
वात्सल्यादि गुणैः पूर्णां तां सीतां प्रणतोऽस्म्यहम् ।।

इस प्रकार सीता शब्द स्वादि व क्रयादिगण पठित बन्धनार्थक ?षिञ् धातु से

(''स्वादिभ्यः श्नुः'' पा.सू. ३/१/७३ वा ''क्रयादिभ्यः श्ना'' ३/१/८१) 'श्न' या "श्ना" प्रत्यय कर 'सिनोति' वा 'सिनाति' (बध्नाति, वशीकरोति) स्वगुणैर्भगवन्तं श्रीरामचन्द्रं या इति। अर्थात् जो अपने माधुर्यादि गुणों से प्रभु श्रीराम को वश में कर लेती है। परात्पर का बन्धन महालक्ष्मी स्वरूपा श्री सीता द्वारा ही सम्भव हुआ है। जब भी भगवान् अवतार लेते हैं तब वे सत्त्वबहुला योगमाया का अवलम्ब कर ही अवतीर्ण होते हैं।

वेदान्त दर्शन में ''श्री या सीता'' का स्थान -

वैष्णवों में "श्री तत्त्व" का इतना अधिक महत्त्व है कि वे अपने को भी "श्री" से सम्बद्ध करते हैं तथा उनके बिना वैष्णव साधना भी सम्भव नहीं है, अतः प्रत्येक मंत्र में तथा नाम-जप में सर्वप्रथम "श्री" जी को ही रखा जाता है। रामानुज तथा रामानन्द सम्प्रदाय अपने को "श्री सम्प्रदाय" की संज्ञा से अभिहित करते हैं। इस पर आश्चर्य यह होता है कि वेदान्त में श्री तत्त्व का न तो स्पष्टः उल्लेख प्राप्त होता है और न ही उनका कोई दार्शनिक स्वरूप दृष्टिगोचर होता है। विशिष्टाद्वैत में तीन तत्व ही अनादि तथा नित्य माने गये हैं – ब्रह्म, जीव तथा प्रकृति। अब दार्शनिक समस्या यह है कि इसमें "श्री तत्त्व" का स्थान कहाँ है? तथा 'श्री' को इन तीनों से अतिरिक्त मानने पर सिद्धांत विरोध का प्रसङ्ग होगा। अतः 'श्री तत्त्व' को इन तत्त्वत्रय में से किसी एक के साथ अन्तर्भावित मानना पड़ेगा। उस तत्त्व के अनुसन्धान हेतु प्रत्येक तत्त्व पर विचार अपेक्षणीय है।

कुछ विद्वानों की मान्यता है कि 'श्री' या सीता प्रकृति तत्त्व हैं। शास्त्रों में उन्हें "मूल प्रकृति" सम्बोधन दिया गया है। प्रणव स्वरूप होने के कारण वे प्रकृति शब्द से अभिहित होती है। रामतापिनी के भाष्यकार स्वामी हरिदास यहाँ प्रकृति का अर्थ सांख्य प्रचलित जड़ प्रकृति नहीं मानते। उनके अनुसार प्रकृति पद का निर्वचन इस प्रकार है– ? णु धातु स्तुतिपरक है, प्र. उपसर्ग प्रकृष्ट अर्थ में है, अर्थात् अपने कटाक्षों से जड़ प्रकृति महद् इत्यादि तत्त्वों को उत्पन्न करने के कारण प्रणव स्वरूप है, तथा प्रणव होने "प्रकर्षेण क्रियतेऽनयेति प्रकृतिः" से वह प्रकृति कही जाती है। इस प्रकार यह "मूल प्रकृति" इसलिए कही जाती है कि ब्रह्मा से लेकर स्थावर पर्यन्त समस्त सृष्टि का सृजन इन्हीं के द्वारा होता है।

यहाँ यह स्पष्ट है कि ''प्रकृति'' के शास्त्रीय सन्दर्भों में हम सीता या श्री को नहीं रख सकते, क्योंकि सीता चेतन तथा विभु हैं, जबकि प्रकृति स्वभावतः जड़ है। प्रकृति में परिणाम संभव है, किन्तु सीता नित्य है। स्वामी हरिदास की व्याख्या भी सीता तत्त्व का प्रकृति रूप में प्रतिपादन ब्रह्म की क्रियाशक्ति के रूप में है, सांख्योक्त प्रकृति के अर्थ

में नहीं।

कुछ विद्वान् सीता को जीव कोटि में अनुस्यूत मानते हैं। डॉ. बलदेव मिश्र अपने ग्रन्थ ''तुलसी दर्शन'' में 'सीता' को सिद्ध जीवों की कोटि में रखते हैं। सीता को 'जीव' मानने वालों का तर्क है कि श्रुतियों में केवल एकमात्र ब्रह्म ही विभु, सर्वज्ञ, सर्वशक्तिमान् प्रभृति गुणों से कहे गये हैं, उनके समान तथा उनसे अधिक अन्य किसी तत्त्व का निषेध किया गया है। इसलिए ब्रह्म को छोड़कर शेष चेतन जो भी हैं, वे सभी जीव ही हैं। अतः भगवान् से पृथक् श्री तत्त्व की गणना जीव कोटि में होगी – "श्रीलक्ष्म्याः जीवान्तर्भावे न दोषः" ऐसा कतिपय विद्वानों का मत है।

किन्तु, सीता जी को जीव कोटि में मानने पर, सबसे बड़ी विप्रतिपत्ति यह होगी कि, सीता जी को संसार की उत्पत्ति करने वाला नहीं कहा जा सकता। क्योंकि वेदान्त में नित्य मुक्त जीव को भी जगद्व्यापार में वर्जन किया गया है तथा श्रुतियों में स्पष्टरूप से सीता को जगत् की उत्पत्ति, स्थिति एवं संहारक शक्ति कहा गया है –

श्रीरामसान्निध्यवशाद् जगदानन्ददायिनी ।
उत्पत्तिस्थितिसंहारकारिणी सर्वदेहिनाम् ।।

(रामतापिनीयोपनिषद्/उत्तरार्द्ध/३/३)

उद्भवस्थितिसंहारकारिणी क्लेशहारिणी ।

(रामचरितमानस, बा.कां.)

त्वं माता सर्वलोकानां देवदेवो हरिःपिता ।
त्वयैतद्विष्णुना चाम्ब जगद्व्याप्तं चराचरम् ।।

(विष्णु पुराण/१/१/१२६)

मां विद्धि मूलप्रकृतिं सर्गस्थित्यन्तकारिणीम् ।
तस्य सन्निधिमात्रेण सृजामीदमतन्द्रिता ।।

(अध्यात्म रामायण/१/३४, बा.का.)

इस प्रकार इन सभी शास्त्र प्रमाणों की निरर्थकता का प्रसङ्ग होगा, यदि हम सीता जी को जीव कोटि में मान लेंगे। एवमेव, ईश्वरी सर्वभूतानां (श्रीसूक्त/९) में स्पष्ट रूप से उन्हें सम्पूर्ण भूतों (जिसमें जीव भी सम्मिलित हैं) की स्वामिनी कहा गया है। दूसरी समस्या यह है कि विशिष्टाद्वैत मत में जीव को अणु स्वभाव माना गया है। किन्तु अणु स्वभाव वाली सीता समस्त चराचर जगत् को कैसे व्याप्त कर सकती है। इस प्रकार हम सीता जी को जीव कोटि में नहीं रख सकते।

अब ब्रह्म ही एकमात्र शेष तत्त्व रह जाते हैं। वस्तुतः श्रीविशिष्टाद्वैत मत में सीता या 'श्री' को ब्रह्मस्थानीय माना गया है तथा ब्रह्म के साथ उनकी अभेदता सिद्ध की गई

है। यदि कहा जाय कि श्रुति में तो ब्रह्म को एक और अद्वितीय कहा गया है, अतः सीता को ब्रह्म-स्थानी मान लेने पर द्वैत का प्रसङ्ग होगा, इस प्रकार श्रुतिविरोध होगा। इसका समाधान इस प्रकार से दिया जाता है कि सीता जी अद्वितीय, सच्चिदानन्दघन परब्रह्म श्रीराम की क्रियात्मिका शक्ति है। समस्त जगत् प्रपञ्च का कार्य इन्हीं के द्वारा सम्पादित किया जाता है। सीता जी की सन्निधिवशात् ही उपाधिरहित सत्तामात्र, मन तथा इन्द्रियों के अविषय, आनन्दघन, निर्मल, शांत, निर्विकार, निरञ्जन, सर्वव्यापक, स्वयंप्रकाश परमात्मा को अतत्त्वज्ञ लोग जगत् की उत्पत्ति, स्थिति तथा संहार करने वाला समझ लेते हैं।

वेदान्त में प्रतिपादित ब्रह्म के समस्त ऐश्वर्य नियामक गुण श्री जी में ही विद्यमान हैं। वेदान्त सूत्रों में "जन्माद्यस्य यतः" से श्री या सीता जी का ग्रहण भी हो जाता है। क्योंकि ब्रह्म तथा उसकी ब्राह्मी शक्ति में अभेद है। शक्ति का आश्रय शक्तिमान् होता है। यथा– 'राम' नामक व्यक्ति की बुद्धिमत्ता, नीतिपरायणता, धनवत्ता प्रभति गुण उससे पृथक् नहीं हैं। जब हम 'राम' नाम से उस व्यक्ति का सम्बोधन या आह्वान करते हैं तो साथ ही साथ उसकी शक्ति या गुणों का आह्वान स्वयमेव हो जाता है। उसी प्रकार 'भग' (ज्ञान-बल-ऐश्वर्य-वीर्य आदि) से परिपूर्ण प्रभु ही भगवान् नाम से अभिहित होते हैं। ये छः गुण लक्ष्मी या श्री के निवास स्थल हैं, जिससे वह भगवती कही जाती हैं।

स्वामी रामानुजाचार्य भी गुणस्वरूप से लक्ष्मी तथा नारायण में अभेदता स्थापित करते हैं–

"भगवन्नारायणाभिमतानुरूप-गुणविभवैश्वर्यशीलाद्यनवधिकातिशय-असंख्येय कल्याणगुणगणाम्, पद्मावनालयाम्, भगवतीम्, श्रियम्, देवीम्, नित्यानपायिनीम्, निरवद्याम्, देवदेवदिव्यमहिषीम् ...।" (शरणागतिगद्य)

स्वामी रामानन्द भी इससे सहमत थे। श्री वैष्णवमताब्जभास्कर में उन्होंने 'मता' शब्द से पुरुषकार स्वरूप श्रीसीता जी का श्रीरघुनाथ जी से नित्य सम्बन्ध कहा है – "मतापुरुषकारस्य नित्यं सम्बन्ध उच्यते" (वै.म.भा., श्लो. ३६)। यथैव, प्रभु जिस प्रकार से समस्त चेतनाचेतन तत्त्वों के नियन्ता हैं, उसी प्रकार श्री जी भी चराचर जगत् की नियंत्रिका हैं। जिस प्रकार भगवान् का स्वरूप, स्थिति एवं प्रवृत्ति अन्य किसी के अधीन नहीं हैं, वैसे ही सीता जी भी सर्वथा स्वतंत्र हैं। यहाँ यह ध्यातव्य है कि सीता जी भगवान् की नियाम्या अथवा ईशितव्या नहीं हैं तथा भगवान् भी सीता के सर्वनियन्तृत्व से नियाम्य तथा ईशितव्य कोटि में नहीं आते। अपितु कुछ सीमा तक सीता जी का नियन्तृत्व भगवदाधीन हैं, क्योंकि शक्ति शक्तिमान् के अनुशासन में रहती है। फिर भी, सीता जी की ईश्वरता पूर्ण है।

रामानन्दी विद्वान् श्री अवधकिशोरदास जी कहते हैं – वेदान्त में ब्रह्म तत्त्व प्रतिपादक प्रकरणों में श्रीतत्त्व का स्पष्ट उल्लेख न होने से यह न समझ लेना चाहिए कि श्रीरहित ब्रह्मतत्त्व उपास्य है। वहाँ यही समझना चाहिए कि ब्रह्मविद्या ने श्रीतत्त्व का अन्तर्भाव भगवत्तत्त्व में ही कर लिया है। श्रीगुणरत्नकोशकार भट्टारक स्वामी के अनुसार – "तदन्तर्भावानां न पृथगमभिधत्ते श्रुतिरपि" अर्थात् श्रुति ने श्रीतत्त्व को ब्रह्मतत्त्व में अन्तर्भाव कर लेने के कारण ही उन स्थानों पर पृथक् उल्लेख नहीं किया है।

निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है कि सीता जी भगवान् की नित्य आह्लादिनी शक्ति हैं, जो ब्रह्म स्थानी हैं। अर्थात् ब्रह्म से अपृथक् हैं तथा उनका निवास ब्रह्म की देहयष्टि है। किन्तु सृष्टि अवस्था में वह ब्रह्म से पृथक् हो जाती हैं, यही माया या मूलप्रकृति शब्द से सम्बोधित होती है। यह माया या मूलप्रकृतिरूपा 'श्री' अपने को दो भागों में विभाजित कर देती है – एक विद्या, दूसरी अविद्या। विद्या माया आनन्दस्वरूप वाली है जो ब्रह्म से कभी भी पृथक् नहीं होती तथा मुक्तिभागीय जीवों को यही विद्या माया व्याप्त करती है अर्थात् मोक्ष या भगवत्-सायुज्य प्रदान करती है, इसलिए यह ज्ञान, ऐश्वर्य तथा आनन्दपरक है। किन्तु बद्ध जीव अविद्या माया से व्याप्त होते हैं , जिससे वे अपने कर्मानुसार सुख-दुःख भोगते हैं तथा इस संसाररूपी महार्णव में डूबते-उतराते रहते हैं। यह अविद्या माया ही संसार की प्रवर्त्तिका है, क्योंकि इसके प्रभाव से विमोहित जीव नाना प्रकार के शुभाशुभ कर्म करता है जिसके फलस्वरूप वह बारम्बार संसारचक्र में बद्ध होता है। यहाँ विद्या तथा अविद्या की तुलना हम महर्षि पतञ्जलि के क्लिष्ट तथा अक्लिष्ट वृत्तियों से कर सकते हैं– "वृत्तयः पञ्चतया क्लिष्टाऽक्लिष्टाः" (पतंजलि योगसूत्र १/५)। क्लेशों से उत्पन्न होने वाली तथा कर्मसंस्कार समूहों को उत्पन्न करने वाली वृत्तियाँ ही क्लिष्ट हैं, जो भवचक्र की हेतुभूता हैं तथा विवेकख्यातिविषयक (ब्रह्मज्ञान या आत्म ज्ञानविषयक) गुणों (सत्व, रजस, तमस्) के कार्य की विरोधिनी वृत्तियाँ ही अक्लिष्ट हैं। इस प्रकार क्लिष्ट वृत्ति अविद्या मायाजन्य है जबकि अक्लिष्ट वृत्ति विद्या माया प्रसूत है।

विद्या माया के सहारे तो सृष्टि, स्थिति और प्रलय का चक्र चला करता है और अविद्या के सहारे नियति का चक्र प्रवहमान है। माया की विद्या शक्ति संसार लीला के प्रवर्तन के लिए आवश्यक है। उसकी अविद्या शक्ति जो दुष्ट और दुःखरूप कही गई है, आनन्द का स्वारस्य स्पष्ट करने के लिए विपर्यय का काम देती है। जो अति आतप से व्याकुल होता है वही तरु छाया का सच्चा सुख प्राप्त कर सकता है। जो मोहमुग्ध होकर अशान्त बनेगा ही नहीं वह शान्ति का पूर्ण आस्वादन कैसे कर सकता है?

अतएव भगवान् की लीला में अविद्या माया की विशिष्ट उपयोगिता है–

जो अति आतप व्याकुल होई । तरु छाया सुख जानइ सोई ।।
जो नहिं होत मोह अति मोहीं । मिलतेऊँ तात कवन विधि तोहीं ।।

(श्रीरामचरितमानस, उ.कां./६८(ख)दो.)

इस प्रकार माया ईश्वर की शक्ति सिद्ध होती है, वही शक्ति ही श्री या सीता हैं। यद्यपि आद्य शङ्कराचार्य ने माया को मिथ्या न कहकर, अनिर्वचनीय कहते हैं। अर्थात् वह जो कुछ भी है, हम उसको ठीक-ठीक नहीं जान सकते। शङ्कर माया निर्मित जगत् की व्यावहारिक सत्ता को तो सत्य मानते हैं, किन्तु पारमार्थिक सत्ता को स्वीकार नहीं करते। ऐसा मानने पर द्वैतवाद का प्रसङ्ग होगा। इस संसार की अनुभूति अज्ञान की दशा में जैसी होती है उसी के अनुरूप हमारे व्यवहार होते हैं। किन्तु ज्ञान की दशा में या पूर्ण बोधप्राप्ति के अनन्तर हमारा व्यवहार पूर्ववत् (अज्ञान की दशा वाला) न होकर परिवर्तित हो जाता है। अतः माया को पारमार्थिक रूप से आचार्य शङ्कर मिथ्या कह देते हैं। परन्तु मौनरूप से ब्रह्म की उस शक्ति का समर्थन स्वयं करते दिखाई देते हैं, जब वे शक्ति की उपासना करते हैं –

शिवः शक्त्या युक्तो यदि भवति शक्तः प्रभवितुं
न चेदेव देवो न खलु कुशलः स्पन्दितुमपि ।
अतस्त्वामाराध्यां हरिहरविरञ्चादिभिरपि
प्रणन्तुं स्तोतुं वा कथमकृतपुण्यः प्रभवति ।।

(सौन्दर्य लहरी, पूर्वार्द्ध, श्लो. १)

शङ्कराचार्य की इस समस्या का समाधान विशिष्टाद्वैत मत ने विद्या तथा अविद्या माया के इन दो रूपों को मानकर कर दिया। वस्तुतः अद्वैतमत से वैष्णव मतों की विशिष्टता इस शक्ति स्वरूप को लेकर ही है। इसी से जगत् की सत्यता, जीव की सत्यता तथा नित्यता स्वयमेव सिद्ध हो जाती है। शेष बातों में तो रामानुज शङ्कर सदृश ही प्रतीत होते हैं। क्योंकि अद्वैतता तो उन्होंने भी स्वीकार की है किन्तु विशिष्टता के साथ और उनकी विशिष्टता यही श्री या लक्ष्मी तत्त्व है। रामानुज के इस मत का दूरगामी प्रभाव हरिभक्ति पर पड़ा। जिससे कालान्तर में शाङ्करमतानुयायी चैतन्य महाप्रभु, मधुसूदन सरस्वती प्रभृति विद्वानों ने भक्ति को ही हरिप्राप्ति के समस्त साधनों में न केवल श्रेष्ठ कहा अपितु एकमात्र भक्ति से ही मुक्ति सम्भव है यहाँ तक कह दिया। मधुसूदन ने तो भक्ति को परम पुरुषार्थ माना, जिसके समक्ष मोक्ष भी लघुता को प्राप्त हो गया।

अतः सीता या श्री तत्त्व का वेदान्त में महत्त्वपूर्ण स्थान है, जिसके अभाव में जगत् प्रपञ्च का विस्तार ही असम्भव है। इन्हीं सीता तत्त्व से आगे चलकर रामानन्द सम्प्रदाय में सखी भाव की साधना प्रचलित हुई जिससे भक्तों ने सीता जी से सखी के रूप में अपना सम्बन्ध स्थापित करके, भगवान् की आराधना प्रारम्भ कर दी।

सन्दर्भ ग्रन्थ

१. शतपथ ब्राह्मण
२. रामचरितमानस
३. श्रीरामार्चन पद्धति
४. नारद पाञ्चरात्र
५. वाल्मीकि रामायण
६. श्री वैष्णवमताब्जभास्कर
७. रामतापिनीयोपनिषद्
८. विष्णु पुराण
९. अध्यात्म रामायण
१०. श्रीसीता स्तोत्र सुधासागर
११. पातञ्जल योगसूत्र
१२. सौन्दर्यलहरी
१३. श्रीदुर्गासप्तशती

अभिनव रामानंदः स्वामीरामनरेशाचार्य

प्रो. शुकदेव सिंह

तेरहवीं-चौदहवीं शताब्दी के बीच विद्यमान रहने वाले स्वामी रामानन्द गोरखनाथ के बाद दूसरे प्रसिद्ध नायक हैं। 'जोगी गाथाओं', 'गोष्ठी', 'बोधसागरस्त्रोत' और 'ज्ञानतिलक' नाम से लिखी जाने वाली तमाम साम्प्रदायिक पोथियों में गोरखनाथ सर्वत्र विद्यमान हैं। उन्हीं को जीतकर उनसे हारकर आठवीं से लेकर तेरहवीं शताब्दी के तमाम धर्म सम्प्रदाय खड़े होते रहते हैं। ऐसी साम्प्रदायिक पोथियों की संख्या हजारों-हजारों हैं। इसके अतिरिक्त लोक गाथाओं, गोपीचन्द, भरथरी, सारंगा, सदावृज, विहुला, विसहरी जैसी गाथा गेय परम्पराओं में भी गौरवनाद उपस्थित होते हैं। सूफियों और नाथों सिद्धों और सन्तों के बीच गोरखनाथ एक चुनौती हैं, एक संयोजक कड़ी हैं। ठीक गोरखनाथ के तरह ही स्वामी रामानन्द एक ऐसे सन्त महात्मा हैं, जो पारम्परिक साधना और श्रमजीवी सन्त साधना दोनों के विनियोजक जान पड़ते हैं। स्वामी रामानन्द वह सेतु हैं, जिनसे भक्त और सन्त जुड़ते हुए दिखायी पड़ते हैं। श्रमजीवी गृहस्थ साधकों और विरक्त तितिक्षा प्राप्तकों को साधना, तितिक्षा, त्याग और तटस्थता के कारण सम्भवतः रामानन्द समान तरह की प्रतिष्ठा देते हैं। इसलिए नाभादास से लेकर दूसरे सन्तों द्वारा लिखित-सम्पादित भक्तमालों, अनन्त दास की परिचयियों, जनम-साखों, संवादों, गोष्ठियों, बोध सागर ग्रन्थों और स्त्रोत-रचनाओं में रामानन्द नियामक और कर्त्ता के रूप में उपस्थित हैं। उनका शंख सत्य की रक्षा के लिए बजता रहता है और वे उदारतापूर्वक चरित्रगत वैरागी को महत्त्व देते हुए गृहस्थ और गृहत्यागी दोनों प्रकार के अच्छे मनुष्यों को गौरवान्वित करते हैं। अनेक सन्तों की जन्मान्तर गाथाओं के नियामक के रूप में ही उनका बार-बार स्मरण किया गया। 'प्रबन्ध-पारिजात' नामक ग्रन्थ में हिन्दू, मुसलमान, सूफी, शूद्र, राजा, इत्यादि की अनुश्रुतियों को जिस तरह एकत्र किया गया है, उससे यह अंदाज लगाया जा सकता है कि स्वामी रामानन्द सन्तनायक ही नहीं, जन-नायक भी थे। वे जितने बड़े स्रष्टा थे, चमत्कारी थे, सिद्ध और प्रसिद्ध थे, उतने बड़े संतुलन विनायक भी थे। उन्होंने धर्मों और सम्प्रदायों को तरह-तरह से जोड़कर एक उदार मंच की स्थापना की थी, साधुता और कविता, उपदेश और शास्त्राचार को एक ही रागात्मक भूमिका में प्रत्यक्ष कराने का प्रयत्न किया था। कबीर, रैदास, पीपा, सेन नाई, जैसे लोक-जीवन से जुड़े हुए सन्त

छुटपन में बड़प्पन को विकसित करने वाले साधक उनके शिष्य-मण्डल के सदस्य के रूप में स्मरण किए गए हैं। यद्यपि इन सन्तों ने अपनी रचनाओं में अपने गुरु के रूप में उनका नाम नहीं लिया, लेकिन इन सन्तों से जुड़ी हुई तमाम लोकश्रुत गाथाओं में उन्हें रामानन्द से सम्बद्ध किया गया है। यदि वे दीक्षित शिष्य होते, गुरु के रूप में उनका स्मरण करते जब उन्हें रामानन्द का शिष्य कहा जाता, तो कोई बड़ी बात नहीं थी, लेकिन सन्तों के अन्तर्साक्ष्य के अभाव में जन साहित्य का साक्ष्य कबीर, रैदास क़ो यदि रामानन्द का शिष्य स्थापित कर देता है, तो यह अन्दाज करना पड़ेगा कि स्वामी रामानन्द की ऊँचाई कितनी थी। साधारण गुरु का कोई महान् शिष्य हो सकता है, लेकिन कबीर और रैदास जैसे महान् सन्तों, कवियों और लोक उन्नायकों को रामानन्द से भक्तमालों और प्राचीन ग्रन्थों जैसे साहित्य इतिहासों में जोड़ना, यह सिद्ध करता है कि रामानन्द का व्यक्तित्व इतना बड़ा था कि किसी भी महिमा मण्डित चरित्र को उनसे सम्बद्ध किया जा सकता था। उनसे कई सौ वर्षों बाद पैदा होने वाले तुलसीदास को भी रामानन्द से संबद्ध किया जाता रहा है। लेकिन आश्चर्य की बात है कि स्वामी रामानन्द का विशाल आनन्द मठ और श्रीमठ ऐतिहासिक रूप से प्रायः लुप्त हो गये। स्वामी रामानन्द का वह विशाल वन, जिसमें हजारों संन्यासी रहते थे, सैकड़ों सूफी, पचासों सन्त, फकीर, जंगम, जोगड़े, नाथ-पंथी रहा करते थे, वहाँ लोगों के घर हैं, मस्जिदें हैं, तरह-तरह के पड़ाव हैं, गलियाँ हैं, दुकाने हैं। पंचगंगा घाट पर श्रीमठ के रूप में बहुत जरा- सी पुण्य-भूमि बची हुई है। अभी आठ-दस वर्ष पहले तक यह जगह इतनी नगण्य थी कि पुस्तकों में बार-बार उल्लिखित होने वाले रामानन्द के कर्मक्षेत्र श्रीमठ के स्वरूप को देखकर करुणा उत्पन्न होती थी, लज्जा आती थी। अब भी जो कुछ दिखाई पड़ रहा है, उससे उस विराट् व्यक्तित्व की, जिसमें कबीर और रैदास भी समा जाते हैं, कल्पना भी नहीं की जा सकती। कबीर के नाम पर हजारों मठ हैं, लाखों साधु हैं। अरबों की सम्पत्ति है। कबीर को बाँटने के लिए ५ से लेकर १२८ तक मोटे-मोटे सम्प्रदाय और उपसम्प्रदाय बन चुके हैं। लेकिन इस कबीर के गुरु रामानन्द के मूल स्थान को देख कर यह पता ही नहीं चलता कि स्वामी रामानन्द का यह हस्र कैसे हुआ।

यह संयोग है कि इन दिनों श्रीमठ पर जिस तेजस्वी सन्त को पीठासीन किया गया है, वे युवक होते हुए भी रामानन्द की प्रतिमूर्ति जान पड़ते हैं। उनकी कल्पनाएँ, उनका ज्ञान, उनकी वाग्मिता और सबसे अच्छी उनकी उदारता और संयोजन चेतना ऐसी है कि यह विश्वास किया जा सकता है कि स्वामी रामानन्द का व्यक्तित्व कैसा रहा होगा। स्वामी रामानन्द की पुस्तकों को देखकर प्रामाणिकता या अप्रामाणिकता के पचड़े से अलग ऐसा नहीं लगता कि वे कोई विशिष्ट दार्शनिक स्रष्टा या बहुत बड़े

ग्रन्थकार थे, वे भाष्यकार थे, लेकिन उनकी संयोजन क्षमता अद्भुत थी। वर्त्तमान आचार्य रामनरेशाचार्य १९५२ ई. में जन्में, मूलतः बिहार निवासी हैं और कुँवर सिंह के इलाके के रहने वाले हैं। इनकी किशोरावस्था गाँव में ही बीती है। लेकिन साधु मनोवृत्ति के कारण वे किशोरावस्था में दीक्षित हो गये। उन्होंने विधिवत् संस्कृत शिक्षा पायी। छः दर्शनों में उच्चतम उपाधियाँ अर्जित कीं और न्याय-शास्त्र के उद्भट विद्वान् के रूप में युवावस्था में ही प्रतिष्ठित हो गए। मुझे लगता है कि यह पाण्डित्य रामनरेशाचार्य का साधुकर्म मात्र है, उनके लिए सम्भवतः विद्वान् होना गौण बात है, क्योंकि विद्वान् तो विश्वविद्यालयों और साधना स्थलों में मिल ही जाते हैं। उन्होंने स्वामी रामानन्द की तरह संयोजन का संकल्प लिया है। भजन करने, भण्डारा खिलाने या साधुओं, गृहस्थों से पूजित होने के लिए वे श्रीमठ नहीं आये हैं। वे रामानन्द और वर्तमान काल के बीच एक सार्थक कड़ी के रूप में सक्रिय हैं। उन्होंने थोड़े ही दिनों में इतनी सूचनाएँ संग्रहीत की हैं, जो बड़ी विस्मयकारी हैं। रामनरेशाचार्य जी का कहना है कि 'श्रीमठ सगुण-निर्गुण रामोपासकों का श्रद्धेय स्थान है और वैरागी सन्तों की मूल गादी है। इस मठ की इस देश में लाखों इकाइयाँ हैं। केवल बनारस में ही १०० से ज्यादा रामानन्दी मठ या आश्रम विद्यमान हैं। बिहार में प्रायः बीस हजार वैरागी आश्रम हैं, जो रामानन्द की परम्परा से जुड़े हुए हैं। यह सच है कि इन सारे वैरागी आश्रमों में उपास्य की एकता है। पंच संस्कारों में समानता है। सभी भगवान् राम को और राम-नाम को उपासना की वस्तु मानते हैं और मुद्रा, तिलक, नाम मंत्र और तुलसी की माला के द्वारा संस्कृत होते हैं। सिद्धान्त और सदाचार की दृष्टि से रामानन्द के अनुयायियों में एकता और एकरूपता है। कबीर पंथियों की तरह उनमें शाखाएँ, उपशाखाएँ नहीं हैं। सभी रामानन्दी वैरागियों में तीर्थ स्थलों के एक निश्चित समूह पर कृत श्रद्धा हैं। सामाजिक व्यावहारिक मान्यताओं में भी रामानन्दी वैरागी परस्पर अभिन्न हैं। व्यवस्था की दृष्टि से रामानन्दी वैरागियों में आध्यात्मिक सम्बद्धता है। इस समय सारे आश्रमों के बीच व्यवस्था और प्रशासन सम्बन्धी नियंत्रण शिथिल हो चुका है। यद्यपि श्रीमठ की महिमा के प्रति सबके मन में आदर है, तथापि सबके ऊपर का श्रीमठ का आध्यात्मिक वर्चस्व रहते हुए भी व्यवस्था सम्बन्धी नियंत्रण नहीं है।

रामानन्दी वैरागियों का एक विशाल समाज है, पहले सभी वैरागी श्वेत वस्त्र धारण करते थे। घुटने तक अचला और बिना सिला हुआ वस्त्र उनके आच्छादन थे। क्रमशः अचला घुटने से नीचे आता चला गया और अब रामानन्दी वैरागी सिला हुआ वस्त्र भी पहनने लगे हैं। परिवर्तन के प्रक्रिया में यह अनुभव किया गया कि स्वामी रामानन्द गैरिक वस्त्रधारी थे। इसलिए अब वैरागियों में गैरिक वस्त्र का भी प्रचलन हो गया है। वैरागी त्रिदण्डी होते हैं और उनके तीनों दण्ड ब्रह्म जीव और जगत् के प्रतीक

होते हैं। स्वामी रामनरेशाचार्य ने बताया कि रामानन्द सम्प्रदाय में रामतापनी उपनिषद्, ब्रह्मसूत्र गीता और उपनिषदों का भाष्य ग्रन्थ "आनन्द-भाष्य" है। जो प्रमाणिक धर्मग्रन्थ माने जाते हैं। इसके अतिरिक्त मंत्र-रामायण, अर्चा गुणगान, वैष्णवमताब्जभास्कर, रामार्चन पद्धति, विशिष्टाद्वैत-दर्शन, जानकी भाष्य और बाल्मीकि रामायण को आर्ष ग्रन्थ के रूप में प्रतिष्ठा प्राप्त है। स्वामी रामनरेशाचार्य की ग्रन्थसूची में हिन्दी ग्रन्थों के नाम नहीं आते, लेकिन कभी बातचीत में उन्होंने बताया था कि रामानन्दी वैरागियों में तुलसीकृत रामचरितमानस, बाल्मीकि रामायण से अधिक लोक प्रचलित और पाठन-वाचन की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण होता जा रहा है। ऐसा लगता है कि जब से अन्त्यज जातियों ने अपने को बाल्मीकि से जोड़ना शुरू किया रामानन्दी बैरागियों में बाल्मीकि की महत्ता में कुछ कमी आयी है। वैसे भी हमारा राष्ट्रीय तंत्र तुलसी की जयंती तो मनाता है, लेकिन आदि कवि बाल्मीकि की कोई जयन्ती नहीं मनायी जाती। वैरागियों में जाति-पाँति तो नहीं पूछी जाती, लेकिन गुप्त रूप से वैरागियों में ब्राह्मण बड़ा है। वर्तमान आचार्य इस स्थिति को निरापद और गतिशील नहीं मानते, वे बाल्मीकि का महत्त्व स्वीकार करते हैं और कबीर के साथ संत रैदास के महत्त्व को वैरागी सम्प्रदाय में स्थापित करने के लिए कृतसंकल्प जान पड़ते हैं उन्होंने तय कर लिया है कि वे रामानन्दी वैरागियों के बीच एकसूत्रता और सामाजिक सम्बन्ध स्थापित करेंगे और संन्यासियों से वैरागियों की जो दूरी है, उसे समझने-समझाने का प्रयत्न करेंगे। त्रिदण्डधारी, शैव संन्यासी उर्ध्वपुण्ड्र नहीं धारण करते, श्मशान की विभूति रचते हैं लेकिन ब्राह्मण के सिवाय किसी को भण्डारे में प्रवेश करने नहीं देते। संन्यासी नियमतः अग्नि का स्पर्श नहीं करते, इसलिए साधारणतः मधुकरी जीवी होते हैं। वैरागी, परिश्रमी होते हैं, सामान्यतः शिक्षाजीवी नहीं होते। इसलिए रामनरेशाचार्य जी चाहते हैं कि रामानन्दी वैरागी समाज लौकिक तथा आध्यात्मिक उन्नति के लिए रामानन्द जी द्वारा निर्दिष्ट विचार सूत्रों का उदारता के साथ प्रचार करें अर्थात् हरिजन, आदिवासी, राम-नाम की महत्ता में विश्वास करने वाले मुसलमान को भी धर्मबन्धु मानें। जैसा स्वामी रामानन्द जी ने किया। वे चाहते हैं कि संस्कृत शिक्षा का विकास हो जिससे प्राचीन विद्या और साधु ज्ञान सुरक्षित रहे। वे स्वामी रामानन्द के सम्प्रदाय से सम्बन्धित साहित्य का प्रकाशन चाहते हैं। स्वामी रामानन्द ने सिखाया था कि कर्म के प्रति उदासीनता नहीं होनी चाहिए इसे वर्तमान आचार्य भी चाहते हैं कि रामानन्द के अनुयायी भिक्षाजीवी न बनें समाज को परिवर्तित करने के लिए उदार अवश्य बनें।

स्त्रियों के सम्बन्ध में वर्त्तमान पीठासीन आचार्य जो कुछ कहते हैं, वह वैरागियों की पारम्परिक सोच जान पड़ती है। वे मानते हैं कि समाज के सभी लोगों को समान-

स्तर नहीं दिलाया जा सकता। सबकी योग्यताएँ भिन्न हैं। स्त्रियों की समानता को भी इसी परिप्रेक्ष्य में देखा जा सकता है। वे कहते हैं कि स्त्रियों को यदि समानता का दर्जा प्राप्त हो सके और उससे समाज की सार्वभौम प्रतिष्ठा बढ़े, तो मैं इस समानता का पक्षधर हूँ, लेकिन उन मूल्यों पर भी विचार करना चाहिए, जिसके कारण महिलाओं को समानता का दर्जा प्राप्त नहीं हुआ, उन मूल्यों का विश्लेषण जरूरी है। समाज ने यथावसर महिलाओं को समानता ही नहीं, सर्वोच्चता भी दी है। मन्दिरों में राम के साथ सीता, श्रीकृष्ण के साथ राधा समान पूज्यता के साथ स्थापित हैं। इसी तरह दुर्गा, लक्ष्मी की स्वतंत्रत पूज्यता इस धर्म में स्वीकृत है। स्वामी रामानन्द ने ईश्वर भक्ति के क्षेत्र में स्त्रियों को समानता देने का द्वार मुक्त कर रखा था। उनके प्रधान शिष्यों में पद्मावती एवं सुरसरी इसी तथ्य की उद्भाषिका है।

स्वामी रामनरेशाचार्य में अपार उत्साह है। रामानन्दी वैरागी उत्साहों के साथ आधुनिक जीवन की तेजस्विता की पहचान भी उनमें है। देखना होगा कि वे परम्पराओं और रूढ़ियों को किस सीमा तक स्वामी रामानन्द के मूल आदर्शों से जोड़ पाते हैं। यदि वे जोड़ पाए तो तमाम तरह की श्रुति-गाथाओं में बिना सम्प्रदाय में दीक्षित हुए अनेक महत्त्वपूर्ण लोग उनके नाम और काम से जोड़ दिए जाएँगे या जुड़ जाएँगे।

धर्म के सम्बन्ध में स्वामी रामनरेशाचार्य का दृष्टिकोण पारम्परिक और शास्त्रीय जान पड़ता है। क्योंकि अपनी बातचीत में वे मोक्ष, शोक ज्वर, दुःख की पहचान शान्ति इत्यादि का बार-बार उल्लेख करते हैं। वे इस बात से उदासीन जान पड़ते हैं कि धर्म का एक आक्रामक पक्ष भी है और धर्म एक स्तर पर आदमी या समाज के घटकों को अलग और अकेला भी करता है। वे इन विचारकों से तनिक भी प्रभावित और विचलित नहीं जान पड़ते, जो धर्म को नशा कहते हैं। युवक होते हुए भी रामनरेशाचार्य में एक प्रौढ़ साधु जैसी गम्भीरता है और अविषय को टाल जाने का साधु कौशल है। वे संवाद और बहस में न जाकर आस्था और विश्वास की डोर को पकड़ना-पकड़ाना चाहते हैं। वे मानते हैं कि धर्माचरण से चित्त को एकाग्रता की प्राप्ति होती है।

श्रीरामनरेशाचार्य साम्यवाद और समाजवाद के सम्बन्ध में आधुनिक विचारकों से असहमत जान पड़ते हैं। वे मानते हैं कि बाहरी मूल्यों के आधार पर साम्यवाद की स्थापना नहीं हो सकती। धर्म और अध्यात्म के सूत्र में पिरोकर ही समाज को वास्तविक रूप से साम्यवादी धरातल पर खड़ा किया जा सकता है, ऐसा वर्त्तमान पीठासीन आचार्य का स्पष्ट मत है। वे इतिहास की ओर जाते हैं और कहते हैं कि धर्म की ऊँचाई और नीचाई के बावजूद पुराने जमाने में परस्पर प्रीति की धारा बहा करती थी। सब लोग परम शान्ति का अनुभव करते थे और श्रीराम के चरणों में परम प्रेम के कारण

विषमताएँ विघटन के बदले संगठन, अशान्ति के बदले शान्ति, संघर्ष के बदले सहयोग, शोषण के बदले पोषण प्रदान करती थी। उन्होंने श्रीरामचरितमानस का उदाहरण दिया कि 'सब नर करहिं परस्पर प्रीती, निज निज कर्म निरत श्रुति नीती।

देश के अछूतों और दलितों के विषय में स्वामी रामनरेशाचार्य का दृष्टिकोण भावात्मक है। वे कहते हैं कि देश के अछूत और दलित इन दोनों के प्रति उन सभी व्यवहारों का आदर करता हूँ, जिन्हें स्वामी रामान्द ने अपनाया था। अछूतों के विषय में रामानन्दी वैरागियों ने अपने मूल आचार्य स्वामी रामानन्द की भावनाओं को विकृत कर दिया है। वे मानते हैं कि दलितों के सम्बन्ध में वैरागी सम्प्रदाय का वर्त्तमान दृष्टिकोण बदल जाना चाहिए, वे इसके लिए कृतसंकल्प हैं। लेकिन इसके साथ ही वे यह भी कहते हैं कि व्यावहारिक क्रम में अछूत भावना की जड़ें पातालस्पर्शी हैं, शाकाहारी ब्राह्मण मांस-मदिरा भक्षी सहोदर भाई से ही घृणा करता है, उसे अछूत समझने लगता है, आर्थिक रूप से सम्पन्न होने पर तथाकथित छोटी जातियों के लोग भी विद्वानों को अछूत समझने लगते हैं, अछूत भी दूसरी तरह के अछूतों को अपने से छोटा और अपनी तुलना में अछूत समझते हैं। उनका तो यहाँ तक कहना है कि हर आदमी अपनी तुलना में आर्थिक रूप से विपन्न, रूप-रंग में साधारण व्यक्ति के प्रति अछूत भावना रखता है। दर असल हमें उस घृणा से मुक्त होना है, जो परम्पराओं से भारतीय चरित्र का लक्षण बन चुकी है। अन्ततः रामनरेशाचार्य एक सन्त की तरह यह भी कहते हैं कि ज्ञान-और भक्ति की दिशा में उच्चता प्राप्त करके ही दलितों के प्रति हीन भावना को मिटाया जा सकता है, संविधान और कानून की सहायता से प्रजातीय चरित्र में निहित घृणा नहीं समाप्त हो सकती। उनका कहना है कि पुस्तक लिखने, विचार-प्रचार करने या आन्दोलन के स्तर पर चरित्रगत घृणा को समाप्त करने का आवाहन कितना भी हुआ, वह बहुत कम है। लोग दलितों के उद्धार के बजाय अपने महत्त्व की स्थापना में ही लग जाते हैं। वैचारिक रूप से प्राचीन काल में भी कुत्ते से लेकर चाण्डाल के प्रति समदर्शी होने का सिद्धान्त बताया गया था। स्वामी रामानन्द जी ने रामभक्ति रूपी गंगाजल से रविदास, कबीर और सेन नाई इत्यादि का अछूतपना धोकर परम मंगलमय बनाया था। रामभक्ति रूपी गंगाजल की आज भी अछूतोद्धार प्रसंग में एवं दलितों के दलन निवारण प्रसंग में परम उपयोगिता सिद्ध हो सकती है, जिससे वर्त्तमान दलितोद्धारकामी सर्वथा दूर हैं।

•

स्वामीरामनरेशाचार्य : रामावत सम्प्रदाय के नव्य आलोक

डॉ. उदयप्रताप सिंह

स्वाधीनता का नव प्रभात भारतीय आकाश में मात्र स्वर्णिम रश्मियों का प्रस्फुटन ही नहीं किया था अपितु कुछ ऐसे जाज्वल्यमान नक्षत्रों का प्रादुर्भाव भी किया जिनसे सम्पूर्ण आध्यात्मिक जगत् आलोकित हो उठा। ईस्वी सन् की बीसवीं शती का मध्य भाग कतिपय इन्हीं प्रकार की विभूतियों से सम्पन्न दिखायी पड़ता है। सन् १९५१ ई. में इसी समय बिहार प्रांत के भोजपुर जिलान्तर्गत 'परसिया' ग्राम में श्रीकृष्ण शर्मा नामक जातक जन्म लेता है। बिहार की भूमि के लिए यह कोई अपूर्व घटना नहीं थी। इस पवित्र भूमि पर सहस्रों वर्षों पूर्व से धर्म और दया के दीप जलते रहे हैं। जैन पंथ के चौबीसवें तीर्थंकर महावीर स्वामी ने ईसा से प्रायः छह सौ वर्ष पूर्व सम्पूर्ण जगत् को प्रेम, अहिंसा और करुणा का पाठ बिहार की भूमि पर ही पढ़ाया था। उनके अनंतर भगवान् बुद्ध ने अपनी मानवोन्मुखी साधना की सिद्धि इसी भूमि पर सम्पन्न की थी। मनीषी आचार्य चाणक्य ने अर्थशास्त्र, नीतिशास्त्र तथा युद्धशास्त्र का प्रारूप इन्हीं गणराज्यों में प्रथमतः प्रसारित किया था। जैनपंथ के चौबीस तीर्थंकरों में अट्ठारह इसी भूमि से आते हैं। बौद्ध धर्म को भारत में अप्रभावी बनाने का महाअभियान संचालित करने वाले आद्य शंकराचार्य के चार शिष्यों में मंडन मिश्र यहीं के निवासी थे। शेष तीन दक्षिण भारतीय। पराक्रमी और धर्मनिष्ठ चन्द्रगुप्त तथा अशोक महान जैसी विभूतियों ने अपने कर्म तथा धर्मपथ की अमिट छाप इसी भूमि पर सदियों वर्ष पूर्व अंकित किया था। स्वामी रामानंद ने १४वीं-१५वीं शती में सनातन राष्ट्रीय धर्म की रक्षा के लिए जिन बैरागी साधुओं की भारतव्यापी धर्मसेना सुसज्जित की थी उनमें बिहार स्थित दरभंगा और मिथिला महत्वपूर्ण केन्द्र थे। अयोध्या, चित्रकूट तो प्रमुख केन्द्र थे ही। बिहार के अन्य भूभागों में वैष्णवता का व्यापक प्रसार आज भी दिखायी पड़ता है। साधु संतों की जमात तथा रामलीला करने वाले की समूहों (मंडली) सर्वाधिक संख्या आज भी बिहार में दिखायी पड़ती है। आश्चर्य नहीं कि इन समस्त संस्थाओं और धार्मिक आस्थाओं की गर्भनाल पंचगंगा (काशी) से जुड़ी हुई है। गणतंत्र की प्रथम किरण का प्रस्फुटन लिच्छवि तथा वज्जीगणराज्यों के राजपूतों में प्रथमतः यहीं दिखायी पड़ता है।

कालांतर में वही सभ्यतम एवं अद्यतन समाज की शासन प्रणाली बना जिसे आज लोकतांत्रिक व्यवस्था के नाम से जाना जाता है। इसी भूमि पर १८५७ ई. के प्रथम स्वातंत्र्य समर में बाबू कुँवर सिंह ने अपनी असिधार को इस सीमा तक पैनी बनाया कि गोली बारूद का प्रयोग करने वाली फिरंगियों की सेना के दाँत खट्टे हो गये। स्मरणीय है कि उस समय बाबू कुँवर सिंह की अवस्था ८० वर्ष की थी। उनके पराक्रम की कहानी और स्वतंत्र राष्ट्र की गाथा आज भी लोग बड़े चाव से सुनते-सुनाते हैं। आजमगढ़ उस समय उन्हीं के तलवार के बल पर स्वाधीनता की पहली साँस १८ दिनों तक ले सका था। इसी भूमि पर सामाजिक सेवा और सहज साधना का प्रबल दृष्टांत प्रस्तुत करने वाले भगवान् अवधूत राम का आविर्भाव हुआ था। उनका समय भी २०वीं शती ही था। वही भूमि, वही जवार (क्षेत्र) वही रत्नगर्भा पृथ्वी और वही भास्वर परम्परा यदि श्रीरामनरेश सदृश महनीय व्यक्तित्वों को प्रादुर्भूत करती है तो सहज स्वाभाविक ही है।

श्रीकृष्ण शर्मा उपाख्य स्वामी श्रीरामनरेशाचार्य शैशव काल से ही अलौकिक लक्षणों से सम्पन्न थे। उनके भव्य ललाट पर आध्यात्मिक प्रकाश और धार्मिक महाभाव स्पष्ट पढ़े जा सकते हैं। काशी आगमन पर समयतः उन दिव्योपम लक्षणों का विकसन होता रहा। भिक्षाटन के साथ उन्होंने धर्म के अमृतमय पथ का वरण किया। दर्शन के असिधार पर चलना सीखा। निष्णात गुरुओं ने उन्हें परिपक्व बना दिया। आचार्य बद्रीनाथ शुक्ल ने उन्हें दर्शन में 'अदर्शन' का बोध कराया। उन्होंने लोक और परलोक विद्याओं का विधिवत् अध्ययन किया। दर्शन के तर्कजाल, तर्क-वितर्क, दर्शन-दिग्दर्शन तथा दर्शन से 'अदर्शनम् लोपं स्यात्' तक स्वामी जी ने खूब यात्राएँ कीं। खूब पढ़े और पढ़ाए। पढ़ने से जो दार्शनिक गुत्थियाँ सुलझ न सकीं उसे उन्होंने पढ़ाकर सुलझा दिया। पच्चीस वर्ष तक अध्ययन किया तो एकादश वर्ष पर्यन्त अध्यापन। अध्ययन और अध्यापन के इस संयुक्त तप ने उन्हें एक अधीत विद्वान् और तर्क निष्णात् मनीषी बना दिया। देशाटन-तीर्थाटन शास्त्रार्थ, संत-महंतों की संगति तथा आध्यात्मिक प्रवृत्तियों का सतत अभ्यास, स्वामी जी को परिपक्व साधु, बीतरागी-वैरागी, गंभीर विचारक, स्पष्ट विश्लेषक तथा तेजस्वी वाग्मी बना दिया। आजानुवाहुवत रूप, भव्य ललाट, अन्वेषी दृष्टि और विशाल काया एक ओर साकार ब्रह्म का प्रत्याभास कराती है तो दूसरी ओर उनका अगाध ज्ञान, लोक और शास्त्र का अद्भुत सामञ्जस्य, औदार्य और लोकानुरंजक रूप उन्हें निराकार ब्रह्म का मीमांसक सिद्ध करता है। वाग्मिता इतनी तेजस्विनी की दर्शन शास्त्र की गूढ़ातिगूढ़ उक्तियाँ हस्तामलक जैसी प्रतीत होती हैं। बौद्धिक उत्कर्ष इतना कि अध्यात्म, धर्म और दर्शन के 'दृष्टिकूट' (अज्ञेयपद) पट्टिका पर लिखे आलेख सदृश स्पष्ट दृष्टिगोचर होने लगते

हैं। प्रत्युत्तपन्नमति इतने कि दुराग्रही और कुतर्की घुटने टेक देते हैं। शास्त्रों का गहन चिंतन जहाँ स्वामी जी को पारंपरिक ज्ञान से सम्पन्न बनाता है वहीं लोकानुभव एक सजग नागरिक और लोकमांगलिक प्रवृत्तियों का अधिष्ठाता संत सिद्ध करता है। शास्त्रज्ञता की पूँजी तथा लोकानुभव का क्रिया व्यापार उन्हें 'न मानुषात् श्रेष्ठतरं हि किंचित्' के प्रति संकल्पबद्ध करता है। उनकी वर्ष पर्यन्त चलती लोकस्पर्शी यात्राएँ तथा लोकमंगल परक प्रवृत्तियाँ सम्पूर्ण समाज को धर्म सापेक्ष बनाती नजर आती हैं।

स्वामी जी एक ऐसे धार्मिक सम्प्रदाय में अभिमंत्रित हैं जिसके आदिप्रवर्तक स्वयं प्रभु श्रीराम, और उन्नायक स्वामी रामानंद हैं। परमप्रभु श्रीराम ने भी शास्त्रों का अध्ययन कर लोकजागरण की अनेक यात्राएँ सम्पन्न की थीं। साथ ही लोकमंगल विधानों का सृजन किया था। बनाटन करते राम, 'निसिचर हीन करहुँ मही' की प्रतिज्ञा से बद्ध हुए थे। अनेक अवसरों पर उन्होंने वीरोचित कार्यों से सज्जनों की सुरक्षा की थी। पराक्रम तो इतना कि पिता महाराज दशरथ अशांत क्षेत्रों में समय-समय पर श्रीराम को नियोजित करते थे। कह सकते हैं कि उनकी भगवत्ता उनके श्रेष्ठतम लोकमंगल परक कार्यों से निर्धारित हुई थी। उनकी लोकप्रियता उनके पराक्रम के मानदण्डों से बनी थी। श्रीराम लोकमन में विस्तार उनके औदार्य और मर्यादा का प्रतिफल था। राक्षसों का संहार, अनार्यों का समापन, लंका पर विजय प्राप्त कर भी शासन स्वयं न करना, शरणागति की रक्षा, भक्त विभीषण का उद्धार, जटायु का अंतिम संस्कार, पिता की भक्ति, माताओं का सम्मान, भाई के प्रति स्नेह, 'साध्वी' सीता के लिए वन-वन भटकना, भीलनी शबरी के जूठे बेर खाना, निषाद के प्रति सौख्य-प्रीति रखना, आदि-आदि कर्म उन्हें मनुष्य से देवता बनाते हैं और देवता से ईश्वर। श्रीराम की भगवत्ता उनके कर्मों से बनती है। उन्हें अवतार तभी स्वीकार किया जाता है जब ईश्वर के सभी गुण उनमें पूँजीभूत हो प्रतिबिम्बित होने लगते हैं। रामावत सम्प्रदाय के उन्नायक स्वामी रामानंद भी कमोवेश उक्त गुणों से विभूषित थे। उनमें भी शास्त्र और लोक का अपूर्व सामंजस्य था। राष्ट्रीय बोध का गहन अनुभव था। समय की धारा को उपलक्षित करने और गति देने का अनुपम कौशल था। सगुण और निर्गुण का वितण्डावाद (मतभेद) स्वामी रामानंद ने ही शमित किया था। भक्ति के अधिकारी मानव मात्र हैं। जाति-पाँति हरिभजन में बाधक नहीं है। जो हरि को भजता है वही हरि का है और हरि भी उसी के। आज नारी और दलित विमर्श के नाम पर शब्दों और विचारों के व्यापारी काश! स्वामी जी से प्रेरणा ग्रहण कर सकते। उनकी द्वादश शिष्य परम्परा में ब्राह्मण से जुलाहा तक अभिमंत्रित हैं। पुरुष से नारी तक सम्मिलित हैं। उनकी धर्म समन्वित दृष्टि, राष्ट्रबोध समन्वित चिंतन, समाज सापेक्ष विचार एवं सौहार्द-समन्वित जीवन दृष्टि में एक ऐसे भारत की पुनर्रचना सन्निहित है जिसकी संरचना प्रभु श्रीराम ने की थी। इन्हीं

सारी विशिष्टताओं के कारण रामानंदः स्वयं रामः प्रादुर्भूतो महीतले कहा गया। वे धर्म के द्वितीय सेतु और आस्पद थे। मानवता के लोककल्याणक आयाम उन्हें अवतारी बना देते हैं।

इतिहास स्वयं को दुहराता है या नहीं इस पर मत वैभिन्य संभव है पर श्रीराम के रूप में स्वामी रामानंद और स्वामी रामानंद के रूप में सात सौ वर्षों पश्चात् स्वामीरामनरेशाचार्य के प्रादुर्भाव में पूर्ण मतैक्य है। इतिहास का यह चक्र वस्तुतः 'धर्म प्रवर्तन-चक्र' ही कहा जाता है। दुष्प्रवृत्तियाँ जब अपने उत्कर्ष पर इठलाने लगती हैं, मनुष्य जब स्वयं के लिए जीने लगता है। समाज, परस्परावलंबन, पारंपरिक रिक्थ, राष्ट्र, राष्ट्रभूमि पर उद्भूत विचार जब उसे खट्टे लगने लगते हैं। अपनी शक्तियों को जब वह स्वयं नहीं पहचान पाता ऐसे संकटापन्न समय में महनीय व्यक्तित्वों का मार्गदर्शन स्वयमेव संभव हो जाता है। गीता में भगवान् श्रीकृष्ण ने भी 'यदा-यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत', की उद्घोषणा कर इसी भाव की पुष्टि की। उनके अंतर की आध्यात्मिक ऊर्जा और लोक संस्पर्श का सम्बल मिलकर ऐसा रासायनिक पाथेय बनता है जिससे पीढ़ियाँ संजीवनी ग्रहण करती रहती हैं। आधुनिक युग में महात्मा गाँधी इसके ज्वलंत दृष्टांत हैं और आज स्वामीरामनरेशाचार्य। व्यक्ति के महनीय कर्म ही उसे अवतारी बना देते हैं। आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी अवतारवाद की परिकल्पना को स्पष्ट करने तथा उसके मर्म को समझने के लिए प्रायः एक किस्सा सुनाया करते थे। वस्तुतः द्विवेदी जी गुरु रवीन्द्रनाथ के साथ शांति निकेतन में सन् १९३० से १९५० यानि बीस वर्षों तक संस्कृति, धर्म और इतिहास का रसपान करते रहे। वह हिन्दी पढ़ाने के लिए वहाँ गए थे। किसी तरह काम चलाऊ बंगला भी सीख चुके थे। शांति निकेतन में वसंतोत्सव होने वाला था। द्विवेदी जी उस उत्सव की तैयारी में संध्याकाल एक पेड़ की झुरमुट में बैठे हुए थे। तभी गुरुदेव टहलते हुए द्विवेदी जी के पास पहुँच गए। उन्होंने द्विवेदी जी से कहा कल के उत्सव में उन्हें भाषण देना है। द्विवेदी जी अचकचाए। उनकी मनःस्थिति समझते गुरुदेव को समय नहीं लगा। कहा कि आप अनावश्यक दोलायमान हैं। आप से अच्छा भाषण कौन दे सकता है। रही बात बंगला की, वह भी आप सबसे बात-चीत कर ही लेते हैं।

द्विवेदी जी की रात्रि परेशानी में बीती। भाषण देते समय गुरुदेव भी उपस्थित थे। मंच पर चढ़ते ही द्विवेदी जी की दृष्टि अकस्मात गुरुदेव की तरफ मुड़ गयी। गुरुदेव ने संकेत किया सब ठीक होगा। उसके बाद तो द्विवेदी जी का भाषण चमत्कारिक हो गया। इसकी चर्चा करते हुए द्विवेदी जी बताते थे कि अवतार ठीक यही काम करता है। वस्तुतः अवतार की स्थिति अत्यंत ऊँचाई पर होती है। पर वह लोगों के बीच नीचे आता है। लोगों जैसा बनाता है। नीचे जाते समाज को थामता है फिर समाज को

ऊर्ध्वगामी बनता है। कभी द्विवेदी जी को इसका आभास गुरुवर रवीन्द्रनाथ टैगोर के सान्निध्य में हुआ था तो आज वह दृश्य परम्परानुमोदित आचार्य श्रीरामनरेश के महनीय व्यक्तित्व में दिखायी पड़ रहा है। जगतगुरु रामनरेशाचार्य के जीवन का पूर्व पक्ष तपश्चर्या के निकष पर खरा उतर चुका है। उनके अन्तर्मन में प्रभु श्रीराम की अनंत ऊर्जा है और वहिर्मन (व्यावहारिक जगत्) में स्वामी रामानंद की सामाजिक प्रगतिशील चेतना। दोनों के मणिकांचन योग ने उन्हें कर्मपथ पर अग्रसर किया है। तेजस्वियों की अवस्था समीक्ष्य नहीं होती (तेजस्विनाम् हि न वयः समीक्ष्यते) कालिदास की श्रीराम के संदर्भ में की गयी उक्ति वर्तमान पीठाधीश्वर पर सटीक बैठती है। ऐसे महापुरुष तो एक अलौकिक शक्ति की प्रेरणा से निरंतर कर्मनिमग्न रहते हैं।

स्वामी रामनरेशाचार्य को जगत्गुरु रामानंदाचार्य पीठ पर अभिषिक्त हुए अभी दो दशक भी नहीं व्यतीत हुये हैं पर उनकी संकल्पना में सम्पूर्ण भारत और समस्त सनातन धर्म पूर्ण रूप से समाहित हो गया है। मूलपीठ पंचगंगा घाट पर वर्ष पर्यंत लोकरंजक और धार्मिक अनुष्ठान चलते ही रहते हैं। सम्पूर्ण भारतवर्ष में लोकजागरण के अभियान भी समय-समय पर सम्पन्न होते हैं। दलित बस्तियों में रामभाव प्रसार यात्राएँ सम्पूर्ण भारतीय समाज में एक क्रांति सदृश दिखायी पड़ती हैं। यज्ञों, भजनोंपदेशो, संत-यात्राओं-सम्मेलनों, विद्वत्-संगोष्ठियों अन्यान्य अकादमिक एवं धार्मिक कृत्यों के माध्यम से रामावत सम्प्रदाय एक जीवंत तथा प्रेरक अधिष्ठान बना हुआ है। स्वामी जी से वार्तालाप करने पर प्रतीत होता है कि उनके हृदय में अनंत संकल्पनाएँ हैं। उनका औदार्य उन्हें स्वामी रामानंद का प्रतिरूप सिद्ध करता है। शास्त्रानुमोदित पंथ पर चलते हुए भी जीवन की व्यावहारिकता में लचीलापन उनके लोकानुभव की पुष्टि करता है। शैव-शाक्त-वैष्णव तथा अन्यान्य सम्प्रदायों का समन्वय उन्हें लोकनायक सिद्ध करता है। ध्यातव्य है कि सहस्राब्दियों से शैव-शाक्त तथा वैष्णव सम्प्रदायों का मेलमिलाप स्वामी रामानंद, उनके शिष्यों तथा अनुयायियों का महत उद्देश्य रहा है। स्वामी रामनरेशाचार्य का व्यक्तित्व भी तदैव दिखायी पड़ता है। परम्परागत-नवविकसित विचारों में तादात्म्य स्थापना, प्राचीनता तथा आधुनिकता में सामंजस्य, शास्त्र तथा लोकरीति में समन्वय, निर्गुण तथा सगुण में सामरस्य, धर्म तथा विज्ञान में सहसम्बंध, राजनीति और धर्म में परस्परपूरकता अध्यात्म और भौतिक विकास में समान आस्था उनके व्यक्तित्व की अन्य विशिष्टताएँ हैं।

स्वामी रामनरेशाचार्य के संरक्षण में रामावत सम्प्रदाय निरंतर वर्धमान है, श्रीमठ काशी से लेकर गुजरात हरद्वार, पंजाब, हिमाचल, बिहार, उत्तर प्रदेश, उत्तरांचल, मध्य प्रदेश, राजस्थान, महाराष्ट्र तथा दक्षिणी प्रांतों के अनेक मंदिरों, मठों, धर्मशालाओं, गोशालाओं का जीर्णोद्धार तथा अन्यान्य आश्रमों, मंदिरों का नवसृजन

निरंतर चल रहा है। साथ ही रामानंद सम्प्रदाय से सम्बद्ध अनेक ज्ञात-अज्ञात आश्रमों का संबद्धीकरण भी सम्प्रति उनके अभियान में शामिल है।

११ दिसम्बर १९८८ ई. को आचार्य पद पर अभिषिक्त होने के बाद रामानंदाचार्य रामनरेशाचार्य जी महाराज ने श्रीराघव की कृपा, पूर्वाचार्यों की शक्ति तथा सम्प्रदाय की सद्भावना से जो प्रयास किया उसका सुफल श्रीमठ का सभी दृष्टियों से अनुपम प्राकट्य है। अब यह धर्म तथा अध्यात्म की बेजोड़ नगरी काशी का प्रतिनिधिभूत आश्रम है। निर्माण, धार्मिक तथा आध्यात्मिक प्रवृत्तियाँ-सामाजिक एवं सांस्कृतिक उपक्रम सभी क्षेत्रों में श्रीमठ की यशःपताका गगन-चुम्बी है। लगता है यह सेवा श्रीरामजी रामानंदाचार्य जी तथा अन्यान्याचार्यों को वर्तमानाचार्य से ही लेनी थी। कतिपय प्रकल्पों के संक्षिप्त वृत्तांत और उपलब्धियाँ आगे की पंक्तियों में देखी जा सकती हैं –

- **श्रीविहारम् :**

यह आश्रम श्रीमठ की विकास यात्रा का समुज्ज्वल उदात्त तथा प्रेरणादायक स्वरूप है। इसे श्रीमठ को समर्पित किया १९९१ ई. में वर्तमानाचार्य के दीक्षागुरु सम्प्रदाय की विद्या एवं साधुता विभूति तथा परमसिद्ध पं. श्रीराम वल्लभाशरणजी महाराज जानकी घाट-अयोध्या के शिष्य श्रीमहन्त रघुवर गोपाल दास वेदान्ती ने। श्रीमठ के लिये सम्प्रदाय की ओर से यह सबसे बड़ा सेवा अवदान है, जो अविस्मरणीय है। यह पंचमंजिला आश्रम संतों-छात्रों एवं भक्तों का मर्यादित एवं सुखद बसेरा है। इसका अमरा बापू सभागार सम्प्रदाय ही नहीं अपितु काशी का गौरववर्धक-साहित्यिक-सांस्कृतिक विद्वत् सम्मेलनों-महात्माओं की जयंतियों तथा अनेकानेक धार्मिक कृत्यों का अनुपम सम्पादक स्थल है। रामानंदी साहित्य का विशाल पुस्तकालय इसकी आध्यात्मिक उपयोगिता एवं सुन्दरता का द्योतक है। यह बड़ी पियरी-काशी में नागरी नाटक मंडली के समीप विराजित है। यहाँ प्रायः पचास कमरे अत्याधुनिक ढंग से निर्मित हैं।

- **जगद्गुरु रामानंदाचार्य गोशाला एवं उद्यान :**

गंगापार-डुमरी-काशी श्रीमठ से १ कि.मी. पूर्व दक्षिण में स्थित है। यहाँ गायों की सेवाराधना सम्पादित होती है। यहाँ का उद्यान-अपनी विविधता-सुषमा एवं विशालता के द्वारा श्रीमठ की गरिमा को क्षण-क्षण सम्वर्धित कर रहा है। आँवला नवमी जैसे धार्मिक कृत्यों के साथ बहुधा वनभोज भी यहाँ समायोजित होते हैं। एकान्तिक साधना का भी यह अनुपम आश्रम है। यह श्रीमठ के वाहनों का भी विश्रामालय है। श्रीमठ सरकार की सेवा के लिये यहाँ से तुलसी दल-पुष्प शाकादि प्रचुर मात्रा में उपलब्ध होते

हैं। इसका क्षेत्रफल पाँच बीघे में प्रसरित है। यहाँ अनेक प्रकार के फलवान वृक्ष तथा सुगंधिपूर्ण लताओं की अवली मन को मोह लेती है।

• अमराबापू संस्कृत विद्यापीठ :

यह श्रीमठ का अतीव समीपवर्ती विद्याधाम है। पालियादगादीपतिधर्म-गौरव-श्रीमहान्त उमाबाने अपने पति श्री अमरा बापू की पूण्यस्मृति में-इसे संस्थापित किया है। पंचगंगाघाट पर स्थित यह भवन अपनी स्थापत्य कला में अद्वितीय प्रतीत होता है। अमरा बाबू पालियादधाम ही नहीं अपितु सनातन धर्म के परम संरक्षक थे। वर्तमानाचार्य के लिये उनके मन में अपार आदर एवं स्नेह का भण्डार श्रीमठ का परम धन था, जिसको संरक्षित ही नहीं अपितु संवर्धित किया है धर्म गौरव उमाबाने। पंचगंगाघाट पर ही वर्तमान यह पीठ श्रीमठ के ऐतिहासिक विस्तृत स्वरूप की प्राप्ति में एक महत्वपूर्ण कड़ी है। चार खण्डों-चार मंजिलों तथा शताधिक प्रकोष्ठों के साथ अवस्थित यह पीठ श्रीमठ का गौरववर्धक है। श्रीमठ की ज्ञान-साधना का यह परम तीर्थ सम्प्रदाय ही नहीं अपितु सनातन धर्म का वास्तविक सौन्दर्य है। यहाँ निरंतर बटुकों द्वारा वैदिकघनपाठ, व्याकरण का अभ्यास तथा शास्त्रों का अध्ययन चलता रहता है। पौराणिक पूजा पद्धतियों का अभ्यास और प्रशिक्षण भी यहाँ के अध्ययन की विशेषताएँ हैं।

• प्रेमानंद आश्रम, जिलेहरीघाट, जबलपुर (म.प्र.) :

यह श्रीमठ का अन्नसेवा धाम है- जहाँ दरिद्रनारायण-नर्मदापरिक्रमावासी-संत-विद्यार्थी-भक्त तथा अभ्यागत नित्य प्रति-बिना भेद-भाव के अतीव प्रशस्त स्वरूप में प्रसाद (भण्डारा) ग्रहण करते हैं। १५ एकड़ में विस्तृत यह तपोभूमि नर्मदा के पवित्र जिलेहरी घाट (जबलपुर) में स्थित है। यह जबलपुर के धार्मिक स्थान के साथ-साथ पर्यटन स्थल भी है।

दशनामी जूना अखाड़ा के परम सन्त स्वामी प्रेमानन्दपुरी के द्वारा संस्थापित तथा उनके शिष्य स्वामी महेन्द्रानन्दपुरी द्वारा संचालित यह आश्रम १९९७ ई. में श्रीमठ की सेवा में प्रविष्ट हुआ। स्वामी महेन्द्रानन्दपुरी ने जो वर्तमानाचार्य के विद्याशिष्य थे, श्रीमठ को अर्पित किया। यह उनका अतीव श्लाघनीय प्रदान है। आश्रम के पास सौ एकड़ कृषि योग्य भूमि भी है। आश्रम निरन्तर विकास की ओर है। गोपाल पद्मावती संस्कृत विद्यालय, अखण्ड रामायण पाठ, गोसेवा तथा विविध धार्मिक महोत्सवों का सम्पादन इसकी विशिष्ट उपलब्धियाँ हैं। जगद्गुरु रामानंदाचार्य मण्डपम् इसका अनुपम गौरववर्द्धक है-जो ११६ फीट लम्बा ५५ फीट चौड़ा तथा ५० फीट ऊँचा सुमंच के साथ विराजमान है, इसका निर्माण २००१ ई. में जगद्गुरु रामानन्दाचार्य सप्तशताब्दी महोत्सव की पावन स्मृति में किया गया था। यह महराजश्री के जगद्गुरुत्व काल की महनीय उपलब्धि है।

• जगद्गुरु रामानंदाचार्य प्राकट्यधाम :

यह श्रीमठ की सेवाराधना का विशिष्ट धाम है। रामावतार मध्यमाचार्य रामानंदाचार्य का प्राकट्य तीर्थराज प्रयाग की इसी पावन भूमि में हुआ था। यह तो रामभक्तों की दूसरी अयोध्या है। यह भारतवासियों का परम सौभाग्य है कि सनातन धर्म के आचार्यों में केवल जगद्गुरु रामानंदाचार्य का ही प्राकट्य उत्तरी भारत में तथा तीर्थराज प्रयाग में हुआ। परन्तु हिन्दू समाज के दुर्भाग्य एवं अकर्मण्यता से वह प्राकट्यधाम लुप्त हो गया। विभिन्न अनपेक्षित व्यक्तियों ने इसे अपने अधीन कर लिया। शताब्दियों बाद श्रीराघव की कृपा से तथा काशीनाथ चौधरी परिवार के परम सपूत श्रीकृष्ण चौधरी एवं पारिवारिक सदस्यों के अथक प्रयास से प्राकट्य-धाम श्रीमठ के साथ जुड़ा। धीरे-धीरे आतंकवाद के बादल छटे। जीर्णोद्धार एवं नवनिर्माण प्रारम्भ हुआ तथा धाम एक अतीव मनमोहक-प्रेरणादायक तथा गौरववर्धक स्वरूप में प्रकट हो गया। यह प्रयाग के मोरी दारागंज में स्थित है। यहाँ हरित माधव भगवान् का दिव्य दर्शन होता है। दो विग्रहों माँ सुशीला की गोद में बाल रूप में जगद्गुरु रामानन्दाचार्य जी तथा हिन्दू धर्मोद्धारक के रूप में आचार्य प्रवर विराजमान हैं। जीवन सम्बन्धी-चित्रावलियाँ भी शोभा बढ़ा रही हैं। यह दोनों पुलों के बीच में गंगा तट पर अवस्थित है। सम्प्रति टूरिज्म विभाग ने इसे प्रयाग में अपने आदर्श भवन के रूप में अपनी सूची में डाल रखा है। स्थापत्य कला की दृष्टि से यह अद्वितीय मंदिर है।

• अद्वितीय श्रीराम मंदिर, सप्तर्षिमार्ग साकेतधाम, हरिद्वार (उत्तराखण्ड)

श्रीमठ का यह अब तक का सर्वाधिक महत्त्वाकांक्षी प्रकल्प है। इसका निर्माण रामभक्तों की प्रबल भावना तथा महाराजश्री के सत्संकल्प का साकार रूप होगा। अब तक की योजनानुसार इसे पूर्णकुंभ २०१० ई. तक रामभक्तों को समर्पित होना है। प्रायः एक अरब रुपयों की अनुमानित लागत में यह पूर्णता को प्राप्त होगा। श्रीरामभक्ति परम्परा में यह मंदिर अपने ढंग का अनोखा होगा। अभी तो इसे 'न भूतो न भविष्यत्' ही कहा जा सकता है। कुंभस्थ क्षेत्रों में नासिक ही ऐसा स्थल है जहाँ प्रभु श्रीराम का अद्भुत मंदिर है। हरिद्वार स्थित इस मंदिर की लम्बाई १९३ फीट, ऊँचाई १७५ फीट, और चौड़ाई १०२ फीट है। इसके ५ शिखर के साथ ८५ लघु शिखर होंगे। २४ तिल्लकों तथा १०४ सुसज्जित स्तंभों से युक्त वस्तुतः यह अद्वितीय श्रीराम मंदिर होगा। इसका शिलान्यास जगद्गुरु मध्वाचार्य स्वामी श्रीविश्वेशतीर्थ जी महाराज पेजावर उडुपी के यशस्वी करांबुजों द्वारा १८ नवम्बर २००५ ई. को सम्पन्न हुआ। विशाल पैमाने पर निर्मित यह श्रीराम मंदिर देवालय का साकार रूप तो होगा ही साथ ही सनातन वैष्णवों का धाम भी होगा।

- **प्रतिवर्ष १००००० (एक लाख) रुपये का जगद्गुरु रामानंदाचार्य पुरस्कार :**

प्रतिवर्ष यह प्रतिष्ठित पुरस्कार आचार एवं अर्थ शुचिता सम्पन्न राष्ट्रीय ख्यातिलब्ध विद्वान् को प्रदान किया जाता है। इस बात का विशेष ध्यान रखा जाता है कि वह व्यक्ति अध्यापन तथा लेखन क्षेत्र में राष्ट्रीय यश प्राप्त कर चुका है। १९९५ ई. में इसका शुभारम्भ किया गया था। अब तक पंद्रह विद्वान् यह पुरस्कार प्राप्त कर चुके हैं।

इसके अतिरिक्त शत कुण्डीय तथा कोटि होमात्मक श्रीराम यज्ञ का समायोजन पूर्ण वैदिक गरिमा के साथ काशी तथा चण्डीगढ़ में सम्पन्न। बक्सर में समायोजित होने वाला है। धर्म के विभिन्न आयाम वर्षपर्यन्त संचालित होते रहते हैं।

- प्रतिवर्ष चातुर्मास्यव्रत का अनुष्ठान पूर्ण वैदिक गरिमा एवं साम्प्रदायिक मर्यादा के साथ देश के विभिन्न भागों में सम्पन्न होता है।
- विविध धर्म यात्राओं का समायोजन।
- विविध विद्वत् संगोष्ठियों का समायोजन।
- आधुनिक तथा प्राचीन मेधावी छात्रों को उच्चशिक्षा के लिये छात्रवृत्ति का प्रबंधन।
- ग्रन्थों तथा पत्रिकाओं का प्रकाशन-सप्तशताब्दी महोत्सव पर एक दर्जन से अधिक पुस्तकें प्रकाशित।
- कुम्भस्थलों में रामानंदी शिविरों का समायोजन।
- साधन विहीन कन्याओं के विवाह का समायोजन।
- साधन विहीन रोगियों को निदान हेतु दान।
- प्राचीन मठ-मन्दिरों का जीर्णोद्धार।

- **जगद्गुरु रामानंदाचार्य डाक टिकट, लोकार्पण :**

डाक टिकट का यह लोकार्पण श्रीमठ के आवेदन एवं सक्रियता से तथा भारत सरकार के सौजन्य से राष्ट्रपति भवन में २००२ ई. की फरवरी को तत्कालीन राष्ट्रपति डॉ. के. आर. नारायणन के द्वारा सम्पन्न हुआ। यह आचार्यप्रवर, सम्प्रदाय और रामभक्ति परम्परा का राष्ट्रीय सम्मान था। इस अवसर पर वर्तमानाचार्य के साथ श्रीमठ के सैकड़ों भक्तों तथा सन्तों ने भाग लिया।

श्रीमठ के अन्य आनुषंगिक क्रिया-कलापों और चतुर्दिक संकल्पित श्री राममंदिरों का संकुल श्रीरामनरेशाचार्य जी को एक अवतारी पुरुष के रूप में प्रकट करता है। उनकी विशाल संकल्पनाएँ अनंत धार्मिक महाभाव की अभिलाषाएँ, यशस्वी प्रतिज्ञाएँ,

परमोदार भावनाएँ, जगतहिताय कामनाएँ, भगवदाय आराधनाएँ क्या उन्हें अवतारी रूप से वंचित कर सकती हैं? त्रेता में श्रीराम उदात्त गुणों के कारण जगदाराध्य बने, मध्यकाल में स्वामी रामानंद इन्हीं गुणों के आधार पर प्रभुराम के अवतार कहे गए। आधुनिक काल में स्वामी रामनरेशाचार्य उक्त गुणों के आधार पर ही अभिनव रामानंद बन गये हैं।

•

षष्ठ अध्याय

समापन खण्ड

शतकोटि होमात्मक श्रीराममहायज्ञ

जगद्गुरु रामानन्दाचार्य सप्तशताब्दी महोत्सव के अन्तर्गत वर्ष पर्यन्त धार्मिक कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। महोत्सव के समापन के अवसर पर १६ से २४ जनवरी के बीच शतकोटि होमात्मक श्रीराम महायज्ञ का काशी में समायोजन विशाल एवं भव्य रूप में हो रहा है। महायज्ञ को सम्पन्न कराने के लिए विशाल यज्ञ-मण्डप का निर्माण टाउनहाल मैदान में चल रहा है। जिसमें सौ कुण्डों की शास्त्रीय रीति से स्थापना कर श्रीराममंत्र से एक करोड़ आहुतियाँ दी जायेंगी। यह यज्ञ धर्मशास्त्रों में उपलब्ध विशालतम यज्ञ प्रावधान के अनुरूप होगा।

बुधवार को पराड़कर स्मृति भवन में आयोजित पत्रकार वार्ता में महायज्ञ के संयोजक पण्डित गणेश्वर शास्त्री द्रविड़ ने बताया कि शास्त्रों के मतानुसार एक सौ कुण्डों का कोटि होम सबसे बड़ा यज्ञ होता है। वैदिक मान्यताओं के अनुसार यज्ञ साक्षात् परमात्मा का स्वरूप है। बुद्ध पुराण में राष्ट्र की शान्ति स्थापना एवं समृद्धि के लिए प्रतिवर्ष दो कोटि होम करने का विधान है। ऐसे महायज्ञ के दर्शन मात्र से लोग कृतार्थ हो जाते हैं। ऐसा कहा जाता है कि आदि जगद्गुरु रामानन्दाचार्य ने अपने अंतिम काल में ऐसा विशाल यज्ञ किया था। उन्होंने बताया कि श्रीराम महायज्ञ का आयोजन जगद्गुरु रामानन्दाचार्य स्वामी रामनरेशाचार्य के सान्निध्य में किया जा रहा है। महायज्ञ में साढ़े छः सौ लोग शामिल होंगे।

काशी में लाखों लोग इस अपूर्व अवसर का लाभ प्राप्त कर सकेंगे। वेद-वेदांग-पुराण विभिन्न संत वाङ्मय. संत वाङ्मय का परायण व विभिन्न प्रान्तों से पधारे हुए भक्तों द्वारा संकीर्तन आदि के आध्यात्मिक अनुष्ठान टाउनहाल परिसर में तथा अन्य समारोह ईश्वरगंगी स्थित पंडित कमलाकर चौबे आदर्श सेवा इण्टर कालेज के क्रीडांगन में समायोजित होगा।

पण्डित गणेश्वर शास्त्री ने बताया कि १६ जनवरी के पूर्वाह्न सर्व प्रायश्चित, १७ जनवरी को पूर्वाह्न यज्ञ में कलश व गणेश पूजा आदि के साथ मण्डप में प्रवेश तथा विद्वानों का मधुपर्क होगा। १७ जनवरी को ही अपराह्न में भव्य व विशाल शोभा यात्रा

निकलेगी। शोभायात्रा दशाश्वमेध घाट में गोदौलिया, नयी सड़क, बेनियाबाग, लहुराबीर, कबीरचौरा, मैदागिन होते हुए टाउनहाल पहुँचेगी। उन्होंने बताया कि यज्ञ प्रक्रिया में १८ जनवरी को देव स्थापना, पूजन एवं मण्डप की पूजा होगी। १९ जनवरी को अरणी के मंथन द्वारा अग्नि को प्रकट कर सौ कुण्डों में अग्नि की स्थापना कोटि होम विधानुसार की जायेगी।

उसी दिन अपराह्न ग्रहयोग संपन्न होगा। २० से २३ जनवरी तक श्रीराम मन्त्र से एक करोड़ आहुतियाँ दी जायेंगी। २४ जनवरी को विविध होम होने के पश्चात् सायंकाल ४.१५ बजे यज्ञ की पूर्णाहुति प्रारम्भ होगी।

।।श्रीगुरुशरणम्।।

सामग्री नाम	मात्रा
हल्दी चूर्ण	१ किलो
रोरी	२.५ किलो
गुलाल	५०० ग्राम
भुक्का (अभ्रकचूर्ण)	२५० ग्राम
सिन्दूर	१०० ग्राम
केशर	५ ग्राम
कस्तूरी (यथासंभव)	
कपूर	५०० ग्राम
नारा (मौली)	१ किलो
जनेऊ	२५ कोड़ी
रूई	५०० ग्राम
धूपवत्ती	२५ पैकेट
धूपम्	५०० ग्राम
दियासलाई	१ बण्डल
सफेद चन्दन मुठा	२५० ग्राम
लाल चन्दन मुठा	२५० ग्राम
सुपारी (बड़ी में मझोली)	१० किलोग्राम
नारियल (जलदार)	५० ग्राम
गरी का गोला (१०० नग पूर्णाहुति)	२५ नग
लौंग	२५० ग्राम
लायची छोटी	२५० ग्राम
जायपत्री जापित्री	५० ग्राम
जायफल	२५ नग
शहद	१ किलोग्राम
पीली सरसों	२५० ग्राम
सूखा आँवला	२५० ग्राम
इत्र (अत्तर) गुलाब	२० ग्राम

सुगंधित तेल	२५० ग्राम
तिल का तेल	१ किलोग्राम
गुड़	२ किलोग्राम
मिश्री	२ किलोग्राम
बतासा	२.५ किलोग्राम
भूरा चीनी	५ किलोग्राम
भूसी	५ किलोग्राम
सर्वौषधी-(कूट-जटामासी-आँवाहरदी)	
मारू हलदी, मुरा, शिलाजीत, चंदन	
बच-चंपक-मुस्ता (इसको कूटकर चूर्ण करें)	
काजू	१ किलोग्राम
बादाम	१ किलोग्राम
तालमखाना	१ किलोग्राम
काला उड़द	२ किलोग्राम
जौ (यम)	१ किलोग्राम
ककुनी	२५० ग्राम
चना	१ किलोग्राम
मूँगधोमादाल	२ किलोग्राम
मूँग हरे छिलके की दाल	२ किलोग्राम
मसूर की दाल	२.५ किलोग्राम
चावल	१ किलोग्राम
तिल	यथावश्य
चीनी	” ”
घी	” ”
गुग्गुल	२० किलोग्राम
चन्दन चूरा	१० किलोग्राम
भोजपत्र	१० किलोग्राम
जटामासी	१० किलोग्राम
कमलगट्टा	१ मन
कपूर काचरी	१० किलोग्राम
सुगंधबाला	१० किलोग्राम
हवनीयक्रम में मेवा यथासंभव	

किसमिस	१ किलोग्राम
छुहारा	२.५ किलोग्राम
काला मुनक्का	२५० ग्राम
पापड़	१ किलोग्राम
गेहूँ	२ किलोग्राम
साँवा	२५० ग्राम
मूँग	२५० ग्राम
सफेद कपड़ा	१५ मीटर
लाल कपड़ा	२० मीटर
धोती	१० नग
दुपट्टा	१० नग
गमछा	२० नग
साड़ी सूती	१० नग
ब्लाउजपीस	१० नग
नवग्रह में-ब्लाउजपीस (३ काला, २ लाल, २ सफेद, १ पीला, १ हरा)	९ नग
प्रधान पीठ में-रेशमी धोती-चादर रेशमी साड़ी-लेडीज शाल	
कुण्डाच्छादन-सूती चादर	१०० नग
कम्बल	१ नग
मृगचर्म	१ नग
ध्वजा-पीला २, लाल २, काला २, हरा २, नीला २, सफेद २	१० नग
पताका-लाल २, पीला २, हरा २, काला २, सफेद २	१० नग
महाध्वज-पंचरंगा	१ नग
चँदवा-वेदियों के ऊपर	५ नग
चाकू १, कैची १, सुई ३, डोरा ३, मोटा, सफेद, पीला	८ नग
मण्डप वेष्टनार्थसूत डोरा (त्रिसूत्री) सफेद-लाल-काला	
दूध, दही	
घोबर, गोमूत्र	
कुशा,दूर्वा	
फूलघुहा-माला छोटी	
माला बड़ी, विल्वपत्र	
तुलसी, केले के पत्ते	

आम-अशोक के तोरण	
आम-गूलर-वट-पीपल-पाकर केल्लन	
पामघुहाँ (नागमाली)	
ऋतुफल-केला-सेव-संतरा-अमरूद	
मिठाई-पेड़ा-बर्फी-लड्डू आदि	
दोना	२००० नग
पत्तल	१०० नग
मिट्टी के कलश ढक्कन सहित	२५ नग
मिट्टी के सकोरे	५०० नग
दियरी	२०० नग
बाँस की दौरी- ४ छोटी, ४ बड़ी	८ नग
ताड़ के पँखे	१२५ नग
होरसा (चन्दन घिसने का पत्थर)	१ नग
नवग्रह समिधा-अर्क, पलाश	
खैर-अपामार्ग-पीपल-गूलर	
शमी, दूर्वा-कुशा	
पाटा-६ १८×१५, चौकी-२ २४×२४,	८ नग
यज्ञिम काष्ठ पात्र-स्रुणा, स्वाची, प्रणीता, प्रोक्षणी सम्म	१०० नग
वसोर्द्धारा-(अरमीसेट)	
ईंधनार्थ-लकड़ी महीन-मोटी	
गोहरी, गंगाजल	
सुतली	१ किलोग्राम
मूँनली डोरी	५ किलाग्राम
सूत की डोरी-मोटी १५ हाथ	१ अदद
सप्तमृत्तिका-अश्व-गज-चींटी-संगम	
तालाब-राजद्वार-गोशाला	
चाँदी का सिंहासन १, छत्र १	२ नग
चाँदी की थाली १, कटोरी १, गिलास १, लोटी १	४ नग
यंत्र हेतु चाँदी का पत्र	१ नग
सोने शलाका	१ नग
सोने की जिह्वा २	१०० ग्राम
वास्तु १, योगिनी ३, क्षेत्रपाल १, रुद्र १, मूर्ति हेतु प्रतिमा	

सोने के पत्र ६ १२ नग
प्रधानपीठ में-श्रीराम-जानकी-लक्ष्मण-भरत-शत्रुघ्न-हनुमान,
मूर्ति स्थापना हेतु सोने के पत्र अथवा मूर्तियाँ
सोने के टुकड़े १५ नग
पञ्चरत्न १५ नग
भगवान् को आभूषण शक्ति-भक्ति श्रद्धा इच्छा के अनुसार
चाँदी के पायल, बिछिया, सोहागपेटारी
ब्राह्मणवरण (सामग्री ब्राह्मण के अनुसार)
धोती-जोड़ा-अथवा १-प्र.ब्रा. १ नग
दुपट्टा १-प्र. ब्रा. १ नग
शीतकाल में ऊनी चादर १ नग
गमछा १ नग
आसन ऊनी-कुशासन
पंचपात्र तष्टा अर्घा आचमनी (अथवा-झारी कमगुलु-तष्टा)
मधुपर्क करेंगे तो प्रति ब्राह्मण २-२ कटोरी, पादबाण-खड़ाऊँ अथवा स्लीपर (चप्पल)

तुलसी माला ब्रा. सं.
पुण्याहवाचक कलश ढक्कन सहित
१ नग
वास्तुपीठ १-योगिनीपीठ अथवा १-क्षेत्रयास्त्रपीठ १-रुद्रपीठ-१ कलश ढक्कन सहित-६ अथवा ४
वर्द्धनीकलश-९ ढक्कन सहित
प्रधानपीठ कलश ढक्कन सहित १
परात-१, थाली कासे की २
जलधारा-दुग्ध धारा हेतु कमण्डलु २
आत्मस्थाली (कुण्ड के संख्यानुसार) कटोरा
चरुस्थाली (कुण्ड के संख्यानुसार) टोपियाँ
पूर्ण पात्र (कुण्ड से संख्यानुसार) टोपियाँ
कलछी (कुण्ड से संख्यानुसार)
बाल्टी २, लोटा ४, चम्मच १०, कटोरी ४०,
गिलास ६, धूपदानी २, दीपदानी २, आरती १,
शंखसरोटा-त्रिपाई १, घण्टा १

आरती हेतु-शंख बजाने का
घड़ी, घण्ट, डमरू, चँवर
पीतल के घुँगरू-५० (किंकिणी) छायापात्र १
हवनसामग्री रखकर हवन करने हेतु पात्र-कटोरा-(टेनिया)
ब्राह्मण संख्यानुसार-हवनकर्ता ब्राह्मणों को दे दिया जाय

सँडशी	१०० नग
चिमटा	५ नग
अग्निप्रणयगहेतु पात्र थाली	१०० नग

शतमुख कोटि रामयाग में वृणीत ऋत्विगों की नामावली

सं.	नाम	पद	स्थान	कार्ड क्र.	दक्षिणा	मार्ग व्यय
१.	वेदमूर्ति श्रीकृष्ण लक्ष्मीकांत पुराणिक	प्रधान यज्ञाचार्य	गुवाहाटी	२०१	३४१००/-	संयुक्त
२.	वेदमूर्ति श्रीकृष्ण गोड़शे	प्रधान ब्रह्मा	नासिक	३३१	५०००/-	१०२४/-
३.	वेदमूर्ति गजानन शास्त्री गोड़शे	उपाचार्य	वाराणसी	४०३	४१००/-	०२४/-
४.	वेदमूर्ति गोविंद दीक्षित	सदस्य	वाराणसी	४०४	४१००/-	
५.	वेदमूर्ति विनायक जी बादल	सदस्य	वाराणसी	४०५	४१००/-	
६.	वेदमूर्ति गणपत महाराज जुक्कलकर	गाणपत्य	हैदराबाद	४०६	५०००/-	११००/-
७.	वेदमूर्ति रामचंद्र पुराणिक	सर्वोपदृष्टा	वाराणसी	४०१	४१००/-	६१००/-
८.	वेदमूर्ति पाण्डुरंग पुराणिक	उपदृष्टा	वाराणसी	४०२	४१००/-	
९.	वेदमूर्ति नितिन कुटास्कर	दृष्टा	वाराणसी	४०७	४१००/-	
१०.	वेदमूर्ति गोपाल शास्त्री गोरे	सदस्य	पंढरपुर	४०८	५०००/-	११९०/-
११.	वेदमूर्ति गणपति शास्त्री ऐताल	द्वारपाल	वाराणसी	४०९	४१००/-	६११०/-
१२.	वेदमूर्ति हेमन्त मोघे	द्वारपाल	वाराणसी	४१०	४१००/-	
१३.	वेदमूर्ति हीरामणि शास्त्री	द्वारपाल	वाराणसी	४१२	४१००/-	
१४.	वेदमूर्ति सत्यनारायण पाण्डेय	द्वारपाल	वाराणसी	४१२	४१००/-	
१५.	वेदमूर्ति शिवरामजी त्रिपाठी	द्वारपाल	वाराणसी	४१३	४१००/-	

सं.	नाम	पद	स्थान	कार्ड क्र.	दक्षिणा	मार्ग व्यय
१६.	वेदमूर्ति गगन चट्टोपाध्याय	द्वारपाल	वाराणसी	४१४	४१००/-	
१७.	वेदमूर्ति विनायक शास्त्री रटाटे	वेदपारायण	वाराणसी	४१५	४१००/-	
१८.	वेदमूर्ति श्रीकांत चित...	वेदपारायण	आकंदी	४१६	५०००/-	११२५/-
१९.	वेदमूर्ति नारायण घनपाठी	वेदपारायण	वाराणसी	४१७	४१००/-	६१२५/-
२०.	वेदमूर्ति वीरेश्वर शास्त्री द्रविड़	वेदपारायण	वाराणसी	४१८	४१००/-	
२१.	वेदमूर्ति राजराजेश्वर द्रविड़	वेदपारायण	वाराणसी	४१९	५००/-	
२२.	वेदमूर्ति दिलीप राम त्रिपाठी	वेदपारायण	वाराणसी	४२०	४१००/-	
२३.	वेदमूर्ति विश्वेश्वर शास्त्री द्रविड़	वेदपारायण	वाराणसी	४२१	४१००/-	
२४.	वेदमूर्ति अनुष्टुप चट्टोपाध्याय	वेदपारायण	वाराणसी	४२२	२१००/-	
२५.	वेदमूर्ति भालचंद्र सोलापुरकर	जापक	वाराणसी	४२३	२१००/-	
२६.	वेदमूर्ति नरहरि रंगप्पा	जापक	वाराणसी	४२४	२१००/-	
२७.	वेदमूर्ति आनंद गोकर्ण	जापक	वाराणसी	४२५	२१००/-	
२८.	वेदमूर्ति जगन्नाथ उपाध्याय	परिचारक	वाराणसी	४२६	५००/-	
२९.	श्री राजेन्द्र शर्मा	परिचारक	वाराणसी	४२७	५००/-	
३०.	श्री गंगेश मिश्र	परिचारक	वाराणसी	४२८	२१००/-	
३१.	श्री बाबा साहेब कुलकर्णी	परिचारक	आकंदी	४२९		१०५०/-
३२.	आचार्य पं. श्याम गंगाधर बापट	पुराणपाठ	वाराणसी	४३०	२१००/-	

सं.	नाम	पद	स्थान	कार्ड क्र.	दक्षिणा	मार्ग व्यय
३३.	आचार्य पं. श्री महेश झा	पुराण परायण	वाराणसी	४३१	२१००/-	
३४.	आचार्य पं. लक्ष्मीकांत खणंग	पुराण परायण	वाराणसी	४३२	२१००/-	
३५.	आचार्य पं. जगन्नाथ तैलंग	पुराण परायण	वाराणसी	४३३	२१००/-	
३६.	आचार्य पं. पारसनाथ शुक्ल	पुराण परायण	वाराणसी	४३४	२१००/-	
३७.	आचार्य पं. दीनानाथ पाण्डेय	पुराण परायण	वाराणसी	४३५	२१००/-	
३८.	आचार्य पं. नारायण शास्त्री	पुराण परायण	वाराणसी	४३६	२१००/-	
३९.	आचार्य पं. सुरेश त्रिपाठी	पुराण परायण	वाराणसी	४३७	२१००/-	
४०.	आचार्य पं. बृजेन्द्र पाण्डेय	पुराण परायण	वाराणसी	४३८	२१००/-	
४१.	आचार्य पं. उमेश झा	पुराण परायण	वाराणसी	४३९	२१००/-	
४२.	आचार्य पं. पवनकुमार शास्त्री	पुराण परायण	वाराणसी	४४०	२१००/-	
४३.	आचार्य पं. मनोज शास्त्री गर्ग	पुराण परायण	वाराणसी	४४१	२१००/-	
४४.	आचार्य पं. भृगुजी पाण्डेय	पुराण परायण	वाराणसी	४४२	२१००/-	
४५.	आचार्य पं. गोविंद नाथ शर्मा	पुराण परायण	वाराणसी	४४३	२१००/-	
४६.	आचार्य पं. दिनकर पाण्डेय	पुराण परायण	वाराणसी	४४४	२१००/-	
४७.	आचार्य पं. बृजेश तिवारी	पुराण परायण	वाराणसी	४४५	२१००/-	
४८.	आचार्य पं. राजकुमार त्रिपाठी	पुराण परायण	वाराणसी	४४६	२१००/-	
४९.	आचार्य पं. मनोज शास्त्री (स्वामी जी)	पुराण परायण	वाराणसी	४४७	२१००/-	

सं.	नाम	पद	स्थान	कार्ड क्र.	दक्षिणा	मार्ग व्यय
५०.	आचार्य पं. हरिवल्लभ शास्त्री	पुराण परायण	वाराणसी	४४८	२१००/-	
५१.	आचार्य पं. स्वामी शरण चतुर्वेदी	पुराण परायण	वाराणसी	४४९	२१००/-	
५२.	आचार्य पं. रमाकांत मिश्र	पुराण परायण	वाराणसी	४५०	२१००/-	
५३.	आचार्य पं. रघुनाथ शास्त्री	पुराण परायण	वाराणसी	४५१	२१००/-	
५४.	आचार्य पं. दुर्गानन्दन झा	पुराण परायण	वाराणसी	४५२	२१००/-	
५५.	आचार्य पं. चन्द्रमौलि पाण्डेय	पुराण परायण	वाराणसी	४५३	२१००/-	
५६.	आचार्य पं. मुक्तेश्वर मिश्र	पुराण परायण	वाराणसी	४५४	२१००/-	
५७.	आचार्य पं. मनमोहन शुक्ल	पुराण परायण	वाराणसी	४५५	२१००/-	
५८.	आचार्य पं. रविशंकर मिश्र	पुराण परायण	वाराणसी	४५६	२१००/-	
५९.	आचार्य पं. महेन्द्र पाण्डेय	पुराण परायण	वाराणसी	४५७	२१००/-	
६०.	आचार्य पं. देवनारायण शर्मा	पुराण परायण	वाराणसी	४५८	२१००/-	
६१.	आचार्य पं. प्रवेश त्रिपाठी	पुराण परायण	वाराणसी	४५९	२१००/-	
६२.	आचार्य पं. शंकर चतुर्वेदी	पुराण परायण	वाराणसी	४६०	२१००/-	
६३.	आचार्य पं. अमरनाथ उपाध्याय	पुराण परायण	वाराणसी	४६१	२१००/-	
६४.	आचार्य पं. लल्लन द्विवेदी	पुराण परायण	वाराणसी	४६२	२१००/-	
६५.	आचार्य पं. मधेश्वर पाण्डेय	पुराण परायण	वाराणसी	४६३	२१००/-	
६६.	आचार्य पं. रामफल शुक्ल	पुराण परायण	वाराणसी	४६४	२१००/-	

सं.	नाम	पद	स्थान	कार्ड क्र.	दक्षिणा	मार्ग व्यय
६७.	आचार्य पं. भगवती प्रसाद पाण्डेय	पुराण परायण	वाराणसी	४६५	२१००/-	
६८.	आचार्य पं. जगन्नाथ शर्मा	पुराण परायण	वाराणसी	४६६	२१००/-	
६९.	आचार्य पं. सच्चिदानंद द्विवेदी	पुराण परायण	वाराणसी	४६७	२१००/-	
७०.	पं. अनंत शास्त्री कुटासकर	कुण्डाचार्य	मुम्बई	२८१	५०००/-	११२०/-
७१.	पं. बालकृष्ण पटवर्धन	कुण्डाचार्य	वाराणसी	२३१	४१००/-	
७२.	पं. गंगाधर देव	कुण्डाचार्य	वाराणसी	२१९	४१००/-	
७३.	पं. बाबू दीक्षित महाड़कर	कुण्डाचार्य	वाराणसी	२६७	४१००/-	
७४.	पं. सोमनाथ मंडलेकर	कुण्डाचार्य	वाराणसी	२२१	४१००/-	
७५.	पं. अनिल घोड़ेकर	कुण्डाचार्य	वाराणसी	२०५	४१००/-	
७६.	पं. हरि आठवले	कुण्डाचार्य	वाराणसी	२१८	४१००/-	
७७.	पं. गोपाल रटाटे	कुण्डाचार्य	वाराणसी	३७०	४१००/-	
७८.	पं. सुनील दीक्षित	कुण्डाचार्य	वाराणसी	२०४	४१००/-	
७९.	पं. द्वारकानाथ पुराणिक	कुण्डाचार्य	सूरत	२८२	५०००/-	११००/-
८०.	पं. श्रीनिवास पुराणिक	कुण्डाचार्य	वाराणसी	२७८	४१००/-	
८१.	पं. दत्तात्रय रटाटे	कुण्डाचार्य	वाराणसी	३७१	४१००/-	
८२.	पं. दत्तात्रय जोशी	कुण्डाचार्य	मुम्बई	२९८	५०००/-	११२०/-
८३.	पं. राजेन्द्र मिश्रा	कुण्डाचार्य	वाराणसी	२२८	४१००/-	

सं.	नाम	पद	स्थान	कार्ड क्र.	दक्षिणा	मार्ग व्यय
८४.	पं. सुरेश ब्रह्मा	कुण्डाचार्य	वाराणसी	२७३	४१००/-	
८५.	पं. रंगनाथ बादल	कुण्डाचार्य	वाराणसी	२५७	४१००/-	
८६.	वेदमूर्ति रामकृष्ण चतुर्वेदी	कुण्डाचार्य	वाराणसी	२५३	४१००/-	
८७.	वेदमूर्ति दिवाकर जोशी	कुण्डाचार्य	मुम्बई	२९७	५०००/-	११२०/-
८८.	आचार्य रमेशचंद्र जोशी	कुण्डाचार्य	सूरत	२६२	५०००/-	११००/-
८९.	श्री वीरराघव घनपाठी	कुण्डाचार्य	वाराणसी	३९१	४१००/-	
९०.	श्री जयराम महाराज	कुण्डाचार्य	हैदराबाद	३०५	५०००/-	११००/-
९१.	श्री प्रदीप आचार्य	कुण्डाचार्य	कोटगीर	३१२	५०००/-	१५००/-
९२.	श्री वामन अवधानी	कुण्डाचार्य	कोटगीर	३२०	५०००/-	११००/-
९३.	श्री कल्याण जोशी	कुण्डाचार्य	हैदराबाद	३२७	५०००/-	११००/-
९४.	श्री उद्धव महाराज	कुण्डाचार्य	हैदराबाद	३२६	५०००/-	११००/-
९५.	श्री रविन्द्र पैठणे	कुण्डाचार्य	नासिक	३३६	५०००/-	१०२४/-
९६.	श्री वासुदेव मंडलीकर	कुण्डाचार्य	वाराणसी	२३६	४१००/-	
९७.	पं. संदीप माण्डे	कुण्डाचार्य	मुम्बई	३०३	५०००/-	११२०/-
९८.	पं. मनोज वाशिमकर	कुण्डाचार्य	वाराणसी	२३०	४१००/-	
९९.	पं. रामकृष्ण मंडलीकर	कुण्डाचार्य	वाराणसी	३१४	४१००/-	
१००.	पं. मनोहर जोशी	कुण्डाचार्य	कोटगीर	२९२	५०००/-	१५००/-

सं.	नाम	पद	स्थान	कार्ड क्र.	दक्षिणा	मार्ग व्यय
१०१.	पं. रुद्रानंद जी	कुण्डाचार्य	गुवाहाटी	३३०	५०००/-	९७०/-
१०२.	पं. श्रीराम वझुरकर	कुण्डाचार्य	पुणे	३२२	५०००/-	११००/-
१०३.	पं. बालकृष्ण जोशी	कुण्डाचार्य	हैदराबाद	३२८	५०००/-	११००/-
१०४.	पं. गिरीश कुलकर्णी	कुण्डाचार्य	हैदराबाद	३२८	५०००/-	११००/-
१०५.	पं. कालिदास साईकर	कुण्डाचार्य	गोंवा	३६७	५०००/-	१५३०/-
१०६.	पं. अरविंद बेणारे	कुण्डाचार्य	पंढपुर	३५८	५०००/-	११९०/-
१०७.	पं. राजेश पदे	कुण्डाचार्य	मुम्बई	३०४	५०००/-	११२०/-
१०८.	पं. नारायण उपाध्याय	कुण्डाचार्य	वाराणसी	२८३	४१००/-	
१०९.	पं. ब्रजवल्लभ पाठक	कुण्डाचार्य	वाराणसी	२२६	४१००/-	
११०.	पं. विश्वनाथ लिमकर	कुण्डाचार्य	नासिक	३३४	५०००/-	१०२४/-
१११.	पं. राजेश सागरकर	कुण्डाचार्य	वाराणसी	२४३	४१००/-	
११२.	पं. तुकाराम गोटेकर	कुण्डाचार्य	पंढरपुर	३६०	५०००/-	११९०/-
११३.	पं. प्रवीण जोशी	कुण्डाचार्य	वाराणसी	२७५	४१००/-	
११४.	पं. पंकज देव	कुण्डाचार्य	वाशिम	३५०	५०००/-	१०२०/-
११५.	पं. बालाजी देव	कुण्डाचार्य	वाशिम	३५३	५०००/-	१०२०/-
११६.	पं. दीपचन्द पन्त	कुण्डाचार्य	वाराणसी	२२९	४१००/-	
११७.	पं. तारानाथ नेपाली	कुण्डाचार्य	वाराणसी	२८६	४१००/-	

सं.	नाम	पद	स्थान	कार्ड क्र.	दक्षिणा	मार्ग व्यय
११८.	पं. पंकज पाण्डेय	कुण्डाचार्य	वाराणसी	२१३	४१००/-	
११९.	पं. विष्णु बिठ्ठल बोरकर	कुण्डाचार्य	गोवा	३७२	५०००/-	१०३०/-
१२०.	पं. श्याम मोहन पाठक	कुण्डाचार्य	वाराणसी	२०८	४१००/-	
१२१.	पं. गिरीश वाघ्रुत्ठकर	कुण्डाचार्य	वाराणसी	२७४	४१००/-	
१२२.	पं. संदीप जोशी	कुण्डाचार्य	हैदराबाद	३२३	५०००/-	११००/-
१२३.	पं. अद्वैत मुंजे	कुण्डाचार्य	वाराणसी	२३८	४१००/-	
१२४.	पं. सिद्धेश्वर दातार	कुण्डाचार्य	वाराणसी	३०६	४१००/-	
१२५.	पं. अच्युतराम शर्मा	कुण्डाचार्य	हैदराबाद	३०६	५०००/-	११००/-
१२६.	पं. अनिरुद्ध पेठकर	कुण्डाचार्य	वाराणसी	२६८	४१००/-	
१२७.	पं. गोपाल शास्त्री घोड़ेकर	कुण्डाचार्य	वाराणसी	२०६	४१००/-	
१२८.	पं. सुनील देवधर	कुण्डाचार्य	वाराणसी	२०९	४१००/-	
१२९.	पं. रामचन्द्र देव	कुण्डाचार्य	वाराणसी	२७१	४१००/-	
१३०.	पं. समीर कुमार पाण्डेय	कुण्डाचार्य	वाराणसी	३८३	४१००/-	
१३१.	पं. अजीत पुरोहित	कुण्डाचार्य	मुम्बई	२९६	५०००/-	११२०/-
१३२.	पं. नारायण होसमने	कुण्डाचार्य	वाराणसी	२११	४१००/-	
१३३.	पं. कृपासिन्धु पण्डा	कुण्डाचार्य	पुरी	३४१	५०००/-	१०००/-
१३४.	पं. सरोजकान्त द्विवेदी	कुण्डाचार्य	पुरी	३४२	५०००/-	१०००/-

सं.	नाम	पद	स्थान	कार्ड क्र.	दक्षिणा	मार्ग व्यय
१३५.	पं. मनोज जोशी	कुण्डाचार्य	कोटगीर	३५४	५०००/-	१४००/-
१३६.	पं. मोहन देव	कुण्डाचार्य	वाशिम	३५१	५०००/-	१२२०/-
१३७.	पं. परुण धिताल	कुण्डाचार्य	वाराणसी	२३९	४१००/-	
१३८.	पं. पातंजलि मिश्रा	कुण्डाचार्य	वाराणसी	२४२	४१००/-	
१३९.	पं. नारायण घनपाठी	कुण्डाचार्य	वाराणसी	२६०	४१००/-	
१४०.	पं. शेखर द्रविड़	कुण्डाचार्य	वाराणसी	२५९	४१००/-	
१४१.	पं. सुधाकर कापड़ी	कुण्डाचार्य	मुम्बई	२९९	५०००/-	११२०/-
१४२.	पं. प्रभाकर गोड़शे	कुण्डाचार्य	नासिक	३३५	५०००/-	१०२४/-
१४३.	पं. अनुपम दीक्षित	कुण्डाचार्य	वाराणसी	२५०	४१००/-	
१४४.	पं. रंगनाथ राजहंस	कुण्डाचार्य	तिरुचिरापल्ली	३५६	५०००/-	१४२५/-
१४५.	पं. उदय जोशी	कुण्डाचार्य	कोटगीर	३२४	५०००/-	१५००/-
१४६.	पं. जगन्नाथ पण्डित	कुण्डाचार्य	पंढरपुर	३५९	५०००/-	११९०/-
१४७.	पं. दक्षिणामूर्ति भट्ट	कुण्डाचार्य	हैदराबाद	३१५	५०००/-	११००/-
१४८.	पं. मन्दार फड़के	कुण्डाचार्य	पुणे	३६८	५०००/-	११००/-
१४९.	पं. राजेन्द्र हिवरेकर	कुण्डाचार्य	पंढरपुर	३६४	५०००/-	११९०/-
१५०.	पं. बाबूराव कुलकर्णी	कुण्डाचार्य	पंढरपुर	३६१	५०००/-	११९०/-
१५१.	पं. महेश राव	कुण्डाचार्य	देगलूर	३१७	५०००/-	१५००/-

सं.	नाम	पद	स्थान	कार्ड क्र.	दक्षिणा	मार्ग व्यय
१५२.	पं. राघव शर्मा	कुण्डाचार्य	धेगलूर	३१०	५०००/-	११००/-
१५३.	पं. ठाकुर प्रसाद जी	कुण्डाचार्य	गुवाहाटी	२८९	५०००/-	९७०/-
१५४.	पं. राधाकान्त जी	कुण्डाचार्य	गुवाहाटी	२९३	५०००/-	९७०/-
१५५.	पं. विनायक लिमकर	कुण्डाचार्य	बड़ौदा	३४०	५०००/-	११००/-
१५६.	पं. महेश गोडशे	कुण्डाचार्य	बड़ौदा	३३९	५०००/-	११००/-
१५७.	पं. चारुहास लिमकर	कुण्डाचार्य	बड़ौदा	३३७	५०००/-	११००/-
१५८.	पं. गोविंद शास्त्री घोड़ेकर	कुण्डाचार्य	जयपुर	२१४	५०००/-	९२५/-
१५९.	पं. वल्लभ पाठक	कुण्डाचार्य	भडौदा	२७०	५०००/-	११००/-
१६०.	पं. विवेक औंढेकर	कुण्डाचार्य	वाराणसी	२३०	४१००/-	
१६१.	पं. संजय ढवले	कुण्डाचार्य	वाशिम	३४९	५०००/-	१०२०/-
१६२.	पं. मदन मोहन जी	कुण्डाचार्य	गुवाहाटी	२९४	५०००/-	९७०/-
१६३.	पं. सर्वानन्द जी	कुण्डाचार्य	गुवाहाटी	२८८	५०००/-	९७०/-
१६४.	पं. जयमंगल जी	कुण्डाचार्य	गुवाहाटी	२८७	५०००/-	९७०/-
१६५.	पं. श्रीराम लोकरे	कुण्डाचार्य	विदिशा	३४७	५०००/-	८२४/-
१६६.	पं. विनायक वसंत पाठक	कुण्डाचार्य	वाशिम	३५२	५०००/-	१०२०/-
१६७.	पं. ओमप्रकाश मिश्रा	कुण्डाचार्य	गुवाहाटी	२९१	५०००/-	९७०/-
१६८.	पं. राजेश्वर पाण्डेय	कुण्डाचार्य	गुवाहाटी	२९०	५०००/-	९७०/-

सं.	नाम	पद	स्थान	कार्ड क्र.	दक्षिणा	मार्ग व्यय
१६९.	श्री ना.मा. जोशी	कुंड ब्रह्मा	गोकर्ण	२८१	५०००/-	१५००/-
१७०.	श्री व्यास नारायण शास्त्री	कुंड ब्रह्मा	वाराणसी	२२७	३०००/-	
१७१.	श्री गणपति चित्रगी मठ	कुंड ब्रह्मा	वाराणसी	३६६	३०००/-	
१७२.	श्री श्रीनिवास तिरुमलई	कुंड ब्रह्मा	वाराणसी	२३४	३०००/-	
१७३.	श्री सुभाष वाशिमकर	कुंड ब्रह्मा	वाराणसी	२४८	३०००/-	
१७४.	श्री नारायण मुनि	कुंड ब्रह्मा	वाराणसी	२१५	३०००/-	
१७५.	श्री वसंत जोशी	कुंड ब्रह्मा	वाराणसी	३८५	३०००/-	
१७६.	श्री नागेन्द्र कुमार मिश्र	कुंड ब्रह्मा	वाराणसी	३८७	३०००/-	
१७७.	श्री शिवाजी देवधर	कुंड ब्रह्मा	वाराणसी	२१६	३०००/-	
१७८.	श्री नरसिंह खुण्टे	कुंड ब्रह्मा	वाराणसी	२२४	३०००/-	
१७९.	श्री ओमेन्द्र दीक्षित	कुंड ब्रह्मा	वाराणसी	३५१	३०००/-	
१८०.	श्री सुरेश आत्माराम महाराज	कुंड ब्रह्मा	हैदराबाद	३०७	५०००/-	११००/-
१८१.	श्री अनंत कुलकर्णी	कुंड ब्रह्मा	कोटगीर	३१३	५०००/-	१५००/-
१८२.	श्री भक्तवत्सल खुण्टे	कुंड ब्रह्मा	वाराणसी	३७६	३०००/-	
१८३.	श्री गजानन सोमण	कुंड ब्रह्मा	वाराणसी	२३७	३०००/-	
१८४.	श्री राधेश्याम शर्मा	कुंड ब्रह्मा	वाराणसी	३६५	३०००/-	
१८५.	श्री मनोज व्यास	कुंड ब्रह्मा	वाराणसी	३७५	३०००/-	

सं.	नाम	पद	स्थान	कार्ड क्र.	दक्षिणा	मार्ग व्यय
१८६.	श्री संतोष जोशी	कुंड ब्रह्मा	मुम्बई	३०१	५०००/-	११२०/-
१८७.	श्री जितेन्द्र जोशी	कुंड ब्रह्मा	सूरत	३४८	५०००/-	११००/-
१८८.	श्री भास्कर केलकर	कुंड ब्रह्मा	वाराणसी	३७३	३०००/-	
१८९.	श्री जी. रामकृष्ण शर्मा	कुंड ब्रह्मा	हैदराबाद	३११	५०००/-	११००/-
१९०.	श्री भगवान जोशी	कुंड ब्रह्मा	हैदराबाद	३८६	५०००/-	११००/-
१९१.	श्री आर. अरविंद शर्मा	कुंड ब्रह्मा	हैदराबाद	३०८	५०००/-	११००/-
१९२.	श्री के. दत्तात्रय शर्मा	कुंड ब्रह्मा	हैदराबाद	३१९	५०००/-	११००/-
१९३.	श्री एस. दत्तात्रय	कुंड ब्रह्मा	हैदराबाद	३१८	५०००/-	११००/-
१९४.	श्री विपुल व्यास	कुंड ब्रह्मा	नासिक	३३८	५०००/-	१०२४/-
१९५.	श्री रोहित त्रिवेदी	कुंड ब्रह्मा	वाराणसी	३८८	३०००/-	
१९६.	पं. लक्ष्मण पुराणिक	कुंड ब्रह्मा	वाराणसी	३९४	३०००/-	
१९७.	पं. बालकृष्ण रामडोहकर	कुंड ब्रह्मा	वाराणसी	२५२	३०००/-	
१९८.	पं. ब्रजकिशोर त्रिवेदी	कुंड ब्रह्मा	वाराणसी	२६३	३०००/-	
१९९.	पं. जयवीर मिश्र	कुंड ब्रह्मा	वाराणसी	३९३	३०००/-	
२००.	पं. विजय राजहंस	कुंड ब्रह्मा	तिरुचिरापल्ली	३५५	५०००/-	१४२५/-
२०१.	पं. उदय कंठाले	कुंड ब्रह्मा	वाराणसी	३९२	३०००/-	
२०२.	पं. अभय पाण्डेय	कुंड ब्रह्मा	वाराणसी	३८९	३०००/-	

सं.	नाम	पद	स्थान	कार्ड क्र.	दक्षिणा	मार्ग व्यय
२०३.	पं. व्यंकट कुलकर्णी	कुंड ब्रह्मा	हैदराबाद	३२९	३०००/-	
२०४.	पं. उदय गुरुजी	कुंड ब्रह्मा	वाराणसी	३७९	३०००/-	
२०५.	पं. रतन पुणतांबेकर	कुंड ब्रह्मा	वाराणसी	३७८	३०००/-	
२०६.	पं. सुशील पाण्डेय	कुंड ब्रह्मा	वाराणसी	३९०	३०००/-	
२०७.	पं. दिनकर देव	कुंड ब्रह्मा	वाराणसी	२४४	३०००/-	
२०८.	पं. चंद्रशेखर जोशी	कुंड ब्रह्मा	वाराणसी	३८४	३०००/-	
२०९.	पं. विवेक गोडशे	कुंड ब्रह्मा	वाराणसी	२५४	३०००/-	
२१०.	पं. रामशंकर चौरहा	कुंड ब्रह्मा	वाराणसी	२६४	३०००/-	
२११.	पं. दामोदर कवि	कुंड ब्रह्मा	वाराणसी	३८०	३०००/-	
२१२.	पं. दिवाकर वेदांति	कुंड ब्रह्मा	वाराणसी	२१७	३०००/-	
२१३.	पं. प्रशान्त परांजपे	कुंड ब्रह्मा	वाराणसी	२२५	३०००/-	
२१४.	पं. मनोज पाण्डेय	कुंड ब्रह्मा	वाराणसी	३९७	३०००/-	
२१५.	पं. रामचन्द्र रामडोहकर	कुंड ब्रह्मा	वाराणसी	३७४	३०००/-	
२१६.	पं. शरद मोघे	कुंड ब्रह्मा	वाराणसी	२५८	३०००/-	
२१७.	पं. राधे जी परब्रह्म	कुंड ब्रह्मा	वाराणसी	२२२	३०००/-	
२१८.	पं. गंगाधर मिश्र	कुंड ब्रह्मा	वाराणसी	३७७	३०००/-	
२१९.	पं. संतोष व्यास	कुंड ब्रह्मा	वाराणसी	२७६	३०००/-	

सं.	नाम	पद	स्थान	कार्ड क्र.	दक्षिणा	मार्ग व्यय
२२०.	पं. विनोद गणोरकर	कुंड ब्रह्मा	वाराणसी	२४६	३०००/-	
२२१.	पं. सुनील सप्रे	कुंड ब्रह्मा	वाराणसी	२३२	३०००/-	
२२२.	पं. बटुकनाथ पाठक कारखेडकर	कुंड ब्रह्मा	वाराणसी	२१०	३०००/-	
२२३.	पं. बैजनाथ पायगुण्डे	कुंड ब्रह्मा	वाराणसी	२६९	३०००/-	
२२४.	पं. पुरुषोत्तम बाजपेयी	कुंड ब्रह्मा	वाराणसी	२०७	३०००/-	
२२५.	पं. जयराम जोशी	कुंड ब्रह्मा	वाराणसी	२५६	३०००/-	
२२६.	पं. विजय पाँचवाक्कर	कुंड ब्रह्मा	वाराणसी	२४९	३०००/-	
२२७.	पं. श्रीकृष्ण रटाटे	कुंड ब्रह्मा	वाराणसी	२८५	३०००/-	
२२८.	पं. बैजनाथ पंत पुण तंबेकर	कुंड ब्रह्मा	वाराणसी	२४५	३०००/-	
२२९.	पं. मित्रलाल न्यौपाने	कुंड ब्रह्मा	वाराणसी	३८२	३०००/-	
२३०.	पं. शरद मिश्रा	कुंड ब्रह्मा	मुम्बई	३०२	५०००/-	११२०/-
२३१.	पं. योगेश भण्डारी	कुंड ब्रह्मा	मुम्बई	३००	५०००/-	११२०/-
२३२.	पं. भगवान परिच्छा	कुंड ब्रह्मा	पुरी	३४४	५०००/-	११२०/-
२३३.	पं. गोपाल महापात्र	कुंड ब्रह्मा	पुरी	३४५	५०००/-	१०००/-
२३४.	पं. एम. मोहन शर्मा	कुंड ब्रह्मा	हैदराबाद	३०९	५०००/-	११००/-
२३५.	पं. के.बी. सत्यशामल राव	कुंड ब्रह्मा	हैदराबाद	३१६	५०००/-	११००/-
२३६.	पं. अनंतराय जे. व्यास	कुंड ब्रह्मा	सूरत	३४६	५०००/-	११००/-

सं.	नाम	पद	स्थान	कार्ड क्र.	दक्षिणा	मार्ग व्यय
२३७.	पं. मंगलेश्वर पाठक	कुंड ब्रह्मा	वाराणसी	२२३	३०००/-	
२३८.	पं. रामकृष्ण बाँधवकर	कुंड ब्रह्मा	वाराणसी	२४१	३०००/-	
२३९.	पं. श्रीकृष्ण पेठकर	कुंड ब्रह्मा	वाराणसी	२६५	३०००/-	
२४०.	पं. अभिनन्दन देशमुख	कुंड ब्रह्मा	देगलूर	३२५	५०००/-	१५००/-
२४१.	पं. हरीश श्यामसुन्दर जोशी	कुंड ब्रह्मा	नासिक	३३३	५०००/-	१०२४/-
२४२.	पं. अशोक त्रिवेदी	कुंड ब्रह्मा	वाराणसी	२४७	३०००/-	
२४३.	पं.अविनाश मंडलीकर	कुंड ब्रह्मा	वाराणसी	३८१	३०००/-	
२४४.	पं. मुकुन्द पुणतांबेकर	कुंड ब्रह्मा	वाराणसी	३९८	३०००/-	
२४५.	पं. लक्ष्मण जी	कुंड ब्रह्मा	वाराणसी	३९९	३०००/-	
२४६.	पं. षडानन पाठक	कुंड ब्रह्मा	वाराणसी	४००	३०००/-	
२४७.	पं. गणेश दत्त पाण्डेय	कुंड ब्रह्मा	वाराणसी	२७२	३०००/-	
२४८.	पं. नारायण गोटेकर	कुंड ब्रह्मा	पंढरपुर	३६३	५०००/-	११९०/-
२४९.	पं. दुर्गादत्त गुणवन्त	कुंड ब्रह्मा	वाराणसी	२०२	३०००/-	
२५०.	पं. सदानन्द गोटेकर	कुंड ब्रह्मा	पंढरपुर	३६२	५०००/-	११९०/-
२५१.	पं. सुबोध पालन्दे	कुंड ब्रह्मा	वाराणसी	२५५	३०००/-	
२५२.	पं. प्रभुशंकर शुक्ला	कुंड ब्रह्मा	वाराणसी	२०३	३०००/-	
२५३.	पं. अशोक कुमार द्विवेदी	कुंड ब्रह्मा	वाराणसी	२७७	३०००/-	

सं.	नाम	पद	स्थान	कार्ड क्र.	दक्षिणा	मार्ग व्यय
२५४.	पं. केयूर पुरोहित	कुंड ब्रह्मा	नासिक	३३२	५०००/-	१०५४/-
२५५.	पं. भाऊ कस्तुरे	कुंड ब्रह्मा	वाराणसी	२७९	३०००/-	
२५६.	पं. बालकृष्ण त्रिपाठी	कुंड ब्रह्मा	वाराणसी	२८०	३०००/-	
२५७.	पं. रत्नेश पालने	कुंड ब्रह्मा	वाराणसी	२८४	३०००/-	
२५८.	पं. कृष्ण वल्लभ पाठक	कुंड ब्रह्मा	वाराणसी	२४०	३०००/-	
२५९.	पं. जगन्नाथ रथ	कुंड ब्रह्मा	पुरी	३४३	५०००/-	१०००/-
२६०.	पं. अर्चित महाड़कर	कुंड ब्रह्मा	वाराणसी	२३५	३०००/-	
२६१.	पं. रामावतार मिश्र	कुंड ब्रह्मा	वाराणसी	३२१	३०००/-	
२६२.	पं. अरविन्द कुमार तिवारी	कुंड ब्रह्मा	वाराणसी	३४७	३०००/-	
२६३.	पं. कालिकानन्दन झा	कुंड ब्रह्मा	वाराणसी	३५७	३०००/-	
२६४.	पं. रामबच्चन पाण्डेय	कुंड ब्रह्मा	वाराणसी	३६९	३०००/-	
२६५.	पं. नारायण पाण्डेय	कुंड ब्रह्मा	वाराणसी	३६१	३०००/-	
२६६.	पं. कृष्ण प्रसाद सुवेदी	कुंड ब्रह्मा	वाराणसी	३९५	३०००/-	
२६७.	पं. सुभाष भागवत	कुंड ब्रह्मा	वाराणसी	३९६	३०००/-	
२६८.	पं. कन्हैया लाल पण्ड्या	होता	वाराणसी	९८	२१००/-	
२६९.	पं. सुरेश चन्द्र पाण्डेय	होता	वाराणसी	१९५	२१००/-	
२७०.	पं. इन्द्रेश प्रसाद पाण्डेय	होता	वाराणसी	२१	२१००/-	

सं.	नाम	पद	स्थान	कार्ड क्र.	दक्षिणा	मार्ग व्यय
२७१.	पं. नीरज कुमार	होता	वाराणसी	२२	२१००/-	
२७२.	पं. किशोर पचौरी	होता	वाराणसी	४२	२१००/-	
२७३.	पं. पुनीत कुमार द्विवेदी	होता	वाराणसी	४३	२१००/-	
२७४.	पं. दीपक रंजन दास	होता	वाराणसी	३८	२१००/-	
२७५.	पं. सूरज नारायण मिश्र	होता	वाराणसी	३९	२१००/-	
२७६.	पं. विनय कुमार पाण्डे	होता	वाराणसी	४०	२१००/-	
२७७.	पं. वसंत कुमार बिरथरे	होता	वाराणसी	४१	२१००/-	
२७८.	पं. इन्द्रेश कुमार पाण्डेय	होता	वाराणसी	५२	२१००/-	
२७९.	पं. धीरेन्द्र कुमार मिश्र	होता	वाराणसी	५३	२१००/-	
२८०.	पं. धनंजय पाठक	होता	वाराणसी	५४	२१००/-	
२८१.	पं. किशोर चंद पचौली	होता	वाराणसी	५६	२१००/-	
२८२.	पं. अखिलेश मिश्र	होता	वाराणसी	७०	२१००/-	
२८३.	पं. अशोक दुबे	होता	वाराणसी	७१	२१००/-	
२८४.	पं. गजाधर अधिकारी	होता	वाराणसी	८०	२१००/-	
२८५.	पं. विश्वंभर पाठक	होता	वाराणसी	८१	२१००/-	
२८६.	पं. हरिचंद्र तिवारी	होता	वाराणसी	२३	२१००/-	
२८७.	पं. महेशानन्द सुयाल	होता	वाराणसी	२४	२१००/-	

सं.	नाम	पद	स्थान	कार्ड क्र.	दक्षिणा	मार्ग व्यय
२८८.	पं. पतन कुमार पाण्डेय	होता	वाराणसी	३६	२१००/-	
२८९.	पं. शिव नारायण शर्मा	होता	वाराणसी	३७	२१००/-	
२९०.	पं. अनिकेत कुलकर्णी	होता	वाराणसी	१५२	२१००/-	
२९१.	पं. श्रीनिधि देव	होता	वाराणसी	१५७	२१००/-	
२९२.	पं. कमलेश मिश्र	होता	वाराणसी	१५१	२१००/-	
२९३.	पं. अशोक कुमार पाण्डेय	होता	वाराणसी	१५६	२१००/-	
२९४.	पं. श्यामानन्द त्रिपाठी	होता	वाराणसी	१००	२१००/-	
२९५.	पं. दामोदर सुयाल	होता	वाराणसी	१०१	२१००/-	
२९६.	पं. पवन कुमार झा	होता	वाराणसी	४४	२१००/-	
२९७.	पं. लक्ष्मण शर्मा	होता	वाराणसी	४५	२१००/-	
२९८.	पं. उमेश पाण्डेय	होता	वाराणसी	८४	२१००/-	
२९९.	पं. राकेश कुमार भार्गव	होता	वाराणसी	८५	२१००/-	
३००.	पं. अमर चन्द्र ठाकुर	होता	वाराणसी	४६	२१००/-	
३०१.	पं. अशोक कुमार चौधरी	होता	वाराणसी	४७	२१००/-	
३०२.	पं. भोलानाथ चतुर्वेदी	होता	वाराणसी	१४५	२१००/-	
३०३.	पं. योगेश शास्त्री	होता	वाराणसी	१४६	२१००/-	
३०४.	पं. केशव प्रसाद न्यौपाने	होता	वाराणसी	६४	२१००/-	

सं.	नाम	पद	स्थान	कार्ड क्र.	दक्षिणा	मार्ग व्यय
३०५.	पं. भगवती प्रसाद द्विवेदी	होता	वाराणसी	६६	२१००/-	
३०६.	पं. पूर्णेन्द्र कुमार मिश्र	होता	वाराणसी	८२	२१००/-	
३०७.	पं. सूर्यकान्त त्रिपाठी	होता	वाराणसी	८३	२१००/-	
३०८.	पं. धनंजय कुमार आचार्य	होता	वाराणसी	४८	२१००/-	
३०९.	पं. दिगम्बर चन्द ठाकुर	होता	वाराणसी	४९	२१००/-	
३१०.	पं. दीन दयाल शर्मा	होता	वाराणसी	१४८	२१००/-	
३११.	पं. प्रकाश चन्द्र नेलवाल	होता	वाराणसी	१४९	२१००/-	
३१२.	पं. निरंजन कुमार पाण्डेय	होता	वाराणसी	१३६	२१००/-	
३१३.	पं. अजीत कुमार पाण्डेय	होता	वाराणसी	१३७	२१००/-	
३१४.	पं. गोपाल जी नन्द	होता	वाराणसी	१३४	२१००/-	
३१५.	पं. सुधीर कुमार पाण्डेय	होता	वाराणसी	१३५	२१००/-	
३१६.	पं. वैकुण्ठ नाथ पाण्डेय	होता	वाराणसी	१३२	२१००/-	
३१७.	पं. श्रीनाथ पाण्डेय	होता	वाराणसी	१३३	२१००/-	
३१८.	पं. हरीश कुमार शर्मा	होता	वाराणसी	१३०	२१००/-	
३१९.	पं. शशिभूषण तिवारी	होता	वाराणसी	१३१	२१००/-	
३२०.	पं. नारायण भारद्वाज	होता	वाराणसी	१२८	२१००/-	
३२१.	पं. शिवेश कुमार शर्मा	होता	वाराणसी	१२९	२१००/-	

सं.	नाम	पद	स्थान	कार्ड क्र.	दक्षिणा	मार्ग व्यय
३२२.	पं. नीलेश कुमारी तिवारी	होता	वाराणसी	१२४	२१००/-	
३२३.	पं. कृष्ण कुमार भार्गव	होता	वाराणसी	१२५	२१००/-	
३२४.	पं. अर्जुन प्रसाद चौबे	होता	वाराणसी	१८४	२१००/-	
३२५.	पं. सुरेश कुमार मिश्र	होता	वाराणसी	१८५	२१००/-	
३२६.	पं. दिव्यांशु शेखर मिश्र	होता	वाराणसी	९	२१००/-	
३२७.	पं. महेश शर्मा	होता	वाराणसी	१०	२१००/-	
३२८.	पं. अरविंद त्रिपाठी	होता	वाराणसी	३३	२१००/-	
३२९.	पं. विद्याधर त्रिपाठी	होता	वाराणसी	३४	२१००/-	
३३०.	पं. सुशील कुमार पाठक	होता	वाराणसी	१८०	२१००/-	
३३१.	पं. अखिलेश कुमार मिश्र	होता	वाराणसी	१८१	२१००/-	
३३२.	पं. नवीन पाण्डेय	होता	वाराणसी	३५	२१००/-	
३३३.	पं. अशोक द्विवेदी	होता	वाराणसी	६५	२१००/-	
३३४.	पं. नीरज कुमार मिश्र	होता	वाराणसी	१७८	२१००/-	
३३५.	पं. कैलाशपति	होता	वाराणसी	१७९	२१००/-	
३३६.	पं. नीतेश्वर शुक्ल	होता	वाराणसी	१८२	२१००/-	
३३७.	पं. कृष्ण कुमार मिश्र	होता	वाराणसी	१८३	२१००/-	
३३८.	पं. शिव विजय पाण्डेय	होता	वाराणसी	१३८	२१००/-	

सं.	नाम	पद	स्थान	कार्ड क्र.	दक्षिणा	मार्ग व्यय
३३९.	पं. रमाकान्त मिश्र	होता	वाराणसी	१४०	२१००/-	
३४०.	पं. संदीप कुमार तिवारी	होता	वाराणसी	१६२	२१००/-	
३४१.	पं. संजय त्रिपाठी	होता	वाराणसी	१६४	२१००/-	
३४२.	पं. सुमन्त पाठक	होता	वाराणसी	१५९	२१००/-	
३४३.	पं. जयशंकर शुक्ल	होता	वाराणसी	१६०	२१००/-	
३४४.	पं. संजय कुमार मिश्र	होता	वाराणसी	१८६	२१००/-	
३४५.	पं. विजय कुमार तिवारी	होता	वाराणसी	१८७	२१००/-	
३४६.	पं. रामचन्द्र उपाध्याय	होता	वाराणसी	५०	२१००/-	
३४७.	पं. आत्ममित्र त्रिपाठी	होता	वाराणसी	५१	२१००/-	
३४८.	पं. मुकेश कुमार दुबे	होता	वाराणसी	६७	२१००/-	
३४९.	पं. सुनील चौबे	होता	वाराणसी	६९	२१००/-	
३५०.	पं. अजय उपाध्याय	होता	वाराणसी	७९	२१००/-	
३५१.	पं. सत्य प्रकाश पाठक	होता	वाराणसी	७४	२१००/-	
३५२.	पं. भुवन भास्कर उपाध्याय	होता	वाराणसी	७२	२१००/-	
३५३.	पं. पंकज मिश्र	होता	वाराणसी	७३	२१००/-	
३५४.	पं. विशाल औंढेकर	होता	वाराणसी	१५३	२१००/-	
३५५.	पं. धर्म प्रसाद शर्मा	होता	वाराणसी	१६१	२१००/-	

सं.	नाम	पद	स्थान	कार्ड क्र.	दक्षिणा	मार्ग व्यय
३५६.	पं. श्याम बहादुर पाण्डेय	होता	वाराणसी	५५	२१००/-	
३५७.	पं. राजेन्द्र कुमार पाण्डेय	होता	वाराणसी	५७	२१००/-	
३५८.	पं. विष्णु प्रसाद दुबे	होता	वाराणसी	११९	२१००/-	
३५९.	पं. राजेश कुमार दुबे	होता	वाराणसी	१२०	२१००/-	
३६०.	पं. प्रदीप स्वामी	होता	वाराणसी	१२२	२१००/-	
३६१.	पं. दिनेश मणि दुबे	होता	वाराणसी	१२३	२१००/-	
३६२.	पं. राम नारायण शर्मा	होता	वाराणसी	३१	२१००/-	
३६३.	पं. जितेन्द्र कुमार तिवारी	होता	वाराणसी	३२	२१००/-	
३६४.	पं. मनोज कृष्ण ओझा	होता	वाराणसी	२७	२१००/-	
३६५.	पं. डिल्ली राज ओझा	होता	वाराणसी	२८	२१००/-	
३६६.	पं. वैकुण्ठ शर्मा	होता	वाराणसी	२९	२१००/-	
३६७.	पं. महेन्द्र कुमार गंगेले	होता	वाराणसी	३०	२१००/-	
३६८.	पं. विजय शंकर पाण्डेय	होता	वाराणसी	१९४	२१००/-	
३६९.	पं. मिथिलेश शुक्ल	होता	वाराणसी	१९६	२१००/-	
३७०.	पं. श्रीकांत पाण्डेय	होता	वाराणसी	७६	२१००/-	
३७१.	पं. दीनदयाल पाण्डेय	होता	वाराणसी	७७	२१००/-	
३७२.	पं. टंक शर्मा	होता	वाराणसी	६०	२१००/-	

सं.	नाम	पद	स्थान	कार्ड क्र.	दक्षिणा	मार्ग व्यय
३७३.	पं. राम नारायण पाण्डे	होता	वाराणसी	६१	२१००/-	
३७४.	पं. ईश्वर प्रसाद शर्मा	होता	वाराणसी	५८	२१००/-	
३७५.	पं. विनोद शर्मा	होता	वाराणसी	५९	२१००/-	
३७६.	पं. अमरनाथ पाण्डेय	होता	वाराणसी	६२	२१००/-	
३७७.	पं. कृष्ण प्रसाद न्यौपाने	होता	वाराणसी	६३	२१००/-	
३७८.	पं. महेश कुमार पाण्डे	होता	वाराणसी	१९	२१००/-	
३७९.	पं. अवधेश नारायण त्रिपाठी	होता	वाराणसी	२०	२१००/-	
३८०.	पं. रमाशंकर मिश्र	होता	वाराणसी	१७	२१००/-	
३८१.	पं. रमाकांत तिवारी	होता	वाराणसी	१८	२१००/-	
३८२.	पं. जयशंकर पाण्डेय	होता	वाराणसी	१५	२१००/-	
३८३.	पं. ओंकार नाथ पाठक	होता	वाराणसी	१६	२१००/-	
३८४.	पं. अक्षय कुमार पाण्डेय	होता	वाराणसी	१३	२१००/-	
३८५.	पं. पप्पू कुमार पाण्डेय	होता	वाराणसी	१४	२१००/-	
३८६.	पं. कुमार गौरव	होता	वाराणसी	११	२१००/-	
३८७.	पं. पंकज कुमार शास्त्री	होता	वाराणसी	१२	२१००/-	
३८८.	पं. उमाशंकर पटेरिया	होता	वाराणसी	७	२१००/-	
३८९.	पं. भूपेन्द्र मिश्र	होता	वाराणसी	८	२१००/-	

सं.	नाम	पद	स्थान	कार्ड क्र.	दक्षिणा	मार्ग व्यय
३९०.	पं. गणेश पाठक	होता	वाराणसी	९६	२१००/-	
३९१.	पं. पीताम्बर नाथ पाण्डे	होता	वाराणसी	९९	२१००/-	
३९२.	पं. महेन्द्र तिवारी	होता	वाराणसी	९५	२१००/-	
३९३.	पं. सन्तोष कुमार गर्ग	होता	वाराणसी	९४	२१००/-	
३९४.	पं. पवन कुमार पाण्डेय	होता	वाराणसी	९०	२१००/-	
३९५.	पं. राकेश कुमार शुक्ल	होता	वाराणसी	९२	२१००/-	
३९६.	पं. आमोद झा	होता	वाराणसी	१०४	२१००/-	
३९७.	पं. शिवशरण तिवारी	होता	वाराणसी	१०५	२१००/-	
३९८.	पं. जयप्रकाश पाठक	होता	वाराणसी	१०६	२१००/-	
३९९.	पं. शिवशंकर मिश्र	होता	वाराणसी	१०७	२१००/-	
४००.	पं. दीनदयाल पाण्डेय	होता	वाराणसी	११५	२१००/-	
४०१.	पं. दिनेश चन्द्र जोशी	होता	वाराणसी	११६	२१००/-	
४०२.	पं. अवधेश पाण्डे	होता	वाराणसी	११७	२१००/-	
४०३.	पं. महेन्द्र कुमार दुबे	होता	वाराणसी	११८	२१००/-	
४०४.	पं. नारायण तिवारी	होता	वाराणसी	८६	२१००/-	
४०५.	पं. सुधाकर पाण्डेय	होता	वाराणसी	८७	२१००/-	
४०६.	पं. जय किशोर द्विवेदी	होता	वाराणसी	१	२१००/-	

सं.	नाम	पद	स्थान	कार्ड क्र.	दक्षिणा	मार्ग व्यय
४०७.	पं. रामनरेश द्विवेदी	होता	वाराणसी	२	२१००/-	
४०८.	पं. नीरज तिवारी	होता	वाराणसी	५	२१००/-	
४०९.	पं. चन्द्रकान्त पाठक	होता	वाराणसी	६	२१००/-	
४१०.	पं. संदीप कुमार शुक्ल	होता	वाराणसी	३	२१००/-	
४११.	पं. अनिल कुमार पाण्डेय	होता	वाराणसी	४	२१००/-	
४१२.	पं. प्रह्लाद ठाकुर	होता	वाराणसी	१०२	२१००/-	
४१३.	पं. दिनेश कुमार शर्मा	होता	वाराणसी	१०३	२१००/-	
४१४.	पं. माधव पेटी	होता	वाराणसी	१२६	२१००/-	
४१५.	पं. अरविंद लिटोरिया	होता	वाराणसी	१२७	२१००/-	
४१६.	पं. माधव दास	होता	वाराणसी	२५	२१००/-	
४१७.	पं. लालन पाठक	होता	वाराणसी	२६	२१००/-	
४१८.	पं. राजेन्द्र प्रसाद चौबे	होता	वाराणसी	१७६	२१००/-	
४१९.	पं. गौरी शंकर मिश्र	होता	वाराणसी	१७७	२१००/-	
४२०.	पं. कृष्ण प्रसाद	होता	वाराणसी	१५८	२१००/-	
४२१.	पं. दिनेश उपाध्याय	होता	वाराणसी	९३	२१००/-	
४२२.	पं. शतेन्दु तिवारी	होता	वाराणसी	१४२	२१००/-	
४२३.	पं. शिव प्रकाश मिश्र	होता	वाराणसी	१४३	२१००/-	

सं.	नाम	पद	स्थान	कार्ड क्र.	दक्षिणा	मार्ग व्यय
४२४.	पं. प्रदीप शर्मा	होता	वाराणसी	१४१	२१००/-	
४२५.	पं. मदन मोहन पाण्डेय	होता	वाराणसी	१४७	२१००/-	
४२६.	पं. अनुज कुमार शुक्ल	होता	वाराणसी	१९२	२१००/-	
४२७.	पं. मुकेश मिश्र	होता	वाराणसी	१९३	२१००/-	
४२८.	पं. सुधीर मिश्र	होता	वाराणसी	१३९	२१००/-	
४२९.	पं. गजेन्द्र तिवारी	होता	वाराणसी	९१	२१००/-	
४३०.	पं. आशुतोष पाण्डेय	होता	वाराणसी	१०९	२१००/-	
४३१.	पं. राकेश तिवारी	होता	वाराणसी	१२१	२१००/-	
४३२.	पं. रामानुज पाण्डेय	होता	वाराणसी	१६५	२१००/-	
४३३.	पं. सच्चिदानंद द्विवेदी	होता	वाराणसी	१६३	२१००/-	
४३४.	पं. दुर्गेश पाण्डेय	होता	वाराणसी	१५०	२१००/-	
४३५.	पं. देवनन्दन पाण्डेय	होता	वाराणसी	१५५	२१००/-	
४३६.	पं.भगवत् तिवारी	होता	वाराणसी	११३	२१००/-	
४३७.	पं. हरिनारायण पाण्डेय	होता	वाराणसी	११४	२१००/-	
४३८.	पं. रामदेव प्रसाद पाण्डेय	होता	वाराणसी	११२	२१००/-	
४३९.	पं. ओंकार पाण्डेय	होता	वाराणसी	११०	२१००/-	
४४०.	पं. रवीश कुमार शुक्ल	होता	वाराणसी	१७३	२१००/-	

सं.	नाम	पद	स्थान	कार्ड क्र.	दक्षिणा	मार्ग व्यय
४४१.	पं. संतोष देव पाण्डे	होता	चुनार	१७५	२१००/-	
४४२.	पं. संतोष कुमार शुक्ल	होता	चुनार	१७२	२१००/-	
४४३.	पं. श्रीकांत तिवारी	होता	चुनार	१७४	२१००/-	
४४४.	पं. कृष्णानंद मिश्र	होता	चुनार	१८८	२१००/-	
४४५.	पं. राजकुमार पाण्डेय	होता	चुनार	१८९	२१००/-	
४४६.	पं. राकेश तिवारी	होता	चुनार	१९७	२१००/-	
४४७.	पं. उमेश कुमार शुक्ल	होता	चुनार	१९९	२१००/-	
४४८.	पं. रामनारायण द्विवेदी	होता	चुनार	१७०	२१००/-	
४४९.	पं. राम प्रकाश पाण्डेय	होता	चुनार	१७८	२१००/-	
४५०.	पं. श्रीमन्नारायण तिवारी	होता	चुनार	३८	२१००/-	
४५१.	पं. लवकुश पाण्डेय	होता	चुनार	३९	२१००/-	
४५२.	पं. ब्रजेश मिश्र	होता	चुनार	१४४	२१००/-	
४५३.	पं. अनूप पुराणिक	होता	चुनार	१५४	२१००/-	
४५४.	पं. धनंजय मणि शुक्ल	होता	चुनार	१६६	२१००/-	
४५५.	पं. सुधाकर मिश्र	होता	चुनार	१६७	२१००/-	
४५६.	पं. संजय कुमार द्विवेदी	होता	चुनार	१११	२१००/-	
४५७.	पं. संजय कुमार पाण्डेय	होता	वाराणसी	१०८	२१००/-	

सं.	नाम	पद	स्थान	कार्ड क्र.	दक्षिणा	मार्ग व्यय
४५८.	पं. अरविंद शुक्ल	होता	चुनार	१६८	२१००/-	
४५९.	पं. दामोदर शर्मा	होता	चुनार	१६९	२१००/-	
४६०.	पं. हरिनारायण शास्त्री	होता	चुनार	१९०	२१००/-	
४६१.	पं. दिनेश कुमार पाण्डेय	होता	चुनार	१९१	२१००/-	
४६२.	पं. नीरज पेटी	होता	चुनार	१९८	२१००/-	
४६३.	पं. गरुड़ मिश्र	होता	चुनार	२००	२१००/-	
४६४.	पं. चंद्रिका प्रसाद मिश्र	होता	चुनार	६८	२१००/-	
४६५.	पं. शिवाकान्त गौतम	होता	मैहर	७५	२१००/-	
४६६.	पं. ब्रजरात कुमार द्विवेदी	होता	सतना	७८	२१००/-	
४६७.	पं. द्वारिका प्रसाद व्यास	होता	सतना	९७	२१००/-	

शतमुख कोटि होमात्मक श्रीराम महायज्ञ प्रारम्भ

सर्वप्रायश्चित्त कर्मों से निवृत्त यजमानों ने धारण किये यज्ञोपवीत

गणपति पूजन व यज्ञ संकल्प के साथ यज्ञशाला मण्डप में शुभ प्रवेश

वाराणसी, १६ जनवरी। शताब्दियों बाद देश की आध्यात्मिक राजधानी काशी के वैष्णव तीर्थ खण्ड में आयोजित नौ दिवसीय शतमुख कोटि होमात्मक श्रीराम महायज्ञ के अनुष्ठानों का शुभारंभ आज सर्व प्रायश्चित्त के वैदिक विधानों के साथ हुआ। यज्ञ में भागीदारी के पुण्य लाभ की आकांक्षा से देश के कोने-कोने से आये शताधिक श्रद्धालुओं ने प्रायश्चित्त का संकल्प लिया और शुद्धिकरण के विविध कर्मों से निवृत्त होकर यज्ञमान के रूप में आचार्यों से यज्ञोपवीत प्राप्त किया।

यज्ञ संकल्प के साथ ये सभी यज्ञमान १७ जनवरी को पवित्र तीर्थों के जल से पूरित कलशों के साथ यज्ञ मण्डप में प्रवेश करेंगे। मुख्य आचार्य, आचार्यों, याज्ञिक और होताओं के मधुपर्क पूजन अनुष्ठानों के उपरांत देवस्थापन, देव पूजा तथा मण्डप की पूजा की विधियाँ १८ जनवरी को सम्पन्न होंगी। अरणिमंथन से प्रकट पवित्र अग्नि का यज्ञ कुण्डों में स्थापन १९ जनवरी को होगा। आहुतियों का विधिवत क्रम २० जनवरी से प्रारम्भ होगा। २४ जनवरी तक कुल एक करोड़ आहुतियों के बाद यज्ञ की पूर्णाहुति होगी।

दूर-दराज के श्रद्धालुओं के आगमन व्यतिक्रम के चलते टाउनहाल स्थित यज्ञशाला परिसर में पूर्वाह्न नौ बजे से आयोजित सर्वप्रायश्चित्त अनुष्ठान काफी विलम्ब से प्रारम्भ हो पाया। यज्ञ में भाग लेने वाले श्रद्धालुजन जैसे-जैसे वहाँ पहुँचे उसी क्रम में उन्हें पंक्तिबद्ध करके संकल्प धारण कराया गया। सर्वप्रायश्चित्त संकल्प अनुष्ठान के दौरान वहाँ विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित आयकर आयुक्त आर. के. सिंह ने विद्वत्जनों, आचार्यों तथा श्रद्धालुओं का स्वागत किया।

संकल्प धारण करने के उपरांत सभी श्रद्धालु जय-जय सीताराम का जयघोष करते पंचगंगा घाट पहुँचे और स्नान क्षौरादि कर्मों से निवृत्त हो पंचगव्यादिप्राशन आदि शुद्धिकरण के विविध रीतियों से गुजरे। गुरु पूजन, ब्राह्मण पूजन तथा दानादि कर्मों से निवृत्ति के बाद यज्ञ-आचार्यों ने उन्हें यज्ञमान रूप में स्वीकार करते हुए पवित्र यज्ञोपवीत प्रदान किये। महायज्ञ के यजमानों के आचार्यों के अलावा बड़ी संख्या में श्रद्धालु काशीवासी भी साक्षी रूप में इस पुनीत अनुष्ठान में सहभागी बने। जगद्गुरु

रामानन्दाचार्य स्वामी रामनरेशाचार्य ने प्रायश्चित्त के उपरांत भद्र यजमान स्वरूप में उपस्थित सभी श्रद्धालुओं को आशीर्वाद प्रदान किया।

उल्लेखनीय बात यह रही कि श्रीराम नाम के आमोघ मंत्रों से अर्पित की जाने वाली करोड़ आहुतियों वाले इस महायज्ञ के सर्वप्रायश्चित्त अनुष्ठान की पंक्तियों में सभी जाति-वर्गों के श्रद्धालुजनों ने एकसाथ संकल्प ग्रहण किया। हरियाणा के चौधरी परिवार चण्डीगढ़ के मित्तल परिवार, विहार के तिवारी और पाण्डेय परिवारों के अलावा महाराष्ट्र के राव परिवार, मध्य प्रदेश के चतुर्वेदी और प्रतिष्ठित ठाकुर परिवार के सदस्यों सहित मराठवाड़ा और उज्जैन के हरिजन परिवारों और वनवासी-गिरिवासी क्षेत्रों के दलित-पिछड़े वर्गों के प्रतिनिधि भी संकल्प लेने के लिए वहाँ पंक्तिबद्ध थे।

जगद्गुरु रामानन्दाचार्य स्वामी रामनरेशाचार्य, यज्ञ के संयोजक पण्डित गणेश्वर शास्त्री द्रविड़ तथा यज्ञ के मुख्य आचार्य श्रीकृष्ण लक्ष्मीकांत पुराणिक ने बताया कि रामानन्दाचार्य सप्तशताब्दी महोत्सव के समापन के उपलक्ष्य में आयोजित इस ऐतिहासिक महायज्ञ में भागीदारी की पात्रता जाति-धर्म भाषा या प्रांत पर आधारित नहीं है। देह की शुद्धता और विचारों की पवित्रता ही यज्ञ में भागीदारी का एकमेव पात्रता आधार है।

शिव संहिता : श्रीराम यज्ञ की महिमा

वाराणसी, १९ जनवरी। शास्त्रों में यज्ञ को परमात्मा का स्वरूप बताया गया है। ईशावास्य उपनिषद् में कहा गया है कि जगत् की सारी वस्तुएँ परमेश्वर से व्याप्त हैं। उस परमात्मा को वस्तुएँ समर्पित करके इन्हें प्रसाद रूप में ही ग्रहण करना चाहिए।

गीतावाक्य के अनुसार यज्ञ, दान एवं तप ये तीनों ही कार्य पावन माने जाते हैं। कहा गया है कि यज्ञ के दर्शन से भी लोग पवित्र हो जाते हैं। शतमुख कोटि होमात्मक श्रीराम महायज्ञ के संयोजक तथा कर्मकाण्डीय विद्वान्-वेदज्ञ गणेश्वर शास्त्री द्रविड़ के अनुसार यज्ञ की अनन्त महिमा वेद-शास्त्र-पुराणादि ग्रंथों में वर्णित है। यज्ञ की महिमा एवं गरिमा को दृष्टिगत रखते हुए भारतीयों ने अनादिकाल से यज्ञानुष्ठानों को अपनाया है।

यज्ञ के विभिन्न प्रकारों में श्रौतयज्ञ एवं स्मार्तयज्ञ अत्यन्त प्रसिद्ध हैं। श्रौत यज्ञों का अनुष्ठान श्रौताग्नि को धारण किये हुए अग्निहोत्री ही कर पाते हैं। परन्तु स्मार्तयज्ञों का अनुष्ठान अन्य लोग भी करते हैं। ये स्मार्तयज्ञ विष्णुयाग, शिवयाग आदि नाम से विख्यात हैं। यज्ञ देव पूजा सङ्गतिकरणदानेषु इस वाक्य के अनुसार देव पूजा के अर्थ में भी यज्ञ शब्द का प्रयोग होता है। तदनुसार निर्धारित विशिष्ट पद्धति से रामजी की पूजा जिस कर्म में होती है उसे रामयज्ञ कहा जाता है। शिवसंहिता के मन्योत्तर खण्ड

में कहीं रामयज्ञ के नाम से तथा कहीं रामाची के नाम से रामयज्ञ की महिमा एवं उसके विधान का वर्णन आया है। भगवान शिवजी वर्णन करते हैं, माता पार्वती जी उसे सुनती हैं।

तीर्थ जल पूरित कलशों की शोभायात्रा

श्री रामानन्दाचार्य सप्तशताब्दी महोत्सव के उपलक्ष्य में नगर के टाउनहाल स्थित यज्ञशाला में प्रारम्भ शतमुख कोटि होमात्मक श्रीराम महायज्ञ के दूसरे दिन १७ जनवरी को पवित्र जल से पूरित शताधिक कलशों को मस्तक पर धारण किये श्रद्धालुओं की भागीदारी वाली यह भव्य शोभायात्रा मध्याह्न १२ बजे टाउनहाल स्थित यज्ञशाला से प्रारम्भ होगी। नगर के प्रमुख मार्गों से होकर गुजरने वाली शोभायात्रा का समापन भी पुनः टाउनहाल में ही होगा। यज्ञ के आचार्यगण पवित्र जल पूरित इन कलशों को यज्ञ मण्डप में स्थापित करेंगे। शोभायात्रा के संयोजक मुख्तार हाशमी के अनुसार बाजे-गाजे तथा हाथी, घोड़ों, ऊँट और रथों की भव्य सवारियों वाली शोभायात्रा नगर के प्रमुख क्षेत्रों की परिक्रमा करेगी। शोभायात्रा में देश के कोने-कोने से आये भक्तजन अपनी पारम्परिक वेशभूषाओं में भजन-कीर्तन करते शामिल होंगे। बिहार, मध्य प्रदेश, गुजरात तथा महाराष्ट्र से आये भक्तजनों की कीर्तन मण्डलियाँ अलग-अलग भाषा बोली के उनके भजन, कीर्तन आकर्षण का प्रमुख केन्द्र बनेंगे। साधु संत तथा वेदपाठी छात्र भी अलग-अलग टोलियों में शोभायात्रा के साथ चलेंगे।

●

गो-गणपति पूजन के साथ यज्ञ संकल्प

पवित्र जलपूरित कलश वेदिकाओं पर स्थापित

वाराणसी, १७ जनवरी। शुद्धिकरण अनुष्ठानों से निवृत्त होकर यज्ञोपवीत धारण कर चुके यजमानों ने आज गणपति पूजन, गो-पूजन तथा पुण्याह वाचन विधानों के उपरांत विधिवत यज्ञ का संकल्प धारण किया और शुभ मुहूर्त में यज्ञशाला मण्डप में प्रवेश करके महायज्ञ सम्पादन के निमित्त ब्रह्मा, यज्ञाचार्य, कुण्डाचार्य तथा उपाचार्यों का वरण किया। याज्ञिकों तथा वेदज्ञों के मधुपर्क पूजन के उपरांत भव्य शोभायात्रा के साथ यज्ञशाला तक लाये गये पवित्र जलपूरित कलश भी आज यज्ञशाला के यज्ञ कुण्डों पर स्थापित कर दिये गये।

इन्द्र, वरुणादि देवों के आह्वान के साथ देव स्थापन का अनुष्ठान १८ जनवरी को सम्पन्न होगा। यज्ञ की पवित्र अग्नि के प्राकट्य के लिए अरणि मंथन क्रिया १९ जनवरी को सम्पन्न होगी। आहुतियों का क्रम २० जनवरी से प्रारम्भ हो जाएगा। शताब्दियों बाद काशी के वैष्णव तीर्थ खण्ड क्षेत्र में आयोजित इस महायज्ञ में श्रीराम मंत्र के साथ कुल एक करोड़ आहुतियाँ अर्पित की जाएँगी।

महायज्ञ के दूसरे दिन के वैदिक अनुष्ठानों का श्रीगणेश आज यज्ञ संकल्प की वैदिक विधियों के साथ हुआ। सर्वप्रायश्चित्त अनुष्ठानों के पश्चात् भद्र स्वरूप हो चुके यज्ञोपवीतधारी यज्ञमानों ने श्री चिह्न पूजन करके जगद्गुरु रानन्दाचार्य के चित्र पर पुष्पांजलियाँ अर्पित कीं और हाथों में पुष्प अक्षत तथा गंगाजल लेकर विधिवत यज्ञ का संकल्प धारण किया। यज्ञ के संयोजक तथा वेद विद्वान् पण्डित गणेश्वर शास्त्री द्रविड़ यज्ञ संरक्षक लक्ष्मीकांत दीक्षित, लक्ष्मीकांत पौराणिक तथा यज्ञाचार्य के निर्देशन में यजमानों ने गणपति तथा गौ का सविधि पूजन-अर्चन किया। पुण्याह वाचन, मातृका पूजन वसोरघाट पूजन के अलावा अयुष्टा मंत्र जप पाठ का विधान भी वैदिक विधि से पूर्ण किया गया।

शुभ मुहूर्त उपस्थित होते ही आचार्यों ने नान्दी श्राद्ध का मांगलिक अनुष्ठान पूरा कराया तथा यज्ञ की पारम्परिक वेषभूषा में सजे यजमानों के साथ पवित्र यज्ञशाला के मण्डप में प्रवेश किया। शुभ प्रवेश के दौरान यज्ञशाला में परिवर्तित टाउनहाल मैदान वेदमंत्रोच्चारों तथा शंखनाद की मंगल ध्वनियों से गूँज उठा था। यज्ञशाला मण्डप के बाहर खड़ी श्रद्धालुओं की भारी भीड़ श्रद्धा से अभिभूत हर-हर महादेव तथा जय श्री

सीताराम का उद्घोष कर रही थी।

मण्डप प्रवेश की रस्म के बाद यज्ञशाला मण्डप में उपस्थित यजमानों ने यज्ञ के सम्पादन के लिए ब्रह्मा, यज्ञाचार्य, कुण्डाचार्य तथा सहयोगी उपाचार्यों का वरण किया तथा यज्ञ सविधि सम्पन्न कराने की प्रार्थना के साथ विद्वान् आचार्यों का मधुपर्क पूजन किया। वरण किये गये ब्रह्मा और आचार्य ही अलग-अलग कुण्डों पर प्रतिष्ठित होकर अपने-अपने यजमानों से आहुतियाँ मिलवायेंगे। यजमानों ने यज्ञ के संकल्पक जगद्गुरु रामानन्दाचार्य स्वामी रामनरेशाचार्य जी का भी आशीर्वाद प्राप्त किया।

यज्ञ की वैदिक प्रक्रियाओं के तहत यज्ञशाला में कल गुरुवार को इन्द्र वरुणादि देवों का आह्वान कर उन्हें यज्ञशाला में पधारने का आमंत्रण दिया जाएगा। देव स्थापन का अनुष्ठान विधि-विधान के साथ सम्पन्न होगा। यज्ञ मण्डप पूजन का विधान भी गुरुवार को ही सम्पन्न होगा। अरणि मंथन क्रिया के साथ यज्ञशाला के नैऋत्य कोण में स्थापित कुण्ड में अग्नि का प्राकट्य १९ जनवरी को होगा। भव्य शोभायात्रा के साथ लाये गये पवित्र जलपूरित कलश भी आज यज्ञ मण्डप में विधिवत स्थापित कर दिये गये।

●

काशी में श्रीराम महायज्ञ व आध्यात्मिक समागम

काशी। जगद्गुरु रामानन्दाचार्य स्वामी रामनरेशाचार्य ने कहा कि वर्षपर्यन्त चल रहे राष्ट्रव्यापी जगद्गुरु रामानन्दाचार्य सप्तशताब्दी महोत्सवों की शृंखला का समापन काशी में अपूर्व श्रीराम महायज्ञ तथा भव्य आध्यात्मिक समागम के साथ होगा।

उन्होंने बताया कि आगामी सोलह से चौबीस जनवरी के बीच समायोजित इस महायज्ञ एवं समापनोत्सव के नौ दिवसीय कार्यक्रम की तैयारियाँ आरंभ हो गयी हैं। रामानंद संप्रदाय की मूल एवं शीर्ष आचार्य पीठ श्रीमठ पंचगंगा घाट में आज राष्ट्रव्यापी रामानंदाचार्य सप्तशताब्दी यात्रा के अंतिम चरण में गुजरात प्रस्थान से पूर्व ज.गु. रामानंदाचार्य स्वामी रामनरेशाचार्य ने एक पत्रकार वार्ता में बताया कि १६ जनवरी २००१ से आरंभ रामानन्दाचार्य सप्तशताब्दी समापनोत्सव के साथ समायोजित श्रीराम महायज्ञ में एक करोड़ आहुतियाँ दी जाएँगी। यह काशी में अपने ढंग का अपूर्व धार्मिक अनुष्ठान होगा। सहस्राब्दि के इस प्रथम शतकोटि होमात्मक श्रीराम महायज्ञ के संरक्षक पं. गणेश्वर शास्त्री द्रविड़ तथा यज्ञाचार्य पं. श्रीकृष्ण पुराणिक होंगे। विशाल यज्ञमंडप में एक सौ बीस यज्ञकुंड बनेंगे। श्रीराम मंत्र के साथ संपन्न होने वाले यज्ञ के लिए सात्विक यजमानों का चयन किया जा चुका है।

स्वामी रामनरेशाचार्य ने बताया कि १६ से २४ जनवरी २००० के बीच त्रिदिवसीय महोत्सव के साथ काशी में ही रामानन्दाचार्य सप्तशताब्दी महोत्सव का उद्घाटन हुआ था। अब इसका समापनोत्सव भी काशी में ही सम्पन्न होगा। स्वामी रामनरेशाचार्य ने बताया कि जनवरी में नौ दिवसीय रामानन्दाचार्य सप्तशताब्दी महोत्सव समापन समारोह के अवसर पर धर्म, राजनीति, समाजसेवा तथा शिक्षा जगत् से जुड़ी अनेक राष्ट्रीय महत्व की विभूतियों की उपस्थिति के साथ ही देशभर के संतों एवं भक्तों का विराट समागम काशी में होगा। जगद्गुरु रामानन्दाचार्य और उनकी परंपरा से जुड़ी काशी की आध्यात्मिक गरिमा का राष्ट्रव्यापी लोकप्रसार सप्तशताब्दी कार्यक्रमों के माध्यम से जहाँ हुआ है, वहीं समापनोत्सव भी धार्मिक जगत् के लिए अप्रतिम होगा। इस अवसर पर वेद सहित धर्मशास्त्रों, सभी संतवाणियों का पाठ, विभिन्न संप्रदायों के संकीर्तन, प्रतिदिन राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय कलाकारों के साथ भजन संगीत संध्या, राष्ट्रीय संगोष्ठी, राजनयिकों एवं समाजसेवियों के समागम आदि संपन्न होंगे। इनके अतिरिक्त संत सम्मेलन का मुख्य आयोजन होगा। इस अवसर पर नगर में विराट शोभायात्रा भी निकाली जाएगी।

●

श्रीराम महायज्ञः नयनाभिराम टाउनहाल

सम्पादक

अनेक सभाओं, समारोहों, प्रदर्शनियों, सरकसों, आन्दोलनात्मक प्रदर्शनों और लाठीचार्ज एवं गोली काण्ड सहित राष्ट्रीय स्वतन्त्रता संघर्ष की वेदी पर दी गयी पवित्र शहादतों तक का साक्षी रहा टाउन-हाल मैदान इन दिनों धर्ममय वातावरण का रूप ग्रहण कर रहा है। उसे ऋगवैदिक सभ्यता जैसी छवि देने में लगे हैं बिहार से आये वह तीस दक्ष कारीगर जो जगद्‌गुरु रामानन्दाचार्य सप्तशताब्दी समापन महोत्सव प्रसंग में आयोजित होने वाले शतमुख कोटि होमात्मक श्रीराम महायज्ञ की फूस से निर्मित हो रही सात मंजिली विशाल यज्ञशाला को पूरी श्रद्धा एवं लगन से अन्तिम रूप देने में लगे हुये हैं।

टाउन-हाल मैदान में निर्मित हो रही उक्त यज्ञशाला में जहाँ प्रायः छः सौ वर्षों बाद श्रीराम मन्त्र से सम्पन्न होगा शतमुख कोटि होमात्मक महायज्ञ और जहाँ आवाहित सभी देवतागण विराजेंगे, आहुतियों के साक्षी बनकर। सिद्धहस्त हाथों से गढ़ी जा रही यह भव्य यज्ञशाला जैस-जैसे साकार रूप ले रही है, वैसे-वैसे कुतूहलभरे सहज आकर्षण का केन्द्र बनती जा रही है उधर से गुजरने वाले नागरिकों के लिये। जिस भगवान श्रीराम के मन्त्र से यह यज्ञ सम्पादित होना है, उनकी ससुराल माने जाने वाले मिथिला के इलाके से आये यज्ञशाला निर्माण की भव्यकला में पारंगत कारीगर टाउन-हाल के मैदान में पिछले एक महीने से अपने काम में जुटे हुये हैं। मुजफ्फरपुर जिले के रहने वाले इन कारीगरों ने बिहार के खगड़िया जिले में बाँस काटा और उसे लादकर वाराणसी पहुँचने के बाद विगत दो दिसम्बर से जुट गये अपनी लक्ष्यसाधना में। अब तक ३५०० बाँस लग चुके हैं और अभी पाँच सौ बाँस और लगेंगे। पचीस दिनों तक यह बाँस को चीर एवं साफकर उनकी सुन्दर जालीदार नक्काशी की लम्बी प्राचीरों का निर्माण करते रहे जो शोभायमान करेंगी यूकलिप्टस के १९६ ऊँचे स्तम्भ पर खड़े हो रहे यज्ञ मण्डप के ढाँचे को। इन खम्भों की ऊँचाई ५० फिट है।

विगत सत्ताईस दिसम्बर को यज्ञशाला के भूमिपूजन की प्रक्रिया यज्ञ के मुख्य संकल्पक जगद्‌गुरु रामानन्दाचार्य स्वामी रामनरेशाचार्य, संयोजक पं. गणेश्वर शास्त्री द्रविड़ तथा पं. लक्ष्मीकांत रामाचार्य पुराणिक के नेतृत्व में काशी के वैदिक विद्वानों ने पूर्ण की और उसके तत्काल बाद पूरी शास्त्रीय नाप-जोख के साथ आरम्भ हो गयी १२०-१२० फिट की यज्ञशाला एवं उसमें १०० यज्ञकुण्डों के निर्माण की प्रक्रिया।

मण्डप निर्माण का दस जनवरी तक आकारपूर्ण हो जाने की सम्भावना है। निश्चय ही यह एक अस्थायी निर्माण है, लेकिन पूर्ण होने के बाद कला की दृष्टि से अनूठेपन को समेटे आकर्षण का केन्द्र होगा। मुजफ्फरपुर के माधोपुर चिकनी ग्राम निवासी मुख्य कारीगर श्री भरत साहनी का कहना है कि वह बेगूसराय, चौसा आदि में कई भव्य यज्ञशालाओं का निर्माण पहले भी करा चुके हैं। वह बीस वर्षों से यह कार्य कर रहे हैं, लेकिन यह उनका पुश्तैनी कार्य है। श्रीमठ ने इतनी दूर आकर काशी में विशाल यज्ञमण्डप बनाने का मौका दिया, तो उन्हें और उनके साथियों को इस पवित्र धार्मिक नगरी में आकर काम करने के अवसर पर प्रसन्नता हुई।

यज्ञमण्डप के ढाँचे का शिखर कलश ५५ फिट ऊँचा होगा और उसके नीचे सात फूस की मंजिलों का आकार प्रकट करते छप्पर होंगे। श्री साहनी इसे अपनी भाषा में सात-महला यज्ञमण्डप कहते हैं। यज्ञमण्डप में नौ फिट के अन्तराल पर सभी दिशाओं में तेरह-तेरह द्वार होंगे। नौ फिट की दूरी पर यज्ञकुण्डों के गड्ढे अभी खोदे गये हैं, लेकिन सभी पर वेदी का निर्माण पूरा हो जाने पर उनके मध्य परस्पर ६ फिट की दूरी रहेगी। प्रत्येक वेदी पर आचार्य, ब्रह्मा, सहायक वैदिकगण एवं यजमान सहित सात लोग बैठ सकेंगे। चारों ओर से बीच में रास्ता मण्डप के मध्य में जाकर मिलेगा, जहाँ प्रधान वेदी होगी। यज्ञाचार्य के बैठने के स्थान पर सभी देवताओं को आवाहित कर स्थापन की व्यवस्था होगी। पं. श्रीकृष्ण लक्ष्मीकांत पुराणिक यज्ञाचार्य की भूमिका में होंगे और सम्पूर्ण आयोजन पं. गणेश्वर शास्त्री द्रविड़ के संयोजन में होगा।

यज्ञमण्डप निर्माण द्वारा बाँस जहाँ खगड़िया से काट कर लाया गया है, वहीं यूकलिप्टस के १९४ तने राजातालाब से और पर्णकुटी को इन सामग्रियों के साथ साकार करने वाली फूस कछवा के निकट बरैनी से तथा इलाहाबाद के निकट झूँसी से। टाउन-हाल मैदान में खड़े अशोक स्तम्भ एवं शहीद स्तम्भ के मध्य के क्षेत्र में बनी यज्ञशाला में पश्चिम ओर के द्वार पर बाँस की कलात्मक जाली की भव्य कलाकारी की शोभा जहाँ चार हाथी एवं मोर होंगे, वहीं उत्तरी द्वार पर ॐ, हाथी एवं तीर धनुषधारी रामजी। इसी प्रकार बाँस के जालीदार पूर्वी द्वार पर मोर, कमल एवं चक्र तथा परिक्रमा पथ पर मोर, चक्र एवं शंख। यज्ञ-भगवान की इस पर्णशाला को पूरी शास्त्रीय मर्यादा एवं उसके निर्धारित मानकों के आधार पर यज्ञ संयोजन से सम्बद्ध वैदिकों की देखरेख में बनाया जा रहा है। वरुणा और अस्सी के मध्य के मुख्य काशी क्षेत्र में पहली बार होने जा रहे कोटि होमात्मक महायज्ञ के लिये बन रही यह पर्णकुटी जैसी यज्ञशाला वेदकालीन आध्यात्मिक भावजगत् को उत्प्रेरित करने में समर्थ होगी और टेन्ट हाउसों द्वारा बनने वाले मँहगे भव्य-मण्डपों के दौर में यह निर्माण सही अर्थों में धार्मिक अनुष्ठान का भावपूर्ण परिदृश्य उपस्थित कर सकेगा।

●

रामानन्दाचार्य सप्तशताब्दी: विशाल हरिजन सम्मेलन

सतीश कुमार

जगद्गुरु रामानन्दाचार्य सप्तशताब्दी महोत्सव के सातवें दिन वाल्मीकि हरिजन समाज के राष्ट्रीय सम्मेलन के साथ रामानन्दाचार्य की उदात्त एवं समन्वयी भक्ति चेतना का जीवंत रूप दिखायी पड़ा। देश भर से आये वाल्मीकि समाज के सन्तों एवं प्रतिनिधियों ने एक स्वर से उद्घोष किया कि रामानन्दाचार्य की उदारता एवं समरसता के सन्देश का पुनर्जागरण प्रासंगिक है। हमारे धर्माचार्य यदि इसी उदात्तभाव का परिचय दें और वाल्मीकि समाज को गले लगाकर चलें तो सनातन धर्म के उत्कर्ष का अभ्युदय सुनिश्चित है।

शतमुख कोटि होमात्मक श्रीराम महायज्ञ के दर्शनोपरांत वाल्मीकीय समाज के संत जगद्गुरु रामानन्दाचार्य स्वामी रामनरेशाचार्य जी को एक जुलूस के रूप में गाजे-बाजे के साथ कमलाकर चौबे इण्टर कालेज प्रांगण स्थित रामानन्दाचार्य सप्तशताब्दी सभा मण्डप में पहुँचे। देश भर से आये प्रतिनिधियों ने मंच पर पहले स्वामी रामनरेशाचार्य का अभिनन्दन किया। महाराजश्री ने अत्यंत विशालकाय वलय वाले माला से मंचासीन समस्त संतों का समवेत रूप में सम्मान किया।

सम्मेलन को सम्बोधित करते हुये जगद्गुरु रामानन्दाचार्य स्वामी रामनरेशाचार्य ने कहा कि राष्ट्रीय वाल्मीकि हरिजन सम्मेलन का रामानन्दाचार्य सप्तशताब्दी के साथ समायोजन काशी में बाबा विश्वनाथ की प्रेरणा का फल है। उन्होंने मुझ जैसे अपनी नगरी के सेवक संत को देश भर में आपकी बस्तियों में भी जाने की प्रेरणा सप्तशती यात्रा में दी। केवल मेरे जाने से बार-बार धोखा खाये लोगों का भरोसा पक्का नहीं हो सकता, इसलिये काशी विश्वनाथ ने आपको काशी बुलाया और काशी पूर्ण भाव से आपका स्वागत कर रही है। यही सनातन धर्म की अनादि शाश्वत परम्परा और रामानन्दाचार्य के आदर्शों का तकाजा है।

वाल्मीकि सभा को सम्बोधित करते हुए स्वामी रामनरेशाचार्य ने कहा कि शिव की काशी धर्म की सबसे बड़ी नगरी है, जहाँ से रामानन्दाचार्य ने रामभक्ति का प्रवर्तन किया। यहाँ से धर्म, ज्ञान, विद्या का प्रवाह नियोजित होता है। यह नगरी जनसंस्कृति की नगरी है, जहाँ कोई मुझे यह कहने नहीं आया कि वैदिक प्रवृत्तियों के साथ हरिजन

सम्मेलन क्यों कर रहे हैं। इसी मंच से प्रशस्त पंडित सभा और विराट वाल्मीकि हरिजन सम्मेलन हो रहा है। हम सब रामजी की, वाल्मीकि जी की, रामानन्दाचार्य की एक समरस धारा के लोग हैं। इस धारा में आस्था के संकल्प को बिस्कुट और कम्बल बाँटने वाली धर्मांतरण की एजेन्सियाँ नहीं तोड़ सकतीं।

सम्मेलन को सम्बोधित करते हुये राजस्थान शासन की धर्मस्थान विभाग की मंत्री श्रीमती इन्दिरा मायाराम ने कहा कि हिन्दू संस्कृति हर चुनौती के बीच अपने लचीलेपन एवं उदारता के बल पर जीवन्त रह सकी है। शंकराचार्य के देश को जोड़ने वाले धर्म प्रचार के बाद भी जब कट्टरता का बोलबाला हुआ तो रामानन्दाचार्य के उदार भक्ति आन्दोलन का नवोदय हुआ। उसी भाव को गाँधी जी ने आधुनिक काल में पल्लवित किया। आज उन्हीं भावों के सहारे कट्टरता का चुनौती भरा उत्तर दिये जाने की आवश्यकता है।

सांसद श्री बी. एस. रामूवालिया ने कहा कि रामानन्द जी ने जिस भक्ति की संत परम्परा का श्रीगणेश किया और जैसी उदारता का संदेश समाज को दिया उसकी प्रतिध्वनि समूची संतवाणी और स्वयं गुरुग्रंथ साहब में सुनायी देती है। आज एक बार फिर कट्टरता की चुनौती के समाधान में उनके संदेश की सार्थकता का देश भर में प्रचार रामानन्दाचार्य सप्तशताब्दी महोत्सव तथा स्वामी रामनरेशाचार्य की यात्रा से हुआ है।

पूर्व सांसद एवं अ. भा. कांग्रेस कमेटी के संयुक्त सचिव श्री शिवलाल वाल्मीकि नयी दिल्ली ने कहा कि सप्तशताब्दी में रामनरेशाचार्य की यात्रा जहाँ हर नगर में हरिजन बस्तियों तक हुई, उससे एक नया संदेश दलित समाज में गया और अपने धर्माचार्यों के प्रति उनमें एक नयी आशा का संचार हुआ। इस उदार पहल को एक नयी शुरुआत माना जाय तो कहा जा सकता है कि सनातन धर्म में सभी के सम्मान का मार्ग प्रशस्त करने की सम्भावनायें प्रशस्त हैं।

नयी दिल्ली स्थित वाल्मीकि मंदिर के जिस हरिजन बस्ती प्रांगण में महात्मा गाँधी ने लम्बा प्रवास किया, उसके महन्त श्रीकृष्णदास विद्यार्थी जी महाराज ने कहा कि जाति पाँति पूछे नहिं कोई हरि को भजे सो हरि का होई, रामानन्दाचार्य का समता एवं ममता का संदेश है। यह संदेश एक ऐसा आचल है जो हम दलितों को भी ठौर प्रदान करता है, जो उपेक्षा का दर्द जीते रहे हैं। रामानन्दाचार्य रामनरेशाचार्य जी ने महायज्ञ के साथ यह समागम आयोजित कर और हमारे बीच जगह-जगह जाकर दलितों को भी राम भक्ति के साथ देश की मुख्य धारा से जोड़ने का अभिनव प्रयास किया है, जिसका हम वन्दन करते हैं।

मंच संयोजन कर रहे, राष्ट्रीय स्तर पर वाल्मीकि हरिजन समाज के इस समागम के मेरुदण्ड वाल्मीकि धाम, उज्जैन के बालयोगी, उमेशनाथ जी ने कहा कि वैदिक प्रवृत्तियों, अनुष्ठानों एवं प्रशस्त पण्डित सभा के साथ वाल्मीकि समाज सम्मेलन का समायोजन रामानन्दाचार्य स्वामी रामनरेशाचार्य के लिये एक चुनौती भरा कार्य होगा, लेकिन अपनी परम्परा के इस दायित्व का निर्वाह उन्होंने सारे देश में घूम-घूम कर किया है। एक वर्ष में जिन सैकड़ों नगरों में सप्तशताब्दी महोत्सव हुये, वहाँ हरिजन बस्तियों में हर जगह स्वयं चलकर जगद्गुरु रामनरेशाचार्य के जाने से सनातनधर्मी धर्माचार्यों के प्रति हरिजन समाज का नजरिया बदला है और हौसला बढ़ा है।

सोनभद्र के श्री सुधाकर चमार ने कहा कि रामानंद जी का मार्ग भक्ति के मार्ग में समता का मार्ग तो प्रशस्त करता ही है, वहीं समाज और राजनीति में भी बढ़ती जात-पाँत की चुनौती के समाधान की प्रेरणा देने में समर्थ है। सूरत से आये रामसनेही सम्प्रदाय के रामविलास दास जी महाराज ने कहा कि रामानन्दाचार्य का मार्ग ऐसा समन्वयी मार्ग है जो बाँटता नहीं जोड़ता है।

स्वागत भाषण करते हुये वाराणसी के डॉ. अवधेश सिंह ने कहा कि रामानन्दाचार्य पीठ और स्वामी रामनरेशाचार्य ने वाल्मीकि समाज को जो सम्मान दिया है, वह स्तुत्य है। वर्ष पर्यन्त उन्होंने सप्तशताब्दी यात्रा से वाल्मीकि समाज के बीच जाकर जो अलख जगाया है, उसी का पारिश्रम आज इस राष्ट्रीय वाल्मीकि समाज के भक्ति समागम में साकार हुआ है। सम्मेलन में आये सभी संतों एवं अतिथियों का स्वागत संयोजक मार्कण्डेय सिंह ने किया।

सम्मेलन को सर्वश्री मदन महाराजा पूर्व विधायक-कोटा, कन्हैया लाल मीना-दिल्ली, कमल चंद्र चाँवरिया-सभासद जयपुर, बाबूदास जी महाराज मेवाड़, सोहमनाथ जी महाराज-अजमेर, आचार्य रामदास जी-हरियाणा, भीमनाथ जी महाराज-जालंधर, सूरजनाथ जी महाराज-महाराष्ट्र, चन्दू जी चव्हाण-महाराष्ट्र, दयानन्द-डी. एस. पी. चण्डीगढ़, हरिशंकर ठकोतिया-नयी दिल्ली, श्रीराम जी कल्याणे-रतलाम, सरस्वती बड़गैया-एडवोकेट जबलपुर, ओम प्रकाश लोढ़ा-उज्जैन, सुन्दर लाल गोमल-इन्दौर, बाबू लाल घाँवरी-उदयपुर, गौतम जलाली-दिल्ली, बालकदास जी महाराज-इन्दौर, चंचल बाबा-सनावद, कन्हैयादास जी महाराज-नागदा, गोपीराम भारती-पूना, कल्याण बाबा-इन्दौर, राम प्रसाद आर्य, विजोलिया जी, नाथू सिंह चन्देल-उदयपुर, एल.डी. वाघमोर-महाराष्ट्र-पूना, चन्दन बाबू-छिंदवाड़ा, सुन्दर लाल गोयल-इन्दौर, नेतराम नारायण-दिल्ली ने सम्बोधित किया। कई अन्य नगरों के वाल्मीकि प्रतिनिधियों ने माल्यार्पण कर रामानन्दाचार्य का स्वागत किया। इन्दौर के शंकर चिन्तामणि ने सम्मेलन में धन्यवाद ज्ञापन किया। आज के समारोह में रामनरेशाचार्य जी एवं

उमेशनाथ जी ने रामानन्दाचार्य जी, वाल्मीकि जी के साथ भगवान श्रीराम के चित्र पर माल्यार्पण किया। शोभायात्रा में शिव सागर बैंड एवं न्यू पंजाब बैंड ने अपनी सुमधुर ध्वनि से समारोह को रोमांचक बना दिया।

समारोह का आरम्भिक आकर्षण था नीमच के विश्वप्रसिद्ध नसतरंगवादक श्री मनीराम फतरोड़ का नसतरंग वादन। उनकी कला के उद्भुत प्रदर्शन ने उपस्थित श्रद्धालुओं को जहाँ मुग्ध किया, वहीं इस कड़ी में उनके तत्काल बाद लूनियाखेड़ी, उज्जैन के प्रह्लाद टिपाड़ियाँ द्वारा प्रस्तुत मनोहारी भजनों ने पूरे समागम को रामभक्ति की प्रबल भावरसधारा निमग्न कर दिया।

समारोह में बालयोगी उमेशनाथ ने डॉ. अवध बिहारी खरे रचित काशी और स्वामी रामानन्दाचार्य, स्वामी रामविलास दास ने प्रो. शिवजी उपाध्याय रचित एवं डॉ. प्रभुनाथ द्विवेदी द्वारा अनुदित श्री जगद्गुरु रामानन्दाचार्य शतकम् का तथा श्री गौतम जालानी ने डॉ. मुरलीधर पाण्डेय द्वारा व्याख्यापित रामतापनीयोपनिषद् का विमोचन एवं लोकार्पण किया। अन्त में पं. गणेश्वर शास्त्री द्रविड़ ने श्रीराम कोटि महायज्ञ की शास्त्रीयता का प्रतिपादन किया।

●

विशाल वाल्मीकि सम्मेलन का आयोजन

(पत्रकार वार्ता)

सम्पादक

पत्रकार वार्ता में उज्जैन स्थित श्री वाल्मीकि धाम के संस्थापक एवं अखिल भारतीय वाल्मीकि सनातन धर्म सभा के अध्यक्ष बालयोगी उमेशनाथ ने कहा है कि सनातन धर्म के अभिन्न अंग वाल्मीकि हरिजन समाज को अपनी मुख्यधारा में जोड़े बिना सनातन धर्म का पूर्ण उत्कर्ष नहीं होगा। रामानन्दाचार्य पीठ, काशी और वर्तमान जगद्गुरु रामानन्दाचार्य स्वामी रामनरेशाचार्य ने वाल्मीकि हरिजन समाज को अपनी धार्मिक एवं आध्यात्मिक प्रवृत्तियों एवं कार्यक्रमों से जोड़ने का सार्थक प्रयास किया है। यही कारण है कि रामानन्दाचार्य सप्तशताब्दी समापन महोत्सव के अवसर पर २२ जनवरी को काशी में आहूत अखिल भारतीय वाल्मीकि हरिजन सम्मेलन इस दिशा में एक मील का पत्थर होगा, जिसमें देश के अनेक प्रान्तों से हजारों वाल्मीकि हरिजन समाज के प्रतिनिधि भाग लेंगे।

एक सप्ताह से यहाँ रामानन्दाचार्य सप्तशताब्दी महोत्सव में भाग लेने के लिये रुके हुये बालयोगी उमेशनाथ जी ने आज पत्रकार वार्ता के बीच महात्मा गाँधी काशी विद्यापीठ में कहा कि रामानन्दाचार्य जी ने सात शताब्दी पूर्व जात पाँत पूछै नहिं कोई, हरि को भजै सो हरि का होई का उद्घोष करते हुये हरिजन समाज को भी भक्ति के माध्यम से सनातन धर्म की मुख्य धारा में जोड़ने का काम शुरू किया। यह विडम्बनापूर्ण है कि आज हमारे धर्माचार्य इस दायित्व के प्रति उदासीन हैं, जिससे वाल्मीकि हरिजन समाज, जो सनातन धर्म का अभिन्न हिस्सा है, अपने को अलग-थलग अनुभव करता है। हमारे लिये यह आशाभरे विश्वास की नयी रोशनी है कि वर्तमान में जगद्गुरु रामानन्दाचार्य पीठ ने अपनी परम्परा की इस जिम्मेदारी को समझकर सकारात्मक पहल की है। रामानन्दाचार्य स्वामी रामनरेशाचार्य ने अपनी रामानन्दाचार्य सप्तशताब्दी यात्रा और श्रीरामभावप्रसार यात्रा में सभी स्थानों पर वाल्मीकि हरिजन समाज की बस्तियों में पैदल गये, वहाँ जाकर समारोह किये, उस समाज के लोगों को अपनी पूर्ण निकटता का सान्निध्य दिया और सभी नगरों में आयोजित सप्तशताब्दी महोत्सवों में स्थानीय लोगों के सम्मान क्रम में हर जगह

सात्विक एवं संस्कारवान हरिजनों को सम्मानित किया। उमेश ने कहा कि सनातन धर्म की शास्त्रीय प्रवृत्तियों की मर्यादा के अनुपालन के साथ-साथ यदि वाल्मीकि हरिजन समाज को भी जोड़कर चलने की दिशा में रामानन्दाचार्य पीठ की भाँति हमारे धर्माचार्यों के कदम बढ़ने लगेंगे तो सनातन धर्म की साख के सही उत्कर्ष में कोई संशय नहीं। इससे धर्म, समाज और राष्ट्र को समान रूप से शक्ति मिलेगी।

बाईस जनवरी को रामानन्दाचार्य सप्तशताब्दी महोत्सव में अपराह्न दो बजे से आयोजित वाल्मीकि हरिजन सम्मेलन में वाल्मीकि हरिजन समाज से जुड़े स्थानीय लोगों की भी भागीदारी का आह्वान करते हुये बालयोगी उमेशनाथ ने बताया कि सम्मेलन में मध्य प्रदेश, राजस्थान, गुजरात, महाराष्ट्र, उत्तर प्रदेश, दिल्ली, हिमाचल प्रदेश, पंजाब एवं हरियाणा से हजारों प्रतिनिधि भाग लेंगे। महाराष्ट्र के सांसद एवं कांग्रेस महासचिव श्री सुशील कुमार शिन्दे तथा मध्य प्रदेश के गृह सचिव एवं पूर्व आई. जी. श्री पन्नालाल आदि सहित कई महत्वपूर्ण लोगों के भी सम्मेलन में भाग लेने की जहाँ स्वीकृति प्राप्त हो चुकी है, वहीं कई अन्य महत्वपूर्ण नेताओं की स्वीकृति एवं कार्यक्रम की पूरी सम्भावना है। समाज से जुड़े कई सनातनधर्मी सन्तों तथा सांसदों आदि के भी आने की उम्मीद है।

●

वेद-वेदांग विद्यालय

गणेश्वर शास्त्री द्रविड़

रामानन्दाचार्य स्वामी रामनरेशाचार्य ने कहा है कि वेदों की अनादि परम्परा धर्म के अनन्त प्रवाह का प्रतीक है। अभ्युदय और निःश्रेयस को प्रशस्त करने वाली धर्म की इस परम्परा के प्रवाह की निरन्तरता को समृद्ध बनाने में वेद-वेदांग के अध्ययन की समर्पित साधना में सक्रिय सांगवेद-विद्यालय जैसी परम्परागत पाण्डित्य की शिक्षण संस्थाओं का असाधारण योगदान है। यह समारोह भी सप्तशताब्दी महोत्सव के क्रम में ही मनाया गया।

आज काशी के वेद-वेदांग शिक्षण परम्परा से जुड़ी अति प्रतिष्ठित संस्था वल्लभ राम शालिग्राम सांगवेद विद्यालय के उन्यासीवें वार्षिकोत्सव में वैदिक-विद्वत् समागम को मुख्य अतिथि के रूप में सम्बोधित करते हुये स्वामी रामनरेशाचार्य ने कहा कि आज जब संस्कृत शिक्षण संस्थाओं में जेबी संस्थाओं तक का अस्तित्व इस क्षेत्र में पराभव की कठिन चुनौती का संदेश दे रहा है, तब भी हमें वेद-वेदांग की अनादि परम्परा के सतत प्रवाह के प्रति सांगवेद विद्यालय जैसी संस्थायें आशा की किरण प्रदान करती हैं। यह संस्था वेद-वेदांग के प्रचार प्रसार की जिस विशिष्ट समृद्ध परम्परा से जुड़ी है, उसके उत्कर्ष के पीछे संस्था के अध्यक्ष काशीराज डॉ. विभूति नारायण सिंह, संचालक मेहता परिवार, विद्यालय की परम्परा के कीर्ति स्तम्भ स्व. महापंडित राजराजेश्वर शास्त्री द्रविड़ और पं. गणेश्वर शास्त्री एवं विश्वेश्वर शास्त्री के नेतृत्व में उसकी आचार्य मंडली के पुण्य, यश एवं समर्पित साधना का अन्यतम योगदान है। सभी वेदानुरागी धर्मप्राण लोगों को इसके विकास में संसाधनों का अवलम्ब देना चाहिये।

जगद्‌गुरु ने कहा कि आधुनिक समाज को यह समझाने की आवश्यकता है कि ईश्वर का प्रतिरूप होने के कारण आदि एवं अनंत वेद-वेदांग की परम्परा धर्म की जिस प्रेरणा का सृजन करती है, वह आधुनिक विकास को लोककल्याण के मूल्यों से जोड़ने में सहायक है। आज परमाणु बमों के उत्पादक युग में जब हम विनाशक और अन्यान्य उपभोग सामग्रियों का साम्राज्य खड़ा कर रहे हैं तो धर्म की यह परम्परा हमें उत्पादन के मंगलकारी संस्कारों से जोड़कर मानवता के विकास को सही पथावलम्बन की प्रेरणा दे सकती है। धर्म और आधुनिक ज्ञान विज्ञान के समन्वय की यह चेतना

अभ्युदय का सही स्वरूप प्रस्तुत करने में समर्थ है।

वार्षिकोत्सव को पूर्व संस्कृत शिक्षा निदेशक पं. गोपालदत्त पाण्डेय, पं. विश्वनाथ भट्टाचार्य, पं. गोपाल महाराज एवं पं. जनार्दन पाण्डेय ने सम्बोधित किया। अस्वस्थता के कारण अनुपस्थित सभाध्यक्ष तथा विद्यालय के स्थायी अध्यक्ष पूर्व काशीराज डॉ. विभूति नारायण सिंह के अध्यक्षीय सन्देश वाचन में वेदाध्ययन एवं वेदपाठ की विद्यालय की समृद्ध परम्परा के विकास की मंगल-कामना की गयी।

समारोह के आरम्भ में सांगवेद विद्यालय के संचालक श्री शंकर लाल मेहता ने अतिथियों एवं विद्वत्जनों का स्वागत किया और विद्यालय के आचार्य पं. गणेश्वर शास्त्री द्रविड़ ने प्रगति आख्या प्रस्तुत की। पुणे के बसंत फड़के संस्कृत शिक्षा संस्थान के पं. योगेश्वर बोरकर को इस अवसर पर काशीराज की ओर से वेदपाठ के लिये पचीस हजार रुपये की पुरस्कार राशि प्रदान की गयी। साथ ही यह पुरस्कार प्रतिवर्ष दिये जाने की घोषणा भी की गयी।

वार्षिकोत्सव के अवसर पर स्वामी रामनरेशाचार्य ने स्व. पं. बद्री केदार त्रिवेदी, स्व. पं. देवकृष्ण त्रिपाठी तथा स्व. पं. श्रीपाद दीक्षित तापस के तैलचित्रों का भी अनावरण किया जिन्हें विद्यालय परिसर में प्रतिष्ठित पाण्डित्य से जुड़ी विभूतियों की चित्र शृंखला के साथ स्थापित किया जायेगा।

समारोह में विद्यालय के आचार्यों, विभिन्न क्षेत्रों में विशिष्ट प्रतिभा से सम्पन्न विद्यार्थियों तथा विशिष्ट विद्वानों आदि को पुरस्कार प्रदान किये गये। समारोह का संचालन आचार्य पं. विश्वेश्वर शास्त्री द्रविड़ ने किया। इस अवसर पर विशिष्ट अतिथि एवं आयकर आयुक्त श्री आर. के. सिंह सहित अनेक प्रतिष्ठित नागरिक एवं पं. रामजतन शर्मा, पं. मनुदेव भट्टाचार्य, पं. लक्ष्मीकांत पुराणिक, पं. लक्ष्मीकांत दीक्षित, पं. राजाराम शुक्ल सहित विद्वतजन उपस्थित थे।

●

विद्वत्-सम्मान

सतीश कुमार

रामानन्दाचार्य सप्तशताब्दी समापन महोत्सव में आज सम्पन्न विद्वत् सम्मान एवं शास्त्रार्थ सभा में वर्तमान जगद्गुरु रामानन्दाचार्य स्वामी रामनरेशाचार्य ने संस्कृत जगत् के १०१ विशिष्ट विद्वत् जन का सम्मान-पूजन किया। महाराज श्री ने स्वयं विद्वानों को मुद्रा, पुस्तकों का एक सेट, उत्तरीय रामनामी चादर तथा भिणिन्न प्रदान कर सम्मानित हुआ। इस अवसर पर शास्त्रार्थ सभा को उद्घाटित करते हुये सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. राममूर्ति शर्मा ने कहा कि भारतीय परम्परा में काशी की मान्यता के बिना कोई सिद्ध या पण्डित नहीं हुआ। परम्परागत पाण्डित्य से जुड़े काशी के विद्वानों का दायित्व है कि उसकी इस गरिमा को अक्षुण्ण रखें।

वेदान्त के विशिष्ट विद्वान् प्रो. शर्मा ने शास्त्रार्थ सभा में ब्रह्मतत्व की विवेचना करते हुये कहा कि ब्रह्म की बृहत्रयी सत्ता होती है। उसमें प्रतिमासिक सत्ता, व्यावहारिक सत्ता तथा परमार्थिक सत्ता निहित है। ब्रह्म ज्ञान है, सत्य है, आत्मा है, आध्यात्म है, पूरा संसार है। रामानन्दाचार्य ने इसे जानने की दिशा में सहज और सुलभ भक्ति के मार्ग का उद्घाटन किया।

उक्त अवसर पर रामानन्दाचार्य रामनरेशाचार्य ने कहा कि विद्वत्-सम्मान ऋषिपूजन की परम्परा का अनुसरण है। विद्वानों के आशीर्वाद से मानवमात्र की सेवा का संस्कार एवं सामर्थ्य अर्जित करने की कामना से प्रेरित प्रयास भी है। विद्वानों का सत्संग एवं सत्कार ज्ञान प्राप्त करने का साधन है और ज्ञान प्राप्त हो जाय तो व्यक्ति सही अर्थों में लोकसंग्रह कर सकता है। भारत ऋषियों का देश रहा है। ऋषिपूजन का पुण्य भक्ति की प्रेरणा देता है और भक्ति ईश्वर साक्षात्कार का सहज मार्ग है। इसी मार्ग का दर्शन रामानन्दाचार्य ने कराया। उन्होंने पूर्ण वैदिक परम्परा में आस्था के साथ भक्ति की परमोदारता का समाज में प्रयोग किया।

महर्षि योगी विश्वविद्यालय, जबलपुर के कुलपति प्रो. आद्या प्रसाद मिश्र ने कहा कि रामानन्दाचार्य ने शैव वैष्णव की खाईं को पाटा और उसी परम्परा में रामानन्दाचार्य पीठ श्रीमठ की गतिविधियाँ प्रभावी पुनर्जागरण का प्रतीक बनी हुई हैं।

सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति प्रो. वी. वेंकटाचलम् ने कहा कि जिस राम-नाम की महिमा सात सदी पूर्व रामानन्दाचार्य ने स्थापित की, उसके

उच्चारण और स्मरण मात्र से मन विकार रहित हो जाता है। हमारी परम्परा में राम-नाम का भक्त भी पूजा का अधिकारी हो जाता है। प्रो. वेंकटाचलम् ने अपने व्याख्यान में राम की भक्ति के माहात्म्य की विराट व्याख्या करते हुये कहा कि राम के चरित्र का मूल स्वरूप वाल्मीकि रामायण से प्रस्तुत हुआ।

अध्यक्षीय सम्बोधन करते हुये प्रो. रामयत्न शुक्ल ने कहा कि जब-जब भारतीय संस्कृति पर चुनौती आयी है, तब तब ऋषियों और संतों ने उसे बचाया है। इस परम्परा में रामानन्दाचार्य के अवदान अप्रतिम हैं। विद्वत् समागम को प्रो. रेवा प्रसाद द्विवेदी ने सम्बोधित करते हुये रामानन्दाचार्य सप्तशताब्दी महोत्सव को उनके आदर्शों के पुनरोदय की दिशा में एक मील का पत्थर बताया। सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय के पूर्व प्रति कुलपति प्रो. जुगुल किशोर मिश्र ने कहा कि रामानन्दाचार्य ने जन-जन को मुक्ति का मार्ग प्रदान किया। सभा को सर्वश्री डॉ. श्रीनिवासन, प्रो. वशिष्ठ त्रिपाठी, प्रो. कैलाशपति त्रिपाठी, पं. त्रिनाथ शर्मा, डॉ. व्यास मिश्र, आचार्य वायुनन्दन पाण्डेय, पं. मुरलीधर पाण्डेय, प्रो. पारस नाथ द्विवेदी, प्रो. श्रीकान्त पाण्डेय, प्रो. उमाशंकर शुक्ल, डॉ. महेन्द्र पाण्डेय, डॉ. नागेन्द्र पाण्डेय आदि विद्वानों ने जहाँ सम्बोधित किया, वहीं १०१ विद्वानों को इनके साथ सम्मानित किया गया।

आरम्भ में स्वागत भाषण करते हुये स्वागताध्यक्ष एवं उ. प्र. के पूर्व मंत्री पं. लोकपति त्रिपाठी ने कहा कि काशी विद्वत् समाज की मान्यता का केन्द्र रही है। उसकी पाण्डित्य परम्परा से जुड़े विद्वत् गणों को आज सनातन धर्म की पीठों पर नकली एवं समानान्तर दावेदारियों के विरुद्ध मुखर होना चाहिये। इससे धर्म का स्वरूप विकृत होता है।

आज की सभा का संयोजन एवं संचालन सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय अध्यापक परिषद् के अध्यक्ष प्रो. कुंज बिहारी शर्मा ने किया। धन्यवाद ज्ञापन सह-संयोजक डॉ. कमलेश झा ने किया। विधान परिषद् सदस्य राजेशपति त्रिपाठी, डॉ. सतीश राय, विनोद पांडे, राजेन्द्र त्रिवेदी, देवचन्द भाई, ब्रह्मानन्द शुक्ल आदि ने माल्यार्पण एवं विद्वत् सम्मान में सहयोग किया।

रामलीला, पुण्यपाठ आदि के नियमित कार्यक्रम जहाँ आज नित्य की भाँति सम्पन्न हुये, वहीं समारोह के बाद स्वामी रामनरेशाचार्य के समक्ष महाराष्ट्र से आये भक्तों ने मजीरा, ढोल पर परम्परागत शैली में झूम-झूम कर जिस तरह भजन प्रस्तुतियाँ की, उसे देख लोग भावविभोर हो उठे।

●

चन्द्रशेखर जी का वक्तव्य

सम्पादक

रामानन्दाचार्य सप्तशताब्दी समापन उत्सव को सम्बोधित करते हुये पूर्व प्रधानमन्त्री श्री चन्द्रशेखर ने कहा है कि सात शताब्दी पूर्व स्वामी रामानन्दाचार्य ने समता और बन्धुत्व का सन्देश देकर एक क्रांति पैदा की थी। धर्म के नाम पर आज कलह एवं विद्वेष पैदा करने वालों की चुनौती से जब राष्ट्र आक्रान्त है तो उसका समाधान प्राप्त करने में रामानन्द जी और उनकी परम्परा का सन्देश दोहराने की जरूरत है। जिनकी शिष्य परम्परा में संत कबीर और संत रविदास सरीखे यशस्वी शिष्य हुये हों, उनके द्वारा प्रवर्तित भक्ति परम्परा के पुनर्जीवन द्वारा ही जजबाती नारों से भारत की संस्कृति को विनष्ट करने की कोशिशों का उत्तर दिया जा सकता है।

समापन महोत्सव में ही मानस सम्मेलन का मुख्य अतिथि के रूप में उद्घाटन करते हुये श्री चन्द्रशेखर ने कहा कि दस हजार वर्षों के इतिहास में भारत ने कभी दूसरों पर आक्रमण नहीं किया, यद्यपि वह पराक्रमी, समृद्ध और सोने की चिड़िया कहा जाने वाला देश रहा है। अपने संतों और आचार्यों के माध्यम से मानवता को सदा बन्धुत्व, सहिष्णुता एवं समरसता का सन्देश दिया। कठिन संक्रमण काल में भी मानवता के इसी शाश्वत परम्परा बन्धुत्व, सहयोग और सद्भाव का मार्ग रामानन्दाचार्य ने प्रकाशित किया। यही सच्चा सन्देश था भारत की ऋषि-परम्परा का और गाँवों की उसकी संस्कृति का, जिसे 'जात पाँत पूछे नहिं कोई, हरि को भजे सो हरि का होई' के क्रान्तिकारी उद्घोष के साथ रामानन्दाचार्य ने मानव समाज में बिखेर दिया।

श्री चन्द्रशेखर ने कहा कि धर्म के मार्ग में मंजिल एक और रास्ते अनेक हैं। जब सभी की मंजिल एक है तो भेद क्या, तनाव क्यों, ईर्ष्या क्यों? इसका उत्तर दिया था रामानन्दाचार्य और उनकी परम्परा के संतों ने। जिस समय समता एवं बन्धुत्व के संदेश की चुनौती का उत्तर रामानन्दाचार्य दे रहे थे, उसी समय देश में सूफी-सन्तों की परम्परा भी उसी काम में लगी हुई थी। मूल्यों एवं आदर्शों की यह साझी विरासत ही हमारी पहचान और शक्ति है।

पूर्व प्रधानमंत्री ने कहा कि रामनाम की बड़ी महिमा है। रामनाम मानवता के प्रति समदृष्टि प्रादन करता है। यही संदेश सात सौ वर्ष पूर्व रामान्द जी ने दिया। जो व्यक्ति सम्पूर्ण सृष्टि को राममय देखता हो वह विरोध किससे करे। फिर राम का नाम लेकर

विरोधभाव क्यो? रामानन्दाचार्य रामनरेशाचार्य के नेतृत्व में रामानन्द जी की पीठ एक बार फिर से काशी से यह सन्देश देश को देने के प्रभावी प्रयास में लगी है, यह हम सभी के लिये गौरव की बात है। परम्परा के पुनर्जीवन का यह प्रयास वन्दनीय है। उन्होंने कहा कि रामभक्त कभी भी विषमता का पक्षधर नहीं हो सकता। अतः आज फैली विषमता का रामभक्तों को प्रतिकार करना चाहिये। आज भी इसी चेतना को प्रशस्त करने वाले नेतृत्व की आवश्यकता है।

अध्यक्षीय सम्बोधन में बम्बई से पधारे महामण्डलेश्वर स्वामी काशिकानंद जी महाराज ने कहा कि रामानन्दाचार्य ने द्वैत और अद्वैती परम्पराओं में समन्वय स्थापित कर शैव एवं वैष्णव पंथों के बीच सेतु का काम किया। भक्ति की चेतना से कटकर अधःपतन से ग्रस्त हो रहे अद्वैतवादियों को भी पथभ्रष्ट हो जाने के संकट से जहाँ उबारा, वहीं जन-जन के लिये भक्तिमार्ग से मुक्ति का द्वार खोला।

उन्होंने कहा कि मानवता को गहन निराशा से उबारने के लिये भगवान शंकर के अवतार के रूप में शंकराचार्य का अवतरण हुआ। परमधर्म आत्मदर्शन की संस्थापना करते हुये उन्होंने ब्रह्म सत्य, जगत् मिथ्या का उपदेश किया। इसका अर्थ तो स्पष्ट था, लेकिन अहं ब्रह्मास्मि से मन में मिथ्या अहंभाव प्रकट कर लोग भक्ति से विमुख होने लगे और इस तरह पथभ्रष्ट हुये। उस समय दक्षिण में रामानुजाचार्य ने भक्ति की चेतना जगायी। भक्ति की महिमा के जागरण के बावजूद वह अद्वैत के खण्डन में ही सारी शक्ति लगा बैठे। परिणाम यह हुआ कि द्वैत-अद्वैत के विवाद ने वैष्णव और शैव के कलह को उभारा और कांची जैसा शहर परस्पर वैरभाव वाले शिव कांची एवं विष्णु कांची में बँट गया। रामानन्दाचार्य ने भी भक्ति को तो जागृत किया, लेकिन शिव की काशी से रामभक्ति का उदात्त सन्देश जन-जन के बीच देकर भी उन्होंने शैवों और वैष्णवों के बीच तथा अद्वैत और द्वैत दर्शन के बीच भक्ति जागरण के साथ समन्वय किया।

उन्होंने कहा कि भक्ति से विमुखता ने वेदान्त ज्ञान के बावजूद जिस तरह लोगों को पथभ्रष्ट किया उससे उबारने के साथ-साथ रामान्दाचार्य ने उन्हें समन्वय की उदारता के साथ जोड़ा। उनके शिष्य कबीरदास के दर्शन में जहाँ अद्वैत के स्वर सुनायी देते हैं, वहीं उनके परम्पराशिष्य तुलसी में द्वैत के।

महामण्डलेश्वर स्वामी भवानीनन्दन यति जी महाराज, हथियाराम मठ (गाजीपुर) ने कहा कि शैव वैष्णव विरोधाभास को समाप्त कर सनातन धर्म को एक सम्पूर्ण प्रवाह का रूप देने में जगद्‌गुरु रामानन्दाचार्य की युगान्तकारी भूमिका को भुलाया नहीं जा सकता। अतः वह पूरे सनातनधर्मी समाज की श्रद्धा के प्रतीक हैं।

आज ही मानस मर्मज्ञों के व्याख्यान क्रम में सर्वप्रथम चर्चा स्थापित करते हुये श्री

विजयेन्द्र नाथ मिश्र ने कहा कि रामनाम की महिमा परम आनन्ददायक एवं मंगलकारी है। मानस मर्मज्ञों के क्रम में सर्वश्री अवधेश जी महाराज-अयोध्या, परमहंसदास जी महाराज-अयोध्या, विद्यारत्न मानसकोविद, डॉ. परमेश्वर दत्त शुक्ल, पं. शान्ताराम मिश्र, पं. चन्द्रधर पाण्डेय, मानस महारथी पं. श्याम नारायण तिवारी तथा डॉ. रामेश्वरी कुमारी रासेस्वरी ने मानस पर अपने विचार व्यक्त किये।

जगद्गुरु रामानन्दाचार्य स्वामी रामनरेशाचार्य के सान्निध्य में हुई सभा में आज आरम्भ में स्वागताध्यक्ष पं. लोकपति त्रिपाठी ने स्वागत भाषण और पं. ब्रह्मानन्द शुक्ल ने मंगलाचरण की प्रस्तुति की। सर्वश्री प्रो. कुंज बिहारी शर्मा, विजय नारायण राय, शिवदेव नारायण राय, राजेश तिवारी, सुधीर मिश्र, मार्कण्डेय सिंह, कमलेश तिवारी, मणिभूषण सिंह, रमाकांत मिश्र, अमरनाथ चौबे, देवचन्द भाई, केशूभाई, जयन्ती भाई, मणिभूषण सिंह, डॉ. जे. सी. राय तथा महोत्सव में स्वयं सेवी चिकित्सकीय सेवा सुलभ करा रही संस्था 'आस्था' की ओर से डॉ. ए. सी. पाण्डेय ने अतिथियों एवं विद्वानों का सम्मान किया। संचालन डॉ. सतीश कुमार ने किया। धन्यवाद ज्ञापन पं. गणेश्वर शास्त्री द्रविड़ ने किया।

महोत्सव में सायंकाल रामलीला तथा पूर्वाह्न पुण्यपाठ के नियमित कार्यक्रम सम्पन्न हुये।

●

रूढ़ि भञ्जक रामानंदाचार्य

सुशील कुमार शिन्दे

कांग्रेस अध्यक्ष श्रीमती सोनिया गाँधी और पाँचवी शंकराचार्य पीठ शृंगेरी के ज.गु. शंकराचार्य स्वामी भारती तीर्थ के प्रतिनिधियों की मौजूदगी में आज जगद्गुरु रामानन्दाचार्य सप्तशताब्दी महोत्सव की समापन सभा सम्पन्न हुई। पं. कमलाकर चौबे आदर्श सेवा इण्टर कालेज में निर्मित सप्तशताब्दी सभा मण्डप में कांग्रेस अध्यक्ष श्रीमती सोनिया गाँधी के संदेश के साथ उनका प्रतिनिधित्व करते हुये अ.भा. कांग्रेस कमेटी के महासचिव श्री सुशील कुमार शिन्दे ने कहा कि प्रवाह के विपरीत चलने वाला ही समाज को परिवर्तन एवं विकास की दिशा देता है। जगद्गुरु रामानन्दाचार्य ने भी समाज की स्थापित रूढ़ियों एवं चारदीवारियों को ध्वस्त कर सात सौ वर्ष पूर्व समाज एवं मानवता को समता, बन्धुत्व एवं समरसता का युगान्तकारी सन्देश दिया।

श्री शिन्दे ने कहा कि रामानन्दाचार्य सप्तशताब्दी महोत्सव में एक ओर सभी शंकराचार्यों एवं अन्य धर्माचार्यों का आगमन एवं प्रशस्त पण्डित सभा का आयोजन हुआ, तो दूसरी ओर कल सम्पन्न वाल्मीकि हरिजन समाज सम्मेलन ने इस मंच को समता एवं समन्वय की सही चेतना का पर्याय बना दिया। सर्वसमाज को भक्तिमार्ग से एक पथ पर ले चलने का स्वामी रामानन्दाचार्य का सात सदी पूर्व का सन्देश इस मंच से जीवन्त होकर प्रस्तुत हुआ है। यह चेतना न केवल राष्ट्र को सही दिशा देगी, बल्कि इससे सनातन धर्म का भी सही स्वरूप प्रस्तुत होगा।

श्री शिन्दे ने कहा कि शीर्ष धर्माचार्यों से सुशोभित धर्म के किसी प्रशस्त मंच पर दलित समाज सम्मेलन का भी समायोजन सरल बात नहीं है। इस सभा के माध्यम से स्वामी रामनरेशाचार्य ने देश को एक क्रान्तिकारी सन्देश दिया है। यह सन्देश रामानन्दाचार्य की परम्परा का एक नवजागरण है, जो उस दौर में धर्म की सेतु सरीखी सार्थक भूमिका खड़ी करेगा, जब राजनीति जाति एवं सम्प्रदाय भेद के नाम पर सत्ता स्वार्थों के लिये समाज को बाँटने में लगी है।

शृंगेरी के शंकराचार्य का प्रतिनिधित्व करते हुये राजगुरु चेल्ला लक्ष्मण शास्त्री ने रामान्दाचार्य के चित्र पर पुष्प समर्पित करने के साथ कहा कि रामानन्दाचार्य ने भक्ति का लोकप्रसार कर संस्कृति की रक्षा की। ज्ञातव्य है कि इन दिनों समाधिस्थ शृंगेरी पीठाधीश्वर के प्रतिनिधित्व से पूर्व सप्तशताब्दी महोत्सव में चार अन्य पीठों द्वारिका एवं ज्योतिष पुरी एवं काँची काम कोटि के शंकराचार्य स्वयं पधार चुके हैं।

आज की सभा के अध्यक्षीय सम्बोधन में ज.गु. रामानन्दाचार्य स्वामी रामनरेशाचार्य ने कहा कि शास्त्रों की मर्यादा और श्रेष्ठजनों के अनुसरण में लीन जीवन उत्कर्ष प्राप्त करता है। ईश्वर का चिन्तन और ईश्वर की प्रपत्ति जीवन की समस्याओं का निराकरण कर विकास का सही मार्ग प्रशस्त करती है। किसी भी लौकिक विधि से सभी दर्दों का समाधान संभव नहीं, लेकिन रामानन्दाचार्य द्वारा प्रवर्तित ईश्वर शरणागति की यह विधि सभी व्याधियों का निवारण करने वाली है।

राजस्थान शासन की धर्मस्थान मंत्री श्रीमती इन्दिरा मायाराम ने कहा कि धर्म हमे नैतिक मार्ग के साथ साधन की भी नैतिकता का मार्ग बताता है। रामानन्द जी का मार्ग जीवन को ईश्वर के मार्ग पर प्रवृत्त करने के साथ नैतिक उत्कर्ष प्रदान करने वाला भी है। आज धर्म के नाम पर उसी राम को बाँटने की भी कोशिशें हो रही हैं, जिनके नाम की महिमा से रामानन्दाचार्य ने बँटते-टूटते समाज को जोड़ा।

श्रीमती मायाराम ने श्रीमठ द्वारा प्रकाशित एवं राघव प्रेस में मुद्रित डॉ. सुधाकर पाण्डेय की कृति 'रामानन्द के शिष्य और उपलब्धि' का विमोचन एवं लोकार्पण भी किया।

बिहार विधान परिषद् में कांग्रेस दल के नेता डॉ. महाचन्द्र प्रसाद सिंह ने कहा कि स्वामी रामनरेशाचार्य ने सप्तशताब्दी की श्रीरामभाव प्रसार यात्रा से रामानन्दाचार्य के उदार भक्ति सन्देश एवं समता के आध्यात्मिक चिन्तन को बिहार सहित देश के विभिन्न क्षेत्रों में प्रभावशाली ढंग से फैलाया है। यह इस महोत्सव की अभिनन्दनीय सार्थकता है।

बालयोगी उमेशनाथ (उज्जैन) ने कहा कि रामानन्दाचार्य सप्तशती महोत्सव अखण्डता, एकता, भाईचारे और समता के प्रतीक के रूप में धर्म का क्रांतिकारी समागम बन गया है। इससे सनातन धर्म का समन्वयी स्वरूप प्रस्तुत हुआ।

समारोह को सम्बोधित करने वाले महत्वपूर्ण लोगों एवं विशिष्ट उपस्थितियों में सम्मिलित थे सर्वश्री हरिभक्ति परायण बखन लक्ष्मण मस्के जी महाराज एवं रोकड़ों बाबा मठ के नन्द कुमार बस्दिस्ते महाराज-आलन्दी, बैकुण्ठ महाराज-काशी, त्रिविक्रम पुजारी-महाराष्ट्र, फट्टी बाबा-वृन्दावन, श्रीमती विमला ग्वाल, फिरोज खाँ मुन्ना, पद्माकर चौबे, प्रो. कुंज बिहारी शर्मा, विजय नारायण राय-मैहर, विद्यारत्न मानस कोविद, मनुदेव भट्टाचार्य।

स्वागत भाषण करते हुये स्वागताध्यक्ष पं. लोकपति त्रिपाठी ने कहा कि महोत्सव से काशी की आध्यात्मिक गरिमा समृद्ध हुई है। श्री रामजनम योगी ने शंखनाद किया। पं. विश्वेश्वर शास्त्री द्रविड़ ने धन्यवाद ज्ञापित किया। संचालन डॉ. सतीश कुमार राय ने किया।

उदारता का पाठ पढ़ाता है धर्म, कट्टरता का नहीं

दिग्विजय सिंह

वाराणसी २४ जनवरी। धर्म जोड़ता है बाँटता नहीं। धर्म उदारता का पाठ पढ़ाता है तोड़ने वाली कट्टरता का नहीं। धर्म के इसी स्वरूप की अलख जगाकर रामानन्दाचार्य ने रामभक्ति का प्रवर्तन किया था। उनकी परम्परा में कट्टरता के लिए कोई जगह नहीं है। मध्य प्रदेश के मुख्यमंत्री व अखिल भारतीय रामानन्दाचार्य सप्तशातब्दी समिति के अध्यक्ष की दिग्विजय सिंह ने आज सायंकाल टाउनहाल के मैदान में शतमुख कोटि होमात्मक श्रीराम महायज्ञ के साथ एक वर्ष से चल रहे रामानन्दाचार्य सप्तशताब्दी महोत्सव के समापन समारोह को सम्बोधित करते हुए उक्त विचार प्रस्तुत किये।

उक्त अवसर पर श्री दिग्विजय सिंह ने कहा कि काशी नगरी से आज इस महोत्सव व महायज्ञ के माध्यम से धर्म की उदात्त लोककल्याणकारी चेतना का शंखनाद हुआ है। उसी क्रम में उन्होंने कहा कि रामानन्दाचार्य की भक्ति परम्परा में उदारता का ऐसा संदेश है जो समाज और राष्ट्र को जोड़ता है। यह ऐसे सम्प्रदाय की उदार परम्परा है जिसमें सबका स्थान है, सबको शरण मिलती है। सप्तशताब्दी महोत्सव के माध्यम से इस परम्परा के आदर्शों को आगे बढ़ाने की दिशा में कार्य करने का एक अवसर मिला है और इसे जारी रखना होगा। उन्होंने विश्वास व्यक्त किया कि रामानन्दाचार्य स्वामी श्रीरामनरेशाचार्य की सन्निधि में परम्परा की इस लोकमंगलकारी चेतना को आगे बढ़ाने का प्रयास जारी रहेगा। सात सौ वर्षों पूर्व समाज को जोड़ने की जो आध्यात्मिक परम्परा रामानन्दाचार्य स्वामी रामनरेशाचार्य ने प्रवाहित की उसके आदर्शों को पुष्ट करने का संकल्प आज प्रासंगिक है। इस महोत्सव व यज्ञ से यह संकल्प सत्य हुआ है। इसके संदेश का शंखनाद हमें घर-घर गाँव-गाँव करना होगा। श्री सिंह ने आयोजन समिति के कार्यकर्त्ताओं तथा महोत्सव समिति के पदाधिकारियों का अध्यक्ष के रूप में आभार प्रकट करते हुए कहा कि सप्तशताब्दी पूरी हुई है लेकिन कार्य पूरा नहीं हुआ है। उस दिशा में परम्परा से जुड़े संत व भक्त प्रयासरत रहेंगे। जगद्‌गुरु रामानन्दाचार्य स्वामी रामनरेशाचार्य ने आशीर्वचन में कहा कि इस महोत्सव व महायज्ञ के सफल व निर्विघ्न समापन का श्रेय भगवान् श्रीराम की कृपा और बाबा विश्वनाथ के आशीर्वाद को प्राप्त है। इसके पीछे देशपर्यन्त फैले श्रीमठ से सम्बद्ध

श्रद्धालु भक्तों, सहयोगियों, संतों के संकल्प तथा काशीवासियों के सद्भाव का सम्बल रहा है। इस कोटि महायज्ञ और रामानन्दाचार्य सप्तशताब्दी महोत्सव से जो पुण्य अर्जित हुआ है वह सब मैं सम्पूर्ण मानवता व विश्व-कल्याण के लिए समर्पित करता हूँ। स्वामी रामनरेशाचार्य ने कहा कि महायज्ञ मंडप की शोभा के प्रति श्री दिग्विजय सिंह ने जो आभिभूत भाव प्रकट किया है वह आध्यात्मिक भावों के वैभव की शोभा है। काशी और महायज्ञ व महोत्सव में देश भर से आये वैदिक विद्वान् तथा संयोजक गणेश्वर शास्त्री द्रविड़, यज्ञाचार्य पं. श्रीकृष्ण लक्ष्मीकांत पुराणिक व उनके साथ कार्यरत सहयोगी बधाई के पात्र हैं। उनके पुण्य से सनातन धर्म का सनातनत्व व उनकी निष्ठा से उसकी शास्त्रीय मर्यादा से पूर्ण स्वरूप महायज्ञ प्रस्तुत हुआ।

स्वागताध्यक्ष पं. लोकपति त्रिपाठी, महोत्सव समिति के सचिव दयासिन्धु शर्मा व अन्य पदाधिकारियों ने मुख्य अतिथि का स्वागत किया। संचालन डॉ. सतीश कुमार ने किया। राजेशपति त्रिपाठी ने मुख्य अतिथि का माल्यार्पण के साथ स्वागत किया। इस अवसर पर मुख्यमंत्री दिग्विजय सिंह ने बालयोगी उमेशनाथ, ज.गु. स्वामी रामनरेशाचार्य को माल्यार्पण कर श्रद्धालुओं व संतों की ओर से सम्मान किया। कोटि आहुतियों की मंगलवार को पूर्णता के बाद आज पूर्णाहुति के साथ महायज्ञ का अन्तिम दिन होने के कारण प्रातः साढ़े चार बजे से ही यज्ञशाला की परिक्रमा करने वाले श्रद्धालुओं का ताँता लगा था। सारे दिन भारी भीड़ परिक्रमा पथ पर चलती रही। पुरुषों व स्त्रियों के पृथक्-पृथक् परिक्रमा पथ भरे रहे। यज्ञस्थल पर स्वामी रामनरेशाचार्य व स्वागताध्यक्ष पं. लोकपति त्रिपाठी, दिन भर उपस्थित थे। यज्ञाचार्य के नेतृत्व में आज प्रातःकाल नित्य पूजन के बाद सभी आवाहित देवतागण का पूजन व हवन सम्पन्न हुआ। उसके बाद उत्तरांग पूजन सायं चार बजे पूर्णाहुति आरम्भ हुई। इसी के साथ महायज्ञ की परिपूर्णता की गयी। यज्ञ समापन के समय पहुँचे श्री दिग्विजय सिंह विद्वत् पूजन में सम्मिलित हुए। उन्होंने यज्ञाचार्यों से आशीर्वाद ग्रहण किया। महायज्ञ मंडप के निकट सम्मान सभा में श्री दिग्विजय सिंह ने सप्तशताब्दी समिति के प्रमुख कार्यकर्ताओं में सर्वश्री गोपालदास मित्तल, विष्णु विंदल, रघुनाथ प्रसाद त्रिपाठी, मुख्तार हाशमी, राजेन्द्र द्विवेदी, सुधीर मिश्रा, भरत शर्मा, सुरेश मित्तल, राजेश तिवारी, विक्कू अवस्थी, डॉ. जे.पी. राय, रामरतन, एम.एल. जोशी, दिलीप राय, देवचन्द भाई व प्रवीण सिंघल को सम्मानित किया। इनमें देश के विभिन्न नगरों के पदाधिकारी व कार्यकर्त्ता सम्मिलित थे। कार्यक्रम का संचालन श्री सतीश कुमार ने किया।

●

धर्म संसद : संघ व विहिप का अंग

दिग्विजय सिंह

वाराणसी २४ जनवरी। मध्य प्रदेश के मुख्यमंत्री श्री दिग्विजय सिंह ने आज यहाँ कहा कि धर्म-संसद की राम मन्दिर निर्माण की घोषणा का कोई महत्व नहीं है। धर्म-संसद न हिन्दुओं और न ही धर्मगुरुओं का प्रतिनिधित्व करती है। मंदिर निर्माण का मामला अदालत में विचारधीन है। इस मुद्दे की लड़ाई अदालत में लड़ी जानी चाहिए।

स्थानीय सर्किट हाउस में जागरण से विशेष बातचीत में उन्होंने कहा कि धर्मसंसद केवल एक अंग है। अखाड़ा परिषद् और लगभग सभी शंकराचार्यों ने इससे अपने को अलग कर लिया है।

श्री सिंह यहाँ ज.गु. रामानन्दाचार्य सप्तशताब्दी समापन उत्सव में शामिल होने के लिए आये थे। उन्होंने कहा कि विश्व हिन्दू परिषद् तो केवल हिन्दुओं की धार्मिक भावनाओं को भड़काकर इसको राजनीतिक तूल देना चाहती है। अखाड़ा परिषद् ने इलाहाबाद में हुए धर्म-संसद का बहिष्कार किया है। अयोध्या में बाबरी मस्जिद ढहाने के बाद जनता इनके चेहरों को पहचान चुकी है। धर्म के नाम पर धार्मिक भावनाओं को भड़काने का इनका प्रयास अब सफल नहीं होने वाला है। धर्म-संसद के निर्णय पर लोगों ने तीखी प्रतिक्रिया व्यक्त कर जता दिया है कि विहिप की मंशा पूरी नहीं हो पायेगी। प्रश्नों के उत्तर में श्री दिग्विजय सिंह ने कहा कि मंदिर कहाँ बने यह मुद्दा विश्व हिन्दू परिषद् का नहीं है। विवादित भूमि पर मंदिर का निर्माण केवल अदालत के फैसले के बाद ही हो सकता है। इसके पहले संभव ही नहीं है। विहिप के नेता श्री अशोक सिंघल सनातन धर्म के शंकराचार्य नहीं हैं और विहिप सनातन धर्म का पर्याय नहीं है। ऐसी किसी धर्म-संसद के किसी अभियान के फरमान को मानने के लिए सनातन धर्मी बाध्य नहीं हैं। निहित स्वार्थों के लिए जारी फरमान मानने की हमारी परम्परा नहीं है।

उन्होंने कहा कि कांग्रेस अध्यक्ष श्रीमती सोनिया गाँधी के महाकुम्भ मेला में पहुँचने पर तमाम बावेला खड़ा किया गया। कांग्रेस पार्टी ने कभी भी धर्म की राजनीति नहीं की है। सोनिया गाँधी तो केवल अपने परिवार की परम्पराओं को निभाने के लिए कुम्भ में पहुँची थीं। उन्होंने कहा कि यदि सोनिया गाँधी इलाहाबाद न पहुँचतीं तो यही कहा जाता कि ईसाई होने के नाते वह नहीं आयीं।

मध्य प्रदेश के मुख्यमंत्री श्री दिग्विजय सिंह का आज वाराणसी आगमन एवं टाउनहाल स्थित शतमुख कोटि होमात्मक यज्ञ स्थल पर पहुँचने पर जोरदार स्वागत किया गया। वह आज सायं सवा पाँच बजे हवाई अड्डा पहुँचे और महायज्ञ समेत अन्य कार्यक्रमों में भाग लेने के उपरान्त रात्रि में नयी दिल्ली के लिए रवाना हो गये।

मध्य प्रदेश के मुख्यमंत्री श्री दिग्विजय सिंह टाउनहाल से नागरीप्रचारिणी सभा काशी गये और उन्होंने सभा के प्रधानमंत्री पं. सुधाकर पाण्डेय से बातचीत में यह आश्वासन दिया कि नागरीप्रचारिणी सभा व हिन्दी हित के लिए निरन्तर कार्य करते रहेंगे। उन्हें सभा की ओर से हिन्दी निबंध गंगा की प्रति भेंट स्वरूप दी गई। कार्यक्रम न होने के बावजूद श्री सिंह ने नागरीप्रचारिणी सभा पहुँचकर हिन्दी के प्रति अपना अनुराग प्रकट किया।

रामानन्दाचार्य सप्तशताब्दी महोत्सव में प्रकाशित छह ग्रंथों का एक सेट मुख्यमंत्री श्री दिग्विजय सिंह को मुद्रक श्री विपिन पण्ड्या ने भेंट किया। यह ग्रंथ रामानन्दाचार्य व उनकी परम्परा से सम्बद्ध है। यह सभी ग्रंथ मध्य प्रदेश शासन के सूचना विभाग ने प्रकाशित किया है।

नमोस्तुरामाय

जगद्गुरु रामानन्दाचार्य सप्तशताब्दी सम्पूर्ति समारोह

शास्त्र-सभा

(२० जनवरी सन् २००१)

डॉ. कुंज बिहारी शर्मा
उपाचार्य-वेद विभाग
सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय,
वाराणसी

डॉ. कमलेश झा
अध्यक्ष-धर्मागम विभाग
काशी हिन्दू विश्वविद्यालय
वाराणसी

सन्दर्भ– काशी की पाण्डित्य परम्परा में शास्त्र सभा एवं आतिथ्यपूर्ण सम्मान समारोह।

परमाराध्य मध्यमाचार्य जगद्गुरु श्रीरामानन्दाचार्य स्वामी के द्वारा लोककल्याणार्थ किये गये महान कार्यों एवं उनकी साधना को जन-जन तक जागृति करने के लिए जगद्गुरु रामानन्दाचार्य सप्त शताब्दी समारोह के वर्षव्यापी किये गये मंगल कार्यों के क्रम में आयोजित सप्तशताब्दी महोत्सव के सम्पूर्ति मंगल पर काशी में शतमुखकोटि होमात्मक श्रीराम महायज्ञ के ऐतिहासिक आयोजन पर पूज्यपाद जगद्गुरु रामानन्दाचार्य स्वामी पूज्यश्री रामनरेशाचार्य जी के संरक्षकत्व एवं मंगल सान्निध्य में काशी की परम्परानुसार यहाँ के विभिन्न परम्परागत शास्त्रों के संरक्षण के लिए विख्यात काशी के मूर्धन्य विद्वानों की शास्त्र सभा का आयोजन दिनांक २० जनवरी २००१ को हुआ। पूर्वाह्न से प्रारम्भ होकर अनवरत सायंकाल तक वेद, न्याय, वेदान्त, मीमांसा, व्याकरण, साहित्य, आगम, ज्योतिष आदि विषयों पर शास्त्रार्थ के रूप में चर्चा के साथ-साथ महास्वामी श्री रामानन्दाचार्य जी के कृतित्व एवं उनके आदर्श मार्ग पर विचार व्यक्त किये गये। विद्वानों की यह शास्त्र सभा काशी के इतिहास में अत्यन्त महत्वपूर्ण तथा गौरवशाली रही है। काशी की पाण्डित्य परम्परा वेद वेदान्त शास्त्रों का नेतृत्व कर सम्पूर्ण विश्व में सम्मान के साथ अभिनन्दित होती है। पूज्यपाद स्वामी श्रीरामनरेशाचार्य जी महाराज इस परम्परा के संरक्षक ही नहीं अपितु स्वयं को भी इस विद्या के अध्ययन में बाल्यकाल में ही समर्पित कर सभी शास्त्रों के ज्ञान की साधना को

अपने आचार्य-गुरुओं से काशी में प्राप्त कर अपना यश सम्पूर्ण भारत में असंख्य तारों की भाँति चमत्कृत व प्रकाशित कर रहे हैं। महाराज श्री ने अपनी सिद्ध साधना का प्रभाव काशी के क्षेत्र में ही नहीं अपितु सम्पूर्ण जगत् में प्रकाशित कर काशी की परम सौभाग्यशाली पाण्डित्य परम्परा का भी ऐसे परम पवित्र मंगल अवसर पर आयोजन कर हमें जागृत किया है। महाराजश्री के प्रति काशी के आचार्यों का अत्यन्त सरलता एवं श्रद्धा के साथ अनन्य भाव अनवरत बना हुआ है। महाराजश्री द्वारा शास्त्र सभा का इस अवसर पर आयोजन होना संरक्षित संकल्प है। इस शास्त्र सभा एवं सम्मान के अवसर पर ऐसे भी आचार्य व विद्वान् उपस्थित हुए जो अविरल रूप से ही कहीं उपस्थित होते हैं। महाराजश्री के संरक्षण में सम्पूर्ण भारत में जगद्गुरु रामानन्दाचार्य सप्तशताब्दी समारोह का वर्षव्यापी मंगल कार्य जिस मनोयोग एवं तत्परता से आपके भक्तों ने मनाया वह अतुलनीय महान सनातन धर्म की परम्परा का अविस्मरणीय कर्मयज्ञ है। वैसे काशी में शास्त्रार्थ एवं शास्त्र सभा की एक लम्बी परम्परा रही है, किन्तु महाराजश्री के सान्निध्य में २० जनवरी सन् २००१ को आयोजित विद्वानों की यह सभा अत्यन्त उच्च कोटि एवं विशिष्टतापूर्ण रही। उपस्थित मूर्धन्य विद्वानों ने इस सभा के माध्यम से वेद, न्याय, व्याकरण, वेदान्तादि शास्त्रों पर गहन शास्त्रार्थ प्रस्तुत कर श्रीरामनरेशाचार्य जी के प्रति एवं महास्वामी साधक सन्त श्री रामानन्दाचार्य जी के कृत्यों पर अपने-अपने विचार प्रकट कर अपने को गौरवान्वित किया। विद्वानों ने यह भी कहा कि काशी का महत्व श्रीराम महायज्ञ के आयोजन से महाकुम्भ पर्व जैसा तीर्थयात्रियों के लिए बन गया था। इस तरह का महायज्ञ काशी की पवित्र भूमि पर पिछले अन्तराल में नहीं देखा गया। जिस पवित्रता के साथ यह महायज्ञ महान साधक तपस्वी आचार्य पं. श्री गणेश्वर शास्त्री द्रविण जी के आचार्यत्व में आयोजित हुआ वह अपने आप में अध्यात्म की साधना का क्रियारूप प्रदर्शित कर रहा था। इस शास्त्र सभा की अध्यक्षता व्याकरण, दर्शन, न्याय आदि शास्त्रों के परम्परागत पाण्डित्य के पुरोधा धुरन्धर विद्वान् आचार्य रामयत्न शुक्ल जी ने की। मुख्य अतिथि के रूप में संस्कृत विद्या के महान सेवक कुशल प्रशासक सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति पद्मश्री उपाधि से अलंकृत आदरणीय प्रोफेसर वेंकटाचलम् एवं सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय के यशस्वी कुलपति वेदान्त दर्शन के मूर्धन्य शिरोमणि प्रो. राममूर्ति शर्मा जी उपस्थित थे। इस पवित्र अवसर पर संतों के साधना के साधक आध्यात्मिक परम्पराओं के महान यशस्वी, लोककल्याण के संरक्षक पूज्यपाद जगद्गुरु रामानन्दाचार्य श्रीरामनरेशाचार्य जी का मंगल सान्निध्य व आशीर्वाद प्राप्त हुआ। विद्वानों की उपस्थिति एवं उनके विचार अलग-अलग देना परिस्थितिजन्य दोष के कारण

सम्भव नहीं हो पा रहा है। फिर भी कतिपय विशिष्ट विद्वानों के नाम तथा कुछ अत्यन्त उच्चकोटि के आचार्यों का संक्षिप्त विचार जो हमें प्राप्त हुआ है उसे क्रमशः उपस्थित कर महाराजश्री के सम्मान में सादर प्रस्तुत कर अपने को सौभाग्यशाली मानते हैं। संयोजक एवं सहसंयोजक होने के कारण इस महान आध्यात्मिक महायज्ञ के प्रति तथा अपने परमाराध्य जगद्गुरु रामानन्दाचार्य श्री स्वामी रामनरेशाचार्य जी के प्रति हम अपने को महाराजश्री की अनवरत सेवा में संकल्पित होकर समर्पित करते हैं।

कुंज बिहारी शर्मा
कमलेश झा

श्रीराम महायज्ञ : एक करोड़ आहुतियाँ

वाराणसी, १३ नवम्बर। जगद्गुरु रामानन्दाचार्य सप्तशताब्दी महोत्सवों का समापन श्रीराम महायज्ञ तथा आध्यात्मिक समागम के साथ होगा। अगले वर्ष १६ जनवरी से २४ जनवरी २००१ तक होने वाले सप्तशताब्दी समापनोत्सव के साथ विश्व-शान्ति के लिए समायोजित श्रीराम महायज्ञ में एक करोड़ आहुतियाँ दी जायेंगी। रामानन्द सम्प्रदाय के शीर्ष आचार्य स्वामी रामनरेशाचार्य ने पत्र प्रतिनिधियों से बातचीत के दौरान बताया कि यह काशी में अपने ढंग का एक अपूर्व धार्मिक अनुष्ठान होगा। सहस्राब्दि के इस पहले शतकोटि होमात्मक श्रीराम महायज्ञ के संरक्षक पंडित गणेश्वर शास्त्री द्रविड़ तथा यज्ञाचार्य पंडित श्रीकृष्ण पुराणिक होंगे।

उन्होंने बताया कि श्रीराम महायज्ञ बाँस-निर्मित सात मंजिला यज्ञमंडप में होगा। इस विशाल यज्ञमंडप में १०० छोटे-छोटे यज्ञकुण्ड होंगे। श्रीराम मंत्र के साथ सम्पन्न होने वाले इस यज्ञ के लिए सात्विक यजमानों का चयन हो चुका है। स्वामी रामनरेशाचार्य ने बताया कि गत २६ से २९ जनवरी २००० के बीच काशी में ही रामानन्दाचार्य सप्तशताब्दी महोत्सव का शुभारम्भ हुआ था। इसका समापनोत्सव काशी में ही होना निश्चित हुआ है। उन्होंने बताया कि सप्तशताब्दी महोत्सव के दौरान सप्तशताब्दी यात्रा भी निकाली गयी जो उत्तर प्रदेश, बिहार, हरियाणा, पंजाब, चंडीगढ़, हिमांचल प्रदेश, राजस्थान, मध्य प्रदेश, उड़ीसा एवं महाराष्ट्र इत्यादि का भ्रमण कर चुकी है। स्वामी रामानन्दाचार्य ने कहा कि यात्रा के दौरान सभी पड़ावों पर महोत्सव के साथ-साथ संत सम्मेलन, विद्वत् संगोष्ठी, राजनयिकों एवं समाजसेवियों के सम्मेलन, हरिजन बस्ती में एक समारोह, पाँच सात्विक लोगों का सम्मान भजन-कीर्तन समागम तथा यज्ञादि अनुष्ठान समायोजित होते रहे हैं। उन्होंने बताया कि सप्तशताब्दी वर्ष में सम्प्रदाय एवं रामानन्दाचार्य से सम्बद्ध साहित्य के प्रचुर प्रकाशन, रामानन्दाचार्य के विशिष्ट चित्रों एवं जीवन चित्रमाला का निर्माण एवं प्रकाशन, वृत्तचित्र का निर्माण आदि संकल्पों पर कार्य जारी है। स्वामी रामनरेशाचार्य ने बताया कि महोत्सव के समापन पर आयोजित समारोह में राजनीतिक, समाजसेवी, शिक्षाचार्य के अलावा देश भर के सन्तों एवं मूर्धन्य धर्माचार्यों के समागम होंगे। उन्होंने बताया कि नौ दिवसीय समापनोत्सव में समस्त संत वाणियों का पाठ, विभिन्न सम्प्रदायों के संकीर्तन, नामचीन संगीतकारों द्वारा भजन-कीर्तन, संगोष्ठी कार्यक्रम सम्पादित होंगे।

●

ज.गु. रामानन्दाचार्य सप्तशताब्दी : समापन काशी

विराट सन्त सम्मेलन होगा - श्रीरामनरेशाचार्य
१६ जनवरी २००१ ई.

वाराणसी। जगद्गुरु रामानन्दाचार्य स्वामी रामनरेशाचार्य ने कहा कि वर्षपर्यन्त चल रहे राष्ट्रव्यापी जगद्गुरु रामानन्दाचार्य सप्तशताब्दी महोत्सवों की शृंखला का समापन काशी में अपूर्व श्रीराम महायज्ञ तथा भव्य आध्यात्मिक समागम के साथ होगा। आगामी सोलह से चौबीस जनवरी के बीच समायोजित इस महायज्ञ एवं समापनोत्सव के नौ दिवसीय कार्यक्रम की तैयारियाँ आरम्भ हो गयी हैं।

रामानन्द सम्प्रदाय की मूल एवं शीर्ष आचार्य पीठ श्रीमठ, पंचगंगा घाट में आज राष्ट्रव्यापी रामानन्दाचार्य सप्तशताब्दी यात्रा के अन्तिम चरण में गुजरात प्रस्थान से पूर्व ज.गु. रामानन्दाचार्य स्वामी रामनरेशाचार्य ने एक पत्रकार वार्ता में बताया कि १६ जनवरी २००१ से आरम्भ रामानन्दाचार्य सप्तशताब्दी समापनोत्सव के साथ समायोजित श्रीराम महायज्ञ में एक करोड़ आहुतियाँ होंगी। यह काशी में अपने ढंग का अपूर्व धार्मिक अनुष्ठान होगा। सहस्राब्दी के इस पहले शतकोटि होमात्मक श्रीराम महायज्ञ के संरक्षक पं. गणेश्वर शास्त्री द्रविड़ तथा यज्ञाचार्य पं. श्रीकृष्ण पुराणिक होंगे। विशाल यज्ञ मंडप में १०० यज्ञकुण्ड बनेंगे। श्रीराममन्त्र के साथ सम्पन्न होने वाले यज्ञ के लिये सात्विक यजमानों का चयन किया जा चुका है।

स्वामी रामनरेशाचार्य ने बताया कि विगत २७ से २९ जनवरी २००० के बीच त्रिदिवसीय महोत्सव के साथ काशी में ही रामानन्दाचार्य सप्तशताब्दी महोत्सव आयोजनों का उद्घाटन हुआ था। अब इसका समापनोत्सव भी काशी में ही होगा। इस बीच एक वर्ष में जहाँ मैं रामानन्दाचार्य सप्तशताब्दी यात्रा क्रम में विभिन्न प्रान्तों का भ्रमण करता रहा हूँ, वहीं इस यात्रा के साथ ही देश के विभिन्न क्षेत्रों में सप्तशताब्दी महोत्सवों का आयोजन चलता रहा है। अब तक उत्तर प्रदेश के अतिरिक्त बिहार, हरियाणा, पंजाब, चंडीगढ़, हिमाचल प्रदेश, राजस्थान, मध्य प्रदेश, उड़ीसा एवं महाराष्ट्र में यात्राक्रम के साथ महोत्सवों की लम्बी शृंखला पूर्ण हो चुकी है। गुजरात के साथ दिल्ली, बम्बई एवं उत्तराखण्ड के कार्यक्रम शेष हैं, जिन्हें आज से आरम्भ यात्रा के अन्तिम चरण में पूरा करके मैं काशी लौटूँगा और यहाँ सप्तशताब्दी का नौ दिवसीय समापनोत्सव महायज्ञ के साथ होगा। उन्होंने बताया कि सभी नगरों में महोत्सव के साथ

संत सम्मेलन, विद्वत्-संगोष्ठी राजनयिकों एवं समाजसेवियों के सम्मेलन, हरिजन बस्ती में एक समारोह, पाँच स्थानीय विशिष्ट योगदान वाले सात्विक लोगों का सम्मान, भजन-कीर्तन, समागम तथा यज्ञादि अनुष्ठान समायोजित होते रहे हैं। सभी कार्यक्रमों का उद्देश्य जगद्गुरु रामानन्दाचार्य कें आदर्शों, उपदेशों, व्यक्तित्व, कृतित्व का व्यापक लोकप्रसार होता है।

स्वामी रामनरेशाचार्य ने बताया कि जनवरी में नौ दिवसीय रामानन्दाचार्य सप्तशताब्दी महोत्सव समापन समारोह के अवसर पर धर्म, राजनीति, समाजसेवा तथा शिक्षा जगत् से जुड़ी अनेक राष्ट्रीय महत्व की विभूतियों की उपस्थिति के साथ ही देश भर के सन्तों एवं भक्तों का विराट समागम काशी में होगा।

●

आहुतियों के ग्रहण हेतु देवता प्रकट होंगे

वाराणसी, ३ जनवरी। शताब्दियों बाद धर्म नगरी काशी में १६ जनवरी से होने वाले यज्ञ में देवताओं की प्राण प्रतिष्ठा के लिए नगर के मध्य टाउनहाल प्रांगण में बनायी जा रही तपोवनी आश्रमों की सी छवि भव्य यज्ञशाला का निर्माण कार्य अहर्निश युद्ध स्तर पर जारी है। यज्ञशाला के निर्माण में जुटे सुदूर वनवासी अंचलों के आदिवासी कुशल कलाकारों की सिद्धहस्तता और निर्माण कला का अनुष्ठान नगरवासियों को सहज ही आकर्षित कर रहा है। यूकेलिप्टस के ९६ सुदीर्घ तनों के स्तम्भ आधार पर खड़ी हो रही बाँस के खपच्चियों वाली इस सात मंजिली यज्ञशाला का आकार जैसे-जैसे स्पष्ट हो रहा है जिज्ञासु नागरिकों एवं भक्तों की भीड़ बढ़ती ही जा रही है।

मुजफ्फरपुर (बिहार) के वनवासी क्षेत्र से कुशल कारीगरों की टोली लेकर खास यज्ञशाला के निर्माण के लिए काशी आये सिद्धहस्त कारीगर भरत साहनी भाषा के आदान-प्रदान की विवशताओं के बावजूद संकेतों के जरिये यज्ञशाला के निर्माण की बाबत काफी कुछ जानकारियाँ दे जाते हैं। वे बताते हैं कि १२०-१२० फुट की यज्ञभूमि को आच्छादित करने वाला बाँस की खपच्चियों से बन रहा यह यज्ञ मण्डप कला और साज-सज्जा दोनों ही दृष्टियों से नगर में एक अनूठा अस्थायी निर्माण साबित होगा। टेण्ट हाउसों के निर्देशन में विभिन्न उत्सवों के दौरान बनने वाले विशाल पंडालों की शोभा को मात देने का दावा वह आत्मविश्वास के साथ करते हैं।

वह बताते हैं कि निर्माण कार्य में लगने वाले हजारों बाँस, सैकड़ों विशाल तने उपलब्ध कराने में जब यहाँ से असमर्थता जतायी गयी तो किस तरह वे वनों से बाँस और यूकेलिप्टस के विशाल वृक्ष कटवाकर बमुश्किल भारी माल-असबाब से लदे-फँदे काशी पहुँचे और किस तरह अपने २९ साथियों की मदद से आनन-फानन में यज्ञशाला के विशाल मंडप का सात मंजिला ढाँचा खड़ा कर दिखाया। श्री साहनी के अनुसार निर्माण के बाद यज्ञशाला तपोवन में बसी किसी पर्णकुटी की सी छवि देगी। यज्ञशाला में कदम रखने के बाद श्रद्धालुजन सिर्फ निर्माण कला को ही नहीं सराहेंगे बल्कि यहाँ महसूस होने वाली तपोवनी शांति को भी अपने मुँह से बखानेंगे।

निर्माणाधीन यज्ञशाला के पूरे परिसर की परिक्रमा करते हुए भरत साहनी जानकारी देते हैं कि यज्ञशाला के सौ यज्ञ कुण्डों तथा मध्य में बन रही मुख्य वेदिका

का निर्माण कार्य तेजी पर है। दस जनवरी तक यज्ञशाला आकार ले लेगी फिर साज-सज्जा का काम ही शेष रह जाएगा।

वह बताते हैं कि निर्माण कार्य में अन्य सावधानियों के साथ आयोजन की पवित्रता और शास्त्रोक्त विधानों का भी पूरा-पूरा ध्यान रखा जा रहा है। शास्त्रीय विधान के मुताबिक यज्ञ कुण्डों के बीच आवश्यक दो-दो हाथ की दूरी का विषय हो या छप्पर में उपयोग किये जाने वाले घास-फूस का, उन्होंने बताया कि पौराणिक काल में पर्णकुटियों को आच्छादित करने के लिए वन विशेष में उपयोग किये जाने वाले फूस का ही उपयोग होता मगर यज्ञशालाओं के छप्पर में गंगा की कछार में स्वतः पैदा होने वाली विशेष घास कासे का उल्लेख आया है। इस यज्ञशाला के निर्माण के लिए कासे की यह घास टनों के वजन में झूँसी प्रयाग तथा कछवाँ के बरैनी घाट से मँगायी गयी है। वनवासी कला की शुद्धता बनाये रखने के लिए बाँस से बनाये गये खूबसूरत झरोखों को रंगाई तक में प्राकृतिक वानस्पतिक रंगों का ही प्रयोग किया गया है।

●

यज्ञखण्ड

कल्याणानां निधानं कलिमलमथनं पावनं पावनानां ।
पाथेयं यन्मुमुक्षोः सपदि परमपदप्राप्तये प्रस्थितस्य ।
विश्रामस्थानमेकं कविवरवचसां जीवनं सज्जनानां ।
बीजं धर्मद्रुमस्य प्रभवतु भवतां भूतये रामनाम ।।

पूज्यपाद जगद्गुरु अनन्तश्रीविभूषित रामानन्दाचार्य सवामीजी महाराज का सप्तशताब्दी महोत्सव दिनांक २७ जनवरी २००० से १६ जनवरी २००१ तक भव्य रूप में सम्पन्न हुआ। काशी में सप्तशताब्दी महोत्सव के प्रारंभ में त्रिदिवसीय महोत्सव का आयोजन किया गया। उसमेंकाशी के वैदिक विद्वानों का मन्त्रपाठ, जगद्गुरु पुरीशंकराचार्य श्री १००८ निश्चलानन्द सरस्वती स्वामी जी महाराज का दिव्य प्रवचन, माननीय डॉ. कर्णसिंह, श्रीमती सोनिया गाँधी प्रभृति राजनेताओं का समागम हुआ था। तीन दिवस के प्रारंभिक कार्यक्रम मेंश्रीरामानन्दाचार्य जी की जीवनी पर प्रकाश डाला गया। उनके सम्प्रदाय की महत्ता पर विद्वानों एवं राजनेताओं ने अपने विचार व्यक्त किये। संगीतके कार्यक्रम के साथ त्रिदिवसीय प्रारंभिक महोत्सव पूर्ण हुआ।

अनंतर भारतवर्ष के विभिन्न प्रान्तों में जगद्गुरु रामानन्दाचार्य स्वामी श्री रामनरेशाचार्य जी महाराज ने यात्रा की और सब जगह सभी वर्ग के लोगों का सम्मान कर जनता में रामानन्दाचार्य जी के भक्ति सन्देश को प्रचारित किया।

सप्तशताब्दी महोत्सव के समापन में काशी में टाउनहाल में श्रीराम कोटि-महायज्ञ का आयोजन हुआ। भूमिपूजन का मुहूर्त स्व. श्री गोविन्दशास्त्री पाठक जी ने दिया था। काशी के मूर्धन्य वैदिक विद्वान् श्री विनायक बाल जी ने कुण्ड-मण्डप का निर्माण कराया। यज्ञ का आचार्यत्व वेदमूर्ति श्री श्रीकृष्ण पुराणिक जी ने किया। सम्पूर्ण यज्ञ पौराणिक पद्धति से सम्पन्न हुआ। यज्ञ की पूर्णाहुति के दिन दर्शनार्थियों के प्रमाद से मण्डप में आग के लगने पर भी वह तुरन्त शान्त हो गयी इस दिव्यता का अनुभव मण्डप में स्थित विद्वानों ने किया। यज्ञ का सारा कार्यक्रम शास्त्रीयविधान से सम्पादित किया गया। सभा में जगद्गुरु काञ्चीशंकराचार्य, पुरीशंकराचार्य, द्वारकाशंकराचार्य प्रभृति अनेक आचार्य पधारे। सभी ने रामानन्दाचार्य जी के उपदेश एवं उनके द्वारा प्रचारित भक्तिमार्ग की महत्ता को प्रकाशित करते हुए धर्मानुसारी जीवन को अपनाने पर बल दिया। शप्तशताब्दी महोत्सव में पूज्यपाद जगद्गुरु रामानन्दाचार्य

स्वामीश्रीरामनरेशाचार्य जी के मार्गदर्शनानुसार सारे कार्यक्रम सम्पन्न हुए। स्वामी जी के भक्तमण्डल ने कार्यक्रम को सम्पन्न करने में जो सहयोग दिया उसको शब्दों में व्यक्त नहीं किया जा सकता।

समाज के सभी वर्गों ने अपने-अपने सामर्थ्यानुसार सप्तशताब्दीमहोत्सव को भव्य बनाने में सहयोग दिया। हमलोग उनके ऋणी हैं। मर्यादापुरुषोत्तम श्रीरामचन्द्रजी एवं जगद्गुरु श्रीरामानन्दाचार्य जी महाराज की परममंगलमयी कृपा का वर्षण सब पर होवे और लोगों की प्रवृत्ति रामभक्ति एवं धर्मपालन में होवे इस प्रकार प्रभु एवं आचार्यचरणों को प्रार्थना कर सप्तशताब्दी महोत्सव में सहयोग प्रदान किये हुए लोगों के प्रति कृतज्ञता प्रकट करते हुए इस लेख को यहीं पूर्ण करते हैं।

●

काशी में श्रीराम कोटि महायज्ञ : सात सौ वर्षों बाद

जीवन के अंतिम काल में ज.गु. रामानन्दाचार्य ने वरुणा-अस्सी के मध्य किया था ऐसा यज्ञ

पं. गणेश्वर शास्त्री द्रविड़

वाराणसी, ३ जनवरी। अखिल भारतीय स्तर पर बनाए जा रहे जगद्गुरु रामानन्दाचार्य सप्तशताब्दी महोत्सव अवसर पर १६ से २४ जनवरी २००१ ई. तक काशी में आयोजित श्रीराम कोटि महायज्ञ न सिर्फ शताब्दी का सबसे विराट धार्मिक आयोजन होगा बल्कि इस दृष्टि से ऐतिहासिक भी होगा कि सहस्राब्दी में इस तरह के प्रशस्त महायज्ञ के दूसरे बार काशी में आयोजन का श्रेय भी जगद्गुरु रामानन्दाचार्य की मूल पीठ को ही प्राप्त होगा। विशाल शतमुख कोटि होमात्मक श्रीराम महायज्ञ की महत्ता और उसके अभीष्ट को रेखांकित इस ऐतिहासिक तथ्य का रहस्योद्घाटन महायज्ञ के संयोजक तथा विद्वान् वेदज्ञ पण्डित गणेश्वर शास्त्री द्रविड़ ने आज एक पत्रकार वार्ता के दौरान किया।

यहाँ पराड़कर स्मृति भवन में पत्र-प्रतिनिधियोंसे बातचीत कर रहे पण्डित गणेश्वर शास्त्री ने बताया कि सात सौ वर्ष पूर्व जगद्गुरु रामानन्दाचार्य ने अपने अंतिम काल में काशी नगरी में ऐसा विशाल श्रीराम महायज्ञ किया था जिसके प्रमाण उपलब्ध हैं। इसके बाद उन्हीं जगद्गुरु की परम्परा के यशस्वी ध्वजवाहक जगद्गुरु रामानन्दाचार्य स्वामी रामनरेशाचार्य के सान्निध्य में श्रीराम षडक्षर मंत्र राज से एक करोड़ पवित्र आहुतियों वाले महायज्ञ के काशी में आयोजन का यह दूसरा शुभ और ऐतिहासिक अवसर होगा। उन्होंने बताया कि पचपन वर्ष पूर्व प्रातः स्मरणीय स्वामी करपात्री जी महाराज के निर्देशन में भी एक कोटि होमात्मक यज्ञ नगवा क्षेत्र में सम्पन्न हुआ था किंतु वह राम मंत्र से आवेष्टित नहीं था। अस्सी तथा वरुणा के बीच बसी पवित्र काशी नगरी में राम मंत्र से शतमुख कोटि महायज्ञ का ऐसा आयोजन जगद्गुरु रामानन्दाचार्य के बाद पहली बार ही हो रहा है।

जिज्ञासुओं का समाधान करते हुए यज्ञ के विद्वान् संयोजक ने बताया कि शास्त्रों के मतानुसार १०० कुण्डों का महायज्ञ यज्ञों की श्रेणी में सर्वोच्च माना गया है। वैदिक मान्यताओं के अनुसार कोई भी यज्ञ परमात्मा का साक्षात् स्वरूप होता है। ब्रह्म पुराण में राष्ट्र की शांति और समृद्धि के लिए प्रति वर्ष दो कोटि महायज्ञों के आयोजन का

विधान है। कहा गया है कि ऐसे यज्ञ के दर्शन मात्र से लोग कृतार्थ हो जाते हैं। उन्होंने बताया कि सर्वव्यापी परमात्मा प्रसाद रूप में ही वस्तुओं के सेवन का विधान ही भक्ति मार्ग में विहित है। इसी भावना से सप्तशताब्दी महोत्सव के समापन पर जगद्गुरु रामानन्दाचार्य स्वामी रामनरेशाचार्य के सान्निध्य में इस लोक मंगलकारी यज्ञ का आयोजन किया जा रहा है।

उन्होंने बताया कि देश के कोने-कोने से काशी में जुट रहे विद्वानों के निर्देशन में आयोजित यज्ञ के मुख्य संकल्पधारी जगद्गुरु रामानन्दाचार्य रामनरेशाचार्य जी होंगे। महायज्ञ का आचार्यत्व वेदमूर्ति पण्डित श्रीकृष्ण लक्ष्मीकांत पुराणिक करेंगे। टाउनहाल के प्रांगण में बन रहे यज्ञ मण्डप में सौ कुण्डों की स्थापना करके इनमें एक करोड़ आहुतियाँ समर्पित की जाएँगी। शास्त्रीय मर्यादा से नियोजित हो रहे यज्ञ मण्डप के अनुष्ठानों में ६५० व्यक्ति ब्रह्मा (याज्ञिक) और यजमान रूप में सहभागी होंगे। लाखों श्रद्धालुजन परिक्रमा के निर्दिष्ट यज्ञ पथ के दर्शनों का पुण्य लाभ प्राप्त कर सकेंगे। यज्ञ के शास्त्रीय अनुष्ठान और वैदिक कर्मकाण्ड टाउनहाल स्थित मुख्य यज्ञशाला में सम्पन्न होंगे। अन्य समारोहात्मक गतिविधियाँ ईश्वरगंगी स्थित आदर्श सेवा विद्यालय प्रांगण में समानान्तर चलेंगी।

आचार्य द्रविड़ ने बताया कि यज्ञ का श्रीगणेश १६ जनवरी को सर्वप्रायश्चित्त विधान के साथ होगा। जगद्गुरु रामानन्दाचार्य की जयंती का उत्सव भी इसी दिन मनाया जायेगा। १७ को संकल्प धारण कर चुके यजमान और आचार्य पूरी पवित्रता के साथ यज्ञ मण्डप में प्रवेश करेंगे।

यज्ञ के पुरोधाओं और आचार्यों का मधुपर्क पूजन इसी दिन मुख्य मण्डप में सम्पन्न होगा दोपहर को महायज्ञ की शोभायात्रा नगर की परिक्रमा करती गंगा तट (दशाश्वमेधघाट) तक जाएगी। वहाँ से गंगा जल पूरित घटों को जलयात्रा के रूप में यज्ञ मण्डप तक पहुँचाया जायेगा।

इसके पूर्व घाट पर गंगा पूजन तक बाद में मण्डप में पटस्थापन के अनुष्ठान विधिपूर्वक सम्पन्न होंगे। १८ जनवरी को प्रातः देवताओं के आवाहन के साथ मण्डप में नैऋत्य कोण में स्थापित यज्ञ कुण्ड में अरणी से अग्नि देव का आवाहन होगा। इसी से कुण्डों में भी अग्नि दी जायेगी।

ग्रहपूजन के साथ प्रारम्भ हुए महायज्ञ में २० से २४ जनवरी तक २५ लाख प्रतिदिन की गणना से कुल एक करोड़ आहुतियाँ समर्पित की जाएँगी। यज्ञ की पूर्णाहुति के अनुष्ठान मौनी अमावस्या तदनुसार २४ जनवरी को सम्पन्न होंगे। सभी कुण्डों की अग्नि नैऋत्य कोण के यज्ञ कुण्ड में समाहित कर दी जाएँगी।

●

श्रीराम यज्ञ महोत्सव : औदार्य का प्रतिरूप

स्वागताध्यक्ष लोकपति त्रिपाठी ने कहा आयोजन का माहात्म्य महाकुंभ से कमतर नहीं

वाराणसी, १२ जनवरी। श्रीरामानंद सप्तशताब्दी महोत्सव के समापन के उपलक्ष्य में शताब्दियों बाद काशी में १६ जनवरी से आयोजित शतमुख कोटि होमात्मक श्रीराम महायज्ञ एक ओर जहाँ काशी के आध्यात्मिक वैभव के प्रकटीकरण का प्रतीक होगा वहीं यज्ञ के साथ आयोजित धर्म समागम के मंच से सामाजिक संकीर्णताओं और धार्मिक कट्टरता के खिलाफ नयी सदी का एक नया मजबूत संदेश देश दुनिया के कोने-कोने तक जाएगा। इस आशय का दावा आज संप्तशताब्दी महोत्सव के स्वागताध्यक्ष तथा वरिष्ठ इंका नेता लोकपति त्रिपाठी ने एक पत्रकार वार्ता के दौरान किया।

महायज्ञ उत्सव की समारोहात्मक गतिविधियों के आयोजन केन्द्रीय स्थल पं. कमलाकर चौबे आदर्श इंटर कालेज में पत्र प्रतिनिधियों से बातचीत कर रहे श्री त्रिपाठी ने कहा कि पूरे एक युग के बाद देश की आध्यात्मिक नगरी काशी में आयोजित इस विराट धार्मिक आयोजन का माहात्म्य महाकुंभ से जरा भी कमतर नहीं है। उन्होंने इस आयोजन को काशीवासियों के लिए एक ऐतिहासिक और पुण्यदायी अवसर की संज्ञा दी।

काशी के जगद्गुरु रामानन्दाचार्य जी ने सात शताब्दी पूर्व समता, सहिष्णुता, सहअस्तित्व एवं परम उदारता पर आधारित भक्ति ज्ञान का महान संदेश दिया था, जिससे मानवता का कल्याण हुआ। आज जब धार्मिक जातीय एवं अन्य असहिष्णुतायें बढ़ रहीं, तब रामानंदाचार्य के उस संदेश की अत्यधिक प्रासंगिकता है और यह समारोह इसे स्थापित करेगां। पिछले एक वर्ष से काशी का समन्वयी उदार आध्यात्मिकता का संदेश देश में गूँजा है। अतः रामान्दाचार्य सप्तशताब्दी के इस समापन महोत्सव में देश के विभिन्न क्षेत्रों में धर्माचार्यों, संतों, भक्तों, विद्वानों, उपदेशकों, समाजसेवियों एवं राजनीतिज्ञों आदि का वृहद् समागम होगा। ५००० से भी अधिक लोगों का इस समागम में सम्मिलित होने के लिए बाहर से काशी आने की संभावना है।

उन्होंने जानकारी दी कि जगद्गुरु रामानन्दाचार्य सप्तशताब्दी समापन महोत्सव

का उद्घाटन समारोह १६ जनवरी को कमलाकर चौबे आदर्श इंटर कालेज में बने विशाल एवं भव्य समारोह-मंडप में आयोजित होगा। समारोह में मुख्य अतिथि द्वारिका एवं ज्योतिषपीठ के जगद्गुरु शंकराचार्य स्वामी स्वरूपानंद सरस्वती जी महाराज होंगे। और अध्यक्षता पुरी पीठ के जगद्गुरु शंकराचार्य स्वामी निश्चलानंद जी महाराज करेंगे। इस अवसर पर वैष्णवजन की प्रशस्त रामसनेही परंपरा के सम्प्रदायाचार्य खेड़ापा-राजस्थान के आचार्य श्री पुरुषोत्तम दास जी महाराज की अतिविशिष्ट उपस्थिति होगी। वर्तमान जगद्गुरु रामानन्दाचार्य स्वामी रामनरेशाचार्य जी महाराज का सान्निध्य उद्घाटन समारोह सहित सभी आयोजनों में प्राप्त रहेगा।

महोत्सव के सभी समारोहात्मक कार्यक्रम कमलाकर चौबे आदर्श इंटर कालेज, ईश्वरगंगी के प्रांगण में होंगे। उद्घाटन सभा के उपरांत अन्य कार्यक्रम १८ से २३ जनवरी तक २ से ५ बजे तक नियोजित हैं, जिसमें विशिष्ट व्याख्यान प्रवचन आदि होंगे। १८ जनवरी को धर्मसभा, १९ जनवरी को मानस सम्मेलन, २० जनवरी को राष्ट्रीय विद्वत्-संगोष्ठी, २१ को संत सम्मेलन, २२ जनवरी को हरिजन सम्मेलन तथा २३ जनवरी को समापन सम्मेलन आयोजित है। प्रतिदिन प्रातः ९.३० बजे से १२.०० बजे तक वेद-पुराण, मानस तथा संतवाणियों के पुण्य-पाठ होंगे पाठ में शामिल संतवाणियों में दासबोध, श्री ज्ञानेश्वरी, संत तुकराम, संत एकनाथ, संत कबीर, संत रैदास, संत सेन, संत पीपा, संत घीसादास, संत गरीबदास, रामसनेही सम्प्रदाय, गुरुग्रन्थ साहब तथा सूर एवं मीरा आदि के वचनों, वाणी एवं पद होंगे। प्रतिदिन सायं ७.०० से ९.०० बजे तक भजन, रामलीला एवं अन्य सांस्कृतिक कार्यक्रम सम्पन्न होंगे। वर्ष व्यापी राम-नाम संकीर्तन टाउनहाल में चल रहा है, जिसका प्रसारण नगर में सुदूर तक किया जा रहा है। महोत्सव में बिहार और महाराष्ट्र के वारकरी भक्तों की विशिष्ट संकीर्तन मण्डलियाँ भी शामिल होंगी। शोभा यात्रा १७ जनवरी को निकलेगी।

●

श्रीराम शतमुख कोटि महायज्ञ : काशी में लघुकुंभ

वाराणसी, ४ जनवरी। श्री रामानन्दाचार्य सप्तशताब्दी महोत्सव समारोह तथा इसके साथ ही १६ से २४ जनवरी तक यहाँ आयोजित ऐतिहासिक शतमुख श्रीराम कोटि महायज्ञ में देश के कोने-कोने से जुटने वाले सैकड़ों साधु-संतों, हजारों श्रद्धालुओं और भक्तों के अलावा कई विशिष्ट और अति विशिष्टजनों की उपस्थिति भी नगर में संभावित है।

आयोजन समिति से जुड़े सूत्रों के अनुसार कांग्रेस अध्यक्ष श्रीमती सोनिया गाँधी, मध्य प्रदेश के मुख्यमंत्री श्री दिग्विजय सिंह, राजस्थान के मुख्यमंत्री अशोक गहलोत जो सप्तशताब्दी महोत्सव की आयोजन समिति से भी जुड़े हैं, की उपस्थिति प्रायः तय मानी जा रही है। इनके अलावा अन्य कई प्रमुख राजनेताओं, मंत्रियों तथा अति विशिष्टजनों को भी आमंत्रण पत्र भेजे गये हैं। आयोजकों को विश्वास है कि आयोजन की महत्ता को देखते हुए दलीय प्रतिबद्धताएँ बहुत बाधक नहीं बनेंगी और समारोह के मंच पर अन्य कई राजनीतिक हस्तियाँ भी मौजूद नजर आएँगी। रामानन्दाचार्य सम्प्रदाय की सभी प्रमुख पीठों के धर्माचार्यों के अलावा अन्य सम्प्रदायों के पीठाधिपति भी यज्ञ में शामिल होंगे। प्राप्त सूचनाओं के अनुसार महाराष्ट्र के वारकरी सम्प्रदाय के धर्म प्रमुख सैकड़ों अनुयायियों के साथ यज्ञ में शामिल होंगे। उनके आगमन की पूर्व सूचना श्रीमठ में प्राप्त हो चुकी है। यज्ञ में भागीदारी के लिए काशी में जुटने वाले भक्तों और श्रद्धालुओं की संख्या हजारों में आँकी जा रही है। अकेले रामानन्दाचार्य सम्प्रदाय और उससे जुड़ी पीठों के शिष्यों और साधु-संतों की ही संख्या हजारों में होगी।

आयोजन समिति के प्रवक्ता के अनुसार यज्ञ के दौरान काशी में लघु कुंभ का सा दृश्य उपस्थित होगा। भारी भीड़ की संभावना के मद्देनजर आयोजकों ने तैयारियों का स्तर भी काफी व्यापक रखा है। सिर्फ आवासीय व्यवस्था के लिए ही मुख्य यज्ञ स्थल टाउनहाल, पड़ोस में स्थित नागरीप्रचारिणी सभा से लगायत आदर्श सेवा विद्यालय, दयानन्द इण्टर कालेज तथा महाविद्यालय के विशाल भवन और विश्राम गृह पहले से ही आरक्षित कर लिये गये हैं। इसके अलावा इन विद्यालयों के विस्तृत मैदानों में अस्थायी शिविरों के नगर बसाये जा रहे हैं। भोजन की व्यवस्था पिपलानी कटरा स्थित गोपाल बाग में की गयी है। यहाँ पाकशाला के अतिरिक्त विशाल भोजन पाण्डाल का निर्माण किया जा रहा है।

●

रामानंद की समन्वयी चेतना का केन्द्र काशी

वाराणसी, ९ जनवरी। स्वामी रामानन्द जी ने जातियों, सम्प्रदायों, पंथों एवं अन्य ऐसे संकुचित भावों के बीच विभाजक चारदीवारियों को ध्वस्त कर उनके बीच एक उदात्त समन्वयी चेतना के साथ भक्ति आंदोलन का सूत्रपात किया था। वैष्णव परंपरा में जहाँ उन्होंने रामभक्ति की जनान्दोलित धारा प्रवर्तित की, वहीं राम की राजधानी अयोध्या के सन्निकट होने के बावजूद शिव की नगरी काशी को अपनी साधना स्थली एवं मुख्यालय बनाया था। उनकी इस समन्वयी चेतना की भरपूर अभिव्यक्ति होगी। आगामी १६ से २४ जनवरी तक काशी में रामानन्दाचार्य सप्तशताब्दी समापन महोत्सव में दो शंकराचार्यों सहित विभिन्न धार्मिक परम्पराओं के आचार्यों एवं प्रमुख संतों का समागम होगा।

जगद्गुरु रामानन्दाचार्य सप्तशताब्दी महोत्सव समिति के प्रवक्ता के अनुसार समारोह एवं शतमुख कोटि महायज्ञ के अवसर पर लगातार मिल रही धर्माचार्यों, महन्तों एवं संतों की स्वीकृति के बीच धर्म क्षेत्र से जुड़ी अनेक प्रमुख हस्तियों के आने की संभावना है।

इनमें द्वारिका एवं ज्योतिषपीठ के शंकराचार्य जगद्गुरु स्वामी स्वरूपानंद जी महाराज एवं पुरी पीठाधीश्वर शंकराचार्य जगद्गुरु स्वामी निश्चलानंद जी महाराज ने भी भाग लेने की सहमति प्रदान की है। आगामी दस जनवरी को प्रयाग कुंभ क्षेत्र में जगद्गुरु रामान्दाचार्य स्वामी रामनरेशाचार्य जी के साथ इनकी भेंट के बीच उनके कार्यक्रम की रूपरेखा को अंतिम रूप मिलेगा।

रामानन्दाचार्य सप्तशताब्दी समापन महोत्सव देश के विभिन्न क्षेत्रों एवं पंथों से जुड़े कई धर्माचार्यों, महन्तों तथा रामानन्द जी की परम्परा एवं उनके सम्प्रदाय से जुड़े कई सन्तों के भी शामिल होने का कार्यक्रम है। इनमें रामस्नेही परम्परा के आचार्य पुरुषोत्तम दास, खेड़ापा-जोधपुर, श्रीनारायण-सम्प्रदाय के स्वामी प्रेम स्वरूपदास जी – कलोल (अहमदाबाद), सेवाचार्य स्वामी श्री अचलानन्द जी (जोधपुर), रामानन्द सम्प्रदाय के महाराज जगन्नाथ दास जी (सूरत) पंचाग्नि अखाड़ा के सभापति श्रीमहाराज गोपालनन्द ब्रह्मचारी जी, सुमेरुपीठ काशी के जगद्गुरु शंकराचार्य, स्वामी चिन्मयानन्द जी, महामण्डलेश्वर स्वामी काशिकानंद जी (बम्बई), बिहार योग विश्वविद्यालय के गादीपति स्वामी निरंजनानन्द जी सरस्वती, उज्जैन स्थित वाल्मीकि पीठ के बालयोगी

स्वामी उमेशनाथ जी, वाल्मीकि मंदिर नयी दिल्ली के स्वामी श्रीकृष्णदास जी, रामानंद आश्रम हरिद्वार के श्रीमहंन्त भगवानदास जी, अयोध्या के श्रीमहंन्त रामशरणदास जी, चित्रकूट के श्रीमहंन्त रामचन्द्र दास, पुणे के श्री चक्रान्ति जी महाराज एवं श्रीनारायण जी महाराज (ढेकने), आलन्दी के श्री किशन महाराज साखरे आदि के भाग लेने का कार्यक्रम प्राप्त हुआ है। कबीर पंथ, रामानन्द सम्प्रदाय एवं कुछ अन्य परम्पराओं के कई स्थानीय संतगण भी समारोह में भाग लेंगे।

●

श्रीराम महायज्ञ : सम्पूर्णानंद संस्कृत विश्वविद्यालय का सहयोग

प्रतिनिधिमंडल श्रीमठ में जगद्गुरु से मिला - संकल्प लिया

वाराणसी, ९ जनवरी। नवशताब्दी के प्रथम चरण में जगद्गुरु रामान्दाचार्य सप्तशताब्दी महोत्सव समापन के प्रसंग में काशी में शतमुख कोटि होमात्मक महायज्ञ का समायोजन काशी की आध्यात्मिक परम्परा को और समृद्ध बनाने वाली अभिनंदनीय घटना है।

महायज्ञ सहित सम्पूर्ण महोत्सव में सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय के शिक्षक, कर्मचारी एवं छात्र पूर्ण योग्यान के साथ सक्रिय भूमिका निभायेंगे। इस आशय का संकल्प विश्वविद्यालय अध्यापक संघ, छात्रसंघ, कर्मचारी संघ के पदाधिकारियों तथा विस्वविद्यालय के अधिकारियों सहित संस्था के एक प्रतिनिधिमंडल ने जगद्गुरु रामानन्दाचार्य स्वामी रामनरेशाचार्य जी महाराज के साथ श्रीमठ में सम्पन्न एक बैठक के दौरान व्यक्त किया।

सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय के विद्वत्जनों एवं तीनों संघों के प्रतिनिधि दल ने स्वामी रामनरेशाचार्य से आज श्रीमठ में मिलकर महोत्सव एवं महायज्ञ के समायोजन के सभी कार्यक्रमों पर विस्तृत चर्चा की। चर्चा में आयोजन को सफल बनाने के लिए सभी संभव सहयोग के आश्वासन के साथ प्रतिनिधि दल ने विश्वास व्यक्त किया कि सम्पूर्ण समायोजन से काशी की आध्यात्मिक गरिमा बढ़ेगी। बीसवीं सदी में काशी में केवल एक बार सम्पन्न हुए कोटि यज्ञ का नवशताब्दी में समायोजन काशी के लिए शुभ एवं पुण्यदायी संकल्प है।

प्रतिनिधि दल में अध्यापक संघ के अध्यक्ष एवं उपाध्यक्ष क्रमशः प्रो. कुंज बिहारी शर्मा एवं प्रो. हर प्रसाद दीक्षित, श्रमण विद्या संकायाध्यक्ष प्रो. ब्रह्मदेव नारायण शर्मा, दर्शन संकायाध्यक्ष प्रो. राम किशोर त्रिपाठी, प्रो. पुरुषोत्तम प्रसाद पाठक, शिक्षाशास्त्र विभागाध्यक्ष डॉ. राजपति चौहान, अध्यापक संघ के पूर्व अध्यक्ष पं. विश्वनाथ शुक्ल, वित्त अधिकारी कृष्णकांत उपाध्याय, डॉ. महेन्द्र पाण्डेय, डॉ. ललित चौबे, छात्रसंघ अध्यक्ष एवं महामंत्री क्रमशः सुदर्शन त्रिपाठी एवं बलराम त्रिपाठी, पूर्व अध्यक्ष ब्रह्मानंद उपाध्याय, पूर्व महामंत्री अजय शुक्ला, परमात्मा उपाध्याय, राजेन्द्र प्रताप त्रिपाठी, कर्मचारी संघ के महामंत्री सत्येन्द्रधर त्रिपाठी, पूर्व महामंत्री सुनील चौधरी एवं गिरधर कुमार पाठक आदि शामिल थे।

हम भी देंगे सेवा– इस विनम्र प्रार्थना के साथ ठिठुरती रात में जगद्गुरु से मिलने श्रीमठ पहुँचा जोशीले नौजवानों और किशोरों का एक जत्था। काशी यूथ क्लब के ये उत्साही सदस्य महायज्ञ में अपनी सुनिश्चित भागीदारी पर जगद्गुरु की स्वीकृति की मुहर को लेकर बेहद उत्कंठित थे। महाराज श्री ने उनके उत्साह को सराहा और पोस्टर चिपकाने से लेकर भोजन परिवेषण तक की जिम्मेदारियाँ उन्हें सौंपी। संवाद के क्रम में युवकों को संबोधित कर रहे जगद्गुरु ने कहा कि इस पवित्र यज्ञ में भागीदारी से युवा पीढ़ी में संस्कारों का जो बीजारोपण होगा वह भी यज्ञ का एक परोक्ष पुण्य फल ही है। उन्होंने कहा कि ऐसे संस्कार सैकड़ों प्रभावशाली प्रवचनों से भी पैदा नहीं किया जा सकते। उन्होंने बताया कि पंजाब, हरियाणा और बिहार के विभिन्न शहरों से आ रहे लगभग २०० कर्मठ युवा भक्तों का जत्था सिर्फ भोजन परिवेषण (परोसने) की जिम्मेदारी निभाने के लिए काशी पहुँच रहा है।

गुरु जी! गुल्लक फोड़ दी है मगर पैसा कैसे भेजे?

वाराणसी, ९ जनवरी। घने कोहरे की चादर में लिपटे पंचगंगा घाट स्थित ढाई कमरों वाले श्रीमठ के छोटे से अपने शयनकक्ष में सहयोगियों के साथ गंभीर मंत्रणा में व्यस्त हैं जगद्गुरु रामनरेशाचार्य जी महाराज। विषय है १६ जनवरी से शुरू हो रहे श्रीराम कोटि महायज्ञ के विशाल आयोजन की तैयारियाँ बीच में लगातार फोन आ रहे हैं भक्तों शिष्यों के। महाराष्ट्र, राजस्थान तथा बिहार जाने कहाँ-कहाँ से। फलाँ तारीख को पहुँच रहे हैं और कोई सेवा बताएँ... वगैरह-वगैरह। रात के ग्यारह बजे घंटी फिर घनघनाती है। फोन पंजाब से है उधर फोन पर है श्रद्धालु अग्रवाल परिवार का मात्र सात वर्षीय किंतु आस्थावान रामभक्त। ...गुरुजी हमने भी गुल्लक तोड़ दी है... पूरे चार सौ रुपये जुट गए हैं... मगर भेजूँ कैसे यज्ञ में? जगद्गुरु भावुक हो उठते हैं यज्ञ में अंशदान की ललक वाले इस मासूम के प्रस्ताव से। नन्हे रामभक्त से भी स्वामी जी का वार्तालाप पूरी गंभीरता के साथ पाँच मिनट तक चलता है। वे उसे सलाह देते हैं कि वह अपने यह अमूल्य अंशदान यज्ञ में शामिल होने आ रहे पिता के साथ भेज दें।

ऐसा मासूम भक्त, ऐसी पवित्र आस्था और ऐसा महान अंशदान? भला क्यों कर न सफल होगा ऐतिहासिक श्रीराम कोटियज्ञ। नन्हें बालक की बहन अपना गुल्लक फोड़ कर तीन हजार की राशि पहले ही भेज चुकी है। एक फोन बिहार से लक्ष्मण तिवारी का भी आता है। यज्ञ की समिधा के लिए लकड़ी कट रही है। भोले-भाले गँवई मजदूर पुनीत आयोजन के लिए सिर्फ लकड़ी ही नहीं काट रहे। कटाई के बाद यज्ञ में देह खटाने काशी भी आ रहे हैं। यज्ञ में अंशदान के लिए दलित बस्ती के घर-घर से बटोरा गया दो कनस्तर सरसों तेल भी ला रहे हैं।

●

सर्वधर्म प्रार्थना का अनूठा केन्द्र : श्रीराम यज्ञमंडप

अनूठा सुरसंगम होगा पुरबिया कीर्तन और मराठी भजनों का

वाराणसी, १० जनवरी। रामानन्दाचार्य सप्तशताब्दी महोत्सव के समापन में १६ जनवरी से यहाँ आयोजित ऐतिहासिक श्रीराम शतमुख कोटि महायज्ञ के समारोह मण्डप से सर्वधर्म समभाव का संदेश अलग-अलग भाषाओं स्वरों मगर एक परमात्मा के महिमागान वाली प्रार्थनाओं के माध्यम से नगर के कोने-कोने तक पहुँचेगा। विविध धार्मिक आध्यात्मिक अनुष्ठानों कार्यक्रमों के अलावा आदर्श सेवा विद्यालय प्रांगण स्थित विशाल समारोह मण्डप में विभिन्न धर्म ग्रंथों और संत वाणियों के पाठ का नियमित कार्यक्रम श्रद्धालुओं के आकर्षण का प्रमुख केन्द्र होगा। काशी में किसी धार्मिक समारोह में सर्वधर्म समभाव संदेश की अभिव्यक्ति की दृष्टि से यह आयोजन अनूठा है। श्रीरामानंदाचार्य सम्प्रदाय की पंचगंगा स्थित मूल पीठ श्रीमठ के प्रवक्ता के अनुसार समारोह के मंच से गुरु ग्रंथ साहब कबीर साहेब, संत शिरोमणि रविदास, महाराष्ट्र के संत तुकाराम, एकनाथ, ज्ञानेश्वर सहित सभी सम्प्रदायों के प्रमुख धार्मिक ग्रंथों की पवित्र वाणियों के पाठ का नियमित प्रसारण होगा। मंच पर एक तरफ जहाँ बिहार के जनपदों से आयी कीर्तन मण्डलियाँ खाँटी पुरबिया शैली के कीर्तन से रामधुन की अलख जगाएँगी, वहीं यज्ञ में भाग लेने की लालसा से ढोल-मजीरों के साथ काशी के लिए प्रस्थान कर चुके वारकरी सम्प्रदाय के भक्तों की मण्डली गोल-गोल मण्डलाकार घूमते जब ज्ञानो बा...तुकोबा...की रटन लगायेगी तो भक्त जन स्वयं भी सुध-बुध खोकर राम-राम जपो मगन मन झूम उठेंगे की भावदशा में पहुँच जाएँगे।

श्रीराम यज्ञ मण्डप में 'दास बोध' पारायण

वाराणसी, १४ जनवरी। श्री रामानन्दाचार्य सप्तशताब्दी महोत्सव तथा श्रीराम शतमुख कोटि होमात्मक यज्ञ मण्डप में समर्थ गुरु रामदास रचित दास बोध के परायण का अनूठा कार्यक्रम आज से शुरू होगा। यह जानकारी नासिक (महाराष्ट्र) से चलकर काशी पहुँचे ३०० से अधिक श्रद्धालुओं की टोली के मुखिया ने दी।

जय-जय रघुवीर समर्थ का नारा लगाते आये काशी पहुँचे इस रामदासी भक्त मण्डली के नायक ने बताया कि वे दास बोध पारायण के अब तक १३५ पारायण कर चुके हैं जो अपने आप में एक कीर्तिमान है। उन्होंने बताया कि काशी में कल से प्रारम्भ १३६वाँ पारायण इस शृंखला का समापन पारायण होगा।

सृष्टि का धारक तत्व धर्म : जोड़ता है तोड़ता नहीं

'सप्तशताब्दी महोत्सव का उद्देश्य सनातन के समन्वयवादी स्वरूप का प्रकटीकरण' 'श्रीराम मंत्र' लोक-कल्याण का अनूठा प्रयोग

जगद्गुरु रामनरेशाचार्य

वाराणसी, १४ जनवरी। जगद्गुरु रामानन्दाचार्य श्री रामनरेशाचार्य ने कहा कि सृष्टि का धारक तत्व धर्म कभी बाँटता नहीं सदा जोड़ता है। इसलिए वह सहिष्णुता उदारता एवं लोककल्याण जैसे मानवीय गुणों का सर्वश्रेष्ठ साधन है।

पंचगंगा घाट पर स्थित श्रीमठ में आयोजित एक पत्रकार वार्ता में स्वामी रामनरेशाचार्य ने बातचीत के दौरान मठ के तत्वावधान में १६ जनवरी से आयोजित श्री रामानन्दाचार्य सप्तशताब्दी महोत्सव के समापन समारोह के उद्देश्यों से अवगत कराते हुए इस आशय के उद्गार व्यक्त किये। उन्होंने समापन महोत्सव के उपलक्ष्य में काशी में शताब्दियों बाद आयोजित हो रहे शतमुख कोटि होमात्मक श्रीराम महायज्ञ के माहात्म्य उसकी शास्त्रीय महत्ता तथा लोक-कल्याणकारी पुण्यफल की भी बोधगम्य व्याख्या प्रस्तुत की।

जगद्गुरु ने कहा कि वैदिक सनातन धर्म सदा से ही प्रयोग का धर्म रहा है। श्री रामानन्दाचार्य सप्तशताब्दी महोत्सव भी धर्म की शास्त्रीयता और उदारता के समन्वित रूप से प्रकटीकरण का एक प्रयोग है। जगद्गुरु रामानन्दाचार्य जी में वैदिक परम्परा और परमोदारता का अद्भुत समन्वय था। यह महोत्सव उनके द्वारा जगायी गयी इस समन्वयवादी चेतना का सही प्रकटीकरण होगा।

स्वामी जी ने कहा कि धर्म सृष्टि का धारक तत्व है। धर्म के इस स्वरूप में संकीर्णता, कट्टरता, विभाजक या विनाशक प्रवृत्तियों के लिए कोई स्थान नहीं है। धर्म भी विज्ञान की ही तरह नियमबद्ध है। इसका गुण धर्म भी शाश्वत स्थिर वैज्ञानिक गुण धर्मों की तरह ही अटल है। यह तोड़ता नहीं हमेशा जोड़ता है। जगद्गुरु रामानन्दाचार्य जी महाराज ने भी नियमों से आबद्ध वैज्ञानिक सनातन धर्म का श्रेष्ठतम प्रयोग किया शास्त्रीयता के साथ किया जिसमें उदारता और समरसता के सुन्दर भावों का समन्वय है। उन्होंने कहा कि आज की विपरीत परिस्थितियों में जगद्गुरु के उदात्त विचारों और संदेशों की आवश्यकता महसूस की जा रही है। इसी प्रयत्न शृंखला की एक कड़ी के रूप में देश के कोने-कोने तक श्री रामानन्दाचार्य सप्तशताब्दी महोत्सव के अन्तर्गत

शताधिक कार्यक्रम और सतत प्रकल्प आयोजित किये गये। उन्होंने बताया कि सप्तशताब्दी महोत्सव का समापन भी जगद्गुरु रामानन्दाचार्य जी की कार्यस्थली रही काशी नगरी में ही करने का निश्चय किया गया। हजारों रामानन्दी साधु-संतों धर्माचार्यों तथा प्रान्त-प्रान्तान्तरों से आ रहे भक्तों की भागीदारी करने वाले इस महोत्सव का समापन नव दिवसीय शतमुख कोटि होमात्मक श्रीराम महायज्ञ के साथ होगा।

महोत्सव का शुभारम्भ १६ जनवरी को टाउनहाल प्रांगण में निर्मित भव्य यज्ञशाला में यज्ञ के श्री गणेश के साथ होगा। उन्होंने कहा कि भगवान श्रीराम मर्यादाओं से परिपूर्ण स्वरूप हैं। उन्हीं भगवान राम के मंत्र से शतमुख कोटि होमात्मक महायज्ञ का भी आयोजन किया गया है। यज्ञ, कर्म का सबसे परिष्कृत स्वरूप होता है। हम प्रकृति के विविध अवदानों के लिए जिन देवताओं के ऋणी हैं, उनके प्रति यज्ञ के माध्यम से दान कर श्रेष्ठ कृतज्ञ भाव की अभिव्यक्ति करते हैं। काशी में शतमुख कोटि महायज्ञ का आयोजन काशीवासियों के लिए एक अपूर्व अवसर है, उसके दर्शन एवं उसमें तन, मन, धन से जुड़कर पुण्य लाभ अर्जित करने का। सनातन धर्म में यज्ञ ईश्वर का साक्षात् स्वरूप माना जाता है और कोटि यज्ञ सर्वश्रेष्ठ यज्ञ मान्य है। ऐसा यज्ञ काशी में श्रीराम मंत्र से रामानन्दाचार्य जी के द्वारा सम्पन्न हुआ था।

कहा जाता है कि ५५ वर्ष पूर्व नगवाँ क्षेत्र में धर्म सम्राट् स्वामी करपात्री जी महाराज ने एक कोटि यज्ञ सम्पादित किया था। १६ जनवरी से टाउनहाल परिसर में आयोजित होने वाला महायज्ञ वरुणा और अस्सी क्षेत्र के बीच श्रीराम मंत्र से संकल्पित अपूर्व यज्ञ है।

•

शतमुख कोटि होमात्मक श्रीराम महायज्ञ : तीसरा दिन

श्रीराम सहित यज्ञमंडप में प्रतिष्ठित देवगण

वाराणसी, १८ जनवरी। शतमुख कोटि होमात्मक श्रीराम महायज्ञ के पवित्र यज्ञ मण्डप में मंत्रामंत्रण से पधारे यज्ञ के प्रधान देव श्रीराम सहित इन्द्र-वरुण मरुतादि देवगणों को आज उनकी निर्धारित पीठों पर प्रतिष्ठित कर उन्हें विविध पूजाएँ अर्पित की गयीं। यज्ञ के आचार्यों और यजमानों ने यज्ञ निर्विघ्न सम्पन्न कराने की प्रार्थना के साथ महाकाली-महालक्ष्मी सहित चौंसठ योगिनियों तथा कालभैरव, रुद्रभैरव सहित इक्यावन क्षेत्रपालों और दिग्पालों को भी पूजाएँ समर्पित कीं। धरती, आकाश, पाताल और वायु मण्डलसहित ब्रह्माण्ड के समस्त देव भी क्रमानुसार पूजे गये। यज्ञ के मुख्य संकल्पक जगद्गुरु रामानन्दाचार्य स्वामी रामनरेशाचार्य पूजन अनुष्ठानों के दौरान यज्ञ मण्डप में स्वयं उपस्थित हुए। शताब्दियों बाद देश की आध्यात्मिक राजधानी काशी के वैष्णव स्थित मंदाकिनी तीर्थक्षेत्र में आयोजित महायज्ञ के तीसरे दिन के अनुष्ठानों का शुभारम्भ भी प्रातः गणपति पूजन के साथ हुआ। आचार्यों ने वेद मंत्रों से आमंत्रित यज्ञ के प्रधान देव श्रीराम सहित साथ में पधारे समस्त देवगण, इन्द्र, वरुण, मरुतादि को उनकी निर्धारित पीठों पर स्थापित कर उनकी यथोचित वंदना-अभ्यर्थना की। देव स्थापन अनुष्ठान के अलावा वास्तु स्थापन विधान भी वैदिक रीति से सम्पन्न हुआ। पूर्वाह्न सत्र में महायज्ञ के मुख्य संकल्पक जगद्गुरु रामानन्दाचार्य स्वामी रामनरेशाचार्य देव वन्दन के निमित्त स्वयं यज्ञशाला में उपस्थित हुए। उन्होंने यजमानों को आशीर्वाद दिया तथा आचार्यों से मंत्रणायें कीं। मध्याह्न सत्र में महाकाली-महालक्ष्मी सहित इक्यावन क्षेत्रपालों की पूजा करके यज्ञ के निर्विघ्न समापन के लिए प्रार्थनाएँ की गयीं। दिग्पालों सहित ग्राम देवताओं, स्थान देवताओं को भी उनके अंश की पूजाएँ भेंट की गयीं।

यज्ञ के संयोजक तथा वेदज्ञ पण्डित गणेश्वर शास्त्री द्रविड़, यज्ञ के संरक्षक पण्डित लक्ष्मीकांत दीक्षित, लक्ष्मीकांत पौराणिक तथा यज्ञाचार्य पं. श्रीकृष्ण लक्ष्मीकांत पुराणिक के निर्देशन में यज्ञ के सौ कुण्डों की आचार्य वेदिकाओं पर ब्रह्मा, कुण्डाचार्य तथा उपाचार्यों के रूप में प्रतिष्ठित वैदिक विद्वानों तथा कर्मकाण्डियों ने पूर्ण वैदिक रीति से समस्त अनुष्ठान सम्पन्न कराये। यज्ञ मण्डप के बाहर पुराण वाचन, भजन-कीर्तन तथा अखण्ड राम धुन गायन के नैत्यिक कार्यक्रम अहर्निश जारी हैं। यज्ञ में

भागीदारी के लिए देश के कोने-कोने से श्रद्धालुओं के जत्थे लगातार यहाँ पहुँच रहे हैं। बिहार से सैकड़ों श्रद्धालुओं की टोली आज रामधुन गाते यहाँ पहुँची और यज्ञ में भागीदारी दर्ज करायी।

पवित्र यज्ञशाला तथा यहाँ चल रहे यज्ञानुष्ठानों के दर्शनार्थ स्थानीय धर्मप्राण नागरिकों की भीड़ भी लगातार बढ़ती जा रही है। महाकुंभ पुण्य लाभ के लिए प्रयागराज तक आये धर्म प्राणजनों के लिए भी काशी नगरी में आयोजित महायज्ञ एक सुनहरा मौका साबित हो रहा है। कुंभ जा रहे तीर्थयात्री जत्थों के अलावा सैकड़ों साधु-संत भी यज्ञ में भागीदारी दर्ज करा रहे हैं।

जगद्गुरु ने किया व्यवस्थाओं का निरीक्षण - टाउनहाल स्थित यज्ञशाला में चल रहे महायज्ञ के अनुष्ठानों में भागीदारी के लिए आज पूर्वाह्न यज्ञशाला में आये जगद्गुरु रामानन्दाचार्य स्वामी रामनरेशाचार्य ने पुराण पूजन तथा देव स्थापन अनुष्ठान में संक्षिप्त उपस्थिति के बाद यज्ञशाला परिसर की समस्त व्यवस्थाओं का निरीक्षण किया। उन्होंने सुव्यवस्थाओं को सराहा तथा अव्यवस्थाओं को व्यवस्थित करने के लिए आवश्यक निर्देश दिये। बाद में जगद्गुरु ईश्वरगंगी स्थित आदर्श सेवा विद्यालय प्रांगण में सजाये गये समारोह मण्डप तक गये और वहाँ की व्यवस्थाओं का भी जायजा लिया।

●

अरणि मंथन क्रिया से पवित्र यज्ञाग्नि का प्राकट्य आज

टाउनहाल परिसर स्थित विशाल यज्ञशाला में चल रहे शतमुख कोटि होमात्मक श्रीराम महायज्ञ के मण्डप में अरणि मंथन क्रिया से यज्ञाग्नि के प्राकट्य और यज्ञ के कुण्डों में पवित्र अग्नि के स्थापन अनुष्ठान शुक्रवार १९ जनवरी को सम्पादित होंगे। अग्नि प्राकट्य अनुष्ठानों का ही श्रीगणेश पूर्वाह्न ९ बजे होगा। महायज्ञ के संयोजक तथा वेद विद्वान् पण्डित गणेश्वर शास्त्री द्रविड़ के अनुसार वैदिक विधान के अनुसार यज्ञ के नैऋत्य कोण में स्थापित यज्ञ कुण्ड में अरणि मंथन क्रिया से आह्वान किया जायेगा। नैऋत्य कोणीय कुण्ड में प्रकट इस पवित्र अग्नि के अंशों को ही यज्ञ मण्डप के शेष ९९ कुण्डों में भी स्थापित किया जाएगा। यही विधान विपरीत रूप में यज्ञ की पूर्णाहुति के पश्चात् २४ जनवरी को भी किया जाएगा। उस दिन इन ९९ कुण्डों की अग्नि शिखाएँ अंश रूप में पुनः नैऋत्य कोण के कुण्ड में लाकर समाहित की जाएँगी और अग्नि शांति के अनुष्ठानों के बीच अग्नि देव को विदाई दी जाएगी।

•

शतमुख कोटि होमात्मक श्रीराम महायज्ञ : चौथा दिन

नैऋत्य कोणीय कुण्ड में प्रकट पवित्र अग्नि सौ कुण्डों में स्थापित

वाराणसी, १९ जनवरी। शतमुख कोटि होमात्मक श्रीराम महायज्ञ की विशाल यज्ञशाला के नैऋत्य कोण पर स्थापित प्रधान आचार्य के यज्ञ कुण्ड में आज पूर्वाह्न ११.३० बजे अरणि मंथन क्रिया से जब प्रकट हुई पवित्र हुतासनाग्नि तो यज्ञशाला मण्डप श्रीराम की जयकारों से गूँज उठा।

शमीवृक्ष पर उत्पन्न होने वाले पीपल वृक्ष के काष्ठ से बनायी गयी अरणि (लकड़ी के बेलन) के सविधि पूजन-अर्चन के उपरान्त महायज्ञ के मुख्य संकल्पक जगद्गुरु रामानन्दाचार्य स्वामी रामनरेशाचार्य ने यज्ञ के संयोजक पं. गणेश्वर शास्त्री द्रविड़ व मुख्य आचार्य श्रीकृष्ण लक्ष्मीकांत पुराणिक के साथ मिल जब पवित्र अरणि को अरणि अरघे में तेजी से गोलाकार घुमाया तो घने धुएँ के बीच से दपदपाती अग्नि शिखाएँ स्वयमेव धधक उठीं।

यज्ञशाला में ब्रह्मा, कुण्डाचार्य तथा उपाचार्य के रूप में उपस्थित आचार्यों ने पवित्र हव्यांश को देवताओं तक पहुँचाने के निमित्त प्रकट अग्निदेव का वैदिक ऋचाओं से स्वागत किया। तदुपरांत नैऋत्य कोण में प्रकट इस अग्नि के अंशों को पंचभू संस्कार के साथ यज्ञशाला के अन्य यज्ञकुण्डों में स्थापित किया गया। यज्ञ की हवन क्रिया का शुभारंभ भी आज अपराह्न ग्रहयाग अनुष्ठान के साथ प्रारम्भ हो गया। यज्ञशाला के सौ कुण्डों पर उपस्थित यजमानों और आचार्यों ने नवग्रहों की शांति और संतुष्टि के उपादानों सहित उन्हें यज्ञांश प्रदान किया। योगिनियों और क्षेत्रपालों की भी उनकी वेदिकाओं पर स्थापना की गयी। यज्ञकुण्डों में अग्नि स्थापना के पूर्व कुशकण्डिका विधान भी पूर्ण वैदिक रीति के साथ सम्पन्न हुआ। आहुतियों का क्रम शनिवार २० जनवरी से प्रारम्भ होगा।

इसके पूर्व आज प्रातः से पूर्वाह्न ग्यारह बजे के बीच विघ्नहर्ता गणपति एवं महायज्ञ के प्रधान देव श्रीराम सहित सूर्य इन्द्र-वरुण मारुतादि देवों सहित चौसठ योगिनियों, इक्यावन क्षेत्रपालों, दिग्पालों और स्थान देवताओं को उनकी नैत्यिक पूजाएँ समर्पित की गयीं।

यज्ञ के संयोजक पं. गणेश्वर शास्त्री द्रविड़ ने एक विशेष बातचीत में नैऋत्य

कोण में प्रकट इस अग्नि को हुताशन अग्नि की संज्ञा दी। उन्होंने शास्त्रीय और वैदिक आख्यानों के माध्यम से इस पवित्र अग्नि के महत्व का वर्णन करते हुए बताया कि हुत अर्थात् यज्ञअंश को आसन अर्थात् आसन पर बैठे देवताओं को ग्रहण कराने वाली यह अग्नि जलाती या भस्म नहीं करती अपितु यज्ञ के हव्य को आहुति में ग्रहण कर उसे सूर्य तक पहुँचाती है। सूर्य के माध्यम से ही यज्ञ के अंश सभी देवताओं को प्राप्त होते हैं। उन्होंने कहा कि यज्ञशाला में प्रकट यह अग्नि वास्तव में देवताओं का मुख है। इसके माध्यम से ही पवित्र हव्य अंश रूप में देवताओं को प्राप्त होगा। उन्होंने बताया कि यज्ञ की पवित्र आहुतियों का क्रम शनिवार २० जनवरी से प्रारम्भ होगा। यज्ञ की पूर्णाहुति २४ जनवरी को होगी।

आहुतियों का क्रम आज से

श्री रामानन्दाचार्य सप्तशताब्दी महोत्सव के उपलक्ष्य में नगर के मध्य टाउनहाल स्थित यज्ञशाला में चल रहे शतमुख कोटि होमात्मक श्रीराम महायज्ञ के सौ यज्ञ कुण्डों में श्रीराम मंत्र के साथ आहुतियों का क्रम शनिवार २० जनवरी से प्रारम्भ होगा। यज्ञशाला में इन सौ कुण्डों पर यजमान रूप में उपस्थित श्रद्धालुजन ब्रह्मा, कुण्डाचार्य तथा उपाचार्यों के रूप में वहाँ मौजूद याज्ञिकों तथा कर्मकाण्डियों के निर्देशन में पहले दिन २५ लाख आहुतियाँ यज्ञ कुण्डों में समर्पित करेंगे। शतमुख कोटि होमात्मक यज्ञ की पूर्णाहुति कुल एक करोड़ आहुतियों के साथ होनी है।

•

शतमुख कोटि होमात्मक श्रीराम महायज्ञ : पाँचवा दिन

पवित्र यज्ञ धूम्र से आच्छादित आकाश मंदाकिनी

वाराणसी, २० जनवरी। शतमुख कोटि होमात्मक श्रीराम महायज्ञ की टाउनहाल स्थित विशाल यज्ञशाला के सौ कुण्डों में आज पाँच सौ से अधिक हाथों ने जब २५ लाख आहुतियाँ समर्पित की तो काशी के पवित्र मंदाकिनी तीर्थ क्षेत्र (मैदागिन) का सारा आकाश पवित्र यज्ञ धूम्र से आच्छादित हो उठा। आम्र काष्ठ सहित अन्य वन्य वृक्षों की समिधा सहित अग्नि को समर्पित तिल-यव-कर्पूर नारियल, धूप दशांग गुग्गुल आदि हवन सामग्रियों की सुगन्ध से सम्पूर्ण वातावरण सुवासित हुआ। श्रीराम रामाय नमः स्वाहा मंत्र के साथ चल रहे वेद मंत्रोच्चार से नगर का कण-कण जागृत हो उठा।

पवित्र यज्ञशाला की परिक्रमा के पुण्य लाभ के लिए भी आज श्रद्धालुओं की भारी भीड़ उमड़ी। एक अनुमान के मुताबिक लक्षाधिक पुरुष महिलाओं ने आज यज्ञशाला के फेरे लिये। इनमें महिला श्रद्धालुओं की भागीदारी सर्वाधिक रही। यज्ञ स्थल परिक्रमा के साथ धर्मप्राण नागरिकों ने हवन सामग्रियों तथा धनराशि के दानादि से महायज्ञ में अपनी भागीदारी दर्ज करायी। यज्ञशाला में प्रातः से ही उपस्थित जगद्गुरु रामानन्दाचार्य स्वामी रामनरेशाचार्य ने यज्ञशाला के पवित्र परिक्रमा अनुष्ठान का शुभारंभ श्रद्धालुओं के प्रथम जत्थे की अगुवाई के साथ किया। उन्होंने संस्कारी श्रद्धालुओं को अपने हाथों से श्रीराम नाम अंकित अंगवस्त्रम् प्रदान कर आशीर्वाद दिया।

महायज्ञ के पाँचवें दिन के अनुष्ठानों का शुभारंभ आज विघ्नहर्ता देव गणपति तथा प्रातः यज्ञ के प्रधान देव श्रीराम सहित अन्य देवताओं के नित्य पूजन विधान के साथ हुआ। जगद्गुरु रामानन्दाचार्य स्वामी रामनरेशाचार्य के सान्निध्य तथा यज्ञ के संरक्षक पं. गणेश्वर शास्त्री द्रविड़ व यज्ञाचार्य पं. श्रीकृष्ण लक्ष्मीकांत पुराणिक के निर्देशन में चार सौ वेदपाठियों ने पूजनादि अनुष्ठान सम्पन्न कराये। यज्ञशाला के सौ कुण्डों में आहुतियों का क्रम नित्य पूजन, गणपति वंदन प्रधान देव पूजन व अग्नि प्रज्ज्वलन अनुष्ठान के उपरांत प्रारम्भ हुआ। यज्ञ में आहुतियाँ प्रधान ब्रह्मा की भूमिका में नैऋत्य कोणीय यज्ञ कुण्ड पर उपस्थित श्रीकृष्ण गोडसे जी महाराज के वैदिक संकेतों पर समर्पित की गयीं। यज्ञमण्डप के बाहर यज्ञशाला परिसर में बनाये गए एक विशेष अंशदान काउण्टर पर यज्ञ में अंशदान स्वरूप श्रद्धालुओं की ओर से आ रही

हवन सामग्रियाँ, घृत, नारिकेल आदि स्वीकार किये जा रहे थे। भण्डारण के बाद ये सामग्रियाँ हवन मण्डप के गर्भगृह तक पहुँचायी जा रही थीं। काउण्टर संभाल रहे यज्ञशाला के व्यवस्था प्रभारी राजेन्द्र त्रिवेदी राजू ने बताया कि यज्ञशाला की परिक्रमा तथा यज्ञ में अंशदान के लिए श्रद्धालुओं का तांता लगा हुआ है। अब तक मनों हवन सामग्री तिल-यव, घृत, नारियल, धूप, दशांग, गुगुल आदि के रूप में श्रद्धालुओं से प्राप्त हुई है।

परिक्रमा के लिए आज यज्ञशाला परिसर में श्रद्धालुओं की भारी भीड़ उमड़ी। यज्ञमण्डप के चतुर्दिक पुरुष तथा महिला श्रद्धालुओं के लिए अलग-अलग बनाये गये परिक्रमा पथ पर सैकड़ों श्रद्धालु एक साथ मण्डप की परिक्रमा कर रहे थे। लोगों ने यथाशक्ति इक्कीस से लेकर पाँच सौ एक परिक्रमाओं का संकल्प लिया और उसके मुताबिक ही यज्ञशाला के फेरे लिये। यज्ञमण्डप में चल रहे पवित्र मंत्रोच्चारों का प्रसारण आज टाउनहाल से काशी विद्यापीठ और कैण्ट स्टेशन तक तथा दूसरी ओर गोदौलिया, चौक, कबीरचौरा, ईश्वरगंगी क्षेत्र तक अनवरत होता रहा। ध्वनि विस्तारकों की शृंखला प्रतिदिन लम्बी ही होती जा रही है।

आयोजन सचिव दयासिंधु शर्मा के अनुसार रामानन्दाचार्य सप्तशताब्दी महोत्सव के समापन के उपलक्ष्य में आयोजित महायज्ञ के विशाल प्रांगण में सर्व वेदांग, पुराण, श्रीरामचरितमानस, महाभारत, श्रीमद्भागवत आदि के अखण्ड पाठ का क्रम आज पाँचवें दिन भी जारी रहा। आचार्य जगन्नाथ शास्त्री तैलंग, आचार्य श्याम बापट, आचार्य महेश झा तथा आचार्य लक्ष्मीकांत खाडगे पुराणादि पाठों का निर्देश और आचार्यत्व कर रहे हैं।

दास बोध पाठ पारायण को विश्राम अन्य संतों की वाणियों का पाठ शुरू

वाराणसी २० जनवरी। श्री रामानन्दाचार्य सप्तशताब्दी महोत्सव तथा श्रीराम महायज्ञ के उपलक्ष्य में आयोजित दास बोध पारायण सप्ताह को आज सानुष्ठान विश्राम दिया गया। दास बोध परायण के लिए महाराष्ट्र से चलकर काशी आये ३०० से अधिक श्रद्धालुओं ने आज अपने नायक दादा विनायक राव कुलकर्णी की अगवाई में जगद्गुरु रामानन्दाचार्य स्वामी रामनरेशाचार्य की पाद-पूजा की और श्रद्धा सहित उपहारादि अर्पण किये। जगद्गुरु ने जय-जय श्री रघुवीर समर्थ के जयघोष के बीच आदर्श सेवा विद्यालय स्थित आयोजन के समारोह मण्डप में सप्ताह भर से चल रहे पाठ को औपचारिक विश्राम दिया। उन्होंने महाराष्ट्र के प्रातः स्मरणीय संत समर्थ गुरु रामदास जी महाराज को भी रामानन्दी परम्परा के ही महान संत की संज्ञा दी। उन्होंने रामभाव के सूत्र में बँधे महाराष्ट्र से काशी तक खिंचे चले आये भक्तों की श्रद्धा और

आस्था को नमन किया तथा उनके मंगल कल्याण की कामना की।

समारोह मण्डप में एक छोर पर चल रहे अखण्ड मानस पाठ के साथ ही अन्य दिशाओं में आज से ज्ञानेश्वरी (संत ज्ञानेश्वर) संत तुकाराम, कबीर, ज्ञानोबा सहित अन्य संतों की वाणी का पाठ प्रारम्भ हो गया। गुरु ग्रंथ साहब का पवित्र पाठ २१ जनवरी से शुरू होने की संभावना है।

श्रीराम महायज्ञ के दर्शन से कृतार्थ

रामानन्दाचार्य सप्तशती महोत्सव का समापन समारोह

अखिल भारतीय रामानन्दाचार्य सप्तशताब्दी महोत्सव समिति के संयोजक पं. गणेश्वर शास्त्री द्रविड़ ने कहा कि सप्तशती के अन्तर्गत वर्ष पर्यन्त राष्ट्रव्यापी आयोजन हुए उसके समापन महोत्सव के प्रसंग में १६ से २४ जनवरी २००१ के बीच शतमुख कोटि होमात्मक श्रीराम महायज्ञ का काशी में समायोजन भव्य रूप में हो रहा है। ब्रह्मपुराण में राष्ट्र में शान्ति स्थापना एवं समृद्धि के लिए प्रतिवर्ष दो कोटि होम करने का विधान है। ऐसे महान यज्ञ के दर्शन मात्र से लोग कृतार्थ हो जाते हैं। जनश्रुति है कि स्वामी रामानन्दाचार्य ने अपने अन्तिम काल में ऐसा विशाल श्रीराम महायज्ञ किया था।

श्री द्रविड़ बुधवार को स्थानीय पराड़कर भवन में पत्र-प्रतिनिधियों से बातचीत कर रहे थे। उन्होंने बताया कि इसके विशाल यज्ञ मण्डप का निर्माण टाउनहाल मैदान और आदर्श कमलाकर चौबे इण्टर कालेज परिसर में चल रहा है, जिसमें १०० कुण्डों की शास्त्रीय रीति से स्थापना कर श्रीराम मंत्र से एक करोड़ आहुतियाँ दी जायेंगी।

शास्त्रों के मतानुसार १०० कुण्डों का कोटि होम सबसे बड़ा यज्ञ होता है। वैदिक मान्यताओं के अनुसार यज्ञ साक्षात् परमात्मा का स्वरूप है। उन्होंने बताया कि देश के विभिन्न क्षेत्रों के मूर्धन्य विद्वत्जनों द्वारा सम्पन्न कराये जाने वाले इस महायज्ञ का आचार्यत्व वेदमूर्ति पं. श्रीकृष्ण लक्ष्मीकांत पुराणिक करेंगे। पूज्य स्वामी करपात्री जी ने ५५ वर्षों पूर्व नगवा क्षेत्र में कोटि होमात्मक यज्ञ किया था, यद्यपि वह राममंत्र से नहीं किया गया था। राममंत्र से कोटि होम स्वामी रामानन्दाचार्य के बाद पहली बार काशी में होने जा रहा है। उन्होंने बताया कि १६ जनवरी को पूर्वाह्न सर्वप्रायश्चित्त तथा १७ जनवरी को पूर्वाह्न यज्ञ संकल्प एवं गणेश पूजा आदि के साथ मण्डप तथा विद्वानों का मधुपर्क पूजन होगा। यज्ञ के मण्डप में ६५० व्यक्ति सम्मिलित होंगे। १७ जनवरी को ही अपराह्न में भव्य शोभायात्रा निकलेगी जो दशाश्वमेध जाकर माँ गंगा एवं जल देवताओं की पूजा के उपरान्त पुनः प्रस्थान कर टाउनहाल आकर पूर्ण होगी।

उसी क्रम में उन्होंने बताया कि यज्ञ प्रक्रिया में १८ जनवरी को देवस्थापन, पूजन एवं मण्डप की पूजा होगी। १९ जनवरी को अरणि मंथन के द्वारा अग्नि को प्रकट

कर १०० कुण्डों में अग्नि की स्थापना कोटि होम विधान के अनुसार की जायेगी। उसी दिन अपराह्न में ग्रहयाग सम्पन्न होगा। २० से २३ जनवरी तक श्रीराम मंत्र से एक करोड़ आहुतियाँ दी जायेंगी। २४ जनवरी को विविध होम सम्पन्न होने के बाद सायं सवा चार बजे यज्ञ की पूर्णाहुति का प्रारम्भ होगा। उत्तरांग होने के पश्चात् ९९ कुण्डों में से अग्नि लाकर नैर्ऋत्य कोण में स्थित प्रधान कुण्ड में मिलायी जायेगी। विद्वानों के पूजन एवं आशीर्वाद ग्रहण के उपरान्त प्रसाद वितरण से यज्ञ की पूर्णता होगी। पत्रकार वार्ता में बताया गया कि सप्तशताब्दि समिति के संरक्षक मण्डल में कांग्रेस कमेटी की राष्ट्रीय अध्यक्ष श्रीमती सोनिया गाँधी, प्रदेश के राज्यपाल श्री विष्णुकान्त शास्त्री, राजस्थान, मध्यप्रदेश और छत्तीस गढ़ के मुख्यमंत्री, न्यायमूर्ति श्री बी. एम. लाल जबलपुर, हिमाचल प्रदेश के मुख्यमंत्री सहित अनेक गणमान्य व्यक्तियों को आने का निमंत्रण दिया गया है।

इस बीच महोत्सव समिति की ओर से कहा गया कि रामानन्द सम्प्रदाय में स्वामी रामानन्द के प्रधान शिष्य संत कबीर दास जी के प्रति अपार भक्ति है। श्रीमठ पंचगंगा घाट में संत शिरोमणि कबीर दास जी की प्रतिमा स्थापित है तथा उनकी नित्य पूजा की जाती है। श्री कबीर जी को श्रीप्रह्लाद का अवतार माना जाता है। उन्हें अपमानित करने की दृष्टि से निमंत्रण पत्र में दीन हीन मलिन शब्दों का प्रयोग नहीं किया गया है बल्कि दीक्षा के पूर्वकालीन कबीर की स्थिति को दृष्टिगत रखते हुए उन शब्दों का प्रयोग किया गया है।

इसी प्रकार श्री रैदास के बारे में यमराज शब्द का जो प्रयोग किया गया है उसका अर्थ धर्मराज होता है। धर्म की रक्षा भगवान् यम करते हैं। उनका धार्मिक जगत् में अत्यन्त आदरणीय स्थान है।

•

टाउनहाल मैदान में ऋग्वेदकालीन दृश्य

टाउनहाल का मैदान इन दिनों ऋग्वेदकालीन नजारे का रूप ले रहा है। उसे यह छवि दे रहे हैं बिहार से आये उन्तीस सिद्ध कारीगर जो वहाँ अन्तिम स्वरूप देने में जुटे हैं। बाँस एवं फूस की भव्य सात महला यज्ञशाला को इस यज्ञशाला में जगद्गुरु रामानन्दाचार्य सप्तशती समापन कार्यक्रम के अन्तर्गत शतमुख कोटि होमात्मक श्रीराम महायज्ञ सम्पन्न होगा। वरुणा और असी के बीच के पवित्र-क्षेत्र में कोटि होम का आयोजन काशी में १६ जनवरी से शुरू होगा। बताया जाता है कि ६ सौ वर्ष पूर्व आद्यगुरु रामानन्दाचार्य ने श्रीराम मंत्र से कोटि होम किया था और ५५ वर्ष पूर्व भी कोटि होम यज्ञ का समायोजन नगवा में स्वामी करपात्री जी ने किया था।

टाउनहाल मैदान में होने वाले महायज्ञ के लिए पूर्व निर्मित भव्य यज्ञशाला जैसे-जैसे साकार रूप ले रही है नागरिकों के आकर्षण का केन्द्र बनती जा रही है। दक्ष कारीगर पूरे एक महीने से इस कार्य में जुटे हैं। मुख्य शिल्पी भरत साहनी बताते हैं कि कारीगर विगत २ दिसम्बर से यहाँ काम में जुटे हैं। २६ दिसम्बर को भूमि पूजन का कार्य महायज्ञ के संकल्पक जगद्गुरु रामानन्दाचार्य स्वामी रामनरेशाचार्य जी के नेतृत्व में काशी के वैदिकों द्वारा सम्पन्न किये जाने से पूर्व वे बाँसों को चीरकर नक्काशी युक्त जालीदार प्राचीरों का निर्माण करते रहे।

एक सौ कुण्डों सहित १२० वर्ग फीट की यज्ञशाला राजातालाब से लाये गये १९६ सीधी और ५० फुट ऊँची यूकिलिप्टस तनों के स्तम्भ पर खड़ी हो रही है। उसकी बाह्य आकृति बाहर से फूस के छप्परों से सात मंजिला नजर आयेगी जिसमें ५५ फुट ऊँचे शिखर पर होगा शिखर पताका। अनूठे कलात्मक आकर्षण को समेटे इस यज्ञशाला के निर्माण का कार्य दस जनवरी तक पूर्ण हो जायेगा। यज्ञशाला के चारों ओर ५२ खुले द्वार होंगे। लेकिन मण्डप में प्रवेश चारों ओर से बीच से जाने वाले मार्ग से होगा। चारो रास्ते मध्य में स्थित मुख्य वेदी तक जायेंगे। ९ फीट की दूरी पर १०० यज्ञकुण्डों के गड्ढे खुदे हुए हैं लेकिन पूरी वेदी बनने के बाद उनकी परस्पर दूरी ६ फीट होगी। हर वेदी पर आचार्य, ब्रह्मा, सहायक वैदिकों एवं यजमान सहित सात व्यक्ति आसीन हो सकेंगे। यज्ञाचार्य पं. श्रीकृष्ण लक्ष्मीकांत पुराणिक के बैठने के स्थान पर ही स्थापित होंगे सभी आवाहित देवतागण।

पर्णकुटी जैसी विशाल एवं भव्य यज्ञशाला में कुल चार हजार बाँस लगे हैं। जहाँ

बाँस खगड़िया से तथा यूकिलिप्टस तनों के स्तम्भ राजातालाब क्षेत्र से लाये गये हैं। टाउनहाल मैदान में अशोक स्तम्भ व शहीद स्तम्भ के मध्य के क्षेत्र में खड़ी हुई यज्ञशाला की सज्जा में बाँसों से बनी सुन्दर जालीदार प्राचीरों का उपयोग किया जायेगा। द्वार व परिक्रमा पथ में भी इसका प्रयोग हुआ है। भव्य पश्चिमी द्वार के जालीदार निर्माण में हाथी व मोर, उत्तर द्वार में आगे हाथी और तीर लिये भगवान् श्रीराम और पूर्वी द्वार पर मोर, कमल व चक्र की आकृतियाँ होंगी। जालीदार बाँस के इन निर्माणों को रंगने में वनस्पति के प्राकृतिक रंगों का प्रयोग हुआ है। मजेदार बात है कि बाँस काटने से लेकर उन्हें चीरने छीलने साफ करने कीलें ठोकने आदि सम्पूर्ण शिल्प कार्य में लोहे के एकमात्र औजार का प्रयोग किया गया है। जिसे उनकी भाषा में पघड़िया हसुआ और बनारसी भाषा में दाव कहा जाता है। इसी तरह के ४५००० वर्ग फीट के सभा मण्डप में सभी प्रकार के कार्यक्रम आदर्श सेवा इण्टर कालेज प्रांगण में सम्पन्न होंगे।

●

।। श्री ।।

पुराणपाठ

जगन्नाथ शास्त्री तैलङ्ग

नारायणं नमस्कृत्य नरं चैव नरोत्तमम् ।
देवीं सरस्वतीं वासं ततो जयमुदीरयेत् ।।

काशी के पञ्चगंगा घाट पर प्रतिष्ठित जगद्गुरु रामानन्दाचार्य पीठ श्रीमठ के तत्त्वावधान में जगद्गुरु रामानन्दाचार्य सप्तशताब्दी महोत्सव के पावन प्रसङ्ग पर जो अनेकविध धार्मिक आयोजन हुए, उस शृंखला में जनवरी २००१ में शतमुख कोटि होमात्मक श्रीराम महायज्ञ के साथ ही सन्तवाणियों व अन्य धर्मग्रन्थों के पुण्य-पाप के क्रम में १८ जनवरी से २४ जनवरी तक सप्ताहव्यापी विभिन्न रामायणों, महाभारत, अष्टादश महापुराणों और उपपुराणों का पाठ भी आयोजित हुआ।

समस्त पुराण वाङ्मय को जय नाम से सम्बोधित किया जाता है, जिसके अन्तर्गत रामायण, महाभारत, अष्टादश महापुराण, उतने ही उपपुराण और औपपुराण भी समाविष्ट हैं। क्योंकि समस्त पुराण वाङ्मय द्वारा ही संसार पर विजय प्राप्त की जा सकती है- जयति संसारमनेन इति जयः पुराण-रामायण-महाभारतादिः। इसीलिये भविष्यपुराण में समस्त पुराण वाङ्मय को इस प्रकार जय नाम से सम्बोधित किया गया है।

अष्टादशपुराणानि रामस्य चरितं तथा ।
कार्ष्णं वेदं पञ्चमं च यन्महाभारतं विदुः ।।
तथैव विष्णुधर्माश्च शिवधर्माश्च शाश्वताः ।
जयेति नाम तेषां च प्रवदानी मनीषिणः ।।

अतएव पुराण प्रवचनकारों द्वारा नर-नारायण ऋषि, वाग्देवी सरस्वती और महर्षि वेदव्यास की पूर्वोक्त वन्दना कर पुराण-प्रवचन का उपक्रम अत्यन्त समुचित है।

समस्त जनमानस पटल पर राम और कृष्ण की सरस गाथा अंकित करने में अत्यन्त सफल शिल्पी रहे हैं आदि कवि रत्नाकर बाल्मीकि और महर्षि कृष्ण द्वैपायन वेदव्यास, जिनकी सरस काव्य परिणति है रामायण और महाभारत। महर्षि बाल्मीकि त्रेतायुग के व्यास हैं तो वेदव्यास द्वापर युग के। पुराणों में उन्तीस व्यासों के नाम आते

हैं, जिनमें बाल्मीकि पचीसवें (२५वें) और कृष्ण द्वैपायन उन्तीसवें (२९वें) व्यास हैं।

शतकोटि प्रविस्तर रामचरित का अन्यतम अंश है। बाल्मीकिकृत श्रीरामायण जो चतुर्विंशतिसहस्रिका संहिता नाम से प्रसिद्ध है। इसमें राम का चरित्र मनुष्यावतार मर्यादा पुरुषोत्तम के रूप में चित्रित है; जबकि आनन्द रामायण, अध्यात्म रामायण, भुशुण्डिरामायण, अद्भुतरामायण आदि विभिन्न रामायण वैष्णवावतार श्रीराम का आध्यात्मिक चरित्र-चित्रण करते हैं। वस्तुतः जगज्जननी पार्वती रामकथा की श्रोत्री हैं एवं भगवान् शिव रामकथा के वाचक। महर्षि विश्वामित्र ने भगवान् शिव से ही स्वप्न में वज्रपञ्जर नामक रामकवच का उपदेश ग्रहण किया और प्रातःकाल उसको यथावत् लिपिबद्ध किया। श्रीराम कोटि रामचरितानान्तर्गत आनन्द रामायण के जन्मकाण्ड में रामरक्षा कथन नामक स्वतंत्र पाँचवा सर्ग अंकित है, जो प्रचलित रामरक्षा से भिन्न क्रम में है।

महर्षि वेद व्यास ने सभी जनों के कल्याणार्थ महाभारत की रचना की जो पञ्चम वेद के नाम से भी जाना जाता है। श्रीमद्भागवत तो प्रभु सम्मित होने के कारण वेद भी है, सुहृतसम्मित होने के कारण पुराण भी है एवं काव्यसम्मित होने के कारण काव्य भी है। जैसा कि श्रीहरि लीला के रचयिता श्री बोपदेव कहते हैं-

वेदः पुराणं काव्यं च प्रभुर्मित्रं प्रियेव च।
बोधयन्तीति हि प्राहुस्त्रिवृत् भागवतं प्रमः ।।

वेदों को भगवान् परब्रह्म का घर प्राण माना गया है तो पुराण उनके अवयव हैं, जो इस प्रकार हैं-

(१) पद्मपुराण (हृदय), (२) ब्रह्मपुराण (शिर), (३) विष्णुपुराण (दक्षिण भुजा), (४) शिवपुराण (वाम भुजा), (५) भागवत (जंघा), (६) नारदीय पुराण (नाभि), (७) मार्कण्डेय पुराण (दक्षिण चरण), (८) अग्निपुराण (वामचरण), (९) भविष्य पुराण (दक्षिण सावृथ), (१०) ब्रह्मवैवर्त पुराण (वाम सावृथ), (११) लिङ्गपुराण (दक्षिण गुल्फ), (१२) वाराह पुराण (वाम गुल्फ), (१३) स्कन्द पुराण (रोम), (१४) वामन पुराण (त्वचा), (१५) कूर्मपुराण (पीठ), (१६) मत्स्य पुराण (स्नायु), (१७) गरुड़ पुराण (मज्जा) और (१८) ब्रह्मा पुराण (अस्थि)।

सप्ताहव्यापी पुराण पारायण की शृंखला में बाल्मीकीय रामायण, आनन्द रामायण, अध्यात्म-रामायण, भुशुण्डि रामायण, महाभारत तथा अष्टादश महापुराणों के साथ ही कतिपय उपपुराणों का भी पारायण हुआ। उपपुराणों का पाँच भागों में वर्गीकृत किया जा सकता है- वैष्णव, शैव, शाक्त, सौर और गाणवल्य। इसके अन्तर्गत देवीभागवत, विष्णुधर्मोत्तरपुराण, गणेशपुराण, नरसिंह पुराण, कपिलपुराण

और कल्किपुराण का पारायण सम्पन्न हुआ। पारायणकर्ताओं में सर्वश्री श्याम गंगाधर बापट, (स्व.) लक्ष्मीकान्त खनंग, जगन्नाथशास्त्री तैलङ्ग, महेश झा, दिनकर देव पांडेय आदि के नाम उल्लेखनीय हैं।

राजा दशरथ के यज्ञानुष्ठान में स्वयं यज्ञनारायण प्रकट हुए एवं उनके पायसदान से मर्यादा पुरुषोत्तम का आविर्भाव हुआ था यह प्रसिद्ध है। उसी प्रकार शतकोटि होमात्मक श्रीराम महायज्ञ में अरणीमंथन से प्रकट यज्ञनारायण की सन्निधि में रामावतार श्रीरामानन्दाचार्य के पीठाधीश्वर जगद्गुरु श्रीरामनरेशाचार्य के सार सान्निध्य में पुराणकथ्यों में पुराण पुरुषोत्तम का आविर्भाव मेरे लिये चरम अनुभूति का केवल विषय है, जिसका शब्दों में वर्णन असम्भव है।

शिवपुराण के अनुसार मन्दाकिनी सरठ (मैदागिन) के उत्तर दारुवन (दारानगर) के निकट प्रतिष्ठित मध्यमेश्वर को प्रसन्न कर महर्षि कृष्णद्वैपायन वेद व्यास ने अष्टादश महापुराणों की रचना काशी में ही की थी। अतः उसके निकट ही उक्त पुण्यानुष्ठान अविस्मरणीय रहेगा।

●

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥
॥ श्रीरामाय नमः ॥
॥ श्रीहनुमते नमः ॥

विश्वेशं माधवं ढुण्ढिं दण्डपाणिं च भैरवम्।
वन्दे काशीं गुहां गङ्गां भवानीं मणिकर्णिकाम्॥
गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुर्गुरुर्देवो महेश्वरः।
गुरुः साक्षात् परब्रह्म तस्मै श्रीगुरवे नमः॥

जगद्गुरुश्रीरामानन्दाचार्यसप्तशताब्दीमहोत्सवावसरे काश्यां सम्पद्यमानशतमुखकोटिहोमात्मक-श्रीराममहायज्ञपद्धतिः

(जगद्गुरुश्रीसदानन्दाचार्यविरचितां श्रीरामयज्ञपद्धतिं स्मार्तप्रभु-शान्तिमयूख-रुद्रयागप्रयोगपौराणकर्मदर्पण-व्रतोद्यापनचान्द्रिका-ब्रह्मकर्मसमुच्चय-श्रीगायत्रीपुरश्चरणपद्धत्यादि ग्रन्थांश्चानुसृत्य निर्मिता)

अथ मण्डपनिर्माणार्थं भूमिपूजनप्रयोगात्प्राक्कर्म

विहितमङ्गलस्नानो यजमानः पवित्रे वसने परिधाय चन्दनचर्चितभालो नित्यकर्म समाप्य स्वसमीपे पूजोपयोगिसम्भारान् निधाय शुभदिने शुभतिथौ शुभमुहूर्ते शुभासने पूर्वाभिमुख उत्तराभिमुखो वा उपविश्य स्वयं ब्राह्मणद्वारा वा रक्षादीपं प्रज्वालयेत्। रक्षादीपं निर्वातस्थले संस्थाप्य।

तत आचार्यो यजमानभाले तिलकं कुर्यात्। तत्र मन्त्रः-स्वस्तिस्तु याऽविनाशाख्या धर्मकल्याणवृद्धिदा। विनायकप्रिया नित्यं तां च स्वस्तिं ब्रुवन्तु नः॥ नारदाद्या ऋषिगणा ये चान्ये च तपोधनाः। भवन्तु यजमानस्य ह्याशीर्वादपरायणाः॥

ततो यजमानः आचमनं कुर्यात्-ह्रीं केशवाय नमः। ह्रीं नारायणाय नमः। ह्रीं माधवाय नमः। हस्तप्रक्षालनम्-ह्रीं गोविन्दाय नमः॥

ह्रीं विष्णवे नमः। ह्रीं मधुसूदनाय नमः। ह्रीं त्रिविक्रमाय नमः। ह्रीं वामनाय नमः। ह्रीं हृषीकेशाय नमः। ह्रीं पद्मनाभाय नमः। ह्रीं दामोदराय नमः। ह्रीं सङ्कर्षणाय नमः। ह्रीं

वासुदेवाय नमः। ह्रीं प्रद्युम्नाय नमः। ह्रीं अनिरुद्धाय नमः। ह्रीं पुरुषोत्तमाय नमः। ह्रीं अधोक्षजाय नमः। ह्रीं नारसिंहाय नमः। ह्रीं अच्युताय नमः। ह्रीं जनार्दनाय नमः। ह्रीं उपेन्द्राय नमः। ह्रीं हरये नमः। ह्रीं श्रीकृष्णाय नमः।। पवित्रधारणम्रामं। रामाय नमः। पुनः आचमनम्-ह्रीं केशवाय नमः। ह्रीं नारायणाय नमः। ह्रीं माधवाय नमः।। हस्तप्रक्षालनम्-ह्रीं गोविन्दाय नमः।।

यजमानः प्राणायामं कुर्यात्-ह्रीं नमो भगवते वासुदेवाय।।

यजमानः-'रां रामाय नमः' इति मन्त्रं त्रिवारं जपेत्।।

अथ हस्ते दक्षिणासहितं साक्षतं सताम्बूलं फलं गृहीत्वा गुरुपादाभिवन्दनं कुर्यात्–

ब्रह्मानन्दं परमसुखदं केवलं ज्ञानमूर्तिं द्वन्द्वातीतं गगनसदृशं तत्त्वमस्यादिलक्ष्यम्। एकं नित्यं विमलमचलं सर्वधीसाक्षिभूतं भावातीतं त्रिगुणरहितं सद्गुरुं तं नमामि।।

आनन्दमानन्दकरं प्रसन्नं ज्ञानस्वरूपं निजभावयुक्तम्। योगीन्द्रमीड्यं भवरोगवैद्यं श्रीमद्गुरुं नित्यमहं नमामि।। सीतानाथसमारम्भां रामानन्दाचार्यमधय्माम्। अस्मदाचार्यपर्यन्तां वन्दे गुरुपरम्पराम्।। समस्तसम्पत्समवाप्तिहेतवः समुत्थितापत्कुलधूमकेतवः। अपारसंसारसमुद्रसेतवः पुनन्तु मां ब्राह्मणपादपांसवः।। आपद्घनध्वान्तसहस्रभानवः समीहितार्थार्पणकामधेनवः। समस्ततीर्थाम्बुपवित्रपाणयः पुनन्तु मां ब्राह्मणपादपांसवः।। नमो गुरुभ्यो गुरुपादुकाभ्यो नमः परेभ्यः परपादुकाभ्यः। आचार्यसिद्धेश्वरपादुकाभ्यो नमोऽस्तु वै विप्रपदाम्बुजेभ्यः।।

ततः यजमानः हस्ते जलमादाय करिष्यमाणरामयज्ञाङ्गभूतवर्तमानकर्मणि चित्तवृत्तिनिरोधाय भद्रसूक्तशान्त्यादिश्रवणं करिष्ये इति सङ्कल्प्य शृणुयात्।

अथ भद्रसूक्तं शान्त्यादिपाठश्च

या श्रीः स्वयं सुकृतिनां भवनेष्वलक्ष्मीः पापात्मनां कृतधियां हृदयेषु बुद्धिः। श्रद्धा सतां कुलजनप्रभवस्य लज्जा तां त्वां नताः स्म परिपालय देवि विश्वम्।। किं वर्णयाम तव रूपमचिन्त्यमेतत्किं चातिवीर्यमसुरक्षयकारि भूरि। किं चाहवेषु चरितानि तवाति यानि सर्वेषु देव्यसुरदेवगणादिकेषु।। हेतुः समस्तजगतां त्रिगुणाऽपि दोषैर्न ज्ञायसे हरिहरादिभिरप्यपारा। सर्वाश्रयाऽखिलमिदं जगदंशभूतमव्याकृता हि परमा प्रकृतिस्त्वमाद्या।। यस्याः समस्तसुरतासमुदीरणेन तृप्तिं प्रयान्ति सकलेषु मखेषु देवी। स्वाहाऽसि वै पितृगणस्य च तृप्तिहेतुरुच्चार्यसे त्वमत एव जनैः स्वधा च।। शान्तिः शान्तिः सुशान्तिर्भवतु।।

अथ देवतादिनमस्काराः

ह्रीं श्रीमन्महागणाधिपतये नमः। ह्रीं परिपूर्णब्रह्मणे श्रीसातासमेताय भगवते श्रीरामचन्द्राय नमः। ह्रीं हनुमते नमः। ह्रीं उमामहेश्वराभ्यां नमः। ह्रीं वाणीहिरण्यगर्भाभ्यां

नमः। ह्रीं शचीपुरन्दराभ्यां नमः। ह्रीं स्थानदेवताभ्यो नमः। ह्रीं वास्तुदेवताभ्यो नमः। ह्रीं सर्वेभ्यो देवेभ्यो नमः। ह्रीं सर्वेभ्यः पूर्वाचार्येभ्यो नमः। ह्रीं सर्वेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो नमः। ह्रीं एतत्कर्मप्रधानदेवताभ्यो नमः। ह्रीं विश्वेश्वरादिसमस्तदेवताभ्यो नमः।। ह्रीं पुण्यं पुण्याहं दीर्घमायुरस्तु।।

ह्रीं रमन्ते योगिनो यस्मिन् सर्वभूतहिते रताः। वेदवेद्यः पुमान् यस्तु तस्मै रामाय वै नमः।। अचिन्त्यशक्तिसम्पन्नां सर्वमङ्गलदायिनीम्। प्रसन्नवदतां सीतां नौमि तां रामवल्लभाम्। अंजनानन्दनं वीरं हनूमन्तं प्रभोः प्रियम्। रक्षोघ्नं मारुतिं नौमि सर्वकायार्थसिद्धये।। सुमुखश्चैकदन्तश्च कपिलो गजकर्णकः। लम्बोदरश्च विकटो विघ्ननाशो गणाधिपः।। धूम्रकेतुर्गणाध्यक्षो भालचन्द्रो गजाननः। द्वादशैतानि नामानि यः पठेच्छृणुयादपि।। विद्यारम्भे विवाहे च प्रवेशे निर्गमे तथा। संग्रामे संकटे चैव विघ्नस्तस्य न जायते।। शुक्लाम्बरधरं देवं शशिवर्णं चतुर्भुजम्। प्रसन्नवदनं ध्यायेत् सर्वविघ्नोपशान्तये।। अभीप्सितार्थसिद्ध्यर्थं पूजितो यः सुरासुरैः। सर्वविघ्नहरस्तस्मै गणाधिपतये नमः।। वक्रतुण्ड! महाकाय! सूर्यकोटिसमप्रभ। निर्विघ्नं कुरु मे देव! सर्वकार्येषु सिद्धिद!।। सर्वमङ्गलमाङ्गल्ये शिवे सर्वार्थसाधिके। शरण्ये त्र्यम्बके गौरि नारायणि नमोऽस्तु ते।। सर्वदा सर्वकार्येषु नास्ति तेषाममङ्गलम्। येषां हृदिस्थो भगवान् मङ्गलायतनो हरिः।। लाभस्तेषां जयस्तेषां कुतस्तेषां पराभवः। येषामिन्दीवरश्यामो हृदयस्थो जनार्दनः।। विनायकं गुरुं भानुं ब्रह्मविष्णुमहेश्वरान्। सरस्वतीं प्रणम्यादौ सर्वकार्यार्थसिद्धये।। तदेव लग्नं सुदिनं तदेव ताराबलं चन्द्रबलं तदेव। विद्याबलं दैवबलं तदेव स्मरेद् यदा राघवपादपद्मम्।। सर्वेष्वारब्धकार्येषु सर्वथा सर्वदा तथा। देवो दिशतु नः सिद्धिं सीतानाथः परेश्वरः।। वैदेहीसहितं सुरद्रुमतले हैमे महामण्डपे मध्ये पुष्पकमासने मणिमये वीरासने संस्थितम्। अग्रे वाचयति प्रभंजनसुते तत्त्वं मुनीन्द्रैः परं व्यख्यान्तं भरतादिभिः परिवृतं रामं भजे श्यामलम्।। सकलगुणनिधानं योगिभिः स्तूयमानं भुजविजितसमानं राक्षसेन्द्रादिमानम्। महितवृषभयानं सीतया शोभमानं स्मर हृदय विमानं ब्रह्म रामाभिधानम्।। गुर्वर्थे त्यक्तराज्यो व्यचरदनुवनं पद्मपद्भ्यां प्रियायाः पाणिस्पर्शाक्षमाभ्यां मृजितपथरुजो यो हरीन्द्रानुजाभ्याम्। वैरूप्याच्छूर्पणख्याः प्रियविरहरुषाऽऽरोपितभ्रूविजृम्भत्रस्ताब्धिर्बद्धसेतुः खलदवदहनः कोसलेन्द्रोऽव-तान्नः। ध्येयं सदा परिभवघ्नमभीष्टदोहं तीर्थास्पदं शिवविरिञ्चिनुतं शरण्यम्। भृत्यार्तिहं प्रणतपाल भवाब्धिपोतं वन्दे महापुरुष ते चरणारविन्दम्।। त्यक्त्वा सुदुस्त्यजसुरेप्सितराज्यलक्ष्मीं धर्मिष्ठ आर्यवचसा यदगादरण्यम्। मायामृगं दयितयेप्सितमन्वधावद् वन्दे महापुरुष ते चरणारविन्दम्।। रामाय रामभद्राय रामचन्द्राय वेधसे। रघुनाथाय नाथाय सीतायाः पतये नमः।। श्रीराम राम रघुनन्दन राम राम श्रीराम राम भरताग्रज राम राम। श्रीराम राम रणकर्कश राम राम श्रीराम राम शरणं भव राम

राम।। श्रीरामचन्द्रचरणौ मनसा स्मरामि श्रीरामचन्द्रचरणौ वचसा गृणामि। श्रीरामचन्द्रचरणौ शिरसा नमामि श्रीरामचन्द्रचरणौ शरणं प्रपद्ये।। माता रामो मत्पिता रामचन्द्रः स्वामी रामो मत्सखा रामचन्द्रः। सर्वस्वं मे रामचन्द्रो दयालुर्नान्यं जाने नैव जाने न जाने।। दक्षिणे लक्ष्मणो यस्य वामे च जनकात्मजा। पुरतो मारुतिर्यस्य तं वन्दे रघुनन्दनम्।। लोकाभिरामं रणरंगधीरं राजीवनेत्रं रघुवंशनाथम्। कारुण्यरूपं करुणाकरं तं श्रीरामचन्द्रं शरणं प्रपद्ये।। आपदामपहर्तारं दातारं सर्वसम्पदाम्। लोकाभिरामं श्रीरामं भूयो भूयो नमाम्यहम्।। रामो राजमणिः सदा विजयते रामं रमेशं भजे रामेणाभिहता निशाचरचमू रामाय तस्मै नमः। रामान्नास्ति परायणं परतरं रामस्य दासोऽस्म्यहं रामे चित्तलयः सदा भवतु मे भो राम मामुद्धर।। श्रीरामः शरणं समस्तजगतां रामं विना का गती रामेण प्रतिहन्यते कलिमलं रामाय कार्यं नमः। रामात् त्रस्यति कालभीमभुजगो रामस्य सर्वं वशे रामे भक्तिरखण्डिता भवतु मे राम त्वमेवाश्रयः।। चित्रकूटालयं राममिन्दिरानन्दमन्दिरम्। वन्दे च परमानन्दं भक्तानामभयप्रदम्।। ब्रह्मविष्णुमहेशाद्या यस्यांशा लोकसाधकाः। तमादिदेवं श्रीरामं विशुद्धं परमं भजे।। ब्रह्मेशविष्णवाख्यशरीरभेदैर्विश्वं सृजत्यत्ति च पाति यश्च। तमादिदेवं परमं परेशमाधाय चेतस्युपयाति मुक्तिम्।। नमः पराय देवाय परात्परतराय च। परात्परनिवासाय सगुणायागुणाय च।। ज्ञानाज्ञानस्वरूपाय धर्माधर्मस्वरूपिणे। विद्याविद्यास्वरूपाय स्वरूपाय ते नमः।। यो दैत्यहन्ता नरकान्तकश्च भुजाप्रमात्रेण दधार गोत्रम्। भूभारविच्छेदविनोदकामं नमामि देवं रघुवंशदीपम्।। आविर्भूतश्चतुर्धा यः कपिभिः परिवारितः। हतवान् राक्षसानीकं रामं दाशरथिं भजे।। एवमादीन्यनेकानि चरितानि महात्मनः। तेषां नामानि संख्यातुं शक्यन्ते नाब्दकोटिभिः।। महिमानं तु यन्नाम्नः परिगन्तु न शक्यते। मनुभिश्च मुनीन्द्रैश्च कथं तं क्षुल्लको भजे।। यन्नामश्रवणेनापि महापातकिनोऽपि ये। पवनत्वं प्रपद्यन्ते कथं स्तोष्यामि तुच्छधीः।। मानसं वाचिकं पापं कर्मणा समुपार्जितम्। श्रीरामस्मरणेनैव तत्क्षणान्नश्यति ध्रुवम्।। सर्वदेवमयो रामः स्मृतश्चार्तिप्रणाशनः। सद्भक्तवत्सलो देवो भक्त्या तुष्यति नान्यथा।। अवशेनापि यन्नाम्ना कीर्तितो वा समृतोऽपि वा। विमुक्तपातकः सोऽपि परमं पदमश्नुते।। संसारघोरकान्तारदावाग्निर्मधुसूदनः। स्मर्तॄणां सर्वपापानि नाशयत्याशु सत्तमः।। यश्च रामं न पश्येत्तु यं च रामो न पश्यति। निन्दितः स भवेल्लोके स्वात्माप्येनं विगर्हते।। वन्दे विदेहतनयापदपुण्डरीकं कैशोरसौरभसमाहृतयोगिचित्तम्। हन्तुं त्रितापमनिशं मुनिहंससेव्यं सन्मानसालिपरिपीतपरागपुञ्जम्।। मनोजवं मारुततुल्यवेगं जितेन्द्रियं बुद्धिमतां वरिष्ठम्। वातात्मजं वानरयूथमुख्यं श्रीरामदूतं शरणं प्रपद्ये।। विश्वेशं माधवं ढुण्ढिं दण्डपाणिं च भैरवम्। वन्दे काशीं गुहां गङ्गां भवानीं मणिकर्णिकाम्।। इति भद्रसूक्तं शान्त्यादिपाठश्च।।

अथ भूमिपूजनम्

अथ यजमानः मण्डपानुकूलयागोचितभूमिपरिग्रहं कृत्वा गोमयमिश्रित-गङ्गाजलेन भूमिं सम्प्रोक्ष्य आचम्य प्राणानायम्य सङ्कल्पं कुर्यात्-ह्रीं केशवाय नमः। ह्रीं नारायणाय नमः। ह्रीं माधवाय नमः।। हस्तप्रक्षालनम्-ह्रीं गोविन्दाय नमः।। प्राणायामः-ह्रीं नमो भगवते वासुदेवाय। सङ्कल्प-(हस्ते जलमादाय) देशकालौ सङ्कीर्त्य............गोत्रः.............. अहं अस्माकं सर्वेषाम् उपात्तसमस्तदुरितक्षयद्वारा श्रीरामचन्द्रप्रीत्यर्थं सनवग्रहमखशतमुखकोटिहोमात्मकश्रीराममहायज्ञोपयोगिकुण्ड-मण्डपादि कर्तुं श्रीगणपतिपूजनपूर्वकं वराहकूर्मवेशवसुधावास्तुपुरुष-ब्राह्मण-विश्वकर्म-सूत्रकार-गजनामकसाधन-खनित्र-इन्द्रादिदशदिक्पालपूजनं करिष्ये।

ततः-'ह्रीं गणपतये नमः' इति नाममन्त्रेण पूगीफले अक्षतपुञ्जे वा गणपतिपूजनं कृत्वा गणपतिं प्रार्थयेत्-वक्रतुण्ड महाकाय कोटिसूर्यसमप्रभ। निर्विघ्नं कुरु मे देव सर्वकार्येषु सर्वदा।। विघ्नान्नाशय मे सर्वान् नाशायोपस्थितान् प्रभो। त्वत्प्रसादेन कार्याणि सर्वाणीह करोम्यहम्।। शत्रूणां बुद्धिनाशोऽस्तु मित्राणामुदयं कुरु।। अनया पूजया गणपतिः प्रीयताम्।

ततः मण्डपार्थं परिगृहीतभूमेः आग्नेयकोणे गर्तं कृत्वा तत्र अक्षतपुञ्जोपरि पूगीफलेषु वाराहादिदेवानावाह्य पूजयेत्।

भो वराह नमस्तुभ्यं धरोद्धारकर प्रभो। तीक्ष्णदंष्ट्र महाकाय राक्षसान्तक ते नमः।। ह्रीं वराहाय नमः वराहमावाहयामि स्थापयामि। भोः कूर्म जगदाधार भक्तकल्याणकृत् प्रभो। समुद्रमन्थने घृष्टपृष्ठ तुभ्यं नमो नमः।। ह्रीं कच्छपाय नमः कच्छपमावाहयामि स्थापयामि। भो नागेन्द्र नमस्तुभ्यं सर्वदेवप्रपूजित। धराधार महाकाल फणामण्डलमण्डित।। ह्रीं नागेन्द्राय नमः नागेन्द्रमावाहयामि स्थापयामि। वसुन्धरे नमस्तुभ्यं सर्वबीजधरे धरे। प्राणिनामाश्रयीभूते महाशक्तिसमन्विते।। ह्रीं पृथिव्यै नमः पृथिवीमावाहयामि स्थापयामि। वास्तोष्पते त्वमुत्तिष्ठ संसारस्थितिकारकं। पूजां गृहाण देवेश प्रसन्नो वरदो भव।। ह्रीं वास्तोष्पतये नमः वास्तोष्पतिमावाहयामि स्थापयामि।। प्रतिष्ठा सर्वदेवानां मित्रावरुणनिर्मिता। प्रतिष्ठां वः करोम्यत्र मण्डले दैवतैः सह।। भो वराहाद्यावाहितदेवाः सुप्रतिष्ठिता वरदा भवत। ह्रीं वराहाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः पाद्यं समर्पयामि। अर्घ्यं समर्पयामि। आचमनीयं समर्पयामि। चन्दनं समर्पयामि। पुष्पं समर्पयामि। चतुष्कोणमण्डलं कृत्वा तत्र नैवेद्यं पुरतः संस्थाप्य। धूपं समर्पयामि। दीपं समर्पयामि। हस्तं प्रक्षाल्य नैवेद्यं निवेदयेत्। ह्रीं वराहाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः नैवेद्यं समर्पयामि। नैवेद्यं जलेन सम्प्रोक्ष्य धेनुमुद्रया अमृतीकृत्य प्रासमुद्राः प्रदर्शयेत्। प्राणाय नमः। अपानाय नमः। व्यानाय नमः। उदानाय नमः। समानाय नमः। नैवेद्यान्ते आचमनीयं समर्पयामि। मध्येपानीयं समर्पयामि। उत्तरापोशनं समर्पयामि। हस्तप्रक्षालनं समर्पयामि।

मुखप्रक्षालनं समर्पयामि। करोद्वर्तनार्तनार्थे चन्दनं समर्पयामि। मुखवासार्थे पूगीफलताम्बूलं समर्पयामि। कृतायाः पूजायाः साद्गुण्यार्थे दक्षिणां समर्पयामि।

ततः प्रार्थनां कुर्यात्-वसुधे सर्वकल्याणि प्रसन्ना वरदा भव। मण्डपं कारयाम्यद्य त्वदूर्ध्वं यज्ञहेतवे।। कच्छपाय नमस्तुभ्यं नमोऽनन्तस्वरूपिणे। यागं कर्तुं वरं देहि प्रसन्नः सुस्थिरो भव।। भो वाराह नमस्तुभ्यं प्रसन्नो वरदो भव। आज्ञां देहि क्रतुं कर्तुं विघ्नं नाशय नाशय।। वास्तोष्पतिं महादेवं सर्वसिद्धिविधायकम्। शान्तिकर्तारमीशानं तं वास्तुं प्रणतोऽस्म्यहम्।। अनया पूजया वाराहाद्यावाहितदेवताः प्रीयन्ताम्।

तदनन्तरं ह्रीं ब्रह्मणे नमः इति मन्त्रेण ब्राह्मणपूजनम्।। ह्रीं विश्वकर्मणे नमः इति मन्त्रेण विश्वकर्मपूजनम्।। ह्रीं सूत्रकाराय नमः इति मन्त्रेण सूत्रकारपूजनम्।। ततो गजनामकसाधनपूजनम्-तद्यथा-हस्ते अक्षतान् गृहीत्वा तत्र (गजे) २४ देवानामावाहयेत्-ह्रीं महादेवाय नमः महादेवम् आवाहयामि स्थापयामि(१)। ह्रीं वायवे नमः वायुम्.(२)। ह्रीं विश्वेभ्यो देवेभ्यो नमः विश्वान् देवान.(३)। ह्रीं अग्नये नमः अग्निम्.(३)। ह्रीं अग्नये नमः अग्निम्.(४)। ह्रीं ब्रह्मणे नमः ब्रह्माणम्.(५)। ह्रीं सूर्याय नमः सूर्यम्.(६)। ह्रीं रुद्राय नमः रुद्रम्.(७)। ह्रीं यमाय नमः यमम्.(८)। ह्रीं विश्वकर्मणे नमः विश्वकर्माणम्.(९)। वसुभ्यो नमः वसून्.(१०) ह्रीं गणेशाय नमः गणेशम्.(११)। ह्रीं करुणाय नमः करुणम्.(१२)। ह्रीं स्वामिकार्तिकाय नमः स्वामिकार्तिकम्.(१३)। ह्रीं इच्छायै नमः इच्छाम्.(१४)। ह्रीं क्रियायै नमः क्रियाम्.(१५)। ह्रीं ज्ञानाय नमः ज्ञानम्.(१६)। ह्रीं कुबेराय नमः कुबेरम्.(१७)। ह्रीं चन्द्राय नमः चन्द्रम्.(१८)। ह्रीं जयायै नमः जयाम्.(१९)। ह्रीं वरुणाय नमः वरुणम्.(२०). ह्रीं वासुदेवाय नमः वासुदेवम्.(२१)। ह्रीं बलभद्राय नमः बलभद्रम्.(२२)। ह्रीं कामाय नमः कामम्.(२३)। ह्रीं विष्णवे नमः विष्णुम्.(२४)। इत्यावाह्य। ह्रीं गजस्थावाहितदेवेभ्यो नमः इति मन्त्रेण तान् सम्पूज्य खनित्रपूजनं कुर्यात्-त्वष्ट्रा विनिर्मितः पूर्वं लोकानां हितकाम्यया। पूजयामि खनित्र त्वां सिद्धिदो भव मे सदा।। इत्यक्षतैरावाह्य ह्रीं खनित्राय नमः इति मन्त्रेण खनित्रपूजनम्। ततः दशदिक्षु इन्द्रादिदिक्पतिपूजनम्-ह्रीं इन्द्राय नमः इन्द्रम्.(१)। ह्रीं अग्नये नमः अग्निम्.(२)। ह्रीं यमाय नमः यमम्.(३)। ह्रीं निर्ऋतये नमः निर्ऋतिम्.(४)। ह्रीं वरुणाय नमः वरुणम्.(५)। ह्रीं वायवे नमः वायुम्.(६)। ह्रीं सोमाय नमः सोमम्.(७)। ह्रीं ईशानाय नमः ईशानम्.(८)। ह्रीं ब्रह्मणे नमः ब्रह्माणम्.(९)। ह्रीं अनन्ताय नमः अनन्तम्.(१०)। ह्रीं इन्द्रादिदशदिक्पालेभ्यो नमः इति मन्त्रेण सम्पूज्य।। सर्वेषां देवानां कर्पूरनीराजनम्-नीराजनदीपं प्रज्वाल्य। ह्रीं रत्नेश्वर्यै नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि इति सम्पूज्य नीराजनं कुर्यात्-कर्पूरपूरेण मनोहरेण सुवर्णपात्रान्तरसंस्थितेन। प्रदीप्तभासा सह सङ्गतेन नीराजनं ते जगदीश कुर्वे।। ह्रीं गणपत्याद्यावाहितसमस्तदेवताभ्यो नमः

कर्पूरनीराजनं दर्शयामि। जलेन शीतलीकरणम्। पुष्पैः देवताभिवन्दनम्। हस्ताभ्याम् आत्माभिवन्दनम्। हस्तप्रक्षालनम्ःनानासुगन्धपुष्पाणि यथाकालोद्भवानि च। पुष्पाञ्जलिर्मया दत्तो गृहाण परमेश्वर।। ह्रीं गणपत्याद्यावाहितसमस्तदेवताभ्यो नमः मन्त्रपुष्पाञ्जलिं समर्पयामि।। ह्रीं गणपत्याद्यावाहितसमस्तदेवताभ्यो नमः प्रदक्षिणां-न्नमस्कारान्।। प्रार्थना-आवाहनं न जानामि न जानामि विसर्जनम्। पूजां चैव न जानामि क्षम्यतां परमेश्वर।। ततः एकस्मिन् पात्रे पायसादिकं बलिं निधाय ह्रीं वराहाद्यावाहितसमस्तदेवताभ्यो नमः अमुं बलिं समर्पयामि इति जलमुत्सृजेत्।। ततः वराहादिवास्तुपुरुषान्तपञ्चदेवतानां पूर्वं पूजितानां मण्डपभूमौ आग्नेयभागे गर्ते स्थापनम्। तदुपरि मृदा गर्तपूरणम्।। दक्षिणादानसङ्कल्पः-कृतस्य वराहादिपूजनकर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थं तत्सम्पूर्णफलप्राप्त्यर्थं नानानामगोत्रेभ्यो ब्राह्मणेभ्यः दक्षिणां दातुम् अहम् उत्सृजे। न्यूनातिरिक्तदोषपरिहारार्थं भूयसीं दक्षिणां दातुम् अहम् उत्सृजे। ब्राह्मणेभ्यो दक्षिणां दत्त्वा तेभ्यः आशीर्वादं गृह्णीयात्-कल्याणानां निधानं कलिमलमथनं पावनं पावनानां पाथेयं यन्मुमुक्षोः सपदि परपदप्राप्तये प्रस्थितस्य। विश्रामस्थानमेकं कविवरवचसां जीवनं सज्जनानां बीजं धर्मद्रुमस्य प्रभवतु भवतां भूतये रामनाम।। यजमानः हस्ते जलं गृहीत्वा-कायेन वाचा मनसेन्द्रियैर्वा बुद्ध्यात्मना वा प्रकृतेः स्वभावात्। करोमि यद्यत्सकलं परस्मै नारायणायेति समर्पयामि।। यस्य स्मृत्या च नामोक्त्या तपः पूजाक्रियादिषु। न्यूनं सम्पूर्णतां याति सद्यो वन्दे तमच्युतम्।। अनेन मया कृतेन पूजनेन पूजितदेवताः प्रीयन्तां न मम। ह्रीं तत्सद् ब्रह्मार्पणमस्तु। जलम् उत्सृजेत्। विष्णवे नमः विष्णवे नमः विष्णवे नमः विष्णवे नमः।। इत्युच्चार्य।। गणपत्यादिदेवानां विसर्जनं कुर्यात्-यान्तु देवगणाः सर्वे पूजामादाय मामकीम्। इष्टकामप्रसिद्ध्यर्थं पुनरागमनाय च।। इति भूमिपूजनविधिः।। अथ कुण्डमण्डपं निर्माय निर्धारितदिने देहशुद्धिप्रायश्चित्तं कुर्यात्।।

अथ देहशुद्धिप्रायश्चित्तम्

यजमानः कृतनित्यक्रियः पवित्रे वसने परिधाय गोमयादिना शोधितायां भूमौ आसने उपविश्य आचमनं कुर्यात्-ह्रीं केशवाय नमः। ह्रीं नारायणाय नमः। ह्रीं माधवाय नमः। हस्तप्रक्षालनम्-ह्रीं गोविन्दाय नमः।। ह्रीं विष्णवे नमः। ह्रीं मधुसूदनाय नमः। ह्रीं त्रिविक्रमाय नमः। ह्रीं वामनाय नमः। ह्रीं श्रीधराय नमः। ह्रीं हृषीकेशाय नमः। ह्रीं पद्मनाभाय नमः। ह्रीं दामोदराय नमः। ह्रीं सङ्कर्षणाय नमः। ह्रीं वासुदेवाय नमः। ह्रीं प्रद्युम्नाय नमः। ह्रीं अनिरुद्धाय नमः। ह्रीं पुरुषोत्तमाय नमः। ह्रीं अधोक्षजाय नमः। ह्रीं नारसिंहाय नमः। ह्रीं अच्युतामय नमः। ह्रीं जनार्दनाय नमः। ह्रीं उपेन्द्राय नमः। ह्रीं हरये नमः। ह्रीं श्रीकृष्णाय नमः। पवित्रधारणम्-रां रामाय नमः। पुनः आचमनम्-ह्रीं केशवाय नमः। ह्रीं नारायणाय नमः। ह्रीं माधवाय नमः। हस्तप्रक्षालनम्-ह्रीं गोविन्दाय नमः।

प्राणायामः-ह्रीं नमो भगवते वासुदेवाय। रां रामाय नमः इति षडक्षरमन्त्रं जप्त्वा। हस्ते जलमादाय सङ्कल्पं कुर्यात्-देशकालौ। संङ्कीर्त्य --- गोत्रः --- अहं मम जन्मप्रभृति अद्यदिनं यावत् ज्ञाताज्ञात-कामाकाम-सकृदसकृत्-कायिक-वाचिकमानसिकसांसर्गिक-स्पृष्टास्पृष्ट-भुक्ताभुक्त-पीतापीतसकलपातकातिपात-कोपपातक-गुरुलघुपातक-सङ्करीकरण-मलिनी-करणापात्रीकरण-जातिभ्रंशकरण-प्रकीर्णपातकानां मध्ये सम्भावितपापानां निर्सनपूर्वकं करिष्यमाणशतमुखकोटि-होमात्मकश्रीराममहायज्ञकर्मणि अधिकारसिद्धिद्वारा श्रीराम-चन्द्रप्रीत्यर्थम्-यथाशक्ति अब्दप्रायश्चित्तं प्रतिकृच्छ्रं निष्कपादार्धरजतप्रत्याम्नायद्रव्यदान-द्वारा केशवपन-गङ्गास्नान-पञ्चगव्यप्राशन-सूर्यादिपञ्चदेवतापूजन-श्रीसीतारामपूजन-ब्राह्मणगुरु-गोपृथिव्यादिपूजनैः सह आचरिष्ये।। इति सङ्कल्प्य वपनं कुर्यात्।। (वपनासम्भवे द्विगुणं प्रायश्चित्तम्) वपने मन्त्रः-यानि कानि च पापानि ब्रह्महत्यासमानि च। केशानाश्रित्य तिष्ठन्ति तस्मात् केशान् वपाम्यहम्।। अथ शिखाकक्षोपस्थवर्जं केशश्मश्रुरोमनखानि वापयित्वा स्नात्वा आचमनं कुर्यात्। ह्रीं केशवाय नमः। ह्रीं नारायणाय नमः। ह्रीं माधवाय नमः।। हस्तप्रक्षालनम्-ह्रीं गोविन्दाय नमः।। अथ प्रार्थनादेवदेव जगन्नाथ शङ्खचक्रगदाधर। आज्ञां देहि च मे विष्णो तव तीर्थावगाहने।। सागरस्वननिर्घोष दण्डहस्तासुरान्तक। जगत्स्रष्टर्जगन्मर्दिन् नमामि त्वां सुरेश्वर।। तीक्ष्णदंष्ट्र महाकाय कल्पान्तदहनोपम। भैरवाय नमस्तुभ्यम् अनुज्ञां दातुमर्हसि।। ततः अर्घ्यदानम्-उत्तिष्ठन्तु महद्भूता ये भूता भूमिपालकाः। भूतानामविरोधेन स्नानकर्म समारभे।। तीर्थदेवते एष तेऽर्घः।।१।। विष्णुपादाप्रासम्भूते गङ्गे त्रिपथगामिनि। धर्मद्रवेति विख्याता पापं मे हर जाह्नवि।। गङ्गे एष तेऽर्घः।।२।। जाह्नवी सर्वतः पुण्या ब्रह्महत्यौघहारिणी। वाराणस्यां विशेषेण गङ्गा ह्युत्तरवाहिनी।। गङ्गे एष तेऽर्घः।।३।। इत्यर्घ्यं दत्त्वा प्रार्थयेत्-नमामि गङ्गे तव पादपङ्कजं सुरासुरैर्वन्दितदिव्यरूपम्। भुक्तिं च मुक्तिं च ददासि नित्यं भावानुसारेण सदा नराणाम्।। गङ्गा गङ्गेति यो ब्रूयाद्योजनानां शतैरपि। मुच्यते सर्वपापेभ्यो विष्णुलोकं स गच्छति।। तीर्थराजाय नमः।। त्वं राजा सर्वतीर्थानां त्वमेव जगतः पिता। याचितं तीर्थं मे देहि तीर्थराज नमोऽस्तु ते।। अथ स्नात्वा मार्जयेत् ह्रीं अदभ्यो नमः।। स्नात्वा अङ्गुष्ठेन त्रिः उदकमावर्तयेत्-ह्रीं वरुणाय नमः।। हस्ते जलं गृहीत्वाऽघमर्षणम्-ह्रीं परमात्मने नमः ह्रीं परमात्मने नमः ह्रीं परमात्मने नमः इत्याघ्राय वामभागे जलप्रक्षेपः।। ह्रीं विष्णवे नमः इति। प्रार्थना-पापोऽहं पापकर्माहं पापात्मा पापसम्भवः। त्राहि मां कृपया गङ्गे सर्वपापहरा भव।। अथ स्नानाङ्गतर्पणं कुर्यात्-(देवतीर्थेन ऐककमञ्जलिं दद्यात्) ह्रीं ब्रह्मादयो देवास्तृप्यन्ताम् १। ह्रीं देवपत्न्यस्तृप्यन्ताम् १। ह्रीं देव-गणास्तृप्यन्ताम १। ह्रीं देवबन्धवस्तृप्यन्ताम् १। ह्रीं देवसुतास्तृप्यन्ताम् १। ह्रीं सर्वे देवास्तृप्यन्ताम् १। (ततः उपवीतं कण्ठ्यं कृत्वा ऋषितीर्थेन द्वौ द्वौ अञ्जली दद्यात्) ह्रीं कृष्णद्वैपायनादि-ऋषयस्तृप्यन्ताम् २। ह्रीं

ऋषिपत्न्यस्तृप्यन्ताम् २। ह्रीं ऋषिगणास्तृप्यन्ताम् २। ह्रीं ऋषिबन्धवस्तृप्यन्ताम् २। ह्रीं ऋषि-सुतास्तृप्यन्ताम् २। ह्रीं सर्वऋषयस्तृप्यन्ताम् २। (ततः अपसव्यं कृत्वा पितृतीर्थेन अञ्जलित्रयं दद्यात्) ह्रीं कव्यवाडनलादयः पितरस्तृप्यन्ताम् ३। ह्रीं पितृपत्न्यस्तृप्यन्ताम् ३। ह्रीं पितृगणास्तृप्यन्ताम् ३। ह्रीं पितृबन्धवस्तृप्यन्ताम् ३। ह्रीं पितृसुतास्तृप्यन्ताम् ३। ह्रीं सर्वेपितरस्तृप्यन्ताम् ३। सव्यम्। आचमनम्-ह्रीं केशवाय नमः। ह्रीं नारायणाय नमः। ह्रीं माधवाय नमः।। हस्तप्रक्षालनम्-ह्रीं गोविन्दाय नमः।। ये च वृक्षेषु गृहेषु पितरो मे व्यवस्थिताः। ते सर्वे तृप्तिमायान्तुः मयोत्सृष्टैः शिखोदकैः।। इति मन्त्रेण शिखां निष्पीड्य ततः-यन्मया दुष्कृतं तोयं शारीरमलसंयुतम्। तस्य पापस्य शुद्ध्यर्थं यक्ष्माणं तर्पयाम्यहम्।। इति मन्त्रेण तीर्थतटे अञ्जलिप्रक्षेपः।। अथ नदीं प्रार्थयेत्-ज्ञानतोऽज्ञानतो वापि यन्मे दुश्चरितं कृतम्। तत्क्षमस्वाखिलं देवि जगन्मातर्नमोऽस्तु ते।। अथ जलादुत्तीर्य शुद्धवस्त्रे परिधाय तिलकंधृत्वा यज्ञोपवीतधारणं कुर्यात्।।

अथ यज्ञोपवीतधारणविधिः

आचम्य प्राणानायम्य। (तत्रादौ आचार्याय यज्ञोपवीतदानं कार्यम्) ततो यज्ञोपवीतं प्रक्षाल्य।। ह्रीं यो देवः सविताऽस्माकं मनःप्राणेन्द्रियक्रियाः। प्रचोदयति तद्भर्गो वरेण्यं समुपास्महे।। इति गायत्रीमन्त्रेण दशवारमभिमन्त्र्य।। उभयजान्वोरुपरि धृत्वा।। अक्षतान् गृहीत्वा।। प्रथमतन्तौ ह्रीं नारायणाय नमः नारायणम् आवाहयामि स्थापयामि।।१।। द्वितीयतन्तौ ह्रीं अग्नये नमः अग्निम्.।।२।। तृतीयतन्तौ ह्रीं नागेभ्यो नमः नागान्.।।३।। चतुर्थतन्तौ ह्रीं सोमाय नमः सोमम्.।।४।। पञ्चमतन्तौ ह्रीं इन्द्राय नमः इन्द्रम्.।।५।। षष्ठतन्तौ ह्रीं प्रजापतये नमः प्रजापतिम्.।।६।। सप्तमतन्तौ ह्रीं वायवे नमः वायुम्.।।७।। अष्टमतन्तौ ह्रीं सूर्याय नमः सूर्यम्.।।८।। नवमतन्तौ ह्रीं विश्वेभ्यो देवेभ्यो नमः विश्वान् देवान्.।।९।। ग्रन्थिमध्ये ह्रीं ब्रह्मणे नमः ब्रह्माणम्.।। ह्रीं विष्णवे नमः विष्णुम्.।। ह्रीं रुद्राय नमः रुद्रम्.।। इत्यावाह्य ह्रीं आवाहितदेवताभ्यो नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षत गन्धक्षतपुष्पाणि समर्पयामि इति ऽऽन्धाक्षत गन्धक्षतपुष्पैः सम्पूज्य सूर्याय दर्शयेत्। तत्र मन्त्रः-यन्मण्डलं दीप्तिकरं विशालं रत्नप्रभं तीव्रमनादिरूपम्। दारिद्र्यदुःखक्षयकारणं च पुनातु मां तत्सवितुर्वरेण्यम्।। अथ धारयेत।। धारणमन्त्रः-ह्रीं यज्ञोपवीतं परमं यत् षण्णवतितन्तुकम्। परिधास्यामि तच्छुद्धं ह्रीमादिदशदैवतम्। दक्षिणहस्तेनोर्ध्वकृतेन दक्षिणकरमध्ये यज्ञोपवीतं प्रक्षिप्य वामेन वामस्कन्धे धारयेत्।। आचम्य एवमन्यानि धारयेत्।। इति।।

जीर्णयज्ञोपवीतत्यागः-उपवीतं भिन्नतन्तुं जीर्णं कश्मलदूषितम्। विसृजामि न हि ब्रह्म वर्चो दीर्घायुरस्तु मे।। अनन्तरं तद् गङ्गायां प्रक्षिपेत्।। इति यज्ञोपवीतधारणविधिः।।

अथ पञ्चगव्यप्राशनम्

तदर्थं पञ्चगव्यसम्पादनम्-एकस्मिन् पात्रे प्रथमं गोमूत्रं निक्षिपेत्-गोमूत्रं सर्वशुद्ध्यर्थं पवित्रं पापशोधनम्। आपदां हरते नित्यं पात्रे तन्निक्षिपाम्यहम्।। अथ गोमयम्- अग्रमठां चरन्तीनामौषधीनां रसोद्भवम्। तासां वृषभपत्नीनां गोमयं तत् क्षिपाम्यहम्।। अथ क्षीरम्-पयः पुण्यतमं प्रोक्तं धेनुभ्यश्च समुद्भवम्। सर्वशुद्धिकरं दिव्यं पात्रे तन्निक्षिपाम्यहम्।। अथ दधि-चन्द्रकुन्दसमं शीतं स्वच्छं वारिविवर्जितम्। किञ्चिदाम्लरसालं च पात्रे तन्निक्षिपाम्यहम्। अथ घृतम्-घृतं शुद्धं महद्दिव्यं पवित्रं पापशोधनम्। सर्वपुष्टिकरं चैव पात्रे तन्निक्षिपाम्यहम्।। अथ कुशोदकम्-कुशमूले स्थितो ब्रह्मा कुशमध्ये जनार्दनः। कुशाग्रे शङ्करो देवस्तेन पूतं कुशोदकम्।। इति पञ्चगव्यं कृत्वा ह्रीं इति मन्त्रेण कुशेन यज्ञियकाष्ठेन वा आलोड्य।। पञ्चगव्येन भूमिम् "अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपि वा। यः स्मरेत् पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तरः शुचिः।।" इति मन्त्रेण सम्प्रोक्ष्य। यजमानः त्रिवारं पञ्चगव्यप्राशनं कुर्यात्। तद्यथा-यत्त्वगस्थिगतं पापं देहे तिष्ठति मामके। प्राशनात् पञ्चगव्यस्य दहत्यग्निरिवेन्धनम्।। इति प्रथमं प्राश्य।। ह्रीं केशवाय नमः। ह्रीं नारायणाय नमः। ह्रीं माधवाय नमः। इति आचम्य।। यत्त्वगस्थिगतं पापं देहे तिष्ठति मामके। प्राशनात् पञ्चगव्यस्य दहत्यग्निरिवेन्धनम्।। इति द्वितीयं प्राश्य।। ह्रीं केशवाय नमः। ह्रीं नारायणाय नमः। ह्रीं माधवाय नमः। इति आचम्य।। यत्त्वगस्थिगतं पापं देहे तिष्ठति मामके। प्राशनात् पञ्चगव्यस्य दहत्यग्निरिवेन्धनम्।। इति तृतीयं प्राश्य।। केशवाय नमः। ह्रीं नारायणाय नमः। ह्रीं माधवाय नमः। इति आचम्य-ह्रीं गोविन्दाय नमः इति हस्तप्रक्षालनं कुर्यात्।।

अथ अब्दकृच्छ्रगोदानम्

अब्दकृच्छ्रद्रव्यं संस्थाप्य पूजनं कुर्यात्-ह्रीं गोभ्यो नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि। तत्रैव ३० रूप्यकाणि संस्थाप्य प्रार्थयेत्-यज्ञसाधनभूता या विश्वस्याघौघनाशिनी। विश्वरूपधरो देवः प्रीयतामनया गवा।। गवामङ्गेषु तिष्ठन्ति भुवनानि चतुर्दश। तस्मादासां प्रदानेन अतः शान्तिं प्रयच्छ मे।। हस्ते जलमादाय-इमानि उपकल्पितानि यथाशक्ति त्रिंशद्गोप्रतिनिधिद्रव्याणि यथानामगोत्रेभ्यः ब्राह्मणेभ्यः विभज्य दातुम् अहम् उत्सृजे। इति जलं द्रव्योपरि क्षिपेत्। पुनः जलक्षेपः-तेन श्रीपापापहा महाविष्णुः प्रीयताम्। तद् द्रव्यम् आचार्योक्तरीत्या ब्राह्मणेभ्यो दद्यात्।।

अथ सूर्यादिपञ्चदेवतापूजनम्

अथ पञ्चसु पूगीफलेषु अक्षतपुञ्जेषु वा क्रमेण आवाहनं कुर्यात्-ह्रीं सूर्याय नमः। सूर्यम् आवाहयामि स्थापयामि। ह्रीं शङ्कराय नमः। शङ्करम् आवाहयामि स्थापयामि। ह्रीं गणेशाय नमः। गणेशम् आवाहयामि स्थापयामि। ह्रीं विष्णवे नमः। विष्णुम् आवाहयामि

स्थापयामि। ह्रीं दुर्गायै नमः। दुर्गाम् आवाहयामि स्थापयामि। प्रतिष्ठा सर्वदेवानां मित्रावरुणनिर्मिता। प्रतिष्ठां वः करोम्यत्र मण्डले दैवतैः सह। सूर्याद्यावाहितदेवताः सुप्रतिष्ठिता वरदा भवत।। ह्रीं सूर्याद्यावाहितदेवताभ्यो नमः इति मन्त्रेण पूजा। ह्रीं सूर्याद्यावाहितदेवताभ्यो नमः गन्धं समर्पयामि। पुष्पाणि. चतुरस्रमण्डले नैवेद्यं निधाय ह्रीं सूर्याद्यावाहितदेवताभ्यो नमः धूपं. दीपं. हस्तं प्रक्षाल्य। ह्रीं सूर्याद्यावाहितदेवताभ्यो नमः नैवेद्यं समर्पयामि। नैवेद्यं जलेन सम्प्रोक्ष्य धेनुमुद्रया अमृतीकृत्य ग्रासमुद्राः प्रदर्शयेत्-ह्रीं प्राणाय नमः। ह्रीं अपानाय नमः। ह्रीं व्यानाय नमः। ह्रीं उदानाय नमः। ह्रीं समानाय नमः। नैवेद्यान्ते आचमनीयं.। मध्येपानीयं.। उत्तरापोशनं.। हस्तप्रक्षालनं.। मुखप्रक्षालनं.। करोद्वर्तनार्थे चन्दनं.। मुखवासार्थे पूगीफलताम्बूलं.। कृतायाः पूजायाः साद्गुण्यार्थे दक्षिणां.। हस्ते जलमादाय-अनेन पूजनेन सूर्याद्यावाहितदेवताः प्रीयन्ताम्।।

अथ श्रीसीतारामपूजा

पूगीफले तण्डुलपुञ्जे वा (मूर्तौ वा) सीतारामौ आवाह्य ह्रीं श्रीसीतारामचन्द्राभ्यां नमः श्रीसीतारामचन्द्रौ आवाहयामि स्थापयामि। प्रतिष्ठा सर्वदेवानां मित्रावरुणनिर्मिता। प्रतिष्ठां वां करोम्यत्र मण्डले दैवतैः सह।। श्रीसीतारामचन्द्रौ सुप्रतिष्ठितौ वरदौ भवतम्।। ह्रीं श्रीसीतारामचन्द्राभ्यां नमः। चन्दनं. पुष्पं. चतुष्कोणमण्डले नैवेद्यं संस्थाप्य धूपं. दीपं हस्तं प्रक्षाल्य ह्रीं। श्रीसीतारामचन्द्राभ्यां नमः नैवेद्यं समर्पयामि। नैवेद्यं जलेन सम्प्रोक्ष्य धेनुमुद्रया अमृतीकृत्य ग्रासमुद्राः प्रदर्शयेत्-ह्रीं प्राणाय नमः। ह्रीं अपानाय नमः। ह्रीं व्यानाय नमः। ह्रीं उदानाय नमः। ह्रीं समानाय नमः। नैवेद्यान्ते आचमनीयं. मध्येपानीयं. उत्तरापोशनं. हस्तप्रक्षालनं. मुखप्रक्षालनं. करोद्वर्तनार्थे चन्दनं. मुखवासार्थे पूगीफलताम्बूलं. कृतायाः पूजायाः साद्गुण्यार्थे दक्षिणां.।। हस्ते जलमादाय-अनया पूजया श्रीसीतारामचन्द्रौ प्रीयेताम्।। जलं क्षिपेत्।। ततः सर्वेषां देवानां कर्पूरनीराजनम्-नीराजनदीपं प्रज्वाल्य ह्रीं रत्नेश्वर्यै नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि इति सम्पूज्य नीराजनं कुर्यात्। कर्पूरपूरेण मनोहरेण सुवर्णपात्रान्तरसंस्थितेन। प्रदीप्तभासा सह सङ्गतेन नीराजनं ते जगदीश कुर्वे।। ह्रीं सूर्याद्यावाहितसमस्तदेवताभ्यो नमः कर्पूरनीराजनं दर्शयामि।। जलेन शीतलीकरणम्। पुष्पैः देवताभिवन्दनम्। हस्ताभ्याम् आत्माभिवन्दनम्। हस्तप्रक्षालनम्। मन्त्रपुष्पाञ्जलिः-नानासुगन्धपुष्पाणि यथाकालोद्भवानि च। पुष्पाञ्जलिर्मया दत्तो गृहाण परमेश्वर।। ह्रीं सूर्याद्यावाहितसमस्तदेवताभ्यो नमः मन्त्रपुष्पाञ्जलिं समर्पयामि। ह्रीं सूर्याद्यावाहितसमस्तदेवताभ्यो नमः प्रदक्षिणां. नमस्कारान्.। प्रार्थना-आवाहनं न जानामि न जानामि विसर्जनम्। पूजां चैव न जानामि क्षम्यतां परमेश्वर।। ततः ह्रीं ब्रह्मणे नमः इति मन्त्रेण ब्राह्मणपूजनं ह्रीं गुरवे नमः इति मन्त्रेण गुरुपूजनं ह्रीं गवे नमः इति मन्त्रेण गोपूजनं ह्रीं पृथिव्यै नमः इति मन्त्रेण पृथिवीपूजनं कृत्वा

अन्यानपि पूज्यान् सम्पूज्य नमस्कृत्य सङ्कल्पं कुर्यात्-कृतैतत्प्रायश्चित्तकर्मणि .... नानागोत्रेभ्यः ब्राह्मणेभ्यः यथाशक्ति भूयसीं दक्षिणां दास्ये। इति सङ्कल्प्य दक्षिणां दत्त्वा।। कायेन वाचा मनसेन्द्रियैर्वा बुध्यात्मना वा प्रकृतेः स्वभावात्। करोमि यद्यत्सकलं परस्मै नारायणायेति समर्पयामि।। यस्य स्मृत्या च नामोक्त्या तपोयज्ञक्रियादिषु। न्यूनं सम्पूर्णतां याति सद्यो वन्दे तमच्युतम्।। अनेन जलं विसृजेत्।। विष्णवे नमः।। विष्णवे नमः। विष्णवे नमः। इति जप्त्वा।।

ततः सूर्यादिदेवतानां विसर्जनं कुर्यात्-यान्तु देवगणाः सर्वे पूजामादाय मामकीम्। इष्टकामप्रसिद्ध्यर्थं पुनरागमनाय च।। इति अक्षतान् प्रक्षिपेत्।। तद्दिने यजमानः एकवारमेव लघु हविष्यान्नं भुञ्जीयात्।। इति प्रायश्चित्तविधिः।।

●

श्रीराम महायज्ञः विराट शोभायात्रा

जगद्‌गुरु रामानन्दाचार्य सप्तशताब्दी समापन महोत्सव के क्रम में आयोजित शतमुख कोटि होमात्मक श्रीराम महायज्ञ में आज जहाँ सविधि शास्त्रीय रीति से पूजनोत्सव किया वहीं वैदिक ब्राह्मणों एवं यजमानों ने विधिवत् मण्डप में प्रवेश किया। महायज्ञ की जलयात्रा अत्यन्त भव्य, विराट शोभायात्रा के रूप में नगर में निकली। टाउनहाल स्थित परिसर में निर्मित भव्य यज्ञशाला के चतुर्दिक यज्ञ से सम्बद्ध पूजन प्रक्रिया के दर्शनार्थ श्रद्धालुओं की अपार भीड़ लगी थी। अपराह्न नगर में निकली शोभायात्रा नागरिकों के आकर्षण का केन्द्र थी। महायज्ञ की पूजन प्रक्रिया का ध्वनि विस्तारकों की शृंखला से नगर में दूर तक प्रसारण आध्यात्मिक वातावरण को जीवंत बनाये हुए था।

पूर्वाह्न टाउनहाल परिसर में यज्ञशाला मण्डप प्रवेश से पूर्व यज्ञाचार्य श्रीकृष्ण लक्ष्मीकान्त पौराणिक के नेतृत्व व गणेश्वर शास्त्री द्रविड़ के आयोजन में पंचांग पूजन की प्रक्रिया यज्ञशाला के बाहर सम्पन्न हुई। किसी भी अनुष्ठान के पूर्व सम्पन्न होने वाली इस प्रक्रिया को पूर्ण करने के बाद यज्ञाचार्य यज्ञ संयोजक तथा यज्ञ के मुख्य संकल्पक ज.गु. रामानंदाचार्य तथा यजमानों को इसका संकल्प कराया गया। उसके बाद यज्ञशाला में प्रेवश हुआ।

मण्डप में प्रेवश की सविधि शास्त्रीय रीति से सम्पादित प्रक्रिया देखने के लिए मंडप के चतुर्दिक श्रद्धालुओं की भारी भीड़ जमा थी। मंत्रोच्चार की समवेत ध्वनि आध्यात्मिक श्रद्धा व कौतूहल को उत्प्रेरित कर रही थी। यज्ञशाला के बाद मण्डप में प्रेवश के उपरान्त आचार्यश्री सहित वैदिक विद्वज्जनों का मधुपर्क पूजन सम्पन्न हुआ। ब्राह्मण पूजन की इस प्रक्रिया में आचार्यों ने अपने गोत्र के उच्चारण के साथ जहाँ अनुष्ठान के शास्त्रीय सम्पादन का संकल्प लिया वहीं उनके पूजन के साथ यजमानों ने उनसे यज्ञ अनुष्ठान, पूर्ण याज्ञिक मर्यादा व विधान से सम्पन्न कराने का निवेदन किया। आचार्यों ने उन्हें वचन देते हुए आश्वस्त किया।

वैदिक ब्राह्मण जो यज्ञ प्रक्रिया में सम्मिलित हुए उनमें यज्ञाचार्य के अतिरिक्त सभी १०० यज्ञ कुण्डों के आचार्य उपाचार्य ब्राह्मण एवं अन्य सहायक वैदिक गण थे। यज्ञ से सम्बन्धित उक्त शास्त्रीय प्रक्रियाओं के उपरान्त टाउनहाल स्थित यज्ञशाला से निकली विराट व अत्यन्त भव्य यात्रा ने आज सारे नगर में न केवल नागरिकों को

अपनी ओर आकृष्ट किया बल्कि जिन मार्गों से होकर यात्रा निकली, लोग आध्यात्मिक भावों से सराबोर हो उठे। शोभायात्रा में आगे-आगे हाथी, घोड़ों व ऊँटों पर सवार होकर लोग चल रहे थे। कई बग्घियों सहित अन्य वाहन भी यात्रा में शामिल हुए थे। एक बग्घी पर श्रीराम जी का दूसरी पर आद्य जगद्गुरु रामानन्दाचार्य का चित्र हाथी पर सुसज्जित था।

शोभायात्रा में सबसे पीछे चल रही एक बग्घी पर वर्तमान ज.गु. रामानन्दाचार्य विराजमान थे। उनके आगे भक्तों की टोली भावपूर्ण स्वर में रामनाम का संकीर्तन करती एवं रामानन्दाचार्य की जयजयकार करती चल रही थी। जगह-जगह नागरिकों व श्रद्धालुओं ने स्वामी रामानंद को माल्यार्पण किया। अत्यन्त भव्य एवं सुदीर्घ शोभायात्रा के पीछे चल रहे स्वामी रामनरेशाचार्य सभी के आकर्षण व श्रद्धालुओं के अभिवादन का केन्द्र बने हुए थे। उनके पीछे चल रही कार में रामानन्दाचार्य सप्तशताब्दी की राष्ट्रीय महोत्सव समिति के स्वागताध्यक्ष पं. लोकपति त्रिपाठी चल रहे थे। आगे चल रही अन्य बग्घियों में जूनागढ़ के अनि अखाड़े के सभापति, महन्त गोपालानन्द बापू एवं अन्य विशिष्ट संत शोभायात्रा के आगे बालयोगी उमेशनाथ वाल्मीकिधाम संस्थापक उज्जैन ध्वज के साथ चल रहे थे।

शोभायात्रा में चार बड़े बैण्डबाजे भव्य एवं आकर्षक पोशाक में सुशोभित थे। यात्रा में शहनाई, ताशा, नगाड़े आदि भी शामिल थे। महिलाओं की एक भजन मण्डली भावपूर्ण ढंग से संकीर्तन के साथ नृत्य करते हुए चल रही थी। विभिन्न प्रान्तों से आये श्रद्धालुदल एवं संकीर्तन मण्डलियाँ अपने बैनरों के साथ चल रही थीं। कोटि महायज्ञ की जलयात्रा के रूप में टाउनहाल से निकली शोभायात्रा चौक होकर दशाश्वमेध पहुँची। ज.गु. रामनरेशाचार्य ने सविधि गंगापूजन किया व कलश लेकर चल रही महिलाओं ने गंगा जल से कलश आपूरित कर आनंदित हो उठी। गंगा की पूजन प्रक्रिया यज्ञाचार्य पं. श्रीकृष्ण लक्ष्मीकांत पुराणिक ने सम्पन्न करायी। उसके बाद आरम्भ हुई शोभायात्रा में महिलाएँ सिर पर कलश लेकर चल रही थीं। दशाश्वमेध से गंगापूजन व जल लेने के बाद आरम्भ गोदौलिया, चेतगंज, लहुराबीर, कबीरचौरा होते हुए टाउनहाल स्थित यज्ञशाला पहुँचकर समाप्त हुई। उस स्थल पर नागरिकों व भक्तों का विराट समूह उपस्थित था।

●

शतमुख कोटि महायज्ञः अरणि मन्थन से अग्निदेव का प्राकट्य

वाराणसी १९ जनवरी २००१। जगद्गुरु रामानन्दाचार्य सप्तशताब्दी समापन महोत्सव के साथ समायोजित शतमुख कोटि होमात्मक श्रीराममहायज्ञ में आज सविधि शास्त्रीय प्रक्रिया का अनुपालन करते हुए पूजनोपरांत अरणि मंथन द्वारा अग्निदेव का प्राकट्य हुआ और यज्ञ कुण्डों में विधि विधान पूर्वक उनकी स्थापना की गयी। इसके साथ ही २० जनवरी से आरंभ होने वाली श्रीराम महायज्ञ की एक करोड़ आहुतियों से पूर्ण यज्ञ की सम्पूर्ण शास्त्रीय प्रक्रिया सम्पन्न हो गयी। यज्ञाचार्य पं. श्रीकृष्ण लक्ष्मीकांत पुराणिक तथा महायज्ञ के संयोजक पं. गणेश्वर शास्त्री द्रविड़ के नेतृत्व में आज सर्वप्रथम वैदिक जनों ने नियमित पूजन प्रक्रिया सम्पन्न करते हुए गणेश पूजा, यज्ञ के प्रधान देव की पूजा, स्थापित मंडपस्थ अन्य सभी के पीठ देवगण की पूजा, खण्ड पूजा आदि की गयी। इसके उपरान्त अरणि के पूजन व मंथन द्वारा घर्षण से उत्पन्न अग्निदेव की स्थापना की प्रक्रिया पूरी की गयी।

यज्ञाग्नि को सर्वप्रथम नैऋत्य कोण में स्थित आचार्य कुण्ड में स्थापित किया गया। उसके अनंतर पंचभूत संस्कार के साथ शेष सभी ९९ यज्ञकुण्डों में भी अग्निदेव की सविधि संस्थापना हुई। अग्निदेव के प्राकट्य व संस्थापना के उपरांत नवग्रहों का आह्वान व संतुष्टि के लिए आहुतियाँ दी गयीं।

यज्ञ संयोजक पं. गणेश्वर शास्त्री द्रविड़ ने कहा कि यज्ञ में जिस पवित्र अग्नि का प्राकट्य होता है उससे प्राप्त आहुतियाँ सूर्यदेव को और उनके माध्यम से समस्त देवतागण को प्राप्त होती हैं। इस प्रकार यज्ञाग्नि वस्तुतः जलाती नहीं है बल्कि वह मुख है जिसके माध्यम से यज्ञाहुतियों में सभी देवगण अपना अंश प्राप्त करते हैं। इसीलिए शास्त्रों में यज्ञाग्नि को हुताशन कहा जाता है।

इस शतमुख कोटि होमात्मक श्रीराम महायज्ञ में २० जनवरी से विधिवत् आहुतियों का क्रम आरम्भ होगा। प्रतिदिन २५ लाख आहुतियों का क्रम २३ जनवरी तक चलने के बाद २४ जनवरी को पूर्णाहुति की प्रक्रिया सम्पन्न होगी।

●

प्रथम दिन: पच्चीस लाख आहुतियाँ

वाराणसी २० जनवरी। जगद्गुरु रामानन्दाचार्य सप्तशताब्दी महोत्सव के साथ समायोजित शतमुख कोटि होमात्मक श्रीराममहायज्ञ में आज संकल्पित एक करोड़ आहुतियों को लक्ष्य कर श्रीराम मंत्र के साथ आहुति का क्रम आरम्भ हुआ। इसी के साथ विशाल यज्ञमंडप के सभी १०० यज्ञकुण्डों में स्वाहा के समवेत स्वरों के बीच यज्ञमंडप के चतुर्दिक घनीभूत श्रद्धामय आध्यात्मिक वातावरण में श्रद्धालुओं की बढ़ती भीड़ यज्ञमंडप परिक्रमा पथ पर पंक्तिबद्ध परिक्रमा करती रही।

टाउनहाल परिसर के महायज्ञशाला में आचार्यकुण्ड सहित सभी एक सौ यज्ञकुण्डों में अरणि मंथन से प्रकट अग्निदेव की स्थापना सविधि शास्त्रीय रीति से शुक्रवार को की गयी थी। यज्ञकुण्डों में आज विधिवत् आहुति की प्रक्रिया आरम्भ हुई। यज्ञ के प्रथम दिन आज २५ लाख आहुतियाँ दी गयीं। यज्ञशाला से उठते होम के पवित्र धुएँ नगर में दूर तक विस्तृत थे। ध्वनि विस्तारक शृंखला से श्रीराम मंत्र के साथ गूँजते स्वाहा के स्वर से आकृष्ट श्रद्धालु नागरिकों विशेषतः महिलाओं की भीड़ आज सुबह से ही टाउनहाल पहुँचकर परिक्रमा में संलग्न थी। महायज्ञ की शास्त्रीय प्रक्रिया का नेतृत्व मुख्य पीठ के यज्ञाचार्य पं. श्रीकृष्ण लक्ष्मीकांत पुराणिक द्वारा तथा विभिन्न कुण्डों पर कुण्डाचार्यों द्वारा किया जा रहा था। महायज्ञ के संयोजक पं. गणेश्वर शास्त्री द्रविड़ सभी यज्ञकुण्डों पर शास्त्र सम्मत प्रक्रिया का निरीक्षण व निर्देशन कर रहे थे। पं. विश्वेश्वर शास्त्री द्रविड़, पं. लक्ष्मीकांत रामाचार्य पुराणिक आदि इसमें सहयोग कर रहे थे। मण्डप के बाहर निर्मित कार्यालय व भंडार से आहुति हेतु यज्ञ-सामग्री की आपूर्ति की जा रही थी

कोटि महायज्ञ के एक करोड़ आहुतियों का लक्ष्य प्रतिदिन २५ लाख आहुतियों के संकल्प के साथ २३ जनवरी तक पूर्ण करने की योजना है। २४ जनवरी को पूर्णाहुति होगी। महायज्ञ के मुख्य संकल्पक ज.गु. रा. स्वामी रामनरेशाचार्य जी पूर्वाह्न स्वयं यज्ञशाला में उपस्थित थे। ईश्वरगंगी स्थित कमलाकर चौबे आदर्श इण्टर कालेज के प्रांगण में निर्मित रामानन्दाचार्य सप्तशताब्दी महोत्सव में विद्वत् शास्त्रार्थ व विद्वत् सम्मान समारोह में भाग लेने के उपरांत वह पुनः यज्ञस्थल पहुँच गये। यज्ञस्थल का कई श्रद्धालुओं ने पाँच से १०८ बार परिक्रमा की।

●

श्रीराम महायज्ञ : लक्ष्य की आधी आहुतियाँ

वाराणसी २१ जनवरी। जगद्गुरु रामानन्दाचार्य सप्तशताब्दी महोत्सव के साथ समायोजित शतमुख कोटि होमात्मक श्रीराम महायज्ञ में आज दूसरे दिन भी कोटि लक्ष्य की ओर पवित्र आहुतियों का क्रम जारी रहा। 'ॐ रां रामाय नमः स्वाहा' के षडक्षर मंत्र से चल रहे इस अपूर्व श्रीरामकोटि महायज्ञ में आज भी दर्शन परिक्रमा व दान करने वालों की पंक्तिबद्ध भीड़ टाउनहाल परिसर स्थित यज्ञशाला के पास लगी रही।

महायज्ञ में आज दूसरे दिन सभी एक सौ कुण्डों में यज्ञाहुति के साथ कोटि आहुतियों का आधा लक्ष्य पूर्ण कर लिया गया। आज प्रातःकाल यज्ञ की आहुतियों का क्रम प्रारम्भ होने से पूर्व नित्य पूजन प्रक्रिया के साथ श्रीराम जी का सहस्त्रार्चन हुआ। उल्लेखनीय है कि भगवान् राम महायज्ञ के प्रधान देव हैं। श्रीराम सहस्त्रनाम से सहस्त्रार्चन में यज्ञ के सभी यजमान सम्मिलित हुए।

कोटि महायज्ञ में आहुति का क्रम आरम्भ होने के बाद मध्याह्न फलाहार हेतु अवकाश, कुछ अंतराल के उपरान्त होमात्मक प्रक्रिया आरम्भ हुई। यज्ञाचार्य पं. श्रीकृष्ण पुराणिक, महायज्ञ संयोजक पं. गणेश्वर शास्त्री द्रविड़ के सान्निध्य में यज्ञ प्रक्रिया में जहाँ कुण्डाचार्य, ब्राह्मणों, वैदिकों व यजमानों ने आहुतियों का क्रम जारी रखा वहीं व्यवस्थापकीय दायित्व के निर्वाह में महोत्सव के संयोजक श्री दयासिन्धु शर्मा के साथ विधान जी लक्ष्मण सिंह चौहान, दिलीप, विनय यादव, विवेक अवस्थी, राजीव सहित कार्यकर्ताओं का दल कार्यरत था। मध्य प्रदेश आदि के श्रीमठ से जुड़े कुछ लोग सहयोग में सन्नद्ध थे। पं. रघुनाथ प्रसाद त्रिपाठी (सतना) के समिति के सदस्यगण भी सक्रिय थे।

●

श्रीराम महायज्ञ : तीसरे दिन भी पच्चीस लाख आहुतियाँ

वाराणसी २२ जनवरी। जगद्गुरु रामानन्दाचार्य सप्तशताब्दी महोत्सव के साथ समायोजित शतमुख कोटि होमात्मक श्रीराम महायज्ञ के अर्धकोटि आहुतियों से आगे आहुतियों का क्रम लगातार तीसरे दिन पूर्वाह्न यज्ञ संयोजक पं. गणेश्वर शास्त्री द्रविड़, यज्ञाचार्य पं. श्रीकृष्ण लक्ष्मीकांत पुराणिक के नेतृत्व में प्रारम्भ हुआ।

इससे पूर्व सविधि नित्य पूजन का क्रम सम्पन्न हुआ। आज यज्ञ-प्रक्रिया का सातवाँ दिन और कोटि आहुतियों के क्रम का तीसरा दिन रहा। हिसाब से कोटि आहुतियों का आधा लक्ष्य पूर्ण किया जा चुका है। टाउनहाल स्थित महायज्ञसाला के चतुर्दिक श्रद्धालुओं का जमघट लगा रहा और लोग यज्ञमण्डप की परिक्रमा के साथ यज्ञ के दर्शन, दान और प्रसाद आदि का पुण्य लाभ प्राप्त करते रहे। प्रायः ५० हजार से अधिक लोग आहुतियाँ शुरू होने के बाद अंशदान की सूची में अपना नाम दर्ज करा रहे हैं। आहुति की प्रक्रिया आरम्भ होने के बाद औसतन एक लाख लोगों के रोज परिक्रमा में शामिल होने का अनुमान किया जा रहा है। अनेक लोग परिक्रमा पथ पर रखी दान पेटी के पास रुक कर दान करते भी देखे गये। परिक्रमा करने वालों में अनेक बुर्जुग लोग ऐसे भी दिखाई दिये जो यज्ञशाला की १०८ बार परिक्रमा कर रहे हैं। परिक्रमा पथ पर स्त्रियों की संख्या अधिक दिखाई देती है। अनेक लोग अपनी सामर्थ्य के अनुसार यज्ञ हेतु तिल, जौ, चावल, घृत, धूप, नारियल आदि का भी दान यज्ञशाला में कर रहे हैं, जिससे उनका अंशदान भी यज्ञाहुति के लिए सार्थक हो सके। आहुतियों का क्रम २३ जनवरी तक चलेगा।

नित्य की भाँति ज.गु. रा. स्वामी रामनरेशाचार्य आज दोपहर भी यज्ञशाला में उपस्थित हुए। उनके साथ हरिजन सम्मेलन के लिए देश के विभिन्न क्षेत्रों से आये वाल्मीकि समाज के प्रतिनिधि भी बालयोगी उमेशनाथ के नेतृत्व में यज्ञस्थल पर आये और श्रद्धाभाव से परिक्रमा की। बाद में गाजे-बाजे के साथ टाउनहाल से एक जुलूस में स्वामी रामनरेशाचार्य को लेकर पं. कमलाकर चौबे आदर्श इंटर कालेज स्थित रामानन्दाचार्य सप्तशताब्दी समारोह मंडप गये जहाँ वाल्मीकि हरिजन सम्मेलन आयोजित किया गया था।

महायज्ञ प्रभारी श्री राजेन्द्र द्विवेदी (राजू) के अनुसार यज्ञ में प्रतिदिन चार सौ वैदिक ब्राह्मणों द्वारा २५ लाख आहुतियाँ डाली जा रही हैं। इसके अलावा ५१ ब्राह्मणों

द्वारा वेदवेदांग, महाभारत, रामायण, सर्ववेदांग का पाठ पं. जगन्नाथ शास्त्री तैलंग द्वारा सम्पन्न कराया जा रहा है। यज्ञस्थल पर अन्यान्य संतों के चित्र भी प्रदर्शित किये गये हैं।

शतमुख कोटि होमात्मक श्रीराम महायज्ञ में अन्य यजमानों के साथ मध्य प्रदेश के मुख्यमंत्री व रामानन्दाचार्य सप्तशताब्दी महोत्सव की राष्ट्रीय समिति के अध्यक्ष श्री दिग्विजय सिंह भी यजमान हैं। जिनके संकल्पित यजमानत्व के प्रतिनिधि स्वरूप श्री राजेन्द्र रघुवंशी महायज्ञ की सभी प्रक्रियाओं में शामिल हैं।

अपनी अनुज वधू के देहान्त के कारण श्री सिंह अभी स्वयं यज्ञ में शामिल नहीं हो सके हैं लेकिन इस बीच ही श्राद्ध कर्म पूर्ण हो जाने पर वे २४ जनवरी को पूर्णाहुति में सम्मिलित होंगे।

श्री दिग्विजय सिंह के प्रतिनिधि विगत १६ जनवरी से ही दूसरे यजमानों के साथ-साथ यज्ञ की सम्पूर्ण पूजन प्रक्रिया और आहुति में सम्मिलित रहे हैं। महोत्सव समिति के सचिव श्री दयासिन्धु शर्मा ने बताया कि श्री दिग्विजय सिंह रामानन्दाचार्य के कबीरदास जी, रविदास जी आदि सहित द्वादश प्रधान शिष्यों में एक पीपा जी के वंशज हैं। इस परम्परागत सम्बन्ध की भावनावश ही जहाँ वह रामानन्दाचार्य पीठ की प्रवृत्तियों से जुड़े रहते हैं वहीं वर्तमान रामानन्दाचार्य स्वामी रामनरेशाचार्य ने उन्हें अखिल भारतीय रामानन्दाचार्य सप्तशताब्दी महोत्सव समिति का अध्यक्ष बनाया है।

●

आहुतियाँ पूर्ण हुईं

वाराणसी २३ जनवरी। जगद्गुरु रामानन्दाचार्य सप्तशताब्दी महोत्सव के साथ समायोजित शतमुख कोटि होमात्मक श्रीराम महायज्ञ में आज एक करोड़ आहुतियों का संकल्पित लक्ष्य पूर्ण हुआ। यज्ञ की पूर्णाहुति बुधवार को सायंकाल चार बजे होगी। पूर्णाहुति में महोत्सव समिति के राष्ट्रीय अध्यक्ष व मध्य प्रदेश के मुख्यमंत्री दिग्विजय सिंह उपस्थित रहेंगे।

हजारों श्रद्धालुओं के साथ आज कांग्रेस अध्यक्ष श्रीमती सोनिया गाँधी के प्रतिनिधि श्री सुशील कुमार शिंदे ने भी यज्ञ मंडप की परिक्रमा किया। महायज्ञ में कोटि आहुतियों के अन्तिम चरण में आज पच्चीस लाख आहुतियों का क्रम प्रातःकाल आरंभ हुआ। मध्याह्न में जगद्गुरु रामानन्दाचार्य स्वामी रामनरेशाचार्य की उपस्थिति व सहभागिता के साथ श्रीराम सहस्रनाम से श्रीराम सहस्रार्चन भी किया गया। सम्पूर्ण प्रक्रिया यज्ञाचार्य पं. श्रीकृष्ण लक्ष्मीकांत पुराणिक तथा संयोजक पं. गणेश्वर शास्त्री द्रविड़ के नेतृत्व में नियोजित लक्ष्य के अनुसार पूर्ण की गयी। आहुतियों का अन्तिम दिन होने के कारण यज्ञमंडप के समक्ष आज अन्य दिनों की अपेक्षा अधिक भीड़ थी। उमड़े श्रद्धालु लगातार यज्ञमंडप की परिक्रमा के पुण्य लाभ में संलग्न थे। कांग्रेस महासचिव श्री सुशील कुमार शिंदे अपराह्न डेढ़ बजे यज्ञ के दर्शन हेतु पहुँचे। वहाँ महोत्सव समिति के सचिव तथा व्यवस्थापकों ने उनका स्वागत किया। वे गणेशबाग स्थित यज्ञ के महाप्रसाद स्थल पर भी गये। वहाँ सम्पूर्ण देश से आये प्रतिनिधियों के साथ भूमि पर बैठकर प्रसाद ग्रहण किया।

●

श्रीराम महायज्ञ : पूर्णाहुति-कार्यक्रम

वाराणसी २३ जनवरी। स्थानीय टाउनहाल में चल रहे शतमुख कोटि होमात्मक श्रीराम महायज्ञ की पूर्णाहुति २४ जनवरी को होगी। पूर्वाह्न में श्रीराम पूजन, राम सहस्रनामार्चन, राम सहस्रनाम होम आदि होंगे। अपराह्न में प्रायश्चित्त होम व बलिदान के उपरांत सायंकाल ४ बजे पूर्णाहुति होगी। एक सौ कुण्डों में सूर्याहुति वसोधरी होम के पश्चात् उन्नांग होगा। ९९ कुण्डों से अग्नि लाकर नैर्ऋत्यकोण.के कुण्ड में मिलायी जायेगी। अवभृथस्नान, अभिषेक, दक्षिणादान, आशीर्वाद ग्रहण, विसर्जन, प्रसाद वितरण आदि के साथ यज्ञ का समापन होगा।

●

पवित्र जलपूरित कलशों की भव्य शोभायात्रा

वाराणसी, १७ जनवरी। शतमुख कोटि होमात्मक श्रीराम महायज्ञ के उपलक्ष्य में आज नगर में निकली पवित्र जलपूरित कलशों की भव्य शोभायात्रा धर्मप्राण नागरिकों के आकर्षण का प्रमुख केन्द्र रही। हाथी-घोड़े, ऊँट तथा रथों की सवारियों से सजी बाजे-गाजों वाली शोभायात्रा में कलशधारी मलिाओं के साथ यज्ञ में भागीदारी कर रहे यजमान और आचार्य भी शामिल थे। सधु-संत-संन्यासी और श्रद्धालु नागरिकों ने भी बड़ी संख्या में भागीदारी दर्ज करायी। शोभायात्रा का नेतृत्व रथारूढ़ जगद्गुरु रामानन्दाचार्य स्वामी रामनरेशाचार्य ने स्वयं किया।

नगर के हृदय क्षेत्र मैदागिन स्थित टाउनहाल मैदान से आज अपराह्न प्रारंभ हुई शोभायात्रा बुलानाला, नीची बाग, चौक, बाँस फाटक तथा गोदौलिया होते हुए पहले दशाश्वमेध घाट पहुँची। वहाँ वेद मंत्रोच्चारों के बीच श्रद्धालुओं ने अपने रीते कलशों को पवित्र गंगाजल से पूरित किया। वहाँ से गोदौलिया, वापस शोभायात्रा पुनः गिरजाघर, नयी सड़क, चेतगंज, लहुराबीर, कबीरचौरा से होते हुए टाउनहाल स्तित यज्ञशाला पहुँच कर विसर्जित हुई। आचार्यों ने पवित्र जलपूरित कलशों को यज्ञशाला मण्डप में कुण्डों के निकट बनायी गयी वेदिकाओं पर स्थापित किया।

शोभायात्रा में सबसे आगे गजराज की सवारी धर्मध्वज फहराते चल रही थी। उसके पीछे रामधुन के स्वर बिखेरते चल रहे बैण्ड बाजों की कतारें थीं। पीछे मधुर स्वर लहरियों वाली शहनाई टोली के साथ सैकड़ों की संख्या में श्रद्धालुजन सर्वधर्म समभाव संदेश वाले नारे लगाते चल रहे थे। बिहार, महाराष्ट्र, मध्यप्रदेश से आये कीर्तनियाँ जत्थे अपनी-अपनी विशिष्टताओं के चलते सहज ही लोगों का ध्यान आकर्षित कर रहे थे। यज्ञ कार्य की पारम्परिक वेषभूषा वाले यजमान तथा आचार्य वेद मंत्रोच्चार करते चल रहे वेदपाठियों के साथ थे। साधु-संतों-संन्यासियों के जत्थे जयकारे लगाते चल रहे थे। पीछे दो पंक्तियों में कलशधारी महिलाएँ चल रही थीं। शोभायात्रा के मध्य में चल रहे सुसज्जित एक रथ पर जगद्गुरु रामानन्दाचार्य का विशाल तैलचित्र था। दूसरे रथ पर वर्तमान जगद्गुरु रामानन्दाचार्य रामनरेशाचार्य श्रद्धालुओं की मंगलकामना करते हुए चल रहे थे। शोभायात्रा की अग्रिम पंक्ति में घोड़ों और ऊँटों की सुसज्जित सवारियाँ शामिल थीं। शोभायात्रा की व्यवस्थाओं की कमान मुख्तार हाशमी के अलावा डॉक्टर सतीश, दयासिन्धु शर्मा, डॉक्टर श्रद्धानंद आदि ने संभाल रखी थी।

●

विनम्र श्रद्धांजलि

जगद्‌गुरु रामानन्दाचार्य-सप्तशताबदी महोत्सव के अन्तर्गत धर्मयात्राओं के क्रम में काशी से अलवर (राजस्थान) जा रहे श्रीमठ के जगद्‌गुरु श्रीरामनरेशाचार्य जी महाराज के साथ चल रहे वाहनों के समूह में से एक वाहन दि. १९ जुलाई २००० ई., बुधवार को रात्रि के प्रथम प्रहर में शान्तिनगर, फतेहपुर के समीप जी.टी. रोड बाईपास पर एक ट्रक से बचने के प्रयास में सड़क से उतर कर तीव्रगति से एक पेड़ से टकरा गया। इस भीषण दुर्घटना में उक्त वाहन पर सवार चालक सहित छः व्यक्ति अकारण ही कालकवलित हो गये। इस हृदयविदारक अत्यन्त शोकमय दुर्घटना का समाचार मिलते ही सम्पूर्ण श्रीमठ परिवार, वाराणसी नगर और सन्त समाज शोकाकुल हो गया। महाराजश्री की मनोदशा अत्यन्त कारुणिक थी। वे अपने कक्ष में एकान्त वास कर रहे थे और आचार्यश्री ने आत्मशान्ति के समस्त क्रम के काल में (एक माह) कोई भी टेलीफोन नहीं सुना तथा किया भी नहीं। कई दिनों तक मौन रहे।

इस दुर्घटना में दिवङ्गत जनों का संक्षिप्त परिचय इस प्रकार है—

१. पं. गोविन्द लक्ष्मीकान्त पुराणिक पुत्र श्रीलक्ष्मीकान्त रामाचार्य पुराणिक के ३०/१३, घासीटोला, कोतवाली, वाराणसी। पुराणिक जी काशी के युवा वैदिक विद्वान् थे। मृदुभाषी और सरल स्वभाव के गोविन्द जी श्रीमठ की सेवा में विगत नौ वर्षों से निरन्तर संलग्न थे। आपके समुचित कुशल पौरोहित्य में श्रीमठ की समस्त धार्मिक गतिविधियाँ सम्पन्न होती थीं जिसके कारण श्रीमठ में सम्पन्नता और प्रसन्नता व्याप्त थी। आप जबलपुर में स्थापित गोपाल पद्मावती विद्यालय के प्राचार्य थे। आपके निधन से श्रीमठ की अपूरणीय क्षति हुई है।

२. महन्त रामदास शास्त्री शिष्य स्व. माधवाचार्य जी; जे. १२/३७, नाटी इमली, हनुमान मन्दिर, वाराणसी। श्री शास्त्री जी रामानन्दी साधु समाज के युवा सन्त और श्रीमठ परिवार के अभिन्न सदस्य थे। आप विनीत ब्रह्मचारी, सदाचार परायण, सरल और सौम्य स्वभाव के थे। अल्पवय में ही आपने काशी साधु समाज में अपनी एक विशिष्ट पहचान बना ली थी। अपने गुरुजी के साथ श्रीमठ की सेवा में आप बाल्यावस्था से ही निरत थे। जगद्‌गुरु श्री रामानन्दाचार्य जी के निर्देश में आप द्वारा की गयी श्रीमठ की श्रीवृद्धि में सेवा अविस्मरणीय है। साधु समाज के संघटन में भी आप रुचि लेते थे। आपके देहावसान से श्रीमठ

और सन्तमण्डल की जो क्षति हुई है, वह पूरी नहीं हो सकती।

३. श्रीराजेन्द्र श्रीवास्तव उर्फ मुन्ना श्रीवास्तव पुत्र श्री कैलाश नारायण श्रीवास्तव, सतना (म.प्र.)। मुन्ना श्रीवास्तव, पूज्य महाराजश्री की सेवा में विगत पाँच वर्षों से निष्ठापूर्वक संलग्न थे। आप अपने उदार व्यवहार से सभी के प्रिय पात्र थे। आपके दिवङ्गत होने से श्रीमठ ने अपना एक सच्चा हितैषी सेवक भक्त खो दिया है।

४. श्रीरामसुमेर दास भजनानन्दी रामानन्दी, सद्गृहस्थ; बिहटा, पटना, बिहार। रामानन्दी भजनानन्दी श्रीरामसुमेर दास जी उदार प्रवृत्ति के सद्गृहस्थ साधु थे। आप अपने परिवार में धर्मपरायणता के नाते अत्यन्त सम्मानित थे। बहुत पहले से ही श्रीमठ की सेवा में लगे हुए थे।

५. श्रीसीताराम दास जी, विरक्त सन्त। प्रेमानन्द आश्रम, जिलेहरी घाट, जबलपुर (म.प्र.)। रामनाम की अलख जगाने वाले विरक्त सन्त श्रीसातारामदास जी महाराज जबलपुर के प्रसिद्ध भजनानन्दी सन्त थे। वे अत्यन्त प्रेम पूर्वक भावविभोर होकर अपने इस बोल की हाँक लगाते थे–

नर्मदा तट पर धूम धड़ाका । राम नाम का यही तड़ाका ।।

जबलपुर की सन्त मण्डली में आपकी विशेष प्रतिष्ठा थी। रामानन्दी सम्प्रदाय और श्रीमठ से आपका विशेष लगाव था। इसे वे श्रीसीताराम का अनुग्रह मानते थे। आपके असामयिक साकेत धाम सिधारने से जबलपुरवासी भक्तों पर शोक का पहाड़ ही टूट कर गिर गया।

६. अजमद खाँ, मोटर यान का चालक। अर्दली बाजार, वाराणसी।

उपर्युक्त सभी लोगों की अन्तेष्टि क्रिया यथाविधि सम्पन्न की गई। और्ध्वदैहिक कर्म के अवसर पर पूज्य महाराजश्री स्वयम् उपस्थित थे। सारे संस्कार और कर्मकाण्ड विधिपूर्वक कराये गये। चालक अमजद खाँ की भी अन्तिम क्रिया इस्लाम धर्म के अनुसार हुई।

शोकाकुल श्रीमठ में महाराज श्री के सान्निध्य में शोकसभा आयोजित की गयी जिसमें दिवङ्गत आत्माओं की शांति के लिए मौन रखकर ईश्वर से प्रार्थना की गयी और शोकसन्तप्त परिजनों को धैर्य धारण करने की कामना की गयी।

दुर्घटना में दिवङ्गत जनों की भगवत्पदप्राप्ति के लिए श्रीमठ की ओर से 'नारायणबलि' और 'श्रीमद्भागवत सप्ताह' का आयोजन कराया गया तथा भण्डारा भी हुआ। आत्मशान्ति के समस्त अनुष्ठान अमजद खाँ के लिए भी किये गये।

पूज्य महाराजश्री के परम पावन सान्निध्य में श्रीमठ परिवार उपर्युक्त सभी दिवङ्गत

महानुभावों को विनम्र श्रद्धांजलि समर्पित करता है और शोक-सन्तप्त परिजनों के प्रति हार्दिक समवेदना व्यक्त करता है। अन्ततः, 'हानि-लाभ, जीवन-मरन, जस-अपजस, विधि हाथ' का स्मरण कर धैर्य धारण कराने के लिए श्रीसीताराम जी से प्रार्थना करता है।

।। ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ।।

श्रद्धांजलि

पूज्यपाद म. श्री अमराबापू, पालीयाद, गुजरात

पूज्यपाद म. श्री अमराबापू गृहस्थ होते हुए भी अपने धार्मिक कर्तृत्व और प्रभावी व्यक्तित्व से उच्चकोटि के संत हो गये थे। वे अपने जीवनकाल में आश्रम में प्रत्येक वर्ष विविध धार्मिक कार्यक्रम आयोजित करते रहते थे परन्तु उन्होंने २ फरवरी सन् १९९८ से ४ फरवरी १९९८ तक अपने परदादा उनडा बापू जो स्वयं में सिद्ध संत थे, की स्मृति में उनकी प्रतिमा स्थापित करने हेतु त्रिवेणी धार्मिक महोत्सव का आयोजन किया था। इस समारोह की अध्यक्षता वर्तमान जगद्गुरु रामानन्दाचार्य स्वामी श्रीरामनरेशाचार्य जी ने की थी। यह अपने आपमें एक अभूतपूर्व कार्यक्रम था। पूज्यपाद महन्त अमराबापू के मन में श्रीमठ के प्रति अत्यन्त श्रद्धा का भाव था और ऐसा भाव उनके मन में इसलिए था क्योंकि स्वयं भी वे रामानन्द सम्प्रदाय के उच्चकोटि के सन्त थे। आज भी इनके आश्रम में मुख्य देव के रूप में श्री रामजी का मन्दिर विद्यमान है।

हालांकि म. अमराबापू का सम्पूर्ण कर्म ही धर्ममय था परन्तु आज भी महँगाई के इस युग में हजारों लोगों को प्रतिदिन व्यवस्थित रूप से प्रसाद (भोजन) का वितरण तथा प्रत्येक वर्ष की अमावस्या को हजारों लोगों को मुफ्त में आँख आपरेशन तथा चश्मों का दान अपने आप में महत्त्वपूर्ण है। इस तरह से पूज्यपाद का जीवन स्वयं वैष्णव धर्ममय सिद्ध हो जाता है।

'जगद्गुरु रामानन्दाचार्य सप्तशताब्दी महोत्सव' २७ जनवरी २००० से २४ जनवरी २००१ तक जो श्रीमठ काशी के द्वारा नियोजित है, इसके प्रति पूज्यपाद अमराबापू के मन में काफी श्रद्धा का भाव था, परन्तु इसी बीच दिनांक २ सितम्बर को उनके एकाएक स्वर्गवासी हो जाने से श्रीमठ को अपूरणीय क्षति हुई ज़िसकी भरपाई चिरकाल तक संभव नहीं है।

सगुण तथा निर्गुण राम भक्ति परम्परा का मूल आचार्य पीठ 'श्रीमठ' पंचगंगा घाट, काशी परिवार उनकी आत्मा की पूर्ण शान्ति की कामना करता है तथा उनके पारिवारिकजनों के लिये परम सान्त्वना की याचना करता है। हमें आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है कि श्रद्धामयी छोटीबा उमाबा सुप्रवृत्तियों का विधिवत् समायोजन करती रहेंगी।

योगिराज रामविनयदास

श्रद्धांजलि

स्वर्गीय श्रीमती कमला अग्रवाल, पत्नी स्वर्गीय श्री विश्वनाथ प्रसाद जी, श्रीमठ से विगत कई वर्षों से जुड़ी थीं। श्रीरामनरेशाचार्य जी की अनन्य भक्त थीं। उनका देहावसान ३ जुलाई सन् २००० को ७४ वर्ष की अवस्था में हुआ। अत्यन्त कर्मठ, निष्ठावान व श्रीमठ के प्रति पूर्ण श्रद्धाभाव से समर्पित कमला जी की असामयिक मृत्यु से श्रीमठ को गहरा आघात लगा। हम सभी उनकी आत्मा की शान्ति के लिये प्रभु से प्रार्थना करते हैं।

वाराणसी के प्रतिष्ठित परिवार से संबंधित कमला जी का व्यक्तित्व बहुआयामी था। वे जीवन पर्यन्त भक्ति, साधना व विद्या की आराधना में लगी रहीं। उन्होंने कठिन श्रम करके विवाह के पश्चात् एम.ए. व विशारद की उपाधि ली। अपने प्रति श्री विश्वनाथ प्रसाद जी के जो स्वयं में एक ख्याति प्राप्त पत्रकार व 'आज' के निदेशक (विकास) थे, सतत प्रोत्साहन से उत्साहित हो निरंतर कर्म के क्षेत्र में आगे बढ़ती रहीं। एक पुत्र श्री प्रभाकर जी व दो पुत्रियों कु. रश्मि कला अग्रवाल और श्रीमती प्रभा गिनोडिया तथा पौत्र, पौत्री व नातियों का भरा पूरा परिवार श्रीमती कमला जी के आदर्शों व अधूरे कार्यों को पूरा करने के लिए सतत प्रयत्नशील है और श्रीमठ से जुड़ा हुआ है।

श्रीमठ की वर्ष पर्यन्त चलने वाली विविध धार्मिक गतिविधियों में व बढ़ चढ़ कर हिस्सा लेती थीं। न केवल स्वयं वरन् समाज के विविध परिवारों को उन्होंने श्रीमठ से जोड़ने का प्रयास किया। श्रीमठ के अतिरिक्त वे कबीरमठ, श्री रामकृष्ण मिशन, अंध विद्यालय तथा कई और समाज सेवी संस्थनों की आजीवन सदस्य थीं, तथा सक्रिय रूप से इनकी गतिविधियों में हिस्सा लेती रहीं। उन्होंने अयोध्या तथा काशी में धर्मशालाओं तथा भक्तों के निवास हेतु कमरों का निर्माण करवाया। तन, मन और धन से वे समाज व संतों की सेवा में जीवन के अंतिम क्षण तक जुड़ी रहीं।

श्रीमठ के इस सप्तशताब्दी वर्ष में हम सभी उनके सहयोग का निरंतर स्मरण करते हुए उनकी सद्गति व आत्मा की शान्ति के लिये प्रार्थना करते हैं।

श्रीमठ के प्रति उनके योगदान के लिए श्रीमठपरिवार श्रद्धाञ्जलि अर्पित करता है।

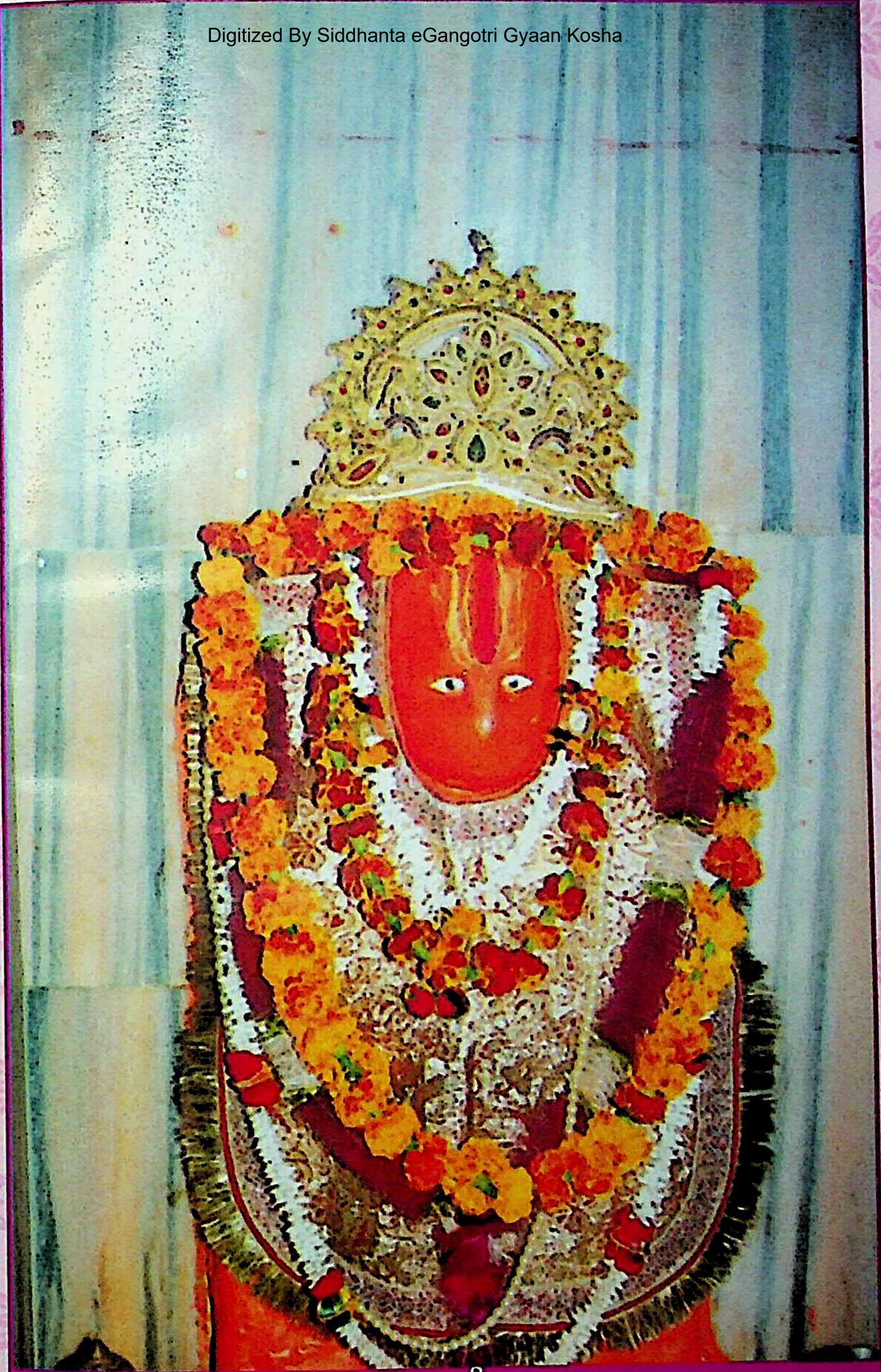
●

श्रद्धांजलि

न जायते म्रियते वा कदाचि-
न्नायं भूत्वा भविता वा न भूयः ।
अजो नित्यः शाश्वतोऽयं पुराणो
न हन्यते हन्यमाने शरीरे ।।
नैनं छिन्दन्ति शस्त्राणि नैनं दहति पावकः ।
न चैनं क्लेदयन्त्यापो न शोषयति मारुतः ।।

जगद्गुरु रामानन्दाचार्य सप्तशताब्दी - प्रसंग पर आयोजित श्रीरामभावप्रसार-यात्रा-क्रम में दिनांक १९ जुलाई २००० को फतेहपुर के निकट दुर्घटनाग्रस्त टाटा सूमो में दिवंगत संतजन के प्रति ।। श्रद्धावनत।।

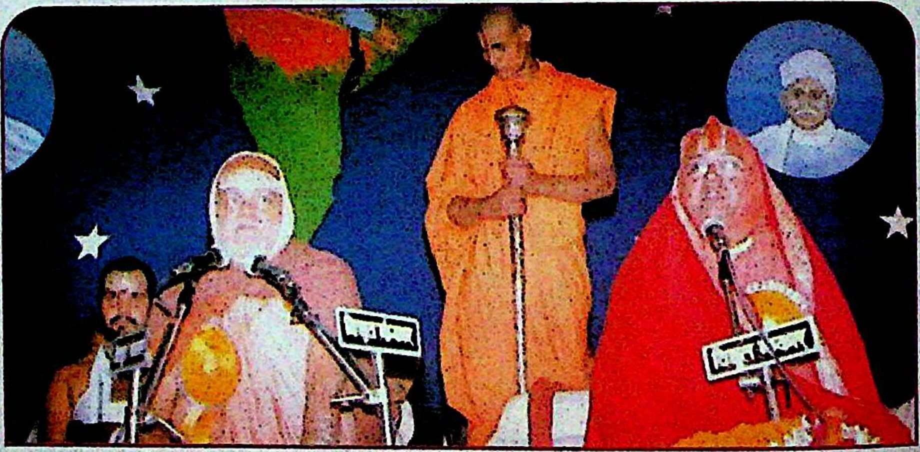
श्रीमठ के प्रति उनके योगदान के लिए श्रीमठ परिवार उनका चिर ऋणी है।



श्रीमठ के आराध्य देव श्री हनुमान जी



प्रयाग-अर्धकुम्भ (1995 ई.) रा.ज.म. के अवसर पर दर्शन देते हुए - आचार्य विभूतियाँ



महोत्सव के उद्घाटन पर स्वामी रामनरेशाचार्य व शंकराचार्य निश्चलानन्द जी।



विद्वत् संगोष्ठी (28 जनवरी 2000 ई.) मुख्य अतिथि डॉ. कर्णसिंह जी को स्मृति चिह्न अर्पित करते हुए पं. लोकपति त्रिपाठी कृपाशंकर शुक्ला, गोपाल दास मित्तल, विष्णु बिन्दल आदि।



महोत्सव में स्वामी रामनरेशाचार्य के साथ गणमान्य जन



धर्मगौरव उमाबा की तिलक विधि करते हुए आचार्य श्री। (23-11-2000)



ज.गु.रा.स.श.म. के अवसर पर कामदगिरि की परिक्रमा करते हुए संतों तथा भक्तों के साथ आचार्य श्री। (2000 ई.)



सत्यनारायण मंदिर कलोल गुजरात के श्री महन्त राम मनोहरदासजी को आशीर्वाद देते हुए आचार्य जी।



धर्मसभा में ज्ञानामृत का पान करते हुये कलोल के स्वामी नारायण गुरुकुल के संस्थापक स्वामीवर्य म.म. राममनोहर दासजी तथा भक्तगण। (2001 ई.)



कलोल की शोभायात्रा में भावाभिषिक्त भक्तगण।



ज.गु.रा.स.श्र.म. (2000 ई. चण्डीगढ़) आचार्य श्री को अभिनन्दित करते हुये पूर्व मुख्यमंत्री वीरभद्र सिंहजी।



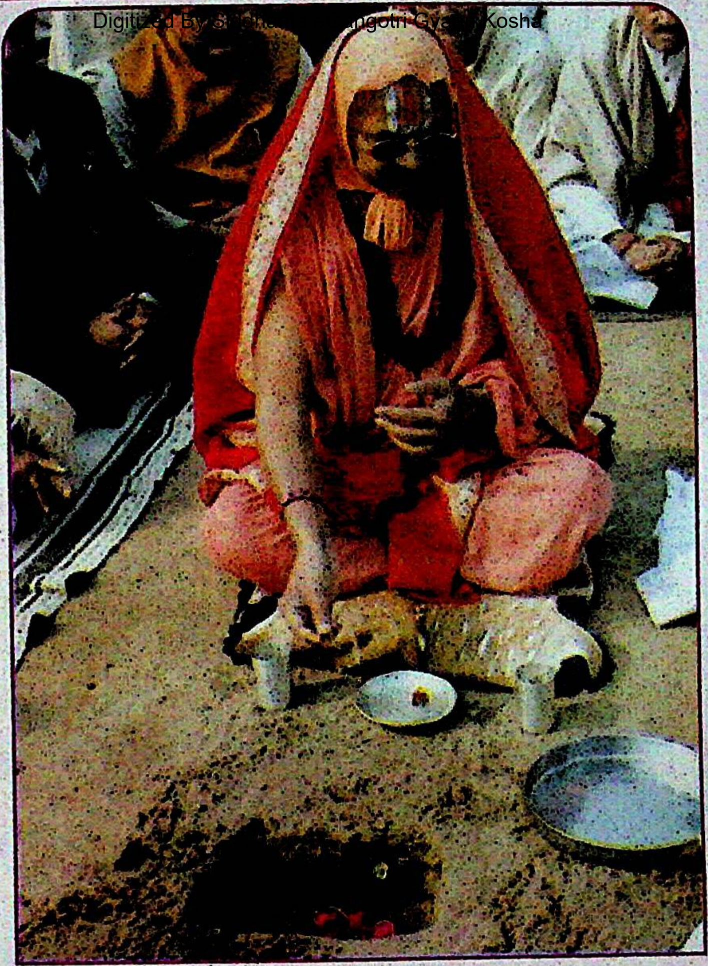
ज.गु.रा.स.श.म. (2000 ई. चण्डीगढ) के अवसर पर समायोजित विद्वत् संगोष्ठी में आचार्य श्री को माल्यार्पण करते हुए राज्यपाल प्रो. विष्णुकांत शास्त्री।



आचार्य श्री. के साथ दांयी तरफ राज्यपाल प्रो. विष्णुकांत बायीं तरफ श्रीमान् वीरभद्र सिंह जी, पूर्व मुख्यमंत्री हिमाचल प्रदेश।



ज.गु.रा.स.श.म. संत एवं भक्तगण (2000 ई. 14-15-16 दिस.)



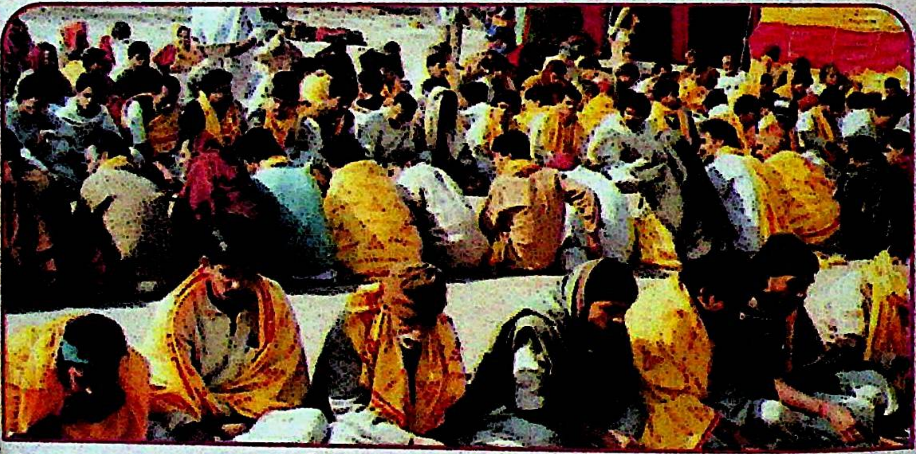
यज्ञशाला के लिए भूमिपूजन करते हुए आचार्य श्री (टाउनहॉल 2001)



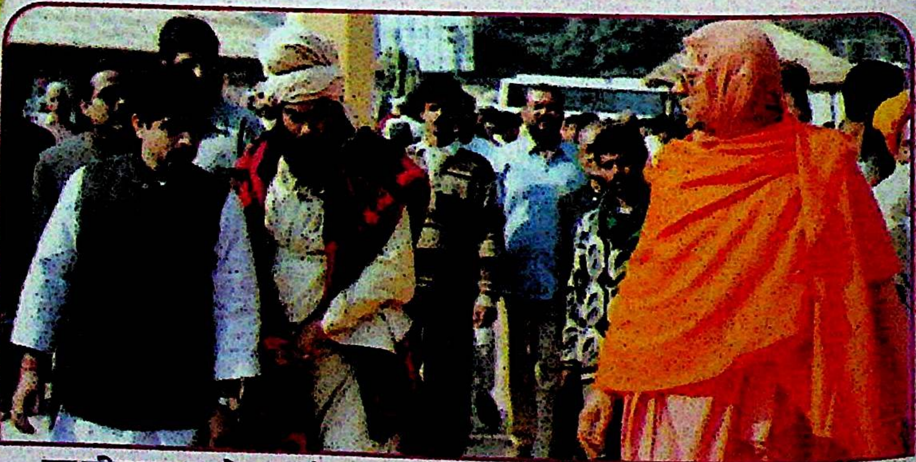
यज्ञशाला भूमिपूजन टाउनहॉल (2001)



श्री रामयज्ञ के प्रारम्भिक अनुष्ठान में यजमानगण



फलाहार ग्रहण करते हुए ब्राह्मण गण (17-1-2001 से 25-1-2001)



यज्ञ परिसर का आयोजन करते हुए आचार्य श्री, मुन्ना शर्मा, श्रीवास्तव वकील तथा अन्य।



ज.गु. मध्वाचार्य विश्वेशतीर्थ जी के साथ आचार्य श्री।



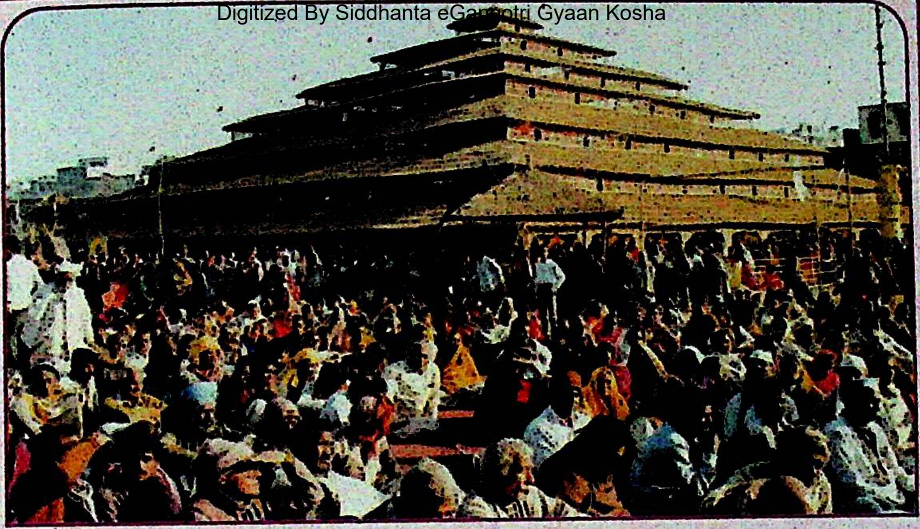
अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति सम्पन्न प्रमुख स्वामी आचार्य श्री का वन्दन करते हुए।



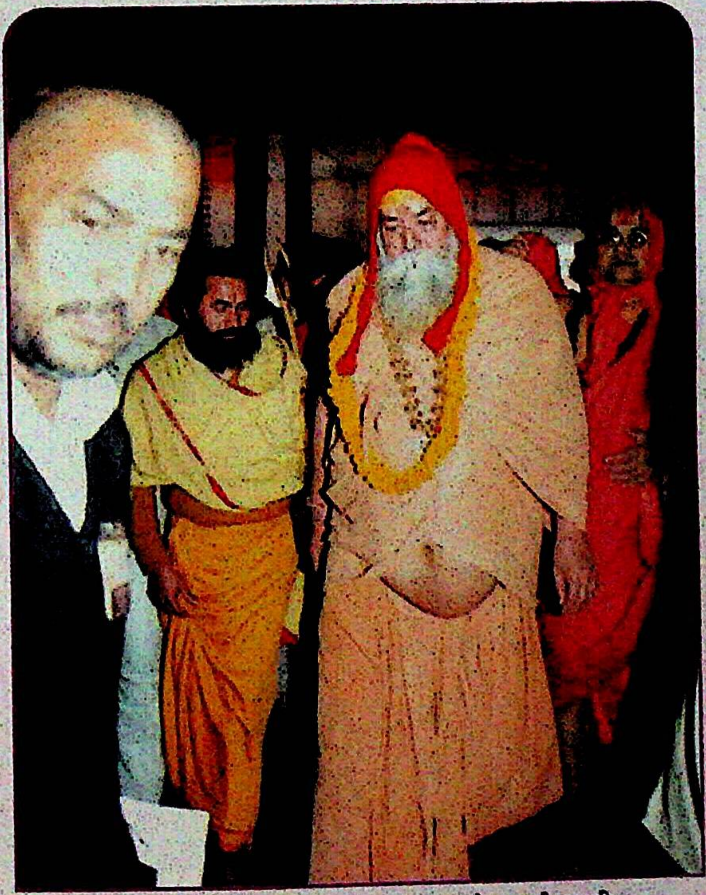
महोत्सव में भक्तों को आशीर्वाद देते हुए आचार्य श्री। (17 जन.-25 जन., 2001)



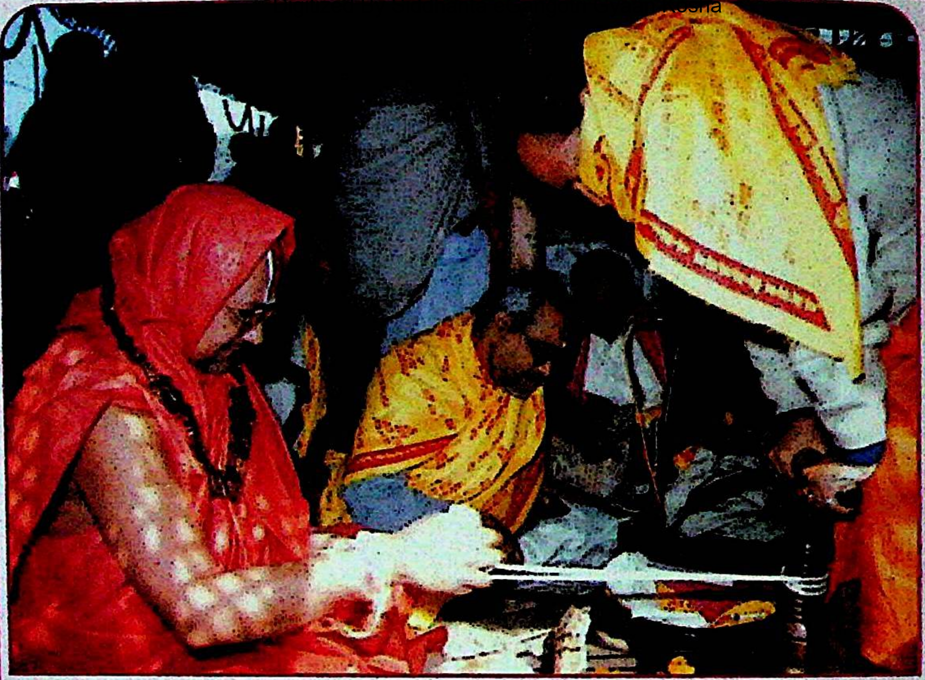
स.श.म. में निर्मित श्रीरामयज्ञ का यज्ञमण्डप (17 जन.-25 जन., 2001)



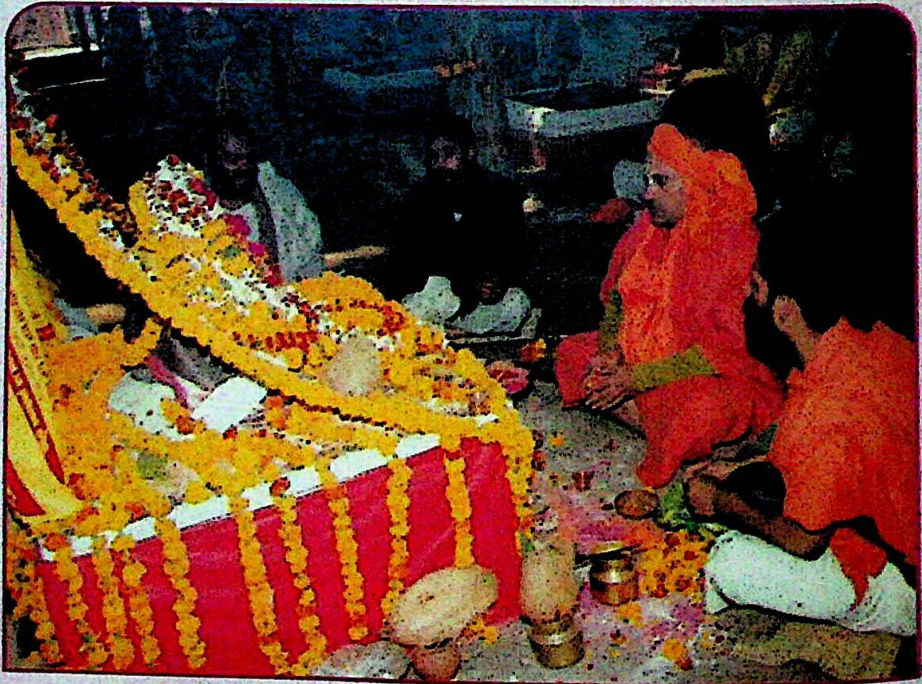
श्री रामयज्ञ मण्डप की छाया में विशाल भक्त समुदाय



सभा मण्डप में पधारते हुए जगद्गुरु शंकराचार्य स्वामी स्वरूपानन्द जी महाराज साथ में आचार्य जी।



सप्तशताब्दी महोत्सव में श्रीरामयज्ञ के लिए अरणिमन्थन करते हुए आचार्य श्री।



श्री राम यज्ञ में प्रथम कुण्ड पर आ. श्री के प्रतिनिधि रामविनयदास जी यज्ञाचार्य जी मुख्य वेदी के समक्ष।



शबाना सुहेल (धर्म बेटी आचार्य श्री) महोत्सव में ब्राह्मणों का वरण करती हुई।



श्री रामयज्ञ में श्रद्धालुजन।



महोत्सव के महायज्ञ में श्री विष्णु बिन्दल एवं श्रीमती गीता बिन्दल।



श्रीराम महायज्ञ में श्रीमती रेखा के साथ श्री अरुण सचदेवा।



श्री राम महायज्ञ में श्रीमती मनीषा एवं भरत जी जयपुर।



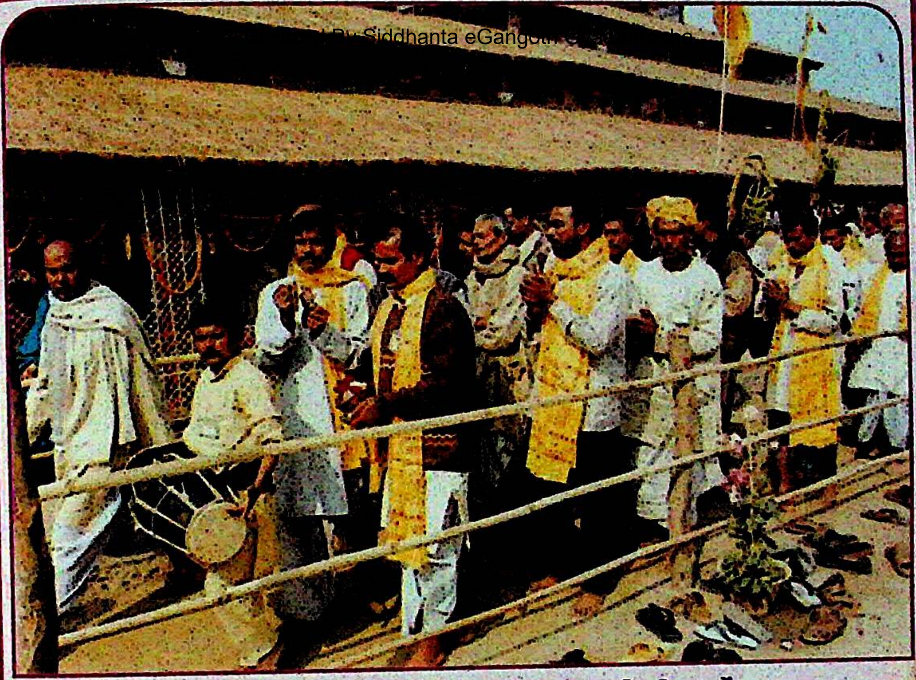
श्री राम महायज्ञ में डॉ. जयश्री के साथ श्रीकांत पाठक



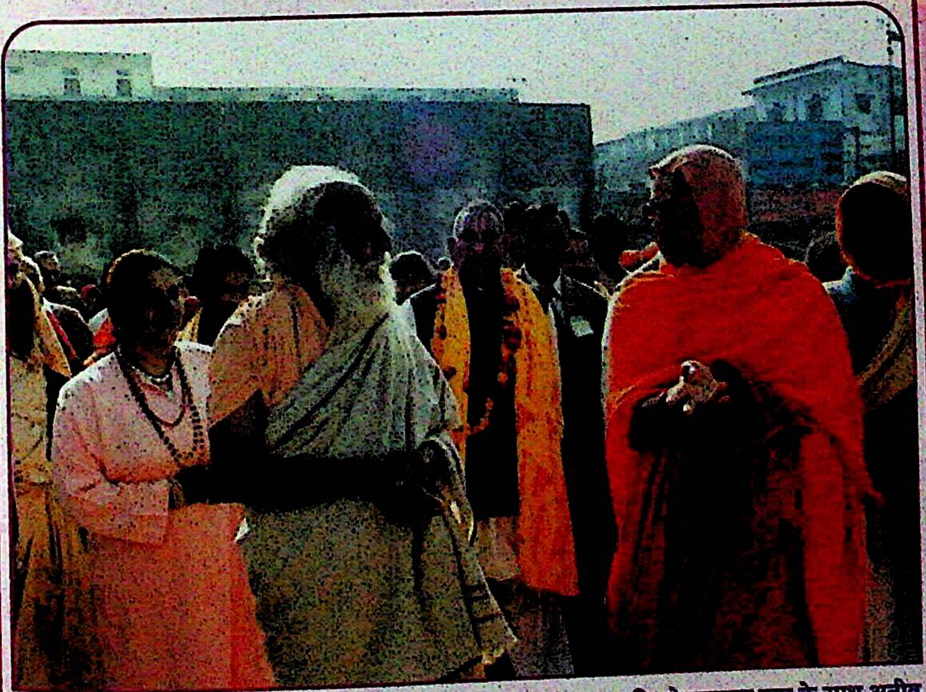
शोभायात्रा में वारकरी (महाराष्ट्र) भक्तगण कीर्त्तन करते हुए।



शोभायात्रा में गुजराती भक्तगण कीर्त्तन करते हुए।



बिहार के भक्तगण कीर्त्तन करते हुए मण्डप की परिक्रमा में।



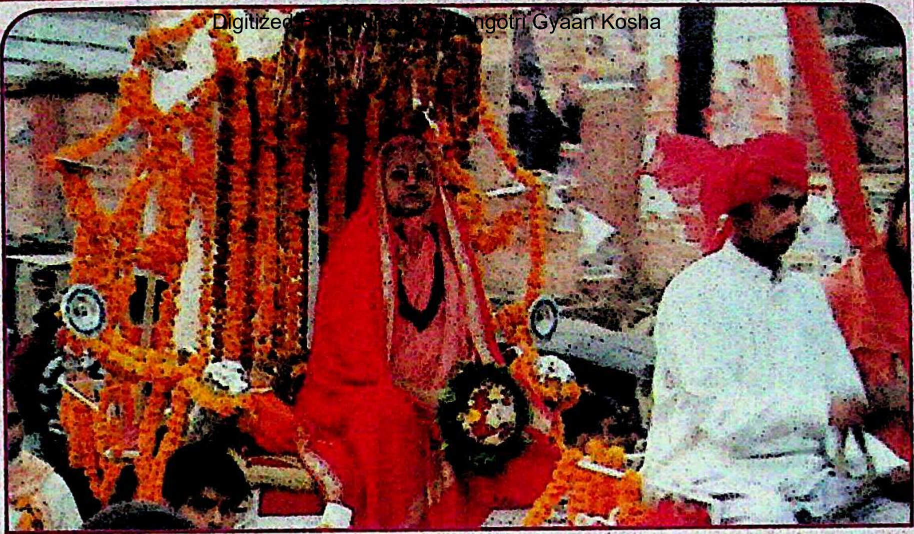
समापन महोत्सव में शोभायात्रा के अवसर पर पंचाग्नि अखाड़ा के सभापति गोपालनन्द बापू के साथ अतीव आत्मीय भावों में आचार्य श्री (17 जन. 2009 ई.)



शोभायात्रा के लिए प्रतीक्षा में गोपालानन्दजी बापू, महात्मा जी, सीताराम दासजी तथा अन्य।



शोभायात्रा समापन समारोह की झलक



स.श.म. शोभायात्रा में सुसज्जित रथ पर विराजमान आचार्य श्री (काशी)



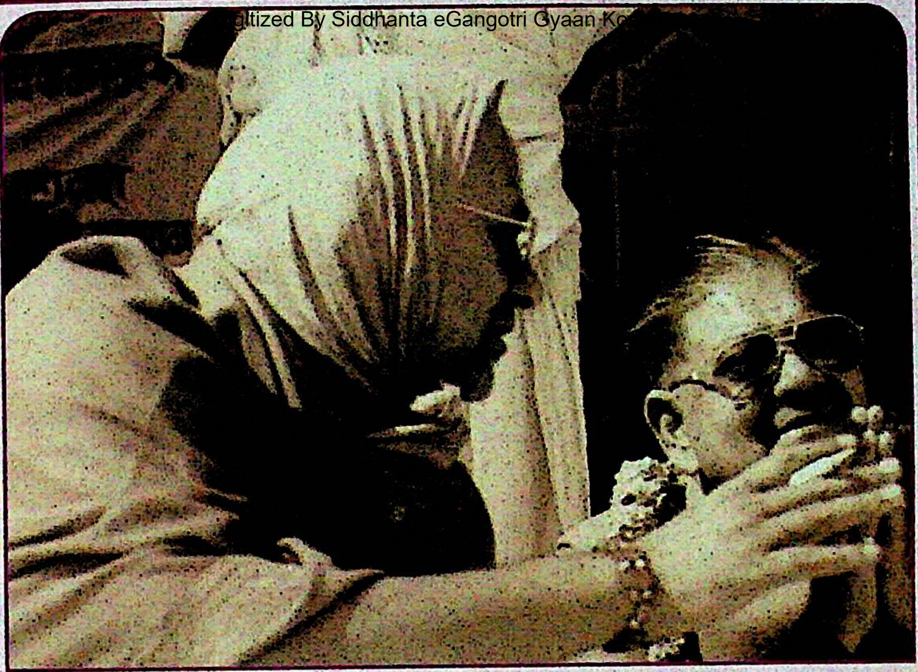
समापन महोत्सव शोभायात्रा में गजराज



महोत्सव में चित्र प्रदर्शनी



महोत्सव में रात्रि में प्रदर्शित रामलीला की झाँकी



महोत्सव में पधारे प. लोकपति त्रिपाठी आचार्य श्री के साथ



सभामंच पर आचार्य श्री प. लोकपति त्रिपाठी, पं. कृष्णानन्द झा एवं अन्य



आचार्य श्री वरिष्ठ यज्ञाचार्य लक्ष्मीकांत रामाचार्य पुराणिक एवं प्रभात शर्मा के साथ।



महोत्सव में नासिक से आकर दासबोध का पारायण करते हुए भक्तगण (300 पाठक) कुलकर्णी दादा के आचार्यत्व में।



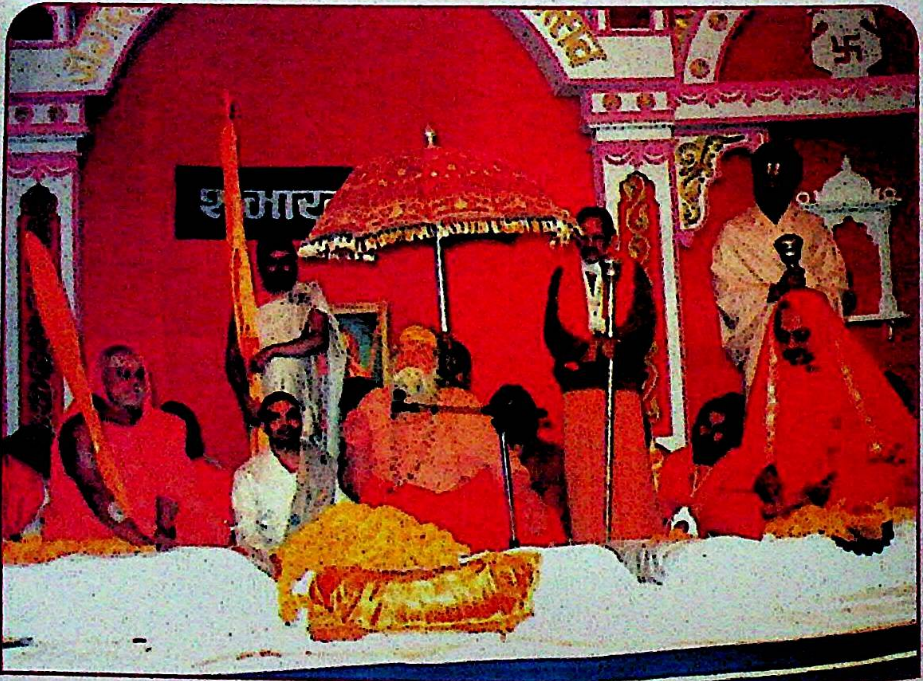
सभामण्डप में दासबोध पारायण के लिए नासिक से पधारे 300 भक्तों में महिलाएँ।



सभामण्डप में मंच पर उज्जैन के कलाकार वरिष्ठ गर्दन की नसों से शब्द प्रकट करते हुए।



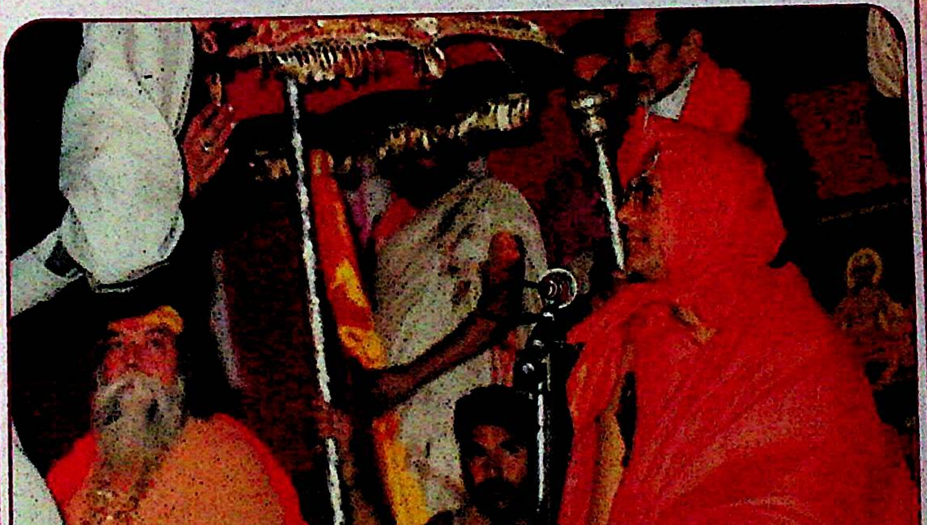
महोत्सव में राष्ट्रीय हरिजन सम्मेलन में चित्र का लोकार्पण करते हुये तथा सम्बोधन के लिए उमेशनाथ जी व अन्य हरिजन बन्धु।



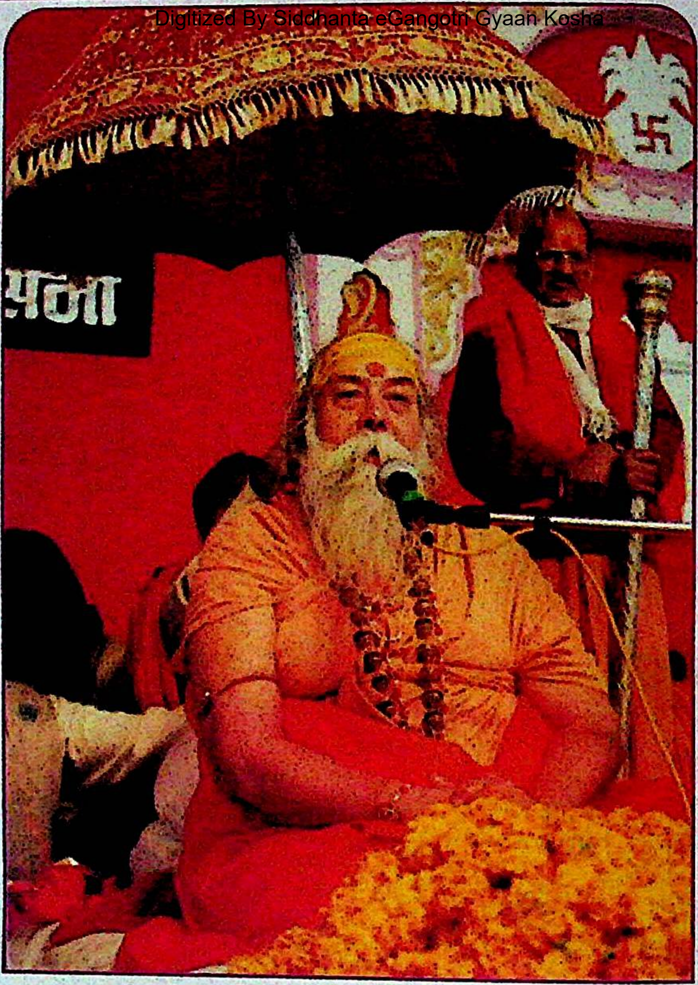
मंच पर ज.गु. शंकराचार्य निश्चलानन्द जी ज.गु. शंकराचार्य स्वरूपानन्दजी, ज.गु. रामानन्दचार्य रामनरेशाचार्य जी (दायीं तरफ से)



महोत्सव भक्तों के द्वारा अभिनन्दित होते हुए शंकराचार्य स्वरूपानन्द जी महाराज



सभामण्डप में मंच पर विराजमान शंकराचार्य स्वरूपानन्द जी तथा
ज. गु. रा. स्वामी रामनरेशाचार्यजी महाराज



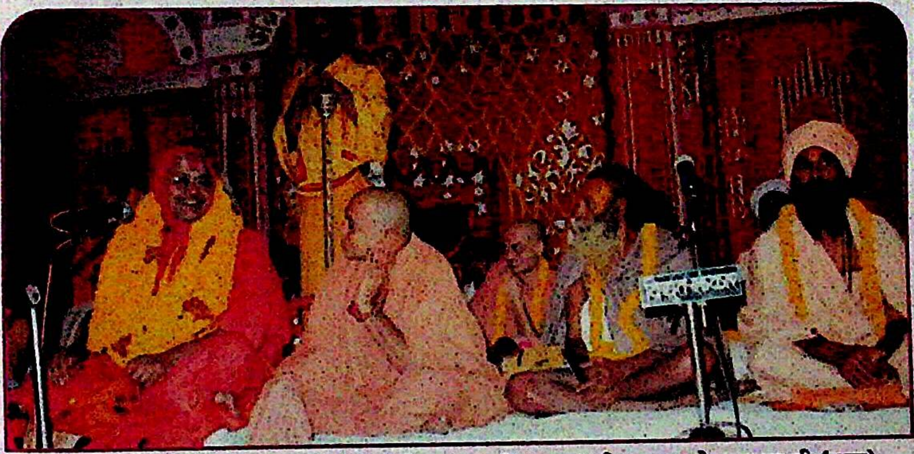
समापन महोत्सव में आशीर्वाद देते हुए स्वरूपानन्द जी महाराज



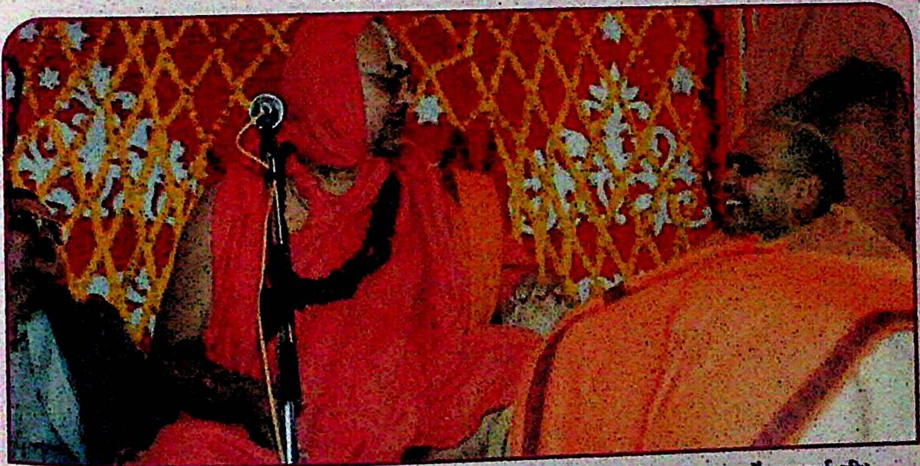
महोत्सव सभा में शंकरा स्वरूपानन्द जी, रामानन्दाचार्य जी तथा रामस्नेही सम्प्रादायाचार्य श्री पुरुषोत्तम दासजी (खेड़ापा)



स.श.स.म. में मंच पर स्वामी रामनरेशचार्य जी तथा पीठाधीश्वर पुरुषोत्तम दासजी।



स.श.स.म. सभामंच पर आचार्य श्री, श्री विष्णुदास जी (सूरत) श्री महन्त नरोत्तमदास जी (गुना) श्री उमेशदास बालयोगी (उज्जैन)



स.श.स.म.सभामंच पर श्री महन्त विष्णु स्वामी (सूरत) के साथ अतिप्रसन्न मुद्रा में आचार्य श्री।



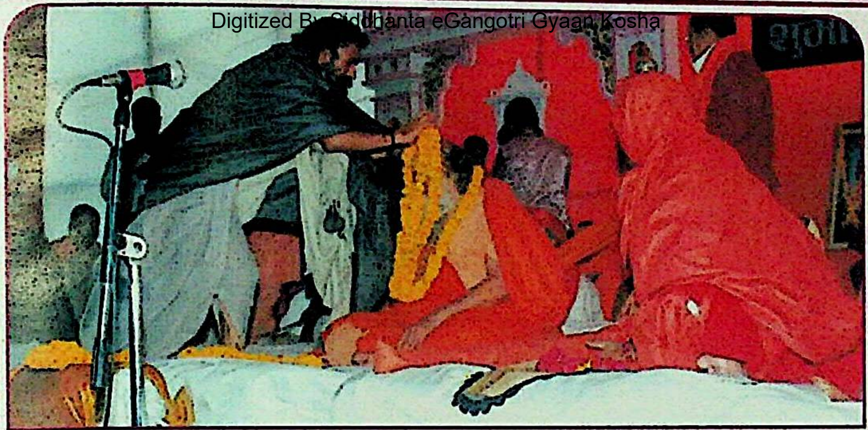
स.श.स.म. सभामंच पर काञ्ची शंकराचार्य स्वामी जयेन्द्र सरस्वती जी महाराज एवं आचार्य श्री।



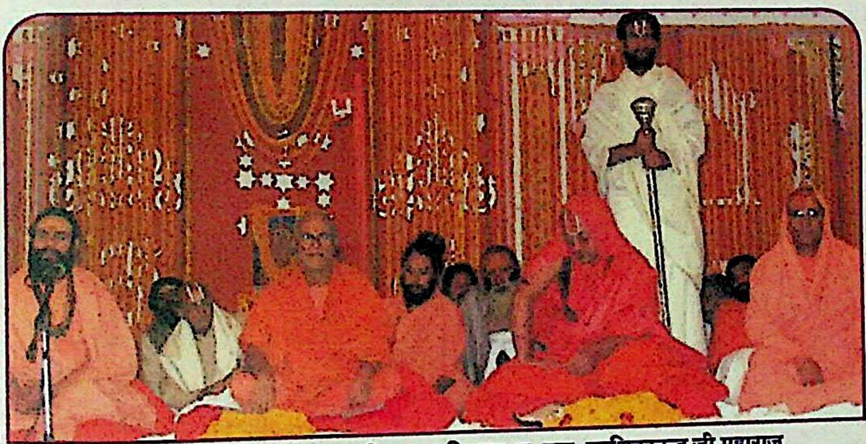
स.श.स.म. मंच पर आत्मीय मुद्रा में आचार्यद्वय



स.श.स.म. सभा मण्डप में श्री भवानीनन्दन यति को अभिनन्दित करते विश्वेश्वर द्रविड एवं श्री गणेश्वर द्रविड़।



सभामंच पर महोत्सव संयोजक प. गणेश्वर शास्त्री, शंकराचार्य जी को माल्यापर्ण करते हुए।



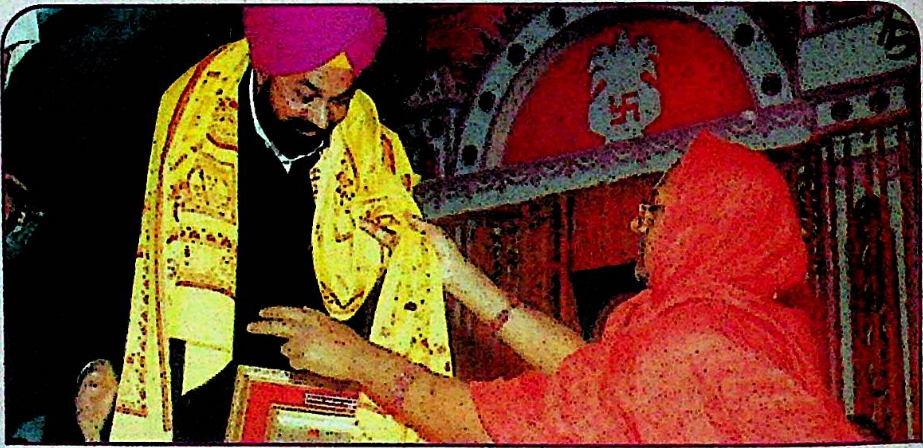
सभा में दांयी ओर से श्री म. भवानीनन्दन यति महा. म. स्वा. काशिकानन्द जी महाराज, आचार्य श्री, एवं सेनाचार्य स्वा. अचलानन्दजी।



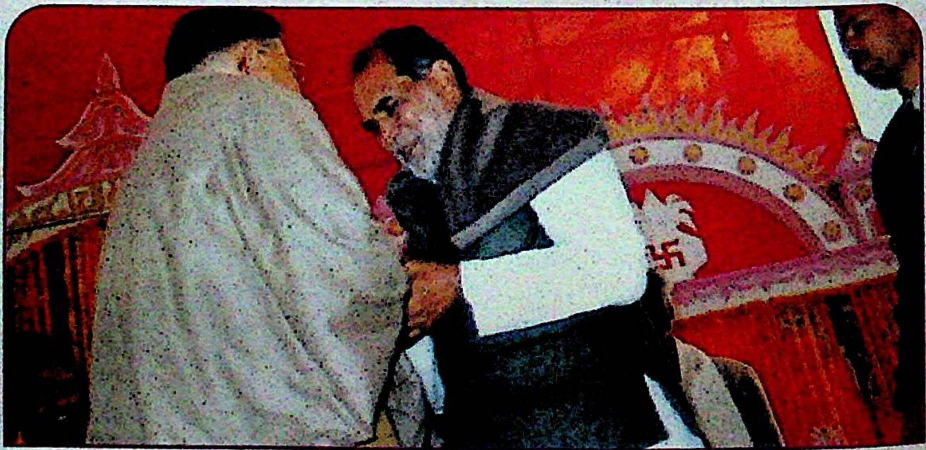
महोत्सव के अध्यक्ष दिग्विजय सिंह जी (तत्कालीन मु.मंत्री म.प्र.) आभार व्यक्त करते हुए।



श्री सुशील कुमार शिंदे को (वरिष्ठ राजनयिक) आशीर्वाद देते हुए आचार्य श्री।



पधारे हुए वरिष्ठ नेता को आशीर्वाद देते हुए आचार्य श्री



महोत्सव में पं. लोकपति त्रिपाठी एवं श्रीयुत् चन्द्रशेखर जी (पूर्व प्रधानमंत्री)



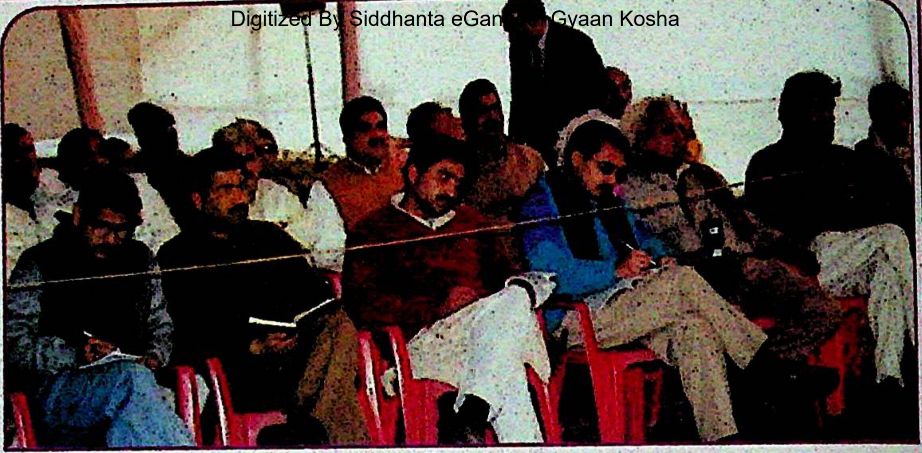
सभामंच पर विराजमान रामायणी गण, आचार्य श्री तथा पण्डित लोकपति त्रिपाठी एवं अन्य श्री चन्द्रशेखर (पूर्व प्रधानमंत्री) को सुनते हुए।



चिन्तन की मुद्रा में आचार्य श्री के साथ चन्द्रशेखर जी, प्रधान मंत्री-भारत सरकार



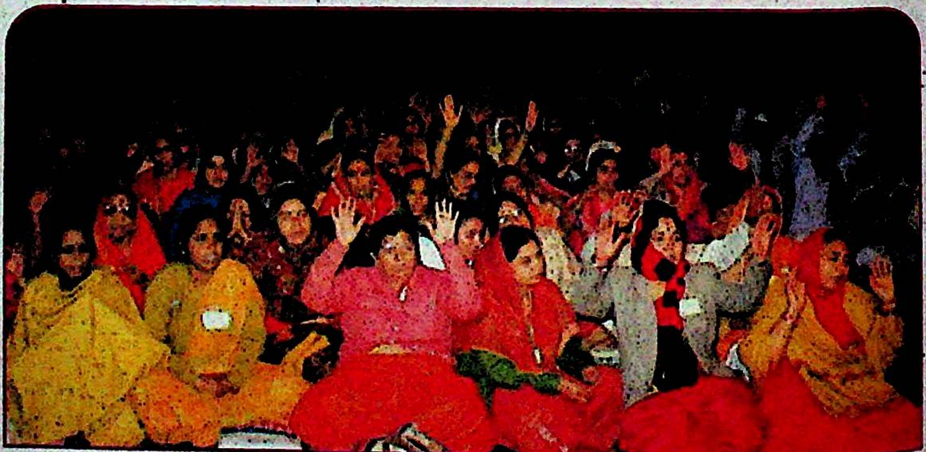
दास बोध पारायण के लिए पधारे भक्तगण दादा कुलकर्णी (व्यास) के नेतृत्व में आचार्य श्री का पादपूजन करते हुए।



समापन महोत्सव में काशी के पत्रकार बन्धु।



महोत्सव में श्रवण मुग्ध अनिल राय, आर.के. सिंह, हीरा सिंह, अवधेश सिंह आदि।



महोत्सव में पधारे हुए भक्तगण।



डॉ० उदयप्रताप सिंह

एम.ए., पी-एच.डी. (हिन्दी)
जन्म : 1 जनवरी 1955 ई. आज़मगढ़ (उ.प्र.)
सम्प्रति : एसोसिएट प्रोफेसर एवं अध्यक्ष, हिन्दी विभाग,
श्रीमहंथ रामदास स्नातकोत्तर महाविद्यालय,
भुड़कुड़ा, गाजीपुर (उ.प्र.)

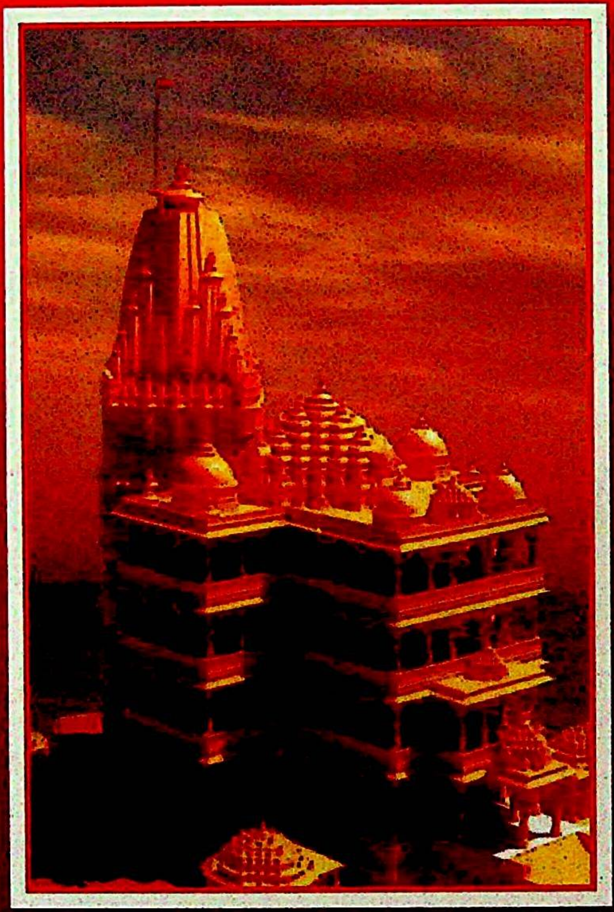
प्रकाशित पुस्तकें : आपा साहब और उनकी कृतियाँ, निर्गुण भक्ति और आपा पंथ, अनुचिंतन एवम् अनुसंधान, पूरब रंग की साधु कविता, मार्क्सवादी हिन्दी समीक्षा का अन्तर्द्वन्द, आलोचना की अपनी परम्परा, संतों के संत कवि रामानंद, इन्द्रप्रस्थ इंटरनेशनल, नई दिल्ली, सामाजिक व्यवस्था में संतकवियों का योग प्रकाशन संस्थान दिल्ली।

सम्पादित पुस्तकें : रामभक्ति साहित्य अन्वेषक और राही, रामानंद रामरसमाते, भारतेन्दु फिर, तीर्थराज प्रयाग और कुम्भ महापर्व, ज.गु. रामानंदाचार्यः श्रीसम्प्रदायः (रामावत) विविध आयाम, हरिद्वार समग्र, तीर्थराज प्रयाग और रामभक्ति का अमृत कलश जगद्गुरु रामानन्दाचार्य सप्तशताब्दी ग्रन्थ।

यू०जी०सी० फेलोशिप : रिसर्च एवार्ड, भोजपुरी क्षेत्र स्थित संत कवियो का सामाजिक दर्शन : साहित्य और लोक प्रभाव, भारत की सामाजिक व्यवस्था में संत कवियों की भूमिका
राष्ट्रीय-अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठियों में शताधिक लेख प्रकाशित।

पुरस्कार और सम्मान : अखिल भारतीय साहित्य परिषद्, कोटा, राजस्थान, अखिल भारतीय विद्वत् परिषद् सम्मान, आलोचना की अपनी परम्परा, पुरस्कृत यास्क पुरस्कार (4) साहित्य मंडल श्रीनाथद्वारा के भाषाभूषण सम्मान।

सम्पर्क
बी.एफ.एस. 13, हरनारायण विहार,
सारनाथ, वाराणसी-221007 (उ.प्र.) मो0
9415787367



श्रीरामानन्द सम्प्रदाय के एकमात्र मुख्यालय श्रीमठ, काशी द्वारा

हरिद्वार में निर्माणाधीन विश्व का अद्वितीय एवं अनुपम श्रीराममन्दिर

ऋषिकेश रोड, हरिद्वार

प्रकाशक :

जगद्गुरु रामानन्दाचार्य स्मारक सेवा न्यास

श्रीमठ, पंचगंगा, वाराणसी (उ.प्र.) भारत, दूरभाष : 0542-2402730

Printed by : Print 'O' Land, Jaipur # 0141-2210284, 2210486 • E-mail: printo_land@yahoo.co.in